# पहली इकाई

## १ भारत महिमा

*- जयशंकर प्रसाद (१८९०-१९३७)*

### कवि-परिचय

**जीवन-परिचय** : छायावाद के प्रमुख आधारस्तंभ महाकवि प्रसाद जी का जन्म सन १८९० में वाराणसी के सरायगोवर्धन में हुआ था। प्रसाद जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने साहित्य की काव्य, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध आदि विधाओं में लेखन किया। उन्होंने संपूर्ण साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवं उसके गौरवशाली अतीत को अभिव्यक्त किया है।

**प्रमुख कृतियाँ** : **काव्य** : 'झरना, आँसू, लहर आदि। **महाकाव्य** : 'कामायनी'। **ऐतिहासिक नाटक** : 'स्कंदगुप्त', 'चंद्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी'। **कहानी संग्रह** : 'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप', 'इंद्रजाल' आदि। **उपन्यास** : 'कंकाल', 'तितली', 'इरावती'।

### पद्य-परिचय

**छायावादी आधुनिक काव्य** : प्रकृति के माध्यम से देशप्रेम व मानवीय गुणों का बखान करना छायावादी कविता की विशेषता रही है। प्रस्तुत काव्य में भी इन्हीं गुणों को दर्शाया गया है।

**प्रस्तावना** : प्रस्तुत कविता के द्वारा कवि जयशंकर जी ने भारत के गौरवशाली अतीत का बहुत ही सुंदर वर्णन किया है। प्रस्तुत कविता भारतीयों के मन में अपने देश के प्रति प्रेम व आदर का भाव निर्मित करती है। इस कविता द्वारा कवि ने हमें त्याग, देश प्रेम एवं देश पर अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए प्रेरित किया है।

### सारांश

भारत देश की महिमा अपार व अगाध है। इसका अतीत समृद्ध, संपन्न व गौरवशाली है। भारत ने दुनिया में व्याप्त अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करके सभी को जागृत किया है। विश्व को संगीत की अनमोल धरोहर दी है। संसार को प्रेम, दया, सत्य, शील, अहिंसा, करुणा, मानवता व शांति जैसे मानवीय गुणों का पाठ पढ़ाया। भारतमाता के वीर पुत्रों ने भारत की गरिमा को गौरवान्वित करने का कार्य किया। भारतीयों को अपने अतीत के गौरव को कदापि नहीं भूलना चाहिए। प्रत्येक भारतीय का यह कर्तव्य है कि वह देश की गौरवशाली अस्मिता को बरकरार रखने के लिए सदैव तत्पर रहे।

### शब्दार्थ

| | |
|---|---|
| उषा | - भोर |
| उपहार | - भेंट |
| अभिनंदन | - स्वागत |
| हीरक हार | - हीरों का हार |
| आलोक | - प्रकाश |
| व्योमतम | - आकाश में फैला अंधकार (यहाँ अर्थ संसार में फैला अंधकार) |
| अखिल संसृति | - पूरा विश्व |
| अशोक | - शोक से रहित |
| वाणी | - वचन |
| सप्रीत | - प्रेम के साथ |
| अभिनंदन | - प्रोत्साहन |
| साम | - सामवेद |
| भिक्षु | - संन्यासी |
| गोरी | - यवन शासक |
| सिंहल | - श्रीलंका देश |
| चरित | - चरित्र |
| पूत | - पुत्र |
| भुजा | - बाहु |
| संपन्न | - समृद्ध |
| विपन्न | - गरीब, विपत्ति ग्रस्त |
| टेव | - दृढ़, आदत |
| हर्ष | - खुशी |
| कर | - हाथ |
| विमल | - निर्मल |

## मुहावरे

**निछावर करना** - अर्पण करना, समर्पित करना।

## भावार्थ

- **हिमालय के ..... हीरक हार।**

भारत की महिमा का गुणगान करते हुए कवि जयशंकर प्रसाद कहते हैं कि हिमालय पर्वत के आँगन में उषा ने हँसकर किरणों का उपहार दिया। उषा ने इस देश का अभिनंदन करते हुए इसे हीरों का हार पहनाया अर्थात सूर्योदय होने से कुछ पल पहले उषारूपी किरणों का हिमालय के आँगन में आगमन हुआ। भारत देश में उदित होने वाली उषा अपने साथ सुनहरी किरणों को लेकर आई। मानो वह भारत का अभिनंदन कर उसे हीरों का हार पहना रही हो।

- **जगे हम ..... उठी अशोक।**

उषा के उदित होते ही सभी भारतीय ज्ञान रूपी किरणों के साथ नींद से जाग गए। वे सिर्फ जागे नहीं, बल्कि उन्होंने दुनिया में व्याप्त अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करके सभी को जगाया। इसी तरह समस्त संसार में ज्ञान रूपी प्रकाश फैलाने का पुनीत कार्य भी किया। भारतीयों के इसी श्रेयस्कर कार्य के कारण ही विश्व रूपी आकाश में फैला हुआ अंधकार नष्ट हुआ और इस तरह समस्त संसार से शोक, दुख आदि का अंत हुआ।

- **विमल वीणा ..... साम संगीत।**

भारत देश की महिमा इतनी गौरवशाली, समृद्ध व महान है कि इसी देश ने विश्व को संगीत की अनमोल सौगात दी। संगीत की देवी माँ सरस्वती ने अपने एक हाथ में वीणा व दूसरे हाथ में प्रेम के साथ कमल को धारण कर सभी को संगीत का अमृत-पान करवाया। इसी कारण विश्व रूपी सप्तसिंधुओं में संगीत के सप्तस्वर गूँज उठे और मधुर सामवेद संगीत का आविष्कार हुआ।

- **विजय केवल ..... घर घूम।**

भारत पर कई बार विदेशियों ने हमला किया। फिर भी भारत की अखंडता कायम रही। इन युद्धों में भारत की जीत हुई। भारत ने सभी को सिखलाया कि यह सिर्फ लोहे की जीत नहीं बल्कि यह जीत हमारे धर्म की है। धर्म का ठीक से पालन करने में ही व्यक्ति की जीत है। इससे बढ़कर कोई दूसरी जीत नहीं हो सकती। भारत ने दुनिया के सामने कई आदर्श रखे हैं। जैसे कि राजकुमार गौतम बुद्ध बौद्ध भीक्षु हो गए और उन्होंने जगह-जगह जाकर सभी को दीक्षा दी और दया का पाठ सिखलाया।

- **'गोरी' को ..... भी सृष्टि।**

भारत देश ने यवनों पर दया दिखलाई। भारत ही वह देश है जहाँ यवन शासक सेल्यूकस निकोटर को युद्ध में पराजित करने के बाद भी चंद्रगुप्त ने उसे मौत की सजा नहीं दी। यवन युद्ध में परास्त हो गए, फिर भी भारत के वीर क्षत्रियों ने उन्हें दया के रूप में जीवनदान दिया। आज चीन, जापान आदि में जो धर्मोन्नति निरंतर फैली हुई है, वह भारत की ही देन है। आखिर, हमारी इस स्वर्णभूमि को भगवान गौतम बुद्ध के रूप में अनमोल रत्न जो मिल गया था। गौतम बुद्ध के मार्गदर्शन में बौद्ध भिक्षुओं ने बर्मा के लोगों को बौद्ध धर्म व उसके त्रिरत्न (बुद्ध, संघ, धम्म) का ज्ञान कराया। उन्होंने ही श्रीलंका को पंचशील (झूठ न बोलना, चोरी न करना, नशा न करना, हिंसा न करना, पाप न करना आदि) का ज्ञान कराया हमारे देश ने ही सिंहल अर्थात श्रीलंका को शील रूपी मूल्य दिया, जिसका अनुकरण करके वहाँ के लोगों ने अपनी चतुर्दिक प्रगति की।

- **किसी का ..... आए थे नहीं।**

भारत की प्रकृति की अनोखी छटा निराली है। यहाँ की प्रकृति इतनी उदात्त है कि उसने हम सभी को इतना सब कुछ दे दिया है कि हमें किसी से कुछ माँगने की परिस्थिति निर्मित नहीं होती। अत: हमें किसी से कुछ माँगने की या किसी से कुछ छीनने की आवश्यकता ही नहीं पैदा हुई। हम सब आर्य हैं। हम यहाँ पर किसी अन्य स्थान से नहीं आए थे, बल्कि इस पवित्र देश में ही हमारा जन्म हुआ था, सो हमारी जन्मभूमि भी यही है।

- **चरित थे ..... न सके विपन्न।**

भारतमाता के पुत्र चरित्रवान रहे हैं। उनकी भुजाओं में शक्ति रही है और वे हमेशा नम्रतापूर्वक व्यवहार करते रहे हैं। उनके हृदय में देश के गौरव के लिए अपार श्रद्धा व देशप्रेम की भावना रही है। अपने इन गुणों के कारण वे किसी को भी विपन्न या दीन नहीं देख सकते। दीन-दुखियों की मदद के लिए वे सदैव तत्पर रहे हैं। मानवसेवा ही उनका परम ध्येय रहा है।

- **हमारे संचय ..... रहती थी टेव।**

कवि के मतानुसार भारत देश को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। हमारे पास धन-धान्य की कमी नहीं थी। इसी कारण दान करने में हम पीछे नहीं हटे। 'अतिथि देवो भव:' की संकल्पना का भारतवासियों ने पालन किया। भारतमाता के पुत्र वचन को महत्त्व देते थे। जैसा कहते थे, वैसा करते भी थे। उनके वचनों में सत्यता थी, हृदय में तेज था और उनकी प्रतिज्ञा भी दृढ़ हुआ करती थी।

- **वही है रक्त ..... दिव्य आर्य संतान।**

हम भारतवासी अपने अतीत के गौरव को कैसे भूल सकते हैं? आज इतने युगों बाद भी हम उसी भारत देश के निवासी हैं। आज भी हमारी रगों में वही रक्त है वही साहस है वही शांति एवं वही ज्ञान विद्यमान है। आखिर हम वही दिव्य आर्य संतान हैं, जिसने वर्तमान भारत में भारतीयता को जीवित रखा है। हमारे अंतर्मन में आज भी शांति व सामर्थ्य निहित है।

- **जिएँ तो सदा ..... हमारा प्यार भारतवर्ष।**

आज हम सभी भारतवासी देश के गौरव एवं उसकी अस्मिता को बरकरार रखने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। इसी कारण हम प्रगति पथ पर हैं और बड़ी खुशी के साथ हमें इस बात का अभिमान है। इस पवित्र-पावन एवं गौरवशाली भूमि पर अपना सर्वस्व निछावर करने के लिए हम सदैव तत्पर हैं। आखिर, यह हमारा प्रिय भारतवर्ष है, जिसके लिए हम सभी अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए सदैव तप्तर हैं रहे थे, रहे हैं और रहेंगे।

## MASTER KEY QUESTION SET - 1

**प्रश्न १ (अ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति अ (१): आकलन कृति**

**(१) आकृति पूर्ण कीजिए।**

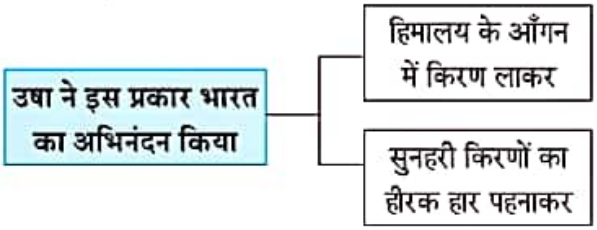


**(२) आकृति पूर्ण कीजिए।**

*पद्यांश: १ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. १*

हिमालय के आँगन में उसे, किरणों का दे उपहार
उषा ने हँस अभिनंदन किया, और पहनाया हीरक हार।

जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक
व्योमतम पुंज हुआ तब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक।

विमल वाणी ने वीणा ली, कमल कोमल कर में सप्रीत
सप्तस्वर सप्तसिंधु में उठे, छिड़ा तब मधुर साम संगीत। .....

**कृति अ (२): आकलन कृति**

**(१) उचित पर्याय चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए।**

(i) **जैसे ही सप्तस्वर सप्तसिंधु में गूँज उठे, तब .....**
(क) विमल वीणा ने वाणी ली।
(ख) कोमल कर में कमल लिया।
(ग) मधुर साम संगीत शुरू हुआ।

**उत्तर:** जैसे ही सप्तस्वर सप्तसिंधु में गूँज उठे, तब मधुर साम संगीत शुरू हुआ।

**(२) सहसंबंध लिखिए।**

(i) **वाणी** : वीणा :: **कर** : .....

(ii) **लोक** : आलोक :: **संसृति** : .....

**उत्तर:** (i) कमल (ii) अशोक

**कृति अ (३): निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।**

**(१) जगे हम ..... उठी अशोक।**

**उत्तर:** कवि प्रसाद जी कहते हैं कि उषा के उदित होते ही सभी भारतीय ज्ञान रूपी किरणों के साथ नींद से जाग गए। वे सिर्फ जागे ही नहीं बल्कि उन्होंने दुनिया में व्याप्त अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करके सभी को जगाया। इसी तरह समस्त संसार में ज्ञान रूपी प्रकाश फैलाने का पुनीत कार्य हमने ही किया। भारतीयों के इस श्रेयस्कर कार्य के कारण ही विश्व रूपी आकाश में फैला हुआ अंधकार नष्ट हुआ और इस तरह से समस्त संसार से शोक, दुख आदि पीड़ाएँ मिट गईं।

**प्रश्न २ (आ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति आ (१): आकलन कृति**

**(१) संजाल पूर्ण कीजिए।**

(२) (i) आकृति पूर्ण कीजिए।

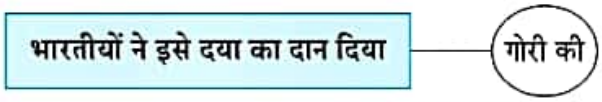


*पद्यांश: २ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. १*

विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम
भिक्षु होकर रहते सम्राट, दया दिखलाते घर-घर घूम।

'गोरी'को दिया दया का दान, चीन को मिली धर्म की दृष्टि
मिला था स्वर्ण भूमि को रत्न, शील की सिंहल को भी सृष्टि।

किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यहीं
हमारी जन्मभूमि थी यहीं, कहीं से हम आए थे नहीं।.....

**कृति आ (२): आकलन कृति**

(१) कृति पूर्ण कीजिए।

(i)

(ii)

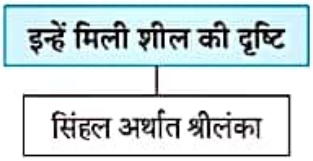


(२) निम्नलिखित कथन सही है या गलत लिखिए।

(i) हम भारत में दूसरी जगह से रहने के लिए आए।

(ii) धरा पर लोहे व धर्म की विजय की धूम रही है।

उत्तर: (i) गलत (ii) सही

**कृति आ (३): निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।**

(१) किसी का ..... आए थे नहीं।

उत्तर: कवि प्रसाद जी कहते हैं कि भारत की प्रकृति की अनोखी छटा निराली है। यहाँ की प्रकृति इतनी उदात्त है कि उसने हमें इतना सब कुछ दे दिया है कि हमें किसी से कुछ माँगने की स्थिति निर्माण नहीं होती। अत: हम पर किसी से कुछ माँगने की या किसी का कुछ छीनने की आवश्यकता ही नहीं हुई। हम सब आर्य हैं। इसी कारण यही हमारी जन्मभूमि थी। हम यहाँ पर किसी अन्य स्थान से नहीं आए थे, बल्कि हम इस पवित्र देश में ही निर्मित हुए थे।

**प्रश्न ३ (इ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति इ (१): आकलन कृति**

(१) एक वाक्य में उत्तर लिखिए।

(i) हमारे लिए सदैव देव कौन है?

उत्तर: अतिथि हमारे लिए सदैव देव हैं।

(ii) भारतवासी किनकी संतान हैं?

उत्तर: भारतवासी आर्यों की संतान हैं।

(२) उचित पर्याय चुनकर लिखिए।

(i) हमें भारत पर/अपने आप पर सर्वस्व निछावर कर देना चाहिए।

उत्तर: हमें भारत पर सर्वस्व निछावर कर देना चाहिए।

(ii) भारतवासियों को देश के लिए/परिवार के लिए जीना चाहिए।

उत्तर: भारतवासियों को देश के लिए जीना चाहिए।

*पद्यांश: ३ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. १*

चरित थे पूत, भुजा में शक्ति, नम्रता रही सदा संपन्न
हृदय के गौरव में था गर्व, किसी को देख न सके विपन्न।

हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव
वचन में सत्य, हृदय में तेज, प्रतिज्ञा में रहती थी टेव।

वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान
वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य संतान।

जिएँ तो सदा इसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष।

**कृति इ (२): आकलन कृति**

(१) कृति पूर्ण कीजिए।

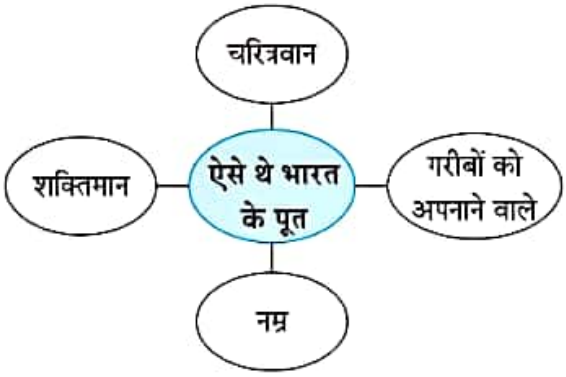


(३) उचित जोड़ियाँ मिलाइए।

| 'अ' | 'ब' |
|---|---|
| (i) वचन | (क) तेज |
| (ii) हृदय | (ख) दिव्य |
| (iii) प्रतिज्ञा | (ग) टेव |
| (iv) आर्य संतान | (घ) सत्य |

उत्तर: (i - घ), (ii - क), (iii - ग), (iv - ख)

**कृति इ (३): निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।**

(१) जिएँ तो सदा ..... हमारा प्यारा भारतवर्ष।

उत्तर: कवि प्रसाद जी कहते हैं कि आज हम सभी भारतवासी देश के गौरव एवं उसकी अस्मिता को बरकरार रखने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। हमें इसके लिए ही जीना चाहिए और बड़ी खुशी

के साथ हमें इस बात का अभिमान होना चाहिए। इस पवित्र-पावन एवं गौरवशाली भूमि पर अपना सर्वस्व निछावर करने के लिए हम सदैव तत्पर हैं। आखिर यह हमारा प्यारा भारतवर्ष जिसके लिए हम अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए उत्सुक हैं।

## स्वाध्याय विषयक कृतियाँ

***(१) निम्नलिखित पंक्तियों का तात्पर्य लिखिए।**

**(i) कहीं से हम आए थे नहीं -** .....

**उत्तर:** प्रस्तुत पंक्तियों का आशय यह है कि भारतीय आर्य वंश के हैं। भारत की भूमि उनकी जन्मभूमि है। इसी पुण्यभूमि के वे मूल निवासी हैं, न कि कहीं से आए हुए विदेशी।

**(ii) वही हम दिव्य आर्य संतान -** .....

**उत्तर:** प्रस्तुत पंक्तियों का आशय यह है कि हम आर्यव्रत आर्यों की दिव्य संतान हैं। हमारी रगों में आर्यों के समान ज्ञान, साहसी रक्त विद्यमान है। हम उन्हीं आर्यों की संतान हैं, जिन्होंने भारतीयता को जीवित रखा है।

***(२) उचित जोड़ियाँ मिलाइए।**

संचय
सत्य
अतिथि
रत्न
स्वर्णभूमि
वचन
दान
हृदय
तेज
देव

**उत्तर:**

| | अ | आ |
|---|---|---|
| (१) | संचय | दान |
| (२) | सत्य | वचन |
| (३) | अतिथि | देव |
| (४) | हृदय | तेज |
| (५) | स्वर्णभूमि | रत्न |

**(३) लिखिए।**

**(i) कविता में प्रयुक्त दो धातुओं के नाम :**

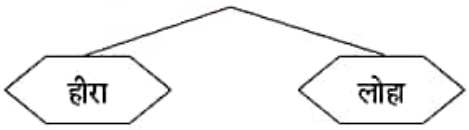


**(ii) भारतीय संस्कृति की दो विशेषताएँ:**

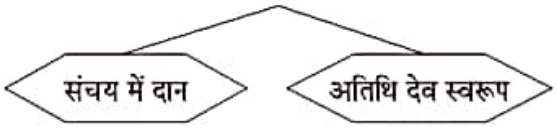


***(४) प्रस्तुत कविता की अपनी पसंदीदा किन्हीं दो पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।**

**उत्तर:** विद्यार्थी स्वयं अपेक्षित उत्तर लिखेंगे।

## पद्य-विश्लेषण

***(५) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर पद्य-विश्लेषण कीजिए।**

**(i) रचनाकार का नाम**

**(ii) रचना का प्रकार**

**(iii) पसंदीदा पंक्ति**

**(iv) पसंदीदा होने का कारण**

**(v) रचना से प्राप्त संदेश**

**उत्तर:** **(i) रचनाकार का नाम :** जयशंकर प्रसाद

**(ii) रचना का प्रकार :** छायावादी आधुनिक काव्य

**(iii) पसंदीदा पंक्ति :** हिमालय के आँगन में उसे,
किरणों का दे उपहार;
उषा ने अभिनंदन किया,
और पहनाया हीरक हार।

**(iv) पसंदीदा होने का कारण :** सूर्योदय होने से कुछ पल पहले उषा रूपी किरणों का हिमालय के आँगन में आगमन हुआ। भारत देश में उदित होने वाली उषा अपने साथ सुनहरी किरणों को लेकर आई। मानो वह भारत का अभिनंदन कर उसे हीरों का हार पहना रही हो। इसमें कवि ने मानवीकरण अलंकार के माध्यम से भारत की प्राकृतिक सुषमा का जो मनोहारी वर्णन किया है, वह अद्‌भुत व अतुलनीय है। अत: यह पंक्तियाँ मुझे अत्यंत प्रिय हैं।

**(v) रचना से प्राप्त संदेश :** इस कविता से हमें यह संदेश प्राप्त होता है कि हमें अपने अतीत के गौरवशाली इतिहास को कभी नहीं भूलना चाहिए। हमें अपने देश पर गर्व होना चाहिए और इस पर अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

❖❖❖

# २ लक्ष्मी

*- गुरुबचन सिंह (१९३७)*

## लेखक-परिचय

**जीवन-परिचय** : लेखक गुरुबचन सिंह जी का जन्म १९३७ में पंजाब राज्य के भटिंडा शहर में हुआ था। ये मूलत: एक पंजाबी लेखक हैं। इन्हें बचपन से ही साहित्य में रुचि है। इन्होंने हिंदी में भी स्वतंत्र रूप से कहानियाँ लिखी हैं। इनकी कहानियाँ मनुष्य को चिंतन के लिए विवश कर देती हैं। इनके लेखन की भाषा अत्यंत सहज एवं सरल है। साहित्य के अनेक क्षेत्रों में इन्होंने मुक्त लेखन किया है।

**प्रमुख कृतियाँ** : 'अग्नि कलश' इनकी प्रमुख साहित्यिक कृति है।

## गद्य-परिचय

**आधुनिक कहानी** : 'लक्ष्मी' यह एक आधुनिक कहानी है। आधुनिक कहानियाँ मानवीय गुणों व मूल्यों से परिपूर्ण होती हैं। मानवीय मूल्यों का अद्‌भुत दर्शन 'लक्ष्मी' इस कहानी से होता है।

**प्रस्तावना** : 'लक्ष्मी' कहानी के माध्यम से लेखक ने प्राणियों के प्रति दया-भाव रखना और उनसे प्रेम करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य होता है; यह दर्शाने की कोशिश की है। इस कहानी के माध्यम से लेखक वचनबद्धता, प्राणीमात्र पर दया आदि को अपने प्रकट रूप में दर्शाया है।

## सारांश

प्रस्तुत कहानी की प्रमुख पात्र लक्ष्मी (गाय) है। हमारी संस्कृति में गाय को माता का दर्जा दिया जाता है और उसकी पूजा होती है। ज्ञान सिंह और करामत अली गहरे दोस्त थे। वे दोनों एक ही कंपनी में काम करते थे। ज्ञान सिंह को नौकरी से अवकाश पाने के बाद कंपनी का घर छोड़ना पड़ा। अत: वह अपनी गाय लक्ष्मी को अपने मित्र करामत अली को सौंप देते हैं और उसका पालन-पोषण करने के लिए कहते हैं। करामत अली भी गाय का ठीक से भरण-पोषण करने की जिम्मेदारी लेता है। एक वर्ष तक करामत अली के घर में दूध देने का कार्य लक्ष्मी ने किया। बूढ़ी हो जाने के कारण वह दूध देने में असमर्थ हो जाती है, इसलिए करामत अली का बेटा रहमान उसे बेरहमी से पीटता है। यह बात करामत अली को अच्छी नहीं लगती। उसकी बीवी भी उसे बार-बार गाय को बेच देने की बात करती रहती है। वे उस अनुपयोगी गाय को मुफ्त का चारा-पानी देने में असमर्थ थे। रहमान गाय को एक व्यक्ति को बेचना चाहता है। करामत अली उस व्यक्ति को पहचान लेता है और गाय को बेचने से मना कर देता है। करामत अली जानता था कि वह आदमी गाय को ले जाकर कसाईखाने में बेच देगा। करामत अली अपने मित्र को दिए वचन से मुकरना नहीं चाहता। वह निर्णय ले लेता है कि भले ही वह सिर्फ एक वक्त का ही खाना खाएगा, लेकिन गाय को खाना जरूर खिलाएगा। अंत में वह गाय को गोशाला में ले जाने का निर्णय लेता है; क्योंकि वह जानता है कि लक्ष्मी वहाँ पर ठीक से रहेगी। उसका यह निर्णय उसे मानवता की चोटी पर आसीन करता है।

## शब्दार्थ

- तैश - आवेश या गुस्सा
- खूँटा - मेख, गाय बाँधने का खूँटा
- प्राय: - हमेशा
- अधेड़ - आधे से ज्यादा उम्र का
- इत्मीनान - आराम से
- जिज्ञासापूर्ण दृष्टि - जानने की इच्छा से देखना
- झाड़-झंखाड़ - झाड़ियाँ
- दूब - हरी घास, दूर्वा
- आगंतुक - द्‌वार पर आया हुआ कोई अपरिचित व्यक्ति
- किस्मत - भाग्य
- गऊशाला - वह स्थान जहाँ पर गाय-बैलों को रखा जाता है।
- बथान - पालतू गाय-बैल के रहने का स्थान
- मवेशी - कृषि कार्य में उपयुक्त तथा दुधारू पशु
- दर्रा - जानवरों के चारे में मिलाए जाने वाले अनाज के टुकड़े
- हौका - दीर्घ नि:श्वास
- पुआल - धान के सूखे डंठल, जिनमें से दाने निकाल दिए गए हों।

| | | | |
|---|---|---|---|
| खली | - तेल निकल जाने के बाद तिलहन का बचा हुआ हिस्सा जो मवेशी खाते हैं। | काँजी हाउस | - सरकारी मवेशी खाना (जिसमें लोगों के छूटे हुए पशु बंद करके रखे जाते हैं।) |

**मुहावरे**

| | | | |
|---|---|---|---|
| डंडे बरसाना | - बेरहमी से पीटना। | मुँह मारना | - जल्दी-जल्दी खाना |
| जुट जाना | - अपने काम में ध्यान देना। | गला भर आना | - भाव विह्वल होना, आवाज भर आना |
| भारी कदमों से आगे बढ़ना | - दुखी होकर चलना। | कोरा जवाब देना | - साफ मना करना |
| | | तैश में आना | - आवेश में आना |

**कहावत**

**नेकी और पूछ-पूछ** - अच्छा और भलाई का काम करने के लिए किसी से पूछना या विचार विमर्श करना उचित नहीं।

## MASTER KEY QUESTION SET - 2

**प्रश्न १ (अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति अ (१): आकलन कृति**

***(१) कृति पूर्ण कीजिए।**

**(२) कारण लिखिए।**

**(i) रहमान ने लक्ष्मी की पीठ पर चार डंडे बरसा दिए थे।**

**उत्तर:** लक्ष्मी ने आज भी दूध नहीं दिया था। इसलिए गुस्से में आकर रहमान ने उसकी पीठ पर चार डंडे बरसा दिए थे।

**(ii) लक्ष्मी के शरीर में एक सिहरन-सी दौड़ गई।**

**उत्तर:** करामत अली ने लक्ष्मी के माथे पर और पीठ पर हाथ फेरा और उसे पुचकारा, इसलिए उसके शरीर में एक सिहरन-सी दौड़ गई।

*गद्यांश: १ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ३*

उस दिन लड़के ने तैश में आकर लक्ष्मी की पीठ पर चार डंडे बरसा दिए थे। वह बड़ी भयभीत और घबराई थी। जो भी उसके पास जाता, सिर हिला उसे मारने की कोशिश करती या फिर उछलती-कूदती, गले की रस्सी तोड़कर खूँटे से आजाद होने का प्रयास करती।

करामत अली इधर दो-चार दिनों से अस्वस्थ था। लेकिन जब उसने यह सुना कि रहमान ने गाय की पीठ पर डंडे बरसाए हैं, तो उससे रहा नहीं गया। वह किसी प्रकार चारपाई से उठकर धीरे-धीरे चलकर बथान में आया। आगे बढ़कर उसके माथे पर हाथ फेरा, पुचकारा और हौले-से उसकी पीठ पर हाथ फेरा। लक्ष्मी के शरीर में एक सिहरन-सी दौड़ गई।

"ओह ! कंबख्त ने कितनी बेदर्दी से पीटा है।"

उसकी बीवी रमजानी बोली- "लो, चोट की जगह पर यह रोगन लगा दो। बेचारी को आराम मिलेगा।"

करामत अली गुस्से में बोला- "क्या अच्छा हो अगर इसी लाठी से तुम्हारे रहमान के दोनों हाथ तोड़ दिए जाएँ। कहीं इस तरह पीटा जाता है?"

रमजानी बोली- "लक्ष्मी ने आज भी दूध नहीं दिया।"

"तो उसकी सजा इसे लाठियों से दी गई?"

"रहमान से गलती हो गई, इसे वह भी कबूलता है।"

रमजानी कुछ क्षण खड़ी रही फिर वहाँ से हटती हुई बोली- "देखो, अपना खयाल रखो। पाँव इधर-उधर गया तो कमर सिंकवाते रहोगे।"

करामत अली ने फिर प्यार से लक्ष्मी की पीठ सहलाई। मुँह-ही-मुँह में बड़बड़ाया- "माफ कर लक्ष्मी, रहमान बड़ा मूर्ख है। उम्र के साथ तू भी बुढ़ा गई है। डेयरीफार्म के डॉक्टर ने तो पिछली बार ही कह दिया था, यह तेरा आखिरी बरस है। अब तेरी बेटी की सेवा करेंगे और आगे वह भी हमें फायदा देगी।"

**कृति अ (२): आकलन कृति**

**(१) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

**(i) रोगन (ii) रहमान**

**उत्तर:** (i) रमजानी ने गाय की चोट पर लगाने के लिए क्या दिया?

(ii) लक्ष्मी को किसने डंडे से मारा था?

(२) सत्य या असत्य पहचानकर लिखिए।

(i) करामत अली के अनुसार रहमान सयाना है।

(ii) करामत अली को प्राणियों के प्रति प्रेमभाव है।

उत्तर: (i) असत्य (ii) सत्य

### कृति अ (३): शब्द संपदा

(१) मानक वर्तनी के अनुसार शब्द शुद्ध कीजिए।

(i) मुंह (ii) डण्डे

उत्तर: (i) मुँह (ii) डंडे

(२) लिंग बदलिए।

(i) गाय (ii) बीवी

उत्तर: (i) बैल (ii) मियाँ

(३) वचन बदलिए।

(i) डंडा (ii) चारपाई

उत्तर: (i) डंडे (ii) चारपाइयाँ

(४) नीचे दिए हुए शब्दों में से प्रत्यय अलग कीजिए।

(i) कबूलता (ii) आखिरी

उत्तर: (i) प्रत्यय : ता, शब्द : कबूल (ii) प्रत्यय : ई, शब्द : आखिर

### कृति अ (४): स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'प्राणियों के प्रति दयाभाव रखना मानवता है।' कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।

उत्तर: जिस प्रकार धरती पर मनुष्य को जीने का अधिकार है, उसी प्रकार अन्य प्राणियों को भी जीवन जीने का अधिकार है। प्राणियों के प्रति दयाभाव रखकर मनुष्य मानवता का कार्य कर सकता है। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह प्राणियों की रक्षा करे व उनके लिए खाने की सामग्री उपलब्ध कराए। गाय, बैल, कुत्ता, बिल्ली, गधा, तरह-तरह के पक्षी आदि सभी प्राणी ही हैं। यदि ये नहीं रहेंगे, तो पर्यावरण का संतुलन बिगड़ जाएगा। इसलिए इनका संरक्षण करने में ही सबकी भलाई है।

## प्रश्न २ (आ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति आ (१): आकलन कृति

*(१) किसने, किससे कहा?

(i) "अगर लक्ष्मी को तुम्हें सौंप दूँ, तो क्या तुम उसको स्वीकार करोगे?"

उत्तर: ज्ञान सिंह ने करामत अली से कहा।

(ii) "नेकी और पूछ-पूछ।"

उत्तर: करामत अली ने ज्ञान सिंह से कहा।

*(२) उत्तर लिखिए।

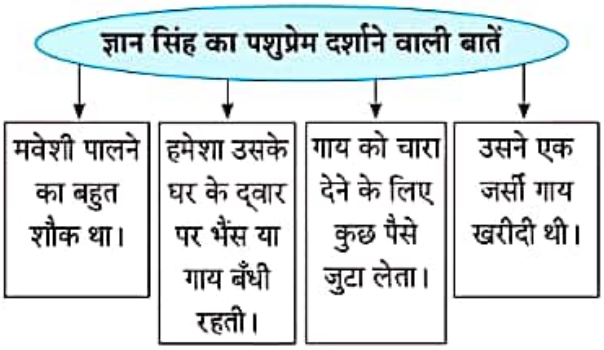


(३) गलत वाक्य सही करके लिखिए।

(i) करामत अली पिछले चार सालों से गाय की सेवा करता चला आ रहा था।

उत्तर: करामत अली पिछले एक साल से गाय की सेवा करता चला आ रहा था।

(ii) करामत अली को लक्ष्मी की पीठ पर रोगन लगाने के बाद इत्मीनान हुआ।

उत्तर: करामत अली को लक्ष्मी की पीठ पर रोगन लगाने के बाद भी इत्मीनान नहीं हुआ।

*गद्यांश: २ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ३-४*

लक्ष्मी शांत खड़ी अपने जख्मों पर तेल लगवाती रही। वह करामत अली के मित्र ज्ञान सिंह की निशानी थी। ज्ञान सिंह और करामत अली एक-दूसरे के पड़ोसी तो थे ही, वे कारखाने में भी एक ही विभाग में काम करते थे। प्राय: एक साथ ड्यूटी पर जाते और एक साथ ही वापस लौटते।

ज्ञान सिंह को मवेशी पालने का बहुत शौक था। प्राय: उसके घर के दरवाजे पर भैंस या गाय बँधी रहती। तीन बरस पहले उसने एक जर्सी गाय खरीदी थी। उसका नाम उसने लक्ष्मी रखा था। अधेड़ उम्र की लक्ष्मी इतना दूध दे देती थी कि उससे घर की जरूरत पूरी हो जाने के बाद बाकी दूध गली के कुछ घरों में चला जाता। दूध बेचना ज्ञान सिंह का धंधा नहीं था। केवल गाय को चारा और दर्रा आदि देने के लिए कुछ पैसे जुटा लेता था।

नौकरी से अवकाश के बाद ज्ञान सिंह को कंपनी का वह मकान खाली करना था। समस्या थी तो लक्ष्मी की। वह लक्ष्मी को किसी भी हालत में बेच नहीं सकता था। उसे अपने साथ ले जाना भी संभव नहीं था। जब अवकाश में दस-पंद्रह दिन ही रह गए तो करामत अली से कहा- "मियाँ! अगर लक्ष्मी को तुम्हें सौंप दूँ तो क्या तुम उसे स्वीकार करोगे...?"

मियाँ करामत अली ने कहा था- "नेकी और पूछ-पूछ। भला इससे बड़ी खुशनसीबी मेरे लिए और क्या हो सकती है?"

करामत अली पिछले एक वर्ष से उस गाय की सेवा करता चला आ रहा था। गाय की देखभाल में कोई कसर नहीं छोड़ रखी थी।

करामत अली को लक्ष्मी की पीठ पर रोगन लगाने के बाद भी इत्मीनान नहीं हुआ। वह उसके सिर पर हाथ फेरता रहा। लक्ष्मी स्थिर खड़ी उसकी ओर जिज्ञासापूर्ण दृष्टि से देखती रही। करामत अली को लगा जैसे लक्ष्मी कहना चाहती हो - "यदि मैं तुम्हारे काम की नहीं हूँ तो मुझे आजाद कर दो। मैं यह घर छोड़कर कहीं चली जाऊँगी।"

### कृति आ (२) :आकलन कृति

*(१) संजाल पूर्ण कीजिए।

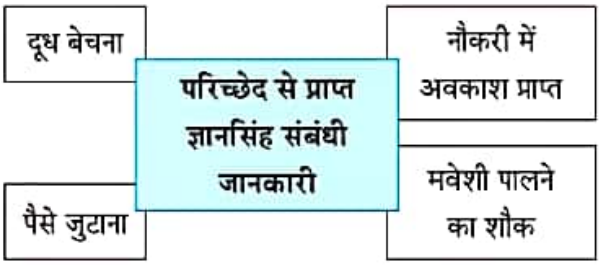


(२) उत्तर लिखिए।

*(i)

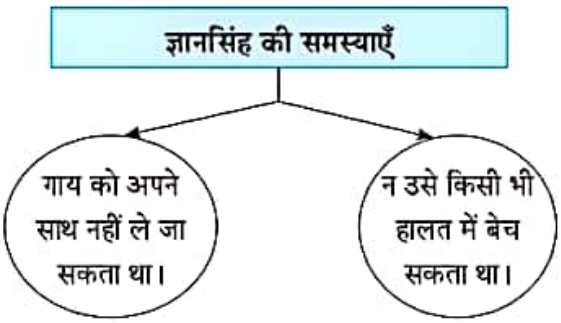


*(ii)

### कृति आ (३) : शब्द संपदा

(१) गद्यांश में से विदेशी शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर: (i) ड्यूटी (ii) जर्सी (iii) कंपनी

(२) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।

(i) जानने की इच्छा (ii) आधी या ढलती उम्रका

उत्तर: (i) जिज्ञासा (ii) अधेड़

(३) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

(i) स्थिर × ..... (ii) आजाद × .....

उत्तर: (i) अस्थिर (ii) गुलाम

(४) निम्नलिखित शब्दों के अनेकार्थी शब्द लिखिए।

(i) गाय (ii) लक्ष्मी (iii) मित्र

उत्तर: (i) **गाय** - गौ, गरीब, सीधी-सादी

(ii) **लक्ष्मी** - देवी, धन, किसी लड़की या स्त्री का नाम

(iii) **मित्र** - दोस्त, सूर्य, सहयोगी

(५) निम्नलिखित शब्दों के तत्सम शब्द लिखिए।

(i) दूध (ii) दरवाजा

उत्तर: (i) दुग्ध (ii) द्वार

*(६) चौखट में दी सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

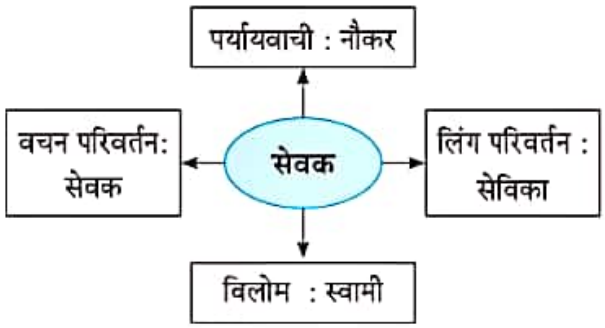


### कृति आ (४) : स्वमत अभिव्यक्ति

(१) पालतू जानवरों के साथ किए जाने वाले सौहार्दपूर्ण व्यवहारों के बारे में बताइए।

उत्तर: पालतू जानवरों का हमें ठीक से ध्यान रखना चाहिए और उनकी सेवा करनी चाहिए। पालतू जानवर चाहे गाय या भैंस हों या फिर कुत्ता या बिल्ली हों, वे बचपन से ही अपने घर पर रहते हैं। हमें उन्हें ठीक से दिन में दो वक्त खाना देना चाहिए। कुत्ते, बिल्ली को रोटी व दूध देना चाहिए। उन्हें समय-समय पर डॉक्टर के पास ले जाकर इंजेक्शन दिलवाना चाहिए; ताकि उन्हें किसी प्रकार की बीमारी न हो। गाय या बैल को पर्याप्त मात्रा में खाने के लिए चारा देना चाहिए। उन्हें जिस जगह पर रखा जाए, उस जगह को दिन में एक या दो बार साफ करना चाहिए। इस प्रकार हमें पालतू जानवरों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

### प्रश्न ३ (इ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति इ (१) : आकलन कृति

(१) उचित घटना क्रम लगाकर वाक्य फिर से लिखिए।

(i) करामत अली घर से निकलकर कारखाने की तरफ हो लिया।

(ii) करामत अली ड्यूटी पर जाने की तैयारी में था।

(iii) करामत अली नईम के पास से हटकर अपने काम में जुट गया।

(iv) नईम ने करामत अली को कुछ परेशान देखा।

उत्तर: (i) करामत अली ड्यूटी पर जाने की तैयारी में था।

(ii) करामत अली घर से निकलकर कारखाने की तरफ हो लिया।

(iii) नईम ने करामत अली को कुछ परेशान देखा।

(iv) करामत अली नईम के पास से हटकर अपने काम में जुट गया।

*गद्यांश: ३ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ४-५*

करामत अली ड्यूटी पर जाने की तैयारी में था। तभी रमजानी बोली- "रहमान के अब्बा, अगर लक्ष्मी दूध नहीं देगी तो हम इसका क्या करेंगे ? क्या खूँटे से बाँधकर हम इसे खिलाते-पिलाते रहेंगे... ?"

"जानवर है। बँधा है तो इसे खिलाना-पिलाना तो पड़ेगा ही।"

"जानते हो, इस महँगाई के जमाने में सिर्फ सादा चारा देने में ही तीन-साढ़े तीन सौ महीने का खर्चा है।"

"सो तो है।" कहते हुए करामत अली आगे कुछ नहीं बोला। घर से निकलकर कारखाने की तरफ हो लिया। रास्ते में वह रमजानी की बात पर विचार कर रहा था, लक्ष्मी अगर दूध नहीं देगी तो इसका क्या करेंगे। यह ख्याल तो उसके मन में आया ही नहीं था कि एक समय ऐसा भी आ सकता है कि गाय को घर के सामने खूँटे से बाँधकर मुफ्त में खिलाना भी पड़ सकता है।

उसके साथी नईम ने उसे कुछ परेशान देखा तो पूछा- "करामत मियाँ, क्या बात है, बड़े परेशान नजर आते हो? खैरियत तो है?"

"ऐसी कोई विशेष बात नहीं है।"

"कुछ तो होगा।"

"क्या बताऊँ। गाय ने दूध देना बंद कर दिया है, बूढ़ी हो गई है। बैठाकर खिलाना पड़ेगा और इस जमाने में गाय-भैंस पालने का खर्चा...।"

"इसमें परेशान होने की क्या जरूरत है? गाय बेच दो।"

करामत अली ने हौका भरते हुए कहा, "हाँ, परेशानी से छुटकारा पाया जा सकता है। बहुत आसान तरीका है। लक्ष्मी को बेच दिया जाए।" वह नईम के पास से हटकर अपने काम में जुट गया।

### कृति इ (२): आकलन कृति

**(१) कारण लिखिए।**

**(i) करामत अली रमजानी की बात पर विचार कर रहा था।**

उत्तर: क्योंकि महँगाई के जमाने में गाय को सिर्फ सादा चारा देने में ही तीन-साढ़े तीन सौ महीने का खर्चा था।

**(ii) करामत अली परेशान दिखाई दे रहा था।**

उत्तर: क्योंकि इस जमाने में बूढ़ी गाय को बैठाकर खिलाना उसके बस की बात नहीं थी।

**(२) उत्तर लिखिए।**

**(i) परेशानी से छुटकारा पाने के लिए करामत अली ने यह उपाय ढूँढा।**

उत्तर: लक्ष्मी को बेच देने का।

**(ii) लक्ष्मी करामत अली के लिए इसलिए बोझ बन गई थी।**

उत्तर: वह बूढ़ी हो गई थी और दूध नहीं दे रही थी।

### कृति इ (३): शब्द संपदा

**(१) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय लगाइए।**

(i) परेशान (ii) तैयार

उत्तर: (i) परेशानी (ii) तैयारी

**(२) वचन बदलिए।**

(i) परेशान (ii) खर्चा

उत्तर: (i) परेशानियाँ (ii) खर्चे

**(३) नीचे लिखे हुए वाक्यों में उचित विरामचिह्नों का प्रयोग कीजिए।**

**(i) लक्ष्मी ने दूध देना बंद कर दिया है अब हम क्या करें**

उत्तर: ''लक्ष्मी ने दूध देना बंद कर दिया है। अब हम क्या करें?''

**(ii) यदि लक्ष्मी दरवाजे पर बँधी रहेगी फिर भी तो उसे खिलाना पिलाना पड़ेगा ही**

उत्तर: ''यदि लक्ष्मी दरवाजे पर बँधी रहेगी, फिर भी तो उसे खिलाना-पिलाना पड़ेगा ही।''

### कृति इ (४): स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'पालतू जानवरों को वृद्ध होने पर बेच देना चाहिए।' इस पर अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: पालतू जानवर वृद्ध हो जाए, तो हमें उन्हें बेचना या छोड़ना नहीं चाहिए, बल्कि उनका और ठीक से ध्यान रखना और उनकी सेवा करनी चाहिए। यदि हम उन्हें छोड़ या बेच देते हैं, तो नए माहौल में वे अपने आपको ढाल नहीं सकते हैं। पालतू जानवर चाहे गाय हो या भैंस या फिर कुत्ता हो या बिल्ली, वे बचपन से ही अपने घर पर रहते हैं। उन्हें परिवार के सभी सदस्यों से लगाव हो जाता है। कुत्ता घर की रखवाली करता है। गाय या भैंस दूध देती है। बिल्ली चूहों को खाती है। इस प्रकार ये पालतू जानवर इंसान के बहुत काम आते हैं। इसलिए जब वे वृद्ध हो जाएँ, तो हमें उनकी सेवा करनी चाहिए।

## प्रश्न ४ (ई) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति ई (१): आकलन कृति

**(१) निम्नलिखित गलत वाक्य सही करके फिर से लिखिए।**

**(i) रहमान ने लक्ष्मी को खाने के लिए चारा दिया था।**

उत्तर: रहमान ने लक्ष्मी को खाने के लिए चारा नहीं दिया था।

**(ii) रमजानी ने लक्ष्मी के लिए राशन लाने हेतु करामत को पैसे खुशी से दिए।**

उत्तर: दुखी होकर रमजानी ने लक्ष्मी के लिए राशन लाने हेतु करामत को पैसे दिए।

**(२) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

**(i) संदूकची (ii) लक्ष्मी**

उत्तर: (i) रमजानी ने किसमें से बीस का एक नोट निकाला?

(ii) सानी में मुँह कौन मारने लगी?

*गद्यांश: ४ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ५*

करामत अली रात का गया सवेरे कारखाने से घर लौटा। रात की ड्यूटी से घर लौटने पर ही वह लक्ष्मी को दुहता था। घर में घुसते ही उसने रमजानी से पूछा- "क्या लक्ष्मी को अभी तक चारा नहीं दिया?"

रमजानी बोली- "रहमान से कहा तो था।"

"तुम दोनों की मर्जी होती तो गाय को अब तक चारा मिल चुका होता। अगर वह दूध नहीं दे रही है तो क्या उसे भूखा रखोगे?" कहते हुए करामत कटा हुआ पुआल, खली, और दर्रा आदि ले जाकर लक्ष्मी के लिए सानी तैयार करने लगा।

लक्ष्मी उतावली-सी तैयार हो रही सानी में मुँह मारने लगी।

गाय को सानी देकर करामत अली उसकी पीठ देखने लगा। रोगन ने अच्छा काम किया था। दाग कुछ हल्के पड़ गए थे।

दस-पंद्रह दिनों से यों ही चल रहा था। एक दिन जब करामत अली ने पुआल लाने के लिए रमजानी से पैसे माँगे तो वह बोली, "मैं कहाँ से पैसे दूँ? पहले तो दूध की बिक्री के पैसे मेरे पास जमा रहते थे। उनमें से दे देती थी। अब कहाँ से दूँ?"

"लो, यह राशन के लिए कुछ रुपये रखे थे।" कहते हुए रमजानी ने संदूकची में से बीस का एक नोट निकाल कर उसे थमाते हुए कहा, "इससे लक्ष्मी का राशन ले आओ।"

"ठीक है। इससे लक्ष्मी के दो-चार दिन निकल जाएँगे।"

"आखिर इस तरह कब तक चलेगा?" रमजानी दुखी स्वर में बोली।

"तुम इसे खुला छोड़कर, आजमाकर तो देखो।"

"कहते हो तो ऐसा करके देख लेंगे।"

### कृति ई (२): आकलन कृति

**(१) किसने, किससे कहा?**

**(i) ''तुम इसे खुला छोड़कर आजमाकर तो देखो।''**

उत्तर: करामत अली ने अपनी पत्नी रमजानी से कहा।

**(ii) ''अब कहाँ से दूँ?''**

उत्तर: रमजानी ने अपने पति करामत अली से कहा।

**(२) कारण लिखिए।**

**(i) करामत अली ने रमजानी से पैसे माँगे।**

उत्तर: क्योंकि लक्ष्मी के लिए पुआल लाना था।

**(ii) रोगन ने अच्छा काम किया था**

उत्तर: क्योंकि लक्ष्मी के पीठ पर डंडे से पड़े घाव के दाग कुछ हल्के पड़ गए थे।

### कृति ई (३): शब्द संपदा

**(१) परिच्छेद में से शब्द-युग्म छाँटकर लिखिए।**

उत्तर: (i) दस - पंद्रह (ii) दो - चार

**(२) विलोम शब्द लिखिए।**

(i) बिक्री × ..... (ii) माँगना × .....

उत्तर: (i) खरीदी (ii) देना

**(३) समानार्थी शब्द लिखिए।**

(i) रात (ii) घर (iii) दुखी

(iv) स्वर (v) मर्जी (vi) आजमाकर

उत्तर: (i) निशा (ii) गृह (iii) व्यथित
(iv) आवाज (v) सहमति (vi) परखकर

**(४) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्गों का प्रयोग करके नए शब्द बनाइए।**

(i) दाग (ii) घर

उत्तर: (i) **बेदाग**: उपसर्ग: बे (ii) **बेघर** : उपसर्ग : बे

### कृति ई (४): स्वमत अभिव्यक्ति

***(१) 'यदि आप करामत अली की जगह पर होते, तो क्या करते?' अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: यदि मैं करामत अली की जगह पर होता, तो बूढ़ी गाय को बेच या छोड़ देने की बात बिल्कुल नहीं करता; बल्कि उसकी ठीक से सेवा करता। उसके लिए दिन में दो वक्त के लिए सानी का प्रबंध करता। इसके लिए परिवार के अन्य सदस्यों को भी राजी कर लेता। भले ही मेरे पास पैसों की कमी होती, फिर भी सर्वप्रथम मैं गाय के लिए चारा जुटाने की व्यवस्था करता। यदि वह बीमार पड़ती, तो डॉक्टर को बुलाकर उसका इलाज करवाता। इस प्रकार मैं मानव धर्म का पालन कर गाय की सुरक्षा का प्रबंध करता।

## प्रश्न ५ (उ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति उ (१): आकलन कृति

**(१) संजाल पूर्ण कीजिए।**

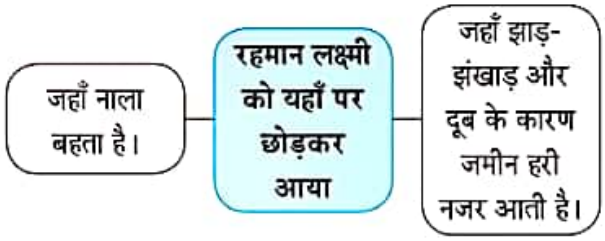


**(२) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

**(i) रस्सी (ii) आगंतुक**

उत्तर: (i) लक्ष्मी के गले में क्या थी?

(ii) रमजानी किसकी बातें सुन रही थी?

*गद्यांश: ५ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ५-६*

दूसरे दिन रहमान सवेरे आठ-नौ बजे के करीब लक्ष्मी को इलाके से बाहर जहाँ नाला बहता है, जहाँ झाड़-झंखाड़ और कहीं दूब के कारण जमीन हरी नजर आती है, छोड़ आया ताकि वह घास इत्यादि खाकर अपना कुछ पेट भर ले। लेकिन माँ-बेटे को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि लक्ष्मी एक-डेढ़ घंटे बाद ही घर के सामने खड़ी थी। उसके गले में रस्सी थी। एक व्यक्ति उसी रस्सी को हाथ में थामे कह रहा था- "यह गाय क्या आप लोगों की है?"

रमजानी ने काह, "हाँ।"

"यह हमारी गाय का सब चारा खा गई है। इसे आप लोग बाँधकर रखें, नहीं तो काँजी हाउस में पहुँचा देंगे।"

रमजानी चुप खड़ी आगंतुक की बातें सुनती रही।

दोपहर बाद जब करामत अली ड्यूटी से लौटा और नहा-धोकर कुछ नाश्ते के लिए बैठा तो रमजानी उससे बोली- "मेरी मानो तो इसे बेच दो।"

"फिर बेचने की बात करती हो...? कौन खरीदेगा इस बुढ़िया को।"

"रहमान कुछ कह तो रहा था, उसे कुछ लोग खरीद लेंगे। उसने किसी से कहा भी है। शाम को वह तुमसे मिलने भी आएगा।"

करामत अली सुनकर खामोश रह गया। उसे लग रहा था, सब कुछ उसकी इच्छा के विरुद्ध जा रहा है, शायद जिसपर उसका कोई वश नहीं था।

करामत अली यह अनुभव करते हुए कि लक्ष्मी की चिंता अब किसी को नहीं है, खामोश रहा। उठा और घर में जो सूखा चारा पड़ा था, उसके सामने डाल दिया।

लक्ष्मी ने चारे को सूँघा और फिर उसकी तरफ निराशापूर्ण आँखों से देखने लगी। जैसे कहना चाहती हो, मालिक यह क्या? आज क्या मेरे फाँकने को यह सूखा चारा ही है। दर्रा-खली कुछ नहीं।

करामत अली उसके पास से उठकर मुँह-हाथ धोने के लिए गली के नुक्कड़ पर नल की ओर चला गया।

### कृति उ (२): आकलन कृति

**(१) कारण लिखिए।**

**(i) रमजानी व रहमान को आश्चर्य हुआ।**

उत्तर: क्योंकि लक्ष्मी एक-डेढ़ घंटे बाद ही घर के सामने खड़ी थी।

**(ii) आगंतुक लक्ष्मी को काँजी हाउस में देने की बात कर रहा था।**

उत्तर: लक्ष्मी ने आगंतुक की गाय का सारा चारा खाया था, इसलिए वह उसे काँजी हाउस में देने की बात कर रहा था।

**(२) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।**

**(i) करामत अली ने गीला/सूखा चारा लक्ष्मी के सामने डाल दिया।**

उत्तर: करामत अली ने सूखा चारा लक्ष्मी के सामने डाल दिया।

**(ii) लक्ष्मी ने चारा सूँघकर करामत अली की ओर निराशापूर्ण/संतोषजनक आँखों से देखा।**

उत्तर: लक्ष्मी ने चारा सूँघकर करामत अली की ओर निराशापूर्ण आँखों से देखा।

### कृति उ (३): शब्द संपदा

**(१) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।**

(i) चुप (ii) वृद्धा

(iii) खिलाफ (iv) भूमि

उत्तर: (i) खामोश (ii) बुढ़िया (iii) विरुद्ध (iv) जमीन

**(२) परिच्छेद में प्रयुक्त शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए।**

उत्तर: (i) दर्रा - खली (ii) नहा - धोकर (iii) हाथ - मुँह (iv) एक - डेढ़ (v) झाड़ - झंखाड़

**(३) 'निराशापूर्ण' इस शब्द में 'पूर्ण' प्रत्यय है। आप 'पूर्ण' प्रत्यय लगाकर अन्य दो शब्द बनाइए।**

उत्तर: (i) भाव + पूर्ण = भावपूर्ण (ii) आशा + पूर्ण = आशापूर्ण

### कृति उ (४): स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या' पर अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: आज हमारे देश में वृद्धाश्रमों की संख्या में वृद्धि हो रही है। आज की युवा पीढ़ी अपने आप में मस्त है। उनके पास अपने माता-पिता के प्रति प्रेमभाव या अपनत्व नहीं है। उनके पास मानवीय मूल्यों की कमी होती जा रही है। कुछ लोगों के लिए वृद्ध माता-पिता बोझ होते जा रहे हैं। वे उन्हें सँभालने के लिए तैयार नहीं होते। दूसरा कारण यह है कि बेटा और बहू दोनों कामकाजी होते हैं। उनका पूरा दिन कार्यालय में व्यतीत होता है। शाम को घर आने के बाद अपने बच्चों के अलावा अन्य किसी के लिए समय निकालना उनके लिए संभव नहीं होता है। ऐसे में घर के वृद्ध माता-पिता की सेवा करना असह्य होता है। इसलिए वे उन्हें वृद्धाश्रम में रखते हैं।

## प्रश्न ६ (ऊ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति ऊ (१): आकलन कृति

**(१) कृति पूर्ण कीजिए।**

**(२) उत्तर लिखिए।**

**(i) व्यक्ति इसलिए गाय खरीदना चाहता था।**

उत्तर: ताकि वह उसे ले जाकर कसाईखाने में बेच दे।

**(ii) करामत अली ने आखिर में यह निर्णय लिया।**

उत्तर: वह स्वयं एक वक्त का खाना बंद कर देगा, लेकिन गाय को खाना जरूर खिलाएगा।

*गद्यांश: ६ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ६*

सात-आठ बजे के करीब रहमान एक व्यक्ति को अपने साथ लाया। करामत अली उसे पहचानता था।

इसके पहले कि उससे कुछ औपचारिक बातें हों, करामत अली ने पूछा, "क्या तुम गाय खरीदने आए हो?"

उसने जवाब में कहा-"हाँ"

"बूढ़ी गाय है, दूध-ऊध नहीं देती।"

"तो क्या हुआ...?"

"तुम इसे लेकर क्या करोगे...?"

"मैं कहीं और बेच दूँगा।"

"यह तुम्हारा पुराना धंधा है। मैं जानता हूँ। मुझे तुम्हें गाय नहीं बेचनी।" करामत मियाँ ने उसे कोरा जवाब दे दिया।

रमजानी करामत के चेहरे के भाव भाँपती हुई बोली- "क्या यह भी कोई तरीका है, आने वाले को खड़े-खड़े दुत्कारकर भगा दो।"

"तुम जानती हो वह कौन है...?" करामत अली ने कटु स्वर में कहा।

"वह लक्ष्मी को ले जाकर वहाँ बेच आएगा जहाँ यह टुकड़े-टुकड़े होकर बिक जाएगी। ज्ञान सिंह मेरे दोस्त को इसका पता चल गया तो वह मेरे बारे में क्या सोचेगा।"

### कृति ऊ (२): आकलन कृति

**(१) उचित घटना क्रम में लगाकर वाक्य फिर से लिखिए।**

**(i) करामत मियाँ ने उसे कोरा जवाब दे दिया।**

**(ii) करामत अली घर से बाहर चला गया।**

**(iii) करामत अली ने कहा कि गाय बूढ़ी है। वह दूध नहीं देती है।**

**(iv) रहमान एक व्यक्ति को लेकर घर आया।**

उत्तर: (i) रहमान एक व्यक्ति को लेकर घर आया।

(ii) करामत अली ने कहा कि गाय बूढ़ी है। वह दूध नहीं देती है।

(iii) करामत मियाँ ने उसे कोरा जवाब दे दिया।

(iv) करामत अली घर से बाहर चला गया।

### कृति ऊ (३): शब्द संपदा

**(१) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।**

(i) बूढ़ी × ..... (ii) दोस्त × .....

उत्तर: (i) जवान (ii) दुश्मन

**(२) वचन बदलिए।**

(i) औपचारिकता (ii) धंधा

उत्तर: (i) औपचारिकताएँ (ii) धंधे

**(३) निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय लगाइए।**

(i) व्यक्ति (ii) दोस्त

उत्तर: (i) प्रत्यय : त्व शब्द : व्यक्तित्व

(ii) प्रत्यय : ई शब्द : दोस्ती

**(४) निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए।**

(i) रमजानी तुम समझती क्यों नहीं वह अपनी गाय के टुकड़े टुकड़े कर देगा।

उत्तर: ''रमजानी, तुम समझती क्यों नहीं; वह अपनी गाय के टुकड़े-टुकड़े कर देगा।''

### कृति ऊ (४): स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) क्या आप करामत अली के निर्णय से सहमत हैं? यदि हाँ, तो अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: मैं करामत अली के निर्णय से सहमत हूँ। उसने अपनी गाय की रक्षा हेतु उसे न बेचने का जो निर्णय लिया, वह पूर्णत: सही था। गाय ने उसके परिवार को दूध देकर उनका पालन-पोषण किया। अब वह वृद्ध होने के कारण दूध नहीं दे सकती। इसलिए उसे कसाईखाने में बेच देना मानवता की दृष्टि से पूरी तरह अनुचित है। यदि उसे बेच दिया जाता, तो वह कृतघ्नता होती; अमानवीयता होती। इस प्रकार की कृतघ्नता व अमानवीयता करामत अली के पास नहीं थी। वह संवेदनशील था। अत: करामत अली ने अपना कर्तव्य निभाते हुए जो निर्णय लिया, वह सही निर्णय था।

## प्रश्न ७ (ए) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति ए (१): आकलन कृति

**(१) गलत वाक्य सही करके फिर से लिखिए।**

**(i) वह लक्ष्मी को जंगल में ले आया।**

उत्तर: वह लक्ष्मी को सड़क पर ले आया।

**(ii) गऊशाला में लक्ष्मी इत्मीनान से नहीं रह सकती थी।**

उत्तर: गऊशाला में लक्ष्मी इत्मीनान से रह सकती थी।

*गद्यांश: ७ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ६-७*

उस दिन करामत अली बिना कुछ खाए-पिए रात को बिना बिस्तर की चारपाई पर पड़ा रहा। नींद उसकी आँखों से कोसों दूर थी।

रात काफी निकल चुकी थी। सवेरे देर तक वह लेटा ही रह गया। कुछ देर बाद करामत अली ने चारपाई छोड़ी। मुँह-हाथ धो, घर से बाहर निकल पड़ा। लक्ष्मी के गले से बँधी हुई रस्सी खूँटे से खोली और उसे गली से बाहर ले जाने लगा। रमजानी, जो दरवाजे पर खड़ी यह सब देख रही थी, बोली- "इसे कहाँ ले चले?"

करामत अली ने कहा-"जहाँ इसकी किस्मत में लिखा है।"

वह लक्ष्मी को सड़क पर ले आया। लक्ष्मी बिना किसी रुकावट या हुज्जत के उसके पीछे-पीछे चली जा रही थी। वह उसकी रस्सी पकड़े सड़क पर आगे की ओर चलता चला गया। चलते-चलते कुछ क्षण रुककर वह बोला-"लक्ष्मी चल, अरे! गऊशाला यहाँ से दो किलोमीटर दूर है। तुझे गऊशाला में भरती करा दूँगा। वहाँ इत्मीनान से रहना। वहाँ तू हमारे घर की तुलना में मजे से रहेगी। भले ही मैं वहाँ न रहूँ पर जो लोग भी होंगे, मेरे ख्याल में तुम्हारे लिए अच्छे ही होंगे। मैं कभी-कभी तुम्हें देख आया करूँगा। तब तू मुझे पहचानेगी भी या नहीं, खुदा जाने।" कहते हुए करामत अली का गला भर आया। आँखों में आँसू उतर आए।

"चल, लक्ष्मी चल। जल्दी-जल्दी पैर बढ़ा" और वह खुद किसी थके-माँदे बूढ़े बैल की तरह, भारी कदमों से आगे बढ़ने लगा।

### कृति ए (२): आकलन कृति

**(१) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

(i) दो (ii) गऊशाला

उत्तर: (i) करामत अली के घर से गऊशाला कितने किलोमीटर की दूरी पर थी?

(ii) करामत अली लक्ष्मी को लेकर कहाँ जा रहा था?

### कृति ए (३): शब्द संपदा

**(१) निम्नलिखित शब्दों के विलोम गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।**

(i) पास × ..... (ii) हल्का × .....

उत्तर: (i) दूर (ii) भारी

**(२) वचन बदलिए।**

(i) आँख (ii) गऊशाला

(iii) रस्सी (iv) सड़क

उत्तर: (i) आँखें (ii) गऊशालाएँ (iii) रस्सियाँ (iv) सड़कें

**(३) परिच्छेद में आए शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए।**

उत्तर: (i) खाए - पिए (ii) पीछे - पीछे

(iii) कभी - कभी (iii) जल्दी - जल्दी

### कृति ए (४): स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'करामत अली के पास मानवीय गुण थे।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: करामत अली के पास मानवीय गुण थे। इस कथन से मैं सहमत हूँ। उसने अपने मित्र को वचन दिया था कि वह उसकी गाय की सेवा और देखभाल करेगा। इसलिए उसने वृद्ध गाय को नहीं बेचा। गाय के भरण-पोषण और देखभाल करने में असमर्थ होने पर वह उसे गऊशाला में ले जाकर छोड़ आता है। करामत अली का प्राणीमात्र के प्रति दया एवं प्रेम था। इसलिए उसने अपनी बीवी और बेटे की बात न मानते हुए भी उसका पालन-पोषण किया। करामत अली के पास संवेदनशीलता, कृतज्ञता जैसे मानवीय गुण थे।

## स्वाध्याय विषयक कृतियाँ

***(१) उचित घटना क्रम लगाकर वाक्य फिर से लिखिए।**

(i) **उसके गले में रस्सी थी।**

(ii) **रहमान बड़ा मूर्ख है।**

(iii) **वह लक्ष्मी को सड़क पर ले आया।**

(iv) **उसने तुम्हें बड़ी बेदर्दी से पीटा है।**

उत्तर: (i) उसने तुम्हें बड़ी बेदर्दी से पीटा है।

(ii) रहमान बड़ा मूर्ख है।

(iii) उसके गले में रस्सी थी।

(iv) वह लक्ष्मी को सड़क पर ले आया।

***(२) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर वर्णन कीजिए।**

| | | |
|---|---|---|
| **करामत अली की गाय का वर्णन** | १. | नाम = लक्ष्मी |
| | २. | उम्र = अधेड़ |
| | ३. | नस्ल = जर्सी |
| | ४. | स्थिति = दयनीय |

***(३) कारण लिखिए।**

(i) **करामत अली लक्ष्मी के लिए सानी तैयार करने लगा।**

उत्तर: क्योंकि सवेरे से रमजानी ने लक्ष्मी को खाने के लिए कुछ नहीं दिया था।

(ii) **रमजानी ने करामत अली को रोगन दिया।**

उत्तर: क्योंकि करामत के बेटे ने बड़ी ही बेरहमी से लक्ष्मी को पीटा था जिस कारण उसकी पीठ पर घाव हो गए थे।

(iii) **रहमान ने लक्ष्मी को इलाके के बाहर छोड़ दिया।**

उत्तर: ताकि लक्ष्मी स्वयं अपने खाने का प्रबंध कर सके।

(iv) **करामत अली ने लक्ष्मी को गऊशाला में भरती किया।**

उत्तर: क्योंकि गऊशाला में पालतू जानवरों की उचित देखभाल और सेवा की जाती थी।

**(४) हिंदी-मराठी में समोच्चारित शब्दों के भिन्न अर्थ लिखिए।**

**पीठ**
- शरीर के गर्दन के नीचे का पिछला भाग (हिंदी)
- एक धार्मिक स्थान जिसे धर्मपीठ भी कहा जाता है (मराठी)

**खाना**
- भोजन या एक क्रिया (हिंदी)
- मेज का एक कंपार्टमेंट (मराठी)

**चारा**
- उपाय (हिंदी)
- घास (मराठी)

**कल**
- आने वाला या पिछला दिन (हिंदी)
- कारखाना (मराठी)

(५) 'यदि आप करामत अली की जगह होते तो?' इस संदर्भ में अपने विचार लिखिए।

उत्तर: संदर्भ के लिए कृति घ (४) की स्वमत अभिव्यक्ति देखिए।

## भाषाबिंदु

*(१) निम्नलिखित वाक्यों में उचित विरामचिह्नों का प्रयोग कर वाक्य पुन: लिखिए।

(i) ओह कंबख्त ने कितनी बदर्दी से पीटा है

उत्तर: ''ओह! कंबख्त ने कितनी बेदर्दी से पीटा है।''

(ii) मैंने कराहते हुए पूछा मैं कहाँ हूँ

उत्तर: मैंने कराहते हुए पूछा, ''मैं कहाँ हूँ?''

(iii) मँझली भाभी मुट्ठी भर बुँदियाँ सूप में फेंककर चली गई

उत्तर: मँझली भाभी मुट्ठी भर बुँदियाँ सूप में फेंककर चली गई।

(iv) बड़ी बेटी ने ससुराल से संवाद भेजा है उसकी ननद रूठी हुई है मोथी की शीतलपाटी के लिए

उत्तर: ''बड़ी बेटी ने ससुराल से संवाद भेजा है, उसकी ननद रूठी हुई है, मोथी की शीतलपाटी के लिए।''

(v) केवल टीका नथुनी और बिछिया रख लिए थे

उत्तर: केवल टीका, नथुनी और बिछिया रख लिए थे।

(vi) ठहरो मैं माँ से जाकर कहती हूँ इतनी बड़ी बात

उत्तर: ''ठहरो, मैं माँ से जाकर कहती हूँ, इतनी बड़ी बात।''

(vii) टाँग का टूटना यानी सार्वजनिक अस्तपाल में कुछ दिन रहना

उत्तर: 'टाँग का टूटना' यानी सार्वजनिक अस्पताल में कुछ दिन रहना।

(viii) जल्दी जल्दी पैर बढ़ा

उत्तर: ''जल्दी-जल्दी पैर बढ़ा।''

(ix) लक्ष्मी चल अरे गऊशाला यहाँ से दो किलोमीटर दूर है

उत्तर: ''लक्ष्मी चल, अरे गऊशाला यहाँ से दो किलोमीटर दूर है।''

(x) मानो उनकी एक आँख पूछ रही हो कहो कविता कैसी रही

उत्तर: मानो, उनकी एक आँख पूछ रही हो, ''कहो, कविता कैसी रही?''

*(२) निम्नलिखित विराम चिह्नों का उपयोग करते हुए १० वाक्यों का परिच्छेद लिखिए।

| विरामचिह्न | |
|---|---|
| । | ' ' |
| - | " " |
| ^ | : |
| ? | x x x |
| ; | ——□—— |
| , | ..... |
| ! | ( ) |
| - | [ ] |

उत्तर: राम जल्दी-जल्दी अपने घर की ओर बढ़ रहा था। पता नहीं, ऐसा क्या हो गया था? उसके चेहरे पर गुस्सा साफ दिखाई दे रहा था। घर के द्वार पर आते ही वह चिल्लाया, ''अरे! सुनती हो भाग्यवान। क्या कर रही हो?'' पत्नी ने 'आती हूँ' ऐसा कहा और फिर हमेशा का ही है; ऐसा सोचकर अपने काम में व्यस्त हो गई। राम थोड़ी देर वहाँ खड़ा रहा और फिर वहाँ से चल दिया।

x x x

यह तो नित्य का कार्यक्रम था। राम हमेशा बेवजह अपनी पत्नी पर चिल्लाता रहता था। पत्नी हर दिन उसके द्वारा प्रताड़ित होती रहती थी। वह अपने पति की अजीब हरकतों से तंग आ गई थी। एक दिन राम ने गुस्से में आकर उसे बेलन से (लकड़ी के बने) पीटा था। बेचारी सब कुछ सह रही थी। आखिर, वह एक भारतीय (आर्या) स्त्री थी। सहनशीलता एवं करुणा की मूर्ति...

——□——

## उपयोजित लेखन

*(१) किसी पालतू प्राणी की आत्मकथा लिखिए।

उत्तर: ''ठहरिए, कहाँ जा रहे हो? तनिक रुककर मेरी कहानी सुनिए।

मैं हूँ तकदीर का मारा, बेचारा, वृद्ध जानवर। मैं एक अल्सेसिशयन प्रजाति का कुत्ता हूँ। मैं भारत में इटली से आया था। उस वक्त मैं बहुत छोटा था। दरअसल मुझे कुछ लोगों ने मेरे माँ-बाप से अलग कर भारत में बेचने के लिए भेजा था। जब मुझे भारत में लाया जा रहा था तब मैं बहुत दुखी था मुझे बार-बार अपने माता-पिता की याद आ रही थी; लेकिन मेरा दुखड़ा कौन सुनता?

प्राणियों की एक बड़ी दुकान में मुझे बेचने के लिए रखा गया। मेरी कीमत भी अधिक थी। हर दिन कई लोग आते व मुझे देखते रहते। एक दिन एक अमीर आदमी दुकान में आया और उसने मुझे खरीद लिया। वह मुझे अपने घर ले गया। उसका घर क्या था? बहुत ही बड़ा बंगला था उसका।

उसके घर में ढेर सारे नौकर थे। मेरे लिए एक अलग कमरे की व्यवस्था की गई। उसका एक बेटा था। वह मुझे देखकर बहुत ही खुश हुआ और मेरे साथ खेलने लगा। जल्द ही हम दोनों बहुत अच्छे दोस्त बन गए। आहिस्ता-आहिस्ता मैं अपने माता-पिता को भूल गया और उस संपन्न घर में बड़े ही आराम से रहने लगा।

समय अपनी अबाध गति से बीतता रहा। मैं बड़ा हो गया। मैं उनके घर की रखवाली करने लगा। मेरे होते हुए किसी की क्या मजाल कि कोई किसी चीज को छू ले। यहाँ तक कि घर के सारे नौकर भी मुझसे डरते थे। मेरे लिए खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी। दिन में चार बार मुझे खाने के लिए अच्छी-अच्छी चीजें दी जाती थीं। मैं भी भरपेट खाना खाता था और बंगले में चारों ओर स्वच्छंद विचरण करता रहता था। घर के सभी सदस्य मुझसे बहुत प्यार करते थे। मुझे ऐसा लगने लगा था कि मानो, मेरे मन की मुराद पूरी हो गई हो।

वृद्धावस्था से क्या कोई निजात पा सकता है? मैं भी वृद्ध हो गया। चलने-फिरने में असमर्थ हो गया। तब घर के सारे सदस्यों पर मैं बोझ बनने लगा। घर के लोग मुझे खाना तो देते थे, पर पहले जैसा प्यार नहीं करते थे; मुझे दुलारते नहीं थे। मैं बीमार रहने लगा। तब एक दिन घर के मालिक ने मुझे अपनी आलीशान कार में बिठाकर घर से दूर सड़क के एक किनारे छोड़ दिया। तब से मैं अकेला हो गया हूँ। अब मेरे पास जीवन जीने का कोई अर्थ नहीं रह गया है। यह इंसान कितना निर्दयी और स्वार्थी है। उसे जब अपना जी बहलाने के लिए किसी की जरूरत होती है; तब वह उसके लिए सब कुछ करने के लिए तैयार हो जाता है और जब उसका जी भर जाता है, तब वह उस चीज को अपने जीवन से दूर कर देता है। क्या खूब! आखिर, यही होते हैं इंसान के जीवन के असली रंग। खैर कोई बात नहीं, जिस ईश्वर ने मुझे जन्म दिया है, आखिर वही मेरी हिफाजत करेगा।''

❖❖❖

# ३ वाह रे! हमदर्द

*- घनश्याम अग्रवाल (१९४२)*

## लेखक-परिचय

**जीवन-परिचय** : घनश्याम अग्रवाल जी का जन्म १९४२ में महाराष्ट्र के अकोला में हुआ। ये एक कुशल हास्य व्यंग्यकार के रूप में पहचाने जाते हैं। इन्होंने हास्य-व्यंग्यपरक गद्य लेखन के साथ हास्य कविताओं की भी रचना की है। अखिल भारतीय मंचों पर हास्य-व्यंग्य कविताओं की प्रस्तुति करने की कला में इन्हें महारत हासिल है। समाज में घटित घटनाओं को हास्य व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत करने की कला में ये पारंगत हैं।

**प्रमुख कृतियाँ** : 'हँसीघर के आईने' **(हास्य-व्यंग्य)**, 'आजादी की दुम', 'आई एम सॉरी' **(हास्य कविता संग्रह)** 'अपने-अपने सपने' **(लघुकथा संग्रह)** आदि।

## गद्य-परिचय

**हास्य-व्यंग्य निबंध** : हास्य-व्यंग्य निबंध साहित्य की एक लोकप्रिय विधा बन गई है। इसमें आस-पास की प्रत्येक स्थिति या घटना में हास्य ढूँढ़कर उसे व्यंग्य की पैनी दृष्टि से धारदार करके प्रस्तुत किया जाता है। इसमें घटना को बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।

**प्रस्तावना** : 'वाह रे! हमदर्द' इस हास्य-व्यंग्य निबंध के माध्यम से लेखक घनश्याम अग्रवाल कहना चाहते हैं कि अस्पताल में मरीज को मिलने जाते समय व्यक्ति को सावधानियाँ बरतनी चाहिए, किंतु हमदर्दी जताने वाले लोग उनका पालन न करते हुए मरीज के लिए परेशानियाँ निर्माण कर देते हैं।

## सारांश

'वाह रे! हमदर्द' यह एक हास्य-व्यंग्य निबंध है। प्रस्तुत निबंध के द्वारा लेखक ने हमदर्दी भी कभी-कभी किस तरह पीड़ादायी बन जाती है, इसका विनोदपूर्ण ढंग से वर्णन किया है। साइकिल पर सवार होकर लेखक घर की ओर बढ़ रहे थे। उस वक्त सामने आने वाली कार से वे टकरा गए। जिसके कारण उनकी एक टाँग टूट गई और उन्हें अस्पताल में भरती होना पड़ा। लेखक के साथ हुई दुर्घटना से उनके संबंधी एवं हमदर्द परेशान हुए और वे एक-एक करके अस्पताल में आने लगे। उनके अस्पताल में आने के कारण लेखक को एक-से बढ़कर एक परेशानियों का सामना करना पड़ा। इस कारण लेखक का आराम हराम हो गया। मिलने आने वाले बहुत देर तक अस्पताल में आकर बैठने लगे। कई लोग बस औपचारिकता निभाने के लिए मिलने आने लगे। लेखक के मुहल्ले में रहने वाली सोनाबाई अपने चारों बच्चों को लेकर अस्पताल पहुँची और उसके चारों बच्चों ने अस्पताल में वो उत्पात मचाया, जिससे लेखक काँप गए। लेखक को मिलने आए कवि महोदय अस्पताल में लेखक को अपनी बेतुकी कविता सुनाने लगे, जिससे लेखक परेशान हो गए। इस प्रकार लेखक से अपनी एक टाँग टूटने का उतना दुख नहीं हुआ, जितना उन्हें अस्पताल में मिलने आने वाले लोगों से हुआ। अंत में थक-हारकर लेखक ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि यदि उसकी दूसरी टाँग तोड़नी हो तो जरूर तोड़ दे; परंतु उस जगह तोड़ना जहाँ कोई परिचित न हो, क्योंकि बड़े बेदर्द होते हैं, हमदर्दी जताने वाले।

## शब्दार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| फिक्र | - चिंता | घृणा | - नफरत |
| हमदर्दी | - सहानुभूति | दुर्घटना | - हादसा |
| एहसान | - कृतज्ञता | इर्द-गिर्द | - चारों ओर |
| औंधा | - उल्टा | चिड़ियाघर | - जहाँ पर पशु-पक्षी होते हैं। |
| फलस्वरूप | - परिणामत: | खतरनाक | - जानलेवा |
| जोश | - आवेश | शीशी | - काँच की छोटी बोतल |

## मुहावरे

| | |
|---|---|
| **टाँग अड़ाना** | - बाधा डालना। |
| **काँप उठना** | - भयभीत होना। |
| **आराम-हराम होना** | - बहुत परेशान होना। |

## MASTER KEY QUESTION SET - 3

**प्रश्न १ (अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति अ (१) : आकलन कृति**

**(१) समझकर लिखिए।**

(i)

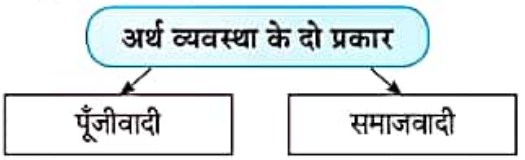


(ii)

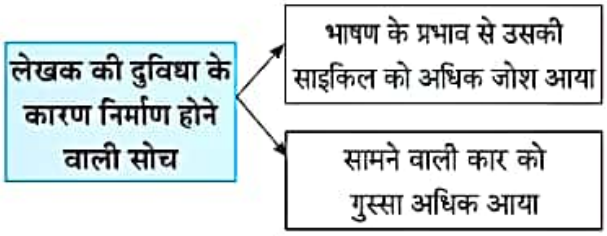


**(२) कारण लिखिए।**

(i) **लेखक की टाँग टूट गई।**

उत्तर: लेखक की साइकिल व सामने से आने वाली कार इनकी आपस में टक्कर हो गई।

(ii) **लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि आज भी समाज में इंसानियत कायम है।**

उत्तर: क्योंकि दुर्घटना में आहत होने के बाद कुछ लोगों ने उसकी मदद की थी।

*गद्यांश १ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक १०*

उस दिन जब मैं पूँजीवादी और समाजवादी अर्थव्यवस्था पर भाषण सुनकर आ रहा था तो सामने से एक कार आ रही थी। भाषण के प्रभाव से मेरी साइकिल को अधिक जोश आया या कार को गुस्सा अधिक आया, यह मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता; किंतु मेरी साइकिल और वह कार जब करीब आए तो विरोधियों की तरह एक-दूसरे को घृणा की नजरों से देखते हुए आपस में जा भिड़े। मैंने खामखाह पूँजीवाद और समाजवाद के झगड़े में टाँग अड़ाई। फलस्वरूप मेरी टाँग टूट गई। दुर्घटना के बाद आज भी इंसानियत कायम है, यह सिद्ध करने के लिए कुछ लोग मेरी तरफ दौड़े।

आँख खुली तो मैंने अपने आपको एक बिस्तर पर पाया। इर्द-गिर्द कुछ परिचित-अपरिचित चेहरे खड़े थे। आँख खुलते ही उनके चेहरों पर उत्सुकता की लहर दौड़ गई। मैंने कराहते हुए पूछा - ''मैं कहाँ हूँ ?''

**कृति अ (२) : आकलन कृति**

**(२) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

(i) **उत्सुकता** (ii) **बिस्तर**

उत्तर: (i) लेखक के चेहरे पर कौन-सी लहर दौड़ने लगी ?

(ii) दुर्घटना में आहत होने के बाद लेखक ने अपने आप को कहाँ पर पाया ?

**(२) निम्नलिखित विधान सत्य है या असत्य पहचानकर लिखिए।**

(i) आज हमारे समाज में इंसानियत हमेशा के लिए मिट गई है।

(ii) पूँजीवाद और समाजवाद एक-दूसरे के विरोधी हैं।

उत्तर: (i) असत्य (ii) सत्य

**कृति अ (३) : शब्द संपदा**

**(१) मानक वर्तनी के अनुसार शब्द शुद्ध कीजिए।**

(i) **टांग** (ii) **इरद-गिरद**

उत्तर: (i) टाँग (ii) इर्द-गिर्द

**(२) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।**

(i) **करीब** × ..... (ii) **इन्सानियत** × .....

(iii) **घृणा** × ..... (iv) **प्रभाव** × .....

उत्तर: (i) दूर (ii) हैवानियत (iii) प्रेम (iv) दुष्प्रभाव

**(३) वचन बदलिए।**

(i) **टाँग** (ii) **लहर**

उत्तर: (i) टाँगें (ii) लहरें

**(४) नीचे दिए हुए शब्दों में से प्रत्यय अलग कीजिए।**

(i) **पूँजीवाद** (ii) **इंसानियत**

उत्तर: (i) प्रत्यय : वाद शब्द : पूँजी

(ii) प्रत्यय : इयत शब्द : इंसान

**कृति क (४) : स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) 'आज भी हमारे समाज में इंसानियत कायम है।' क्या इस कथन से आप सहमत हैं ? अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: जी हाँ, आज भी हमारे समाज में इंसानियत कायम है। आज भी कई ऐसे लोग हैं, जो दीन-दुखियों, अपाहिजों की मदद करने के लिए आगे आते हैं। वे तन-मन-धन से उनकी सेवा करते हैं। हमारे समाज में जगह-जगह अनाथाश्रम हैं, जिनमें गरीब बच्चे रहते हैं। कई लोग वहाँ पर जाकर उन बच्चों के लिए अपने से जो कुछ बन सकता है, वह दे देते हैं। रास्ते से जाते समय कई बार लोगों के साथ दुर्घटना हो जाती है। ऐसे में वहाँ से आने-जाने वाले लोग तुरंत दुर्घटनाग्रस्तों की सहायता करने के लिए आगे आते हैं। आज भी विश्व में कई ऐसे लोग हैं जिन्होंने कई क्षेत्रों में मानव-सेवा को अपना लक्ष्य बनाया। मदर टेरेसा, बाबा आमटे जैसे कई लोग इसके उदाहरण हैं।

**प्रश्न २ (आ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति आ (१) : आकलन कृति**

**(१) किसने, किससे कहा ?**

(i) ''आप सार्वजनिक अस्पताल के प्राइवेट वार्ड में हैं।''

उत्तर: एक व्यक्ति ने लेखक से कहा।

(२) निम्नलिखित गलत वाक्य सही करके लिखिए।

(i) लेखक को प्राइवेट अस्पताल में भरती करवाया गया था।

उत्तर: लेखक को सार्वजनिक अस्पताल में भरती करवाया गया था।

(ii) लेखक की दोनों टाँगें सही सलामत थीं।

उत्तर: लेखक की एक टाँग सही सलामत थी।

*गद्यांश २ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक १०*

"आप सार्वजनिक अस्पताल के प्राइवेट वार्ड में हैं। आपका ऐक्सिडेंट हो गया था। सिर्फ पैर का फ्रैक्चर हुआ है। अब घबराने की कोई बात नहीं।" एक चेहरा इतनी तेजी से जवाब देता है, लगता है मेरे होश आने तक वह इसीलिए रुका रहा। अब मैं अपनी टाँगों की ओर देखता हूँ। मेरी एक टाँग अपनी जगह पर सही-सलामत थी और दूसरी टाँग रेत की थैली के सहारे एक स्टैंड पर लटक रही थी। मेरे दिमाग में एक नए मुहावरे का जन्म हुआ 'टाँग का टूटना' यानी सार्वजनिक अस्पताल में कुछ दिन रहना। सार्वजनिक अस्पताल का खयाल आते ही मैं काँप उठा। अस्पताल वैसे ही एक खतरनाक शब्द होता है, फिर यदि उसके साथ सार्वजनिक शब्द चिपका हो तो समझो आत्मा से परमात्मा के मिलन होने का समय आ गया। अब मुझे यूँ लगा कि मेरी टाँग टूटना मात्र एक घटना है और सार्वजनिक अस्पताल में भरती होना दुर्घटना।

### कृति आ (२): आकलन कृति

(१) वाक्यों का उचित क्रम लगाकर वाक्य फिर से लिखिए।

(i) लेखक ने 'टाँग का टूटना' यह मुहावरा गढ़ा।

(ii) लेखक को अस्पताल में भरती करवाया गया था।

(iii) लेखक के अनुसार टाँग टूटना मात्र एक घटना है।

(iv) किसी ने लेखक से न घबराने के लिए कहा।

उत्तर: (i) लेखक को अस्पताल में भरती करवाया गया था।
(ii) किसी ने लेखक से न घबराने के लिए कहा।
(iii) लेखक ने 'टाँग का टूटना' यह मुहावरा गढ़ा।
(iv) लेखक के अनुसार टाँग टूटना मात्र एक घटना है।

### कृति आ (३): शब्द संपदा

(१) गद्यांश में से विदेशी शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर: प्राइवेट, वार्ड, ऐक्सिडेंट, फ्रैक्चर, स्टैंड

(२) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।

(i) जिसका उपयोग सभी करते हैं -

(ii) वह स्थान जहाँ पर मरीजों को भरती किया जाता है -

उत्तर: (i) सार्वजनिक (ii) अस्पताल

(३) विलोम शब्द लिखिए ।

(i) सार्वजनिक × ..... (ii) समय × .....

उत्तर: (i) निजी (ii) असमय

(४) वार्ड शब्द का अनेकार्थी शब्द लिखिए।

उत्तर: वार्ड : कक्ष या बड़ा कमरा

### कृति आ (४) : स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'आज व्यक्ति सार्वजनिक अस्पताल में भरती होना क्यों पसंद नहीं करता?' कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।

उत्तर: आज कोई भी व्यक्ति सार्वजनिक अस्पताल में भरती होना पसंद नहीं करता। सार्वजनिक अस्पताल में भले ही मुफ्त में इलाज होता है; दवाइयाँ भी मुफ्त में मिलती हैं, फिर भी लोगों की मानसिकता प्राइवेट अस्पताल में भरती होने की ही हो गई है। आखिर बात ही वैसी है। सार्वजनिक अस्पताल में काम करने वाले डॉक्टर एवं नर्सेस ठीक से मरीजों की देखभाल नहीं कर पाते हैं। इसका कारण मरीज़ों की संख्या में बेहताशा वृद्धि भी है। दूसरा कारण, लोग सरकारी या सार्वजनिक अस्पताल में विश्वास नहीं करते। बहुत सारे लोग प्रतिष्ठावश सार्वजनिक अस्पतालों में भरती होना पसंद नहीं करते।

## प्रश्न ३ (इ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति इ (१): आकलन कृति

(१) कारण लिखिए ।

(i) लेखक को हमदर्दी जताने वालों की सबसे अधिक फिक्र क्यों होती है?

उत्तर: क्योंकि हमदर्दी जताने वाले अधिक संख्या में आते हैं और परेशान करते हैं।

(ii) लेखक को ऐसा क्यों लगा कि उसकी दूसरी टाँग भी टूट गई?

उत्तर: क्योंकि मिलने आने वाले लोग बहुत देर तक बैठकर उसे परेशान करेंगे।

*गद्यांश ३ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक १०-११*

टाँग से ज्यादा फिक्र मुझे उन लोगों की हुई जो हमदर्दी जताने मुझसे मिलने आएँगे। ये मिलने-जुलने वाले कई बार इतने अधिक आते हैं और कभी-कभी इतना परेशान करते हैं कि मरीज का आराम हराम हो जाता है, जिसकी मरीज को खास जरूरत होती है। जनरल वार्ड का तो एक नियम होता है कि मरीज को एक निश्चित समय पर आकर ही तकलीफ दे सकते हैं किंतु प्राइवेट वार्ड, यह तो एक खुला निमंत्रण है कि "हे मेरे परिचितों, रिश्तेदारों, मित्रों! आओ,चाहे जितनी देर रुको, समय का कोई बंधन नहीं। अपने सारे बदले लेने का यही वक्त है। बदले का बदला और हमदर्दी की हमदर्दी। मिलने वालों का खयाल आते ही मुझे लगा मेरी दूसरी टाँग भी टूट गई।

मुझसे मिलने के लिए सबसे पहले वे लोग आए जिनकी टाँग या कुछ और टूटने पर मैं कभी उनसे मिलने गया था, मानो वे इसी दिन का इंतजार कर रहे थे कि कब मेरी टाँग टूटे और कब वे अपना एहसान चुकाएँ। उनकी हमदर्दी में ये बात खास छिपी रहती है कि देख बेटा, वक्त सब पर आता है।

### कृति इ (२) : आकलन कृति

*(१) अंतर स्पष्ट कीजिए ।

| प्राइवेट अस्पताल | सार्वजनिक अस्पताल |
|---|---|
| (१) प्राइवेट अस्पताल में मरीज़ों की सेवा और देखभाल बेहतर होती है। | (१) सार्वजनिक अस्पताल में भीड़ अधिक होती है जिससे मरीज़ों की सेवा और देखभाल ठीक तरह से नहीं हो पाती। |
| **प्राइवेट वार्ड** | **जनरल वार्ड** |
| (१) अनिश्चित समय पर आकर जितनी देर चाहें उतनी देर तक मरीज़ से मिला जा सकता है। | (१) मरीज़ से निश्चित समय पर आकर ही मिला जा सकता है। |

(२) निम्नलिखित वाक्य पूर्ण कीजिए ।

(i) लेखक उन्हें मिलने गया था -

उत्तर: जिनकी टाँग या शरीर का कोई अन्य अंग टूटा हुआ था।

(ii) मरीज़ का आराम हराम तब हो जाता है -

उत्तर: जब मिलने वाले अधिक संख्या में आकर उसे परेशान करने लगते हैं।

### कृति इ (३) : शब्द संपदा

(१) नीचे लिखे शब्दों में उचित प्रत्यय लगाइए।

(i) समय (ii) खास

उत्तर: (i) सामयिक (ii) खासियत

(२) लिंग बदलिए।

(i) बेटा × ..... (ii) मित्र × .....

उत्तर: (i) बेटी (ii) मित्र / सहेली

(३) नीचे लिखे हुए वाक्यों में उचित विरामचिह्नों का प्रयोग कीजिए।

(i) हमदर्दी जताने वालों ने कहा देख बेटा वक्त सब पर आता है।

उत्तर: हमदर्दी जताने वालों ने कहा, "देख बेटा, वक्त सब पर आता है ।"

(४) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।

(i) की गई सहायता -

(ii) दूसरे के दुख से दुखी होने का भाव -

*(iii) जहाँ मुफ्त में भोजन मिलता है -

उत्तर: (i) एहसान (ii) हमदर्दी (iii) धर्मशाला

### कृति इ (४) : स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'वक्त सब पर आता है। इसलिए किसी का मज़ाक नहीं उड़ाना चाहिए।' इस कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।

उत्तर: वक्त एक समान नहीं रहता। वह बदलता रहता है। आज की तारीख में यदि कोई सुकून की जिंदगी जी रहा है, तो इसका यह मतलब नहीं कि वह मरते दम तक सुकून से जी सकता है। दुख व सुख तो आते ही रहते हैं। आज हम पर बीती तो कल दूसरों पर भी बीत सकती है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं। समय बदलता रहता है। परिस्थितियाँ भी वक्त के साथ बदलती रहती हैं। व्यक्ति के जीवन में उत्थान-पतन आते रहते हैं। इसलिए जब कोई दुखी है या दर्द से कराह रहा है, तो उसका मजाक नहीं उड़ाना चाहिए; बल्कि उसकी मदद करनी चाहिए क्योंकि आज वह दुखी है। हो न हो, कल हम पर वही दौर आ बीतेगा और हम दुखी हो जाएँगे। आखिर दुख की घड़ी में साथ देना ही मानवता है।

## प्रश्न ४ (ई) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति ई (१) : आकलन कृति

(१) निम्नलिखित गलत वाक्य सही करके फिर से लिखिए।

(i) रिश्तेदार अपनी फुरसत से आते हैं।

उत्तर: मुहल्लेवाले अपनी फुरसत से आते हैं।

(ii) दर्द के मारे मरीज़ को सुकून की नींद आती है।

उत्तर: दर्द के मारे मरीज़ को नींद नहीं आती है।

(२) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -

(i) सोनाबाई (ii) औपचारिकता

उत्तर: (i) चार बच्चों के साथ आई महिला का क्या नाम था?

(ii) मिलने वाले क्या निभाने आते हैं?

*गद्यांश ४ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक ११*

दर्द के मारे एक तो मरीज को वैसे ही नींद नहीं आती, यदि थोड़ी बहुत आ भी जाए तो मिलने वाले जगा देते हैं - खास कर वे लोग जो सिर्फ औपचारिकता निभाने आते हैं। इन्हें मरीज से हमदर्दी नहीं होती, ये सिर्फ सूरत दिखाने आते हैं। ऐसे में एक दिन मैंने तय किया कि आज कोई भी आए, मैं आँख नहीं खोलूँगा। चुपचाप पड़ा रहूँगा। ऑफिस के बड़े बाबू आए और मुझे सोया जानकर वापस जाने के बजाय वे सोचने लगे कि यदि मैंने उन्हें नहीं देखा तो कैसे पता चलेगा कि वे मिलने आए थे। अत: उन्होंने मुझे धीरे-धीरे हिलाना शुरू किया। फिर भी जब आँखें नहीं खुलीं तो उन्होंने मेरी टाँग के टूटे हिस्से को जोर से दबाया। मैंने दर्द के मारे कुछ चीखते हुए जब आँख खोली तो वे मुस्कुराते हुए बोले - "कहिए अब दर्द कैसा है?"

मुहल्लेवाले अपनी फुरसत से आते हैं। उस दिन जब सोनाबाई अपने चार बच्चों के साथ आई तो मुझे लगा कि आज फिर कोई दुर्घटना होगी। आते ही उन्होंने मेरी ओर इशारा करते हुए बच्चों से कहा - "ये देखो चाचा जी !" उनका अंदाज कुछ ऐसा था जैसे चिड़ियाघर दिखाते हुए बच्चों से कहा जाता है - "ये देखो बंदर।"

### कृति ई (२) : आकलन कृति

(१) किसने, किससे कहा?

(i) "ये देखो चाचा जी!"

उत्तर: सोनाबाई ने अपने बच्चों से कहा।

(ii) ''कहिए अब दर्द कैसा है?''

उत्तर: ऑफिस के बड़े बाबू ने लेखक से कहा।

(२) कारण लिखिए।

(i) ऑफिस के बड़े बाबू ने लेखक की टूटी हुई टाँग के हिस्से को दबाना शुरू किया।

उत्तर: जब वे अस्पताल में आए थे; तब लेखक सो गया था। लेखक को पता चले कि वे आए हैं इसलिए ऑफिस के बड़े बाबू ने लेखक की टूटी टाँग के हिस्से को दबाना शुरू किया।

(ii) औपचारिकता निभाने वालों के पास हमदर्दी नहीं होती।

उत्तर: क्योंकि वे सिर्फ मरीज़ को अपनी सूरत दिखाने आते हैं।

### कृति ई (३): शब्द संपदा

(१) परिच्छेद में से शब्द-युग्म छाँटकर लिखिए।

उत्तर: (i) धीरे-धीरे

(२) विलोम शब्द लिखिए।

(i) सोना × ..... (ii) धीरे-धीरे × .....

उत्तर: (i) जागना (ii) जल्दी-जल्दी

(३) समानार्थी शब्द लिखिए।

(i) आँख (ii) मरीज़ (iii) दुर्घटना (iv) अंदाज

उत्तर: (i) नयन (ii) रोगी (iii) हादसा (iv) अनुमान

(४) वचन बदलिए ।

(i) दुर्घटना (ii) औपचारिकता

उत्तर: (i) दुर्घटनाएँ (ii) औपचारिकताएँ

(५) लिंग बदलिए।

(i) बंदर (ii) चाचा (iii) बाबू

उत्तर: (i) बंदरिया (ii) चाची (iii) बबुआइन

*(६) शब्द समूह के लिए एक शब्द बनाइए।

(i) जहाँ विविध पशु-पक्षी रखे जाते हैं -

उत्तर: चिड़ियाघर

### कृति ई (४): स्वमत अभिव्यक्ति

*(१) 'मरीज़ से मिलने जाते समय कौन-कौन-सी सावधानियाँ बरतनी चाहिए लिखिए।

उत्तर: मरीज़ यानी अस्पताल में भरती बीमार व्यक्ति, जो किसी बीमारी से ग्रस्त है या उसकी सर्जरी हुई हो या फिर किसी दुर्घटना में आहत हुआ हो। औपचारिकता यही है कि हम मरीज को मिलने जाते समय सावधानी बरतें। बच्चों को अपने साथ न ले जाएँ। अस्पताल में प्रवेश करने से पहले अपने मोबाइल फोन बंद या सायलेंट मोड पर रखें। बहुत ही कम और धीमी आवाज में बोलें। मरीज़ के कक्ष में आकर उससे दूर खड़े रहकर आवश्यक बातें करें। वहाँ पर अधिक समय तक न रुकें। स्वयं के कारण मरीज़ को किसी भी प्रकार की तकलीफ न हो, इसका ध्यान रखें।

## प्रश्न ५ (उ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति उ (१): आकलन कृति

*(१) आकृति पूर्ण कीजिए ।

**अस्पताल में आए सोनाबाई के बच्चों की शरारतें**

- एक बच्चा कुर्सी पर चढ़ा।
- दूसरा बच्चा टेबल पर चढ़ा।
- छोटी लड़की दवा की शीशी लेकर कथकली डांस करने लगी और बाद में उसने दवा की शीशी पटक दी।
- एक लड़का लेखक की टाँग के साथ लटक रही रेती की थैली पर बॉक्सिंग की प्रैक्टिस करने लगा।

(२) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों –

(i) दवा की शीशी (ii) बच्चे

उत्तर: (i) लड़की ने क्या पटक दी?

(ii) कौन खेल रहे थें?

*गद्यांश ५ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक ११-१२*

बच्चे खेलने लगे। एक कुर्सी पर चढ़ा तो दूसरा मेज पर। सोनाबाई की छोटी लड़की दवा की शीशी लेकर कथकली डांस करने लगी। रप-रप की आवाज ने मेरा ध्यान बँटाया। क्या देखता हूँ कि सोनाबाई का एक लड़का मेरी टाँग के साथ लटक रही रेती की थैली पर बॉक्सिंग की प्रैक्टिस कर रहा है। मैं इसके पहले कि उसे मना करता, सोनाबाई की लड़की ने दवा की शीशी पटक दी। सोनाबाई ने एक पल लड़की को घूरा, फिर हँसते हुए बोली- ''भैया, पेड़े खिलाओ, दवा गिरना शुभ होता है। दवा गई समझो बीमारी गई।'' इसके दो घंटे बाद सोनाबाई गई, यह कहकर कि फिर आऊँगी। मैं भीतर तक काँप गया।

कुछ लोग तो औपचारिकता निभाने की हद कर देते हैं, विशेष कर वे रिश्तेदार जो दूसरे गाँवों से मिलने आते हैं। ऐसे में एक दिन एक टैक्सी कमरे के सामने रुकी। उसमें से निकलकर एक आदमी आते ही मेरी छाती पर सिर रखकर औंधा पड़ रोने लगा और कहने लगा- ''हाय, तुम्हें क्या हो गया? कारवालों का सत्यानाश हो!'' मैंने दिल में कहा कि मुझे जो हुआ सो हुआ, पर तू क्यों रोता है, तुझे क्या हुआ? वह थोड़ी देर मेरी छाती में मुँह गड़ाए रोता रहा। फिर रोना कुछ कम हुआ। उसने मेरी छाती से गरदन हटाई और जब मुझसे आँख मिलाई, तो एकदम चुप हो गया। फिर धीरे-से हँसते हुए बोला- ''माफ करना, मैं गलत कमरे में आ गया था। आज कल लोग ठीक से बताते भी तो नहीं। गुप्ता जी का कमरा शायद बगल में है। हें-हें-हें! अच्छा भाई, माफ करना।'' कहकर वह चला गया। अब वही रोने की आवाज मुझे पड़ोस के कमरे से सुनाई पड़ी। मुझे उस आदमी से अधिक गुस्सा अपनी पत्नी पर आया क्योंकि इस प्रकार रोता देख पत्नी ने उसे मेरा रिश्तेदार या करीबी मित्र समझकर टैक्सीवाले को पैसे दे दिए थे।

**कृति उ (२): आकलन कृति**

**(१) कारण लिखिए।**

***(i) लेखक को अधिक गुस्सा अपनी पत्नी पर आया।**

उत्तर: क्योंकि आदमी को रोता देखकर उसकी पत्नी को लगा कि वह उसके पति का रिश्तेदार या करीबी मित्र होगा। इसी कारण उसने टैक्सीवाले को पैसे दे दिए थे।

**(ii) लेखक भीतर तक काँप गया।**

उत्तर: क्योंकि जाते समय सोनाबाई ने लेखक से कहा था कि वह फिर से उसे मिलने आएगी।

**(२) किसने, किससे कहा?**

**(i) ''दवा गिरना शुभ होता है।''**

उत्तर: सोनाबाई ने लेखक से कहा।

**(ii) ''माफ करना, मैं गलत कमरे में आ गया था।''**

उत्तर: लेखक के कमरे में गलती से घुस आए आदमी ने लेखक से कहा।

**कृति ङ (३): व्याकरण कृति**

**(१) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।**

(i) बोतल (ii) संबंधी
(iii) क्रोध (iv) बीवी

उत्तर: (i) शीशी (ii) रिश्तेदार (iii) गुस्सा (iv) पत्नी

**(२) परिच्छेद में प्रयुक्त विदेशी शब्द लिखिए।**

उत्तर: (i) डांस (ii) बॉक्सिंग
(iii) प्रैक्टिस (iv) टैक्सी

**(३) 'रिश्तेदार' इस शब्द में 'दार' प्रत्यय है। 'दार' यह प्रत्यय लगाकर अन्य दो शब्द बनाइए।**

(i) जमा + दार = जमादार (ii) सर + दार = सरदार

**(४) लिंग बदलिए।**

(i) आदमी (ii) भाई

उत्तर: (i) औरत (ii) बहन

**(५) वचन बदलिए।**

(i) शीशी (ii) कमरा

उत्तर: (i) शीशियाँ (ii) कमरे

**(६) विलोम शब्द लिखिए।**

(i) शुभ × ..... (ii) औपचारिकता × .....

उत्तर: (i) अशुभ (ii) अनौपचारिकता

**कृति उ (४): स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) 'क्या वास्तव में शुभ-अशुभ ऐसा कुछ होता है?' इस विषय पर अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: जी नहीं, वास्तव में शुभ-अशुभ ऐसा कुछ नहीं होता है। शुभ-अशुभ लोगों की मानसिकता पर निर्भर होता है। ईश्वर ने यह प्यारी-सी दुनिया बनाई है और इस दुनिया में जो कुछ उपलब्ध है यह सब ईश्वर की ही देन है। इसलिए किसी चीज से संबंधित या कुछ घटित होने से संबंधित अपनी व्यक्तिगत अच्छी या बुरी राय बना लेना उचित नहीं है। लोग कहते हैं कि यदि बिल्ली रास्ता काट देती है तो बुरा होता है। वास्तव में ऐसा कुछ भी नहीं है। बिल्ली भी तो एक जीव है और उसे भी स्वच्छंद विचरण करने का अधिकार होता है। उसी प्रकार हाथ से दवाई का गिरना यानी बीमारी का दूर भागना या शुभ होना, ऐसा जिनका मानना है; वह भी गलत होता है। आज विज्ञान व तकनीकी का तेजी से प्रचार व प्रसार हो रहा है। लोगों की मानसिकता में बदलाव आना शुरू हुआ है। यह बहुत अच्छी बात है।

**प्रश्न ६ (ऊ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति ऊ (१): आकलन कृति**

**(१) गद्यांश पढ़कर वाक्य पूर्ण कीजिए।**

**(i) जिनकी सूरत व्यक्ति देखना नहीं चाहता —**

उत्तर : वह हमदर्दी जताने के लिए उससे जरूर मिलने आएँगे।

**(ii) लपकानंद जी से सभी परेशान हैं —**

उत्तर : क्योंकि वे जब भी किसी से मिलते हैं तो उसे अपनी बेतुकी कविताएँ सुनाकर परेशान करते हैं।

***(२) कारण लिखिए।**

**लेखक कहते हैं कि मेरी दूसरी टाँग उस जगह तोड़ना जहाँ पर कोई परिचित न हो।**

उत्तर : क्योंकि अस्पताल में हमदर्दी जताने आने वाले बड़े बेदर्द होते हैं। वे मरीज़ को परेशान कर देते हैं।

*गद्यांश ६ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक १२*

हमदर्दी जताने वालों में वे लोग जरूर आएँगे, जिनकी हम सूरत भी नहीं देखना चाहते। हमारे शहर में एक कवि हैं, श्री लपकानंद जी। उनकी बेतुकी कविताओं से सारा शहर परेशान है। मैं अक्सर उन्हें दूर से देखते ही भाग खड़ा होता हूँ। जानता हूँ, जब भी मिलेंगे दस-बीस कविताएँ पिलाए बिना नहीं छोड़ेंगे। एक दिन बगल में झोला दबाए आ पहुँचे। आते ही कहने लगे- ''मैं तो पिछले चार-पाँच दिनों से कवि सम्मेलनों में अति व्यस्त था। सच कहता हूँ। कसम से, मैं आपके बारे में ही सोचता रहा। रात भर मुझे नींद नहीं आई और हाँ, रात को इसी संदर्भ में यह कविता बनाई...।'' यह कह झोले में से डायरी निकाली और लगे सुनाने-

''असम की राजधानी है शिलाँग
मेरे दोस्त की टूट गई है टाँग
मोटरवाले, तेरी ही साइड थी राँग।''

कविता सुनाकर वे मुझे ऐसे देख रहे थे, मानो उनकी एक आँख पूछ रही हो- 'कहो, कविता कैसी रही?' और दूसरी आँख पूछ रही हो- 'बोल, बेटा! अब भी मुझसे भागेगा?' मैंने उन्हें जल्दी से चाय पिलाई और फिर कविताएँ सुनने का वादा कर बड़ी मुश्किल से उन्हें विदा किया।

अब मैं रोज ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि हे ईश्वर! अगर तुझे मेरी दूसरी टाँग भी तोड़नी हो तो जरूर तोड़ मगर कृपा कर उस जगह तोड़ना जहाँ मेरा कोई भी परिचित न हो, क्योंकि बड़े बेदर्दी होते हैं ये हमदर्दी जताने वाले।

**कृति ऊ (२): आकलन कृति**

**(१) उचित घटना-क्रम के अनुसार वाक्य फिर से लिखिए।**

**(i) वे एक दिन बगल में झोला दबाए आ पहुँचे।**

**(ii) हमारे शहर में एक कवि हैं श्री लपकानंद जी।**

**(iii) कहने लगे कि कविता कैसी रही?**

(iv) वे सभी को अपनी कविताएँ सुनाते हैं।

उत्तर : (i) हमारे शहर में एक कवि हैं श्री लपकानंद जी।
(ii) वे सभी को अपनी कविताएँ सुनाते हैं।
(iii) वे एक दिन बगल में झोला दबाए आ पहुँचे।
(iv) कहने लगे कि कविता कैसी रही?

(२) समझकर लिखिए ।

(i)

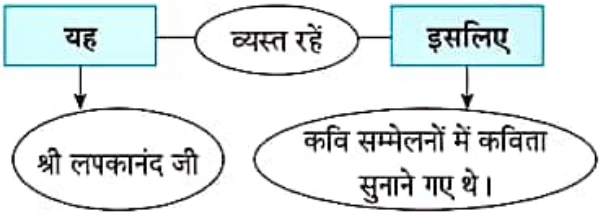


(ii) असम की राजधानी : शिलाँग

(३) निम्नलिखित वाक्य सत्य हैं या असत्य लिखिए।

(i) हमदर्दी जताने वाले अच्छे होते हैं।

(ii) लपकानंद जी की कविता शहर के लोगों को अच्छी नहीं लगती थी।

उत्तर : (i) असत्य (ii) सत्य

### कृति ऊ (३) : शब्द संपदा

(१) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

(i) परिचित × ..... (ii) रातभर × .....
(iii) शहर × ..... (iv) मुश्किल × .....

उत्तर : (i) अपरिचित (ii) दिनभर (iii) गाँव (iv) आसान

(२) लिंग बदलिए।

(i) कवि (ii) बेटा

उत्तर : (i) कवयित्री (ii) बेटी

(३) निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय लगाइए।

(i) परेशान (ii) कृपा

उत्तर : (i) प्रत्यय : ई; शब्द : परेशानी
(ii) प्रत्यय : लु; शब्द : कृपालु

(४) निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग अलग करके लिखिए।

(i) बेतुकी (ii) हमदर्दी

उत्तर : (i) उपसर्ग : बे (ii) उपसर्ग : हम

(५) निम्नलिखित वाक्यों में उचित विरामचिह्नों का प्रयोग कीजिए।

(i) क्या बताऊँ तुम्हें मैं पिछले चार पाँच दिनों से कवि सम्मेलनों में इतना व्यस्त रहा मुझे तुम्हें मिलने आने का मौका ही नहीं मिला

उत्तर : ''क्या बताऊँ तुम्हें, मैं पिछले चार-पाँच दिनों से कवि सम्मेलनों में इतना व्यस्त रहा, मुझे तुम्हें मिलने आने का मौका ही नहीं मिला।''

(ii) हाय राम बड़ी मुश्किल से जान बचाई मैंने कवि लपकानंद जी से

उत्तर : ''हाय राम! बड़ी मुश्किल से जान बचाई मैंने, कवि लपकानंद जी से।''

### कृति ऊ (४) : स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'अंगदान-श्रेष्ठ दान होता है।' इस विषय से संबंधित अपने विचार लिखिए।

उत्तर : २१ वीं सदी में विज्ञान एवं तकनीकी में इतनी प्रगति हो गई है कि हम उसके बारे में सोच भी नहीं सकते हैं। आज दृष्टिहीन व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति की आँख दी जा सकती है। एक व्यक्ति का हृदय दूसरे व्यक्ति को दान किया जाता है। इतना ही नहीं, मानव शरीर का प्रत्येक अंग दूसरे व्यक्ति के शरीर में प्रत्यारोपित किया जा सकता है। अत: प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह अपनी मृत्यु से पहले अपने अंगों का दान करें, ताकि उसकी मृत्यु के बाद उसके अंग जरूरतमंदों के काम आ सकें। ऐसा करने से कई दृष्टिहीन व्यक्तियों को रोशनी मिल सकती है। अंग-दान एक परोपकार का कार्य है। जो व्यक्ति अंग दान करता है; वह अमरता की ओर बढ़ता है। इससे बढ़कर और कोई दान नहीं हो सकता।

## स्वाध्याय विषयक कृतियाँ

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

*(१) संजाल पूर्ण कीजिए।

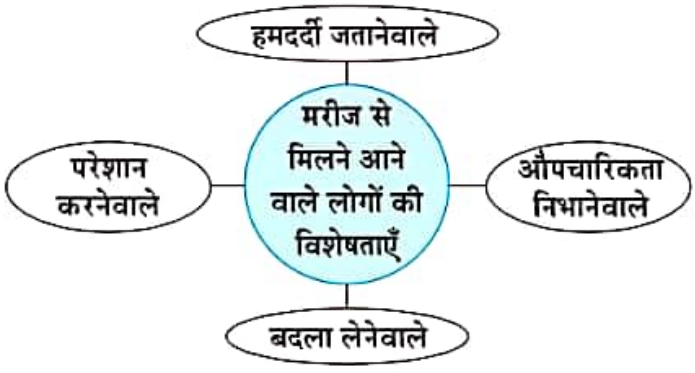


*(६) शब्द बनाइए।

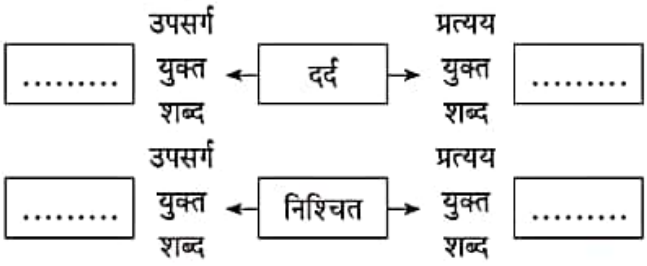


उत्तर :

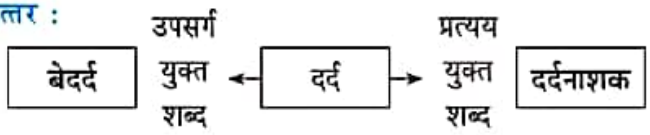

## भाषाबिंदु

***(१) निम्नलिखित वाक्यों में आए हुए संज्ञा शब्दों को रेखांकित करके उनके भेद लिखिए।**

(i) सोनाबाई अपने चार बच्चों के साथ आई।
(ii) गाय बहुत दूध देती है।
(iii) मैं रोज ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।
(iv) सैनिकों की टुकड़ी आगे बढ़ी।
(v) सोना-चाँदी और भी महँगा होता जा रहा है।
(vi) गोवा देख मैं तरंगायित हो उठा।
(vii) युवकों का दल बचाव कार्य में लगा था।
(viii) आपने विदेश में भ्रमण तो कर लिया है।
(ix) इस कहानी में भारतीय समाज का चित्रण मिलता है।
(x) सागर का जल खारा होता है।

उत्तर : (i) **सोनाबाई** : व्यक्तिवाचक संज्ञा, **बच्चों** : जातिवाचक संज्ञा
(ii) **गाय** : जातिवाचक संज्ञा **दूध** : द्रव्यवाचक संज्ञा
(iii) **ईश्वर** : जातिवाचक संज्ञा **प्रार्थना** : भाववाचक संज्ञा
(iv) **सैनिकों** : जातिवाचक संज्ञा **टुकड़ी** : समूहवाचक संज्ञा
(v) **सोना-चाँदी** : द्रव्यवाचक संज्ञा
(vi) **गोवा** : व्यक्तिवाचक संज्ञा **तरंगायित** : भाववाचक संज्ञा
(vii) **युवकों** : जातिवाचक संज्ञा **दल** : समूहवाचक संज्ञा
(viii) **विदेश** : जातिवाचक संज्ञा
(ix) **कहानी** : जातिवाचक संज्ञा **समाज** : जातिवाचक संज्ञा
(x) **सागर** : जातिवाचक संज्ञा **जल** : द्रव्यवाचक संज्ञा

***(२) पाठ में प्रयुक्त किन्हीं पाँच संज्ञाओं को ढूँढ़कर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

उत्तर :
(i) **जोश** : उसने जोश में आकर कहा कि वह काम नहीं करेगा।
(ii) **इंसानियत** : इंसानियत से बढ़कर कोई धर्म नहीं होता।
(iii) **शीशी** : वह एक शीशी में दवा लेकर आया।
(iv) **लपकानंद जी** : लपकानंद जी हिंदी में कविता लिखते हैं।
(v) **असम** : असम एक राज्य है।

***(३) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों में उचित सर्वनामोंका प्रयोग कीजिए।**

(i) ..... सार्वजनिक अस्पताल के प्राइवेट वार्ड में हैं।
(ii) ..... बाजार जाओ।
(iii) ..... कारखाने में एक ही विभाग में काम करते थे।
(iv) इसे लेकर ..... क्या करोगे ?
(v) हृदय ..... है; ..... उदार हो।
(vi) लोग ..... कमरा स्वच्छ कर रहे हैं।
(vii) ..... रिसॉर्ट हमने पहले से बुक कर लिया है।
(viii) इसके बाद ..... लोग दिन भर पणजी देखते रहे।
(ix) ..... इसके पहले उसे मना करता।
(x) काम करने के लिए कहा है, ..... करो।

उत्तर : (i) **आप** (ii) **तुम** (iii) **वे** (iv) **तुम** (v) **वही, जो** (vi) **उनका** (vii) **वह** (viii) **वे** (ix) **मैं** (x) **वह**

***(४) पाठ में प्रयुक्त सर्वनाम ढूँढ़कर उनका स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

उत्तर : (i) **मैं** - मैं गाँव जाता हूँ।
(ii) **मेरे** - मेरे घर के पास एक मंदिर है।
(iii) **मैंने** - मैंने एक सपना देखा।
(iv) **आप** - आप यहाँ बैठिए।
(v) **मुझे** - मुझे काम चाहिए।
(vi) **वे** - वे चले गए।
(vii) **उसे** - पता नहीं, उसे क्या हो गया।
(viii) **तुझे** - तुझे क्या चाहिए ?
(ix) **उस** - उस व्यक्ति का नाम क्या है ?
(x) **उसने** - उसने सभी को अपने जन्मदिन पर बुलाया।

## उपयोजित लेखन

**(१) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर किसी समारोह का वृत्तांत लेखन कीजिए।**

- स्थान
- तिथि और समय
- प्रमुख अतिथि
- समारोह
- अतिथि संदेश
- समापन

**गणतंत्र दिवस का वृत्तांत**

**दिनांक २७ जनवरी, २०१८ : शारदा विद्यालय, मुंबई:** दिनांक २६ जनवरी, २०१८ के दिन सुबह ७ बजे शारदा विद्यालय में गणतंत्र दिन का आयोजन किया गया। सुबह ७ बजे समारोह की शुरुआत हुई। समारोह के प्रमुख अतिथि के रूप में गृह राज्यमंत्री श्री रामविलास शिंदे उपस्थित थे। जैसे ही प्रमुख अतिथि महोदय जी का आगमन हुआ, वैसे ही स्कूल बैंड व स्काउट के छात्र-छात्राओं ने उनका भव्य स्वागत किया। सुबह ठीक ७ बजकर १५ मिनट पर तिरंगे को सलामी दी गई और राष्ट्रगीत का संगीत के साथ गान किया गया। स्कूल प्रधानाचार्य जी ने अतिथि महोदय को पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। विद्यालय की कक्षा ९ वीं के छात्र-छात्राओं ने 'मेरा देश महान' यह लघु नाटक प्रस्तुत किया। कक्षा १० वीं के छात्र-छात्राओं ने 'मेरे देश की धरती' इस गीत पर नृत्य पेश कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रमुख अतिथि महोदय जी ने अपने जोशीले भाषण से सभी का हृदय जीत लिया और सभी को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने अपने भाषण के माध्यम से देशप्रेम, शांति, मानवता आदि मूल्यों से छात्रों को परिचित करवाया। इसके बाद स्कूल विद्यार्थीप्रमुख ने सुबह ठीक ९:३० बजे सभी को धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

❖❖❖

# ४ मन

*- विकास परिहार (१९८३)*

## कवि-परिचय

**जीवन-परिचय** : विकास जी का जन्म मध्य प्रदेश के गुना में हुआ है। हाइकु कविता लिखने वाले ये एक प्रसिद्ध कवि हैं। सन् २००० से २००६ तक इन्होंने भारतीय वायुसेना में नौकरी की है। पत्रकारिता के क्षेत्र में भी इन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया है। हिंदी साहित्य में इनकी विशेष रुचि है। परिहार जी नाट्य गतिविधियों में भी संलग्न हैं।

## पद्य-परिचय

**हाइकु** : हाइकु एक जापानी काव्य विधा है। हाइकु यानी तीन पंक्तियों की कविता होती है। यह विश्व की एक सबसे लघु कविता कही जाती है। हाइकु कविता ५ + ७ + ५ = १७ वर्ण के ढाँचे में लिखी जाती है। यह कविता आज भारत में सिर्फ हिंदी में ही नहीं; बल्कि मराठी, गुजराती, बंगाली, मलयालम आदि भाषाओं में भी लिखी जाती है।

**प्रस्तावना** : प्रस्तुत हाइकु काव्य के द्वारा कवि विकास परिहार जी ने जीवन में घटित होने वाली छोटी-छोटी समस्याओं को सीमित शब्दों में बाँधकर अपने अनुभवों को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है।

## सारांश

प्रस्तुत कविता में कुल मिलाकर तेरह हाइकु कविताएँ हैं। यह कविता एक ही है परंतु उसमें सम्मिलित हाइकु एक-दूसरे से अलग-अलग हैं। एक की अनुभूति दूसरी से अलग है। ये सारी हाइकु कविताएँ कवि के मन की पीड़ा एवं उदास मन:स्थिति को दर्शाने का कार्य करती हैं। कवि को एक ओर घने अंधकार में चमकता प्रकाश दिखाई देता है, तो किसी ओर जीवन-नैया मँझधार में डावाडोल होती प्रतीत होती है। कवि को अपने विषण्ण मन के खिले हुए फूल से भी प्रेरणा मिलती है, तो कभी आँसू बहाने के बाद कवि का मन शांत हो जाता है। कवि के मन की पीड़ा कभी-कभी इतनी तीव्र हो जाती है कि वह बादल का रूप धारण करके बरसने लगती है। ऐसा लगता है जिंदगी में सब कुछ प्राप्त करने के बावजूद भी कवि की तृष्णा अतृप्त ही रही है।

## शब्दार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| पीड़ा | - व्यथा या वेदना | मछली | - मीन |
| प्रकाश | - रोशनी | मँझधार | - नदी या उसके प्रवाह का मध्यभाग |
| फागुन | - हिंदी महीना | कुंठा | - घोर निराशा |
| खारा जल | - (यहाँ अर्थ) आँसू | विषाद | - अभिलाषा पूरी न होने पर मन में होने वाला खेद या दुख |
| घना | - गहरा | जिजीविषा | - जीवन के प्रति आसक्ति (जीने की इच्छा) |
| काँटा | - कंटक | ओट | - आड़ |
| मौन | - शांत | | |

## भावार्थ

- **घना अंधेरा ..... और अधिक।**

कवि कहते हैं कि व्यक्ति के हृदय में जब कभी घना अंधेरा आता है तो घने अंधेरे में प्रकाश और अधिक चमकता है यानी कि दुख एवं संघर्ष की घड़ी में कवि को सुखरूपी प्रकाश की किरणें तीव्रता से चमकती हुई प्रतीत होती हैं। प्रतिकूल परिस्थिति में भी कवि को अनुकूल स्थिति दिखाई देती है।

- **करते जाओ ..... जीवन सारा।**

कवि कहते हैं कि व्यक्ति को अपना कर्म करना चाहिए। उसे किसी चीज की आस नहीं रखनी चाहिए। व्यक्ति का संपूर्ण जीवन कर्म करते हुए व्यतीत होना चाहिए। उसे फल की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

- **जीवन नैया ................................ सँभाले कौन?**

प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से कवि कहते हैं कि कभी-कभी ऐसी स्थिति बन जाती है कि व्यक्ति की जीवनरूपी नैया मँझधार की संघर्षमय स्थिति में हिलकोरे खाती हुई प्रतीत होती है। उस वक्त व्यक्ति के मन में प्रश्न पैदा होता है की ऐसी संकट की घड़ी में उसे कौन सँभालेगा?

- **रंग-बिरंगे ................................ आया फागुन।**

कवि कहते हैं कि फागुन का महीना अपने साथ रंग-बिरंगे रंग लेकर आता है। वह व्यक्ति के जीवन में खुशियों की बहार ला देता है। वह दुख भुलाकर भी हँसी-खुशी जीने की प्रेरणा देता है।

- **काँटों के बीच ................................ देता प्रेरणा।**

कवि कहते हैं कि प्रकृति इंसान को प्रेरणा देने का अनमोल कार्य करती रहती है। वह मनुष्य के लिए प्रेरक है। जीवन में चारों ओर संकटरूपी काँटे ही काँटे होते हैं। ऐसे में व्यक्ति को उन काँटों के बीच से मार्ग निकालने की प्रेरणा खिलखिलाता फूल ही देता है।

- **भीतरी कुंठा ................................ आई बाहर।**

कवि कहते हैं कि पीड़ित व्यक्ति के हृदय में जो विफलताजन्य घोर निराशा होती है। वह उसके नयनों के द्वार से आँसुओं के रूप में बाहर आती है। व्यक्ति को रोने के बाद राहत मिलती है। उसे सुकून का एहसास होता है।

- **खारे जल से ................................ मन पावन।**

प्रस्तुत कविता में कवि कहते हैं कि व्यक्ति की सारी अभिलाषाएँ पूर्ण नहीं होती हैं। जब व्यक्ति की अभिलाषाएँ पूर्ण नहीं होती हैं; तब वह हृदय से दुखी हो जाता है। ऐसे में व्यक्ति के पास आँसू बहाने के अलावा अन्य साधन शेष नहीं रहता है। वह आँसू बहाता है जिस कारण उसके मन के सारे विषाद अपने आप धुल जाते हैं और उसका मन पवित्र हो जाता है।

- **मृत्यु को जीना ................................ है जिजीविषा।**

कवि कहते हैं कि जिसको जीवन मिलता है उसकी मृत्यु भी तो निश्चित होती है। फिर भी व्यक्ति को पास जीवन जीने की प्रबल इच्छा होती है। हर व्यक्ति जीवन से प्यार करता है। देखा जाए तो जीवन क्षणभंगुर है; फिर भी व्यक्ति इस जीवनरूपी विष को पीना चाहता है। वह मरना नहीं चाहता, लेकिन यह संभव नहीं है।

- **मन की पीड़ा ................................ बरसीं आँखें।**

कवि कहते हैं कि व्यक्ति अपने मन में दुख को कब तक सँभालकर रख सकता है? आखिर में उसके हृदय की पीड़ा काले बादलों का रूप धारण कर लेती है और आँसुओं के रूप में प्रस्तुत होती है।

- **चलतीं साथ ................................ फिर भी मौन।**

कवि कहते हैं कि व्यक्ति इस संसार में अकेला आता है और अकेला चला जाता है। कोई किसी का नहीं होता। दुख में व्यक्ति का साथ कोई नहीं देता है। जिस प्रकार रेल की पटरियाँ एक साथ तो चलती हैं; फिर भी एक-दूसरे से मिलती नहीं है। उन्हें एक-दूसरे से कोई सरोकार नहीं होता। वे सदैव मौन साधे रहती हैं।

- **सितारे छिपे ................................ सूना आकाश।**

कवि कहते हैं कि आसमान में सितारे होते हैं परंतु बादल छा जाने के कारण वे उनकी ओट में छिप जाते हैं और आसमान सूना हो जाता है। इसी तरह मनुष्य जीवन भी होता है। व्यक्ति जीवन में कड़ी मेहनत करता रहता है, फिर भी भाग्य साथ नहीं देता तो उसे कोई कर्मफल प्राप्त नहीं होता। जिससे वह निराश हो जाता है और उसका जीवन सूने पन से भर जाता है।

- **तुमने दिए ................................ हुए अमर।**

कवि कहते हैं कि ईश्वर से बढ़कर इस दुनिया में कोई अन्य शक्ति नहीं होती। ईश्वर ने ही व्यक्ति के जीवन रूपी गीतों को स्वर प्रदान किए हैं यानी जीवन जीने की शक्ति प्रदान की है। यही कारण है कि व्यक्ति अपने कर्म के कारण ही दुनिया में पहचाना जाता है।

- **सागर में भी ................................ प्यासी ही रही।**

कवि कहते हैं कि मछली सागर में रहती है; फिर भी वह सागर का पानी ग्रहण नहीं करती है। वह प्यासी ही रहती है। इसी प्रकार जीवन रूपी सागर में मानव रूपी मछली सब कुछ प्राप्त कर लेती है; फिर भी जीवन के अंतकाल में वह उन्हें छोड़कर चला जाता है। आखिर यही दुनिया का दस्तूर है।

## MASTER KEY QUESTION SET - 4

**प्रश्न १ (अ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति अ (१) : आकलन कृति**

**(१) उचित जोड़ियाँ मिलाइए।**

| 'अ' | | 'ब' | |
|---|---|---|---|
| (i) | अंधेरा | (क) | चमकता |
| (ii) | प्रकाश | (ख) | सारा |
| (iii) | जीवन | (ग) | घना |

उत्तर: (i - ग), (ii - क), (iii - ख)

**(२) समझकर लिखिए।**

**(i) मन के आंतरिक भावों को व्यक्त करने वाली हाइकु -**

उत्तर: घना अंधेरा चमकता प्रकाश और अधिक।

**(ii) 'फल की अपेक्षा मत करो' यह भाव व्यक्त करने वाली हाइकु -**

उत्तर: करते जाओ पाने की मत सोचो जीवन सारा।

*पद्यांश : १ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक १५*

घना अँधेरा
चमकता प्रकाश
और अधिक।

करते जाओ
पाने की मत सोचो
जीवन सारा।

जीवन नैया
मँझधार में डोले,
सँभाले कौन ?

**(३) कृति पूर्ण कीजिए।**

**(i)**

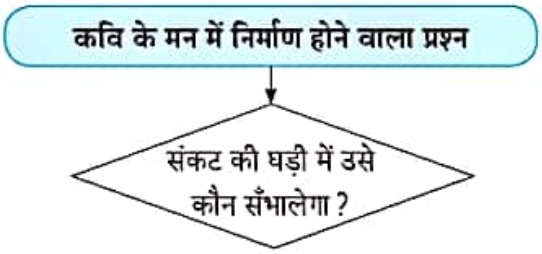


**(४) निम्नलिखित हाइकु द्वारा मिलने वाला संदेश लिखिए।**

***(i) करते जाओ**
**पाने की मत सोचो**
**जीवन सारा**

उत्तर: कर्म करते रहिए। फल की अपेक्षा मत कीजिए।

**(ii) घना अंधेरा**
**चमकता प्रकाश**
**और अधिक**

उत्तर: प्रतिकूल परिस्थिति में भी व्यक्ति को आशा नहीं छोड़नी चाहिए।

**कृति अ (२) : स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) 'कर्म ही जीवन है।' इस विषय पर अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में कर्मशील रहना चाहिए। कर्म करने से व्यक्ति को मनचाहा फल अपने आप प्राप्त हो जाता है। जो मनुष्य कर्म पर आस्था रखता है, वह कर्मशील कहलाता है। हमें अपना काम तन्मयता व एकाग्रता से करना चाहिए। कर्म करने से ही मनुष्य संपत्ति, यश व वैभव पा सकता है। समाज में प्रतिष्ठित व उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करने वाले व्यक्तियों की जीवन शैली का अध्ययन करें, तो उनकी सफलता के पीछे उनके अनवरत संघर्ष एवं परिश्रम के होने का पता चलता है। वे अपने कर्म के कारण ही महान बनते हैं। इसलिए कहा गया है - 'कर्म ही पूजा है।'

**प्रश्न २ (आ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति आ (१) : आकलन कृति**

***(१)**

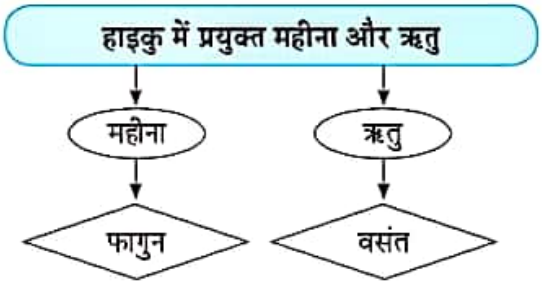


**(२) हाइकु के आधार पर वाक्य पूर्ण कीजिए।**

**(i) व्यक्ति को खिलखिलाता फूल .....**

उत्तर: प्रेरणा देता है।

**(ii) रंग-बिरंगे रंग लेकर .....**

उत्तर: फागुन आता है।

***(३) निम्नलिखित पंक्तियों का केंद्रीय भाव लिखिए।**

**(१) काँटों के बीच**
**खिलखिलाता फूल**
**देता प्रेरणा**

उत्तर: प्रकृति इंसान को प्रेरणा देने का अनमोल कार्य करती रहती है।

*पद्यांश: २ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक १५*

रंग-बिरंगे
रंग-संग लेकर
आया फागुन।

काँटों के बीच
खिलखिलाता फूल
देता प्रेरणा।

भीतरी कुंठा
आँखों के द्वार से
आई बाहर।

(४) निम्नलिखित हाइकु द्वारा मिलने वाला संदेश लिखिए।

*(i) भीतरी कुंठा
नयनों के द्वार से
आई बाहर।

उत्तर: व्यक्ति को रोने के बाद राहत मिलती है। रोने से व्यक्ति का मन हल्का हो जाता है।

*(ii) काँटों के बीच
खिलखिलाता फूल
देता प्रेरणा।

उत्तर: प्रकृति इंसान को प्रेरणा देने का अनमोल कार्य करती रहती है।

(५) सही या गलत पहचानकर गलत वाक्य को सही करके फिर से लिखिए।

(i) रंग-बिरंगे रंग लेकर फागुन/सावन आता है।

उत्तर: रंग-बिरंगे रंग लेकर फागुन आता है।

*(ii) भीतरी कुंठा नयनों/मुख के द्वार से बाहर आती है।

उत्तर: भीतरी कुंठा नयनों के द्वार से बाहर आती है।

### कृति आ (२): स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'प्रकृति इंसान को प्रेरणा देने का अनमोल कार्य करती रहती है।' इस पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर: प्रकृति ईश्वर का दूसरा नाम है। प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। प्रकृति से बढ़कर कोई अन्य श्रेष्ठ गुरू नहीं है। रवींद्रनाथ जी को कविता लिखने की प्रेरणा प्रकृति ने ही प्रदान की। न्यूटन ने जो गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत दुनिया के सामने रखा, उसकी प्रेरणा भी उसे प्रकृति से ही मिली थी। कवि, लेखक और कलाकारों के भाव तभी जागृत होते हैं, जब वह प्रकृति की गोद में और शांत वातावरण में कल्पना करता है। प्रकृति के बिना जीवन में रंग भी नहीं होते। इसलिए कहा गया है कि प्रकृति मानव की 'चीर-सहचरी' है। प्रकृति से हमें जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। बसंत देखकर दिल खुश होता है। सावन में रिमझिम बरसात मन को मोह लेती है। इंद्रधनुष हमारे अंतरंग में रंगीन सपने सजाता है। इस प्रकार प्रकृति हमें मानसिक सुख भी प्रदान करती है।

## प्रश्न ३ (इ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति इ (१): आकलन कृति

(१) समझकर लिखिए।

(i) मन पावन हो जाता है

उत्तर: आँसुओं के द्वारा विषाद धुल जाने से।

(ii) जीवन-विष पीना यानी -

उत्तर: जीवन व मरण सहना।

(२) निम्नलिखित शब्द पढ़कर ऐसे दो शब्द तैयार कीजिए कि जिनके उत्तर निम्न शब्द हों।

(i) बादल (ii) पावन

उत्तर: (i) मन की पीड़ा क्या बनकर छा जाती है?

(ii) विषाद चले जाने से मन कैसा बनता है?

*पद्यांश ३ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक १५-१६*

सारे जल से
धुल गए विषाद
मन पावन।

मृत्यु को जीना
जीवन विष पीना।
है जिजीविषा।

मन की पीड़ा
छाई बन बादल
बरसीं आँखें।

(३) निम्नलिखित हाइकु द्वारा मिलने वाला संदेश लिखिए।

(i) मृत्यु को जीना
जीवन-विष पीना
है जिजीविषा

उत्तर: जिसको जीवन मिलता है, उसकी मृत्यु भी तो निश्चित होती है। फिर भी व्यक्ति को जीवन के प्रति आसक्ति (जीने की इच्छा) होती है।

(ii) मन की पीड़ा
छाई बन बादल
बरसीं आँखें

उत्तर: हृदय की पीड़ा आँसुओं के रूप में प्रस्तुत होती है।

(४) लिखिए।

(i) मन के आंतरिक भावों को व्यक्त करने वाला हायकू -

उत्तर: मन की पीड़ा
छाई बन बादल
बरसीं आँखें।

(ii) जीवन के प्रति आसक्ति व्यक्त करने वाला हायकू -

उत्तर: मृत्यु को जीना
जीवन-विष पीना
है जिजीविषा।

### कृति इ (२): स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'मृत्यु एक अटल सत्य है'। अपने विचार लिखिए।

उत्तर: मृत्यु जीवन का अटल सत्य है। गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है कि जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु निश्चित है। एक दिन सभी को मरना है । हम चाहकर भी मृत्यु का निवारण नहीं कर सकते, अपितु कुछ समय के लिए मृत्यु को कुछ

पीछे धकेला जा सकता है। इसके लिए हमें अपनी दिनचर्या में आसन, व्यायाम, प्राणायाम आदि का समावेश करना पड़ेगा। हमें संतुलित मात्रा में भोजन लेना पड़ेगा। एक दिन मृत्यु होने वाली है, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमें जीवन में अच्छा काम करना चाहिए। अपना जीवन दूसरों की भलाई के लिए समर्पित करना चाहिए। यदि हम ऐसा कर सकें, तो मृत्यु के पश्चात भी हम अमर हो सकते हैं।

**प्रश्न ४ (ई) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति ई (१): आकलन कृति**

**(१) उचित जोड़ियाँ मिलाइए।**

| 'अ' | | 'ब' | |
|---|---|---|---|
| (i) | रेल की पटरियाँ | (क) | प्यासी |
| (ii) | गीतों के स्वर | (ख) | मौन |
| (iii) | मछली | (ग) | सूना |
| (iv) | आकाश | (घ) | अमर |

उत्तर: (i - ख), (ii - घ), (iii - क), (iv - ग)

**(२) निम्नलिखित पंक्तियों का केंद्रीय भाव लिखिए।**

*(i) **चलती साथ**
**पटरियाँ रेल की**
**फिर भी मौन।**

उत्तर: व्यक्ति संसार में अकेला आता है और अकेला चला जाता है। कोई किसी का नहीं होता।

(ii) **सागर में भी**
**रहकर मछली**
**प्यासी ही रही।**

उत्तर: व्यक्ति अपने जीवन-काल में सब कुछ प्राप्त कर लेता है। फिर भी जीवन के अंतकाल में सब कुछ छोड़कर चला जाता है।

*पद्यांश ४ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक १६*

चलती साथ
पटरियाँ रेल की
फिर भी मौन।

सितारे छिपे
बादलों की ओट में
सूना आकाश।

तुमने दिए
जिन गीतों को स्वर
हुए अमर।

सागर में भी
रहकर मछली
प्यासी ही रही।

**(३) वाक्य पूर्ण कीजिए।**

(i) **तब गीत अमर हो जाता है .....**

उत्तर: तब गीत अमर हो जाता है, जब ईश्वर द्वारा उन्हें स्वर दिया जाता है।

(ii) **तब आकाश सूना हो जाता है .....**

उत्तर: तब आकाश सूना हो जाता है, जब सितारे बादलों की ओट में छिप जाते हैं।

***(४) समझकर लिखिए।**

(i) **छिपे हुए** (ii) **अमर हुए**

उत्तर: (i) सितारे (ii) गीत

**(५) निम्नलिखित विधान सत्य हैं या असत्य लिखिए।**

(i) सितारे बादलों की ओट में छिप जाते हैं।

(ii) मछली समुद्र का पानी ग्रहण करती है।

उत्तर: (i) सत्य (ii) असत्य

**कृति ई (२): स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) 'ईश्वर से बढ़कर इस दुनिया में कोई शक्ति नहीं होती।' अपने विचार लिखिए।**

ईश्वर की महिमा अपार होती है। उससे बढ़कर दुनिया में कुछ नहीं होता। मनुष्य के जीवन की सारी हलचल ईश्वर की प्रेरणा से ही होती है। ईश्वर पर भरोसा रखने पर हमारी सारी मनोकामनाएँ पूरी हो जाती हैं। दिन-रात ईश्वर का नाम जपना ईश्वर की कृपा प्राप्त करने का सुलभ मार्ग है। इस दुनिया में जो कुछ है, वह सब ईश्वर का ही दिया हुआ है। व्यक्ति संकटकाल में या अपनी तकलीफों में ईश्वर को पुकारता है, तब ईश्वर किसी-न-किसी रूप में आकर उसकी सहायता अवश्य करते हैं। ईश्वर द्वारा निर्मित प्रकृति इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। इस धरती पर कुदरत के रूप में जो कुछ है, वह सब ईश्वर ही की रचना है। अत: ईश्वर से बढ़कर कोई शक्ति नहीं है।

## स्वाध्याय विषयक कृतियाँ

**प्रश्न: सूचना के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए।**

***(१) परिणाम लिखिए।**

(i) सितारों का छिपना .....

(ii) खारे जल से विषाद का धुल जाना .....

उत्तर: (i) आकाश का सूना होना। (ii) मन का पावन होना।

***(२) उत्तर लिखिए।**

(i) मँझधार में डोले .....

(ii) धुल गए .....

उत्तर: (i) जीवन नैया (ii) विषाद

## उपयोजित लेखन

***(१) वक्तृत्व-प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाने के उपलक्ष्य में आपके मित्र या सहेली ने आपको बधाई पत्र भेजा है, उसे धन्यवाद देते हुए निम्न प्रारूप में पत्र लिखिए।**

दिनांक: .....

संबोधन: .....

अभिवादन: .....

प्रारंभ:

विषय विवेचन:

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

तुम्हारा/तुम्हारी,

.....

नाम: .....

पता: .....

ई-मेल आईडी: .....

१० मई, २०१८

प्रिय मित्र राम,

सप्रेम नमस्ते।

कल ही मैंने समाचार पत्र में पढ़ा कि तुम्हें वक्तृत्व प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला है। यह बहुत ही गर्व की बात है इसलिए तुम्हारा अभिनंदन करने के लिए मैं यह पत्र लिख रहा हूँ। राम तुम बचपन से ही भाषण-कला में निपुण रहे हो। तुम्हारे पास किसी भी विषय पर खुलकर बात करने का कौशल है। तुम वाचन-कौशल में भी निपुण हो। इसी कारण किसी भी विषय पर तुम अपने विचार व्यक्त कर सकते हो। मेरे परिवार वालों ने भी तुम्हारा अभिनंदन किया है।

राम तुम मेरे मित्र हो, इस बात का मुझे बहुत गर्व है। जल्द ही छुट्टियाँ शुरू होने वाली हैं, तब मैं तुमसे भाषण कला के कौशल सीखने वाला हूँ। आशा करता हूँ कि तुम छुट्टियों में मेरे घर अवश्य आओगे।

तुम्हारा प्रिय मित्र,

कुमार राजेश मेहता
२०२, हरि निवास, गांधी नगर,
मुंबई - ४०० १०४.
**ई-मेल आई डी** : rajesh45@gmail.com

❖❖❖

# ५ गोवा : जैसा मैंने देखा

*- विनय शर्मा (१९७३)*

## लेखक-परिचय

**जीवन-परिचय** : लेखक विनय शर्मा हिंदी भाषा के एक आधुनिक लेखक हैं। इनके द्‌वारा लिखे गए ललित निबंध एवं यात्रा संस्मरण आधुनिक हिंदी साहित्य में अपना निजी स्थान बनाने में सफल हुए हैं। इनका अधिकांश लेखन अनुभवों पर आधारित है। इनकी रचनाएँ नियमित रूप से पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहती हैं। इनके द्‌वारा लिखे गए लेखों की भाषा सहज व सरल है।

**प्रमुख कृतियाँ** : 'आनंद का उद्‌गम अमरकंटक' (**ललित निबंध**), 'चित्र की परीक्षा' (**व्यंग्य**), 'अमरनाथ यात्रा : प्रकृति के बीच' 'कोइंबतूर में कुछ दिन' (**यात्रा वृत्तांत**) आदि।

## गद्‌य-परिचय

**यात्रा वर्णन** : यात्रा वर्णन हिंदी साहित्य की एक लोकप्रिय विधा है। यात्रा वृत्तांत किसी एक क्षेत्र की यात्रा के अपने अनुभवों पर आधारित होता है। यात्रा-साहित्य का उद्‌देश्य लेखक के यात्रा अनुभवों को पाठकों के साथ बाँटना और पाठकों को भी यात्रा के लिए प्रेरित करना होता है।

**प्रस्तावना** : 'गोवा : जैसा मैंने देखा' इस यात्रावर्णनपरक पाठ के माध्यम से लेखक विनय शर्मा ने गोवा की खूबसूरती, वहाँ की जीवनशैली एवं वहाँ के सुंदर समुद्री किनारों का वर्णन किया है।

## सारांश

'गोवा' : जैसा मैंने देखा' यह एक यात्रा वृत्तांत है। प्रस्तुत पाठ के माध्यम से लेखक ने गोवा की जीवनशैली एवं वहाँ की खूबसूरती का बहुत ही सुंदर वर्णन किया है। गोवा खूबसूरत रेतीले तट, महँगे होटल एवं जीवनशैली के लिए प्रसिद्‌ध है। लेखक अपने परिवार के साथ गोवा घूमने गए थे। लेखक दक्षिण गोवा के बेनालियम रिसॉर्ट में ठहरे थे। शाम होते ही वे 'बेनालियम बीच' के समुद्री किनारे पर टहलने के लिए गए। वहाँ से समुद्र की खूबसूरती देखकर लेखक फूले न समाए। यह बीच रेतीला तथा उथला था। यह बीच मछुआरों की पहली पसंद है। इस बीच पर घूमते-घूमते जैसे ही सूर्यास्त हुआ, वैसे ही लेखक को समुद्र का स्याह व भयावह चेहरा नजर आया। दूसरे दिन लेखक ने बस से गोवा घूमने की योजना बनाई। वे नीले पानीवाले व पथरीले 'अंजुना बीच' पर पहुँचे। यह बीच बॉलीवुड की पहली पसंद है। घूमते-घूमते लेखक 'कलिंगवुड बीच' पर आए। यह गोवा का सबसे लंबा बीच है। वहाँ पर कई प्रकार के वॉटर स्पोर्ट्स हैं। गोवा में लेखक को नवरात्रि एवं दशहरा पर्व मनाने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। उत्तर भारत में जिस प्रकार नवरात्रि एवं दशहरा पर्व मनाए जाते हैं, उसी प्रकार गोवा में भी ये पर्व मनाए जाते हैं। पश्चिमी फैशन और सभ्यता में रचे-बसे होने के बावजूद भी गोवा ने अपनी सांस्कृतिक परंपरा को बनाए रखा है।

## शब्दार्थ

| | |
|---|---|
| उजास | - उजाला या रोशनी |
| नमी | - गीलापन |
| विरासत | - उत्तराधिकार में मिली धन-सम्पत्ति |
| आशावादिता | - आशावादी होने की अवस्था |
| रोमांचक | - उत्तेजना उत्पन्न करने वाला |
| आत्मसात करना | - अपनाना |
| आबोहवा | - जल-वायु |
| हरीतिमा | - हरियाली |
| खानापूर्ति | - औपचारिकता पूरी करना |
| सैलानी | - सैर-सपाटा करने वाले |
| सुस्वादु | - स्वादिष्ट |

**विशेष**

सी-फूड - समुद्री जीव-जंतुओं से निर्मित भोजन व खाद्‌य पदार्थ

## मुहावरे

| | |
|---|---|
| मन तरंगायित होना | - मन उमंग से भरना। |
| निजात पाना | - मुक्ति पाना। |
| दो चार होना | - जूझना, सामना करना। |
| जेब ढीली होना | - जेब खाली होना, बहुत अधिक खर्च होना। |

## MASTER KEY QUESTION SET - 5

**प्रश्न १ (अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति अ (१) : आकलन कृति**

***(१) कृति पूर्ण कीजिए।**

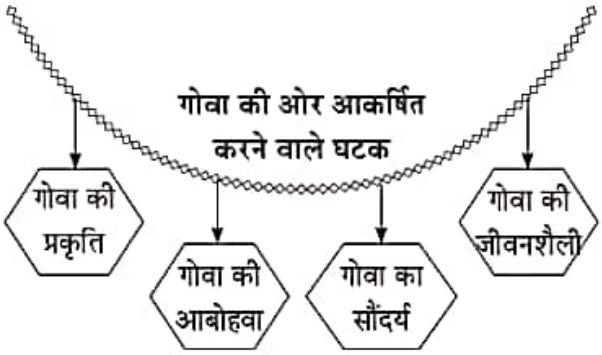


**(२) कारण लिखिए।**

**(i) गोवा की ओर पर्यटक स्वयं खिंचे चले आते हैं।**

**उत्तर:** क्योंकि गोवा की प्रकृति, आबोहवा व जीवनशैली का आकर्षण सभी को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

**(ii) लेखक की यात्रा की सारी थकान मिट गई।**

**उत्तर:** क्योंकि गोवा में बहने वाली शीतल हवा के झोंकों से लेखक का मन प्रसन्न हो गया।

*गद्यांश: १ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. १८*

गोवा! यह नाम सुनते ही सभी का मन तरंगायित हो उठता है और हो भी क्यों न, यहाँ की प्रकृति, आबोहवा और जीवनशैली का आकर्षण ही ऐसा है कि पर्यटक खुद-ब-खुद यहाँ खिंचे चले आते हैं। देश के एक कोने में स्थित होने के बावजूद यह छोटा-सा राज्य प्रत्येक पर्यटक के दिल की धड़कन है। यही कारण है कि मैं भी अपने परिवार के साथ इंदौर से गोवा जा पहुँचा। खंडवा से मेरे साढ़ू साहब भी सपरिवार हमारे साथ शामिल हो गए।

२३ नवंबर को जब गोवा एक्सप्रेस मडगाँव रुकी तो सुबह का उजास हो गया था। एक टैक्सी के हॉर्न ने मेरा ध्यान उसकी ओर खींचा और हम फटाफट उसमें बैठ गए। टैक्सी एक पतली-सी सड़क पर दौड़ पड़ी। शीतल हवा के झोंकों से मन प्रसन्न हो गया और यात्रा की सारी थकान मिट गई। मैं सोचने लगा कि पर्यटन का भी अपना ही आनंद है। जब हम जीवन की कई सारी समस्याओं में जूझ रहे हों तो उनसे निजात पाने का सबसे अच्छा तरीका पर्यटन ही है। बदले हुए वातावरण के कारण मन तरोताजा हो जाता है तथा शरीर को कुछ समय के लिए विश्राम मिल जाता है।

**कृति अ (२) : आकलन कृति**

**(१) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

**(i) मडगाँव** **(ii) साढ़ू साहब**

**उत्तर:** (i) गोवा एक्सप्रेस कहाँ रुकी?

(ii) गोवा की यात्रा करने के लिए लेखक के साथ कौन सपरिवार शामिल हो गए?

**(२) सत्य या असत्य पहचानकर लिखिए।**

(i) **वातावरण में बदलाव आने के कारण लेखक का मन अप्रसन्न हो गया।**

(ii) **लेखक के अनुसार पर्यटन का भी अपना आनंद होता है।**

**उत्तर:** (i) असत्य (ii) सत्य

**कृति अ (३) : शब्द संपदा**

**(१) मानक वर्तनी के अनुसार शब्द शुद्ध कीजिए।**

(i) खीञ्चा (ii) परयटन

**उत्तर:** (i) खींचा (ii) पर्यटन

**(२) विलोम शब्द लिखिए।**

(i) विरोधी × ..... (ii) शीतल × .....

(iii) आकर्षण × ..... (iv) आनंद × .....

**उत्तर:** (i) सहयोगी (ii) उष्ण (iii) अनाकर्षण (iv) शोक

**(३) वचन बदलिए।**

(i) सड़क (ii) टैक्सी

**उत्तर:** (i) सड़कें (ii) टैक्सियाँ

**(४) नीचे दिए हुए शब्दों में उचित प्रत्यय लगाकर शब्द-निर्माण कीजिए।**

(i) शरीर (ii) आनंद

**उत्तर:** (i) **प्रत्यय** : इक : **शब्द** : शारीरिक

(ii) **प्रत्यय** : मय : **शब्द** : आनंदमय

**(५) उपसर्गयुक्त शब्द गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।**

**उत्तर:** (i) सपरिवार - उपसर्ग : स

(ii) निजात - उपसर्ग : नि

**(६) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।**

(i) जीवन जीने का तरीका या पद्धति -

(ii) अलग-अलग स्थानों की यात्रा करने वाला व्यक्ति -

**उत्तर:** (i) जीवनशैली (ii) पर्यटक

**कृति अ (४) : स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) 'पर्यटन का अपना ही आनंद होता है।' इस पर अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:** जी हाँ, पर्यटन का अपना ही आनंद होता है। पर्यटन से व्यक्ति

को नए-नए स्थान एवं उस स्थान की विशेषता के बारे में पता चलता है। व्यक्ति पर्यटन से संबंधित प्रदेश की प्रकृति, आबोहवा और जीवनशैली से परिचित होता है। नए माहौल में आने के कारण उसका मन तरंगायित हो उठता है। बदले हुए वातावरण के कारण व्यक्ति का मन तरोताजा हो जाता है। उसे अपनी सारी समस्याओं से कुछ पलों के लिए निजात मिलती है।

**प्रश्न २ (आ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति आ (१) : आकलन कृति**

**(१) उचित जोड़ियाँ मिलाइए।**

| 'अ' | 'ब' |
|---|---|
| (i) राजधानी | (क) हरीतिमा |
| (ii) खास | (ख) रेतीले तट |
| (iii) खूबसूरत | (ग) जीवनशैली |
| (iv) क्षेत्र | (घ) पणजी |

उत्तर: (i - घ), (ii - ग), (iii - ख), (iv - क)

**(२) निम्नलिखित गलत वाक्यों को सही करके लिखिए।**

(i) **मुंबई का क्षेत्र हरीतिमा से भरपूर है इसलिए वहाँ पर शरीर गोवा जितना चिपचिपाता नहीं।**

उत्तर: गोवा का क्षेत्र हरीतिमा से भरपूर है; इसलिए वहाँ पर शरीर मुंबई जितना चिपचिपाता नहीं।

(ii) **लेखक गोवा में अपने साढ़ू साहब के घर पर रुके थे।**

उत्तर: लेखक गोवा में स्थित कस्बा बेनालियम के एक रिसॉर्ट में रुके थे।

*गद्यांश: २ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. १८*

कुछ देर बाद हमारी टैक्सी मडगाँव से पाँच किमी दूर दक्षिण में स्थित कस्बा बेनालियम के एक रिसॉर्ट में आकर रुक गई। यह रिसॉर्ट हमने पहले से बुक कर लिया था। इसलिए औपचारिक खानापूर्ति कर हम आराम करने के इरादे से अपने-अपने स्यूट में चले गए। इससे पहले कि हम कमरों से बाहर निकलें, मैं आपको गोवा की कुछ खास बातें बता दूँ। दरअसल, गोवा राज्य दो भागों में बँटा हुआ है। दक्षिण गोवा जिला तथा उत्तर गोवा जिला। इसकी राजधानी पणजी मांडवी नदी के किनारे स्थित है। यह नदी काफी बड़ी है तथा वर्ष भर पानी से भरी रहती है। फिर भी समुद्री इलाका होने के कारण यहाँ मौसम में प्राय: उमस तथा हवा में नमी बनी रहती है। शरीर चिपचिपाता रहता है लेकिन मुंबई जितना नहीं; क्योंकि यहाँ का क्षेत्र हरीतिमा से भरपूर है फिर भी धूप तो तीखी ही होती है।

यों तो गोवा अपने खूबसूरत सफेद रेतीले तटों, महँगे होटलों तथा खास जीवन शैली के लिए जाना जाता है लेकिन इन सबके बावजूद यह अपने में एक सांस्कृतिक विरासत भी समेटे हुए है।

**कृति आ (२) : आकलन कृति**

**(१) वाक्यों का उचित क्रम लगाकर वाक्य फिर से लिखिए।**

(i) **लेखक ने रिसॉर्ट पहुँचकर औपचारिक खानापूर्ति की।**

(ii) **लेखक व उनके साथ आए हुए सब लोग आराम करने के लिए अपने-अपने स्यूट में चले गए।**

(iii) **लेखक ने पहले से ही रिसॉर्ट बुक कर लिया था।**

(iv) **लेखक गोवा एक्सप्रेस से मडगाँव उतरे।**

उत्तर: (i) लेखक ने पहले से ही रिसॉर्ट बुक कर लिया था।

(ii) लेखक गोवा एक्सप्रेस से मडगाँव उतरे।

(iii) लेखक ने रिसॉर्ट पहुँचकर औपचारिक खानापूर्ति की।

(iv) लेखक व उनके साथ आए हुए सब लोग आराम करने के लिए अपने-अपने स्यूट में चले गये।

**कृति आ (३) : शब्द संपदा**

**(१) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।**

(i) हरियाली (ii) सरिता

(iii) तन (vi) श्वेत

उत्तर: (i) हरीतिमा (ii) नदी (iii) शरीर (vi) सफेद

**(२) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।**

(i) संस्कृति से संबंधित

(ii) औपचारिकता पूरी करना

उत्तर: (i) सांस्कृतिक (ii) खानापूर्ति

**(३) विलोम शब्द लिखिए।**

(i) धूप × ..... (ii) तीखी × .....

(iii) महँगे × ..... (iv) खास × .....

उत्तर: (i) छाँव (ii) मीठी (iii) सस्ते (vi) साधारण

**कृति आ (४) : स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) 'सांस्कृतिक विरासत देश की धरोहर होती है।' इस कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: किसी भी देश की सांस्कृतिक विरासत उसके लिए धरोहर होती है। सांस्कृतिक विरासत अपनी संस्कृति एवं जीवनशैली को दर्शाने का कार्य करती है। अतीत में देश की स्थिति, कला, स्थापत्य, संग्रहालय आदि के बारे में उचित जानकारी प्राप्त करने का एकमेव साधन सांस्कृतिक विरासत के द्वारा ही होता है। सांस्कृतिक विरासत आने वाली पीढ़ी को अतीत के ज्ञान एवं कलाओं से परिचित कराती है। इतना ही नहीं, देश में आने वाले पर्यटकों के हृदय में भी आकर्षण उत्पन्न करती है। इसलिए कहा जाता है कि सांस्कृतिक विरासत देश की धरोहर होती है।

**प्रश्न ३ (इ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति इ (१) : आकलन कृति**

**(१) समझकर लिखिए।**

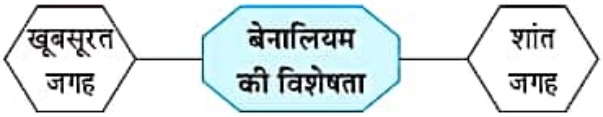


**(२) कारण लिखिए।**

**लेखक को शाम को बीच पर जाना अच्छा लगा।**

**उत्तर:** क्योंकि दिनभर की थकान एवं उमस भरी गरमी के कारण लेखक परेशान हो गया था।

**(३) कृति पूर्ण कीजिए।**

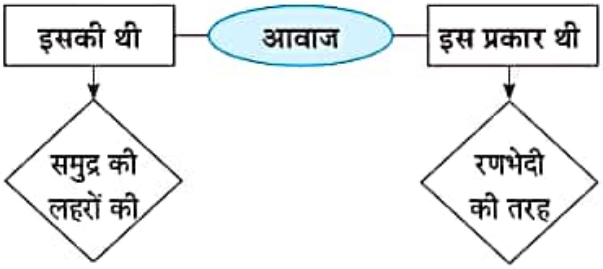


**(४) समझकर लिखिए।**

**(i) जीवन का सत्य**

**उत्तर:** बनने के बाद मिटना ही नियति है।

*गद्यांश: ३ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. १८-१९*

यहाँ की शाम बड़ी अच्छी है तो चलो, इस शाम का आनंद लेने के लिए बेनालियम बीच की ओर चलें। आप भी चलें क्योंकि बहुत ही खूबसूरत तथा शांत जगह है बेनालियम। दिन भर की थकान तथा उमस भरी गरमी के बाद शाम को बीच पर जाना बड़ा अच्छा लग रहा था। रिसॉर्ट से बीच की दूरी कोई एक किमी ही थी लेकिन जल्दी-जल्दी चलने के बाद भी यह दूरी तय हो ही नहीं पा रही थी। अरब सागर देखने का उत्साह बढ़ता ही जा रहा था। तभी अचानक लहरों की आवाज सुनाई दी जो किसी रणभेदी की तरह थी। हम सभी दौड़ पड़े। सड़क पीछे छूट गई थी इसलिए रेत पर तेजी से दौड़ना मुश्किल हो रहा था, फिर भी धँसे हुए पैरों को पूरी ताकत से उठा-उठाकर भाग रहे थे। खूबसूरत समुंदर देखते ही मैं उससे जाकर लिपट गया। इधर बच्चे रेत का घर बनाने में जुट गए। लहरें उनका घर गिरा देतीं तो वे दूसरी लहर आने के पहले फिर नया घर बनाने में जुट जाते। यही क्रम चलता रहा। मैंने इन बच्चों से सीखा कि जीवन में आशावाद हो तो कोई काम असंभव नहीं है। शाम गहराने पर हम किनारे पर बैठ गए। मानो हर लहर कह रही हो कि बनने के बाद मिटना ही नियति है। यही जीवन का सत्य भी है।

**कृति इ (२) : आकलन कृति**

**(१) कारण लिखिए।**

**(i) रेत पर तेजी से दौड़ना मुश्किल हो रहा था क्योंकि -**

**उत्तर:** पैर रेती में धँस जा रहे थे।

**(ii) लेखक समुद्र से लिपट गया।**

**उत्तर:** क्योंकि समुद्र खूबसूरत दिखाई दे रहा था।

**(२) वाक्य पूर्ण कीजिए।**

**(i) जीवन में तब तक कोई भी काम असंभव नहीं होता....**

**उत्तर:** जब तक जीवन में आशावाद हो।

**(ii) लेखक सपरिवार दौड़ पड़े, क्योंकि....**

**उत्तर:** अचानक समुद्र के लहरों की आवाज रणभेदी की तरह सुनाई दी।

**(३) समझकर लिखिए।**

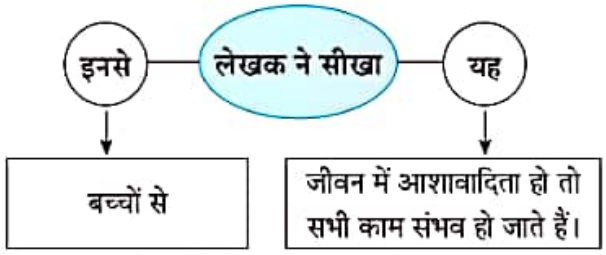


**कृति इ (३) : शब्द संपदा**

**(१) वचन बदलिए।**

(i) लहर (ii) सड़क (iii) बच्चा

**उत्तर:** (i) लहरें (ii) सड़कें (iii) बच्चे

**(२) नीचे लिखे हुए वाक्यों में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए।**

**(i) कितना खूबसूरत दिख रहा था समुंदर**

**उत्तर:** ''कितना खूबसूरत दिख रहा था समुंदर!''

**(ii) क्या आशावाद के बिना काम असंभव होता है**

**उत्तर:** ''क्या आशावाद के बिना काम असंभव होता है?''

**(३) गद्यांश में से तत्सम शब्द ढूँढ़कर लिखिए।**

**उत्तर:** (i) क्रम (ii) सत्य (iii) आशा (iv) दिन

**(४) निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए।**

(i) सत्य (ii) दिन

**उत्तर:** (i) सच (ii) दिवस

**कृति इ (४) : स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) 'जीवन में आशावाद हो तो सभी काम संभव हो जाते हैं।' कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:** 'आशा' मानव जीवन को मिला एक वरदान है। व्यक्ति आशा के सहारे ही जीवित रहता है। 'आज नहीं तो कल अच्छा होगा', यह आशा मानव-हृदय में विराजमान होती है। इसी आशा के सहारे मनुष्य ने आज प्रगति कर ली है। वह चाँद पर जाकर आया है। अब उसे मंगल पर जाने की आशा है। यदि आशा नहीं होती तो मानव अपने जीवन में प्रगति नहीं कर सकता था। आशा ही

मनुष्य के जीवन में इच्छा एवं जिज्ञासा का निर्माण करती रही है। व्यक्ति जीवन में कई बार निराश हो जाता है; असफल होता है, फिर भी वह कोशिश करता रहता है। उसे फिर से कोशिश करने की शक्ति आशा ही प्रदान करती है और अंत में व्यक्ति अपना निर्धारित लक्ष्य पा लेता है।

**प्रश्न ४ (ई) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति ई (१) : आकलन कृति**

**(१) निम्नलिखित गलत वाक्य सही करके फिर से लिखिए।**

(i) **सूर्य देवता के प्रकाश में समुद्र का नया चेहरा नजर आने लगा।**

उत्तर: चंद्रमा की चाँदनी में नहाकर समुद्र का नया चेहरा नजर आने लगा।

(ii) **हमने कार से गोवा घूमने की योजना बनाई।**

उत्तर: हमने बस से गोवा घूमने की योजना बनाई।

**(२) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

(i) **पक्षी** (ii) **बाइक**

उत्तर: (i) मछलियों का शिकार करने के लिए कौन मँडरा रहे थे?

(ii) गोवा में घूमने-फिरने के लिए कौन-सा वाहन किराए पर मिल जाता है?

*गद्यांश: ४ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. १९-२०*

यहाँ एक मजेदार दृश्य भी देखने को मिला। लहरों की आवाज के बीच पक्षियों की टीं-टीं-टीं की आवाज भी आपका ध्यान अपनी ओर खींच लेती है। दरअसल, ये पक्षी लहरों के साथ बहकर आई मछलियों का शिकार करने के लिए किनारे पर ही मँडराते रहते हैं लेकिन जब तेज हवा के कारण एक ही दिशा में सीधे नहीं उड़ पाते हैं तो सुस्ताने के लिए किनारे पर बैठ जाते हैं। यहाँ बैठे कुत्तों को इसी बात का इंतजार रहता है। मौका मिलते ही वे इनपर झपट पड़ते हैं लेकिन बेचारे कुत्तों को सफलता कम ही मिल पाती है। पक्षियों का बैठना, कुत्तों का दौड़ना और पक्षियों का टीं-टीं-टीं कर उड़ जाना, यह दृश्य सैलानियों का अच्छा मनोरंजन करता है। इधर जैसे ही सूर्य देवता ने विदा ली वैसे ही चंद्रमा की चाँदनी में नहाकर समुद्र का नया ही चेहरा नजर आने लगा। अब समुद्र स्याह और भयावह दिखने लगा।

अगले दिन हमने बस से गोवा घूमने की योजना बनाई। वैसे घूमने-फिरने के लिए यहाँ बाइक आदि किराए पर मिल जाती है और उन पर ही घूमने का मजा भी आता है लेकिन बच्चों के कारण हमने बस से जाना मुनासिब समझा। यहाँ 'सी फूड' की अधिकता होने के कारण शाकाहारी पर्यटकों को सुस्वादु भोजन की समस्या से भी दो-चार होना पड़ता है। काफी भटकने के बाद अच्छा भोजन मिल गया तो समझो किस्मत और जेब तो ढीली हो ही गई। यह समस्या हमें पहले से पता थी। इसलिए हम अपने रिसॉर्ट के स्यूट में उपलब्ध किचन में ही भोजन करते थे।

**कृति ई (२) : आकलन कृति**

**(१) कृति पूर्ण कीजिए।**

(i)

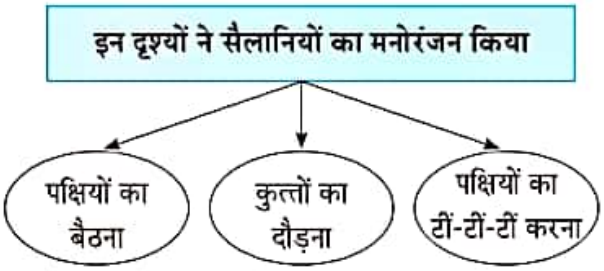


(ii)

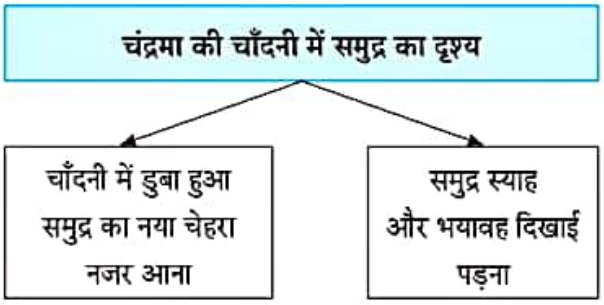


**(२) कारण लिखिए।**

(i) **पक्षी सुस्ताने के लिए किनारे पर बैठ जाते थे।**

उत्तर: पक्षी मछलियों का शिकार करने के लिए किनारे पर मँडरा रहे थे। परंतु तेज हवा के कारण एक ही दिशा में सीधे नहीं उड़ पाते थे। इसलिए पक्षी सुस्ताने के लिए किनारे पर बैठ जाते थे।

(ii) **पर्यटकों को सुस्वादु भोजन की समस्या के लिए दो-चार होना पड़ता है।**

उत्तर: क्योंकि गोवा में 'सी फूड' की अधिकता होती है।

**कृति ई (३) : शब्द संपदा**

**(१) परिच्छेद में से शब्द-युग्म छाँटकर लिखिए।**

उत्तर: (i) टीं-टीं-टीं (ii) घूमने-फिरने (iii) दो-चार

**(२) विलोम शब्द लिखिए।**

(i) शाकाहारी × ..... (ii) उपलब्ध × .....

उत्तर: (i) मांसाहारी (ii) अनुपलब्ध

**(३) समानार्थी शब्द लिखिए।**

(i) हवा (ii) किनारा (iii) पक्षी (iv) कुत्ता (v) किस्मत

उत्तर: (i) वायु (ii) तट (iii) खग (iv) श्वान (v) भाग्य

**(४) वचन बदलिए।**

(i) हवा (ii) मछली (iii) समस्या

उत्तर: (i) हवाएँ (ii) मछलियाँ (iii) समस्याएँ

**(५) लिंग बदलिए।**

(i) देवता (ii) कुत्ता

उत्तर: (i) देवी (ii) कुतिया

**(६) परिच्छेद में से विदेशी शब्द छाँटकर लिखिए।**

उत्तर: (i) स्यूट (ii) रिसॉर्ट (iii) सी फूड (iv) बाइक

### कृति ई (४) : स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'सूर्यास्त के समय समुद्र के किनारे पर घूमना मन को लुभाता है।' इस पर अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: सूर्यास्त के समय समुद्र के किनारे घूमना सोने पे सुहागा जैसी बात है। सूर्यास्त का नजारा सभी को भाता है। ऐसे में सूर्यास्त के समय समुद्र के किनारे की सैर करना बहुत ही आनंददायी होता है। शाम के वक्त सूर्यास्त होते समय आसमान में कई प्रकार के रंग छा जाते हैं। समुद्र में दूर तक नजर फैलाकर देखते समय ऐसा लगता है, मानो ये रंग समुद्र के नीले पानी को छू रहे हैं। सूर्य के अस्त होते समय चंद्रमा उदित होने लगता है और उसकी चाँदनी में समुद्र का जो नया रूप देखने के लिए मिलता है वह सचमुच अद्‌भुत होता है। इतना ही नहीं समुद्र के किनारे मँडराने वाले पक्षी अपने समूह में घर की ओर बढ़ते नजर आते हैं। यह दृश्य बहुत ही मनोहर होता है।

## प्रश्न ५ (उ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

*गद्यांश: ५ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. २०*

सबसे पहले हम अंजुना बीच पहुँचे। गोवा में छोटे-बड़े करीब ४० बीच हैं लेकिन प्रमुख सात या आठ ही हैं। अंजुना बीच नीले पानीवाला, पथरीला तथा बहुत ही खूबसूरत बीच है। इसके एक ओर लंबी-सी पहाड़ी है जहाँ से बीच का मनोरम दृश्य देखा जा सकता है। समुद्र तक जाने के लिए थोड़ा नीचे उतरना पड़ता है। नीला पानी काले पत्थरों पर पछाड़ खाता रहता है। पानी ने काट-काटकर इन पत्थरों में कई छेद कर दिए हैं जिससे ये पत्थर कमजोर भी हो गए हैं। साथ ही समुद्र के काफी पीछे हट जाने से कई पत्थरों के बीच में पानी भर गया है। इससे वहाँ काई ने अपना घर बना लिया है। फिसलने का डर हमेशा लगा रहता है लेकिन संघर्षों में ही जीवन है, इसलिए यहाँ घूमने का भी अपना अलग आनंद है। यहाँ युवाओं का दल तो अपनी मस्ती में डूबा रहता है, लेकिन परिवार के साथ आए पर्यटकों का ध्यान अपने बच्चों को खतरों से सावधान रहने के दिशानिर्देश देने में ही लगा रहता है। मैंने देखा कि समुद्र किनारा होते हुए भी बेनालिया बीच तथा अंजुना बीच का अपना-अपना सौंदर्य है। बेनालियम बीच रेतीला तथा उथला है। यह मछुआरों की पहली पसंद है। यहाँ सुबह-सुबह बड़ी मात्रा में मछलियाँ पकड़ी जाती हैं लेकिन मजे की बात यह है कि इतनी सारी मछलियाँ स्थानीय बाजारों में ही बेची जाती हैं। इनका निर्यात बिलकुल भी नहीं होता है। इसके विपरीत अंजुना बीच गहरा और नीले पानीवाला है। यह बॉलीवुड की पहली पसंद है। यहाँ कई हिट फिल्मों की शूटिंग हुई है। दोनों बीच व्यावसायिक हैं पर मूल अंतर व्यवसाय की प्रकृति का है। इसके बाद हम लोग दिन भर पणजी शहर देखते रहे।

### कृति उ (१) : आकलन कृति

**(१) निम्नलिखित वाक्यों का क्रम ठीक करके वाक्य फिर से लिखिए।**

(i) **अंजुना बीच गहरा और नीले पानीवाला है।**

(ii) **अंजुना बीच पर युवाओं का दल अपनी मस्ती में डूबा रहता है।**

(iii) **लेखक दिनभर पणजी शहर देखते रहे।**

(iv) **हम सब अंजुना बीच पहुँचे।**

उत्तर: (i) हम सब अंजुना बीच पहुँचे।

(ii) अंजुना बीच पर युवाओं का दल अपनी मस्ती में डूबा रहता है।

(iii) अंजुना बीच गहरा नीले पानीवाला है।

(iv) लेखक दिनभर पणजी शहर देखते रहे।

**(२) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

(i) **बॉलीवुड** (ii) **मछुआरों**

उत्तर: (i) अंजुना बीच किसकी पहली पसंद है?

(ii) बेनालिया बीच किसकी पहली पसंद है?

***(३) 'बेनालिया' और 'अंजुना' बीच की विशेषताएँ।**

| बेनालिया बीच | अंजुना बीच |
|---|---|
| (१) रेतीला तथा उथला | (१) नीले पानीवाला, पथरीला |
| (२) ढेर सारी मछलियों से भरा | (२) बहुत खूबसूरत |
| (३) मछुआरों की पहली पसंद | (३) बॉलीवुड की पहली पसंद |

### कृति उ (२) : आकलन कृति

**(१) समझकर लिखिए।**

*(i) नीले पानीवाला पथरीला -

*(ii) रेतीला तथा उथला -

*(iii) मछुआरों की पहली पसंद -

(iv) बॉलीवुड की पहली पसंद -

उत्तर: (i) अंजुना बीच (ii) बेनालियम बीच

(iii) बेनालियम बीच (iv) अंजुना बीच

***(२) गोवा का प्राकृतिक सौंदर्य दर्शानेवाले वाक्य**

उत्तर: (i) गोवा में छोटे-बड़े करीब ४० बीच हैं।

(ii) अंजुना बीच नीले पानीवाला पथरीला तथा बहुत ही खूबसूरत बीच है।

(iii) अंजुना बीच के एक ओर लंबी-सी पहाड़ी है, जहाँ से बीच का मनोरम दृश्य देखा जा सकता है।

(vi) बेनालियम बीच रेतीला तथा उथला है।

### कृति उ (३) : शब्द संपदा

**(१) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।**

(i) नगर (ii) मीन

(iii) अश्म (iv) जवान

उत्तर: (i) शहर (ii) मछली (iii) पत्थर (iv) युवा

**(२) विलोम शब्द लिखिए।**

(i) निर्यात × ..... (ii) डर × .....

(iii) पसंद × ..... (iv) कमजोर × .....

उत्तर: (i) आयात (ii) साहस (iii) नापसंद (iv) बलवान

**(३) परिच्छेद में प्रयुक्त विदेशी शब्द लिखिए।**

उत्तर: (i) शूटिंग (ii) हिट (iii) बॉलीवुड (iv) फिल्म

**(४) 'पथरीला' इस शब्द में 'ईला' यह प्रत्यय है। आप 'ईला' प्रत्यय लगाकर अन्य दो शब्द बनाइए।**

उत्तर: (i) नशीला = नशा + ईला (ii) रसीला = रस + ईला

**(५) लिंग बदलिए।**

(i) युवक (ii) मछुआरा

उत्तर: (i) युवती (ii) मछुआरिन

### कृति उ (४) : स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'आप सागर तट पर घूमने के लिए गए होंगे। वहाँ पर घूमते समय आपको कैसा लगा?' अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: मैं सागर तट पर अपने मित्रों के साथ घूमने गया था। मुंबई के गिरगाँव सागर तट की बात ही कुछ और है। शाम का समय था। शीतल हवा बह रही थी। समुद्र की लहरें किनारे की ओर आ रही थीं। उन्हें देखकर मेरा मन उल्लसित हो गया। एक के बाद एक लहर का आना मेरे मन में आनंद भर रहा था। समुद्र किनारे कई श्वेत वर्ण के बगुले पानी की लहरों के साथ खेल रहे थे। थोड़ी देर के बाद सूर्यास्त होने लगा। आसमान में तरह-तरह के रंग छा गए। उन्हें देखकर मुझे ऐसा लगा कि सचमुच प्रकृति ने आसमान के परदे पर अलग-अलग रंगों को बिखेर दिया है। उस सुहावने दृश्य को देखते समय मैं बहुत ही प्रफुल्लित हुआ। समुद्र के पानी पर उन रंगों का जादू देखने को मिला। मानो समुद्र उन रंगों में स्नान कर स्वयं पर वे सारे रंग चढ़ा रहा है। इस प्रकार सागर तट पर घूमते समय मैं फूला न समाया।

## प्रश्न ६ (ऊ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति ऊ (१) : आकलन कृति

***(१) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए।**

**(२) गद्यांश पढ़कर वाक्य पूर्ण कीजिए।**

(i) **कोलवा बीच पर बोटिंग करते समय बच्चों ने अच्छा आनंद लिया क्योंकि -**

उत्तर: वहाँ पर उन्होंने छोटी डॉल्फिन मछलियाँ देखीं।

(ii) **लेखक को काफी ऊँचाई से अथाह जलराशि को देखते समय जितना विस्मय हुआ -**

उत्तर: उतना भय भी लगा।

*गद्यांश: ६ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. २०-२१*

घूम-फिरकर शाम को हम कलिंगवुड बीच पर पहुँचे। यह काफी रेतीला तथा गोवा का सबसे लंबा बीच है जो ३ से ४ किमी. तक फैला है। यहाँ पर्यटक बड़ी संख्या में आते हैं। यही कारण है कि यह स्थानीय लोगों के व्यवसाय का केंद्र भी है। यहाँ कई प्रकार के वाटर स्पोर्ट्स होते हैं जिनमें कुछ तो हैरतअंगेज हैं, जिन्हें देखने में ही आनंद आता है। आप भी अपनी रुचि के अनुसार हाथ आजमा सकते हैं। मैंने कई खेलों में हिस्सा लिया, लेकिन सबसे अधिक रोमांच पैराग्लाइडिंग में ही आया। काफी ऊँचाई से अथाह जलराशि को देखना जितना विस्मयकारी है, उतना ही भयावह भी। दूर-दूर तक पानी-ही-पानी, तेज हवा और रस्सियों से हवा में लटके हम। हम यानी मैं और मेरी पत्नी। दोनों डर भी रहे थे और खुश भी हो रहे थे। डर इस बात का कि छूट गए तो समझो गए और खुशी इस बात की कि ऐसा रोमांचक दृश्य पहली बार देखा। सचमुच अद्‌भुत!

हम यहाँ चार-छह दिन रहे लेकिन हमारी एक ही दिनचर्या रही। सुबह जल्दी उठना, फटाफट नाश्ता करना और दिन भर घूम-फिरकर, थककर शाम को रिसॉर्ट आकर थकान मिटाने के लिए पूल में तैरना! एक दिन कोलवा बीच पर हमने बोटिंग का भी आनंद लिया। यहाँ हमने डॉल्फिन मछलियाँ देखीं। हालाँकि ये छोटी थीं पर बच्चों ने अच्छा आनंद लिया।

### कृति ऊ (२) : आकलन कृति

**(१) लिखिए।**

***(i) सबसे लंबा बीच -**

**(ii) सबसे अधिक रोमांचकारी -**

उत्तर: (i) कलिंगवुड (ii) पैराग्लाइडिंग

***(२) कलिंगवुड बीच की विशेषताएँ :**

उत्तर: (i) रेतीला और सबसे लंबा बीच है, जो ३ से ४ किमी. तक फैला हुआ है।

(ii) कलिंगवुड बीच पर कई प्रकार के वॉटर स्पोर्ट्स हैं।

(iii) व्यवसाय का केंद्र और पर्यटकों से हमेशा भरा हुआ बीच।

(iv) कलिंगवुड पर पैराग्लाइडिंग करने में अनोखा मजा आता है।

### कृति ऊ (३) : शब्द संपदा

**(१) निम्नलिखित शब्दों के तत्सम शब्द लिखिए।**

(i) हाथ (ii) दिवस

उत्तर: (i) हस्त (ii) दिन

**(२) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।**

(i) **जिसकी थाह न लगे -**

(ii) **ढेर सारा पानी -**

उत्तर: (i) अथाह (ii) जलराशि

**(३) निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय अलग कीजिए।**

(i) **स्थानीय** (ii) **भयावह** (iii) **विस्मयकारी** (iv) **ऊँचाई**

उत्तर: (i) प्रत्यय : ईय : शब्द : स्थान

(ii) प्रत्यय : वह : शब्द : भय

(iii) प्रत्यय : कारी : शब्द : विस्मय

(iv) प्रत्यय : आई : शब्द : ऊँचा

***(४) सोचिए और लिखिए।**

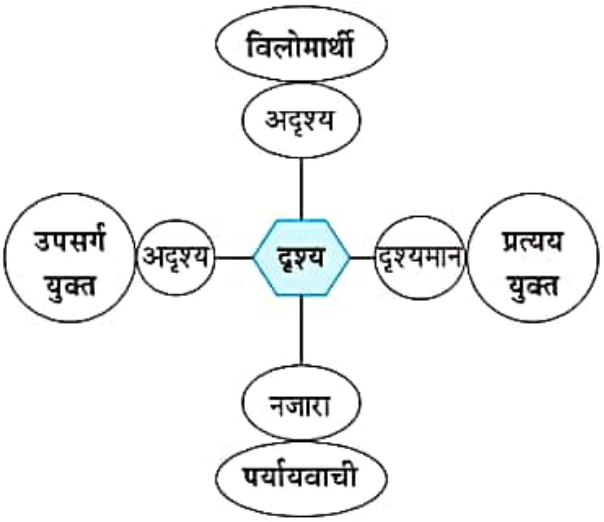


**(५) निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग अलग करके लिखिए।**

उत्तर: अथाह : उपसर्ग : अ

**(६) निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए।**

(i) **कितना विस्मयकारी था अथाह जलराशि को देखना**

उत्तर: ''कितना विस्मयकारी था अथाह जलराशि को देखना!''

(ii) **डर खुशी को भूलकर हम रोमांचकारी दृश्य का अनुभव ले रहे थे**

उत्तर: डर-खुशी को भूलकर हम रोमांचकारी दृश्य का अनुभव ले रहे थे।

### कृति ऊ (४) : स्वमत अभिव्यक्ति

***(१) 'प्राकृतिक सुंदरता बनाए रखने में मेरा योगदान।' इस विषय से संबंधित विचार लिखिए।**

उत्तर: प्राकृतिक सुंदरता ईश्वर का अनोखा व अद्‌भुत उपहार है। उसे बनाए रखने का दायित्व हम सब पर है। मैं प्राकृतिक सुंदरता बनाए रखने के लिए जल, वन, जानवर आदि का विशेष ध्यान रखूँगा। जल को दूषित होने से बचाने हेतु मैं तालाब, कुआँ, नदी, सागर आदि को प्रदूषित होने से बचाऊँगा। जगह-जगह पर पेड़ लगाकर मैं हरियाली का संवर्धन करूँगा। वनों की अंधाधुंध कटाई करने वालों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता निर्माण करूँगा। जानवरों को संरक्षण प्रदान करूँगा, ताकि धरती पर सभी जीवों में पर्यावरण का संतुलन बना रहे। मैं ध्वनि प्रदूषण व वायु प्रदूषण पर रोक लगाने हेतु अभियान शुरू करूँगा, ताकि प्राकृतिक सुंदरता की सुरक्षा हो सके। इस तरह मैं प्राकृतिक सुंदरता बनाए रखने में अपना योगदान दूँगा।

## प्रश्न ७ (ए) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति ए (१) : आकलन कृति

***(१) कृति पूर्ण कीजिए।**

**नवरात्रि तथा दशहरा पर्व में गोवा की अलग परंपराएँ**

हर घर तथा मोहल्ले में माँ दुर्गा की घट स्थापना की जाती है। लड़कियों द्‌वारा गरबा नृत्य किया जाता है। लोग अपने वाहनों की सफाई कर उनकी पूजा करते हैं। शाम के वक्त भगवान की एक पालकी मंदिर ले जाई जाती है।

**(२) सत्य या असत्य लिखिए।**

(i) **सबकी अपनी सांस्कृतिक परंपरा होती है।**

(ii) **गोवा में रावण का पुतला जलाया जाता है।**

उत्तर: (i) सत्य (ii) असत्य

*गद्यांश: ७ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. २१*

इस दौरान यहाँ नवरात्रि तथा दशहरा पर्व मनाने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। उत्तर भारत में जिस तरह हर घर तथा गली-मोहल्ले में माँ दुर्गा की घट स्थापना कर तथा लड़कियों द्वारा गरबा कर पर्व मनाया जाता है, ऐसा ही यहाँ भी होता है। रावण का पुतला कहीं भी नहीं जलाया जाता है। सुबह से लोग अपने वाहनों की सफाई कर उनकी पूजा करते हैं और शाम को भगवान की एक पालकी मंदिर ले जाई जाती है। इसके बाद एक पेड़ विशेष की पत्तियाँ तोड़कर लोग एक-दूसरे को देकर बधाई देते हैं। सबकी अपनी-अपनी सांस्कृतिक परंपरा है।

इतने कम दिनों में मैं गोवा को पूरा देख-समझ तो नहीं पाया पर इतना जरूर समझ गया कि पश्चिमी फैशन और सभ्यता में रचा-बसा होने के बावजूद यह भारतीय संस्कृति को पूरी तरह से आत्मसात किए हुए है। पर्यटक फैशन के रंग में कुछ देर के लिए भले ही स्वयं को रँगकर चले जाते हों लेकिन स्थानीय लोग अपनी सांस्कृतिक परंपरा की उँगली अब भी पकड़े हुए हैं।

### कृति ए (२) : आकलन कृति

**(१) समझकर लिखिए।**

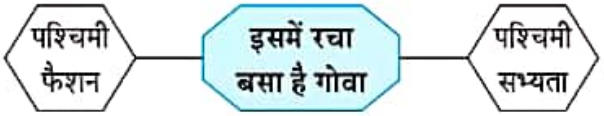

(ii)

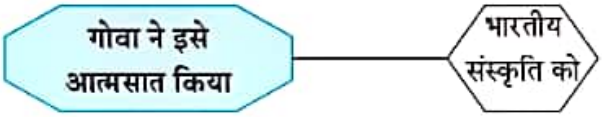


**(२) अंतर लिखिए।**

| पर्यटक | स्थानीय लोग |
|---|---|
| (i) गोवा में आकर फैशन के रंग में कुछ देर के लिए स्वयं को रँगकर चले जाते हैं। | (i) अपनी सांस्कृतिक परंपरा की उँगली पकड़कर रहते हैं। |

## कृति ए (३) : शब्द संपदा

**(१) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।**

(i) विशेष × ……  (ii) उत्तर × ……

**उत्तर:** (i) सामान्य  (ii) दक्षिण

**(२) अनेकार्थी शब्द लिखिए।**

(i) उत्तर  (ii) शाम

**उत्तर:** (i) एक दिशा, जवाब  (ii) संध्या, श्याम वर्ण - साँवला

**(३) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय लगाइए।**

(i) पूजा  (ii) सौभाग्य

**उत्तर:** (i) पूजनीय  (ii) सौभाग्यशाली

**(४) सोचिए और लिखिए।**

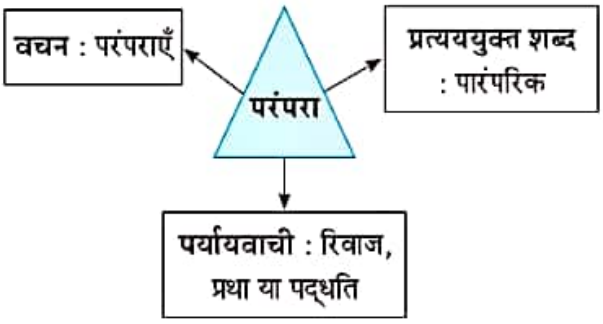


## कृति ए (४) : स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'प्रत्येक राज्य की अपनी-अपनी सांस्कृतिक परंपरा होती है।' इस विषय से संबंधित अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:** भारत देश में कई राज्य हैं। प्रत्येक राज्य की अपनी विशेष सांस्कृतिक परंपरा होती है। प्रत्येक राज्य की भाषा, खान-पान, वेश-भूषा, कला, संगीत, नृत्य आदि में अपनी-अपनी अलग पहचान होती है। प्रत्येक राज्य की भाषा में साहित्य लिखा गया है, जिसकी अपनी एक अलग पहचान होती है। प्रत्येक राज्य में स्थापत्य एवं चित्रकला की एक अलग शैली पाई जाती है। प्रत्येक राज्य की लोक-कला एवं लोक-संगीत एक-दूसरे से बिल्कुल अलग होते हैं। प्रत्येक राज्य की भौगोलिक विशेषता होती है, जिसका प्रभाव उसकी संस्कृति पर पड़ता है। शास्त्रीय संगीत की बात करें, तो प्रत्येक राज्य में विभिन्न प्रकार के संगीत के घराने पाए जाते हैं। प्रत्येक राज्य की उत्सव या पर्व मनाने की अपनी एक अलग ही धारणा होती है।

## भाषाबिंदु

**(१) (क) कोष्ठक में दी गई संज्ञाओं के साथ विशेषण संलग्न हैं। नीचे दी गई सारणी में संज्ञा तथा विशेषणों को भेदों सहित लिखिए।**

**(भयभीत गाय, नीला पानी, दस लीटर दूध, चालीस छात्र, कुछ लोग, दो गज जमीन, वही पानी, यह लड़का)**

| संज्ञा | भेद | विशेषण | भेद |
|---|---|---|---|
| गाय | जातिवाचक संज्ञा | भयभीत | गुणवाचक विशेषण |
| पानी | द्रव्यवाचक संज्ञा | नीला | गुणवाचक विशेषण |
| दूध | द्रव्यवाचक संज्ञा | दस लीटर | निश्चित परिमाणवाचक |
| छात्र | जातिवाचक संज्ञा | चालीस | निश्चित संख्यावाचक |
| लोग | समूहवाचक संज्ञा | कुछ | अनिश्चित संख्यावाचक |
| जमीन | जातिवाचक संज्ञा | दो गज | निश्चित संख्यावाचक |
| पानी | द्रव्यवाचक संज्ञा | वही | सार्वनामिक विशेषण |
| लड़का | जातिवाचक संज्ञा | यह | सार्वनामिक विशेषण |

***(ख) उपर्युक्त संज्ञा व विशेषणों की जोड़ियों का स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

(i) भयभीत गाय चारों ओर भाग रही थी।

(ii) समुद्र का नीला पानी देखकर मेरी आँखें तृप्त हो गईं।

(iii) मुझे दस लीटर दूध चाहिए।

(iv) मेरी कक्षा में कुल मिलाकर चालीस छात्र हैं।

(v) कुछ लोग चंदा माँगने आए हैं।

(vi) दो गज जमीन के लिए उस परिवार में बहुत बड़ा बखेड़ा खड़ा हो गया।

(vii) वही पानी समुद्र की ओर बढ़ता है।

(viii) यह लड़का बहुत शरारत करता है।

***(३) पाठ में प्रयुक्त विशेषणों को ढूँढ़कर उनकी सूची बनाइए।**

**उत्तर:**

| विशेषणों की सूची | | | | |
|---|---|---|---|---|
| छोटा-सा | प्रत्येक | पतली-सी | शीतल | पाँच किलो |
| खूबसूरत | खास | सफेद | सांस्कृतिक | शांत |
| मजेदार | शाकाहारी | सुस्वादु | नीले | बड़ी |
| अथाह | तेज | अच्छा | पश्चिम | स्थानीय |

***(४) निम्नलिखित वाक्यों में आई हुई मुख्य क्रियाओं को अधोरेखांकित कीजिए तथा उनका अर्थपूर्ण वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

(i) टैक्सी एक पतली-सी सड़क पर दौड़ पड़ी।

**उत्तर:** **मुख्य क्रिया** : दौड़ : दौड़ना : **वाक्य** : पुलिस को देखते ही चोर तेजी से दौड़ने लगा।

(ii) शरीर को कुछ समय के लिए विश्राम मिल जाता है।

**उत्तर:** **मुख्य क्रिया** : मिल : मिलना : **वाक्य** : मुझे अपना खोया हुआ धन मुश्किल से मिला है।

(iii) हम आराम करने के इरादे से अपने-अपने स्यूट चले गए।

**उत्तर:** **मुख्य क्रिया** : चले : चलना : **वाक्य** : जैसे ही बरसात होने लगी, वैसे ही सब अपने-अपने घर की ओर चल दिए।

(iv) फिर भी धूप तीखी ही होती जाती है।

**उत्तर:** **मुख्य क्रिया** : होती : होना : **वाक्य** : गोवा की शाम अद्‌भुत होती है।

(v) सबके बावजूद यह अपने में एक सांस्कृतिक विरासत भी समेटे हुए है।

**उत्तर:** **मुख्य क्रिया** : समेटे : समेटना : **वाक्य** : वह अपना बोरिया-बिस्तर समेटकर चलने लगा।

(vi) इधर बच्चे रेत का घर बनाने लगे।

**उत्तर:** **मुख्य क्रिया** : बनाने : बनाना : **वाक्य** : उन्होंने रेत में बहुत ही सुंदर किला बनाया था।

(vii) अब समुद्र स्याह और भयावह दिखने लगा।

**उत्तर:** **मुख्य क्रिया** : दिखने : दिखना : **वाक्य** : उम्र के ढलते ही वह बदसूरत दिखने लगा।

(viii) यहाँ सुबह-सुबह बड़ी मात्रा में मछलियाँ पकड़ी जाती हैं।

**उत्तर:** **मुख्य क्रिया** : पकड़ी : पकड़ना : **वाक्य** : झूठ एक दिन पकड़ा जाता है।

***(५) पाठ में प्रयुक्त दस सहायक क्रियाएँ छाँटकर लिखिए।**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| हो उठता है। | हो गए। | हो गया था। | बैठ गए। | मिल जाता है। |
| कर लिया था। | होती है। | भाग रहे थे। | झपट पड़ते हैं। | दिखने लगा। |

## उपयोजित लेखन

***(१) विजय/विजया मोहिते वरदा सोसायटी, विजयनगर, जालना से व्यवस्थापक, औषधि भंडार, नागपुर को पत्र लिखकर आयुर्वेदिक औषधियों की माँग करता/करती है।**

दिनांक : १ मार्च, २०१८
सेवा में,
व्यवस्थापक
आयुर्वेदिक औषधि भंडार,
नागपुर।

**विषय : आयुर्वेदिक औषधि की माँग हेतु पत्र**

महोदय,

मैं विजय मोहिते समय-समय पर आपसे आयुर्वेदिक औषधियाँ मँगवाता आ रहा हूँ। उन औषधियों के सेवन से मुझे बहुत आराम मिला है। अत: इस बार भी मुझे निम्न आयुर्वेदिक औषधियों की आवश्यकता है :

| आयुर्वेदिक औषधि | मात्रा |
|---|---|
| झण्डू च्यवनप्राश | ५०० ग्राम के दो डिब्बे |
| झण्डू पाचक रस | ५०० मिली ली. की तीन शीशी |
| हिमालय पीड़ाहारी बाम | ५० ग्राम की दो शीशियाँ |
| हिमालय तेज कांति चूर्ण | ५०० ग्राम की तीन बोतलें |
| हिमालय शक्तिवर्धक रस | ५०० मिली ली. की चार बोतलें |
| द्राक्षासव | ५०० मिली ली. की चार बोतलें |
| कायम चूर्ण | ५०० ग्राम की दो बोतलें |

कृपा करके उपर्युक्त औषधियाँ जल्द-से-जल्द कुरिअर द्‌वारा भेजने की व्यवस्था करें। जैसे ही औषधियाँ प्राप्त हो जाएँगी वैसे ही बकाया रकम आपके पास भेज दी जाएगी। अग्रिम राशि के तौर पर १००० रूपए का पोस्टल ऑर्डर भेज रहा हूँ। आशा है कि आप जल्द-से-जल्द औषधियाँ भेजेंगे।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

धन्यवाद!
भवदीय,
विजय मोहिते।

वरदा सोसायटी,
विजयनगर,
जालना।
ई-मेल आईडी : vijay123@gmail.com

❖❖❖

# ६ गिरिधर नागर

*- मीराबाई (१५१६-१५४६)*

## कवयित्री-परिचय

**जीवन-परिचय** : इनका जन्म सन १५१६ में राजस्थान के जोधपुर में हुआ था। इन्होंने बचपन से ही श्रीकृष्ण को अपना पति मान लिया था। श्रीकृष्ण आपके परम आराध्य थे। आप कृष्णभक्ति शाखा की हिंदी की महान कवयित्री हैं। आपके पद श्रीकृष्ण भक्ति से परिपूर्ण हैं। आपका विवाह उदयपुर के महाराणा भोजराज के साथ हुआ था। कृष्णभक्ति में नाचना और गाना राज परिवार को अच्छा नहीं लगा। अत: उन्होंने विष देकर उन्हें मारने का प्रयास किया। आप गृहत्याग करके मंदिरों में घूम-घूमकर अपने भजन गाया करती थीं। इनके पदों में कृष्ण-प्रेम की तल्लीनता पाई जाती है।

**प्रमुख कृतियाँ** : 'नरसी जी का मायरा', 'गीत गोविंद', 'राग गोविंद', 'राग सोरठ के पद' आदि।

## पद्य-परिचय

**पद** : पद काव्य रचना की गेय शैली है। इसका विकास लोक गीतों की परंपरा से माना जाता है। पद मात्रिक छंद की श्रेणी में आता है। हिंदी साहित्य पद शैली की दो परंपराएँ मिलती हैं। पहले संतों के 'सबदों' की दूसरी कृष्ण भक्तों की पद शैली। भक्ति भावना की अभिव्यक्ति के लिए पदों का आविष्कार हुआ था।

**प्रस्तावना** : गिरिधर नागर इस पद के द्वारा मीराबाई ने अपनी कृष्णभक्ति को अभिव्यक्त किया है। उन्होंने अपने पदों के माध्यम से श्रीकृष्ण की आराधना की है। उनके अनुसार श्रीकृष्ण जी आकर इस भवसागर से उनका बेड़ा पार लागाएँगे।

## सारांश

कृष्णभक्त मीराबाई एक महान कवयित्री थीं। उन्होंने कृष्ण को ही अपना पति माना था। वे कृष्ण के प्यार में दीवानी थीं। कृष्ण को पाने के लिए उन्होंने किसी की भी परवाह नहीं की थी। उन्होंने कृष्ण को पाने के लिए लोक-लज्जा को त्यागकर संतों के पास जाकर बैठना स्वीकार कर लिया था। उन्होंने अपने पदों के माध्यम से 'संत संगति एवं भक्तों का साथ ईश्वर प्राप्ति का सबसे सहज एवं सुलभ मार्ग है' यह बताने की कोशिश की है। ईश्वर के बिना व्यक्ति का अपना निजी अस्तित्व नहीं होता, इसलिए व्यक्ति को ईश्वर के नाम का बार-बार जप करना चाहिए। मीराबाई को कृष्ण से मिलने की उत्सुकता है। अत: वे फागुन के महीने में आने वाला होली का त्योहार बड़ी ही खुशी के साथ मनाती हैं। वे होली के रंग खेलती हैं। प्रेमरूपी पिचकारी के जरिए वे अपने आराध्य पर रंगों की बौछार करती हैं। इस प्रकार कृष्ण के प्रेम में दीवानी मीरा अपनी भक्ति कृष्ण को समर्पित करती हैं।

## शब्दार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| गिरधर | - भगवान कृष्ण का एक नाम | बेर-बेर | - बार-बार |
| सिर | - मस्तक | विरहणि | - विरह में जीवन जीने वाली |
| पति | - स्वामी | सरण | - शरण |
| छाँड़ि | - छोड़ देना | करताल | - हथेली |
| कुल | - वंश, घराना | पखावज | - एक वाद्य यंत्र |
| प्रेम वेली | - प्रेमरूपी लता | अणहद | - अंतरात्मा की आवाज |
| आणँद | - आनंद | सील | - शील |
| माखन | - दही | संतोख | - संतोष |
| भगत | - भक्त | अंवर | - आसमान |
| जगत | - संसार | घट | - देह या शरीर |
| गती | - प्रगति या विकास | पट | - वस्त्र |
| प्रतिपाल | - पालनहार, पालनकर्ता | ढिग | - पास, निकट |
| | | मथनियाँ | - मथनी, दही मथने का साधन |

| | | | |
|---|---|---|---|
| चेरी | - चेली, दासी | कँवल | - कमल |
| नेरी | - पास, निकट | बलिहारना | - निछावर करना |
| छतीसूँ | - श्रेष्ठ | बेल | - लता |

## मुहावरे

**निछावर करना** - अर्पण करना, समर्पित करना।

## भावार्थ

- **मेरे तो गिरधर गोपाल ..... तारो अब मोही।**

कृष्णभक्त मीराबाई एक महान कवयित्री थीं। उन्होंने कृष्ण को ही अपना पति माना था। कृष्ण को पाने के लिए उन्होंने किसी की भी परवाह नहीं की थी। प्रस्तुत पद में मीराबाई कहती हैं- ''मेरे स्वामी गिरिधर गोपाल हैं। वे ही मेरा सर्वस्व हैं। उनके अलावा मेरा किसी से किसी भी प्रकार का संबंध नहीं है। जिस कृष्ण के सिर पर मोर मुकुट विराजमान है, वही मेरा पति है। वही मेरे रक्षक एवं पालनहार हैं। कृष्ण को पाने के लिए मैंने अपने माता-पिता, भाई-बहन एवं कुल का त्याग कर दिया है। उन सभी से मेरा किसी भी प्रकार का नाता नहीं है। इतना ही नहीं, मैंने तो अपने वंश, परिवार की मर्यादा का भी त्याग कर दिया है। अब मेरा कोई कुछ नहीं कर सकता; क्योंकि मुझे समाज की कोई परवाह नहीं है। यहाँ तक कि मैंने लोक-लज्जा को त्यागकर संतों के पास जाकर बैठना स्वीकार कर लिया है। संतों की संगति से ही मुझे कृष्ण की प्राप्ति होगी। मैंने तो अपने आँसू रूपी जल से सींचकर प्रेम रूपी बेल को बोया है। अब तो यह कृष्ण प्रेम रूपी बेल फलने-फूलने लगी है और इस पर आनंद रूपी फल आ रहे हैं। मैंने दूध की मथनी से दही को बड़े प्रेम से मथा है। इस दही को मथकर मक्खन को निकाल लिया है और छाछ को छोड़ दिया है। इसका अर्थ यह है कि मैंने जीवन को मथ कर सार तत्व अर्थात मक्खन रूपी भक्ति को ग्रहण कर लिया है और सारहीन अंश का त्याग किया है। भक्तों को देखकर मुझे प्रसन्नता प्राप्त होती है और संसार के रंग-ढंग देखकर रोना आता है। मैं तो कृष्ण की दासी हूँ। अब तो मुझे तारने के लिए यानी इस भवसागर से मेरा बेड़ा पार लगाने के लिए स्वयं कृष्ण को ही आना पड़ेगा।''

- **हरि बिन कूण ..... सरण हूँ तेरी।**

प्रस्तुत पद के माध्यम से मीराबाई कहती हैं - ''हे श्रीकृष्ण! आपके बिना मेरा किसी भी प्रकार का अस्तित्व नहीं है। आप ही मेरे पालनहार हैं और मैं आपके चरणों की दासी हूँ। मैंने अपने जीवन की शुरुआत से आपका नाम जपना शुरू किया है और जीवन के अंतकाल तक मैं आपका ही नाम जपती रहूँगी। आपके ही नाम रूपी नौका पर सवार होकर मैं भवसागर से पार उतरूँगी। मैं बार-बार आपकी ही आरती गाती रहूँगी। मैं इस निरर्थक संसार रूपी सागर के बीच में घिर गई हूँ। मेरी जीवन रूपी नाव अब डूबने वाली है। आप ही मेरी नाव को डूबने से बचा सकते हो, अत: आप मेरी जीवन नैया को पार लगाओ। मैं तो आपके विरह में विरहणी होकर जीवन बीता रही हूँ। आप ही मुझे आपके पास आने का रास्ता बता सकते हो। मैं तो आपकी दासी हूँ। मैं हमेशा 'राम' नाम का जाप करती रहती हूँ।''

- **फागुन के दिन चार ..... कँवल बलिहार रे।।**

मीराबाई कहती हैं- ''अब फागुन का महीना आया है। श्रीकृष्ण से अब मेरा जल्दी ही मिलन होनेवाला है। कृष्ण से मिलने की मेरी उत्सुकता अब बढ़ने लगी है। इसलिए मैं होली का त्योहार धूमधाम से मनाऊँगी। बिना करताल और पखावज बजे ही मेरी अंतरात्मा में झंकार उठ रही है। उस झंकार को सुनकर मेरी आत्मा कृष्ण से मिलने के लिए उत्सुक हो गई है। मैं बिना सुरों की सहायता से श्रेष्ठ राग गा रही हूँ। मेरा रोम-रोम रोमांचित हो गया है। मैंने शील व संतोष रूपी केसर घोलकर प्रेमरूपी पिचकारी बनाई है। आसमान में गुलाल उड़ रहा है, जिसके कारण आसमान लाल रंग का हो गया है। चारों ओर-प्रेम रूपी रंग फैल गया है। मैं कृष्ण-मिलन के लिए इतनी भाव विभोर हो गई हूँ कि मैंने लोक-लज्जा की परवाह करना छोड़ दिया है। श्रीकृष्ण ही मेरे गिरिधर नागर हैं। वे ही इस भवसागर से मेरा बेड़ा पार उतारेंगे। इसलिए मैं उनके कमल रूपी चरणों पर अपने आप को निछावर कर दूँगी।''

## MASTER KEY QUESTION SET - 6

**प्रश्न १ (अ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति अ (१): आकलन कृति**

**(१) इस अर्थ में आए शब्द लिखिए।**

| | अर्थ | शब्द |
|---|---|---|
| (i) | पास | ढिग |
| (ii) | वंश | कुल |
| (iii) | मथनी | मथनियाँ |
| (iv) | भक्त | भगत |

***(२) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए।**

**(३) समझकर लिखिए।**

**(i) इनके साथ मीरा बैठती हैं -**

उत्तर: (i) साधु संत एवं भक्तों के साथ।

**(ii) कृष्ण के लिए इनका त्याग किया है मीरा ने -**

उत्तर: (ii) अपने माता-पिता, भाई-बहन व कुल का।

*पद्यांश: १ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. २४*

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई
जाके सिर मोर मुकट, मेरो पति सोई
छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई ?
संतन ढिग बैठि-बैठि, लोक लाज खोई।
अँसुवन जल सींचि-सींचि प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेल फैल गई आणँद फल होई।।
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से बिलोई।
माखन जब काढ़ि लियो छाछ पिये कोई।।
भगत देखि राजी हुई जगत देखि रोई।
दासी 'मीरा' लाल गिरिधर तारो अब मोही।।

**कृति अ (२): आकलन कृति**

**(१) निम्नलिखित पंक्तियाँ पढ़कर उनका आशय लिखिए।**

**(i) अब तो बेल फैल गई आणँद फल होई।**

उत्तर: कृष्ण के प्रति मीरा के हृदय में जो भाव है, वह अब श्रीकृष्ण भी जानने लगे हैं। मीरा अपने आनंदरूपी प्रेम बेल से कृष्ण को पाना चाहती हैं।

**(ii) माखन जब काढ़ि लियो छाछ पिये कोई।**

उत्तर: मीरा ने सार तत्व को ग्रहण कर लिया है और सारहीन अंश का त्याग किया है।

**(२) कृति पूर्ण कीजिए।**

***(i)**

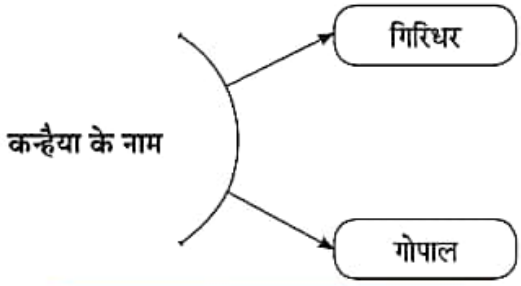


**(ii)**

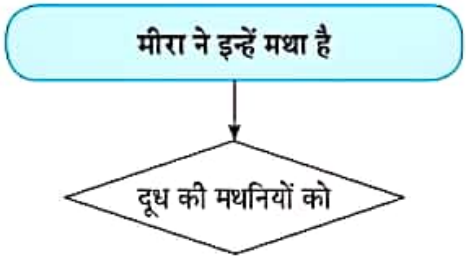


**(३) वाक्य पूर्ण कीजिए।**

**(i) मीरा प्रसन्न होती हैं .....**

उत्तर: भक्तों को देखकर

**(ii) मीरा रोती हैं .....**

उत्तर: संसार के रंग-ढंग देखकर।

**कृति अ (३): भावार्थ**

**(१) निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।**

**(१) मेरे तो गिरधर ..... लाज खोई।**

उत्तर: प्रस्तुत पद में मीराबाई कहती हैं- "मेरे स्वामी गिरिधर गोपाल हैं। वे ही मेरा सर्वस्व हैं। उनके अलावा मेरा किसी से भी किसी प्रकार का संबंध नहीं है। जिस कृष्ण के सिर पर मोर-मुकुट विराजमान है, वही मेरा पति है। वही मेरे रक्षक एवं पालनहार हैं। कृष्ण को पाने के लिए मैंने अपने माता-पिता, भाई-बहन एवं कुल का त्याग कर दिया है। उन सभी से मेरा किसी भी प्रकार का नाता नहीं है। इतना ही नहीं, मैंने अपने वंश-परिवार की मर्यादा का भी त्याग कर दिया है। अब मेरा कोई कुछ नहीं कर सकता क्योंकि मुझे समाज की कोई परवाह नहीं है। यहाँ तक कि मैंने लोक-लज्जा को त्यागकर संतों के पास जाकर बैठना स्वीकार कर लिया है।"

**(२) अँसुवन ..... पिये कोई।**

उत्तर: प्रस्तुत पद के माध्यम से मीराबाई कहती हैं- मैंने तो अपने आँसू रूपी जल से सींचकर ईश्वर रूपी बेल को बोया है। अब तो यह बेल फलने-फूलने लगी है और इस पर आनंद रूपी फल आ रहे हैं। मैंने दूध की मथनी से दही को बड़े प्रेम से मथा है। इस दही को मथकर मक्खन को निकाल लिया है और छाछ को छोड़

दिया है। इसका अर्थ यह है कि मैंने जीवन को मथकर सार तत्व अर्थात मक्खन रूपी भक्ति को ग्रहण कर लिया है और सारहीन अंश का त्याग किया है।''

**प्रश्न २ (आ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति आ (१): आकलन कृति**

**(१) लिखिए।**

(i)

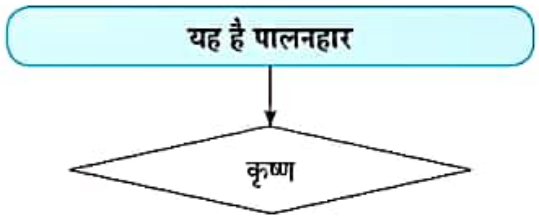


(ii)

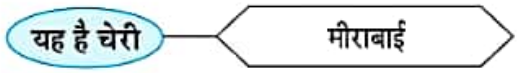


(iii)

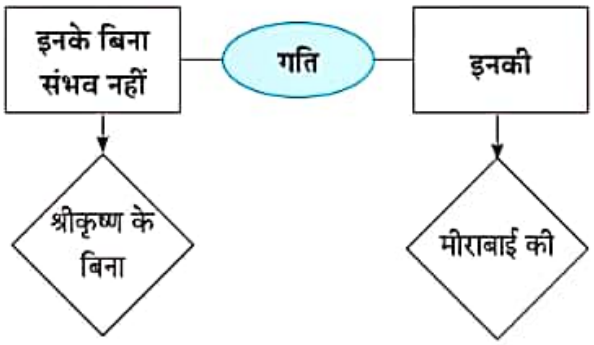


**(२) उचित जोड़ियाँ मिलाइए।**

| 'अ' | 'ब' |
|---|---|
| (i) प्रतिपाल | (क) राम नाम |
| (ii) मीरा | (ख) संसार |
| (iii) भवसागर | (ग) श्रीकृष्ण |
| (iv) जाप | (घ) दासी |

**उत्तर:** (i - ग), (ii - घ), (iii - ख), (iv - क)

*पद्यांश: २ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. २४*

हरि बिन कूण गती मेरी।।
तुम मेरे प्रतिपाल कहिये मैं रावरी चेरी।।
आदि-अंत निज नाँव तेरो हीमायें फेरी।
बेर-बेर पुकार कहूँ प्रभु आरति है तेरी।।
यौ संसार बिकार सागर बीच में घेरी।
नाव फाटी प्रभु पाल बाँधो बूड़त है बेरी।।
बिरहणि पिवकी बाट जौवै राखल्यो नेरी।
दासी मीरा राम रटत है मैं सरण हूँ तेरी।।

**कृति आ (२):आकलन कृति**

**(१) निम्नलिखित कथन सत्य है या असत्य लिखिए।**

(i) मीरा की जीवनरूपी नाव को कृष्ण डूबने से बचा सकते हैं।

(ii) मीरा के पति राज भोजराज उसके पालनहार हैं।

**उत्तर:** (i) सत्य (ii) असत्य

**(२) इस अर्थ में आए शब्द लिखिए।**

| | अर्थ | शब्द |
|---|---|---|
| *(i) | बार बार | बेर-बेर |
| (ii) | पालनहार | प्रतिपाल |
| (iii) | दुनिया | संसार |
| *(iv) | साजन | पिव |
| *(v) | दासी | भक्तिन |

**(३) समझकर लिखिए।**

(i)

(ii)

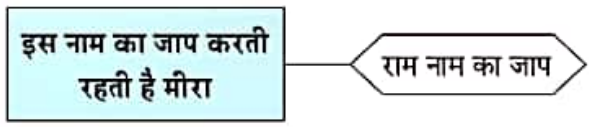


**कृति आ (३): भावार्थ**

**(१) निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।**

***(१) हरि बिन ..... आरति है तेरी।**
**अथवा दूसरे पद का सरल अर्थ लिखिए।**

**उत्तर:** मीराबाई कहती हैं- ''हे श्रीकृष्ण! आपके बिना मेरा किसी भी प्रकार का अस्तित्व नहीं है। आप ही मेरे पालनहार हैं और मैं आपके चरणों की दासी हूँ। मैंने अपने जीवन की शुरुआत से आपका नाम जपना शुरू किया है और जीवन के अंतकाल तक मैं आपका ही नाम जपती रहूँगी। आपके ही नाम रूपी नाव पर सवार होकर मैं भवसागर से पार उतरूँगी। मैं बार-बार आपकी ही आरती गाती रहूँगी।''

***(२) यौ संसार बिकार ..... सरण हूँ तेरी।**

**उत्तर:** प्रस्तुत पद में मीराबाई कहती हैं- ''मैं इस निरर्थक संसार रूपी सागर के बीच में घिर गई हूँ। मेरी जीवन रूपी नाव अब डूबने वाली है। आप ही मेरी नाव को डूबने से बचा सकते हो, अत: आप मेरी जीवन नैया को पार लगाओ। मैं तो आपके विरह में विरहणी होकर जीवन बीता रही हूँ। आप ही मुझे आपके पास आने का रास्ता बता सकते हो। मैं तो आपकी दासी हूँ। मैं हमेशा 'राम' नाम का जाप करती रहती हूँ।''

**प्रश्न ३ (इ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति इ (१): आकलन कृति**

***(१) संजाल पूर्ण कीजिए।**

(i)

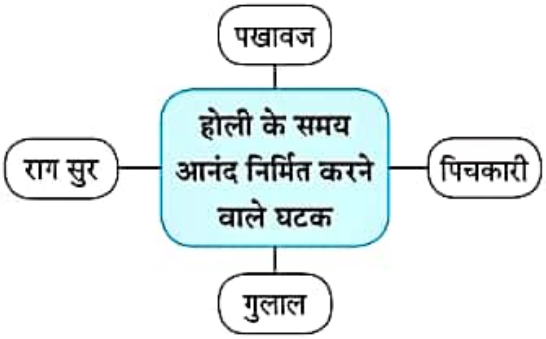


**(२) निम्नलिखित शब्द पढ़कर ऐसे दो शब्द तैयार कीजिए कि जिनके उत्तर निम्न शब्द हों -**

(i) **होली** (ii) **आसमान**

**उत्तर:** (i) फागुन के महीने में कौन-सा त्योहार आता है?

(ii) गुलाल कहाँ उड़ रहा है?

*पद्यांश: ३ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. २४*

फागुन के दिन चार होरी खेल मना रे।
बिन करताल पखावज बाजै, अणहद की झनकार रे।
बिन सुर राग छतीसूँ गावै, रोम-रोम रणकार रे।।
सील संतोख की केसर घोली, प्रेम-प्रीत पिचकार रे।
उड़त गुलाल लाल भयो अंबर, बरसत रंग अपार रे।।
घट के पट सब खोल दिए हैं, लोकलाज सब डार रे।
'मीरा' के प्रभु गिरिधर नागर, चरण कँवल बलिहार रे।।

**कृति इ (२): आकलन कृति**

**(१) कारण लिखिए।**

**(i) आसमान लाल रंग का हो गया है।**

**उत्तर:** क्योंकि आसमान में गुलाल उड़ रहा है।

**(ii) मीरा कृष्ण के चरणों पर अपने प्राण निछावर करनेवाली हैं।**

**उत्तर:** क्योंकि कृष्ण उसका इस भवसागर से बेड़ा पार लगाने वाले हैं।

**(२) समझकर लिखिए।**

**(i) यह घोला है पिचकारी में -**

**उत्तर:** शील व संतोष रूपी केसर

**(ii) इसके बिना बज रही है अणहद की झनकार -**

**उत्तर:** बिना करताल और पखावज के

**(३) इस अर्थ में आए शब्द लिखिए।**

| | अर्थ | शब्द |
|---|---|---|
| *(i) | आकाश | अंबर |
| (ii) | पाँव | चरण |
| (iii) | शरीर | घट |
| (iv) | पट | वस्त्र |

**कृति इ (३): भावार्थ**

**(१) निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।**

**(१) फागुन के ..... पिचकार रे।**

**उत्तर:** प्रस्तुत पद में मीराबाई कहती हैं- ''अब फागुन का महीना आया है। श्रीकृष्ण से अब मेरा जल्दी ही मिलन होनेवाला है। कृष्ण से मिलने की मेरी उत्सुकता अब बढ़ने लगी है। इसलिए मैं होली का त्योहार धूमधाम से मनाऊँगी। बिना करताल और पखावज बजे ही मेरी अंतरात्मा में झंकार उठ रही है। उस झंकार को सुनकर मेरी आत्मा कृष्ण से मिलने के लिए उत्सुक हो गई है। मैं बिना सुरों की सहायता से श्रेष्ठ राग गा रही हूँ। मेरा रोम-रोम रोमांचित हो गया है। मैंने शील व संतोष रूपी केसर घोलकर प्रेमरूपी पिचकारी बनाई है।''

**(२) उड़त गुलाल ..... बलिहार रे।।**

**उत्तर:** मीराबाई कहती हैं- ''आसमान में गुलाल उड़ रहा है, जिसके कारण आसमान लाल रंग का हो गया है। चारों ओर-प्रेम रूपी रंग फैल गया है। मैं कृष्ण-मिलन के लिए इतनी भाव विभोर हो गई हूँ कि मैंने लोक-लज्जा की परवाह करना छोड़ दिया है। श्रीकृष्ण ही मेरे गिरिधर नागर हैं। वे ही इस भवसागर से मेरा बेड़ा पार उतारेंगे। इसलिए मैं उनके कमल रूपी चरणों पर अपने आप को निछावर कर दूँगी।''

**अपठित पद्यांश**

***(१) उत्तर लिखिए।**

**(i) किसी से काम करवाने के लिए उपयुक्त -**

**(ii) हर समय अच्छी लगने वाली बातें -**

**उत्तर:** (i) स्नेह (ii) प्यार

***(२) आकृति में उत्तर लिखिए।**

**(i) अच्छा प्रयत्न यही है -** ☐

**(ii) यही अधोगति है -** ☐

**उत्तर:** (i) जो गिरे हुए को उठा सके।

(ii) जो प्यार से किसी को उठा न पाए।

***(३) पद्यांश की तीसरी और चौथी पंक्ति का संदेश लिखिए।**

**उत्तर:** कवि भवानी प्रसाद मिश्र प्रेम की श्रेष्ठता प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि प्रेम द्वारा असंभव कार्य को भी संभव किया जा सकता है। हमारे जीवन में यदि अंधकार और नकारात्मक भाव हो, तो प्रेम के द्वारा उसे प्रकाशित किया जा सकता है। सकारात्मकता का भाव जाग सकता है। उसी प्रकार बाहरी समाज में निहित द्वेष, ईर्ष्या व नकारात्मकता को प्रेम के द्वारा सद्मार्ग पर लाया जा सकता है। कवि के मतानुसार प्रेम जीवन में सरलता, सहृदयता व मानवता का प्रतीक है।

## भाषा बिंदु

***(१) कोष्ठक में दिए गए प्रत्येक कारक चिह्न से अलग-अलग वाक्य बनाइए और उनके कारक लिखिए।**

**[ ने, को, से, का, की, के, में, पर, भर, तक, हे, अरे, के लिए ]**

(i) **ने** : राम ने अपना काम पूरा किया।
**कारक** : कर्ता कारक

(ii) **को** : मैंने विजय को अपनी कलम दी।
**कारक** : कर्म कारक

(iii) **से** : घर से निकलते ही बारिश शुरू हुई।
**कारक** : अपादान कारक

(iv) **का** : राम ने अपनी डायरी में उसका पता नोट कर लिया।
**कारक** : संबंध कारक

(v) **के** : मैं उसके लिए दो लीटर पानी लाया।
**कारक** : संप्रदान कारक

(vi) **में** : कुएँ में एक घड़ा था।
**कारक** : अधिकरण कारक

(vii) **पर** : घर पर कोई नहीं था।
**कारक** : अधिकरण कारक

(viii) **भर** : बीमारी के कारण मैं रातभर सो नहीं पाया।
**कारक** : अधिकरण कारक

(ix) **तक** : मैं आज तक उसकी बात भूला नहीं।
**कारक** : अधिकरण कारक

(x) **हे** : हे राम! यह अच्छा नहीं हुआ।
**कारक** : संबोधन कारक

(xi) **अरे** : अरे! तू तो निरा मूर्ख है।
**कारक** : संबोधन कारक

(xii) **के लिए** : राधा ने उसके लिए किताब खरीदी।
**कारक** : संप्रदान कारक

## उपयोजित लेखन

***(१) निम्नलिखित शब्दों के आधार पर कहानी लेखन कीजिए तथा उचित शीर्षक दीजिए।**

**(अलमारी, गिलहरी, चावल के पापड़, छोटा बच्चा)**

**उत्तर:** रामू एक छोटा बच्चा था। वह बड़ा ही प्यारा था। उसे पशु-पक्षियों से अपार प्रेम था। उसके पास कुत्ता व बिल्ली थी। वह उनका बहुत ही अच्छे से ख्याल रखता था। उसके घर के आँगन में आम का एक पेड़ था। उस पर कई पक्षी रहते थे। रामू के कक्ष में एक अलमारी थी, उस पर एक खग दंपत्ति ने अपना घोंसला भी बनाया था। रामू उन्हें पर्याप्त मात्रा में खाने के लिए अनाज के दाने देता था। उसी पेड़ पर एक गिलहरी भी रहती थी। उसके शरीर पर झब्बेदार बाल थे। वह बहुत ही सुंदर दिखती थी। गिलहरी पेड़ से नीचे उतरकर आँगन में आती व पक्षियों के साथ अनाज के दाने बड़े मजे से खाती थी।

एक दिन राजू की मम्मी ने चावल के पापड़ बनाकर घर के आँगन में सूखने के लिए रखे थे। काजू एवं चावल के पापड़ गिलहरी का स्वादिष्ट व्यंजन होता है। इस बात का पता राजू को नहीं था। जैसे ही गिलहरी ने चावल के पापड़ देखे, वैसे ही वह उन्हें खाने के लिए आँगन में आई। वह पापड़ों को बड़े ही प्यार से कुतर-कुतरकर खा रही थी। राजू के बड़े भाई ने जैसे ही गिलहरी को पापड़ खाते हुए देखा, तो वह बहुत क्रोधित हुआ और गिलहरी को मारने के लिए तपाक से आगे आया। राजू भी वहीं पर उपस्थित था। उसे अपने बड़े भाई का यह आचरण अच्छा नहीं लगा। उसने अपने भाई को ऐसा करने से रोका। फिर भी, उसका भाई नहीं माना। वह गिलहरी को लाठी से मारने ही वाला था, तब राजू ने बड़े भाई के हाथ से लाठी छीन ली। बड़े भैया को राजू की उद्दंडता रास नहीं आई। वह गिलहरी को छोड़कर राजू पर ही बरसने लगा। इतने में राजू की दादी वहाँ पर आई और उसने राजू के बड़े भाई को समझाते हुए कहा, ''पशु-पक्षियों पर दया करना एवं उनका संरक्षण करना प्रत्येक मानव का कर्तव्य होता है।''

दादी की बात सुनकर बड़े भाई का गुस्सा शांत हो गया और वह भी राजू के साथ गिलहरी को बड़े प्यार से चावल के पापड़ खाते हुए देखने लगा...।

❖❖❖

# ७ खुला आकाश (पूरक पठन)

*- कुँवर नारायण (१९२७-२०१७)*

## लेखक-परिचय

**जीवन-परिचय** : ज्ञानपीठ व पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित कुँवर नारायण जी 'नई कविता' आंदोलन के एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। हिंदी साहित्य के सम्मानित कवियों में इन्हें गिना जाता है। फिल्म समीक्षा तथा अन्य विषयों पर इनके द्वारा लिखे गए लेख विविध पत्र-पत्रिकाओं में छपे हैं। इनकी रचनाओं का अन्य भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

**प्रमुख कृतियाँ** : 'चक्रव्यूह', 'तीसरा सप्तक', 'परिवेश', 'हम-तुम', 'आत्मजयी', 'कोई दूसरा नहीं', 'इन दिनों' आदि।

## गद्य-परिचय

**डायरी विधा** : प्रस्तुत पाठ डायरी विधा का एक अंश है। डायरी साहित्य की एक ऐसी तरल विधा है, जिसे जिस बर्तन में डालो; वह उसी का आकार ले लेती है। डायरी रहस्यों को अपने में समाए रहती है। डायरी एक व्यक्ति का आत्मप्रेक्षण होता है। डायरी लेखन में निष्कपटता और रंजकता होती है।

**प्रस्तावना** : 'खुला आकाश' इस डायरी में लेखक कुँवर नारायण जी ने हृदय की दुनिया, मकानों से भरा शहर, आत्मचिंतन, मनुष्यता, जीवन की सार्थकता, आधुनिक सभ्यता की गुलामी आदि पर अपने विचार व्यक्त किए हैं।

## सारांश

प्रस्तुत पाठ डायरी विधा में लिखा गया है। यह लेखक द्वारा अलग-अलग दिन लिखे गए लेख के अंश हैं। लेखक अपनी डायरी में लिखते हैं कि व्यक्ति की हृदय की दुनिया बाहरी दुनिया से बड़ी होती है। यदि व्यक्ति चाहे तो वह अपने मन की दुनिया को समृद्ध बना सकता है। आज हमारे शहरों का बहुत ही बुरा हाल है। चारों ओर मकान ही दिखाई देते हैं। कांक्रीट के इस जंगल में पर्यावरण की हानि हो रही है। लेखक के अनुसार सही साहित्य वही होता है; जिसे व्यक्ति अपनी दोनों आँखों से देखता है। व्यक्ति को एक जगह पर बैठकर स्वयं के बारे में सोचना चाहिए। आत्मचिंतन बहुत ही महत्त्वपूर्ण होता है। मनुष्य के पास मनुष्यता होनी चाहिए। आधुनिक सभ्यता के इस युग में व्यक्ति जानवर बनता हुआ प्रतीत होता है। व्यक्ति को अपने जीवन को खुले ढंग से जीना चाहिए। कई लोग अपने जीवन में चीजों को लुका-छिपाकर रखते हैं। ऐसा करना गलत होता है। व्यक्ति को दूसरों के बारे में सोचना चाहिए। उसे परोपकार करना चाहिए। यही जीवन की सार्थकता होती है। व्यक्ति को स्वयं बहस, चर्चा, परिचर्चा करनी चाहिए। इससे उसके जीवन में शांति बनी रहती है। आधुनिक सभ्यता के इस युग में व्यक्ति चीजों का गुलाम बन गया है। यह अच्छी बात नहीं है। चीजें व्यक्ति की जरूरतें पूरी करने के लिए होती हैं। यह तथ्य मनुष्य को समझना चाहिए।

## शब्दार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| अंदर की दुनिया | - मन की दुनिया | चेष्टा | - प्रयास |
| आजादी | - स्वतंत्रता | अविभाज्य | - अभिन्न |
| झाँकना | - देखना | सँकरी | - पतली, कम चौड़ी, तंग |
| हस्तक्षेप | - दखलअंदाजी | गोजर | - कनखजूरा |
| प्रतिरूप | - प्रतिबिंब | लकड़बग्घा | - भेड़िये की जाति का एक पशु |
| चारित्रिक बेईमानी | - चरित्र से की गई बेईमानी | चलायमान | - चलता हुआ, चंचल |

## MASTER KEY QUESTION SET - 7

**प्रश्न १ (अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति क (अ) : आकलन कृति**

**(१) अंतर लिखिए।**

| अंदर की दुनिया | बाहर की दुनिया |
|---|---|
| (१) आजादी, पूरी आजादी अंदर की दुनिया में संभव है। | (१) आजादी व पूरी आजादी बाहर की दुनिया में असंभव है। |
| (२) आंतरिक दुनिया बहुत बड़ी होती है। | (२) बाहर की दुनिया अंदर की दुनिया (आंतरिक दुनिया) से छोटी होती है। |

**(२) निम्नलिखित विधान सत्य है या असत्य लिखिए।**

**(i) भीतरी दुनिया को हम अपनी तरह समृद्ध बना सकते हैं।**

**(ii) व्यक्ति अंदर की दुनिया का विस्तार करता है।**

**उत्तर:** (i) सत्य (ii) असत्य

*गद्यांश १ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक २७*

**अंदर की दुनिया** : हमारे अंदर की दुनिया बाहर की दुनिया से कहीं ज्यादा बड़ी है। हम उसका विस्तार नहीं करते। बाहर की अपेक्षा उसे छोटा करते चले जाते हैं और उसे बिल्कुल निर्जीव कर लेते हैं। आजादी, पूरी आजादी, अगर कहीं संभव है; तो इसी भीतरी दुनिया में ही, जिसे हम बिल्कुल अपनी तरह समृद्ध बना सकते हैं- स्वार्थी अर्थों में सिर्फ अपने लिए ही नहीं, निःस्वार्थी अर्थों में दूसरों के लिए भी महत्त्व रखती है और स्वयं अपने लिए तो विशेष महत्त्व रखती ही है।

- १० मार्च १९९८

**कृति अ (२) : स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) 'इस तरह मैं अपनी अंदर की दुनिया को समृद्ध बना सकता हूँ।' कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:** अंदर की दुनिया यानी हृदय की दुनिया। हृदय या मन का समृद्ध होना अति आवश्यक होता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी अंदर की दुनिया को समृद्ध बनाने के लिए भरसक प्रयास करना चाहिए। मैं अपनी अंदर की दुनिया को समृद्ध बनाने के लिए सबसे पहले मन को अनुशासन में रखूँगा। नए तरीके से सोचना शुरू कर दूँगा, ताकि मन का नवीनीकरण हो। मन पर सत्य, प्रेम, अहिंसा, मानवता आदि मूल्यों का गहरा व स्थाई प्रभाव बनाए रखने के लिए प्रयत्न करूँगा। मन में सद्‌गुणों को स्थापित करूँगा, ताकि हृदय संपन्न एवं समृद्ध बने।

**प्रश्न २ (आ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति आ (१) : आकलन कृति**

***(१) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए।**

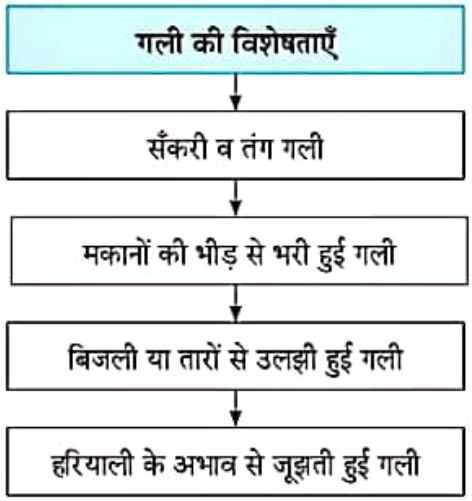


**(२) कृति पूर्ण कीजिए।**

***(i) गली से यह नहीं दिखता** : आसमान, पेड़

***(ii) लेखक ऐसी जिंदगी बिताना नहीं चाहता** : बिजली या टेलिफोन के तारों में उलझे हुए आसमान व हरियाली के अभाव से जूझते हुए मुहल्ले

**(iii)**

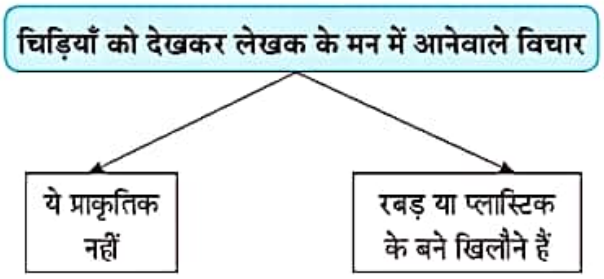


**(३) कारण लिखिए।**

**(i) गली में पेड़ नहीं लगाए जा सकते।**

**उत्तर:** क्योंकि गली में पेड़ लगाने की गुंजाइश नहीं है।

**(ii) लेखक को लगता है कि चिड़ियाँ प्राकृतिक नहीं हैं।**

**उत्तर:** क्योंकि घोंसले बनाने के लिए वहाँ पर पेड़ ही नहीं है और इस कारण वे बिजली या टेलीफोन के तारों पर ही बैठी रहती हैं।

*गद्यांश २ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक २७*

**मकान पर मकान** : जिस गली में आजकल रहता हूँ-वहाँ एक आसमान भी है लेकिन दिखाई नहीं देता। उस गली में पेड़ भी नहीं हैं, न ही पेड़ लगाने की गुंजाइश ही है। मकान ही मकान हैं। इतने मकान कि लगता है मकान पर मकान लदे हैं। लंद-फंद मकानों की एक बहुत बड़ी भीड़, जो एक सँकरी गली में फँस गई और बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है। जिस मकान में रहता हूँ, उसके बाहर झाँकने से 'बाहर' नहीं सिर्फ दूसरे मकान और एक गंदी व तंग गली दिखाई देती है। चिड़ियाँ दिखती हैं, लेकिन पेड़ों पर बैठीं या आसमान में उड़ती हुई नहीं। बिजली या टेलीफोन के तारों पर बैठी, मगर बातचीत करतीं या घरों के अंदर यहाँ-वहाँ घोंसले

बनाती नहीं दिखतीं। उन्हें देखकर लगता मानो वे प्राकृतिक नहीं, रबड़ या प्लास्टिक के बने खिलौने हैं, जो शायद ही इधर-उधर फुदक सकते हों या चूँ-चूँ की आवाजें निकाल सकते हों।

मैं ऐसी सँकरी और तंग गली में, मकानों की एक बहुत बड़ी भीड़ से बिजली या टेलिफोन के तारों से उलझे आसमान से एवं हरियाली के अभाव से जूझते अपने मुहल्ले से बाहर निकलने की भारी कोशिश में हूँ।

- १० मार्च १९९८

कृति आ (२): स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'कांक्रीट के जंगल के विपरीत परिणाम।' कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: कांक्रीट एक निर्माण-सामग्री है, जो सीमेंट एवं कुछ अन्य पदार्थों का मिश्रण होती है। कांक्रीट का जंगल तापमान बढ़ा रहा है। हरियाली और पेड़ की कमी हो रही है। पर्यावरण की खराबी से सूर्य की विकिरणों का प्रभाव बढ़ रहा है। सर्दियों में कोहरे की समस्या बढ़ रही है। इससे लोगों के स्वास्थ्य पर विपरीत परिणाम का प्रभाव बढ़ रहा है। शहरों में बीमारियाँ बढ़ रही हैं। शहरी क्षेत्रों में बारिश की कमी हो रही है। बिजली और पानी का अधिक से अधिक उपयोग हो रहा है। कांक्रीट के जंगल में रहते-रहते लोग संवेदना से रहित होते जा रहे हैं।

प्रश्न ३ (इ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

कृति इ (१): आकलन कृति

**(१) गद्यांश के आधार पर वाक्य पूर्ण कीजिए।**

**(i) सही साहित्य वही होता है -**

उत्तर: जिसे व्यक्ति दोनों आँखों से देख सकता है।

**(ii) जितना व्यक्ति अपनी सोच-समझ में भरोसा रखता है, उतना ही -**

उत्तर: भरोसा उसे दूसरों की सोच-समझ में रखना चाहिए।

**(२) निम्नलिखित वाक्य सही है या गलत पहचानकर लिखिए और गलत वाक्यों को फिर से सही कीजिए।**

**(i) सभी के प्रति हमारे मन में सकारात्मक स्वीकृति का भाव होना चाहिए।**

उत्तर: सही

**(ii) बिलकुल चुपचाप बैठकर स्वयं के बारे में सोचना गलत होता है।**

उत्तर: गलत : बिलकुल चुपचाप बैठकर स्वयं के बारे में सोचना सही होता है।

*गद्यांश ३ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक २७-२८*

**सही साहित्य** : सही और संपूर्ण साहित्य वह है, जिसे हम दोनों आँखों से देखते हैं-सिर्फ बाईं या सिर्फ दाईं आँख से नहीं।

- ८ अगस्त, १९९८

**जानें खुद को** : बिलकुल चुपचाप बैठकर सिर्फ अपने बारे में सोचें। कोशिश करें कि 'दूसरे' या 'सब' कहीं भी उस आत्मचिंतन के बीच में ना आएँ। इससे दो फायदे होंगे। एक तो हम अपने को जान सकेंगे कि हम स्वयं क्या हैं, जो दूसरों के बारे में सब कुछ जानने का दंभ रखते हैं। दूसरे, हमारे उस हस्तक्षेप से दूसरों की रक्षा होगी, जिसके प्रतिक्षण मौजूद रहते वे अपने बारे में न तो संतुलित ढंग से सोच पाते हैं, न सक्रिय हो पाते हैं। दूसरों की सोच-समझ में भी उतना ही भरोसा रखें, जितनी हमें अपनी सोच-समझ में है।

हर एक के प्रति हमारे मन में सहज सकारात्मक स्वीकृति का भाव होना चाहिए। दूसरा अन्य नहीं, अंतमय हैं, हमारे ही प्रतिरूप, हमसे अलग या भिन्न नहीं।

- १२ नवंबर १९९८

कृति इ (२): स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'आत्मचिंतन व्यक्ति के लिए जरूरी होता है।' अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: एक जगह पर बैठकर स्वयं के बारे में या स्वयं के कार्य के बारे में सोचना 'आत्मचिंतन' कहलाता है। आत्मचिंतन करने से व्यक्ति को स्वयं की अच्छाई या बुराई का पता चलता है। आत्मचिंतन के द्वारा व्यक्ति अपने अवगुणों का विश्लेषण करके स्वयं में बदलाव लाने की कोशिश करता है। व्यक्ति अहंकार, वासना, राग-द्वेष आदि भावनाओं के विपरीत परिणामों के बारे में आत्मचिंतन करके उनका त्याग करने के लिए अग्रसर होता है। आत्मचिंतन करने से व्यक्ति को शांति मिल सकती है। स्वयं की उन्नति के लिए व्यक्ति को आत्मचिंतन करना चाहिए। आत्मचिंतन ऐसा हथियार है, जो व्यक्ति को प्रगति के मार्ग की ओर प्रशस्त करता है।

प्रश्न ४ (ई) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

कृति ई (१): आकलन कृति

**(१) तालिका पूर्ण कीजिए।**

| जंगली प्राणी | पालतू प्राणी | कीट |
|---|---|---|
| बाघ, भेड़िया, लकड़बग्घा, तेंदुआ, साँप | गाय, बकरी, भेड़ | तितली, बिच्छू, गोजर |

**(२) गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

**(i) गोजर (ii) आत्मविश्वास**

उत्तर: (i) गद्यांश में आए शतपाद जीव का नाम लिखिए।

(ii) मनुष्य में किसकी कमी झलकती है?

**(३) समझकर लिखिए।**

**(i) लेखक को इस तरह जीना पसंद है।**

उत्तर: सहज और खुले ढंग से।

**(ii) वे चारित्रिक बेईमानी के शिकार होते हैं।**

उत्तर: जो चीजों को लुका-छिपाकर, बातों को रचा-बसाकर जीना पसंद करते हैं।

*(४) आकृति पूर्ण कीजिए।

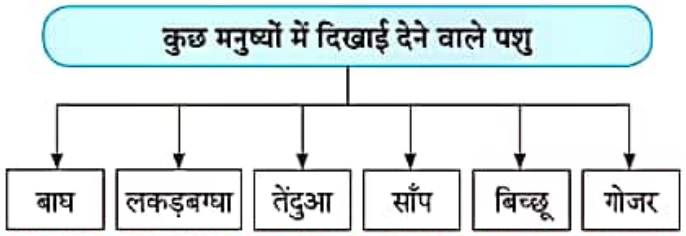


*गद्यांश ४ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक २८*

**सिर्फ मनुष्य होते :** कुछ लोग सोचते होंगे कि आखिर यह क्यों होता है, कैसे होता है कि आदमियों में ही कुछ आदमी बाघ, भेड़िए, लकड़बग्घे, साँप, तेंदुए, बिच्छू, गोजर वगैरह की तरह होते हैं और कुछ आदमी गायें, बकरी, भेड़, तितली वगैरह की तरह? ऐसा क्यों नहीं होता कि जिस तरह सारे बाघ केवल बाघ होते हैं और कुछ नहीं, या जैसे सारी गायें केवल गायें होती हैं और कुछ नहीं, उसी तरह सारे मनुष्य केवल मनुष्य होते और कुछ नहीं...।

- ७ अगस्त १९९९

**लुका-छिपा कर जीना :** मुझे जीवन को सहज और खुले ढंग से जीना पसंद है। चीजों को लुका-छिपाकर, बातों और व्यवहार को रचा बसाकर जीना सख्त नापसंद है। वह चारित्रिक बेईमानी है, जिसे हम व्यवहार कुशलता का नाम देते हैं। इसके पीछे आत्मविश्वास की कमी झलकती है कि कहीं लोग हमारी असलियत को न जान जाएँ।

आखिर वह असलियत इतनी गंदी और धूर्त क्यों हो कि उसे छिपाना जरूरी लगे।

- ४ जनवरी २००१

### कृति ई (२) : स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'मनुष्य जीवन की सार्थकता मनुष्य बनने में ही है।' इस कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: मनुष्य सभी जीवों से श्रेष्ठ है। उसके जीवन की सार्थकता मनुष्य बनने में ही है। वही मनुष्य होता है, जो मनुष्यता का पालन करता है। कभी-कभी मनुष्य जानवरों से भी बदतर अथवा बुरा काम करता है। वह हैवान बन जाता है। ऐसा करने से वह मनुष्य कहलाने के लायक ही नहीं रहता। उसका जीवन निरर्थक हो जाता है। मनुष्य को ऐसा नहीं करना चाहिए। उसे मनुष्य-धर्म का पालन करना चाहिए। मनुष्य-धर्म का पालन करने से उसमें मानवीय मूल्यों का संचार होता है और वह श्रेष्ठतम कार्य करके समाज के सामने एक मिसाल कायम कर देता है। ऐसे व्यक्ति की मृत्यु के बाद भी उसे सभी याद करते हैं। वह अमर हो जाता है। इसलिए मनुष्य जीवन की सार्थकता मनुष्य बनने में ही है।

### प्रश्न ५ (उ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति उ (१) : आकलन कृति

**(१) समझकर लिखिए।**

***(i) मनुष्य जीवन की स्थितियाँ -**

उत्तर: बचपन, यौवन, बुढ़ापा।

**(ii) जीवन जीने की खास बात -**

उत्तर: जब तक जीवित रहे, तब तक जिंदगी को नया अर्थ देने का प्रयोग करना।

**(२) कृति पूर्ण कीजिए।**

(i)

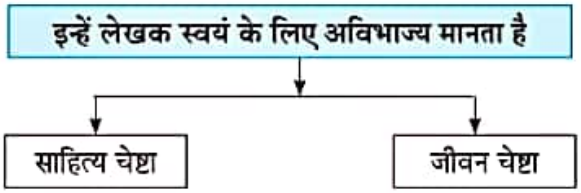


(ii)

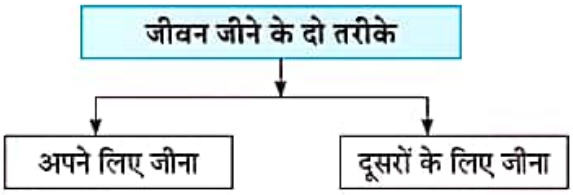


**(३) निम्नलिखित विधान सत्य है या असत्य चुनकर लिखिए।**

**(i) सन २००३ में लेखक की उम्र ७५ वर्ष की थी।**

**(ii) व्यक्ति की मृत्यु जीवन के किसी भी मोड़ पर हो सकती है।**

उत्तर: (i) असत्य (ii) सत्य

*गद्यांश ५ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक २८-२९*

**जीने का अर्थ :** बुढ़ापे का केवल यही अर्थ नहीं कि जीवन के कुछ कम वर्ष बचे हैं; यह तथ्य तो जीवन के किसी खंड पर भी लागू हो सकता है- बचपन, यौवन, बुढ़ापा...। खास बात है, जो भी वर्ष बचे हैं, जब तक जीवित और चैतन्य हूँ, जिंदगी को क्या अर्थ दे पाता हूँ, या अपने लिए उससे क्या पाता हूँ, ऐसा कुछ जिसका सबके लिए कोई महत्त्व है। लगभग इसी अर्थ में मैं साहित्यिक चेष्टा और जीवन चेष्टा को अपने लिए अविभाज्य पाता हूँ।

७५ का हो रहा हूँ-यानी, जीने के लिए अब कुछ ही वर्ष बचे हैं; लेकिन जीना बंद नहीं हो गया है। यह अहसास कि मृत्यु बहुत दूर नहीं है, उम्र के किसी भी मोड़ पर हो सकती है। ऐसा हुआ भी है मेरे साथ। तब हो या अब, यह सवाल अपनी जगह बना रहता है कि जीवन को किस तरह जिया जाए- सार्थकता से अपने लिए या दूसरों के लिए...।

-२३ जनवरी २००२

### कृति उ (२) : स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'जिंदगी जिंदादिली का नाम है।' इस कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: जिंदगी वास्तव में जिंदादिली का नाम है। जीवन में हम कितने वर्षों तक जीवित रहे; यह महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि हमने अपना जीवन किस प्रकार व कैसे बिताया; यह महत्त्वपूर्ण होता है। व्यक्ति अपने जीवन को अच्छी तरह से जीकर एक नया अर्थ दे सकता है। यदि मन तनावग्रस्त हो, तो वह किसी भी सुख का आनंद नहीं उठा पाता। मन की बेचैनी रातों की नींद भी हर लेती

है। व्यक्ति को तनावरहित जीवन जीना चाहिए। उसे अपने गम व दुखों को भूलकर दूसरों के जीवन में आनंद निर्माण करना चाहिए। व्यक्ति मस्ती में प्रफुल्लित रहकर दूसरों की दुनिया में जिंदादिली निर्मित कर सकता है।

**प्रश्न ६ (ऊ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति ऊ (१) आकलन कृति**

**(१) समझकर लिखिए।**

(i)

(ii) **लेखक ने दिल्ली शहर की तुलना इस वाहन से की है -**

(iii) **दूसरों से बहस करने का परिणाम -**

**उत्तर:** (ii) बस से (iii) झगड़े की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

**(२) कृति पूर्ण कीजिए।**

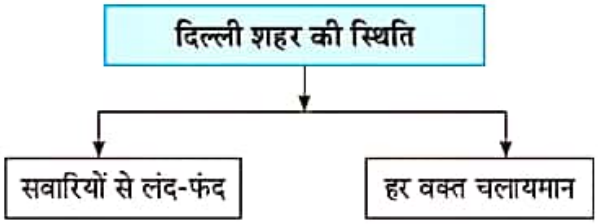


**(३) कारण लिखिए।**

(i) **लेखक को दिल्ली शहर बहुत बड़ी बस के जैसा लगा।**

**उत्तर:** क्योंकि वह शहर हमेशा सवारियों से लंद-फंद व हर वक्त चलायमान रहता है।

(ii) **हमें स्वयं से बहस करनी चाहिए।**

**उत्तर:** क्योंकि उससे सच्चाई हाथ लगती है।

*गद्यांश ६ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक २९*

**दिल्ली में रहना** : दिल्ली शहर में घर ढूँढ़ रहा हूँ। शहर, जैसे एक बहुत बड़ी बस! सवारियों से लंद-फंद, हर वक्त चलायमान। दिल्ली में रहने का मतलब कहीं पायदान बराबर दो कमरों में दो पाँव टिकाकर किसी तरह लटक जाओ, और लटके रहो उम्र भर। जिंदगी का मतलब बस इतना ही कि जब तक बन पड़े लटके रहो, फिर धीरे-से कहीं भीड़-भाड़ में गिर जाओ...।

- १२ जून २००३

**बहाने निकालना** : जो हम शौक से करना चाहते हैं, उसके लिए रास्ते निकाल लेते हैं। जो नहीं करना चाहते, उसके लिए बहाने निकाल लेते हैं....।

- जनवरी २००६

**अपने से बहस** : बहस दूसरों से नहीं, अपने से करनी चाहिए; उससे सच्चाई हाथ लगती है। दूसरों को सिर्फ सुनना चाहिए, दूसरों से बहस से केवल झगड़ा हाथ लगता है।

**कृति ऊ (२) : स्वमत अभिव्यक्ति**

***(१) 'जो हम शौक से करना चाहते हैं, उसके लिए मार्ग निकाल लेते हैं।' अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:** प्रत्येक व्यक्ति के कुछ शौक होते हैं। शौक हमें आनंद देते हैं। शौकीन होने से हमें ऊब नहीं होती। इससे काम के प्रति हमारा उत्साह बना रहता है। व्यक्ति को जिस चीज का शौक होता है, उसके लिए वह समय निकाल लेता है। चाहे व्यक्ति कितना भी व्यस्त क्यों न रहें, फिर भी वह अपने शौक की खातिर समय निकाल ही लेता है। जिसे पुस्तकें पढ़ने का शौक होता है, वह वक्त निकालकर पुस्तकालय में जाकर किताबें पढ़ता है या फिर हर महीने नई-नई किताबें खरीदता है। कहते भी हैं - जहाँ चाह, वहाँ राह होती है। बच्चों को खेलने का शौक होता है, अत: वह अपनी पढ़ाई पूरी करके दिन में दो तीन घंटे का समय खेल के लिए जैसे-तैसे निकाल लेते हैं। इस प्रकार जो हम शौक से करना चाहते हैं, उसके लिए मार्ग निकाल लेते हैं।

**प्रश्न ७ (ए) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति ए (१) : आकलन कृति**

**(१) चौखटों में दी गई सूचना के अनुसार शब्द में परिवर्तन कीजिए।**

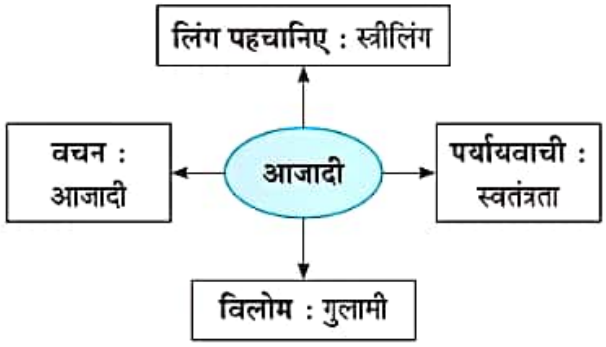


**(२) उचित जोड़ियाँ मिलाइए।**

| 'अ' | 'ब' |
|---|---|
| (i) एकनिष्ठ | (क) भविष्य |
| (ii) हजारों | (ख) गुलाम |
| (iii) दर्जनों | (ग) सेवा |
| (iv) उज्ज्वल | (घ) साल |

**उत्तर:** (i - ग) (ii - घ) (iii - ख) (iv - क)

**(३) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

**(i) कंप्यूटर (ii) गुलामी**

**उत्तर:** (i) लेखक ने चालीस हजार रुपयों में क्या खरीदा?

(ii) क्या करना-करवाना आदमी के स्वभाव में होता है?

(४) आकृति पूर्ण कीजिए।

(i)

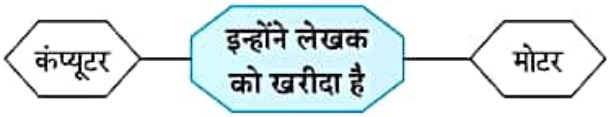


(ii)

*गद्यांश ७ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक २९*

**चीजों की गुलामी** : कुछ दिनों पहले एक कंप्यूटर ने मुझे चालीस हजार रुपयों में खरीदा है! आज कल उसकी गुलामी में हूँ। उसके नखरों को सिर झुकाकर झेलने में ही अपना कल्याण देख रहा हूँ। उसका वादा है कि एक दिन वह मुझे लिखने-पढ़ने की पूरी आजादी देगा। फिलहाल उसकी एकनिष्ठ सेवा में ही मेरा भविष्य उज्ज्वल है।

इसके पहले एक मोटर मुझे भारी दामों में खरीद चुकी है। उसकी सेवा में भी हूँ। दरअसल, चीजों का एक पूरा परिवार है; जिसकी सेवा में हूँ। आदमी का स्वभाव नहीं बदलता या बहुत कम बदलता है। गुलामी करना-करवाना उसके स्वभाव में है। सिर्फ तरीके बदले हैं, गुलामी की प्रवृत्ति नहीं। हजारों साल पहले एक आदमी मालिक होता था और उसके दरजनों गुलाम होते थे। अब हर चीज के दरजनों गुलाम होते हैं।

- ३० सितंबर २०१०
(दिशाओं का खुला आकाश से)

**कृति ए (२) : स्वमत अभिव्यक्ति**

(१) **'आधुनिक सभ्यता के इस युग में व्यक्ति चीजों का गुलाम हो गया है।' अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर :** आधुनिक सभ्यता एक सोच है, विचार है; जो व्यक्ति को इस दुनिया के प्रति जागरूक बनाता है, लेकिन मनुष्य इसे समझ नहीं पाता। इसका प्रभाव मनुष्य के जीवन पर पड़ा है। सुई से लेकर रोबोट तक नई-नई चीजों का आविष्कार हो गया है। मानव इन वस्तुओं का उपभोग ले रहा है। ये वस्तुएँ मनुष्य की जरूरतें पूरी करने के लिए होती हैं। इस तथ्य को इंसान भूल गया है और वह इन चीजों पर पूरी तरह से निर्भर हो गया है। इन चीजों के बिना वह रह नहीं सकता। आधुनिक सभ्यता मनुष्य पर इतनी हावी हो गई है कि वह पलभर के लिए भी इनसे अलग नहीं रह सकता। इसलिए कहा गया है कि आधुनिक सभ्यता के इस युग में व्यक्ति चीजों का गुलाम हो गया है।

## स्वाध्याय विषयक कृतियाँ

*(१) **सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए**

(i)

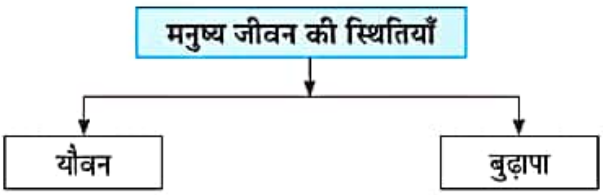


*(२) **लिखिए।**

(i)

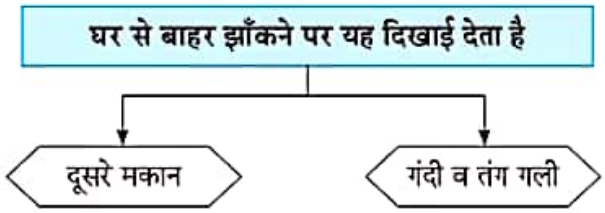


(ii)

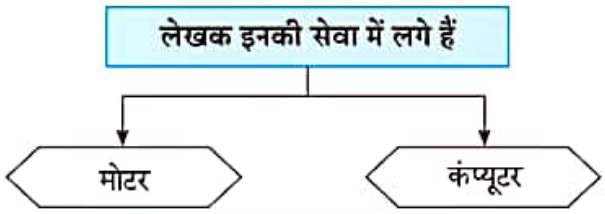


## भाषाबिंदु

*(१) **निम्नलिखित संधि-विच्छेद की संधि कीजिए और भेद लिखिए।**

| अनु. | संधि-विच्छेद | संधि शब्द | संधि भेद |
|---|---|---|---|
| १. | दु: + लभ | ..... | ..... |
| २. | महा + आत्मा | ..... | ..... |
| ३. | अन् + आसक्त | ..... | ..... |
| ४. | अंत: + चेतना | ..... | ..... |
| ५. | सम् + तोष | ..... | ..... |
| ६. | सदा + एव | ..... | ..... |

**उत्तर :**

| अनु. | संधि-विच्छेद | संधि शब्द | संधि भेद |
|---|---|---|---|
| १. | दु: + लभ | दुर्लभ | विसर्ग संधि |
| २. | महा + आत्मा | महात्मा | स्वर संधि |
| ३. | अन् + आसक्त | अनासक्त | स्वर संधि |
| ४. | अंत: + चेतना | अंतर्चेतना | विसर्ग संधि |
| ५. | सम् + तोष | संतोष | व्यंजन संधि |
| ६. | सदा + एव | सदैव | स्वर संधि |

*(२) **निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए और भेद लिखिए।**

| अनु. | शब्द | संधि शब्द | संधि भेद |
|---|---|---|---|
| १. | सज्जन | ..... + ..... | ..... |
| २. | नमस्ते | ..... + ..... | ..... |
| ३. | स्वागत | ..... + ..... | ..... |
| ४. | दिग्दर्शक | ..... + ..... | ..... |
| ५. | यद्यपि | ..... + ..... | ..... |
| ६. | दुस्साहस | ..... + ..... | ..... |

**उत्तर :**

| अनु. | शब्द | संधि शब्द | संधि भेद |
|---|---|---|---|
| १. | सज्जन | सत् + जन | व्यंजन संधि |
| २. | नमस्ते | नमः + ते | विसर्ग संधि |
| ३. | स्वागत | सु + आगत | स्वर संधि |
| ४. | दिग्दर्शक | दिक् + दर्शक | व्यंजन संधि |
| ५. | यद्यपि | यदि + अपि | स्वर संधि |
| ६. | दुस्साहस | दुः + साहस | विसर्ग संधि |

***(३) निम्नलिखित आकृति में दिए गए शब्दों का विग्रह कीजिए और संधि का भेद लिखिए।**

दिग्गज
सप्ताह
निश्चल
भानूदय
निस्संदेह
सूर्यास्त

| विग्रह | भेद |
|---|---|
| ..... + ..... | ( ) |
| ..... + ..... | ( ) |
| ..... + ..... | ( ) |
| ..... + ..... | ( ) |
| ..... + ..... | ( ) |
| ..... + ..... | ( ) |
| ..... + ..... | ( ) |
| ..... + ..... | ( ) |

**उत्तर :**

| संधि विग्रह | संधि भेद |
|---|---|
| दिक् + गज | व्यंजन संधि |
| सप्त + अह | स्वर संधि |
| निः + छल | विसर्ग संधि |
| भानु + उदय | स्वर संधि |
| निः + संदेह | विसर्ग संधि |
| सूर्य + अस्त | स्वर संधि |

***(४) पाठों में आए संधि शब्द छाँटकर उनका विच्छेद कीजिए और संधि का भेद लिखिए।**

**उत्तर :**

(१) भावार्थ : भाव + अर्थ = स्वर संधि
(२) सारांश : सार + अंश = स्वर संधि
(३) सूर्यास्त : सूर्य + अस्त = स्वर संधि
(४) सूर्योदय : सूर्य + उदय = स्वर संधि
(५) विद्यार्थी : विद्या + अर्थी = स्वर संधि
(६) महाशय : महा + आशय = स्वर संधि
(७) परोपकार : पर + उपकार = स्वर संधि
(८) पर्यावरण : परि + आवरण = स्वर संधि
(९) नयन : ने + अन = स्वर संधि
(१०) पवित्र : पो + इत्र = स्वर संधि
(११) सन्मार्ग : सत् + मार्ग = व्यजंन संधि
(१२) तल्लीन : तत् + लीन = व्यंजन संधि
(१३) संबंध : सम् + बंध = व्यंजन संधि
(१४) संपूर्ण : सम् + पूर्ण = व्यजंन संधि
(१५) संवाद : सम् + वाद = व्यंजन संधि
(१६) संरक्षण : सम् + रक्षण = व्यंजन संधि
(१७) दुर्बल : दुः + बल = विसर्ग संधि
(१८) निराशा : निः + आशा = विसर्ग संधि
(१९) प्रातःकाल : प्रातः + काल = विसर्ग संधि

## अपठित गद्यांश

***(१) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

(i)

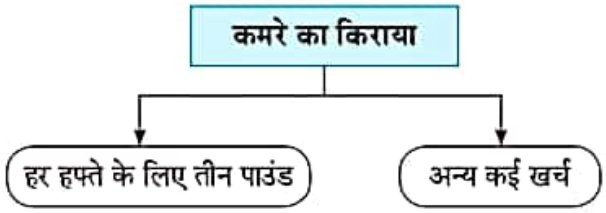


(ii)

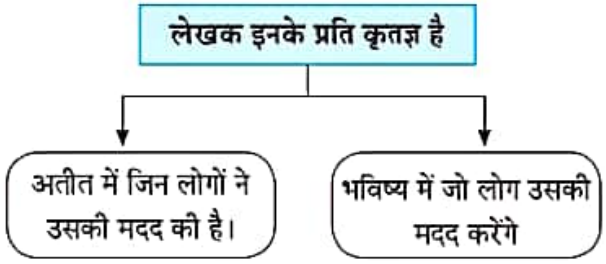


***(२) उत्तर लिखिए।**

(i) **परिच्छेद में उल्लेखित देश :** इंग्लैंड
(ii) **हर किसी को करना होगा :** अपना कर्तव्य
(iii) **लेखक की तकलीफें :** सब कुछ के लिए उन्हें अपनी जेब से खर्च करना पड़ता है और उनकी आमदनी कम है।

***(३) निर्देशानुसार हल कीजिए।**

**(अ) अर्थ से मेल खाने वाला शब्द उपर्युक्त परिच्छेद से ढूँढ़कर लिखिए।**

(i) **स्वयं की रक्षा करना :** आत्मरक्षा
(ii) **दूसरों के उपकारों को माननेवाला :** कृतज्ञ

**(ब) लिंग पहचानकर लिखिए।**

(i) **जेब :** स्त्रीलिंग (iii) **साहित्य :** पुल्लिंग
(ii) **दावा :** पुल्लिंग (iv) **सेवा :** स्त्रीलिंग

***(४) 'कृतज्ञता' के संबंध में अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर :** 'कृतज्ञता' का अर्थ है कृतज्ञ होने का भाव। यह एक महान गुण है। यह मनुष्य का एक ऐसा आभूषण है, जिसे धारण करने से

हमारा भी भला होता है और दूसरों को भी प्रेरणा मिलती है। जब कोई व्यक्ति हमारे लिए कुछ करता है, तो उसके प्रति हमें कृतज्ञ होना चाहिए। ईश्वर ने हमें सब कुछ दे दिया है, अत: हमें उसके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। हम अपने प्रति कभी भी और किसी भी रूप में की गई सहायता के लिए आभार प्रकट करते हैं और कहते हैं कि 'हम आपके प्रति कृतज्ञ हैं और इसके बदले में जब भी अवसर आएगा, अवश्य ही सेवा करेंगे।' इसलिए कहा गया है कि 'कृतज्ञता मनुष्य की अनमोल निधि है।'

## लेखनीय

*** (१) महानगरीय या गाँव की दिनचर्या के लाभ तथा हानि के बारे में लिखिए।**

उत्तर: महानगर अर्थात ऊँची-ऊँची इमारतें, बड़े-बड़े कारखानों, दुकानों तथा दौड़ते वाहनों से पूरित घनी आबादी वाला शहर। महानगरीय जीवन मनुष्य के लिए किसी वरदान से कम नहीं है, परंतु दूसरी ओर यह त्रासदी से भी भरा हुआ है।

महानगरीय जीवन सुबह से लेकर रात तक चलता ही रहता है। वह कभी थकता नहीं, आराम नहीं करता। वह जीवन भौतिक सुख व अन्य सुविधाओं की चकाचौंध से भरा हुआ है। यातायात के साधन इतने समुन्नत हो गए हैं कि व्यक्ति एक जगह से दूसरी जगह पर बड़ी आसानी से आ-जा सकता है। महानगरों में खाद्यान्न की कमी नहीं होती है। कोई भी महानगर में रहने के लिए आए, उसे नौकरी जरूर मिल जाती है। खेलकूद, मनोरंजन तथा व्यवसाय आदि के लिए यहाँ पर सभी संसाधन उपलब्ध होते हैं। यहाँ पर व्यक्ति में छिपी प्रतिभा को विकसित करने हेतु भी सकारात्मक वातावरण होता है। यहाँ पर कुशल चिकित्सक एवं चिकित्सा के उच्च साधन उपलब्ध होते हैं। पठन-पाठन की दृष्टि से भी महानगरों में बहुत ही अच्छा वातावरण होता है।

महानगरों की आबादी अधिक होने के कारण वहाँ पर घर, रोटी व मकान की समस्या बढ़ती दिखाई देती है। महानगरों में जमीन के दाम आसमान को छू रहे हैं। यहाँ पर रहने वाले लोगों का जीवन आपाधापी के कारण इतना व्यस्त हो गया है कि उन्हें साँस लेने की भी फुरसत नहीं है। प्रदूषण ने महानगर में रहने वाले लोगों का जीवन नरक-सा बना दिया है। सतत गाड़ियों के यातायात से महानगर में रहने वाले लोग त्रस्त हो गए हैं। महानगर में कई बीमारियों ने अपना डेरा जमाया है। सामाजिक समस्याएँ जैसे लूटमार, लड़ाई-झगड़ा, भ्रष्टाचार आदि का बोलबाला समाज में दिखाई दे रहा है।

## भाषण–संभाषण

*** (१) 'कंप्यूटर ज्ञान का महासागर' विषय पर तर्कपूर्ण चर्चा कीजिए।**

उत्तर:

### कंप्यूटर ज्ञान का महासागर

कंप्यूटर आधुनिक तकनीक की महान खोज है। आज कंप्यूटर के बिना किसी भी क्षेत्र में प्रगति करना संभव नहीं है। यह एक ऐसी मशीन है, जो अपनी मेमरी में ढेर सारा डाटा सुरक्षित रखता है। जीवन के हर एक क्षेत्र में कंप्यूटर ने प्रवेश कर लिया है। कार्यालय, बैंक, शिक्षण-संस्था, उद्योग-क्षेत्र आदि में कंप्यूटर का प्रवेश हुआ है। कंप्यूटर विज्ञान का एक अनोखा उपहार है। कोई भी जानकारी, पढ़ाई से संबंधित सामग्री, प्रोजेक्ट, वीडियो, गाने, खेल आदि से संबंधित जानकारी कंप्यूटर से प्राप्त होती है। कंप्यूटर ज्ञान का महासागर है। विश्व की सारी इंडस्ट्रीज कंप्यूटर पर निर्भर हो गई है। इसने मानव-जीवन को आसान बना दिया है। इसकी मदद से गणना (कैलकुलेशन) और विश्लेषण (एनालिसिस) किए जाते हैं। कंप्यूटर की मदद से प्रोग्रामिंग तैयार की जाती है। इससे मनुष्य का काम आसान हो जाता है और काफी समय भी बच जाता है। कम्युनिकेशन से लेकर सैटेलाइट टेक्नोलॉजी तक, कंप्यूटर काफी मददगार साबित हुआ है।

अंतरिक्ष अनुसंधान, इंजीनियरिंग और चिकित्सा के क्षेत्र में भी कंप्यूटर कार्यरत हैं। इन क्षेत्रों में निर्माण होने वाली जटिलतम समस्याओं को कंप्यूटर चुटकियों में हल करने की क्षमता रखता है। जानकारियों का भंडार कंप्यूटर में सुरक्षित रखा जाता है।

कंप्यूटर ने गूगल के माध्यम से अपने ज्ञान को अमर्यादित रूप से फैलाया है। गूगल के द्वारा हमें किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त होती है। हमें कहीं पर भी जाने की जरूरत नहीं है। सिर्फ कंप्यूटर के सामने बैठकर हम जो चाहे, वह जानकारी हासिल कर सकते हैं। इस प्रकार कंप्यूटर हमें ज्ञान के प्रति सतर्क व सचेत रखता है। वह व्यक्ति के ज्ञान-भंडार में वृद्धि करता है। कंप्यूटर के द्वारा व्यक्ति के शरीर के अंदर स्थित रोगों का भी पता लगाया जाता है। यह रोग का निदान करने में डॉक्टरों की मदद भी करता है।

अंत: स्पष्ट है कि कंप्यूटर ज्ञान का महासागर सिद्ध हो रहा है।

❖❖❖

# ८ गजल

*- माणिक वर्मा (१९३८)*

## कवि-परिचय

**जीवन-परिचय** : इनका जन्म मध्य प्रदेश के उज्जैन शहर में हुआ। ये हिंदी साहित्य में हास्य-व्यंग्य के सशक्त हस्ताक्षर हैं। गजल लिखना इनका प्रिय शौक है। अपनी रचनाओं के वाचन द्‌वारा इन्होंने साहित्यिक मंच की शोभा बढ़ाई है। इन्होंने वाचक परंपरा को बढ़ावा देने का कार्य किया है।

**प्रमुख कृतियाँ** : 'आखिरी पत्ता' (गजल संग्रह), 'आदमी और बिजली का खंभा', 'महाभारत अभी जारी है', 'मुल्क के मालिकों जवाब दो' आदि।

## पद्‌य-परिचय

**गजल** : गजल अरबी साहित्य की प्रसिद्‌ध काव्य विधा है; जो बाद में फारसी, उर्दू, नेपाली, मराठी और हिंदी साहित्य में लोकप्रिय हुई है। गजल एक ही बहर और वजन के अनुसार लिखे गए शेरों का समूह है। इसके पहले शेर को 'मतला' कहते हैं। गजल के अंतिम शेर को 'मक्ता' कहते हैं।

**प्रस्तावना** : गजलकार श्री माणिक वर्मा जी ने इस गजल के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि व्यक्ति को रंग-रूप की अपेक्षा कर्म को अधिक महत्त्व देना चाहिए। कवि के अनुसार यदि व्यक्ति अपने जीवन में अच्छे कर्म करेगा, तो ही वह अपने कार्य से समाज में अपनी महत्ता प्रतिपादित कर सकेगा।

## सारांश

प्रस्तुत गजल से 'कर्म ही पूजा है' का भाव स्पष्ट होता है। गजलकार ने व्यक्ति को समझाते हुए कहा है कि उसे सुनहरा शिखर बनने की अपेक्षा नींव को मजबूत बनाने का कार्य करना चाहिए। व्यक्ति को तन की सुंदरता से अधिक कर्म को महत्त्व देना चाहिए। उसे मील का पत्थर बनकर दूसरों का पथ-प्रदर्शक बनना चाहिए। इंसान को इंसान बनकर रहने में ही श्रेष्ठता व भलाई है। उसे इस कठोर हृदय वाली दुनिया में अपने आप को सँभालकर रखते हुए दूसरों के जीवन को प्रेरित करने का भी कार्य करना चाहिए। इंसान के पास परदुखकातरता का भाव होना चाहिए, ताकि वह दूसरों के दुख-दर्द को समझ सके। उसे अपने जीवन में मर्यादा का पालन करना चाहिए और जीवन में उत्पन्न होनेवाली प्रतिकूल परिस्थितियों के साथ जूझना चाहिए। असफलता प्राप्त होने के बावजूद भी संघर्ष करना चाहिए। जीवन में अच्छा कर्म करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को आगे आना चाहिए। इसमें सभी की भलाई निश्चित है।

## शब्दार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| शिखर | - चोटी | मर्यादा | - नियम, सीमा |
| शौक | - पसंद | गर | - अगर |
| नींव | - आधारशिला | स्वर्णिम | - सोने के रंग का/सुनहरा |
| आईना | - दर्पण | गर्द | - धूल |
| जलन | - पीड़ा या वेदना | शक्ल | - चेहरा |
| जुगनू | - रात में चमकने वाला एक कीट, जिसे खद्‌योत भी कहते हैं। | धुंध | - धुआँ, कोहरा |

## भावार्थ

- **आपसे किसने कहा ................................ अंदर दिखो।**

गजलकार कहते हैं कि व्यक्ति को सुनहरे रंग का शिखर बनकर दिखने की कुछ भी जरूरत नहीं। व्यक्ति को दिखावे की क्या जरूरत ? उसे तो अपने कर्म के द्‌वारा स्वयं अपनी पहचान बनानी चाहिए। यदि व्यक्ति को दिखावा करने का इतना ही शौक है, तो उसे नींव के अंदर स्वयं को रखकर देखना चाहिए यानी व्यक्ति को शिखर पर सुनहरी चमक की भाँति दीप्तिमान होने के बजाय नींव को मजबूत करने का कार्य करना चाहिए। व्यक्ति कर्म से ही पहचाना जाता है, दिखावे से नहीं।

- **चल पड़ी तो ................................ पत्थर दिखो।**

गजलकार कहते हैं, ''गर्द अथवा धूल हवा के झोंके के साथ आगे ही आगे चल पड़ती है। यहाँ तक कि वह ऊँचे आसमान में भी फैल जाती है। देखा जाए तो गर्द सामान्य होती है, फिर भी वह आसमान पर अपना अधिकार कर लेती है। इंसान तो उससे महान होता है। अगर वह चाहे, तो मील का पत्थर बनकर सभी के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य कर सकता है। वह अपने अच्छे कार्यों से समाज के सामने एक मिसाल प्रस्थापित कर सकता है।''

- **सिर्फ देखने के ................................ आदमी बनकर दिखो।**

गजलकार कहते हैं, ''दूसरे हमारे रंग-रूप को देखकर हमारी तारीफ करें, इसलिए अपने आप को दिखावे की वस्तु बनाकर समाज के सामने प्रस्तुत होने में किसी भी प्रकार की भलाई नहीं है। आखिर हम आदमी हैं, तो हमें आदमी बनकर समाज के सामने प्रस्तुत होना चाहिए। हमारे हृदय में जो आदमियत सोई हुई है, उसे जगाकर सभी के कल्याण के लिए हमें आगे आना चाहिए।''

- **जिंदगी की शक्ल ................................ बनकर दिखो।**

गजलकार कहते हैं, ''व्यक्ति को अपनी जिंदगी स्वयं ही सुंदर व समृद्ध बनानी चाहिए। पत्थरों के इस शहर में यानी कठोर हृदयवाले लोगों की इस दुनिया में व्यक्ति को अपनी जिंदगी स्वयं सँवारनी होगी। उसे ऐसा आईना बनने की जरूरत है, जिसमें वह अपनी जिंदगी रूपी सूरत को हमेशा तरोताजा व प्रसन्न रख सकता है।''

- **आपको महसूस होगी ................................ भीतर दिखो।**

गजलकार कहते हैं, ''मोम के अंदर धागा होता है। वह जलता रहता है, किंतु दूसरों को रोशनी देता है। व्यक्ति को भी मोम के अंदर समाए हुए धागे की भाँति दूसरों के लिए मर-मिटने के लिए तैयार होना चाहिए। जब ऐसा होगा, तब व्यक्ति को अन्य लोगों की व्यथा-वेदना का एहसास होगा; तब जाकर व्यक्ति दूसरों की पीड़ा को स्वयं के मन में महसूस करने लगेगा। व्यक्ति में संवेदनशीलता का होना बेहद जरूरी है।''

- **एक जुगनू ................................ रोशनी बनकर दिखो।**

गजलकार कहते हैं, ''जुगनू यानी रात में चमकने वाला एक ऐसा कीट, जो स्वयं प्रकाशित होता है। अच्छे कार्य के लिए एक जुगनू भी व्यक्ति का साथ देना चाहता है। व्यक्ति को सिर्फ अच्छे कार्य के लिए आगे आना चाहिए। उसे विपरीत परिस्थितियों में यानी अंधकार रूपी जीवन में रोशनी बनकर दूसरों का पथ-प्रदर्शक बनना चाहिए।''

- **एक मर्यादा ................................ सीप के अंदर दिखो।**

गजलकार कहते हैं, ''जीवन में सभी को मर्यादा का पालन करना पड़ता है। मर्यादा के बिना व्यक्ति-विकास संभव नहीं है। मोती अपने निर्मिती-काल में सीप के अंदर होता है। वह भी मर्यादा का पालन करता है। तब जाकर वह चमकीला व मूल्यवान होता है। यदि व्यक्ति को भी अपने जीवन में सफलता की मंजिल हासिल करनी है, तो उसे अपने जीवन में मर्यादा का पालन अवश्य करना पड़ेगा। व्यक्ति के पास सहनशीलता का भाव होना चाहिए।''

- **डर जाए ................................ टूटे पर दिखो।**

गजलकार कहते हैं, ''यदि नाजुक कली फूल बनने से डर जाए, तो वह सुंदर फूल का रूप धारण नहीं कर सकती। उसी प्रकार व्यक्ति को भी विपरीत परिस्थिति में डरना नहीं चाहिए। यदि वह भयभीत हुआ, तो वह सफलता हासिल नहीं कर सकता। व्यक्ति को न खिले हुए फूल पर तितली के टूटे हुए पंखों की भाँति दिखना चाहिए। इसका अर्थ यह है, भले ही व्यक्ति जीवन में असफल हो; फिर भी उसे अपने मन में धैर्य रखकर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। संघर्ष के साथ जूझते हुए व्यक्ति को आगे बढ़ना चाहिए।''

• **कोई ऐसी शक्ल ..... अक्सर दिखो।**

गजलकार कहते हैं, ''दुनिया की इस भीड़ में कोई ऐसी शक्ल दिखने के लिए मिल जाए, जिसे वह देखता है, उसी में सभी लोग उसे अक्सर दिखाई दें। अर्थात, दुनिया की इस भीड़ में कोई ऐसा एक व्यक्ति अच्छे कर्म करने के लिए आगे आ जाए और उसी से प्रेरणा पाकर सभी लोग अच्छा कर्म करने के लिए प्रेरित हो जाएँ।

## MASTER KEY QUESTION SET - 8

**प्रश्न १ (अ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति अ (१): आकलन कृति**

**(१) गजल की पंक्तियों का तात्पर्य :**

***(i) नींव के अंदर दिखो।**

उत्तर: व्यक्ति को अपने अच्छे कर्म के बल पर अपनी पहचान स्वयं बनानी चाहिए।

**(ii) आदमी बनकर दिखो।**

उत्तर: हृदय में जो आदमियत सोई हुई है, उसे जगाकर सभी के कल्याण के लिए व्यक्ति को आगे आना चाहिए।

***(२) कृति पूर्ण कीजिए।**

**मनुष्य से अपेक्षाएँ**

- मील का पत्थर बनकर सभी के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य करना चाहिए।
- आदमी बनकर समाज के सामने प्रस्तुत होना चाहिए।

*पद्यांश: १ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ३३*

आपसे किसने कहा स्वर्णिम शिखर बनकर दिखो,
शौक दिखने का है तो फिर नींव के अंदर दिखो।

चल पड़ी तो गर्द बनकर आस्मानों पर लिखो,
और अगर बैठो कहीं तो मील का पत्थर दिखो।

सिर्फ देखने के लिए दिखना कोई दिखना नहीं,
आदमी हो तुम अगर तो आदमी बनकर दिखो।

**कृति अ (२): आकलन कृति**

**(१) जिनके उत्तर निम्न शब्द हों, ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए।**

***(i) आसमान (ii) स्वर्णिम**

उत्तर: (i) गर्द कहाँ पर फैल जाती है?

(ii) शिखर के लिए गद्यांश में प्रयुक्त विशेषण लिखिए।

**(२) आकृति पूर्ण कीजिए।**

***(i) गजल में प्रयुक्त प्राकृतिक घटक**

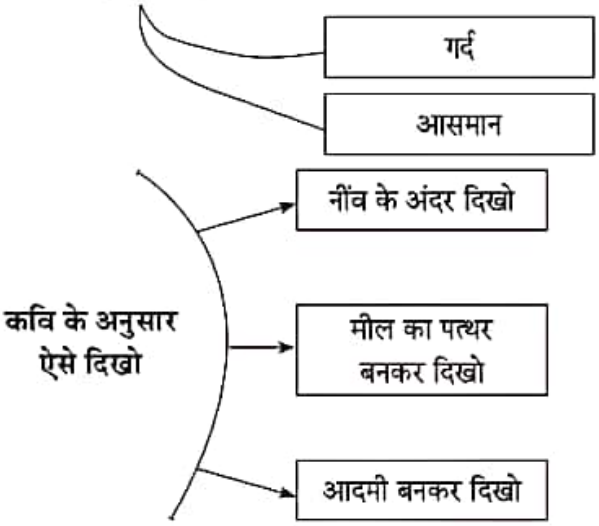


**(ii)**




**(३) निम्नलिखित पंक्तियों से प्राप्त जीवनमूल्य लिखिए।**

**(i) आपसे किसने कहा..... नींव के अंदर दिखो।**

उत्तर: कर्म ही पहचान है।

**(ii) सिर्फ देखने के लिए..... आदमी बनकर दिखो।**

उत्तर: इंसानियत श्रेष्ठ धर्म है।

**कृति अ (३): निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।**

**(१) आपसे किसने कहा ..... नींव के अंदर दिखो।**

उत्तर: गजलकार कहते हैं, ''व्यक्ति को सुनहरे रंग का शिखर बनकर दिखने की कोई जरूरत नहीं। व्यक्ति को दिखावे की क्या जरूरत? उसे तो अपने कर्म के द्वारा स्वयं की पहचान बनानी चाहिए। यदि व्यक्ति को दिखावट करने का इतना ही शौक है, तो उसे नींव के अंदर स्वयं को रखकर देखना चाहिए। यानी व्यक्ति को शिखर पर सुनहरी चमक की भाँति दीप्तिमान होने के बजाय नींव को मजबूत करने का कार्य करना चाहिए। व्यक्ति कर्म से ही पहचाना जाता है, दिखावे से नहीं।''

**(२) चल पड़ी तो ..... पत्थर दिखो।**

उत्तर: गजलकार कहते हैं, ''गर्द अथवा धूल हवा के झोंके के साथ आगे ही आगे चल पड़ती है। यहाँ तक कि वह ऊँचे आसमान में भी फैल जाती है। देखा जाए तो गर्द सामान्य होती है, फिर भी वह आसमान पर अपने अधिकार का निर्माण करती है। इंसान तो

उससे महान होता है। अगर वह चाहे तो मील का पत्थर बनकर सभी के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य कर सकता है। वह अपने अच्छे कार्यों से समाज के सामने एक मिसाल प्रस्थापित कर सकता है।''

**प्रश्न २ (आ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति आ (१): आकलन कृति**

**(१) समझकर लिखिए।**

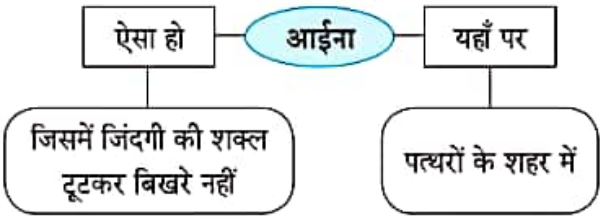


**(२) गजल की पंक्तियों का तात्पर्य लिखिए।**

**(i) आईना बनकर दिखो।**

उत्तर: विपरीत परिस्थितियों में भी व्यक्ति को अपनी जीवन रूपी सूरत को हमेशा तरोताजा व प्रसन्न रखना चाहिए।

**(ii) रोशनी बनकर दिखो।**

उत्तर: विपरीत परिस्थिति में यानी अंधकाररूपी जीवन में रोशनी बनकर दूसरों का पथ-प्रदर्शक बनना चाहिए।

**(३) आकृति पूर्ण कीजिए।**

***(i) गजल में प्रयुक्त प्राकृतिक घटक**

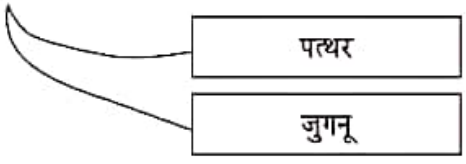


***(ii)**

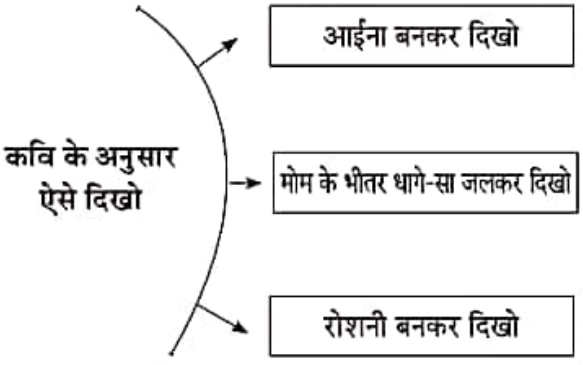


**कृति आ (२):आकलन कृति**

**(१) जिनके उत्तर निम्न शब्द हों, ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए।**

***(i) जुगनू (ii) धागे-सा**

उत्तर: (i) रात में चमकने वाले एक कीट का गद्यांश में प्रयुक्त नाम लिखिए।

(ii) व्यक्ति को मोम के भीतर किसके जैसा जलना चाहिए?

**(२) निम्नलिखित पंक्तियों से प्राप्त जीवनमूल्य लिखिए।**

***(i) आपको महसूस..... मोम के भीतर दिखो।**

उत्तर: व्यक्ति में संवेदनशीलता का होना बेहद जरूरी है।

**(ii) एक जुगनू..... रोशनी बनकर दिखो।**

उत्तर: स्वयं-प्रकाशित होकर दूसरों का पथ-प्रदर्शक बनना।

**(३) समझकर लिखिए।**

**(i) मोम के अंदर जलने वाले धागे का कार्य -**

उत्तर: दूसरों को रोशनी देना।

**(ii) जुगनू से प्राप्त प्रेरणा -**

उत्तर: व्यक्ति को अपने जीवन में स्वावलंबी होना चाहिए।

*पद्यांश: २ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ३३*

जिंदगी की शक्ल जिसमें टूटकर बिखरे नहीं,
पत्थरों के शहर में वो आईना बनकर दिखो।

आपको महसूस होगी तब हरइक दिल की जलन,
जब किसी धागे-सा जलकर मोम के भीतर दिखो।

एक जुगनू ने कहा मैं भी तुम्हारे साथ हूँ,
वक्त की इस धुंध में तुम रोशनी बनकर दिखो।

**कृति आ (३): निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।**

**(१) जिंदगी की शक्ल ..... बनकर दिखो।**

उत्तर: गजलकार कहते हैं, ''व्यक्ति को अपनी जिंदगी स्वयं सुंदर व समृद्ध बनानी चाहिए। पत्थरों के इस शहर में यानी कठोर हृदयवाले लोगों की इस दुनिया में व्यक्ति को अपनी जिंदगी स्वयं सँवारनी होगी। उसे ऐसा आईना बनने की जरूरत है, जिसमें वह अपनी जीवन-रूपी सूरत को हमेशा तरोताजा व प्रसन्न रख सकता है।''

**(२) एक जुगनू ..... रोशनी बनकर दिखो।**

उत्तर: गजलकार कहते हैं, ''जुगनू यानी रात में चमकने वाला एक ऐसा कीट, जो स्वयंप्रकाशित होता है। अच्छे कार्य के लिए एक जुगनू भी व्यक्ति का साथ देना चाहता है। व्यक्ति को सिर्फ अच्छे कार्य के लिए आगे आना चाहिए। उसे विपरीत परिस्थितियों में यानी अंधकाररूपी जीवन में रोशनी बनकर दूसरों का पथ-प्रदर्शक बनना चाहिए।''

**प्रश्न ३ (इ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति इ (१): आकलन कृति**

**(१) समझकर लिखिए।**

**(i) जीवन में सभी को इसका पालन करना पड़ता है -**

उत्तर: मर्यादा का।

**(ii) इसके अंदर मोती का निर्माण होता है -**

उत्तर: सीप में।

(२) निम्नलिखित शब्द पढ़कर ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों -

*(i) भीड़ (ii) तितली

उत्तर: (i) गजलकार किसमें शक्ल ढूँढ़ रहा है?

(ii) खिले हुए फूल पर किसके पर टूट जाते हैं?

(३) आकृति पूर्ण कीजिए।

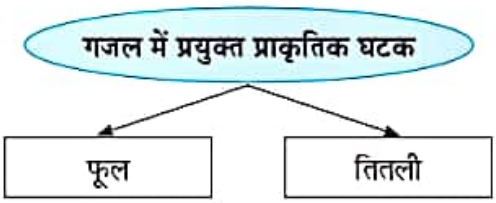


(४) उचित जोड़ियाँ मिलाइए।

| 'अ' | 'ब' |
|---|---|
| (i) मोती | (क) मर्यादा |
| (ii) तितली | (ख) सीप |
| (iii) मानव | (ग) अच्छा |
| (iv) कर्म | (घ) फूल |

उत्तर: (i - ख), (ii - घ), (iii - क), (iv - ग)

*पद्यांश: ३ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ३३*

एक मर्यादा बनी है हम सभी के वास्ते,
गर तुम्हें बनना है मोती सीप के अंदर दिखो।

डर जाए फूल बनने से कोई नाजुक कली,
तुम ना खिलते फूल पर तितली के टूटे पर दिखो।

कोई ऐसी शक्ल तो मुझको दिखे इस भीड़ में,
मैं जिसे देखूँ उसी में तुम मुझे अक्सर दिखो।

### कृति इ (२): आकलन कृति

(१) आकृति पूर्ण कीजिए।

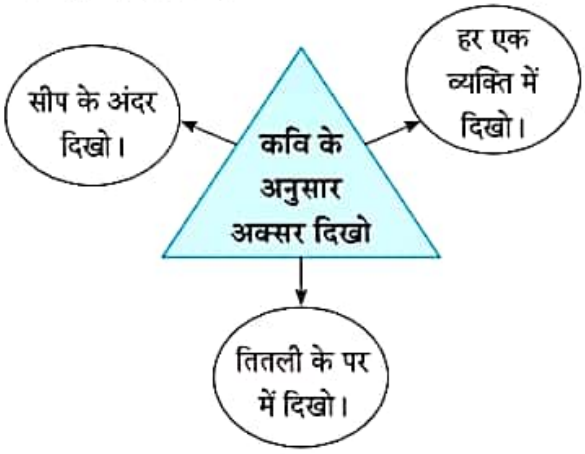


(२) निम्नलिखित पंक्तियों से प्राप्त जीवनमूल्य लिखिए।

(i) डर जाए ..... पर दिखो।

उत्तर: संघर्ष के बिना जीवन नहीं।

*(ii) कोई ऐसी शक्ल ..... अक्सर दिखो।

उत्तर: परदुखकातरता एवं परोपकार से बढ़कर अन्य कोई धर्म नहीं।

(३) गजल की पंक्तियों का तात्पर्य लिखिए।

(i) तितली के टूटे पर दिखो।

उत्तर: भले ही व्यक्ति जीवन में असफल हो, फिर भी अपने मन में ढाँढ़स बाँधकर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

(ii) सीप के अंदर दिखो।

उत्तर: व्यक्ति के पास सहनशीलता का भाव होना चाहिए। उसे अपनी मर्यादाओं का पालन करना चाहिए।

### कृति इ (३): निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।

(१) एक मर्यादा ..... सीप के अंदर दिखो।

उत्तर: गजलकार कहते हैं, ''जीवन में सभी को मर्यादा का पालन करना पड़ता है। मर्यादा के बिना व्यक्ति-विकास संभव नहीं है। मोती अपने निर्मिती-काल में सीप के अंदर होता है। वह भी मर्यादा का पालन करता है। तब जाकर वह चमकीला व मूल्यवान होता है। यदि व्यक्ति को भी अपने जीवन में सफलता की मंजिल हासिल करनी है, तो उसे अपने जीवन में मर्यादा का पालन अवश्य करना पड़ता है। व्यक्ति के पास सहनशीलता का भाव होना चाहिए।

(२) डर जाए ..... टूटे पर दिखो।

उत्तर: गजलकार कहते हैं, ''यदि नाजुक कली फूल बनने से डर जाए, तो वह सुंदर फूल का रूप धारण नहीं कर सकती। उसी प्रकार व्यक्ति को भी विपरीत परिस्थिति में डरना नहीं चाहिए। यदि वह भयभीत हुआ तो वह सफलता हासिल नहीं कर सकता। व्यक्ति को खिले हुए फूल पर तितली के टूटे हुए पंखों की भाँति मँडराना चाहिए। इसका अर्थ यह है, भले ही व्यक्ति जीवन में असफल हो; फिर भी उसे अपने मन में धैर्य रखकर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। संघर्ष के साथ जूझते हुए व्यक्ति को आगे बढ़ना चाहिए।''

(३) कोई ऐसी शक्ल ..... अक्सर दिखो।

उत्तर: गजलकार कहते हैं, ''दुनिया की इस भीड़ में कोई ऐसी शक्ल देखने के लिए मिल जाए, जिसे वह देखता है, उसी में सभी लोग उसे अक्सर दिखाई दें। अर्थात दुनिया की इस भीड़ में कोई ऐसा एक व्यक्ति अच्छे कर्म करने के लिए आगे आ जाए और उसी से प्रेरणा पाकर सभी लोग अच्छा कर्म करने के लिए प्रेरित होते जाएँ।''

## अभिव्यक्ति

*(१) प्रस्तुत गजल से अपनी पसंदीदा किन्हीं चार पंक्तियों का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: एक मर्यादा ..... सीप के अंदर दिखो।

गजलकार कहते हैं, ''जीवन में सभी को मर्यादा का पालन करना पड़ता है। मर्यादा के बिना व्यक्ति-विकास संभव नहीं है। मोती अपने निर्मिती-काल में सीप के अंदर होता है। वह भी मर्यादा का पालन करता है। तब जाकर वह चमकीला व मूल्यवान होता है। यदि व्यक्ति को भी अपने जीवन में सफलता की मंजिल हासिल करनी है, तो उसे अपने जीवन में मर्यादा का पालन अवश्य करना पड़ता है। व्यक्ति के पास सहनशीलता का भाव होना चाहिए।''

## उपयोजित लेखन

***(१) 'यदि मेरा घर अंतरिक्ष में होता' इस विषय पर ८० से १०० शब्दों में निबंध लिखिए।**

**उत्तर:** हर इंसान का अपना एक आशियाना होता है। वह अपने आशियाने को बहुत सुंदर तरीके से सजाता है। सभी चाहते हैं कि उसका घर बहुत ही खूबसूरत एवं दूसरे से अनूठा हो। इसलिए इंसान प्रकृति की गोद में अपना एक फार्म हाउस भी तैयार करता है। मैं स्वयं भी अपने घर के बारे में सोचता हूँ। सोचते-सोचते अचानक मेरे मन में यह प्रश्न पैदा हुआ कि यदि मेरा घर अंतरिक्ष में होता, तो.....।

बचपन से ही मुझे आसमान, सितारे, चाँद, सूरज आदि का बहुत ही आकर्षण रहा है। उन्हें देखकर मुझे खुशी का अनुभव होता है। इसलिए काश! मेरा घर अंतरिक्ष में होता ... बहुत ही मजा आता। तब मैं अपने आप पर गर्व महसूस करता, क्योंकि दुनिया के कुछ गिने-चुने लोग ही अब तक अंतरिक्ष की सैर कर पाए हैं। मैं भी बड़े मजे से अंतरिक्ष की सैर करता। वहाँ पर मुझे सारे अजीबो-गरीब अनुभव होते। वहाँ पर रहकर मैं कभी रो नहीं सकता, क्योंकि वहाँ पर इंसान के आँसू कभी भी नीचे नहीं गिर सकते। वहाँ का वातावरण अलग प्रकार का होता है। अंतरिक्ष में जब हर दिन सूर्य के दर्शन करूँगा, तो वह मुझे काला दिखाई देगा।

यदि मेरा घर अंतरिक्ष में होता; तो मैं उल्कापिंड, आकाशगंगा आदि को निकट से देखता। उनके बारे में जानकारी हासिल करता। अंतरिक्ष में रहकर मैं इस बात का अनुभव ले पाता कि दो धातु के टुकड़े एक-दूसरे से स्पर्श हो जाने से वे स्थायी रूप से जुड़ जाते हैं।

अंतरिक्ष में रहकर मैं नई-नई खोज करता। कैंसर जैसी भयानक बीमारी पर नियंत्रण पाने के लिए औषधि का निर्माण करता।

ये तो सारी हुई कल्पना की बातें। वास्तव में यदि मुझे अंतरिक्ष में जाना है, तो मुझे पहले मन लगाकर पढ़ाई करनी पड़ेगी और आगे चलकर अंतरिक्ष-विज्ञान का अभ्यास करना पड़ेगा। इसके लिए मैं प्रतिबद्ध हूँ।

❖❖❖

# १ रीढ़ की हड्डी

*- जगदीशचंद्र माथुर (१९१७-१९७८)*

## लेखक-परिचय

**जीवन-परिचय** : जगदीशचंद्र माथुर का जन्म १९१७ में उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर में हुआ। ये हिंदी भाषा के एक सफल लेखक एवं नाटककार थे। इन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से अध्ययन किया। इन्होंने आकाशवाणी में महासंचालक के रूप में काम करते हुए हिंदी की लोकप्रियता के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इन्होंने ही 'एआईआर' का नामकरण 'आकाश-वाणी' किया था। इन्होंने अपने समय के लेखक एवं कवियों के साथ मिलकर सांस्कृतिक पुनर्जागरण का कार्य किया।

**प्रमुख कृतियाँ** : 'मैला आँचल', 'परती परिकथा', 'जुलूस' **(उपन्यास)**, 'एक आदिम रात्रि की महक', 'ठुमरी', 'अच्छे आदमी' **(कथा संग्रह)**, 'ऋण-जल-धनजल', 'नेपाली क्रांतिकथा' **(रिपोर्ताज)**, 'कोणार्क', 'पहला राजा', 'भोर का तारा', 'शारदीया' आदि।

## गद्य-परिचय

**एकांकी** : एकांकी हिंदी साहित्य की आभिजात्यहीन विधा है। एक अंक वाले नाटक को 'एकांकी' कहते हैं। एकांकी में नाटक के समान सात तत्त्व होते हैं। कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, अभिनेयता, देशकाल, संवाद, भाषा-शैली, उद्देश्य आदि। एकांकी का आकार लघु होने के कारण इसमें एक ही कथा होती है।

**प्रस्तावना** : 'रीढ़ की हड्डी' इस एकांकी के माध्यम से एकांकीकार जगदीशचंद्र माथुर जी नारी-शिक्षा का महत्त्व बताते हुए कहते हैं कि हमारे समाज में नारी-शिक्षा का मुद्दा एक बहुत बड़ा महत्त्व रखता है। इस एकांकी के माध्यम से एकांकीकार ने नारी के प्रति लोगों की मानसिकता में सकारात्मक परिवर्तन होना बेहद जरूरी है, यह बताने की कोशिश की है।

## सारांश

'रीढ़ की हड्डी' यह एक एकांकी है। प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से लेखक ने स्त्री के प्रति समाज की जो हीन मानसिकता है, उस पर करारा व्यंग्य किया है। नारी को स्वयं सबला होकर अपनी प्रगति करनी चाहिए। स्वयं के उद्धार के लिए उसे शिक्षित होकर सकारात्मक कदम उठाने चाहिए। प्रस्तुत एकांकी की उमा यह प्रयास करती है और घर पर उसे देखने आए लड़के को और उसके परिवार वालों को खरी-खोटी सुनाकर उनकी रूढ़िवादी मानसिकता का पर्दाफाश करती है।

उमा के घर पर उसे देखने के लिए गोपाल प्रसाद अपने बेटे शंकर के साथ आते हैं। उनके अनुसार लड़की को ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं होना चाहिए। उसे सिर्फ घर का काम एवं सिलाई का काम आना चाहिए। पेंटिंग, वाद्य बजाना और गाना गाना आना चाहिए। आखिर, उसे घर ही तो सँभालना है। वे उमा से तरह-तरह के प्रश्न पूछते हैं। उनके द्वारा पूछे गए प्रश्नों से उमा गुस्सा हो जाती है और उनके बेटे की असलियत सभी के समक्ष खोलकर रख देती है। इससे अपमानित होकर गोपाल प्रसाद अपने बेटे के साथ वहाँ से चले जाते हैं।

उमा नारी पर होने वाले अत्याचारों का विरोध करती है। उसके हृदय में स्त्री शिक्षा के प्रति सकारात्मक विचार है। वह स्वयं भी पढ़ी-लिखी है। समाज के दकियानूसी विचारों पर प्रहार कर वह समाज के सामने खुद की एक मिसाल स्थापित करती है।

## शब्दार्थ

| | |
|---|---|
| रीढ़ | - मेरुदंड, पीठ के बीच की हड्डी |
| अधेड़ उम्र | - वह उम्र, जिसमें व्यक्ति न तो जवान होता है और न ही बूढ़ा। |
| मुखातिब | - प्रस्तुत |
| तशरीफ | - पधारना |
| आमदनी | - आय |
| बेढब | - निराले ढंग का |
| निहायत | - अत्यंत जरूरी |
| सकपकाना | - असमंजस में पड़ना |
| कायरता | - डर |
| रुलासापन | - रोने जैसी स्थिति |
| तख्त | - लकड़ी की बनी हुई बड़ी चौकी |
| तश्तरी | - छोटी थाली (प्लेट) |
| खँखारना | - खाँसना, गला साफ करना |
| तकल्लुफ | - शिष्टाचार |

**मुहावरे**

मुँह फुलाना - गुस्सा या रुष्ट हो जाना।

## MASTER KEY QUESTION SET - 9

**प्रश्न १ (अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति अ (१) : आकलन कृति**

***(१) संजाल पूर्ण कीजिए।**

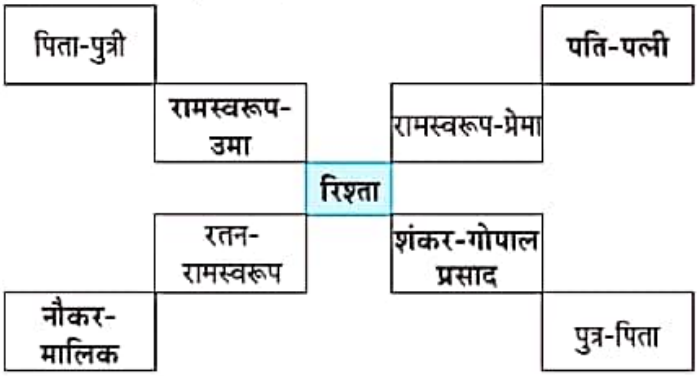


**(२) समझकर लिखिए।**

**(i) ये दोनों तख्त लेकर आ रहे थे।**

उत्तर: नौकर रतन व उसके मालिक रामस्वरूप।

**(ii) ये लाने के लिए कहा रामस्वरूप ने नौकर से।**

उत्तर: हारमोनियम और सितार।

**(३) कृति पूर्ण कीजिए।**

***(i)**

*गद्यांश: १ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ३५*

पात्र: उमा-सुशिक्षित युवती, रामस्वरूप-उमा के पिता, प्रेमा-उमा की माँ, शंकर-युवक, गोपाल प्रसाद-शंकर के पिता, रतन-रामस्वरूप का नौकर

[एक कमरा। अंदर के दरवाजे से आते हुए जिन महाशय की पीठ नजर आ रही है, वह अधेड़ उम्र के हैं। एक तख्त को पकड़े हुए कमरे में आते हैं। तख्त का दूसरा सिरा उनके नौकर ने पकड़ रखा है।]

**रामस्वरूप** : अबे ! धीरे-धीरे चल।... अब तख्त को उधर मोड़ दे... उधर। (तख्त के रखे जाने की आवाज आती है।)

**रतन** : बिछा दें साहब ?

**रामस्वरूप** : (जरा तेज आवाज में) और क्या करेगा ? परमात्मा के यहाँ अक्ल बँट रही थी तो तू देर से पहुँचा था क्या ?... बिछा दूँ साहब!... और यह पसीना किसलिए बहाया है ?

**रतन** : (तख्त बिछाता है) हीं-हीं-हीं।

**रामस्वरूप** : (दरी उठाते हुए) और बीबी जी के कमरे में से हारमोनियम उठा ला और सितार भी।... जल्दी जा (रतन जाता है। पति-पत्नी तख्त पर दरी बिछाते हैं।)

**प्रेमा** : लेकिन वह तुम्हारी लाड़ली बेटी उमा तो मुँह फुलाए पड़ी है।

**रामस्वरूप** : क्या हुआ ?

**प्रेमा** : तुम्हीं ने तो कहा था कि उसे ठीक-ठाक करके नीचे लाना।

**रामस्वरूप** : अरे हाँ, देखो, उमा से कह देना कि जरा करीने से आए। ये लोग जरा ऐसे ही हैं। खुद पढ़े-लिखे हैं, वकील हैं, सभा-सोसाइटियों में जाते हैं; मगर चाहते हैं कि लड़की ज्यादा पढ़ी-लिखी न हो।

**कृति अ (२) : आकलन कृति**

**(१) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

**(i) दरी (ii) हारमोनियम**

उत्तर: (i) पति-पत्नी तख्त पर क्या बिछाते हैं ?

(ii) गद्यांश में प्रयुक्त एक वाद्य-यंत्र का नाम लिखिए।

**(२) कारण लिखिए।**

**(i) रामस्वरूप नौकर पर चिल्लाते हैं।**

उत्तर: क्योंकि वह उनसे पूछ रहा था कि तख्त को बिछा दूँ या नहीं।

***(ii) रामस्वरूप ने हारमोनियम उठाकर लाने के लिए कहा।**

उत्तर: क्योंकि लड़के वालों को खुश करने के लिए उनकी बेटी हारमोनियम बजाने वाली थी।

***(३)**

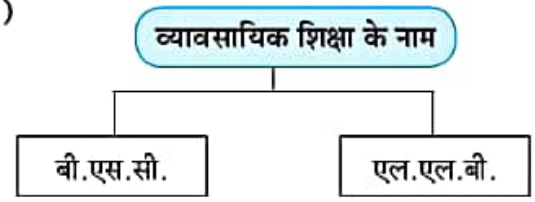


**कृति अ (३) : शब्द संपदा**

**(१) विलोम शब्द लिखिए।**

(i) तेज × ..... (ii) नौकर × .....

उत्तर: (i) धीमा (ii) मालिक

**(२) वचन बदलिए।**

(i) बेटी (ii) शादी

उत्तर: (i) बेटियाँ (ii) शादियाँ

**(३) लिंग बदलिए।**

(i) नौकर (ii) बीवी

उत्तर: (i) नौकरानी (ii) मियाँ

(४) नीचे दिए हुए शब्दों में उचित उपसर्ग का प्रयोग कीजिए।

(i) पढ़

उत्तर: (i) अनपढ़

### कृति अ (४): स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'जरा-जरा सी बात पर नौकरों पर चिल्लाना क्या सही है?' इस पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर: नौकर हर काम में हमारी मदद करते हैं। वे हमारे घर का सारा काम करते हैं। जब हमारे अभिभावक नौकरी पर जाते हैं; तब वे ही पूरे घर को ठीक से सँभालते हैं। बच्चों का ख्याल रखते हैं। उन्हें उनके काम का जो वेतन मिलता है, वह वास्तव में कम ही होता है। ऐसे में यदि कोई उन पर जरा-जरा सी बात पर चिल्लाता हो, तो यह गलत है। वे पढ़े-लिखे नहीं होते हैं। इस कारण वे बात या काम को ठीक से समझ नहीं सकते हैं। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम उन्हें ठीक से समझाएँ और उनके साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार करें।

## प्रश्न २ (आ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति आ (१): आकलन कृति

(१) किसने, किससे कहा?

(i) ''तुम उमा को समझा देना।''

उत्तर: रामस्वरूप ने अपनी पत्नी प्रेमा से कहा।

(ii) ''साल, दो साल?''

उत्तर: रामस्वरूप ने शंकर से कहा।

(२) निम्नलिखित गलत वाक्य सही करके लिखिए।

(i) मेहमान आलीशान गाड़ी में बैठकर रामस्वरूप जी के घर आए।

उत्तर: मेहमान ताँगे में बैठकर रामस्वरूप जी के घर आए।

(ii) लड़का होमियोपैथी की पढ़ाई करता है।

उत्तर: लड़का मेडिकल की पढ़ाई करता है।

*गद्यांश: २ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ३५-३६*

**प्रेमा** : और लड़का?

**रामस्वरूप** : बाप सेर है तो लड़का सवा सेर। बी.एस्सी. के बाद लखनऊ में ही तो पढ़ता है मेडिकल कॉलेज में। कहता है कि शादी का सवाल दूसरा है, पढ़ाई का दूसरा। क्या करूँ, मजबूरी है।

**रतन** : बाबू जी, बाबू जी! (धीमी आवाज में)

**रामस्वरूप** : (दरवाजे से बाहर झाँककर) अरे प्रेमा, वे आ भी गए। ... तुम उमा को समझा देना, थोड़ा-सा गा देगी। (मेहमानों से)

: हँ-हँ-हँ। आइए, आइए! (बाबू गोपाल प्रसाद बैठते हैं।)

हँ-हँ!... मकान ढूँढ़ने में कुछ तकलीफ तो नहीं हुई?

**गो. प्रसाद** : (खँखारकर) नहीं। ताँगेवाला जानता था। रास्ता मिलता कैसे नहीं?

**रामस्वरूप** : हँ-हँ-हँ! (लड़के की तरफ मुखातिब होकर) और कहिए शंकर बाबू, कितने दिनों की छुट्टियाँ हैं?

**शंकर** : जी, कॉलेज की तो छुट्टियाँ नहीं हैं। 'वीक एंड' में चला आया था।

**रामस्वरूप** : तो आपके कोर्स खत्म होने में तो अब साल भर रहा होगा?

**शंकर** : जी, यही कोई साल-दो साल।

**रामस्वरूप** : साल, दो साल?

**शंकर** : हँ-हँ-हँ !... जी एकाध साल का 'मार्जिन' रखता हूँ।

### कृति आ (२): आकलन कृति

(१) वाक्यों को उचित क्रम से लगाकर वाक्य फिर से लिखिए।

(i) रामस्वरूप ने शंकर से पूछा कि उसे कितने दिनों की छुट्टियाँ हैं।

(ii) रामस्वरूप ने प्रेमा से कहा कि लड़का मेडिकल कॉलेज में पढ़ रहा है।

(iii) रामस्वरूप ने शंकर से पूछा कि क्या उसकी पढ़ाई एक साल में खत्म हो जाएगी।

(iv) रामस्वरूप ने गोपालप्रसाद जी से पूछा कि उन्हें रास्ता ढूँढ़ने में ज्यादा परेशानी तो नहीं हुई।

उत्तर: (i) रामस्वरूप ने प्रेमा से कहा कि लड़का मेडिकल कॉलेज में पढ़ रहा है।

(ii) रामस्वरूप ने गोपालप्रसाद जी से पूछा कि उन्हें रास्ता ढूँढ़ने में ज्यादा परेशानी तो नहीं हुई।

(iii) रामस्वरूप ने शंकर से पूछा कि उसे कितने दिनों की छुट्टियाँ हैं।

(iv) रामस्वरूप ने शंकर से पूछा कि क्या उसकी पढ़ाई एक साल में खत्म हो जाएगी।

### कृति आ (३): शब्द संपदा

(१) गद्यांश में से अंग्रेजी शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर: वीक एंड, मेडिकल कॉलेज, मार्जिन।

(२) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।

(i) ताँगा चलाने वाला -

(ii) विज्ञान की एक पदवी, जो बारहवीं के बाद तीन वर्ष का अभ्यास पूर्ण करने पर मिलती है -

उत्तर: (i) ताँगेवाला (ii) बी.एस.सी.

(३) पर्यायवाची लिखिए।

(i) मकान (ii) छुट्टी

उत्तर: (i) भवन (ii) अवकाश

(४) नीचे दिए हुए कृदंत शब्दों में से क्रिया रूप लिखिए।

(i) खँखारकर (ii) झाँककर

उत्तर: (i) खँखारना (ii) झाँकना

### कृति आ (४) : स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'परंपराओं का पालन करना उचित है या अनुचित?' इस पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर: जो बिना व्यवधान के श्रृंखला रूप में जारी रहती है, वह परंपरा कहलाती है। परंपरा में किसी विषय का ज्ञान बिना किसी परिवर्तन के एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संचारित होता रहता है। आज का युग विज्ञान व तकनीकी का युग है। इस युग में विचारप्रणाली व लोगों की मानसिकता विज्ञान के आधार पर आगे बढ़ती हुई प्रतीत हो रही है। लोग पुरानी परंपरा में समयानुसार परिवर्तन कर रहे हैं। इसे ही आधुनिक सोच कह सकते हैं। कहा ही गया है, छोड़ो कल की बातें, कल की बात पुरानी...। इसलिए आज लोग जिस परंपरा में सचमुच कुछ तथ्य है उसका पालन निष्ठा से कर रहे हैं और जिसमें कुछ भी तथ्य नहीं है, ऐसी परंपराओं का त्याग कर रहे हैं। इस प्रकार परंपराओं का पालन करना या नहीं करना यह लोगों की मानसिकता पर निर्भर करता है।

### प्रश्न ३ (इ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति इ (१) : आकलन कृति

(१) समझकर लिखिए।

(i) कौनसे बिजनेस से संबंधित बात हो रही है?

उत्तर: शादी से संबंधित बिजनेस जिसमें दहेज या लेन-देन की बात होती है।

(ii) कौन किसके यहाँ तशरीफ लाए हैं?

उत्तर: गोपाल प्रसाद रामस्वरूप जी के यहाँ तशरीफ लाए हैं।

(२) कृति पूर्ण कीजिए।

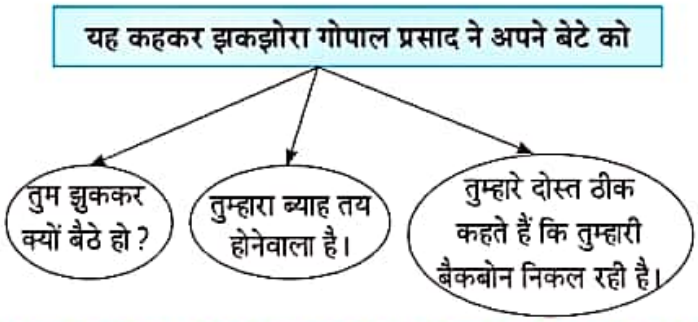


*गद्यांश: ३ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ३६-३७*

**गो. प्रसाद** : (अपनी आवाज और तरीका बदलते हुए) अच्छा तो साहब, फिर 'बिजनेस' की बातचीत हो जाए।

**रामस्वरूप** : (चौंककर) 'बिजनेस'?- (समझकर) ओह!... अच्छा, अच्छा। लेकिन जरा नाश्ता तो कर लीजिए।

**गो.प्रसाद** : यह सब आप क्या तकल्लुफ करते हैं!

**रामस्वरूप** : हँ-हँ-हँ! तकल्लुफ किस बात का। यह तो मेरी बड़ी तकदीर है कि आप मेरे यहाँ तशरीफ लाए। (अंदर जाते हैं।)

**गो.प्रसाद** : (अपने लड़के से) क्यों, क्या हुआ?

**शंकर** : कुछ नहीं।

**गो.प्रसाद** : झुककर क्यों बैठते हो? ब्याह तय करने आए हो, कमर सीधी करके बैठो। तुम्हारे दोस्त ठीक कहते हैं कि शंकर की 'बैकबोन' - [इतने में बाबू रामस्वरूप चाय की 'ट्रे' लाकर मेज पर रख देते हैं।]

**गो.प्रसाद** : आखिर आप माने नहीं!

**रामस्वरूप** : (चाय प्याले में डालते हुए) हँ-हँ-हँ! आपको विलायती चाय पसंद है या हिंदुस्तानी?

**गो. प्रसाद** : नहीं-नहीं साहब, मुझे आधा दूध और आधी चाय दीजिए और जरा चीनी भी ज्यादा डालिएगा।

**शंकर** : (खँखारकर) सुना है, सरकार अब ज्यादा चीनी लेने वालों पर 'टैक्स' लगाएगी।

**गो. प्रसाद** : (चाय पीते हुए) सरकार जो चाहे सो कर ले पर अगर आमदनी करनी है तो सरकार को बस एक ही टैक्स लगाना चाहिए।

### कृति इ (२) : आकलन कृति

(१) आकृति पूर्ण कीजिए।

(i)

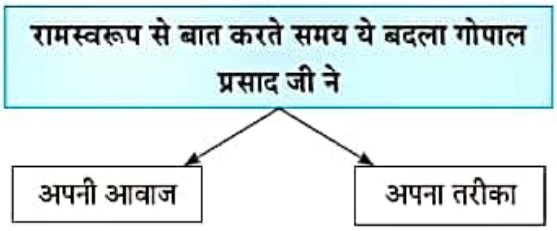


(ii)

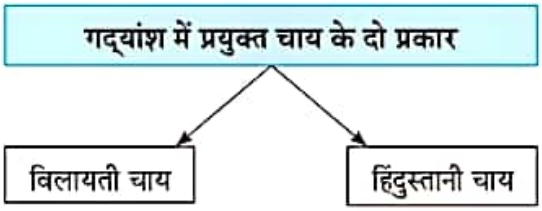


(२) कारण लिखिए।

(i) शंकर ने ऐसा क्यों कहा कि सरकार चीनी लेने वालों पर टैक्स लगाएगी?

उत्तर: क्योंकि उसके पिता जी ने रामस्वरूप जी से उनकी चाय में ज्यादा चीनी डालने के लिए कहा।

(ii) रामस्वरूप जी ने ऐसा क्यों कहा कि गोपाल प्रसाद जी का उनके यहाँ पधारना बहुत बड़ी बात है।

उत्तर: क्योंकि गोपाल प्रसाद उनके यहाँ अपने बेटे के लिए लड़की देखने के लिए आए थे।

### कृति इ (३) : शब्द संपदा

(१) नीचे लिखे शब्दों में से उचित प्रत्यय छाँटकर लिखिए।

(i) विलायती (ii) हिंदुस्तानी

उत्तर: (i) प्रत्यय : ई (ii) प्रत्यय : ई

(२) नीचे लिखे शब्दों में से उचित उपसर्ग छाँटकर लिखिए और उन उपसर्गों से अन्य शब्द बनाइए।

(i) सरकार (ii) आमदनी

उत्तर: (i) उपसर्ग : सर : अन्य शब्द : सरदार

(ii) उपसर्ग : आम : अन्य शब्द : आमतौर

(३) गद्यांश में प्रयुक्त अंग्रेजी व उर्दू शब्द लिखिए।

उत्तर: (i) अंग्रेजी शब्द : बिजनेस, बैकबोन, मार्जिन, ट्रे

(ii) उर्दू शब्द : तकल्लुफ, तशरीफ, तकदीर

### कृति इ (४): स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'एक शिक्षित नारी पूरे समाज को शिक्षित करती है।' इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर: यदि एक स्त्री शिक्षित हो, तो वह अपने पूरे परिवार को शिक्षित करती है। परिवार से ही समाज बनता है और समाज से देश। इसलिए देश में संपूर्ण साक्षरता लाने के लिए नारी का शिक्षित होना बहुत ही आवश्यक है। माँ बच्चे की प्रथम गुरू होती है। बच्चा सबसे पहले अपनी माँ से ही विविध संस्कार सीखता है। यदि माँ शिक्षित होगी, तो वही शिक्षा और सुसंस्कार बच्चों में डालेगी। बच्चा बड़ा होकर शिक्षित व संस्कारी बनेगा; जिससे समाज की बहुत सारी बुराइयाँ, अपराध, कुरीतियाँ आदि अपने आप समाप्त हो जाएँगी। सावित्रीबाई फुले इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए शिक्षिका की भूमिका में आगे आईं और उन्होंने नारी के शिक्षित होने के महत्त्व की आधारशिला रखी। भारत सरकार भी नारी शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध है। यह समाज के सभी लोगों का कर्तव्य है कि वो सहर्ष आगे आएँ और विशेषत: लड़कियों को शिक्षित करें, जिससे एक 'नव भारत और शिक्षित भारत' का निर्माण हो सके।

## प्रश्न ४ (ई) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति ई (१): आकलन कृति

(१) निम्नलिखित गलत वाक्य सही करके फिर से लिखिए।

(i) खूबसूरती पर टैक्स देने के लिए लोग तैयार नहीं होंगे।

उत्तर: खूबसूरती पर टैक्स देने के लिए लोग चूँ भी नहीं करेंगे।

(ii) शादी के लिए लड़के का खूबसूरत होना निहायत जरूरी होता है।

उत्तर: शादी के लिए लड़की का खूबसूरत होना निहायत जरूरी होता है।

(२) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -

(i) जायचा (ii) गोपाल प्रसाद

उत्तर: (i) ठाकुर जी के चरणों में क्या रखा गया था?

(ii) कौन गंभीर हो गए?

*गद्यांश: ४ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ३७*

**रामस्वरूप** : (शंकर को प्याला पकड़ाते हुए) वह क्या?

**गो. प्रसाद** : खूबसूरती पर टैक्स! (रामस्वरूप और शंकर हँस पड़ते हैं।) मजाक नहीं साहब, यह ऐसा टैक्स है जनाब कि देने वाले चूँ भी न करेंगे।

**रामस्वरूप** : (जोर से हँसते हुए) वाह-वाह! खूब सोचा आपने! वाकई आजकल खूबसूरती का सवाल भी बेढब हो गया है। हम लोगों के जमाने में तो यह कभी उठता भी न था। (तश्तरी गोपाल की तरफ बढ़ाते हैं।) लीजिए।

**गो. प्रसाद** : (समोसा उठाते हुए) कभी नहीं साहब, कभी नहीं।

**रामस्वरूप** : (शंकर की तरफ मुखातिब होकर) आपका क्या खयाल है शंकर बाबू?

**शंकर** : किस मामले में?

**रामस्वरूप** : यही कि शादी तय करने में खूबसूरती का हिस्सा कितना होना चाहिए!

**गो. प्रसाद** : (बीच में ही) यह बात दूसरी है बाबू रामस्वरूप, मैंने आपसे पहले भी कहा था, लड़की का खूबसूरत होना निहायत जरूरी है और जायचा (जन्म पत्र) तो मिल ही गया होगा।

**रामस्वरूप** : जी, जायचे का मिलना क्या मुश्किल बात है। ठाकुर जी के चरणों में रख दिया। बस, खुद-ब-खुद मिला हुआ समझिए।

(शंकर भी हँसता है, मगर गोपाल प्रसाद गंभीर हो जाते हैं।)

**गो. प्रसाद** : लड़कियों को अधिक पढ़ने की जरूरत नहीं है। सिलाई-पुराई कर लें बस।

### कृति ई (२): आकलन कृति

(१) किसने, किससे कहा?

(i) "किस मामले में?"

उत्तर: शंकर ने रामस्वरूप से कहा।

(ii) "सिलाई-पुराई कर लें बस।"

उत्तर: गोपाल प्रसाद जी ने रामस्वरूप जी से कहा।

(२) कारण लिखिए।

(i) रामस्वरूप और शंकर हँस पड़ते हैं।

उत्तर: क्योंकि गोपाल प्रसाद खूबसूरती पर टैक्स लगाने की बात करते हैं।

(३) समझकर लिखिए।

(i) यह सवाल बेढब हो गया है -

उत्तर: खूबसूरती का सवाल।

(ii) गोपाल प्रसाद जी के अनुसार लड़कियों का काम -

उत्तर: सिलाई-पुराई करना।

### कृति ई (३): शब्द संपदा

(१) परिच्छेद में से शब्द-युग्म छाँटकर लिखिए।

उत्तर: (i) सिलाई - पुराई (ii) खुद-ब-खुद

**(२) विलोम शब्द लिखिए।**

(i) खूबसूरत × ...... (ii) मुश्किल × ......

उत्तर: (i) बदसूरत (ii) आसान

**(३) समानार्थी शब्द लिखिए।**

(i) टैक्स (ii) निहायत

(iii) शादी (iv) जायचा

उत्तर: (i) कर (ii) अत्यंत (i) ब्याह (ii) जन्म पत्र

**(४) निम्नलिखित वाक्यों में विरामचिह्नों का उचित प्रयोग कीजिए।**

**(i) रामस्वरूप ने कहा क्या शादी तय करने के लिए खूबसूरती का हिस्सा होना चाहिए**

उत्तर: रामस्वरूप ने कहा, ''क्या शादी तय करने के लिए खूबसूरती का हिस्सा होना चाहिए?''

**(ii) लड़कियों को पढ़ने लिखने की जरूरत नहीं**

उत्तर: लड़कियों को पढ़ने-लिखने की जरूरत नहीं।

कृति ई (४): स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'आज की लड़कियाँ व शिक्षा' इस विषय पर अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: आज की लड़कियाँ शिक्षित हो रही हैं। वे पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़ी हो रही हैं। वे डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, शिक्षक व नेता बनकर अपने कुल का नाम रोशन कर रही हैं। आज हमारे समाज में लड़का व लड़की को कानून की नजर में एक समान माना गया है। आज शिक्षा का ऐसा कोई क्षेत्र अछूता नहीं रहा है, जिसमें लड़कियों को पढ़ने की इजाजत नहीं है। आज लड़कियाँ पढ़ने-लिखने के मामले में लड़कों से कई गुना आगे निकल गई हैं। जीवन के हर एक क्षेत्र में लड़कियाँ प्रगति कर सफलता की मंजिल हासिल करती हुई दिखलाई दे रही हैं।

**प्रश्न ५ (उ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

कृति उ (१): आकलन कृति

***(१) कारण लिखिए।**

**(i) बाप-बेटे चौंक उठे।**

उत्तर: क्योंकि उन्होंने उमा की नाक पर रखा हुआ सुनहरी रिमवाला चश्मा देखा।

**(ii) उमा को चश्मा लगा।**

उत्तर: पिछले महीने में आँख दुखने के कारण उमा को कुछ दिनों के लिए चश्मा लगाना पड़ रहा था।

**(२) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

**(i) छवि (ii) सितार**

उत्तर: (i) उमा के चेहरे पर क्या थी?
(ii) उमा क्या बजा रही थी?

*गद्यांश: ५ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ५-६*

**रामस्वरूप :** हँ-हँ (मेज को एक तरफ सरका देते हैं। फिर अंदर के दरवाजे की तरफ मुँह कर जरा जोर से) अरे, जरा पान भिजवा देना... [उमा पान की तश्तरी अपने पिता को देती है। उस समय उसका चेहरा ऊपर को उठ जाता है और नाक पर रखा हुआ सुनहरी रिमवाला चश्मा दिखता है। बाप-बेटे चौंक उठते हैं।]

**गो. प्रसाद और शंकर :** (एक साथ) चश्मा !!!

**रामस्वरूप :** (जरा सकपकाकर) जी, वह तो... वह... पिछले महीने में इसकी आँखें दुखने लग गई थीं, सो कुछ दिनों के लिए चश्मा लगाना पड़ रहा है।

**गो. प्रसाद :** पढ़ाई-वढ़ाई की वजह से तो नहीं है कुछ?

**रामस्वरूप :** नहीं साहब, वह तो मैंने अर्ज किया न।

**गो. प्रसाद :** हूँ। (संतुष्ट होकर कुछ कोमल स्वर में) बैठो बेटी।

**रामस्वरूप :** वहाँ बैठ जाओ उमा, उस तख्त पर, अपने बाजे-वाजे के पास। (उमा बैठती है।)

**गो. प्रसाद :** चाल में तो कुछ खराबी है नहीं। चेहरे पर भी छवि है।... हाँ, कुछ गाना-बजाना सीखा है?

**रामस्वरूप :** जी हाँ सितार भी और बाजा भी। सुनाओ तो उमा एकाध गीत सितार के साथ। [उमा सितार पर मीरा का मशहूर भजन 'मेरे तो गिरिधर गोपाल' गाना शुरू कर देती है। उसकी आँखें शंकर की झेंपती-सी आँखों से मिल जाती हैं और वह गाते-गाते एक साथ रुक जाती है।)]

**रामस्वरूप :** क्यों, क्या हुआ? गाने को पूरा करो उमा।

**गो. प्रसाद :** नहीं-नहीं साहब, काफी है। आपकी लड़की अच्छा गाती है। (उमा सितार रखकर अंदर जाने को बढ़ती है।)

कृति उ (२): आकलन कृति

**(१) निम्नलिखित वाक्यों को उचित क्रम लगाकर वाक्य फिर से लिखिए।**

**(i) उमा सितार बजाती है।**

**(ii) उमा की आँखें शंकर की झेंपती-सी आँखों से मिल जाती हैं।**

**(iii) रामस्वरूप कहते हैं कि कुछ दिनों से उमा को चश्मा लगाना पड़ता है।**

**(iv) रामस्वरूप पान मँगवाते हैं।**

उत्तर: (i) रामस्वरूप पान मँगवाते हैं।
(ii) रामस्वरूप कहते हैं कि कुछ दिनों से उमा को चश्मा लगाना पड़ता है।
(iii) उमा सितार बजाती है।
(iv) उमा की आँखें शंकर की झेंपती-सी आँखों से मिल जाती हैं।

**(२) किसने, किससे कहा?**

**(i) ''जी हाँ, सितार भी और बाजा भी।''**

उत्तर: रामस्वरूप ने गोपाल प्रसाद से कहा।

(ii) "आपकी लड़की अच्छा गाती है।"

उत्तर: गोपाल प्रसाद ने रामस्वरूप से कहा।

### कृति उ (३): शब्द संपदा

(१) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।

(i) बहुत (ii) गाना

(iii) मुख (iv) पेश

उत्तर: (i) काफी (ii) गीत (iii) चेहरा (iv) अर्ज

(२) परिच्छेद में से शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर: (i) गाते - गाते (ii) बाजे - बाजे

(iii) गाना - बजाना (iv) नहीं - नहीं

(३) 'रिमवाला' इस शब्द में 'वाला' यह प्रत्यय है। आप 'वाला' प्रत्यय लगाकर अन्य दो शब्द बनाइए।

उत्तर: (i) पान + वाला = पानवाला (ii) रंग + वाला = रंगवाला

(४) वचन बदलिए।

(i) बाजा (ii) चेहरा

उत्तर: (i) बाजे (ii) चेहरे

(५) विलोम शब्द लिखिए।

(i) कोमल × ..... (ii) पूरा × .....

उत्तर: (i) सख्त (ii) अधूरा

(६) नीचे दिए हुए कृंदत शब्दों के क्रिया रूप लिखिए।

(i) सकपकाकर (ii) रखकर

उत्तर: (i) सकपकाना (ii) रखना

### कृति उ (४): स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'पुराने जमाने की विवाह पद्धति और वर्तमान विवाह पद्धति' की आपस में तुलना कीजिए।

उत्तर: विवाह को सोलह संस्कारों में से एक संस्कार माना गया है। आधुनिक विश्व में विवाह अब अनगिनत विकल्पों और समझौतों का विषय बन गया है। लड़का और लड़की एक-दूसरे को पसंद करते हैं और स्वेच्छापूर्वक विवाह के बंधन में बँध जाते हैं। आजकल पश्चिमी प्रभाव के कारण लोग दोस्तों की मौजूदगी में अँगूठियों की अदलाबदली करके ही सगाई व शादी कर लेते हैं। वे रीति-रिवाजों को पसंद नहीं करते हैं। किंतु पुराने जमाने में रीति-रिवाजों को महत्त्व दिया जाता था। विवाह दो परिवारों के बीच होने वाला एक संबंध था, जिसे लड़के और लड़की को स्वीकार करना होता था। विवाह की रस्में हल्दी, उबटन व मेहंदी से शुरू होती थीं। इसमें दोनों पक्षों के बीच उपहारों का आदान-प्रदान होता था।

### प्रश्न ६ (ऊ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति ऊ (१): आकलन कृति

(१) गद्यांश पढ़कर वाक्य पूर्ण कीजिए।

(i) एक बात मैं आपको बताना भूल गया कि .....

उत्तर: दीवार पर जो कुत्तेवाली तस्वीर टँगी हुई है, वह उमा ने ही बनाई है।

(ii) जब मेज बिकती है तब .....

उत्तर: दुकानदार कुर्सी-मेज से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीददार को दिखला देता है।

(२) कारण लिखिए।

(i) रामस्वरूप चौंककर खड़े हो जाते हैं।

उत्तर: क्योंकि उमा आवेश एवं स्वाभिमान के साथ स्वयं हो रही बिक्री का विरोध करती है।

(ii) गोपाल प्रसाद उमा को और थोड़ी देर तक ठहरने के लिए कहते हैं।

उत्तर: क्योंकि वे उससे जानना चाहते हैं कि उसे पेंटिंग व सिलाई का काम आता है या नहीं।

*(iii) उमा को गुस्सा आया।

उत्तर: जब गोपाल प्रसाद रूखी आवाज में उमा को अपना मुँह खोलने के लिए कहते हैं।

*(३) गोपाल प्रसाद की दृष्टि में बहू ऐसी हो:

उत्तर:

| |
|---|
| ज्यादा पढ़ी-लिखी न हो। |
| पेंटिंग-वेंटिंग आती हो। |
| सिलाई की कला जानती हो। |
| सितार, बाजा बजाना या गाना जानती हो। |

*गद्यांश: ६ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ३८*

**गो. प्रसाद** : अभी ठहरो, बेटी !

**रामस्वरूप** : थोड़ा और बैठी रहो उमा! (उमा बैठती है।)

**गो. प्रसाद** : (उमा से) तो तुमने पेंटिंग-वेंटिंग भी सीखी है? (उमा चुप)

**रामस्वरूप** : हाँ, वह तो मैं आपको बताना भूल ही गया। यह जो तस्वीर टँगी हुई है, कुत्तेवाली, इसी ने बनाई है और वह उस दीवार पर भी।

**गो. प्रसाद** : हूँ। यह तो बहुत अच्छा है। और सिलाई वगैरह?

**रामस्वरूप** : सिलाई तो सारे घर की इसी के जिम्मे रहती है, यहाँ तक कि मेरी कमीजें भी। हँ-हँ-हँ।

**गो. प्रसाद** : ठीक।... लेकिन, हाँ बेटी, तुमने कुछ इनाम-बिनाम भी जीते थे? (उमा चुप। रामस्वरूप इशारे के लिए खाँसते हैं लेकिन उमा चुप है, उसी तरह गरदन झुकाए। गोपाल प्रसाद अधीर हो उठते हैं और रामस्वरूप सकपकाते है।)

**रामस्वरूप** : जवाब दो, उमा। (गोपाल से) हँ-हँ, जरा शरमाती है। इनाम तो इसने-

**गो. प्रसाद** : (जरा रूखी आवाज में) जरा इसे भी तो मुँह खोलना चाहिए।
**रामस्वरूप** : उमा, देखो, आप क्या कह रहे हैं। जवाब दो न।
**उमा** : (हल्की लेकिन मजबूत आवाज में) क्या जवाब दूँ बाबू जी! जब कुर्सी-मेज बिकती है तब दुकानदार कुर्सी-मेज से कुछ नहीं पूछता सिर्फ खरीददार को दिखला देता है। पसंद आ गई तो अच्छा है, वरना-
**रामस्वरूप** : (चौंककर खड़े हो जाते है।) उमा, उमा!

### कृति ऊ (२): आकलन कृति

**(१) समझकर लिखिए।**

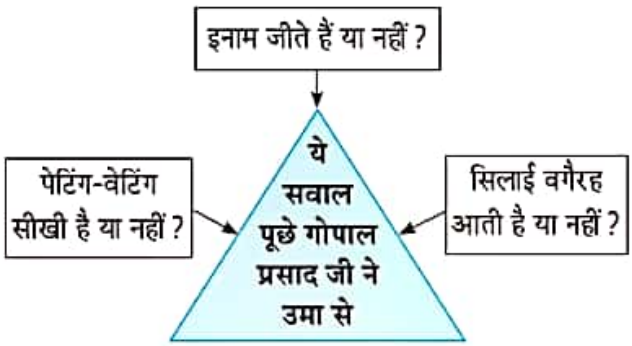


**(२) निम्नलिखित वाक्य सही है या गलत लिखिए।**

**(i) उमा ने बड़ी नम्रता से गोपाल प्रसाद जी को जवाब दिया।**

**(ii) गोपाल प्रसाद जी ने रूखी आवाज में उमा को अपना मुँह खोलने के लिए कहा।**

**उत्तर:** (i) गलत (ii) सही

### कृति ऊ (३): शब्द संपदा

**(१) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।**

(i) पसंद × ..... (ii) भूल × .....

**उत्तर:** (i) नापसंद (ii) याद, स्मरण

**(२) निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय अलग कीजिए।**

(i) दुकानदार (ii) खरीददार

**उत्तर:** (i) प्रत्यय : दार (ii) प्रत्यय : दार

**(३) निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग अलग करके लिखिए।**

(i) अधीर

**उत्तर:** (i) उपसर्ग : अ

**(४) निम्नलिखित वाक्यों में उचित विरामचिह्नों का प्रयोग कीजिए।**

(i) क्या जवाब दूँ पिता जी

**उत्तर:** क्या जवाब दूँ, पिता जी ?

### कृति ऊ (४): स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' इस पर अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:** हमारा भारतीय समाज सदियों से पुरुष-प्रधान समाज रहा है। उसमें लड़कों को लड़कियों की अपेक्षा महत्त्वपूर्ण व ऊँचा स्थान दिया गया है। आज भी लोग बेटियों की अपेक्षा बेटा चाहते हैं। वे बेटियों को 'पराया-धन' मानते हैं। उनके अनुसार बेटियों को पढ़ा-लिखाकर पैसे खर्च करने से क्या फायदा? अंत में शादी करके उसे दूसरे के घर ही तो जाना है। दहेज-प्रथा, लड़कियों की भ्रूण-हत्या आदि जैसी सामाजिक बुराइयाँ आज भी जारी हैं। ऐसे में एक सभ्य समाज के निर्माण हेतु प्रत्येक व्यक्ति को आगे आकर बेटियों की सुरक्षा और शिक्षा का प्रबंध करना चाहिए। आज के दौर में हर क्षेत्र में बेटियाँ बेटों से आगे बढ़ गई हैं। साइना नेहवाल, कल्पना चावला, इंदिरा गाँधी आदि कई ऐसे उदाहरण हैं, जिन्होंने अपने क्षेत्र में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया है। आज बेटी स्वयं स्वावलंबी होकर दूसरों को भी सहायता प्रदान कर रही है। आज के युग में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' यह नारा सार्थक नज़र आता है।

## प्रश्न ७ (ए) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति ए (१): आकलन कृति

**(१) निम्नलिखित गलत वाक्य सही करके फिर से लिखिए।**

**(i) उमा ने घर आए मेहमानों की अच्छी तरह से खातिरदारी की।**

**उत्तर:** उमा ने घर आए मेहमानों को बेइज्जत करके उन्हें उनकी औकात दिखा दी।

**(ii) गोपाल प्रसाद जी के चेहरे पर रुलासापन और बेटे के चेहरे पर बेबसी का गुस्सा दिखाई दे रहा था।**

**उत्तर:** गोपाल प्रसाद जी के चेहरे पर बेबसी का गुस्सा और बेटे के चेहरे पर रुलासापन दिखाई दे रहा था।

**(२) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

**(i) बैकबोन (ii) बी.ए.**

**उत्तर:** (i) रीढ़ की हड्डी का पर्यायी शब्द क्या है?
(ii) उमा ने कहाँ तक की पढ़ाई की है?

*गद्यांश: ७ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ३९*

**उमा** : अब मुझे कह लेने दीजिए बाबू जी।
**गो. प्रसाद** : (ताव में आकर) बाबू रामस्वरूप, आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया था?
**उमा** : (तेज आवाज में) जी हाँ, और हमारी बेइज्जती नहीं होती जो आप इतनी देर से नाप-तौल कर रहे हैं?
**शंकर** : बाबू जी, चलिए।
**गो. प्रसाद** : क्या तुम कॉलेज में पढ़ी हो? (रामस्वरूप चुप)
**उमा** : जी हाँ, मैं कॉलेज में पढ़ी हूँ। मैंने बी.ए.पास किया है। कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की और न आपके पुत्र की तरह लड़कियों के होस्टल में ताक-झाँककर कायरता

दिखाई है। मुझे अपनी इज्जत अपने मान का खयाल तो है। लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह नौकरानी के पैरों में पड़कर अपना मुँह छिपाकर भागे थे।

**रामस्वरूप** : उमा, उमा !

**गो. प्रसाद** : (खड़े होकर गुस्से में) बस हो चुका। बाबू रामस्वरूप आपने मेरे साथ दगा किया। आपकी लड़की बी.ए. पास है और आपने मुझसे कहा था कि सिर्फ मैट्रिक तक पढ़ी है। (दरवाजे की ओर बढ़ते हैं।)

**उमा** : जी हाँ, जाइए, जरूर चले जाइए! लेकिन घर जाकर जरा यह पता लगाइएगा कि आपके लाड़ले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं- याने बैकबोन, बैकबोन [बाबू गोपाल प्रसाद के चेहरे पर बेबसी का गुस्सा है और उनके लड़के के रुलासापन। दोनों बाहर चले जाते हैं। उमा सहसा चुप हो जाती है।]

## कृति ए (२): आकलन कृति

**(१) किसने, किससे कहा?**

**(i) ''बाबू जी चलिए।''**

उत्तर: शंकर ने अपने पिता जी से कहा।

**(ii) ''कोई पाप नहीं किया।''**

उत्तर: उमा ने गोपाल प्रसाद जी से कहा।

**(२) समझकर लिखिए।**

**(i) शंकर ने अपने पिता से चलने के लिए कहा -**

उत्तर: क्योंकि उमा ने शंकर एवं उसके पिता जी को खरी-खोटी सुनाकर उन्हें बेइज्जत किया।

**(ii) ये भागा था इससे मुँह छिपाकर -**

उत्तर: शंकर भागा नौकरानी से मुँह छिपाकर।

**(iii) इसका खयाल है उमा को -**

उत्तर: अपनी इज्जत व अपने मान का।

## कृति ए (३): शब्द संपदा

**(१) परिच्छेद में से शब्द-युग्म छाँटकर लिखिए।**

उत्तर: (i) ताक - झाँककर (ii) नाप - तौल

**(२) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग का उपयोग कीजिए।**

**(i) इज्जत** **(ii) पता**

उत्तर: (i) बेइज्जत (ii) लापता

**(३) समानार्थी शब्द लिखिए।**

**(i) दगा** **(ii) मान**

उत्तर: (i) धोखा (ii) आदर

**(४) निम्नलिखित वाक्य में विरामचिह्नों का उचित प्रयोग कीजिए।**

**(i) क्या लड़कियों को पढ़ाना पाप समझा जाता है।**

उत्तर: ''क्या लड़कियों को पढ़ाना पाप समझा जाता है?''

**(५) निम्नलिखित शब्द में से प्रत्यय छाँटकर लिखिए और संबंधित प्रत्यय लगाकर अन्य दो शब्द बनाइए।**

**(i) कायरता**

उत्तर: (i) **प्रत्यय** : ता : **अन्य दो शब्द** : सज्जनता, शालीनता

**(६) निम्नलिखित कृदंत शब्दों के मूल रूप लिखिए।**

(i) झाँककर (ii) जाकर

उत्तर: (i) झाँकना (ii) जाना

## कृति ए (४): स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'नारी शक्ति' पर अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: नारी दुर्गा का रूप होती है। वह सबला है। उसमें जिस प्रकार सहनशीलता होती है; उसी प्रकार समाज में नया परिवर्तन लाने की शक्ति भी होती है। आज की नारी कल्पना चावला बनकर अंतरिक्ष की यात्रा कर रही है, तो कहीं किरण बेदी के रूप में आई. पी. एस. अधिकारी बनकर पुलिस प्रशासन को एक नई दिशा दे रही है। भारत पर सत्रह वर्ष तक प्रधानमंत्री के रूप में शासन करने वाली इंदिरा गांधी के दिव्य व्यक्तित्व से कौन परिचित नहीं है? नारी देश का भविष्य है। नारी की शक्ति को पहचानकर ही महात्मा गांधी जी ने स्त्रियों को स्वतंत्रता आंदोलन में सम्मिलित होने का आग्रह किया था। कहा ही गया है।

**''एक नहीं, दो-दो मात्राएँ, नर से भारी नारी।''**

## स्वाध्याय विषयक कृतियाँ

**सूचनानुसार लिखिए।**

***(१) कृदंत बनाइए।**

(i) पढ़ना (ii) समझना

(iii) सीना (iv) चाहना

उत्तर: (i) पढ़कर (ii) समझकर (iii) सीलकर (iv) चाहकर

***(२) शब्द-युग्म पूर्ण कीजिए।**

(i) पढ़े - ..... , सभा - .....

(ii) पेंटिंग - ....., सीधा - .....

उत्तर: (i) लिखे, समिती (ii) वेटिंग, सादा

## भाषाबिंदु

***(१) निम्नलिखित वाक्यों में आए हुए अव्ययों को रेखांकित कीजिए और अव्यय के भेद दिए गए स्थान पर लिखिए।**

| वाक्य | अव्यय भेद |
|---|---|
| गाय को घर के सामने खूँटे से बाँधा। | के सामने : संबंधसूचक अव्यय |
| वह उठा और घर चला गया। | और : समुच्चयबोधक अव्यय |
| अरे! गऊशाला यहाँ से दो किलोमीटर दूर है। | अरे! : विस्मयादिबोधक अव्यय |
| वह भारी कदमों से आगे बढ़ने लगा। | आगे : क्रियाविशेषण अव्यय |
| उन्होंने मुझे धीरे-धीरे हिलाना शुरू किया। | धीरे-धीरे : क्रियाविशेषण अव्यय |

| | |
|---|---|
| मुझे लगा कि आज फिर कोई दुर्घटना होगी। | **कि** : समुच्चयबोधक अव्यय |
| वाह-वाह! खूब सोचा आपने! | **वाह-वाह!** : विस्मयादिबोधक अव्यय |
| चाची, माँ के पास चली गई। | **के पास** : संबंधसूचक अव्यय |

**(२) पाठ में प्रयुक्त अव्यय छाँटिए और उनसे वाक्य बनाकर लिखिए।**

**उत्तर:**

**(१) क्रियाविशेषण अव्यय:**

(i) धीरे-धीरे : वाक्य : वह धीरे-धीरे अपनी बैलगाड़ी चला रहा था।

(ii) अब : वाक्य : अब तुम इस शहर से चले जाओ।

**(२) संबंधसूचक अव्यय:**

(i) की तरफ : वाक्य : मैं अशोक की तरफ बिल्कुल दयाभाव से नहीं देखूँगा।

(ii) के साथ : वाक्य: राधा अपने पिता के साथ पुस्तकालय गई।

**(३) समुच्चयबोधक अव्यय:**

(i) और : वाक्य : सीता और गीता बहनें हैं।

(ii) लेकिन : वाक्य : विद्याधर कड़ी मेहनत करता है, लेकिन उसे उचित फल प्राप्त नहीं होता।

**(४) विस्मयादिबोधक अव्यय:**

(i) अबे! : वाक्य : अबे! समझा क्या? अब तू ज्यादा नाटक मत कर।

(ii) हँ-हँ-हँ! वाक्य : हँ-हँ-हँ! ऐसा मजाक थोड़े ही करते हैं।

***(३) नीचे आकृति में दिए हुए अव्ययों के भेद पहचानकर उनका अर्थपूर्ण स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

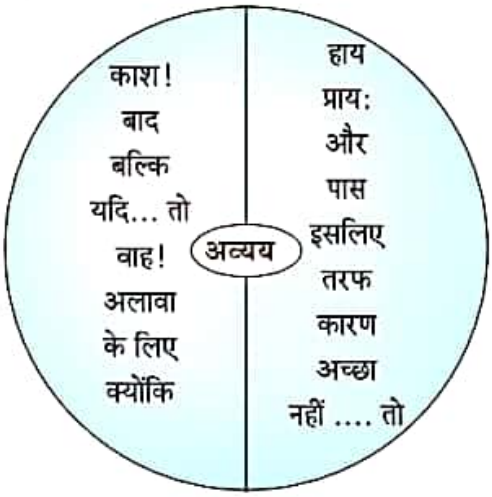


**उत्तर: अव्यय तथा उनके वाक्य प्रयोग**

**काश!** : विस्मयादिबोधक अव्यय : काश! तुम भी हमारे साथ चलते।

**बाद** : संबंधसूचक अव्यय : पता नहीं उसके बाद क्या हुआ?

**बल्कि** : समुच्चयबोधक अव्यय : महादेवी सिर्फ कवयित्री ही नहीं बल्कि एक महान रचनाकार भी थीं।

**यदि... तो** : समुच्चयबोधक अव्यय : यदि मेरे साथ नहीं चलोगे, तो मुझे बहुत गुस्सा आएगा।

**वाह!** : विस्मयादिबोधक अव्यय : वाह! क्या ताज है।

**अलावा** : संबंधसूचक अव्यय : परिवार की खुशियों के अलावा मुझे कुछ नहीं चाहिए।

**के लिए** : संबंधसूचक अव्यय : मैं उसके लिए किताब लाई।

**क्योंकि** : समुच्चयबोधक अव्यय : वह दुखी है क्योंकि वह गिर गया।

**हाय!** : विस्मयादिबोधक अव्यय : हाय! यह क्या हो गया।

**प्राय:** : क्रियाविशेषण अव्यय : प्राय: देखा जाता है कि वह अकेले ही घर से निकलता है।

**और** : समुच्चयबोधक अव्यय : राम और श्याम अच्छे दोस्त हैं।

**पास** : संबंधसूचक अव्यय : हमारे घर के पास एक मंदिर है।

**इसलिए** : समुच्चयबोधक अव्यय : अचानक बारिश शुरू हुई इसलिए मुझे स्कूल पहुँचने में देर हो गई।

**तरफ** : संबंधसूचक अव्यय : मैंने उसकी तरफ देखा।

**कारण** : समुच्चयबोधक अव्यय : आज्ञाराम का परीक्षा में फेल होना दुखद है, जिसका कारण उसकी लापरवाही है।

**अच्छा!** : विस्मयादिबोधक अव्यय : अच्छा! तो हम भी साथ चलते हैं।

**नहीं... तो** : समुच्चयबोधक अव्यय : तुम मुझे अभी के अभी मिलो, नहीं... तो देखना, मैं क्या करूँगा?

## अभिव्यक्ति

**(१) सुनी-पढ़ी अंधविश्वास की किसी घटना में निहित आधारहीनता और अवैज्ञानिकता का विश्लेषण करके लिखिए।**

**उत्तर:** किसी बात को बिना सोच समझ के, बिना किसी आधार के, चरम सीमा के परे जाकर करना एवं मानना अंधविश्वास है। अंधविश्वास से संबंधित एक उदाहरण यह भी है कि छींक आने पर रुकना। हम समझते हैं कि किसी का छींकना हमारे काम में बाधक होगा। इसे हम अपशगुन समझते हैं, लेकिन ऐसा सच नहीं होता। हमें या किसी को भी कभी भी छींक आ सकती है। यदि व्यक्ति के खाने में अधिक मात्रा में ठंडी चीजें आ जाती हैं, तब उसे सर्दी हो जाती है और वह छींकता है। परंतु लोग विज्ञान पर आधारित इस कारण को नजरअंदाज करते हैं और स्वयं के तर्क-वितर्कों पर विश्वास करते हैं।

### उपयोजित लेखन

*(१) अपने परिसर में विद्यार्थियों के लिए 'योगसाधना शिबिर' का आयोजन करने हेतु आयोजक के नाते विज्ञापन तैयार कीजिए।

योगगुरु श्री कल्केश बाबा जी के मार्गनर्शन में

***एकलव्य योगसाधना शिबिर***

दिनांक: १० मई, २०१८ से २० मई, २०१८ तक

सुबह: ७.०० - ९.०० बजे तक

*** विशेषता ***

मुफ्त योगसाधना शिबिर

पुरुष एवं महिलाओं के लिए अलग-अलग प्रबंध

*** आयोजक ***

श्री कलानंद मेहता

आयोजन स्थल: रामविलास मैदान, वरली, मुं.-६४

### भाषण-संभाषण

(१) 'दहेज: एक अभिशाप' चर्चा कीजिए।

**उत्तर:** हमारे समाज में अनेक प्रथाएँ प्रचलित हैं, इनमें दहेज जैसी एक प्रथा भी भारत में पुराने जमाने से चली आ रही है। इस प्रथा में बेटी को उसके विवाह पर उपहारस्वरूप कुछ दिया जाता है। आज इस प्रथा ने बुराई का रूप धारण कर लिया है। दहेज का दावानल संपूर्ण पीढ़ी को निगल रहा है। गरीब परिवार के माता-पिता अपनी बेटियों का विवाह नहीं कर पाते क्योंकि उनके पास पैसे नहीं होते। सचमुच यह प्रथा सामाजिक अभिशाप है। हमारे देश में लड़कियाँ आज भी १३ वर्ष की उम्र से पहले ब्याह दी जाती हैं। जबकि अन्य लड़कियों की शादी १६ वर्ष की उम्र तक हो जाती है। इसका अर्थ यह है कि लड़की जितना पढ़ेगी, उतना ही उपयुक्त लड़का तलाशना होगा और उसके लिए ढेर सारा दहेज भी जुटाना पड़ेगा। दहेज रूपी दानव से बचने के लिए कई माता-पिता अपनी लड़की को जन्म से पहले ही मार देते हैं। जो लड़कियाँ दहेज कम लेकर आती हैं, उन्हें मारा-पीटा जाता है। यहाँ तक कि उन्हें जलाया भी जाता है। उन्हें आत्महत्या करने के लिए भी मजबूर किया जाता है। जब तक हमारे समाज में यह प्रथा रहेगी, तब तक बेटियाँ दुखी ही रहेंगी।

दहेज प्रथा से बचने के लिए लोगों की मानसिकता में बदलाव आना बेहद जरूरी है। उन्हें यह ध्यान में रखना चाहिए कि बेटी कोई वस्तु नहीं, जो दहेज से बिक जाए। इस दिशा में हमारे समाज की युवा पीढ़ी महत्त्वपूर्ण कदम उठा सकती है। सभी के हित के लिए युवा पीढ़ी को दृढ़ संकल्प के साथ इस प्रथा का विरोध करने के लिए हाथ से हाथ मिलाना होगा। एकजुट होकर इस समस्या का निदान करना होगा।

❖❖❖

# १० ठेस

*- फणीश्वरनाथ रेणु (१९२१-१९७७)*

## लेखक-परिचय

**जीवन-परिचय** : लेखक फणीश्वरनाथ जी का जन्म ४ मार्च, १९२१ में बिहार के पूर्णिया जिले में हुआ था। इन्होंने अपने जीवनकाल में शोषण और दमन के विरुद्ध संघर्ष किया फणीश्वरनाथ जी राजनीति में सक्रिय थे। इन्हें भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' सम्मान से सम्मानित किया गया है। इन्होंने सत्ता-दमन के विरोध में पद्मश्री का त्याग भी किया। इनके द्वारा लिखी गई कहानी 'मारे गए गुलफाम' पर बहुचर्चित हिंदी फिल्म 'तीसरी कसम' बनी, जिसे अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए।

**प्रमुख कृतियाँ** : ठुमरी, अग्निखोर, आदिम रात्रि की महक, एक श्रावणी दोपहरी की धूप, अच्छे आदमी **(कहानी संग्रह)**, आँचल, परती परिकथा, कलंक-मुक्ति, जुलूस, कितने चौराहे, पल्टू बाबू रोड **(उपन्यास)**, ऋणजल-धनजल, वन-तुलसी की गन्ध, श्रुत-अश्रुत पूर्व **(संस्मरण)**। नेपाली क्रांतिकथा **(रिपोर्ताज)**।

## गद्य-परिचय

**आधुनिक आँचलिक कहानी** : 'ठेस' यह एक आधुनिक कहानी है। आधुनिक आँचलिक कहानियाँ ग्रामीण समाज में घटित घटनाएँ एवं गतिविधियों का प्रभावी ढंग से चित्रण करती हैं। ये किसी अँचल विशेष पर आधारित होती हैं। गाँवों की ठेठ भाषा व गँवईपन इनकी विशेषता है।

**प्रस्तावना** : 'ठेस' कहानी के माध्यम से लेखक रेणु जी ने एक ऐसे कारीगर के बारे में बताया है, जिसकी कारीगरी के सभी मुरीद हैं; लेकिन स्वार्थवश उसका अपमान करने से नहीं चूकते हैं। उसके दिल पर ठेस पहुँचाकर उसे व्यथित करते हैं, फिर भी वह अपने स्वाभिमान को जीवित रखता है।

## सारांश

प्रस्तुत कहानी का प्रमुख पात्र सिरचन है, जो एक स्वाभिमानी कारीगर है। वह अपने परिवार में अकेला है। उसकी पत्नी एवं बच्चे इस दुनिया में नहीं है। शीतलपाटी, चिक आदि कारीगरी की चीजें बनाना उसका काम है। आजकल इस काम को समाज में निरुपयोगी समझा जाता है। गाँव वाले उसे कामचोर, मुफ्तखोर या चटोर कहते हैं। गाँव में किसी को भी उसके कारीगरी की जरूरत होती है; तब उसे बड़े प्यार से बुलाया जाता है, उसे खाना-पीना दिया जाता है अन्यथा उसे कोई पूछता नहीं है। लेखक की छोटी बहन मानू पहली बार ससुराल जा रही थी। उस वक्त उसके दूल्हे ने चिक और शीतलपाटियों की माँग की थी, इसलिए सिरचन को लेखक के घर पर बुलाया जाता है। उसे चिउरा और गुड़ खाने के लिए दिया जाता है। लेखक की मँझली भाभी उसके सामने बुँदियाँ सूप में फेंककर जाती है। तब वह उसके मायके पर व्यंग्य कसता है, जिससे वह रोने लगती है। इस कारण लेखक की चाची को गुस्सा आता है और वह सिरचन को भला-बुरा कहकर उसका अपमान करती है। सिरचन इस अपमान को सह नहीं पाता। वहाँ से उठकर और काम अधूरा छोड़कर सिरचन अपने घर चला जाता है। लेखक मानू को उसके ससुराल छोड़ने जाता है। प्लेटफार्म पर गाड़ी में बैठने के बाद सिरचन अपने साथ सारी चीजें बनाकर ले आता है और मानू को देता है। मानू इसके बदले में उसे धोती खरीदने के लिए पैसे देना चाहती है, लेकिन वह पैसे लेने से इनकार कर देता है। यहाँ पर हमें सिरचन के स्वाभिमानी होने का पता चलता है।

## शब्दार्थ

- पगडंडी - दो खेतों के बीच में से आने-जाने के लिए बनाया हुआ छोटा रास्ता या मेड़
- पनियायी - पानी से भरी
- मुँहजोर - मुँह से बक-बक करने वाला
- कामचोर - काम से जी चुरानेवाला
- नैहर - मायका
- बतकुट्टी - व्यर्थ की बातें या फालतू बातें
- बेगार - बिना मजदूरी दिए जबरदस्ती लिया गया काम
- मड़ैया - झोपड़ी
- चिक - बाँस की तीलियों का बना हुआ परदा
- मोथी - एक प्रकार की घास
- शीतलपाटी - चटाई
- मूँज - एक प्रकार का तृण/घास
- कलेवा - नाश्ता

**मुहावरे**

बेपानी कर देना - अपमानित करना।
माथा टनटनाना - सिर में दर्द होना।
तिलमिला उठना - गुस्सा हो जाना।
जली-भुनी रहना - ईर्ष्या व गुस्सा आ जाना।
मुँह लाल होना - क्रोधित होना।
ठेस लगना - दु:खी होना, बुरा अनुभव होना।
फूट-फूटकर रोना - जोर-जोर से रोना।
मुँह लटकाना - निराश होना।

## MASTER KEY QUESTION SET - 10

**प्रश्न १ (अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति अ (१): आकलन कृति**

**(१) कारण लिखिए।**

**(i) गाँव के किसान सिरचन को खेत खलिहान की मजदूरी के लिए नहीं बुलाते।**

उत्तर: क्योंकि गाँव के किसान उसे बेकार व बेगार समझते थे।

**(ii) पहले सभी सिरचन की खुशामद करते थे।**

उत्तर: क्योंकि उस समय सिरचन के हाथों में कारीगरी थी।

**(२) कृति पूर्ण कीजिए।**

**लोगों द्वारा सिरचन के लिए प्रयुक्त विशेषण**

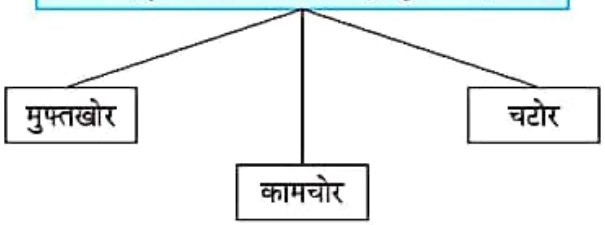


**(३) सही पर्याय चुनकर लिखिए।**

**(i) लेखक की माँ ने इसलिए सिरचन को बुलाया ....**

(क) क्योंकि वह सिरचन से चिक का जोड़ा बनवाना चाहती थी।
(ख) क्योंकि वह उससे मोथी की शीतलपाटी बनवाना चाहती थी।
(ग) क्योंकि वह उससे खेत-खलिहान का काम करवाना चाहती थी।

उत्तर: क्योंकि वह उससे मोथी की शीतलपाटी बनवाना चाहती थी।

**(४) सत्य या असत्य पहचानकर लिखिए।**

**(i) लेखक की बड़ी बहन ससुराल में रहती थी।**

**(ii) पंचानंद चौधरी के बड़े लड़के को सिरचन ने बेपानी कर दिया था।**

उत्तर: (i) सत्य (ii) असत्य

*गद्यांश १ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक ४२*

खेती-बारी के समय, गाँव के किसान सिरचन की गिनती नहीं करते। लोग उसको बेकार ही नहीं, 'बेगार' समझते हैं। इसलिए खेत-खलिहान की मजदूरी के लिए कोई नहीं बुलाने जाता है सिरचन को। क्या होगा, उसको बुलाकर? दूसरे मजदूर खेत पहुँचकर एक-तिहाई काम कर चुकेंगे, तब कहीं सिरचन राय हाथ में खुरपी डुलाता हुआ दिखाई पड़ेगा; पगडंडी पर तौल-तौलकर पाँव रखता हुआ, धीरे-धीरे। मुफ्त में मजदूरी देनी हो तो और बात है।

आज सिरचन को मुफ्तखोर, कामचोर या चटोर कह ले कोई। एक समय था, जब उसकी मड़ैया के पास बाबू लोगों की सवारियाँ बँधी रहती थीं। उसे लोग पूछते ही नहीं थे, उसकी खुशामद भी करते थे। "अरे, सिरचन भाई! अब तो तुम्हारे ही हाथ में यह कारीगरी रह गई है सारे इलाके में। एक दिन का समय निकालकर चलो। बड़े भैया की चिट्ठी आई है शहर से - सिरचन से एक जोड़ा चिक बनाकर भेज दो।"

मुझे याद है.. मेरी माँ जब कभी सिरचन को बुलाने के लिए कहती, मैं पहले ही पूछ लेता, "भोग क्या-क्या लगेगा?"

माँ हँसकर कहतीं, "जा-जा बेचारा मेरे काम में पूजा-भोग की बात नहीं उठाता कभी।" पड़ोसी गाँव के पंचानंद चौधरी के छोटे लड़के को एक बार मेरे सामने ही बेपानी कर दिया था सिरचन ने - "तुम्हारी भाभी नाखून से खाँटकर तरकारी परोसती है और इमली का रस डालकर कढ़ी तो हम मामूली लोगों की घरवालियाँ बनाती हैं। तुम्हारी भाभी ने कहाँ से बनाना सीखी है!"

इसलिए, सिरचन को बुलाने के पहले मैं माँ से पूछ लेता...। सिरचन को देखते ही माँ हुलसकर कहती, "आओ सिरचन! आज नेनू मथ रही थी, तो तुम्हारी याद आई। घी की खखोरन के साथ चूड़ा तुमको बहुत पसंद है न...! और बड़ी बेटी ने ससुराल से संवाद भेजा है, उसकी ननद रूठी हुई है, मोथी की शीतलपाटी के लिए।"

**कृति अ (२): स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) 'जब तक कारीगर के हाथों में कारीगरी है, तब तक समाज में उसकी प्रतिष्ठा होती है।' इस कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: कारीगर के हाथों में कारीगरी होती है। वह अपने हाथों से कारीगरी का सहज एवं सुंदर उपयोग करके कलात्मक कला को जन्म देता है। चित्रकार हो या शिल्पकार या फिर चटाई व टोकरियाँ बनानेवाला कारीगर सभी को समाज में तब तक प्रतिष्ठा मिलती है; जब तक उसके हाथ कला का निर्माण करते रहते हैं। एक बार जब कला की गुणवत्ता व माँग समय के साथ खत्म (क्षीण) होती चली जाती है और कलाकार भी बूढ़ा हो जाता है, तब वह अपने हाथों से कला का निर्माण करने में असमर्थ हो जाता है। उसकी कला का मूल्य भी धीरे-धीरे घटने

लगता है। इसी कारण समाज उसे अपनाता नहीं है। वह रोटी के लिए मोहताज हो जाता है।

**प्रश्न २ (आ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति आ (१) : आकलन कृति**

**(१) किसने किससे कहा?**

**(i) ''घी की सौंधी सुगंध सूँघकर ही आ रहा हूँ।''**

**उत्तर:** सिरचन ने लेखक की माँ से कहा है।

**(२) समझकर लिखिए।**

**(i) सिरचन की जीभ के लिए परिच्छेद में प्रयुक्त विशेषण -**

**उत्तर:** पनियायी

**(ii) आकृति पूर्ण कीजिए।**

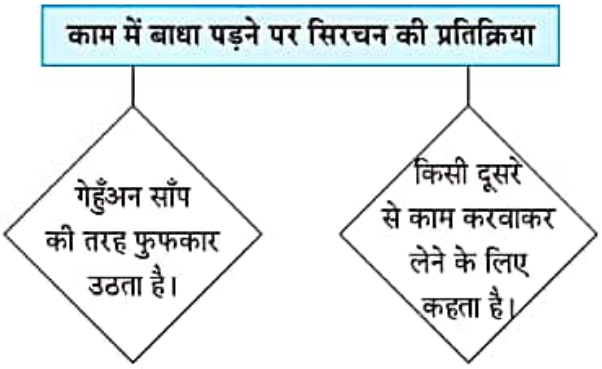


**(३) कृति पूर्ण कीजिए।**

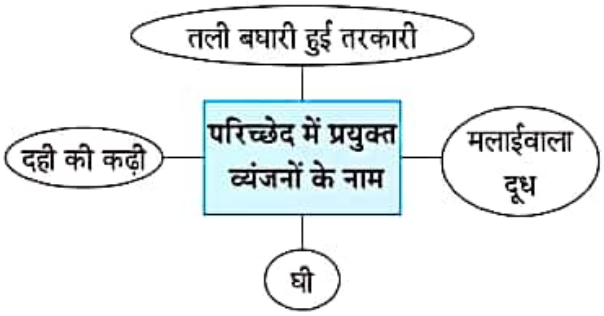


**(४) निम्नलिखित विधान सत्य है या असत्य पहचानकर लिखिए।**

**(i) सिरचन जाति का कारीगर है।**

**(ii) सिरचन मुँहजोर नहीं, कामचोर है।**

**उत्तर:** (i) सत्य (ii) असत्य

*गद्यांश २ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक ४२-४३*

सिरचन अपनी पनियायी जीभ को सँभालकर हँसता- "घी की सोंधी सुगंध सूँघकर ही आ रहा हूँ, काकी! नहीं तो इस शादी-ब्याह के मौसम में दम मारने की भी छुट्टी कहाँ मिलती है?"

सिरचन जाति का कारीगर है। मैंने घंटों बैठकर उसके काम करने के ढंग को देखा है। एक-एक मोथी और पटेर को हाथ में लेकर बड़े जतन से उसकी कुच्ची बनाता। फिर कुच्चियों को रँगने से लेकर सुतली सुलझाने में पूरा दिन समाप्त। ... काम करते समय उसकी तन्मयता में जरा भी बाधा पड़ी कि गेहुँअन साँप की तरह फुफकार उठता- "फिर किसी दूसरे से करवा लीजिए काम! सिरचन मुँहजोर है, कामचोर नहीं।"

बिना मजदूरी के पेटभर भात पर काम करने वाला कारीगर! दूध में कोई मिठाई न मिले तो कोई बात नहीं किंतु बात में जरा भी झाला वह नहीं बरदाश्त कर सकता।

सिरचन को लोग चटोर भी समझते हैं। तली बघारी हुई तरकारी, दही की कढ़ी, मलाईवाला दूध, इन सबका प्रबंध पहले कर लो, तब सिरचन को बुलाओ; दुम हिलाता हुआ हाजिर हो जाएगा। खाने-पीने में चिकनाई की कमी हुई कि काम की सारी चिकनाई खत्म! काम अधूरा रखकर उठ खड़ा होगा- "आज तो अब अधकपाली दर्द से माथा टनटना रहा है। थोड़ा-सा रह गया है, किसी दिन आकर पूरा कर दूँगा।" 'किसी दिन' माने कभी नहीं!

**कृति आ (२) : स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) 'वही कारीगर होता है, जो अपना काम तन्मयता से करता है।' कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:** कारीगर अपनी कारीगरी के लिए प्रसिद्ध होता है। अपनी कारीगरी दिखाकर ही वह समाज में मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा पा सकता है। यदि वह अपना काम तन्मयता से नहीं करेगा, तो उसकी कारीगरी को लोग पसंद नहीं करेंगे। तन्मयता से काम करने पर ही काम ठीक-ठाक ढंग से पूरा हो जाता है और जल्दी भी पूरा हो जाता है। तन्मयता से काम न करने पर उसमें बाधा निर्माण होती है और काम जैसा चाहें, वैसा नहीं होता है।

**प्रश्न ३ (इ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति इ (१) : आकलन कृति**

***(१) आकृति पूर्ण कीजिए।**

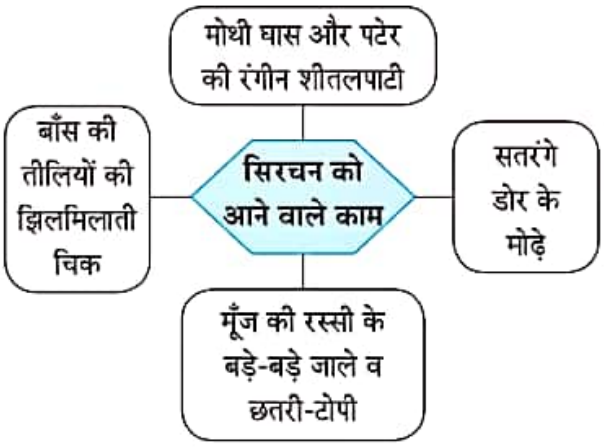


***(२) कृति पूर्ण कीजिए।**

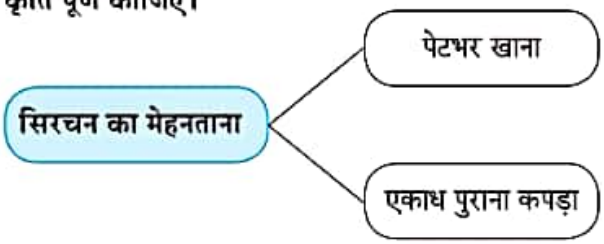

(३) किसने, किससे कहा?

(i) ''मैं माँ से जाकर कहती हूँ।''

उत्तर: यह वाक्य भज्जू महाजन की बेटी ने सिरचन से कहा।

(ii) ''यह तुम्हारी माँ ही कर सकती है बबुनी!''

उत्तर: यह वाक्य सिरचन ने भज्जू महाजन की बेटी से कहा।

*गद्यांश ३ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक ४३*

मोथी घास और पटरे की रंगीन शीतलपाटी, बाँस की तीलियों की झिलमिलाती चिक, सतरंगे डोर के मोढ़े, भूसी-चुन्नी रखने के लिए मूँज की रस्सी के बड़े-बड़े जाले, हलवाहों के लिए ताल के सूखे पत्तों की छतरी-टोपी तथा इसी तरह के बहुत-से काम हैं जिन्हें सिरचन के सिवा गाँव में और कोई नहीं जानता। यह दूसरी बात है कि अब गाँव में ऐसे कामों को बेकाम का काम समझते हैं लोग। बेकाम का काम जिसकी मजदूरी में अनाज या पैसे देने की कोई जरूरत नहीं। पेट भर खिला दो, काम पूरा होने पर एकाध पुराना-धुराना कपड़ा देकर विदा करो। वह कुछ भी नहीं बोलेगा।...

कुछ भी नहीं बोलेगा; ऐसी बात नहीं, सिरचन को बुलाने वाले जानते हैं, सिरचन बात करने में भी कारगर है।... महाजन टोले के भज्जू महाजन की बेटी सिरचन की बात सुनकर तिलमिला उठी थी- "ठहरो! मैं माँ से जाकर कहती हूँ। इतनी बड़ी बात!"

"बड़ी बात ही है बिटिया! बड़े लोगों की बस बात ही बड़ी होती है। नहीं तो दो-तीन पटेर की पाटियों का काम सिर्फ खेसारी का सत्तू खिलाकर कोई करवाए भला? यह तुम्हारी माँ ही कर सकती है बबुनी!" सिरचन ने मुस्कराकर जवाब दिया था।

**कृति इ (२): स्वमत अभिव्यक्ति।**

(१) 'बड़े लोगों की बस बात ही बड़ी होती है।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? अपने विचार लिखिए।

उत्तर: 'बड़े लोगों की बस बात ही बड़ी होती है।' इस कथन से मैं सहमत नहीं हूँ। मेरे विचारानुसार बड़े लोग वे होते हैं, जो वास्तव में महान कार्य करते हैं। ऐसे लोगों के पास मानवीय गुण होते हैं। उनकी कथनी व करनी एक होती है। वे अपने कार्यों द्वारा समाज के सामने एक आदर्श खड़ा कर देते हैं। उनके विचार उच्च होते हैं और जीवन सादा होता है। इसलिए बड़े लोग समाज में पूजनीय होते हैं। उनकी बात भी बड़ी होती है और उनका कार्य भी बड़ा होता है।

**प्रश्न ४ (ई) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति ई (१): आकलन कृति**

(१) कृति पूर्ण कीजिए।

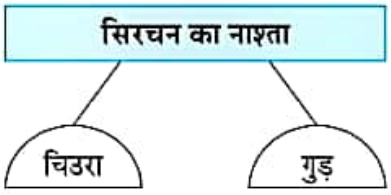


(२) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों-

(i) मानू (ii) चिक

उत्तर: (i) लेखक की सबसे छोटी बहन का नाम क्या था?

(i) सिरचन क्या बुनने बैठा था?

(३) कृति पूर्ण कीजिए।

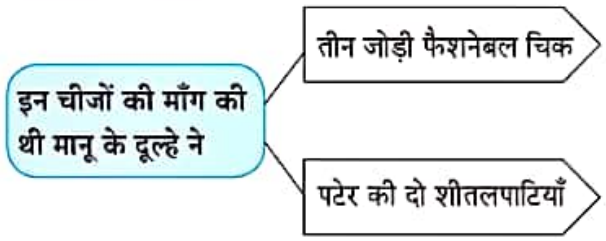


(४) कारण लिखिए।

(i) लेखक की माँ सिरचन को नई धोती देने वाली थी।

उत्तर: क्योंकि लेखक की माँ सिरचन से तीन जोड़ी फैशनेबल चिक और पटेर की दो शीतलपाटियाँ बनवाकर लेना चाहती थी।

(ii) सिरचन नई फैशन की चीज बना रहा था।

उत्तर: मानू दीदी का दूल्हा अफसर आदमी था। इसलिए उसके लिए वह नई फैशन की चीज बना रहा था।

*गद्यांश ४ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक ४३-४४*

इस बार मेरी सबसे छोटी बहन पहली बार ससुराल जा रही थी। मानू के दूल्हे ने पहले ही बड़ी भाभी को लिखकर चेतावनी दे दी है- "मानू के साथ मिठाई की पतीली न आए, कोई बात नहीं। तीन जोड़ी फैशनेबल चिक और पटेर की दो शीतलपटियों के बिना आएगी मानू तो ...!" भाभी ने हँसकर कहा, "बैरंग वापस!" इसलिए, एक सप्ताह पहले से ही सिरचन को बुलाकर काम पर तैनात करवा दिया था माँ ने- "देखो सिरचन! इस बार नई धोती दूँगी; असली मोहर छापवाली धोती। मन लगाकर ऐसा काम करो कि देखने वाले देखते ही रह जाएँ।"

पान-जैसी पतली छुरी से बाँस की तीलियाँ और कमानियों को चिकनाता हुआ सिरचन अपने काम में लग गया। रंगीन सुतलियाँ में झब्बे डालकर वह चिक बुनने बैठा। डेढ़ हाथ की बिनाई देखकर ही लोग समझ गए कि इस बार एकदम नये फैशन की चीज बन रही है।

मँझली भाभी से नहीं रहा गया। परदे की आड़ से बोली, "पहले ऐसा जानती कि मोहर छापवाली धोती देने से ही अच्छी चीज बनती है तो भैया को खबर भेज देती।"

काम में व्यस्त सिरचन के कानों में बात पड़ गई। बोला, "मोहर छापवाली धोती के साथ रेशमी कुरता देने पर भी ऐसी चीज नहीं बनती बहुरिया। मानू दीदी काकी की सबसे छोटी बेटी है... मानू दीदी का दूल्हा अफसर आदमी है!"

मँझली भाभी का मुँह लटक गया। मेरी चाची ने फुस-फुसाकर कहा, "किससे बात करती है बहू? मोहर छापवाली धोती नहीं, मुँगिया लड्डू। बेटी की विदाई के समय रोज मिठाई जो खाने को मिलेगी। देखती है न!"

दूसरे दिन चिक की पहली पाँति में सात तारे जगमगा उठे, सात

रंग के। सतभैया तारा! अपने काम में मगन सिरचन को खाने-पीने की सुध नहीं रहती। चिक में सुतली के फंदे डालकर उसने पास पड़े सूप पर निगाह डाली - चिउरा और गुड़ का एक सूखा ढेला। मैंने लक्ष्य किया, सिरचन की नाक के पास दो रेखाएँ उभर आईं। मैं दौड़कर माँ के पास गया। "माँ, आज सिरचन को कलेवा किसने दिया है, सिर्फ चिउरा और गुड़?"

### कृति ई (२): स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'देश की आत्मा गाँवों में बसती है।' इस कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: 'देश की आत्मा गाँवों में बसती है।' ऐसा गांधी जी ने कहा था, वह शत-प्रतिशत सही है। गाँव में रिश्तों की अहमियत होती है। सभी मेल-मिलाप से रहते हैं। वहाँ पर हमें संयुक्त परिवार के दर्शन होते हैं। उनमें ऊपर-ऊपर से भले ही 'तू तू-मैं मैं' हो फिर भी उनमें आंतरिक स्नेह होता है। गाँवों में ईर्ष्या, द्वेष आदि भावनाएँ दिखाई नहीं देती हैं। गाँव भारत की संस्कृति है। यदि किसी को पूरे भारत के दर्शन करने हों, तो उसे गाँव की ओर ही जाना पड़ता है। इसीलिए उपर्युक्त कथन सर्वथा उचित है।

### प्रश्न ५ (उ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति उ (१): आकलन कृति

**(१) संजाल पूर्ण कीजिए।**

**(२) उपर्युक्त गद्यांश में से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

(i) मँझली भाभी (ii) बैठकखाने

उत्तर: (i) अपने कमरे में बैठकर कौन रोने लगी?

(ii) मानू पान सजाकर कहाँ भेज रही थी?

**(३) कारण लिखिए।**

**(i) मँझली भाभी रोने लगी।**

उत्तर: क्योंकि सिरचन ने मँझली भाभी के मैके के बारे में बात छेड़कर उस पर व्यंग्य कसा।

**(ii) मँझली भाभी की भौंहें तन गईं।**

उत्तर: क्योंकि माँ ने मँझली भाभी से कहा कि सिरचन को बुँदिया खाने के लिए दे दो; जबकि पहले से ही उसके मुँह में चिउरा भरा हुआ था।

**(४) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।**

**(i) मँझली भाभी/चाची सिरचन को पान खाते देखकर अवाक हो गई।**

उत्तर: चाची सिरचन को पान खाते देखकर अवाक हो गई।

**(ii) सिरचन ने मँझली भाभी के मैके/ससुराल पर व्यंग्य कसा।**

उत्तर: सिरचन ने मँझली भाभी के मैके पर व्यंग्य कसा।

*गद्यांश ५ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक ४४-४५*

माँ रसोईघर के अंदर पकवान आदि बनाने में व्यस्त थी। बोली, "अरी मँझली, सिरचन को बुँदिया क्यों नहीं देती?"

"बुँदिया मैं नहीं खाता, काकी!" सिरचन के मुँह में चिउरा भरा हुआ था। गुड़ का ढेला सूप में एक किनारे पर पड़ा रहा, अछूता।

माँ की बोली सुनते ही मँझली भाभी की भौंहें तन गईं। मुट्ठी भर बुँदिया सूप में फेंककर चली गई।

सिरचन ने पानी पीकर कहा, "मँझली बहुरानी अपने मैके से आई हुई मिठाई भी इसी तरह हाथ खोलकर बाँटती हैं क्या?" बस, मँझली भाभी अपने कमरे में बैठकर रोने लगी। चाची ने माँ के पास जाकर कहा- "मुँह लगाने से सिर पर चढ़ेगा ही।... किसी के नैहर-ससुराल की बात क्यों करेगा वह?"

मँझली भाभी माँ की दुलारी बहू है। माँ तमककर बाहर आई- "सिरचन, तुम काम करने आए हो, अपना काम करो। बहुओं से बतकुट्टी करने की क्या जरूरत हो जिस चीज की जरूरत हो, मुझसे कहो।"

सिरचन का मुँह लाल हो गया। उसने कोई जवाब नहीं दिया। बाँस में टँगे हुए अधूरे चिक में फंदे डालने लगा।

मानू पान सजाकर बाहर बैठकखाने में भेज रही थी। चुपके से पान का एक बीड़ा सिरचन को देती हुई इधर-उधर देखकर बोली "सिरचन दादा, काम-काज का घर! पाँच तरह के लोग पाँच किस्म की बात करेंगे। तुम किसी की बात पर कान मत दो।"

सिरचन ने मुस्कराकर पान का बीड़ा मुँह में ले लिया। चाची अपने कमरे से निकल रही थी। सिरचन को पान खाते देखकर अवाक हो गई। सिरचन ने चाची को अपनी ओर अचरज से घूरते देखकर कहा, "छोटी चाची, जरा अपनी डिबिया का गमकौआ जर्दा खिलाना। बहुत दिन हुए...।"

### कृति उ (२): स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'ससुराल में लड़कियाँ सब कुछ सह सकती हैं, पर अपने मैके के बारे में एक लफ्ज भी नहीं सुन सकती।' इस कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: उपर्युक्त कथन सर्वथा सही है। शादी के पहले लड़कियाँ अपने माँ-बाप के साथ रहती हैं। उनके माँ-बाप बड़े ही लाड़-प्यार से उनका पालन-पोषण करते हैं। वे उन्हें अच्छी शिक्षा देकर उन्हें संस्कारी बनाते हैं। वे उन्हें समाज में जीवन जीने के लिए आवश्यक सामग्री प्रदान करते हैं। आखिर, ऐसी कौन-सी लड़की होगी जो अपने माँ-बाप के द्वारा किए गए उपकारों को भूल सकती है? शादी के पश्चात लड़कियाँ अपने मायके से बिछड़कर ससुराल चली जाती हैं। वे ससुराल में हर प्रकार की

कठिनाइयों को सह सकती हैं, लेकिन अपने मायके के बारे में एक लफ्ज भी नहीं सुन सकती हैं। आखिर अपने माता-पिता के प्रति जो आदर सम्मान उनके दिल में होता है, उसे कोई छीन नहीं सकता है।

**प्रश्न ६ (ऊ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति ऊ (१): आकलन कृति**

**(१) कृति पूर्ण कीजिए।**

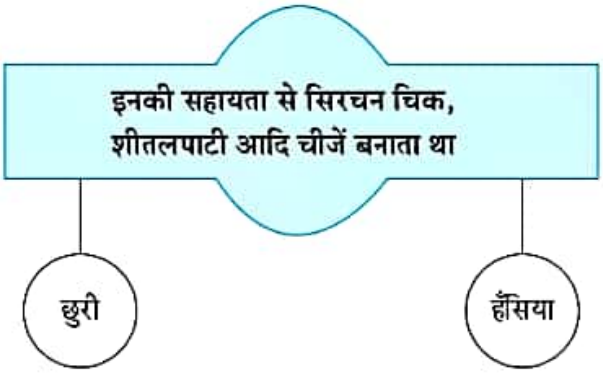


**(२) उत्तर लिखिए।**

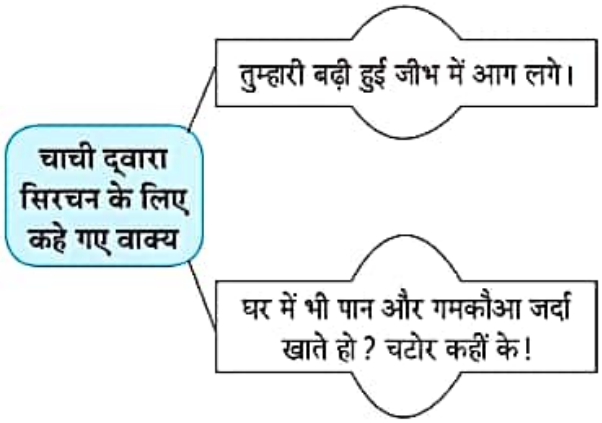


**(३) निम्नलिखित विधान सत्य है या असत्य पहचानकर लिखिए।**

**(i) चाची द्वारा अपमानित होने के कारण सिरचन अपना काम छोड़कर चला गया।**

**(ii) सिरचन की पत्नी उसे छोड़कर अपने मैके चली गई थी।**

उत्तर: (i) सत्य (ii) असत्य

**(४) समझकर लिखिए।**

**(i) प्रस्तुत परिच्छेद में 'कलाकार' किसे कहा गया है?**

उत्तर: सिरचन को

**(ii) सिरचन हनहनाता हुआ आँगन से बाहर निकल गया।**

उत्तर: क्योंकि सिरचन को चाची ने गमकौआ जर्दा देने के बजाय भला-बुरा कहकर अपमानित किया था।

**(५) निम्नलिखित वाक्य पूर्ण कीजिए।**

**(i) दिल में ठेस लगने पर यह निर्णय लिया सिरचन ने ....**

उत्तर: अब वह शीतलपाटी, चिक आदि नहीं बनाएगा।

**(ii) इस पर निगाह डाली सिरचन ने ....**

उत्तर: टँगी हुई अधूरी चिक पर।

**(६) उचित जोड़ियाँ मिलाइए।**

| 'अ' | 'ब' |
|---|---|
| (i) ससुरी | (क) धोती |
| (ii) कलाकार | (ख) चाची |
| (iii) जली-भुनी | (ग) सिरचन |
| (iv) मोहर छापवाली | (घ) घरवाली |

उत्तर: (i - घ), (ii - ग), (iii - ख), (iv - क)

*गद्यांश ६ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक ४६*

चाची कई कारणों से जली-भुनी रहती थी सिरचन से। गुस्सा उतारने का ऐसा मौका फिर नहीं मिल सकता। झनकती हुई बोली, "तुम्हारी बढ़ी हुई जीभ में आग लगे। घर में भी पान और गमकौआ जर्दा खाते हो?... चटोर कहीं के!" मेरा कलेजा धड़क उठा... हो गया सत्यानाश!

बस, सिरचन की उँगलियों में सुतली के फंदे पड़ गए। मानो, कुछ देर तक वह चुपचाप बैठा पान को मुँह में घुलाता रहा फिर अचानक उठकर पिछवाड़े पीक थूक आया। अपनी छुरी, हँसिया वगैरह समेट-सँभालकर झोले में रखे। टँगी हुई अधूरी चिक पर एक निगाह डाली और हनहनाता हुआ आँगन से बाहर निकल गया।

मानू कुछ नहीं बोली। चुपचाप अधूरी चिक को देखती रही।... सातों तारे मंद पड़ गए।

माँ बोली, "जाने दे बेटी! जी छोटा मत कर मानू! मेले से खरीदकर भेज दूँगी।"

मैं सिरचन को मनाने गया। देखा, एक फटी हुई शीतलपाटी पर लेटकर वह कुछ सोच रहा है। मुझे देखते ही बोला, "बबुआ जी! अब नहीं। कान पकड़ता हूँ, अब नहीं।... मोहर छापवाली धोती लेकर क्या करूँगा। कौन पहनेगा?... ससुरी खुद मरी, बेटे-बेटियों को ले गई अपने साथ। बबुआ जी, मेरी घरवाली जिंदा रहती तो मैं ऐसी दुर्दशा भोगता? यह शीतलपाटी उसी की बुनी हुई है। इस शीतलपाटी को छूकर कहता हूँ, अब यह काम नहीं करूँगा।... गाँव भर में तुम्हारी हवेली में मेरी कदर होती थी। अब क्या?" मैं चुपचाप वापस लौट आया। समझ गया, कलाकार के दिल में ठेस लगी है। वह नहीं आ सकता।

**कृति ऊ (२): स्वमत अभिव्यक्ति**

***(१) 'कला और कलाकार का सम्मान हमारा दायित्व है।' अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: कला ईश्वर का दूसरा रूप होती है। हर व्यक्ति के पास अद्‌वितीय कला नहीं होती है। जिसके पास अद्‌भुत व कलात्मक कला होती है, वह कलाकार कहलाता है। फिर वह साहित्यकार हो सकता है, चित्रकार हो सकता है या फिर संगीतकार हो सकता है। वह अपनी कला के द्‌वारा समाज पर अपनी अद्‌भुत छाप छोड़ता है। उसकी कला से लोग संतुष्ट हो

जाते हैं। उसकी कला लोगों के हृदय में आनंद व रस का निर्माण करती है। यदि हम कलाकार का निरादर करेंगे, उसका अपमान करेंगे; तो हम उसकी कला से वंचित हो जाएँगे। साथ ही, उसके नाराज हो जाने से वह भविष्य में अच्छी कला का प्रदर्शन नहीं कर सकेगा। आज भी हम मोहम्मद रफी, कवि रवींद्रनाथ टैगोर, चित्रकार एम. एफ. हुसैन आदि महान कलाकारों को याद करते हैं क्योंकि आज भी उनके द्वारा निर्मित कला व कलाकृति समाज में जीवित है। इसलिए यह हमारा कर्तव्य है कि हम कला और कलाकार का सम्मान करें। आखिर उनके कारण ही हमारी सांस्कृतिक विरासत व धरोहर सुरक्षित है।

**प्रश्न ७ (ए) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति ए (१): आकलन कृति**

***(१) कृति पूर्ण कीजिए।**

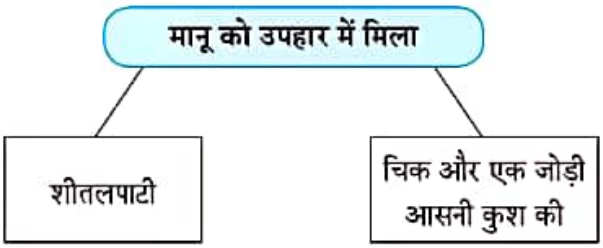


**(२) कारण लिखिए।**

**(i) मानू फूट-फूटकर रोने लगी।**

उत्तर: क्योंकि सिरचन ने मानू से मेहनताना नहीं लिया।

**(ii) लेखक का सिरचन को कोसने का जी हुआ।**

उत्तर: क्योंकि सिरचन अधूरा काम छोड़कर चला गया।

**(३) उपर्युक्त गद्यांश में से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

(i) ससुराल (ii) मानू

उत्तर: (i) मानू कहाँ जा रही थी?

(ii) फूट-फूटकर कौन रोने लगी?

**(४) चौखट पूर्ण कीजिए।**

(i)

| | |
|---|---|
| **मानू द्वारा धोती के दाम देने पर सिरचन की प्रतिक्रिया** | उसने जीभ को दाँत से काटकर दोनों हाथ जोड़ दिए। |

(ii)

| | |
|---|---|
| **लेखक के अनुसार परिवार के इन सदस्यों की नजर लग गई थी चिक को** | चाची और मँझली भाभी की |

*गद्यांश ७ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक ४६*

बड़ी भाभी अधूरी चिक में रंगीन छींट का झालर लगाने लगी- "यह भी बेजा नहीं दिखलाई पड़ता, क्यों मानू?"

मानू कुछ नहीं बोली।... बेचारी! किंतु मैं चुप नहीं रह सका- "चाची और मँझली भाभी की नजर न लग जाए इसमें भी!"

मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जा रहा था।

स्टेशन पर सामान मिलाते समय देखा, मानू बड़े जतन से अधूरी चिक को मोड़कर लिए जा रही है अपने साथ। मन-ही-मन सिरचन पर गुस्सा हो आया। चाची के सुर-में-सुर मिलाकर कोसने को जी हुआ- 'कामचोर, चटोर!'

गाड़ी आई। सामान चढ़ाकर मैं दरवाजा बंद कर रहा था कि प्लेटफॉर्म पर दौड़ते हुए सिरचन पर नजर पड़ी- "बबुआ जी!'' उसने दरवाजे के पास आकर पुकारा।

"क्या है?" मैंने खिड़की से गरदन निकालकर झिड़की के स्वर में कहा। सिरचन ने पीठ पर लदे हुए बोझ को उतारकर मेरी ओर देखा- "दौड़ता आया हूँ!... दरवाजा खोलिए! मानू दीदी कहाँ हैं? एक बार देखूँ।"

मैंने दरवाजा खोल दिया।

"सिरचन दादा!" मानू इतना ही बोल सकी।

खिड़की के पास खड़े होकर सिरचन ने हकलाते हुए कहा, "यह मेरी ओर से है। सब चीजें हैं दीदी! शीतलपाटी, चिक और एक जोड़ी आसनी, कुश की।" गाड़ी चल पड़ी।

मानू मोहर छापवाली धोती का दाम निकालकर देने लगी। सिरचन ने जीभ को दाँत से काँटकर, दोनों हाथ जोड़ दिए।

मानू फूट-फूटकर रो रही थी। मैं बंडल को खोलकर देखने लगा- ऐसी कारीगरी, ऐसी बारीकी, रंगीन सुतलियों के फंदों का ऐसा काम, पहली बार देख रहा था।

**कृति ए (२): स्वमत अभिव्यक्ति।**

**(१) 'ठेस' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर: 'ठेस' कहानी में एक ऐसे कलाकार का वर्णन किया गया है कि जिसकी कला को समाज पाना चाहता है, पर उसका सम्मान नहीं करना चाहता। उसकी कला को समाज निरुपयोगी भी समझता है। कहानी में चित्रित कलाकार सिरचन अपने परिवार में अकेला है। पहले से पत्नी व बच्चों के परलोक चले जाने से वह व्यथित है। फिर भी अपनी कारीगरी से वह सभी को संतुष्ट करता है। ऐसे में लेखक की चाची द्वारा बुरी तरह से अपमानित होने के कारण उसके दिल को ठेस पहुँचती है। जब एक बार व्यक्ति के दिल को ठेस पहुँचती है, तो वह फिर से जिंदादिल नहीं बन सकता। फिर भी कहानी का कलाकार अपने मानवीय मूल्यों को जीवित रखता है और मानू दीदी के लिए कला से परिपूर्ण शीतलपाटी, चिक और आसनी का निर्माण करता है।

इस तरह 'ठेस' शीर्षक अपनी सार्थकता एवं कलाकार के दिल पर लगी ठेस के माध्यम से स्वत: ही प्रकट हो जाता है।

## स्वाध्याय विषयक कृतियाँ

*(१) आकृति पूर्ण कीजिए।

(i)

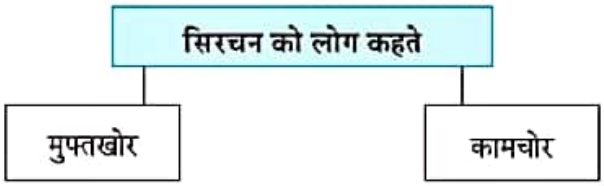


*(२) वाक्यों को उचित क्रम लगाकर लिखिए।

(i) सातों तारे मंद पड़ गए।

(ii) ये मेरी ओर से है। सब चीजें हैं दीदी।

(iii) लोग उसको बेकार ही नहीं, 'बेगार' समझते हैं।

(iv) मानू दीदी काकी की सबसे छोटी बेटी है।

उत्तर: (i) लोग उसको बेकार ही नहीं, 'बेगार' समझते हैं।

(ii) मानू दीदी काकी की सबसे छोटी बेटी है।

(iii) सातों तारे मंद पड़ गए।

(iv) ये मेरी ओर से है। सब चीजें हैं दीदी।

*(३) लिखिए।

(अ) नीचे लिखे हुए तद्धित शब्दों के मूल शब्द लिखिए।

(i) रंगीन (ii) मजदूरी

उत्तर: (i) मूल शब्द : रंग (ii) मूल शब्द : मजदूर

(ब) नीचे लिखे हुए कृदंत शब्दों के मूल शब्द लिखिए।

(i) झिलमिलाहट (ii) मुस्कान

उत्तर: (i) मूल शब्द : झिलमिलाना (ii) मूल शब्द : मुस्कराना

## भाषाबिंदु

*(१) कोष्ठक की सूचना के अनुसार निम्न वाक्यों का काल परिवर्तन कीजिए।

(i) अली घर से बाहर चला जाता है। (सामान्य भूतकाल)

उत्तर: अली घर से बाहर चला गया।

(ii) आराम हराम हो जाता है। (पूर्ण वर्तमानकाल)

उत्तर: आराम हराम हो गया है।

(iii) सरकार एक ही टैक्स लगाती है। (सामान्य भविष्यकाल)

उत्तर: सरकार एक ही टैक्स लगाएगी।

(iv) आप इतनी देर से नाप-तौल करते हैं। (अपूर्ण वर्तमानकाल)

उत्तर: आप इतनी देर से नाप-तौल कर रहे हैं।

(v) वे बाजार से नई पुस्तक खरीदते हैं। (पूर्ण भूतकाल)

उत्तर: उन्होंने बाजार से नई पुस्तक खरीदी थीं।

(vi) वे पुस्तक शांति से पढ़ते हैं। (अपूर्ण भूतकाल)

उत्तर: वे पुस्तक शांति से पढ़ रहे थे।

(vii) सातों तारे मंद पड़ गए। (अपूर्ण वर्तमानकाल)

उत्तर: सातों तारे मंद पड़ जा रहे हैं।

(viii) मैंने खिड़की से गरदन निकालकर झिड़की के स्वर में कहा। (अपूर्ण भूतकाल)

उत्तर: मैं खिड़की से गरदन निकालकर झिड़की के स्वर में कह रहा था।

*(२) आकृति में दिए गए वाक्य का काल पहचानकर निर्देशानुसार काल परिवर्तन कीजिए।

| | |
|---|---|
| मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जा रहा था। | अपूर्ण भूतकाल |
| सामान्य वर्तमानकाल | मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जाता हूँ। |
| सामान्य भविष्यकाल | मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जाऊँगा। |
| पूर्ण वर्तमानकाल | मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही गया हूँ। |
| सामान्य भूतकाल | मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही गया। |
| अपूर्ण वर्तमानकाल | मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जा रहा हूँ। |
| पूर्ण भूतकाल | मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही गया था। |

## उपयोजित लेखन

(१) 'पुस्तक प्रदर्शनी में एक घंटा' विषय पर निबंध लिखिए।

उत्तर: राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी के जन्मदिन के अवसर पर हिंदी साहित्य अकादमी ने पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया था। मैं बड़ी उत्सुकता एवं जिज्ञासा से प्रदर्शनी में गया। प्रदर्शनी की बात ही कुछ और थी। हिंदी साहित्य की कविता, उपन्यास, आत्मकथा, कहानियाँ आदि विधाओं की पुस्तकों की यहाँ पर भरमार थी। बाल-साहित्य से संबंधित किताबों ने सभी बच्चों का हृदय आकर्षित कर लिया था। उन किताबों के ईद-गिर्द बच्चों की भीड़ देखने लायक थी।

पुस्तक प्रदर्शनी में 'चकमक', 'बाल रानी', 'बाल जगत' आदि पत्रिकाएँ भी थीं। उन पत्रिकाओं ने मुझे मोहित कर लिया। विज्ञान-जगत से संबंधित बाल कहानियों ने मुझे अपनी ओर आकर्षित कर लिया और मैंने विज्ञान विषय से संबंधित कहानियों की सात किताबें खरीदीं।

हिंदी साहित्य के बाल कहानीकार श्री राजेंद्र वर्मा जी भी वहाँ पर उपस्थित थे। वे हम सभी बच्चों से बातें कर रहे थे और हमें किताबों के बारे में जानकारी दे रहे थे। हम सारे बच्चे भी अपने प्रिय बाल कहानीकार से मिलकर फूले नहीं समा रहे थे। मैंने खरीदी हुई किताबों पर श्री राजेंद्र वर्मा जी के हस्ताक्षर लिए। उनके हस्ताक्षर पाकर मैं बहुत खुश हो गया और फिर एक घंटे के पश्चात वहाँ पर घूमकर अपने घर लौट आया।

❖❖❖

# ११ कृषक गान

*- दिनेश भारद्वाज (१९४३)*

## कवि-परिचय

**जीवन-परिचय :** कवि दिनेश भारद्वाज हिंदी साहित्य के एक ऐसे हस्ताक्षर हैं, जो अपनी कविताओं के द्वारा समाज की कुरीतियों पर गहरा प्रहार करते हैं और पाठकों को चिंतन के लिए विवश कर देते हैं। इनकी रचनाएँ ग्रामीण परिवेश से जुड़ी होती हैं। इनकी रचनाओं में देश की मिट्टी की सुगंध व आत्मीयता प्रकट होती है।

**प्रमुख कृतियाँ :** 'जन्म और जिंदगी', 'तृष्णा से तृप्ति तक' **(कविता संग्रह)**, 'एकात्म' **(दोहा संग्रह)** आदि।

## पद्य-परिचय

**आधुनिक सामाजिक काव्य :** 'कृषक गान' यह एक सामाजिक काव्य है। समाज में व्याप्त समस्याओं की अभिव्यक्ति हेतु सामाजिक कविताएँ अग्रसर हैं। यही विशेषता प्रस्तुत कविता 'कृषक गान' में हमें दिखाई पड़ता है।

**प्रस्तावना :** प्रस्तुत कविता के द्वारा कवि दिनेश भारद्वाज जी ने भारतीय किसान की दुर्दशा का वर्णन किया है और बताया है कि आज हमारे देश में किसान की स्थिति दयनीय है। कृषक, जो दूसरों को पालता है; वह आज रोटी, कपड़ा एवं मकान के लिए दूसरों पर आश्रित है। यह हमारा कर्तव्य है कि हम सभी एकत्रित होकर उसके उत्थान हेतु प्रयास करें।

## सारांश

'कृषक गान' यह कविता कृषक के जीवन पर आधारित है। कृषक विश्व का पालक एवं अन्नदाता है। यदि कृषक ही नहीं रहेगा, तो संपूर्ण विश्व का अस्तित्व ही मिट जाएगा। कृषक हैं, इसीलिए हम सब जीवित हैं। लेकिन आज कृषक मूलभूत सुविधाओं से वंचित और बेहाल है। वह अपना जीवन-यापन गरीबी में कर रहा है। उसके पास तन ढँकने के लिए भी कपड़े नहीं हैं। आज का समाज इतना स्वार्थी हो गया है कि वह उसकी ओर ध्यान ही नहीं दे रहा है और उसके उत्थान के लिए प्रयास भी नहीं कर रहा है। कवि किसान का खोया हुआ सम्मान व प्रतिष्ठा फिर से स्थापित करने हेतु उस पर गीत गाना चाहता है।

## शब्दार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| पतझर | - पतझड़, एक ऋतु, यहाँ पर 'दुख' का प्रतीक | यंत्रवत | - मशीन के जैसा |
| दीनता | - गरीबी या विपन्नता | सृजक | - रचना करने वाला, सर्जक |
| पालित | - पालक जिसका पालन करता है वह (आश्रति) | ऊसर | - बंजर, अनुपजाऊ |
| सुर-असुर | - अच्छे-बुरे लोग | उर्वरा | - उपजाऊ भूमि |
| अधिकार | - हक | युगांतर | - दूसरा युग, दूसरा समय और जमाना |
| पालक | - पालने वाला, अन्नदाता | मनुजता | - मनुष्यता |
| | | नीड़ | - घोंसला |
| | | मधुमास | - वसंत ऋतु |

## भावार्थ

- **हाथ में संतोष की ..... आज उस पर मान कर लूँ। उस कृषक का गान कर लूँ।**

कवि कहते हैं कि किसान विश्व का पालक एवं अन्नदाता है। लेकिन आज वह स्वयं मूलभूत सुविधाओं से वंचित होकर हाथों में संतोष की तलवार लिए हुए अपने जीवन में तेज गति से आगे बढ़ता चला जा रहा है, अर्थात जीवन में आनेवाली विपरीत व कठिन परिस्थिति में भी वह संतुष्ट रहने का प्रयत्न करता है। दुनिया में जब मधुमास यानी वसंत ऋतु छाई रहती है अर्थात लोगों के जीवन में सर्वत्र संपन्नता होती है; तब भी किसान पतझड़ की छाया में ही अपना जीवन-यापन करता है, वह हमेशा दुखी ही होता है। परंतु उसकी दीनता भी अभिमान के समान है। इसलिए ऐसे स्वाभिमानी किसान का कवि सम्मान करना चाहता है और उसे उसकी खोई प्रतिष्ठा फिर से स्थापित करने हेतु कवि उस पर गीत गाना चाहता है।

- **चूसकर श्रम ..... आह्वान उसका आज कर लूँ। उस कृषक का गान कर लूँ।**

कवि कहते हैं कि लोग किसान द्वारा निर्मित खून-पसीने की अनाज रूपी कमाई का शोषण करके अपना विलासिता पूर्ण जीवन जीते हैं। ईश्वर ने भी किसान पर अन्याय ही किया है। ईश्वर ने उसके लिए धूप और छाया एक जैसी ही बनाई है। अर्थात किसान दिन-रात खेत में काम करता रहता है। इसलिए कवि मानवता का ध्वज हाथ में लेकर किसान का आह्वान कर रहा है। वह किसान का खोया हुआ सम्मान उसे वापस दिलाना चाहता है और इसलिए कवि उस पर गीत गाना चाहता है।

- **विश्व का पालक ..... नव सृष्टि का निर्माण कर लूँ। उस कृषक का गान कर लूँ।**

किसान संसार के लिए अनाज पैदा करता है। उसी से सभी का निर्वाह हो रहा है, इसलिए वही हमारा अन्नदाता व पालक है। किंतु दुनिया उसके साथ कृतघ्नता से पेश आती है। वह अपने ही द्वारा पाले गए लोगों के पैरों तले रौंदा और कुचला जा रहा है। इसलिए कवि उससे हाथ मिलाकर ऐसी नई सृष्टि का निर्माण करना चाहता है, जिसमें उसे सम्मान व प्रतिष्ठा मिले। इसलिए कवि उस पर आधारित गीत गाना चाहता है।

- **क्षीण निज बलहीन ..... मैं आज उसका ध्यान कर लूँ। उस कृषक का गान कर लूँ।**

किसान भले ही देश के लिए अनाज पैदा करता है, लेकिन आज उसके ही घर में खाने को अनाज नहीं है। इस कारण उसका शरीर दुर्बल एवं निस्तेज हो गया है। अपने दुर्बल और निस्तेज तन को ढँकने के लिए उसके पास वस्त्र भी नहीं है। वह फटे-पुराने वस्त्र पहनकर या पेड़ की बड़ी पत्तियों से अपने शरीर को ढँक कर काम चला रहा है। किसान अपना खून-पसीना बहाकर बंजर जमीन को भी उपजाऊ बना देता है। कवि को दुनिया में अच्छे-बुरे लोगों से कोई सरोकार नहीं है। वह सिर्फ किसानों की बात और उनका ध्यान करना चाहता है, इसलिए वह उसके गीत गाना चाहता है।

- **यंत्रवत जीवित बना है ..... नीड़ का निर्माण कर लूँ। उस कृषक का गान कर लूँ।**

आज का युग विज्ञान एवं तकनीक का युग है। बिना यंत्रों के मानव जीवित नहीं रह सकता है। आज के इस युग में सभी लोग अपने-अपने अधिकारों की माँग कर रहे हैं। लेकिन हमारा दुर्भाग्य यह है कि आज भी हमारे देश में किसान का बुरा हाल है। किसान की दुर्दशा के कारण ही आज हमारी मानवता पीड़ित है। इस कारण आज हम जीत कर भी हार गए है अर्थात हमने बहुत प्रगति कर ली है। वास्तव में इस प्रगति का मानवता को कोई लाभ नहीं हुआ। इसलिए कवि प्रत्येक किसान को अपने साथ एकत्रित करके ऐसे घोंसले का निर्माण करना चाहता है, जिसमें किसान का भविष्य उज्ज्वल हो; उसे खोया हुआ मान-सम्मान व प्रतिष्ठा फिर से प्राप्त हो।

## MASTER KEY QUESTION SET - 11

**प्रश्न १ (अ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति अ (१): आकलन कृति**

***(१) समझकर लिखिए।**

**(i) दीनता इसका अभिमान है -**

**उत्तर: कृषक का**

**(ii) इसका आह्वान कर रहा है कवि -**

**उत्तर: कृषक का**

*पद्यांश: १ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ४९*

हाथ में संतोष की तलवार ले जो उड़ रहा है,
जगत में मधुमास, उसपर सदा पतझर रहा है,
दीनता अभिमान जिसका, आज उसपर मान कर लूँ।
उस कृषक का गान कर लूँ।।

चूसकर श्रम रक्त जिसका, जगत में मधुरस बनाया,
एक-सी जिसको बनाई, सृजक ने भी धूप-छाया,
मनुजता के ध्वज तले, आह्वान उसका आज कर लूँ।
उस कृषक का गान कर लूँ।।

### कृति अ (२): आकलन कृति

(१) कृति पूर्ण कीजिए।

*(i)

*(ii)

(२) निम्नलिखित विधान सत्य है या असत्य लिखिए।

(i) कवि किसान का उत्थान करना चाहता है।

(ii) कवि किसान की दीनता पर व्यंग्य करता है।

उत्तर: (i) सत्य (ii) असत्य

### कृति अ (३): भावार्थ

(१) निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।

*(i) हाथ में संतोष की ..... आज उस पर मान कर लूँ। उस कृषक का गान कर लूँ।

उत्तर: कवि दिनेश भारद्वाज कहते हैं कि किसान हमारे देश का अन्नदाता है। उसके हाथ में संतोष की तलवार है यानी प्रतिकूल परिस्थिति में भी वह संतुष्ट रहता है। दुनिया में सर्वत्र संपन्नता होती है, लेकिन किसान हमेशा पतझड़ की छाया में ही अपना जीवन-यापन करता है हमेशा दुखी ही होता है, परंतु उसकी दीनता भी अभिमान के समान है। इसलिए ऐसे स्वाभिमानी किसान का हमें सम्मान करना चाहिए। उसकी खोई प्रतिष्ठा फिर से स्थापित करने हेतु कवि उस पर गीत गाना चाहता है।

(ii) चूसकर श्रम ..... आह्वान उसका आज कर लूँ। उस कृषक का गान कर लूँ।

उत्तर: लोग किसान द्वारा निर्मित खून-पसीने की अनाज रूपी कमाई का शोषण करके विलासतापूर्वक जीवन जीते हैं। ईश्वर ने भी किसान पर अन्याय ही किया है। ईश्वर ने उसके लिए धूप और छाया एक जैसी ही बनाई है। अर्थात किसान दिन-रात खेत में काम करता रहता है। इसलिए कवि मानवता का ध्वज हाथ में लेकर किसान का आह्वान कर रहा है। वह किसान का खोया हुआ सम्मान उसे वापस दिलाना चाहता है और इसलिए उस पर गीत गाना चाहता है।

## प्रश्न २ (आ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति आ (१):आकलन कृति

(१) उत्तर लिखिए।

*(i)

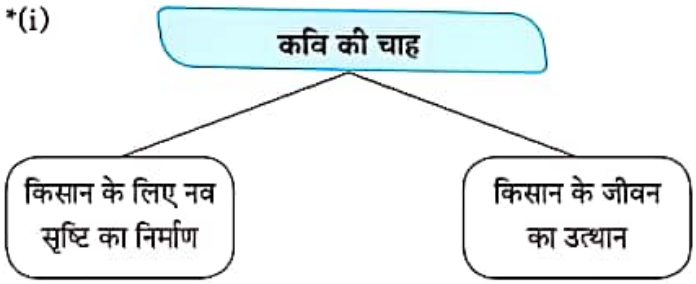


*(२) वाक्य पूर्ण कीजिए।

(i) कृषक कमजोर शरीर को....

उत्तर: पेड़ की पत्तियों से ढँकता है।

(ii) कृषक बंजर जमीन को....

उत्तर: खून-पसीने से उपजाऊ बनाता है।

*पद्यांश: २ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ४९*

विश्व का पालक बन जो, अमर उसको कर रहा है,
किंतु अपने पालितों के, पद दलित हो मर रहा है,
आज उससे कर मिला, नव सृष्टि का निर्माण कर लूँ।
उस कृषक का गान कर लूँ।।

क्षीण निज बलहीन तन को, पत्तियों से पालता जो,
ऊसरों को खून से निज, उर्वरा कर डालता जो,
छोड़ सारे सुर-असुर, मैं आज उसका ध्यान कर लूँ।
उस कृषक का गान कर लूँ।।

यंत्रवत जीवित बना है, माँगते अधिकार सारे,
रो रही पीड़ित मनुजता, आज अपनी जीत हारे,
जोड़कर कण-कण उसी के, नीड़ का निर्माण कर लूँ।
उस कृषक का गान कर लूँ।।

### कृति आ (२):आकलन कृति

(१) निम्नलिखित वाक्यों को सही करके फिर से लिखिए।

(i) कवि सुर-असुर/किसान का ध्यान करता है।

उत्तर: कवि किसान का ध्यान करता है।

(ii) आज मानवता हँस/रो रही है।

उत्तर: आज मानवता रो रही है।

(२) ऐसे प्रश्न बनाइए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों -

(i) अधिकार (ii) पीड़ित

उत्तर: (i) यंत्रयुग में सभी क्या माँग रहे हैं?

(ii) यंत्रयुग में मानवता किस स्थिति में है?

### कृति आ (३): भावार्थ

(१) निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।

(i) विश्व का पालक ..... नव सृष्टि का निर्माण कर लूँ। उस कृषक का गान कर लूँ।

उत्तर: कवि दिनेश भारद्वाज जी कहते हैं कि किसान संसार के लिए अनाज पैदा करता है। उसी से सभी का निर्वाह हो रहा है,

इसलिए वही हमारा अन्नदाता व पालक है। किंतु दुनिया उसके साथ कृतघ्नता से पेश आती है। वह अपने ही पालितों के पैरों तले रौंदा और कुचला जा रहा है। इसलिए कवि उससे हाथ मिलाकर ऐसी नई सृष्टि का निर्माण करना चाहता है, जिसमें उसे सम्मान व प्रतिष्ठा मिले।

(ii) **यंत्रवत जीवित बना है ..... नीड़ का निर्माण कर लूँ। उस कृषक का गान कर लूँ।**

उत्तर: कवि दिनेश भारद्वाज कहते हैं कि आज का युग विज्ञान एवं तकनीकी का युग है। बिना यंत्रों के मानव जीवित नहीं रह सकता है। आज के इस युग में सभी लोग अपने-अपने अधिकारों की माँग कर रहे हैं। लेकिन हमारा दुर्भाग्य यह है कि आज भी हमारे देश में किसान का बुरा हाल है। इस कारण आज हम जीत कर भी हार गए हैं, अर्थात आज हमने बहुत प्रगति कर ली है; पर इस प्रगति का मानवता को कोई लाभ नहीं हुआ। किसान की दुर्दशा के कारण हमारी मानवता पीड़ित है। इसलिए कवि प्रत्येक किसान को अपने साथ एकत्रित करके ऐसे घोंसले का निर्माण करना चाहता है, जिसमें किसान का भविष्य उज्ज्वल हो; उसे खोया हुआ मान-सम्मान व प्रतिष्ठा फिर से प्राप्त हो।

## स्वाध्याय विषयक कृतियाँ

***(१) निम्नलिखित पंक्तियों में कवि के मन में कृषक के प्रति जागृत होने वाले भाव लिखिए।**

| क | पंक्ति | भाव |
|---|---|---|
| (१) | आज उसपर मान कर लूँ | गर्व की भावना |
| (२) | आह्वान उसका आज कर लूँ | जोश की भावना |
| (३) | नव सृष्टि का निर्माण कर लूँ | आवेश व उमंग की भावना |
| (४) | आज उसका ध्यान कर लूँ | चिंता की भावना |

***(२) कविता में आए इन शब्दों के लिए प्रयुक्त शब्द हैं:**

(i) निर्माता (ii) शरीर

(iii) राक्षस (iv) मानव

उत्तर: (i) सृजक (ii) तन (iii) असुर (iv) मनुज

## पद्य-विश्लेषण

***(३) निम्न मुद्दों के आधार पर पद्य-विश्लेषण कीजिए:**

(i) रचनाकार कवि का नाम (ii) रचना का प्रकार (iii) पसंदीदा पंक्ति (iv) पसंदीदा होने का कारण (iv) रचना से प्राप्त प्रेरणा

उत्तर:

(i) **रचनाकार कवि का नाम** - कवि दिनेश भारद्वाज

(ii) **रचना का प्रकार** - आधुनिक सामाजिक काव्य

(iii) **पसंदीदा पंक्ति** - क्षीण निज बलहीन..... उर्वरा कर डालता जो। (विद्यार्थी अपनी पसंदीदा काव्य पंक्ति लिख सकते हैं।)

(iv) **पसंदीदा होने का कारण** - उपर्युक्त पंक्ति में किसान की दुर्दशा का वर्णन किया गया है। परिस्थिति प्रतिकूल होने के बावजूद भी किसान कड़ी मेहनत करता है और बंजर जमीन को उपजाऊ बनाता है। अर्थात प्रतिकूल परिस्थिति में भी वह हिम्मत नहीं हारता बल्कि संघर्ष करता रहता है। इसलिए यह पंक्ति मुझे बेहद पसंद है।

(v) **रचना से प्राप्त प्रेरणा** - किसान हमारे देश का अन्नदाता है, परंतु आज वह जीवन की मूलभूत सुविधाओं से वंचित है। हमारा यह कर्तव्य है कि हम सब भारतीय एकत्रित होकर किसान को उसका खोया सम्मान एवं प्रतिष्ठा स्थापित करके रचनात्मकता की ओर एक अभियान चलाएँ।

❖❖❖

| समय : २ घंटे | नमूना अभ्यास प्रश्नपत्र-१ (पहली इकाई-पाठ १ से ११) | पूर्णांक : ४० |
|---|---|---|

विभाग १ – गद्य

**प्रश्न १ (अ) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।** (८)

**कृति अ (१) : आकलन कृति** (२)

(१) आकृति पूर्ण कीजिए।

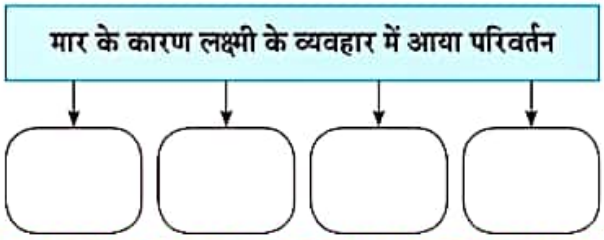


उस दिन लड़के ने तैश में आकर लक्ष्मी की पीठ पर चार डंडे बरसा दिए थे। वह बड़ी भयभीत और घबराई थी। जो भी उसके पास जाता, सिर हिला उसे मारने की कोशिश करती या फिर उछलती-कूदती, गले की रस्सी तोड़कर खूँटे से आजाद होने का प्रयास करती।

करामत अली इधर दो-चार दिनों से अस्वस्थ था। लेकिन जब उसने यह सुना कि रहमान ने गाय की पीठ पर डंडे बरसाए हैं, तो उससे रहा नहीं गया। वह किसी प्रकार चारपाई से उठकर धीरे-धीरे चलकर बथान में आया। आगे बढ़कर उसके माथे पर हाथ फेरा, पुचकारा और हौले-से उसकी पीठ पर हाथ फेरा। लक्ष्मी के शरीर में एक सिहरन-सी दौड़ गई।

"ओह ! कंबख्त ने कितनी बेदर्दी से पीटा है।"

उसकी बीबी रमजानी बोली- "लो, चोट की जगह पर यह रोगन लगा दो। बेचारी को आराम मिलेगा।"

करामत अली गुस्से में बोला- "क्या अच्छा हो अगर इसी लाठी से तुम्हारे रहमान के दोनों हाथ तोड़ दिए जाएँ। कहीं इस तरह पीटा जाता है?"

रमजानी बोली- "लक्ष्मी ने आज भी दूध नहीं दिया।"

"तो उसकी सजा इसे लाठियों से दी गई?"

"रहमान से गलती हो गई, इसे वह भी कबूलता है।"

रमजानी कुछ क्षण खड़ी रही फिर वहाँ से हटती हुई बोली- "देखो, अपना ख्याल रखो। पाँव इधर-उधर गया तो कमर सिंकवाते रहोगे।"

करामत अली ने फिर प्यार से लक्ष्मी की पीठ सहलाई। मुँह-ही-मुँह में बड़बड़ाया- "माफ कर लक्ष्मी, रहमान बड़ा मूर्ख है। उम्र के साथ तू भी बुढ़ा गई है। डेयरीफार्म के डॉक्टर ने तो पिछली बार ही कह दिया था, यह तेरा आखिरी बरस है।"

**कृति अ (२) : आकलन कृति** (२)

(१) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -

(i) रोगन (ii) रहमान

**कृति अ (३) : शब्द संपदा** (२)

(१) लिंग बदलिए।

(i) गाय (ii) मियाँ

(२) निम्नलिखित शब्दों का वचन परिवर्तन कीजिए।

(i) डंडा (ii) चारपाई

**कृति अ (४) : स्वमत अभिव्यक्ति** (२)

(१) 'प्राणियों के प्रति दयाभाव रखना मानवता है।' कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।

## विभाग २ – पद्य

**प्रश्न २ (अ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।** (१२)

**कृति अ (१): आकलन कृति** (२)

(१)

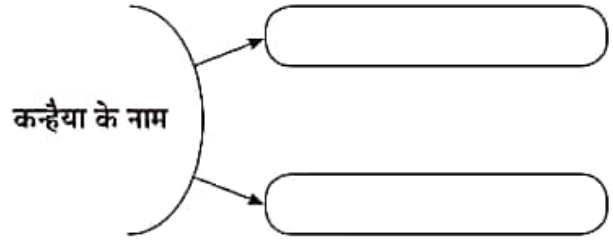


(२) **एक शब्द में उत्तर लिखिए।**

(i) मीरा इनके साथ बैठती है - .....

(ii) मीरा ने कृष्ण के लिए इनका त्याग किया - .....

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई
जाके सिर मोर मुकट, मेरो पति सोई
छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई ?
संतन ढिग बैठि-बैठि, लोक लाज खोई।
अँसुवन जल सींचि-सींचि प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेल फैल गई आणँद फल होई।।
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से बिलोई।
माखन जब काढ़ि लियो छाछ पिये कोई।।
भगत देखि राजी हुई जगत देखि रोई।
दासी 'मीरा' लाल गिरिधर तारो अब मोही।।

**कृति अ (२): आकलन कृति** (२)

(i)

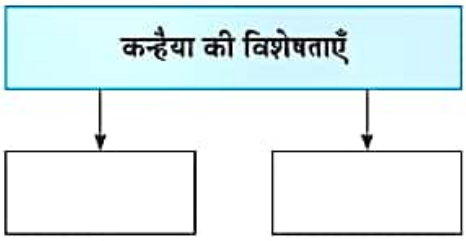


(ii)

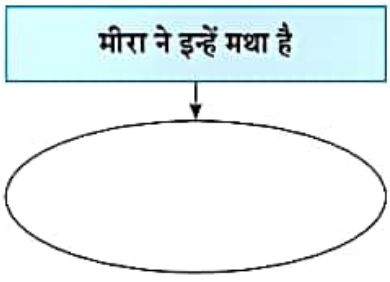


**कृति अ (३): सरल भावार्थ** (२)

(१) **निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।**

(i) मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई
जाके सिर मोर मुकट, मेरो पति सोई
छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई ?
संतन ढिग बैठि-बैठि, लोक लाज खोई।

**प्रश्न २ (आ) निम्नलिखित दो पठित कविताओं में से किसी एक कविता का पद्य-विश्लेषण नीचे दिए गए बिंदुओं के आधार पर कीजिए।** (६)

(१) भारत महिमा (२) कृषक का गान

(i) रचनाकार का नाम (ii) रचना का प्रकार (iii) पसंदीदा पंक्ति

(iv) पसंदीदा होने का कारण (v) रचना से प्राप्त संदेश

## विभाग ३ – पूरक पठन

**प्रश्न ३ (अ) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।** (४)

**कृति अ (१) : आकलन कृति** (२)

(१) संजाल पूर्ण कीजिए

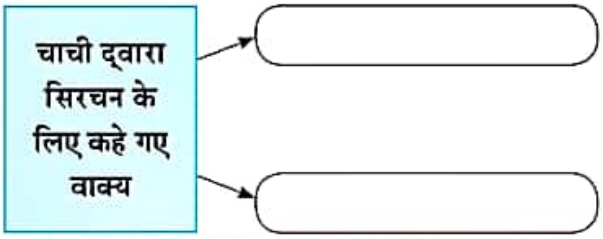


चाची कई कारणों से जली-भुनी रहती थी सिरचन से। गुस्सा उतारने का ऐसा मौका फिर नहीं मिल सकता। झनकती हुई बोली, "तुम्हारी बढ़ी हुई जीभ में आग लगे। घर में भी पान और गमकौआ जर्दा खाते हो?... चटोर कहीं के!" मेरा कलेजा धड़क उठा... हो गया सत्यानाश!

बस, सिरचन की उँगलियों में सुतली के फंदे पड़ गए। मानो, कुछ देर तक वह चुपचाप बैठा पान को मुँह में घुलाता रहा फिर अचानक उठकर पिछवाड़े पीक थूक आया। अपनी छुरी, हँसिया वगैरह समेट-सँभालकर झोले में रखे। टँगी हुई अधूरी चिक पर एक निगाह डाली और हनहनाता हुआ आँगन से बाहर निकल गया।

मानू कुछ नहीं बोली। चुपचाप अधूरी चिक को देखती रही।...सातों तारे मंद पड़ गए।

माँ बोली, "जाने दे बेटी! जी छोटा मत कर मानू! मेले से खरीदकर भेज दूँगी।"

मैं सिरचन को मनाने गया। देखा, एक फटी हुई शीतलपाटी पर लेटकर वह कुछ सोच रहा है। मुझे देखते ही बोला, "बबुआ जी! अब नहीं। कान पकड़ता हूँ, अब नहीं।... मोहर छापवाली धोती लेकर क्या करूँगा। कौन पहनेगा?... ससुरी खुद मरी, बेटे-बेटियों को ले गई अपने साथ। बबुआ जी, मेरी घरवाली जिंदा रहती तो मैं ऐसी दुर्दशा भोगता? यह शीतलपाटी उसी की बुनी हुई है। इस शीतलपाटी को छूकर कहता हूँ, अब यह काम नहीं करूँगा।... गाँव भर में तुम्हारी हवेली में मेरी कदर होती थी। अब क्या?" मैं चुपचाप वापस लौट आया। समझ गया, कलाकार के दिल में ठेस लगी है। वह नहीं आ सकता।

**कृति अ (२) : स्वमत अभिव्यक्ति** (२)

(१) 'कला और कलाकार का सम्मान करना हमारा दायित्व है।' कथन पर अपने विचार लिखिए।

## विभाग ४ - भाषा अध्ययन (व्याकरण)

**प्रश्न (४) भाषा अध्ययन विषयक प्रश्न** (८)

**(१) निम्नलिखित रेखांकित शब्दों के भेद लिखिए।** (१)

(i) गाय बहुत दूध देती है।

**(२) (अ) निम्नलिखित वाक्य में से अव्यय पहचानिए।** (१)

(i) अरे! गऊशाला यहाँ से दो किलोमीटर दूर है।

**(आ) निम्नलिखित अव्यय का वाक्य में प्रयोग कीजिए।** (१)

(i) यदि ... तो

**(३) काल परिवर्तन कीजिए।** (१)

(i) अली घर से बाहर चला जाता है। (सामान्य भूतकाल)

**(४) निम्नलिखित शब्द का संधि-विच्छेद कीजिए।** (१)

(i) दिग्गज

**(५) निम्नलिखित वाक्यों के भेद पहचानकर लिखिए।** (१)

(i) मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जा रहा था।

(ii) इन्हें मरीज से हमदर्दी नहीं होती, ये सिर्फ सूरत दिखाने आते हैं।

**(६) निम्नलिखित वाक्यों में से सहायक क्रिया पहचानकर लिखिए।** (१)

(i) टैक्सी एक पतली-सी सड़क पर दौड़ पड़ी।

(ii) इधर बच्चे रेत का घर बनाने लगे।

**(७) निम्नलिखित वाक्य में से कारक पहचानिए।** (१)

(i) हमारे अंदर की दुनिया बाहर की दुनिया से कहीं ज्यादा बड़ी है।

## विभाग ५ – उपयोजित लेखन

### प्रश्न ५ पत्रलेखन/गद्य आकलन (४)

**(१) निम्नलिखित पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए।**

विजय/विजया मोहिते, वरदा सोसायटी, विजयनगर, कोल्हापुर से व्यवस्थापक, औषधि भंडार, नागपुर को पत्र लिखकर आयुर्वेदिक औषधियों की माँग करता/करती है।

**अथवा**

**निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर एक वाक्य में हो।**

मनुष्य जहाँ जन्म लेता है, वहाँ की धूल में खेलकर बड़ा होता हैं। वहाँ से उसे स्वाभाविक प्रेम हो जाता है। वहाँ के सभी लोग उसके जाने-पहचाने हो जाते हैं। लगभग सभी उसके समान भाषा बोलते हैं और सभी का रहन-सहन एक-सा होता है। ऐसी दशा में वहाँ के लोगों से उसकी ममता का होना स्वाभाविक है। मनुष्य चाहे कितने भी अच्छे स्थान पर क्यों न रहने लगे, उसका मन जन्मभूमि में पहुँचने को उत्सुक रहता है। जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है। जिस देश में हमने जन्म लिया है, जिसके अन्न, जल और वायु से हमारा पालन हुआ है, उसके प्रति प्रेम की भावना रखना हमारा कर्तव्य है। देश की उन्नति में ही हमारी उन्नति है। यदि देश गिरी दशा में होगा तो न हम अधिक दिन संपन्न रह सकते हैं और न हमारा मान हो सकता है। देश के प्रति सबको ममता की भावना रखनी चाहिए।

### प्रश्न (६) विज्ञापन लेखन/वृत्तांत लेखन (४)

(१) 'पुस्तक मेले' का विज्ञापन तैयार कीजिए।

**अथवा**

अपनी पाठशाला में मनाए गए 'विज्ञान प्रदर्शनी' का वृत्तांत ६० से ८० शब्दों में लिखिए।

❖❖❖

# दूसरी इकाई

## १ बरषहिं जलद

*- गोस्वामी तुलसीदास (१५११ -१६२३)*

### कवि-परिचय

**जीवन-परिचय** : गोस्वामी तुलसीदास भारतीय साहित्य के महान कवि थे। वे राम भक्त थे। श्री राम उनके आराध्य थे। अत: उन्होंने अपने साहित्य में श्री राम एवं उनकी लीलाओं का अद्‌भुत वर्णन किया है। उन्हें महर्षि वाल्मीकि का अवतार भी माना जाता है। रामचरितमानस उनकी अनमोल रचना है, जो भारतवर्ष की एक सांस्कृतिक धरोहर है। उनकी माता का नाम हुलसी था। इसी परिप्रेक्ष्य में कहा गया है: 'गोद लिए हुलसी फिरें, तुलसी सो सुत होय।'

**प्रमुख कृतियाँ** : 'रामचरितमानस' (महाकाव्य), 'कवितावली', 'विनय पत्रिका', 'गीतावली', 'दोहावली', 'हनुमान बाहुक', 'बरवै रामायण' 'जानकी मंगल' आदि।

### पद्य-परिचय

**दोहा** : दोहा अर्धसम मात्रिक छंद है जिसमें चार चरण होते हैं। विषम चरण यानी प्रथम और तृतीय चरण में १३-१३ मात्राएँ तथा सम चरण यानी द्‌वितीय और चतुर्थ चरण में ११-११ मात्राएँ होती हैं। सम चरणों के अंत में एक गुरू और एक लघु मात्रा का होना आवश्यक होता है।

**चौपाई** : चौपाई मात्रिक सम छंद का एक प्रकार है। चौपाई में चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में १६-१६ मात्राएँ होती हैं और अंत में गुरू होता है।

**प्रस्तावना** : प्रस्तुत पद्‌यांश के द्‌वारा कवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने ऋष्यमूक पर्वत की सुंदर एवं मनोहारी प्रकृति का अद्‌भुत वर्णन करते हुए सद्‌गुण एवं सुराज्य के महत्त्व को प्रतिपादित किया है। कवि ने मोह, मद व कुसंग का त्याग करके सुसंग को अपनाने का संदेश दिया है।

### सारांश

'बरषहिं जलद' यह रचना रामचरितमानस का एक अंश है। रामचरितमानस के किष्किंधा कांड से यह रचना ली गई है। वर्षा का समय है। प्रकृति वर्षा के स्वागत के लिए उत्सुक है। ऐसे में श्री राम को सीता जी याद आ जाती है। सीता जी के बिना उनका मन भयभीत हो उठता है। प्रकृति का सुंदर वर्णन करते हुए उन्होंने पहाड़, लहराती खेती, जुगनू, नदियाँ, धरती, वृक्ष आदि का मनोहारी वर्णन किया है। उन्होंने व्यक्ति को सुसंग व सुराज्य के महत्त्व से परिचित कराया है। व्यक्ति को मद, मोह व कुसंग का त्याग करना चाहिए और उत्तम धर्म का आचरण करना चाहिए, यह सीख दी है।

### शब्दार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| घोरा | - भयंकर | लपटानी | - लिपटना |
| डरपत | - डरना | महुँ | - में |
| खल | - दुष्ट व्यक्ति | जिमि | - जैसे |
| कै | - की | दादुर | - मेंढक |
| जथा | - जिस प्रकार | बटु | - छात्र समुदाय |
| थिर | - स्थिर | बिटप | - वृक्ष |
| निअराई | - पास आकर | साधक | - भक्त |
| नवहि | - झुकना, नम्र होना | अर्क | - मंदार का वृक्ष |
| बुध | - विद्‌वान | उद्‌धम | - उद्‌यम, उद्‌योग |
| तोराई | - तोड़कर | गयउ | - चला जाना |
| ढाबर | - मटमैला | कतहूँ | - कहीं पर भी |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ससि | - लहराती हुई खेती | चकबाक | - एक पक्षी |
| सोह | - सुंदर एवं सुहावनी | संकुल | - विविध प्रकार के जीवों से भरी धरती |
| खद्योत | - जुगनू | मारूत | - वायु |
| दंभिन्ह | - दंभियों का समाज | नसाहिं | - नष्ट हो जाना |
| निरावहिं | - खेत से अनुपयुक्त घास आदि चीजें निकालना, निराना | निबिड़ | - घोर |
| | | बिनसइ | - नष्ट होना |
| तजहिं | - त्याग करना | भ्राजा | - शोभायमान होना |
| मोह व मद | - दुर्गुण | पतंग | - सूर्य |

## भावार्थ

**चौपाई : घन घमंड नभ गरजत ..... जिव हरि पाई।।**

श्री राम-लक्ष्मण, सीता जी की खोज में इधर-उधर भटक रहे हैं। वर्षा ऋतु प्रारंभ हो गई है। ऐसे में श्री राम अपने भाई लक्ष्मण से कहते हैं-

''हे लक्ष्मण! देखो, आकाश में बादल बड़े अभिमान के साथ घुमड़-घुमड़कर घोर गर्जना कर रहे हैं, प्रियतमा सीता के बिना मेरा मन बहुत डर रहा है। बिजली की चमक बादलों में रह-रहकर हो रही है, वह ठहरती ही नहीं है ठीक उसी प्रकार जैसे दुष्ट की प्रीति कभी स्थिर नहीं रहती।''

''आसमान में छाए हुए बादल धरती के पास आकर ऐसे बरस रहे हैं, जैसे विद्या पाकर विद्वान नम्र हो जाते हैं। पहाड़ बूँदों की चोट को ऐसे सह रहे हैं जैसे दुष्टों के वचनों को संत सहा करते हैं।''

''तेज वर्षा के कारण छोटी नदियाँ भर गई हैं। वे अपने किनारों को इस प्रकार तोड़ते हुए बह चली हैं जैसे थोड़ा-सा धन पाकर दुष्ट लोग अभिमानी हो जाते हैं और अपनी मर्यादा त्याग देते हैं। बरसात का शुद्ध पानी धरती पर पड़ते ही इस प्रकार गँदला (मलिन) हो गया है जैसे पवित्र व शुद्ध जीव माया के फंदे में पड़ते ही मलिन हो जाता है।''

''धरती पर गिरा बरसात का पानी इकट्ठा होकर तालाबों में ऐसे भर रहा है जैसे सद्गुण आहिस्ता-आहिस्ता सज्जन व्यक्ति के पास चले जाते हैं। नदी का जल सागर में जाकर वैसे ही स्थिर हो जाता है; जैसे जीव ईश्वर को पाकर अचल हो जाता है अर्थात जीवन-मृत्यु के आवागमन से मुक्त हो जाता है।''

**दोहा : हरित भूमि ..... लुप्त होहिं सदग्रंथ।।**

''जैसे पाखंड के प्रचार से सद्ग्रंथ लुप्त हो जाते हैं वैसे ही वर्षा ऋतु में धरती घास में पूर्णत: ढँककर लुप्त हो गई है अर्थात हरी-भरी हो गई है, जिससे रास्ते समझ में नहीं आ रहे हैं।''

**चौपाई : दादुर धुनि ..... उपजे ग्याना।।**

श्रीराम लक्ष्मण से कह रहे हैं, ''चारों दिशाओं में मेंढ़कों की ध्वनि ऐसी सुहावनी लगती है, जैसे विद्यार्थियों के समुदाय वेद पाठ कर रहे हों। कई वृक्षों पर नए पत्ते आने से वे ऐसे हरे-भरे व सुंदर हो गए हैं, जैसे किसी साधक या भक्त का मन ज्ञान प्राप्त होने पर हो जाता है।''

''मदार व जवास नाम के पेड़ पर्णहीन हो गए हैं (उनके पत्ते झड़ गए है।) जैसे सुराज्य में दुष्टों का उद्यम या व्यवसाय चला जाता है अर्थात सुराज्य में दुष्टों की एक भी नहीं चलती है। वर्षा के कारण धूल वैसे ही कहीं खोजने पर भी नहीं मिलती।'' जैसे क्रोध धर्म को दूर कर देता है अर्थात क्रोध का आवेश होने पर धर्म का ज्ञान नहीं रह जाता।''

''लहराती हुई खेती से हरी-भरी धरती इस प्रकार शोभित हो रही है, जैसे उपकारी पुरुष की संपत्ति सुशोभित होती है। रात के घने अंधकार में जुगनू अधिक शोभा पा रहा मानो दंभियों का समाज आ जुटा हो।''

''वर्षा शुरू होने के कारण चतुर किसान खेतों से घास आदि अनुपयुक्त चीजें निकालकर फेंक रहे हैं, जैसे विद्वान लोग मद, मोह व मान का त्याग कर देते हैं। कहीं भी चक्रवाक पक्षी दिखाई नहीं दे रहे हैं, जैसे कलियुग को पाकर धर्म भाग जाते हैं।''

''धरती कई तरह के जीवों से भरी हुई उसी प्रकार शोभायमान है; जैसे सुराज्य पाकर प्रजा की वृद्धि होती है। जहाँ-तहाँ अनेक पथिक थककर ठहरे हुए हैं, जैसे ज्ञान उत्पन्न होने पर इंद्रियाँ शिथिल होकर विषयों की ओर जाना छोड़ देती हैं।''

**दोहा: कबहुँ प्रबल ..... कुसंग-सुसंग।**

''वर्षा ऋतु में कभी-कभी वायु बड़े जोर से चलने लगती है; जिसके कारण बादल जहाँ-जहाँ गायब हो जाते हैं। जैसे कुल में कुपुत्र के पैदा होने से परिवार के उत्तम धर्म यानी अच्छे आचरण नष्ट हो जाते हैं। कभी-कभी आसमान में छाए बादलों के कारण दिन में ही घोर अंधकार छा जाता है और फिर अचानक से आसमान में सूर्य दिखाई देता है। जैसे कुसंग पाकर ज्ञान नष्ट हो जाता है और सुसंग पाकर फिर से उत्पन्न हो जाता है।''

## MASTER KEY QUESTION SET - 1

**प्रश्न १ (क) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति क (१): आकलन कृति**

**(१) आकृति पूर्ण कीजिए।**

*(i)

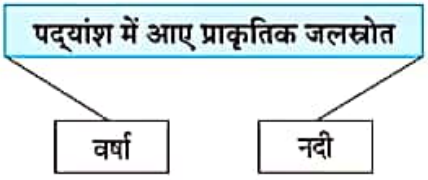


(ii)

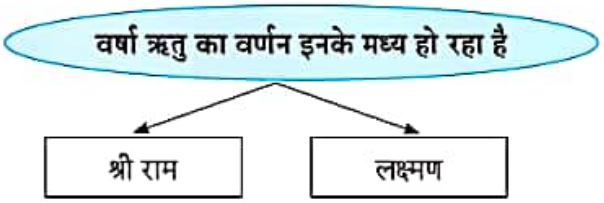


**(२) निम्नलिखित अर्थ को स्पष्ट करने वाली पंक्तियाँ लिखिए।**

***(i) संतों की सहनशीलता .....**

उत्तर: बूँद अघात सहहिं गिरि कैसे। खल के बचन संत सह जैसे।

**(ii) दृष्ट व्यक्ति की प्रीति भी स्थिर नहीं रहती .....**

उत्तर: दामिनि दमक रहहिं घन माही। खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं।

*पद्यांश: १ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ५१*

चौपाई - घन घमंड नभ गरजत घोरा। प्रिया हीन डरपत मन मोरा।।
दामिनि दमक रहहिं घन माहीं। खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं।।
बरषहिं जलद भूमि निअराएँ। जथा नवहिं बुध विद्या पाएँ।।
बूँद अघात सहहिं गिरि कैसे। खल के बचन संत सह जैसे।।
छुद्र नदी भरि चली तोराई। जस थोरेहुँ धन खल इतराई।।
भूमि परत भा ढाबर पानी। जनु जीवहिं माया लपटानी।।
समिटि-समिटि जल भरहिं तलावा। जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा।।
सरिता जल जलनिधि महुँ जाई। होई अचल जिमि जिव हरि पाई।।

**कृति क (२): आकलन कृति**

**(१) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए कि जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

***(i) नदियों (ii) सद्गुण**

उत्तर: (i) किन्होंने अपने किनारों को तोड़ दिया है?
(ii) सज्जन मनुष्य के पास क्या होता है?

**(२) उचित जोड़ियाँ मिलाइए।**

| 'अ' | 'ब' |
|---|---|
| (i) दमकती बिजली | (क) माया से लिपटा जीव |
| (ii) बादलों की गर्जना | (ख) दुष्टों के वचन |
| (iii) चोट सहना | (ग) श्री राम का डरना |
| (iv) भूमि पर गिरा पानी | (घ) दुष्ट की प्रीति |

उत्तर: (i - घ), (ii - ग), (iii - ख), (iv - क)

**(३) तालिका पूर्ण कीजिए।**

| इन्हें | यह कहा है |
|---|---|
| *(i) सज्जनों के सद्गुण | जिमि सद्गुन |
| (ii) सागर | जलनिधि |

**कृति क (३): निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।**

**(१) घन घमंड नभ ..... जथा थिर नाहीं।**

उत्तर: श्री राम-लक्ष्मण, सीता जी की खोज में इधर-उधर भटक रहे हैं। वर्षा ऋतु प्रारंभ हो गई है। ऐसे में श्री राम अपने भाई लक्ष्मण से कहते हैं-

''हे लक्ष्मण! देखो, आकाश में बादल बड़े अभिमान के साथ घुमड़-घुमड़कर घोर गर्जना कर रहे हैं, प्रियतमा सीता के बिना मेरा मन बहुत डर रहा है। बिजली की चमक बादलों में रह-रह कर हो रही है, वह में ठहरती ही नहीं है ठीक उसी प्रकार जैसे दुष्ट की प्रीति कभी स्थिर नहीं रहती।''

**(२) समिटि-समिटि ..... जिव हरि पाई।**

उत्तर: वर्षा ऋतु का समय है। ऐसे में श्री राम लक्ष्मण से कहते हैं, ''हे अनुज, धरती पर गिरा बरसात का पानी इकट्ठा होकर तालाबों में ऐसे भर रहा है जैसे सद्गुण आहिस्ता-आहिस्ता सज्जन व्यक्ति के पास चले जाते हैं। नदी का जल सागर में जाकर वैसे ही स्थिर हो जाता है; जैसे जीव ईश्वर को पाकर अचल व स्थिर हो जाता है। अर्थात जीवन मृत्यु के आवागमन से मुक्त हो जाता है।''

**प्रश्न २ (ख) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति ख (१): आकलन कृति**

**(१) तालिका पूर्ण कीजिए।**

| इन्हें | यह कहा है |
|---|---|
| * वेद पाठ करने वाले छात्रों के समुदाय को | बटु समुदाय |
| भक्त को | साधक |

(२) उचित जोड़ियाँ मिलाइए।

| 'अ' | 'ब' |
|---|---|
| (i) पेड़ों का पर्णहीन होना | (क) दुष्टों की एक न चलना |
| (ii) खोजने पर धूल का न मिलना | (ख) धर्म का ज्ञान न रहना |
| | (ग) साधक मन का विवेक |

उत्तर: (i - क), (ii - ख)

*पद्यांश: २ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ५१*

दोहा - हरित भूमि तृन संकुल, समुझि परहि नहिं पंथ।
जिमि पाखंड बिबाद तें, लुप्त होहिं सदग्रंथ।।

चौपाई - दादुर धुनि चहुँ दिसा सुहाई। बेद बढ़हिं जनु बटु समुदाई।।
नव पल्लव भए बिटप अनेका। साधक मन जस मिले बिबेका।।
अर्क-जवास पात बिनु भयउ। जस सुराज खल उद्यम गयऊ।।
खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरी। करइ क्रोध जिमि धरमहिं दूरी।।
ससि संपन्न सोह महि कैसी। उपकारी कै संपति जैसी।।
निसि तम घन खद्योत बिराजा। जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा।।

## कृति ख (२): आकलन कृति

(१) सही या गलत पहचानकर गलत वाक्य को सही करके फिर से लिखिए।

(i) पाखंड के प्रचार से सद्ग्रंथ/दृष्ट लोग लुप्त हो जाते हैं।

उत्तर: पाखंड के प्रचार से सद्ग्रंथ लुप्त हो जाते हैं।

(ii) रात के घने अंधकार में हरे भरे खेतों का/जुगनुओं का सौंदर्य अधिक आकर्षक दिखता है।

उत्तर: रात के घने अंधकार में जुगनुओं का सौंदर्य अधिक आकर्षक दिखता है।

(२) वाक्य पूर्ण कीजिए।

(i) सुराज्य में दुष्टों की .....

उत्तर: एक भी नहीं चलती है।

(ii) क्रोध का आवेश होने पर .....

उत्तर: धर्म का ज्ञान नहीं रह जाता।

## कृति ख (३): निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।

(१) हरित भूमि ..... लुप्त होहिं सदग्रंथ।

उत्तर: श्री राम लक्ष्मण से कहते हैं, "हे अनुज, जैसे पाखंड के प्रचार से सद्ग्रंथ लुप्त हो जाते हैं वैसे ही वर्षा ऋतु में धरती घास से पूर्णत: ढँककर लुप्त हो गई है अर्थात हरी-भरी हो गई है, जिससे रास्ते समझ में नहीं आ रहे हैं।"

(२) दादुर धुनि ..... मिले बिबेका।

उत्तर: श्रीराम लक्ष्मण से कह रहे हैं, "चारों दिशाओं में मेंढ़कों की ध्वनि ऐसी सुहावनी लगती है, जैसे विद्यार्थियों के समुदाय वेद पाठ कर रहे हों। कई वृक्षों पर नए पत्ते आने से वे ऐसे हरे-भरे व सुंदर हो गए हैं, जैसे किसी साधक या भक्त का मन ज्ञान प्राप्त होने पर हो जाता है।"

## कृति ग (१): आकलन कृति

(१) समझकर लिखिए।

(i) चक्रवाक पक्षी के माध्यम से कवि ने समझाया है कि

उत्तर: जिस प्रकार वर्षा में कहीं भी चक्रवाक पक्षी दिखाई नहीं दे रहे हैं वैसे कलियुग को पाकर धर्म भाग जाते हैं।

(ii) 'वायु के जोर से बहने से बादल गायब हो जाते हैं।' इससे आप यह समझते हैं -

उत्तर: कुल में कुपुत्र के होने से परिवार के उत्तम धर्म यानी अच्छे आचरण नष्ट हो जाते हैं।

(२) ठीक से समझकर वाक्य पूर्ण कीजिए।

(i) ज्ञान उत्पन्न होने पर .....

उत्तर: इंद्रियाँ स्थिर हो जाती हैं।

(ii) वर्षा शुरू होने के कारण चतुर किसान .....

उत्तर: खेतों से घास आदि अनुपयुक्त चीजें निकालकर फेंक देते हैं।

*पद्यांश: ३ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ५१-५२*

चौपाई - कृषी निरावहिं चतुर किसाना। जिमि बुध तजहिं मोह-मद-माना।।
देखिअत चक्रबाक खग नाहीं। कलिहिं पाइ जिमि धर्म पराहीं।।
विविध जंतु संकुल महि भ्राजा। प्रजा बाढ़ जिमि पाई सुराजा।।
जहँ-तहँ रहे पथिक थकि नाना। जिमि इंद्रिय गन उपजे ग्याना।।

दोहा - कबहुँ प्रबल बह मारुत, जहँ-तहँ मेघ बिलाहिं।
जिमि कपूत के उपजे कुल सद्धर्म नसाहिं।।
कबहुँ दिवस महँ निबिड़ तम, कबहुँक प्रगट पतंग।
बिनसइ-उपजइ ग्यान जिमि, पाइ कुसंग-सुसंग।।

## कृति ग (२): आकलन कृति

(१) आकृति पूर्ण कीजिए।

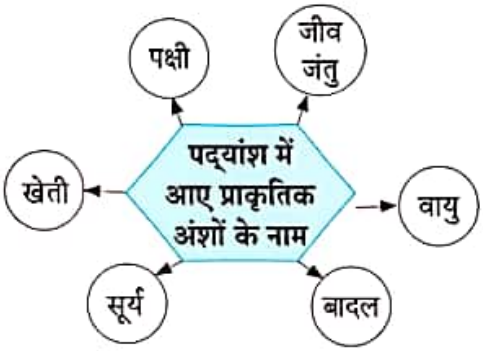


(२) समझकर लिखिए।

(३) निम्नलिखित अर्थ को स्पष्ट करने वाली पंक्तियाँ लिखिए।

*(i) कपूत के कारण कुल की हानि।

उत्तर: जिमि कपूत के उपजे कुल सद्धर्म नसाहिं।

(ii) **कुसंग के कारण ज्ञानी की हानि और सुसंग के कारण ज्ञान की प्राप्ति।**

**उत्तर:** विनसइ-उपजइ ग्यान जिम, पाइ कुसंग-सुसंग।

**कृति ग (३): निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।**

(१) **विविध जंतु ..... उपजे ग्याना।**

**उत्तर:** श्री राम लक्ष्मण से कहते हैं ''हे अनुज, धरती कई तरह के जीवों से भरी हुई उसी तरह शोभायमान है जैसे सुराज्य पाकर जनता की वृद्धि होती है। जिस प्रकार ज्ञान उत्पन्न होने पर इंद्रियाँ शिथिल होकर विषयों की ओर जाना छोड़ देती है। वैसे ही सुराज्य में सर्वत्र पथिक थककर एक जगह पर ठहरे हुए हैं।''

(२) **कबहुँ प्रबल ..... कुसंग सुसंग।**

**उत्तर:** श्री राम लक्ष्मण से कहते हैं, ''हे अनुज, वर्षा ऋतु में कभी-कभी वायु बड़े जोर से चलने लगती है जिसके कारण बादल जहाँ-तहाँ गायब हो जाते हैं। जैसे कुल में कुपुत्र के पैदा होने से परिवार के उत्तम धर्म यानी अच्छे आचरण नष्ट हो जाते हैं। कभी-कभी आसमान में छाए बादलों के कारण दिन में ही घोर अंधकार छा जाता है और फिर अचानक से आसमान में सूर्य दिखाई देता है। जैसे कुसंग पाकर ज्ञान नष्ट हो जाता है और सुसंग पाकर फिर से उत्पन्न हो जाता है।''

## स्वाध्याय विषयक कृतियाँ

*(१) **उचित जोड़ियाँ मिलाइए।**

| 'अ' | | 'ब' | |
|---|---|---|---|
| (i) | दमकती बिजली | (क) | ससि संपन्न पृथ्वी |
| (ii) | नव पल्लव से भरा वृक्ष | (ख) | दुष्ट से मित्रता |
| (iii) | उपकारी की संपत्ति | (ग) | साधक के मन का विवेक |
| (iv) | भूमि की | (घ) | माया से लिपटा जीव |

**उत्तर:** (i - घ), (ii - ग), (iii - क), (iv - ख)

*(२) **इनके लिए पद्यांश में प्रयुक्त शब्द:**

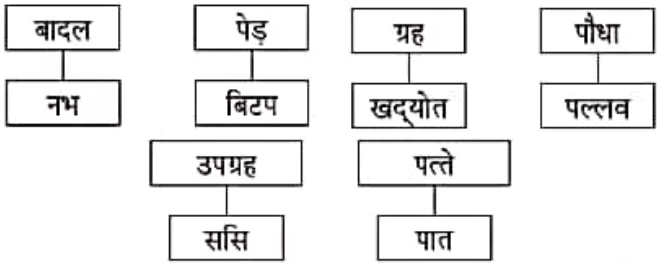


*(३) **प्रस्तुत पद्यांश से अपनी पसंद की किन्हीं चार पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए।**

**चौपाई-** कृषी निरावहिं चतुर किसाना। जिमि बुध तजहिं मोह-मद-माना।।
देखिअत चक्रबाक खग नाहीं। कलिहिं पाइ जिमि धर्म पराहीं।।
विविध जंतु संकुल महि भ्राजा। जिमि बाढ़ जिमि पाई सुराजा।।
जहँ-तहँ रहे पथिक थकि नाना। जिमि इंद्रिय गन उपजे ग्याना।।

**उत्तर:** ''वर्षा शुरू होने के कारण चतुर किसान खेतों से घास आदि अनुपयुक्त चीजें निकालकर फेंक रहे हैं, जैसे विद्वान लोग मद, मोह व मान का त्याग कर देते हैं। कहीं भी चक्रवाक पक्षी दिखाई नहीं दे रहे हैं। ऐसे लग रहा है मानो कलियुग को पाकर धर्म भाग जाते हैं।''

''धरती कई तरह के जीवों से भरी हुई उसी प्रकार शोभायमान हो रही है जैसे सुराज्य पाकर प्रजा की वृद्धि होती है। जिस प्रकार ज्ञान उत्पन्न होने पर इंद्रियाँ शिथिल होकर विषयों की ओर जाना छोड़ देती हैं। वैसे ही सुराज्य में सर्वत्र पथिक थककर एक जगह पर ठहरे हुए हैं।''

## उपयोजित लेखन

* **कहानी लेखन** (१) **'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' इस सुवचन पर आधारित कहानी लेखन कीजिए।**

**उत्तर:** विजयपुर नगर में संजय नाम का एक अमीर जमींदार रहता था। वह बहुत ही दयालु एवं परोपकारी था। यदि लोग उसके पास दान या सहायता के लिए आते तो वह उनकी जरूर से सहायता करता था। उसके द्वार से कोई भी खाली नहीं लौटता था। वह सबकी मदद करता था।

एक दिन उस नगर में एक साधु आया। उसे जमींदार के बारे में लोगों से पता चला कि वह सबकी मदद करता है। इसलिए साधु भी उसके घर गया। साधु को देखते ही संजय ने उसके पाँव छुए और उन्हें बैठने के लिए कहा। उसने बड़े प्यार से साधु का सत्कार किया और उसके खाने का भी प्रबंध करवाया। साधु ने उसके घर में ही अपना डेरा जमाया।

साधु बहुत ही धूर्त व्यक्ति था। उसने संजय को अपने वश में कर लिया और उसकी सारी संपत्ति लिखवा ली। पश्चात उसने संजय को घर से निकाल दिया। संजय अपने परिवार के साथ वहाँ से निकला और जंगल में आकर रहने लगा।

एक दिन उस जंगल में वही साधु शिकार करने आया। एक बाघ का शिकार करते समय वह घायल हो गया। उसे जंगल में खून से लथपथ पड़ा हुआ देखकर संजय ने उसकी मरहम-पट्टी और सेवा की। उसे पता था कि यह वही साधु है; जिसने उसकी सारी संपत्ति हड़प ली थी। फिर भी उसने साधु की सेवा की और उसे मरने से बचाया। आखिर कहा ही गया है: 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई।'

**सीख :** परोपकार से बढ़कर अन्य कोई धर्म नहीं। हमें एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए। हमें किसी के साथ बुरा व्यवहार नहीं करना चाहिए।

❖❖❖

# २ दो लघुकथाएँ

*- नरेंद्र छाबड़ा*

## लेखक-परिचय

**जीवन-परिचय** : आधुनिक हिंदी कहानियाँ एवं लघुकथाएँ लिखने में नरेंद्र छाबड़ा जी का नाम अग्रसर है। आपके द्वारा लिखी गई कहानियाँ एवं लघुकथाएँ विभिन्न पत्र व पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। आपकी लघुकथाएँ पाठकों के हृदय पर गहरा आघात करती हैं व उन्हें सोचने के लिए विवश कर देती हैं।

**प्रमुख कृतियाँ** : 'मेरी चुनिंदा लघुकथाएँ' आदि।

## गद्य-परिचय

**लघुकथा** : लघुकथा हिंदी साहित्य की एक नवीनतम विधा है। लघुकथा कहानी से लघु होती है। भले ही वह आकार में लघु होती है पर वह गागर में सागर भरने का काम करती है। लघुकथा की महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि ये न तो लघुता को छोड़ती है और नहीं कथा को।

**प्रस्तावना** : **कंगाल:** लघुकथा के माध्यम से लेखक नरेंद्र छाबड़ा जी ने अमीर वर्ग की लघु मानसिकता पर करारा व्यंग्य किया है। अमीर वर्ग के लोग बड़े-बड़े होटलों में लाखों रुपए खर्च कर देते हैं पर गरीब दुकानदार से थोड़े से पैसों के लिए झिक-झिक करते हैं।

**सही उत्तर:** इस लघुकथा के माध्यम से लेखक नरेंद्र छाबड़ा जी ने बताया है कि आज हमारे समाज में हर जगह भ्रष्टाचार एवं रिश्वत का बोलबाला है। परंतु अंत में नैतिकता, सच्चाई जैसे गुणों के बल पर मनुष्य को सफलता जरूर मिलती है।

## सारांश

'कंगाल' एक लघुकथा है। भीषण गर्मी पड़ने के कारण लेखक अपने परिवार के साथ पर्वतीय स्थल की यात्रा पर निकल पड़ते हैं। पर्वतीय स्थल पर पहुँचकर वे एक आलिशान होटल में ठहरते हैं। पर्वतीय प्रदेश का प्राकृतिक सौंदर्य एवं वहाँ के हरे-भरे पहाड़ लेखक के मन में आनंद की अनुभूति कराते हैं। एक दिन शाम के वक्त झील किनारे टहलते समय एक भुट्टेवाला भुट्टा बेचने के लिए वहाँ पर आ जाता है। लेखक भुट्टे का दाम पूछते हैं तो वह एक भुट्टे का दाम पाँच रुपए बताता है। लेखक उसे एक भुट्टा तीन रुपए में देने के लिए कहते हैं पर वह मना कर देता है। लेखक अपने परिवार के साथ आगे बढ़ जाते हैं। तब उनके कानों में भुट्टेवाले का तीखा स्वर सुनाई देता है, ''आप अमीर लोग पहाड़ों पर घूमने का शौक रखकर अच्छे होटलों में लाखों रुपया खर्च करोगे पर मुझ जैसे गरीब भुट्टेवाले को दो रुपए देने के लिए झिक-झिक करते हो, कंगाल कहीं के...।''

'सही उत्तर' एक लघुकथा है। आज कई ऐसे युवक हैं, जिनके पास योग्यता होने पर भी नौकरी नहीं मिलती है। लघुकथा में वर्णित युवक भी इसके लिए अपवाद नहीं है। हर जगह भ्रष्टाचार एवं रिश्वत का बोलबाला है। इसलिए उसके पास योग्यता होने पर भी उसे नौकरी नहीं मिलती। उस युवक के पास देशप्रेम व नैतिकता जैसे मानवीय गुण भी हैं। वह एक जगह पर साक्षात्कार के लिए जाता है। वहाँ पर उपस्थित अधिकारी उससे भ्रष्टाचार एवं रिश्वत के बारे में उसकी राय पूछते हैं। युवक के हृदय में भ्रष्टाचार एवं रिश्वत को लेकर जो आंतरिक पीड़ा थी, उसे वह सहज एवं स्पष्ट शब्दों में व्यक्त करता है। वह प्रश्न के सही उत्तर देता है क्योंकि उसने स्वयं इस भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था को बारीकी से देखा है। युवक द्वारा सही उत्तर मिलने पर उपस्थित अधिकारी नौकरी के लिए उसका चयन करते हैं।

## शब्दार्थ

- उमस - हवा बंद होने पर लगने वाली भीषण गर्मी
- यात्रा - सैर
- लू - प्रचंड उष्ण तथा शुष्क हवा
- झील - जल का वह स्थिर भाग जो चारों तरफ स्थलखंडों से घिरा होता है।
- भूनकर - सेंककर
- सहज - सीधा, सरल
- दीर्घता - लंबाई
- भ्रष्टाचार - भ्रष्ट आचार
- पदोन्नति - छोटे पद से बड़े पद पर पहुँचना, तरक्की
- विचार-विमर्श - आपस में किसी विषय पर वार्तालाप
- उत्सुकता - जानने की इच्छा
- स्वरूप - बनावट

| | | | |
|---|---|---|---|
| परिचित | - जाना-पहचाना | कंगाल | - गरीब, निर्धन |
| भीषण | - भयानक | साक्षात्कार | - मुलाकात |
| लिजलिजे | - सीलनभरा | रिश्वत | - घूस |
| नीरवता | - एकांत, एकदम शांत | धारणा | - विचार |

**मुहावरे**

**झिक-झिक करना** - मोल-भाव करना।
**सीना तानकर खड़े रहना** - निर्भय होकर खड़े रहना।
**बोलबाला होना** - प्रभाव होना।
**दाद देना** - प्रशंसा करना।

## MASTER KEY QUESTION SET - 2

**प्रश्न १ (अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति अ (१) : आकलन कृति**

**(१) कारण लिखिए।**

**(i) रातों में भी गर्म लू और उमस से चैन नहीं मिलता था।**

उत्तर: क्योंकि इस वर्ष बड़ी भीषण गर्मी पड़ रही थी।

**(ii) लेखक अगले सप्ताह ही पर्वतीय स्थल की यात्रा पर निकल पड़ा।**

उत्तर: क्योंकि वह लिजलिजे और घुटनभरे मौसम से राहत पाना चाहता था।

**(२) संजाल पूर्ण कीजिए।**

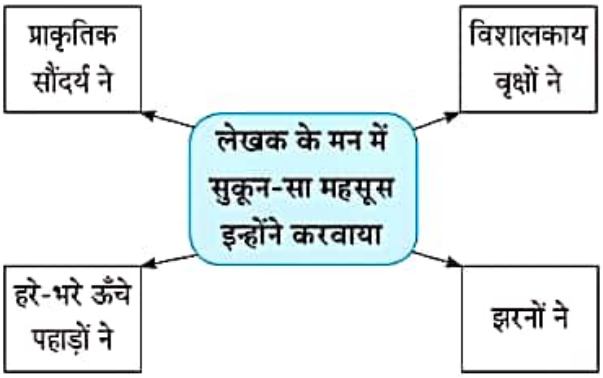


**(३) किसने, किससे कहा?**

**(i) ''पाँच रूपए का।''**

उत्तर: भुट्टेवाले ने लेखक से कहा।

**(ii) ''तो रहने दो...''**

उत्तर: लेखक ने भुट्टेवाले से कहा।

**(iii) ''तुम तीन ले लो।''**

उत्तर: लेखक ने भुट्टेवाले से कहा।

**(४) सत्य या असत्य पहचान कर लिखिए।**

**(i) लेखक झील के किनारे टहल रहे थे।**

**(ii) भुट्टेवाले ने एक भुट्टे का दाम तीन रूपए बताया।**

उत्तर: (i) सत्य (ii) असत्य

*गद्यांश १ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ५४*

इस वर्ष बड़ी भीषण गर्मी पड़ रही थी। दिन तो अंगारे से तपे रहते ही थे, रातों में भी गर्म लू और उमस से चैन नहीं मिलता था। सोचा इस लिजलिजे और घुटनभरे मौसम से राहत पाने के लिए कुछ दिन पहाड़ों पर बिता आएँ।

अगले सप्ताह ही पर्वतीय स्थल की यात्रा पर निकल पड़े। दो-तीन दिनों में ही मन में सुकून-सा महसूस होने लगा था। वहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य, हरे-भरे पहाड़ गर्व से सीना ताने खड़े, दीर्घता सिद्ध करते वृक्ष, पहाड़ों की नीरवता में हल्का-सा शोर कर अपना अस्तित्व सिद्ध करते झरने, मन बदलाव के लिए पर्याप्त थे।

उस दिन शाम के वक्त झील किनारे टहल रहे थे। एक भुट्टेवाला आया और बोला-"साब, भुट्टा लेंगे। गरम-गरम भूनकर मसाला लगाकर दूँगा। सहज ही पूछ लिया- "कितने का है?"

"पाँच रुपये का।"

''क्या? पाँच रुपये में एक भुट्टा। हमारे शहर में तो दो रुपये में एक मिलता है, तुम तीन ले लो।''

"नहीं साब, "पाँच से कम में तो नहीं मिलेगा ..."

"तो रहने दो..." हम आगे बढ़ गए।

एकाएक पैर ठिठक गए और मन में विचार उठा कि हमारे जैसे लोग पहाड़ों पर घूमने का शौक रखते हैं हजारों रुपये खर्च करते हैं, अच्छे होटलों में रुकते हैं जो बड़ी दूकानों में बिना दाम पूछे खर्च करते हैं पर गरीब से दो रुपये के लिए झिक-झिक करते हैं, कितने कंगाल हैं हम! उल्टे कदम लौटा और बीस रुपये में चार भुट्टे खरीदकर चल पड़ा अपनी राह। मन अब सुकून अनुभव कर रहा था।

**कृति अ (२) : स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) 'कुछ व्यक्तियों की धनसंपन्नता भी स्वभाव से कंगाल ही प्रतीत होती है।' परिच्छेद के आधार पर अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: परिच्छेद के आधार पर स्पष्ट है कि प्रत्येक धनसंपन्न व्यक्ति मन से कंगाल नहीं होता। फिर भी आमतौर पर कुछ धनसंपन्न व्यक्ति मन से कंगाल होते हैं। वे स्वयं की ऐशोआराम की

जिंदगी पर लाखों रूपये खर्च करते समय पीछे नहीं हटते हैं, लेकिन किसी गरीब व्यक्ति से कुछ खरीदते समय अथवा उसे पैसे देते समय आनाकानी करते हैं। वे दिखावे के लिए लाखों-रुपये खर्च कर देते हैं पर किसी गरीब को उसकी कमाई मजदूरी या पैसे देते समय आनाकानी करते हैं। उन्हें कभी-भी किसी गरीब की गरीबी या बेबसी पर दया नहीं आती है। वे सिर्फ स्वयं के बारे में ही सोचते हैं। सचमुच, यह कुछ अमीर वर्ग के लोगों की संकुचित मानसिकता ही है।

**प्रश्न २ (आ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति आ (१) : आकलन कृति**

**(१) कारण लिखिए।**

**(i)**

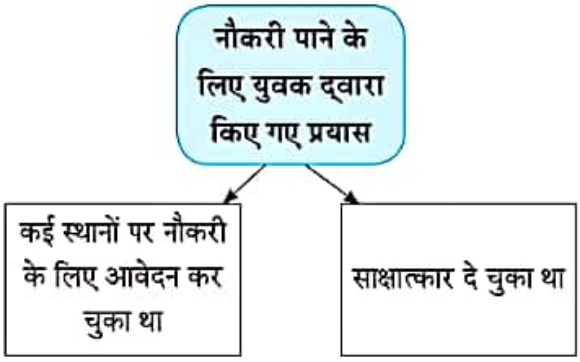


**(ii)**

**(२) निम्नलिखित शब्दों से ऐसे प्रश्न बनाइए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों -**

**(i) साक्षात्कार (ii) भ्रष्ट**

**उत्तर:** (i) युवक को आज किसके लिए जाना था ?

(ii) सामाजिक व्यवस्था कैसी थी ?

**(३) संजाल पूर्ण कीजिए।**

*गद्यांश २ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ५५*

अब तक वह कितने ही स्थानों पर नौकरी के लिए आवेदन कर चुका था। साक्षात्कार दे चुका था। उसके प्रमाणपत्रों की फाइल भी उसे सफलता दिलाने में नाकामयाब रही थी। हर जगह भ्रष्टाचार, रिश्वत का बोलबाला होने के कारण, योग्यता के बावजूद उसका चयन नहीं हो पाता था। हर ओर से अब वह निराश हो चुका था। भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था को कोसने के अलावा उसके वश में और कुछ तो था नहीं।

आज फिर उसे साक्षात्कार के लिए जाना है। अब तक देशप्रेम, नैतिकता, शिष्टाचार, ईमानदारी पर अपने तर्कपूर्ण विचार बड़े विश्वास से रखता आया था लेकिन इसके बावजूद उसके हिस्से में सिर्फ असफलता ही आई थी।

**कृति आ (२) :स्वमत अभिव्यक्ति**

***(१) 'भ्रष्टाचार एक कलंक है।' इस कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:** भ्रष्टाचार समाज के लिए अभिशाप है। यह भयंकर बीमारी के समान समाज में अपनी गहरी जड़ें जमा रहा है। भ्रष्टाचार आज मनुष्य की सद्बुद्धि, विवेक और इंसानियत को नष्ट कर रहा है। चोरी, बेईमानी, घोटाला, शोषण, अनैतिक आचरण, अराजकता भ्रष्टाचार के विविध रूप हैं। विकसित और विकासशील दोनों ही देशों में भ्रष्टाचार व्याप्त है। खेल, राजनीति, शिक्षा, व्यापार, सरकार और आम-जनजीवन पर इसका दुष्प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। समाज में समानता के लिए भ्रष्टाचार को संपूर्ण रूप से नष्ट करना नितांत आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारियों के प्रति निष्ठावान होकर भ्रष्टाचार मुक्त समाज का निर्माण करना चाहिए।

**प्रश्न ३ (इ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति इ (१) : आकलन कृति**

**(१) कृति पूर्ण कीजिए।**

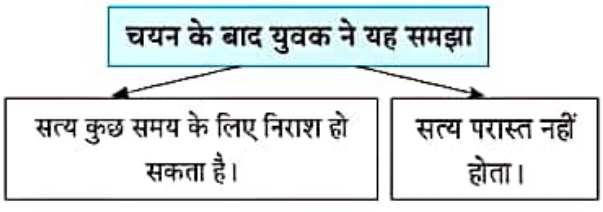


**(२) समझकर लिखिए।**

**(i) युवक द्वारा पहले प्रश्न का सही उत्तर देने पर-**

**उत्तर:** अधिकारियों के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान और उत्सुकता छा गई और उन्हें उसके तर्क में रूचि महसूस होने लगी।

**(ii) युवक द्वारा दूसरे प्रश्न का सही उत्तर देने पर-**

**उत्तर:** अधिकारियों ने आपस में गंभीरता से विचार-विमर्श किया और युवक के सही उत्तर की दाद देते हुए उसका चयन कर लिया।

(३) कृति पूर्ण कीजिए।

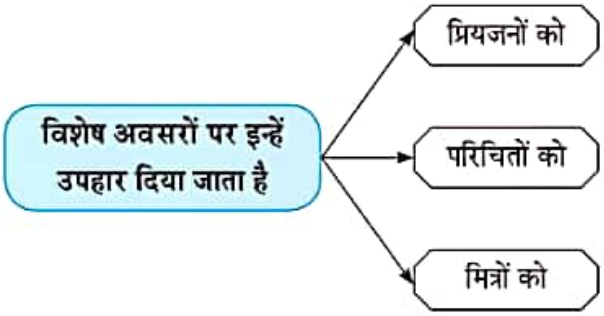


(४) किसने, किससे कहा?

(i) ''रिश्वत को आप क्या मानते हैं?''

उत्तर: दूसरे अधिकारी ने युवक से कहा।

(ii) ''यह भ्रष्टाचार की बहन है।''

उत्तर: युवक ने अधिकारियों से कहा।

*गद्यांश ३ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ५५*

साक्षात्कार के लिए उपस्थित प्रतिनिधि मंडल में से एक अधिकारी ने पूछा- "भ्रष्टाचार के बारे में आपकी क्या राय है?"

"भ्रष्टाचार एक ऐसा कीड़ा है जो देश को घुन की तरह खा रहा है। इसने सारी सामाजिक व्यवस्था को चिंताजनक स्थिति में पहुँचा दिया है। सच कहा जाए तो यह देश के लिए कलंक है...।"

अधिकारियों के चेहरे पर हलकी-सी मुस्कान और उत्सुकता छा गई। उसके तर्क में उन्हें रूचि महसूस होने लगी। दूसरे अधिकारी ने प्रश्न किया- "रिश्वत को आप क्या मानते हैं?"

"यह भ्रष्टाचार की बहन है। जैसे विशेष अवसरों पर हम अपने प्रियजनों, परिचितों, मित्रों को उपहार देते हैं। इसका स्वरूप भी कुछ-कुछ वैसा ही है लेकिन उपहार देकर हम केवल खुशियों या कर्तव्यों का आदान-प्रदान करते हैं। इससे अधिक कुछ नहीं जबकि रिश्वत देने से रुके हुए कार्य, दबी हुई फाइलें, टलती हुई पदोन्नति, रोकी गई नौकरी आदि में इसके कारण सफलता हासिल की जा सकती है। तब भी यह समाज के माथे पर कलंक है, इसका समर्थन कतई नहीं किया जा सकता, ऐसी मेरी धारणा है।'' कहकर वह तेजी से बाहर निकल आया। जानता था कि यहाँ भी चयन नहीं होगा।

पर भीतर बैठे अधिकारियों ने... गंभीरता से विचार-विमर्श करने के बाद युवक के सही उत्तर की दाद देते हुए उसका चयन कर लिया। आज वह समझा कि 'सत्य कुछ समय के लिए निराश हो सकता है, परास्त नहीं।'

### कृति इ (२): स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'सही उत्तर' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस लघुकथा में एक युवक नौकरी हेतु कई स्थानों पर साक्षात्कार के लिए जाता है। योग्यता होने के बावजूद भी भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था के कारण उसे कहीं पर भी नौकरी नहीं मिलती। अंत में वह एक ऐसी जगह पर साक्षात्कार के लिए जाता है; जहाँ पर उपस्थित अधिकारी उससे भ्रष्टाचार एवं रिश्वत के बारे में उसकी व्यक्तिगत राय पूछते हैं। युवक के हृदय में भ्रष्टाचार एवं रिश्वत को लेकर जो आंतरिक पीड़ा थी, उसे वह सहज एवं स्पष्ट शब्दों में व्यक्त कर देता है। वह प्रश्न के सही उत्तर देता है क्योंकि उसने स्वयं इस भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था को बारीकी से देखा है। युवक द्वारा सही उत्तर मिलने पर उपस्थित अधिकारी नौकरी के लिए उसका चयन करते हैं।

### स्वाध्याय विषयक कृतियाँ

*(१) संजाल पूर्ण कीजिए।

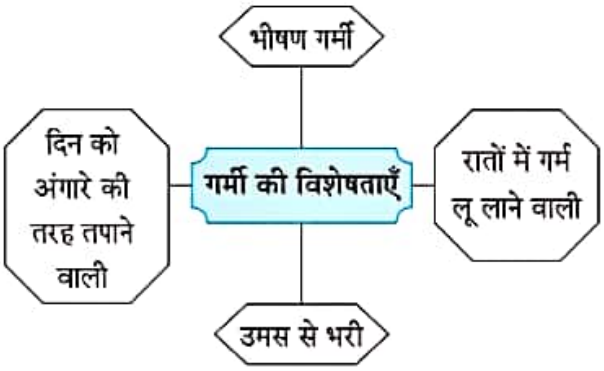


*(२) उत्तर लिखिए।

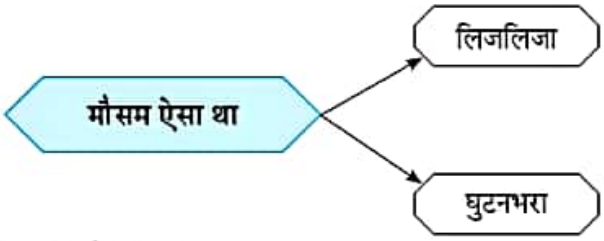


*(३) कृति पूर्ण कीजिए।

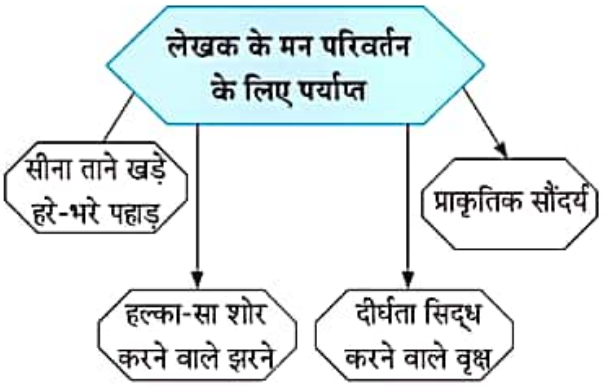


*(४) कारण लिखिए।

(i) युवक को नौकरी न मिल सकी।

उत्तर: क्योंकि सर्वत्र भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था थी।

(ii) आखिरकार अधिकारियों द्वारा युवक का चयन कर लिया गया।

उत्तर: क्योंकि युवक ने अधिकारियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर दिए थे।

*(५) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए।

## भाषा बिंदु

*(१) अर्थ के आधार पर निम्न वाक्यों के भेद लिखिए।

(i) क्या पैसा कमाने के लिए गलत रास्ता चुनना उचित है?

(ii) इस वर्ष भीषण गरमी पड़ रही थी।

(iii) आप उन गहनों की चिंता न करें।

(iv) सुनील, जरा ड्राइवर को बुलाओ।

(v) अपने समय के लेखकों में आप किन्हें पसंद करते हैं?

(vi) सैकड़ों मनुष्यों ने भोजन किया।

(vii) हाय! कितनी निर्दयी हूँ मैं।

(viii) काकी उठो, भोजन कर लो।

(ix) वाह! कैसी सुगंध है।

(x) तुम्हारी बात मुझे अच्छी नहीं लगी।

उत्तर: (i) प्रश्नार्थक वाक्य (ii) विधानार्थक वाक्य
(iii) निषेधार्थक वाक्य (iv) आज्ञार्थक वाक्य
(v) प्रश्नार्थक वाक्य (vi) विधानार्थक वाक्य
(vii) विस्मयार्थक वाक्य (viii) आज्ञार्थक वाक्य
(ix) विस्मयार्थक वाक्य (x) निषेधर्थक वाक्य

*(२) कोष्ठक की सूचना के अनुसार निम्न वाक्यों में अर्थ के आधार पर परिवर्तन कीजिए।

(i) थोड़ी बातें हुईं। (निषेधार्थक वाक्य)

(ii) मानू इतना ही बोल सकी। (प्रश्नार्थक वाक्य)

(iii) मैं आज रात का खाना नहीं खाऊँगा। (विधानार्थक वाक्य)

(iv) गाय ने दूध देना बंद कर दिया। (विस्मयार्थक वाक्य)

(v) तुम्हें अपना ख्याल रखना चाहिए। (आज्ञार्थक वाक्य)

उत्तर: (i) ज्यादा बातें नहीं हुईं।

(ii) क्या मानू इतना ही बोल सकी?

(iii) मैं आज रात भूखा रहूँगा।

(iv) ओह! गाय ने दूध देना बंद कर दिया।

(v) तुम अपना ख्याल रखो।

*(३) प्रथम इकाई के पाठों में से अर्थ के आधार पर विभिन्न प्रकार के पाँच वाक्य ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर: (i) ओह! कंबख्त ने कितनी बेदर्दी से पीटा है। (विस्मयार्थक वाक्य)

(ii) रहमान से गलती हो गई। (विधानार्थक वाक्य)

(iii) इसमें परेशान होने की क्या जरूरत है? (प्रश्नार्थक वाक्य)

(iv) ऐसी कोई विशेष बात नहीं है। (निषेधार्थक वाक्य)

(v) वहाँ बैठ जाओ, उमा। (आज्ञार्थक वाक्य)

*(४) रचना के आधार पर वाक्य के प्रकार पहचानकर लिखिए।

(i) अधिकारियों के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान और उत्सुकता छा गई।

(ii) हर ओर से अब वह निराश हो गया था।

(iii) उसे देख-देख बड़ा जी करता कि मौका मिलते ही उसे चलाऊँ।

(iv) वह बूढ़ी काकी पर झपटी और उन्हें दोनों हाथों से झटककर बोली।

(v) मोटे तौर पर दो वर्ग किए जा सकते हैं।

(vi) अभी समाज में यह चल रहा है क्योंकि लोग अपनी आजीविका शरीर श्रम से चलाते हैं।

उत्तर: (i) सरल वाक्य (ii) सरल वाक्य
(iii) मिश्र वाक्य (iv) संयुक्त वाक्य
(v) सरल वाक्य (vi) मिश्र वाक्य

*(५) पाठों से रचना के आधार पर विभिन्न प्रकार के तीन-तीन वाक्य ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर: **सरल वाक्य** : (i) हम आगे बढ़ गए। (ii) इस वर्ष बड़ी भीषण गर्मी पड़ रही थी। (iii) अगले सप्ताह ही पर्वतीय स्थल की यात्रा पर निकल पड़े।

**संयुक्त वाक्य** : (i) टँगी हुई अधूरी चिक पर निगाह डाली और हनहनाता हुआ आँगन से बाहर निकल गया। (ii) तुम्हारी भाभी नाखून से काटकर तरकारी परोसती है और इमली का रस डालकर कढ़ी तो हम मामूली लोगों की घरवालियाँ बनाती हैं। (iii) रामस्वरूप इशारे के लिए खाँसते हैं लेकिन उमा चुप है, उसी तरह गरदन झुकाए।

**मिश्र वाक्य** : (i) भ्रष्टाचार एक ऐसा कीड़ा है जो देश को घुन की तरह खा रहा है। (ii) पहले ऐसा जानती कि मोहर छापवाली

धोती देने से ही अच्छी चीज बनती है तो मैया को खबर भेज देती। (iii) इनसे पूछिए कि ये किस तरह नौकरानी के पैरों में पड़कर अपना मुँह छिपाकर भागे थे।

## उपयोजित लेखन

***(१) 'जल है तो कल है।' इस विषय पर निबंध लिखिए।**

**जल है तो कल है।**

**उत्तर :** जल ही जीवन है। जल मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग है। अन्न के बिना व्यक्ति १५ से ३० दिनों तक जीवित रह सकता है लेकिन जल के बिना व्यक्ति ३ से ४ दिन से ज्यादा जीवित नहीं रह सकता। जल के बिना धरती पर मानवीय जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती।

प्रकृति एवं प्राणियों को भी जीवन जीने के लिए जल की आवश्यकता होती है। खेती, उद्योग आदि के लिए भी जल की आवश्यकता होती है। घर बनाने से लेकर मोटर गाड़ी चलाने तक सभी चीजों में जल की आवश्यक होती है। वर्तमान युग में जनसंख्या वृद्धि बहुत तेज गति से हो रही है। धरती पर प्रदूषण बढ़ रहा है। जल के प्राकृतिक स्रोत प्रदूषित हो रहे हैं। पानी की मात्रा में कमी हो रही है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो एक दिन लोगों को पीने के लिए पानी भी नहीं मिलेगा। इससे लोगों का जीवन संकट में पड़ जाएगा। देश के कई भागों में ठीक से वर्षा नहीं हो रही है। इस कारण अकाल की स्थिति निर्माण होती है। ऐसे में खेती के लिए जरूरी पानी नहीं मिल पाता और इससे फसल की उपज काफी कम होती है। इस कारण अनाज के दामों में वृद्धि हो रही है।

जल है तो कल है। जल के कारण लोग घर का सारा काम कर सकते हैं। खाना बना सकते हैं और कपड़े धो सकते हैं। स्नान कर सकते हैं और पेड़-पौधों को पानी दे सकते हैं। अगर जल को यूँ ही बर्बाद किया गया तो वह दिन दूर नहीं है जब पीने के पानी के लिए लोग आपस में लड़ेंगे। यदि पानी की कमी हुई तो वह काफी महँगे दामों में बिकेगा।

ध्यान रहे कि जल व्यक्ति-जीवन के प्रत्येक पल में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए उसकी बचत करना बहुत ही आवश्यक है।

## लेखनीय

***(२) पहाड़ों पर रहने वाले लोगों की जीवन शैली की जानकारी प्राप्त करके अपनी जीवन शैली से उसकी तुलना करते हुए लिखिए।**

**उत्तर :** **पहाड़ों पर रहने वाले लोगों की जीवन शैली :** पहाड़ों पर रहने वाले लोग बहुत ही सादा जीवन व्यतीत करते हैं। उनके जीवन में सादगी होती है। उनके रहन-सहन एवं खान-पान के तरीके बहुत ही साधारण होते हैं। वे इतने पढ़े-लिखे नहीं होते हैं। अत: जो काम मिला उसे खुशी से कर लेते हैं। उनके पास मनोरंजन के लिए सीमित साधन होते हैं। वे प्राय: गरीब होते हैं। पहाड़ों का आरोहण करने में वे माहिर होते हैं। वे बहादुर होते हैं। जो कुछ रूखा-सूखा मिलता है; उसीमें वे खुश रहते हैं।

**महानगर में रहने वाले लोगों की जीवन शैली :** महानगर में रहने वाले लोगों को सादा जीवन व्यतीत करना अच्छा नहीं लगता। भले ही जेब में पैसे हो या ना हो; फिर भी दिखावे के लिए वे झूठी कंबल ओढ़ ही लेते है। इनके पास मनोरंजन के ढेर सारे साधन होते हैं। ये लोग मॉल में जाकर वस्तु खरीदने में अधिक दिलचस्पी दिखाते हैं। अच्छी से अच्छी ब्रैंड वाली चीजें इन्हें रास आती हैं। बर्गर, पिज्जा आदि चीजों का सेवन इन्हें अच्छा लगता है।

इस प्रकार देखा जाए तो पहाड़ों पर रहने वाले लोगों के पास संस्कार दिखाई देते हैं और महानगर में रहने वाले कुछ लोगों के पास संस्कारों की किंचित कमी दिखाई पड़ती है। इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि महानगरीय जीवन शैली की तुलना में पहाड़ों पर रहने वाले लोंगों की जीवन शैली अधिक श्रेष्ठ है।

❖❖❖

# ३ श्रम साधना

*- श्रीकृष्णदास जाजू (१८८२ - १९९५)*

## लेखक-परिचय

**जीवन-परिचय** : लेखक श्रीकृष्णदास जाजू जी का जन्म सन १८८२ में राजस्थान के अकासर में हुआ। इनका साहित्य गांधीवादी विचारधारा से प्रेरित है। महात्मा गांधी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रेरित होकर इन्होंने अपना जीवन लोक कल्याण एवं देशसेवा के लिए समर्पित कर दिया था। इनके कार्य से प्रभावित होकर आम जनता ने इन्हें 'तपोधन' की उपाधि दी थी। इन्होंने अपने जीवनकाल में कई पुस्तकों का संपादन भी किया और राष्ट्रीय एकता के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग किया।

**प्रमुख कृतियाँ** : 'स्वराज्य प्राप्ति में', 'सुधाकर मीराबाई', 'जीवन का तात्विक अधिष्ठान' आदि।

## गद्य-परिचय

**वैचारिक निबंध** : वैचारिक निबंध समाज, राजनीति, धर्म अथवा साहित्य आदि में से किसी एक विषय से संबंधित होता है। ऐसे निबंध में वैचारिकता को प्रधानता दी जाती है यानी इन्हें पढ़कर पाठक विचार करने के लिए प्रवृत्त होते हैं।

**प्रस्तावना** : 'श्रम साधना' इस निबंध में लेखक श्रीकृष्णदास जाजू जी ने श्रम की प्रतिष्ठा स्थापित करते हुए आर्थिक व सामाजिक समता पर बल दिया है। लेखक के अनुसार जिस प्रकार अहिंसा से राजनीतिक स्वराज्य का प्रश्न काफी सुलझ गया, उसी प्रकार अहिंसा के मार्ग से आर्थिक व सामाजिक समता का प्रश्न हल हो सकता है।

## सारांश

'श्रम साधना' एक वैचारिक निबंध है। इस निबंध के द्वारा लेखक ने मानवीय जीवन, संपत्ति के स्वामित्व, शारीरिक व बौद्धिक श्रम आदि का वर्णन किया है। लेखक कहते हैं कि गुलामी की प्रथा व राजप्रथा मिटाने के लिए संघर्ष हुआ और तब जाकर इनका समाज से अस्तित्व मिटा। ऐसा ही कुछ संपत्ति के स्वामित्व के बारे में भी है। लोग सोना-चाँदी या पैसा, इसे अपनी संपत्ति मानते हैं। दरअसल ये माप-तौल के साधन हैं। सृष्टि के द्रव्य व मनुष्य का शारीरिक श्रम ये संपत्ति के मुख्य साधन हैं। समस्या यह है कि शारीरिक श्रम करने वालों को गरीबी या कष्ट में ही अपना जीवन बिताना पड़ता है। वे संपत्ति बनाते हैं तथा धनिक सिर्फ व्यवस्था करते हैं। फिर भी धनिकों के पास ढेर सारी संपत्ति इकट्ठा हो जाती है। समाज में जो बुद्धिजीवी वर्ग है, वह श्रमजीवियों पर निर्भर होता है। फिर भी समाज में श्रमजीवियों को प्रतिष्ठा नहीं मिलती। व्यक्ति अपनी योग्यता प्राप्त करने के लिए समाज की कृपा का अधिकतम सहारा लेता है। इसलिए समाज को अधिक से अधिक देना व्यक्ति का कर्तव्य होता है; लेकिन व्यक्ति अपना कर्तव्य निभाने की बजाय समाज से ही अधिक से अधिक लेने का प्रयत्न करता है। आज हमारे समाज में आर्थिक व समाजिक विषमता दिखाई देती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को गांधीजी की विचारधारा का पालन करते हुए चार घंटे शारीरिक श्रम व चार घंटे बौद्धिक श्रम करना चाहिए। जिन लोगों के पास संपत्ति होती है; वे बड़े आराम से रहते हैं। उन्हें अपने पैसों का उपयोग समाज के हित में करना चाहिए। अस्पताल या स्कूल खोलकर लोगों को लाभान्वित करने के लिए उन्हें आगे आना चाहिए। व्यक्ति को स्वार्थवृत्ति का पोषण नहीं करना चाहिए। उसे सिर्फ यह सोचना चाहिए कि समाज का कल्याण किस प्रकार होगा। उसे परोपकार का मार्ग अपनाना चाहिए। भारत को यदि कल्याणकारी राज्य बनाना है तो धनवान लोगों पर अधिक कर लगाया जाए। साथ ही प्रत्येक व्यक्ति को शरीर श्रम करने के लिए आगे आना चाहिए। समाज में श्रम की प्रतिष्ठा बढ़नी चाहिए। महात्मा गांधी जी ने अहिंसा की विचारधारा दी है, उसके प्रभाव से समाज में आर्थिक व सामाजिक समता प्रस्थापित हो सकती है।

## शब्दार्थ

| | | |
|---|---|---|
| मालदार | - | अमीर |
| प्रथा | - | रिवाज या पद्धति |
| निर्वाह | - | जीवन-यापन |
| व्यवस्थापक | - | व्यवस्था करने वाला |
| पूँजी | - | धन |
| उद्योगपति | - | कारखाने या मिल के मालिक |
| याचक | - | याचना करने वाला |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| लाचारी | - | बेबसी | हुकूमत | - | शासन |
| क्रांति | - | परिवर्तन | दफा | - | बार, मरतबा |
| तत्त्ववेत्ता | - | तत्त्वज्ञ | द्रव्य | - | पदार्थ |

**मुहावरे**

**गुजर-बसर होना** - आजीविका चलना।

## MASTER KEY QUESTION SET - 3

**प्रश्न १ (अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति अ (१) : आकलन कृति**

**(१) कृति पूर्ण कीजिए।**

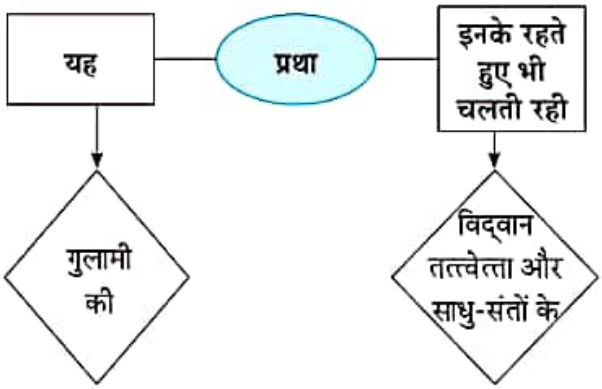


**(२) समझकर लिखिए।**

**(i) गुलाम लोगों का यह मानना है -**

**उत्तर:** गुलामी की प्रथा उनके हित में है।

**(ii) 'विवेक जागृत होना' से आप यह समझते हैं -**

**उत्तर:** सही क्या और गलत क्या इसका एहसास हो जाना।

**(३) कारण लिखिए।**

**(i) गुलामी की प्रथा समाज से मिट गई।**

**उत्तर:** क्योंकि उसे मिटाने के लिए आपस में युद्ध हुए।

**(ii) असंख्य लोगों को यातनाएँ सहन करनी पड़ी।**

**उत्तर:** क्योंकि देश में घनघोर युद्ध हुए और सदियों तक कहीं न कहीं झगड़ा चलता रहा।

*गद्यांश: १ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ५८*

गुलामी की प्रथा संसार भर में हजारों वर्षों तक चलती रही। उस लंबे अरसे में विद्वान तत्त्ववेत्ता और साधु-संतों के रहते हुए भी वह चलती रही। गुलाम लोग खुद भी मानते थे कि वह प्रथा उनके हित में है फिर मनुष्य का विवेक जागृत हुआ। अपने जैसे ही हाड़-माँस और दुख की भावना रखने वालों को एक दूसरा बलवान मनुष्य गुलामी में जकड़ रखे, क्या यह बात न्यायोचित है, यह प्रश्न सामने आया। इसको हल करने के लिए आपस में युद्ध भी हुए। अंत में गुलामी की प्रथा मिटकर रही। इसी प्रकार राजाओं की संस्था की बात है। जगत भर में हजारों वर्षों तक व्यक्तियों का, बादशाहों का राज्य चला पर अंत में 'क्या किसी एक व्यक्ति को हजारों आदमियों को अपनी हुकूमत में रखने का अधिकार है; यह प्रश्न खड़ा हुआ। उसे हल करने के लिए अनेक घनघोर युद्ध हुए और सदियों तक कहीं-न-कहीं झगड़ा चलता रहा। असंख्य लोगों को यातनाएँ सहन करनी पड़ी। अंत में राजप्रथा मिटकर रही और राजसत्ता प्रजा के हाथ में आई। हजारों वर्षों तक चलती हुई मान्यताएँ छोड़ देनी पड़ीं। ऐसी ही कुछ बातें संपत्ति के स्वामित्व के बारे में भी हैं।

**कृति अ (२) : आकलन कृति**

**(१) निम्नलिखित विधान सत्य है या असत्य लिखिए।**

**(i) शांति के मार्ग से राजप्रथा समाप्त हुई।**

**(ii) गुलामी की प्रथा मिटाने के लिए लोगों को संघर्ष करना पड़ा।**

**उत्तर:** (i) असत्य (ii) सत्य

**(२) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

**(i) प्रजा (ii) यातनाएँ**

**उत्तर:** (i) राजप्रथा के मिटने के बाद राजसत्ता किसके हाथों में आई?

(ii) अशांति के कारण लोगों को क्या सहन करना पड़ी?

**(३) समझकर लिखिए।**

***(i) समाप्त हुई दो प्रथाएँ -**

**उत्तर:** गुलामी की प्रथा व राजप्रथा।

**कृति अ (३) : शब्द संपदा**

**(१) निम्नलिखित अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।**

**(i) दर्शन अथवा तत्त्व विद्या से संबंधित जानकारी रखने वाला -**

**(ii) वह मानवीय गुण जो व्यक्ति को सही और गलत का ज्ञान कराता है -**

**उत्तर:** (i) तत्त्ववेत्ता (ii) विवेक

(२) विलोम शब्द लिखिए।

(i) गुलामी × ..... (ii) बलवान × .....

उत्तर: (i) आजादी (ii) कमजोर

(३) वचन बदलिए।

(i) मान्यता (ii) प्रथा

उत्तर: (i) मान्यताएँ (ii) प्रथाएँ

(४) नीचे दिए हुए शब्दों में से प्रत्यय अलग करके लिखिए।

(i) स्वामित्व

उत्तर: (i) मूल शब्द - स्वामी, प्रत्यय : त्व

(५) अधिकार इस शब्द में 'अधि' उपसर्ग है। 'अधि' उपसर्ग लगाकर अन्य दो शब्द तैयार कीजिए।

उत्तर: (i) अधिभार (ii) अधिपति

### कृति अ (४): स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'मनुष्य का विवेक उसकी असीम शक्ति होती है।' विषय पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर: सही और गलत में सही की पहचान करके अपना निर्णय लेना विवेकी व्यक्ति का लक्षण होता है। जिस व्यक्ति के पास विवेक होता है वह व्यक्ति कभी भी गलत कार्य नहीं करता। वह अपनी सोच-विचार की शक्ति को हमेशा जागृत रखकर अपनी सद्बुद्धि को प्रेरित करता रहता है। ऐसा व्यक्ति विवेकशील कहलाता है। विवेकशील व्यक्ति के आचरण एवं व्यवहार में एकरूपता होती है। ऐसा व्यक्ति कभी को भी गलत राह पर नहीं जाता; बल्कि अन्य लोगों मार्गदर्शक बनकर प्रगति की ओर ले जाता है। विवेकशील व्यक्ति में इतनी शक्ति होती है कि समस्त संसार उसका अनुकरण करने लगता है। अपने विवेक रूपी असीम शक्ति के माध्यम से वह समाज में वंदनीय होता है।

## प्रश्न २ (आ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति आ (१): आकलन कृति

(१) संजाल पूर्ण कीजिए।

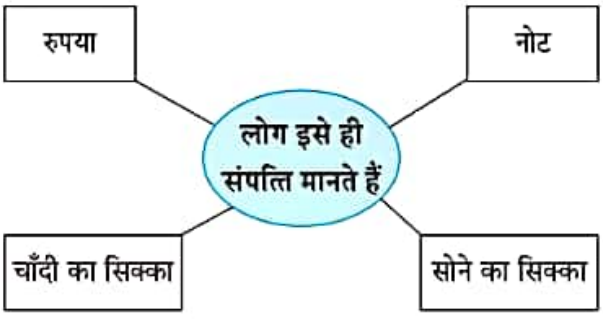


(२) समझकर लिखिए।

*गद्यांश: २ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ५८*

संपत्ति के स्वामित्व और उसके अधिकार की बात जानने के लिए यह समझना जरूरी है कि संपत्ति किसे कहते हैं और वह बनती कैसे है?

आमतौर से माना जाता है कि रुपया, नोट या सोना-चाँदी का सिक्का ही संपत्ति है, लेकिन यह ख्याल गलत है क्योंकि ये तो संपत्ति के माप-तौल के साधन मात्र हैं। संपत्ति तो वे ही चीजें हो सकती हैं जो किसी-न-किसी रूप में मनुष्य के उपयोग में आती हैं। उनमें से कुछ ऐसी हैं जिनके बिना मनुष्य जिंदा नहीं रह सकता एवं कुछ सुख-सुविधा और आराम के लिए होती हैं। अन्न, वस्त्र और मकान मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताएँ हैं, जिनके बिना उसकी गुजर-बसर नहीं हो सकती। इनके अलावा दूसरी अनेक चीजें हैं जिनके बिना मनुष्य रह सकता है।

### कृति आ (२): आकलन कृति

(१) समझकर लिखिए।

(i) मनुष्य को जीवन जीने के लिए इनकी आवश्यकता होती है -

(ii) वास्तविक अर्थ में मनुष्य की यही संपत्ति होती है -

उत्तर: (i) अन्न, वस्त्र व मकान

(ii) जो किसी न किसी रूप में मनुष्य के उपयोग में आती है।

(२) गलत वाक्य सही करके फिर से लिखिए।

(i) अन्न, वस्त्र व मकान संपत्ति के माप-तौल के साधन मात्र हैं।

उत्तर: रुपया, नोट या सोना-चाँदी संपत्ति के माप-तौल के साधन मात्र हैं।

### कृति आ (३): शब्द संपदा

(१) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।

(i) जरूरतें (ii) सवाल

(iii) वस्तुएँ (iv) जीवित

उत्तर: (i) आवश्यकताएँ (ii) प्रश्न (iii) चीजें (iv) जिंदा

(२) गद्यांश में प्रयुक्त शब्द-युग्म छाँटकर लिखिए।

उत्तर: (i) सोना-चाँदी (ii) माप-तौल

(iii) गुजर-बसर (iv) सुख-सुविधा

(३) गद्यांश में प्रयुक्त उपसर्गयुक्त शब्द ढूँढ़िए और संबंधित उपसर्ग से अन्य शब्द बनाइए।

उत्तर: सुविधा: उपसर्ग: सु, नया शब्द: सुविचार, सुकन्या

(४) निम्नलिखित तत्सम शब्द का तद्भव रूप लिखिए।

(i) सुवर्ण (ii) सृष्टि

उत्तर: (i) सोना (ii) संसार

### कृति आ (४): स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'वर्तमान युग का इंसान भौतिक संपत्ति का गुलाम बन गया है।' कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।

उत्तर: आज का युग बदलाव का युग है। अत: संपत्ति के सदंर्भ में लोगों की मानसिकता भी बदल गई है। आज का इंसान रुपया-पैसा व सोना आदि को ही संपत्ति समझने लगा है और इसे पाने के लिए वह कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाता है। वह भौतिक संपत्ति का गुलाम बन गया है। संपत्ति के विवाद को लेकर अक्सर अनहोनी होती रहती है, ऐसी कई खबरें हम आए दिन समाचार-पत्रों में पढ़ते रहते हैं। लोग चंद रुपयों के लिए एक-दूसरे को मरने-मारने पर उतारू हो जाते है। भौतिक संपत्ति की लालसा व्यक्ति को इंसान से राक्षस बना देती है। वह सिर्फ दिन-रात अपनी संपत्ति के बारे में ही सोचता रहता है। भौतिक संपत्ति के सामने वह पारिवारिक रिश्तों को भी तुच्छ समझने लगता है। इस प्रकार भौतिक संपत्ति की गुलामी के कारण इंसान का जीवन व्यर्थ हो जाता है।

## प्रश्न ३ (इ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

*गद्यांश: ३ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ५८-५९*

प्रश्न उठता है कि संपत्तिरूपी ये सब चीजें बनती कैसे हैं? सृष्टि में जो नानाविध द्रव्य तथा प्राकृतिक साधन हैं, उनको लेकर मनुष्य शरीर श्रम करता है, तब यह काम की चीजें बनती हैं। अत: संपत्ति के मुख्य साधन दो हैं: सृष्टि के द्रव्य और मनुष्य का शरीर श्रम। यंत्र से कुछ चीजें बनती दिखती हैं पर वे यंत्र भी शरीर श्रम से बनते हैं और उनको चलाने में भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष शरीर श्रम की आवश्यकता होती है। केवल बौद्धिक श्रम से कोई उपयोग की चीज नहीं बन सकती अर्थात बिना शरीर श्रम के संपत्ति का निर्माण नहीं हो सकता।

संपत्ति के स्वामित्व में शरीर श्रम करने वालों का स्थान क्या है? जो प्रत्यक्ष शरीर श्रम के काम करते हैं उन्हें तो गरीबी या कष्ट में ही अपना जीवन बिताना पड़ता है और उन्हीं के द्वारा उत्पादित संपत्ति दूसरे थोड़े से हाथों में ही इकट्ठी होती रहती है। श्रमजीवियों की बनाई हुई चीजें व्यापारियों या दूसरों के हाथों में जाकर उनके लेन-देन से कुछ लोग मालदार बन जाते हैं। वर्ष भर मेहनत कर किसान अन्न पैदा करता है लेकिन बहुत दफा तो उसकी खुद की आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं होतीं पर वही अनाज व्यापारियों के पास जाकर उनको धनवान बनाता है। संपत्ति बनाते हैं मजदूर और धन इकट्ठा होता है उनके पास जो केवल व्यवस्था करते हैं, मजदूरी नहीं करते।

### कृति इ (१): आकलन कृति

(१) समझकर लिखिए।

*(i) संपत्ति के दो मुख्य साधन -

(ii) श्रम के दो प्रकार -

(iii) इनसे भरी पड़ी है सृष्टि -

(iv) इसके बिना संपत्ति का निर्माण नहीं हो सकता -

उत्तर: (i) सृष्टि के द्रव्य और मनुष्य का शरीर श्रम

(ii) शारीरिक श्रम व बौद्धिक श्रम

(iii) नानाविध द्रव्य तथा प्राकृतिक साधनों से

(iv) शरीर श्रम के बिना

(२) उचित पर्याय चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए।

(क) बौद्धिक श्रम से उपयोग की चीज तभी बन सकती है -

(i) जब संपत्ति का सही ढंग से इस्तेमाल किया जाए।

(ii) जब शरीर श्रम का सहारा लिया जाए।

(iii) जब यंत्र का सहारा लिया जाए।

(iv) जब संपत्ति को ही देवता समझ लिया जाए।

उत्तर: बौद्धिक श्रम से उपयोग की चीज तभी बन सकती है; जब शरीर श्रम का सहारा लिया जाए।

### कृति इ (२): आकलन कृति

(१) वाक्य पूर्ण कीजिए।

(i) उनके पास धन इकट्ठा होता है -

(ii) आज वही गरीबी या कष्ट में अपना जीवन बिताते हैं -

उत्तर: (i) जो केवल व्यवस्था करते हैं।

(ii) जो प्रत्यक्ष शरीर श्रम के काम करते हैं।

(२) ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों -

(i) किसान (ii) मजदूरी

उत्तर: (i) अन्न कौन पैदा करता है?

(ii) धनवान क्या नहीं करते?

(३) अंतर स्पष्ट कीजिए।

| मजदूर | धनवान |
|---|---|
| (i) संपत्ति बनाता है | (i) धन इकट्ठा करता है। |
| (ii) मजदूरी करता है। | (ii) केवल व्यवस्था करता है। |

### कृति इ (३): शब्द संपदा

(१) गद्यांश में से ऐसे दो शब्द ढूँढ़कर लिखिए कि जिनके वचन रूप एकवचन व बहुवचन इन दोनों रूपों में समान हों।

उत्तर: (i) शरीर (ii) श्रम

(२) नीचे लिखे हुए वाक्यों में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए।

(i) वाह सृष्टि तो नानाविध व प्राकृतिक साधनों से भरी पड़ी है

उत्तर: वाह! सृष्टि तो नानाविध व प्राकृतिक साधनों से भरी पड़ी है।

*(३) सारिणी पूर्ण कीजिए।

| गद्यांश में प्रयुक्त 'इक' प्रत्यय वाले दो शब्द | निम्न शब्दों को उचित प्रत्यय लगाइए। |
|---|---|
| (i) बौद्धिक | (i) शरीर : शारीरिक |
| (ii) प्राकृतिक | (ii) श्रम : श्रमिक |

(४) गद्यांश में प्रयुक्त विलोम शब्दों की जोड़ी ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर: प्रत्यक्ष × अप्रत्यक्ष

### कृति इ (४): स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'शारीरिक व बौद्धिक श्रम व्यक्ति-विकास के लिए आवश्यक होता है।' कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।

उत्तर: श्रम यानी मेहनत और मेहनत को ही भगवान कहा गया है। श्रम के भले ही अलग-अलग रूप क्यों न हों, श्रम आखिर श्रम ही होता है। श्रम करने से व्यक्ति का विकास होता है। श्रम करने से व्यक्ति को मानसिक शांति मिलती है। किसान एवं मजदूर लोग शारीरिक श्रम करते हैं; तो बुद्धिजीवी वर्ग जैसे-डॉक्टर या वैज्ञानिक बौद्धिक श्रम करते हैं। इन सबकी समाज में प्रतिष्ठा होती है। सभी को किए हुए श्रम का पारिश्रमिक मिलता है। इससे उनका गुजर-बसर संभव होता है। जो व्यक्ति श्रम नहीं करता, उसका जीवन व्यर्थ होता है। बिना श्रम के समाज में प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को श्रम करना चाहिए।

## प्रश्न ४ (ई) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति ई (१): आकलन कृति

(१) समझकर लिखिए।

(i) दो प्रकार के व्यवसाय -

(ii) इनके आधार पर चलते हैं व्यवसाय -

उत्तर: (i) श्रमजीवियों के व्यवसाय व बुद्धिजीवियों के व्यवसाय

(ii) शरीर श्रम व बुद्धि-बल

(२) निम्नलिखित घटकों का वर्गीकरण बुद्धिजीवी और श्रमजीवी के अंतर्गत कीजिए।

(मजदूर, डॉक्टर, बढ़ई, लुहार, व्यापारी, वकील, किसान, अध्यापक)

उत्तर:

| बुद्धिजीवी | श्रमजीवी |
|---|---|
| डॉक्टर | मजदूर |
| व्यापारी | बढ़ई |
| वकील | लुहार |
| अध्यापक | किसान |

*(३) तुलना कीजिए।

उत्तर:

| बुद्धिजीवी | श्रमजीवी |
|---|---|
| (i) बुद्धिजीवियों का जीवन श्रमजीवियों पर आधारित होता है। | (i) श्रमजीवियों का जीवन बुद्धिजीवियों पर आधारित नहीं होता है। |
| (ii) बुद्धिजीवियों की आमदनी अधिक होती है। | (ii) श्रमजीवियों की मजदूरी एवं आमदनी कम होती है। |
| (iii) समाज में इनकी प्रतिष्ठा होती है। | (iii) समाज में इनकी प्रतिष्ठा नहीं होती। |
| (iv) इनका जीवन प्राय: सुख-समृद्धि में बीतता है। | (iv) इन्हें जीवन प्राय: कष्ट में ही बिताना पड़ता है। |

*गद्यांश: ४ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ५९*

जीवन निर्वाह या धन कमाने के लिए अनेक व्यवसाय चल रहे हैं। इनके मोटे तौर पर दो वर्ग किए जा सकते हैं। कुछ व्यवसाय ऐसे हैं, जिनमें शरीर श्रम आवश्यक है और कुछ ऐसे हैं जो बुद्धि के बल पर चलाए जाते हैं। पहले प्रकार के व्यवसाय को हम श्रमजीवियों के व्यवसाय कहें और दूसरों को बुद्धिजीवियों के। राज-काज चलाने वाले मंत्री आदि तथा राज के कर्मचारी ऊँचे-ऊँचे पद से लेकर नीचे के क्लर्क तक, न्यायाधीश, वकील, डॉक्टर, अध्यापक, व्यापारी आदि ऐसे हैं जो अपना भरण-पोषण बौद्धिक काम से करते हैं। शरीर श्रम से अपना निर्वाह करने वाले हैं - किसान, मजदूर, बढ़ई, राज, लोहार आदि। समाज के व्यवहार के लिए इन बुद्धिजीवियों और श्रमजीवियों, दोनों प्रकार के लोगों की जरूरत है पर सामाजिक दृष्टि से इन दोनों के व्यवसाय के मूल्यों में बहुत फर्क है।

बुद्धिजीवियों का जीवन श्रमजीवियों पर आधारित है। ऐसा होते हुए भी दुर्भाग्य यह है कि श्रमजीवियों की मजदूरी एवं आमदनी कम है, समाज में उनकी प्रतिष्ठा नहीं और उनको अपना जीवन प्राय: कष्ट में ही बिताना पड़ता है।

### कृति ई (२): आकलन कृति

(१) कृति पूर्ण कीजिए।

(२) उचित जोड़ियाँ मिलाइए।

| 'अ' | 'ब' |
|---|---|
| (i) श्रमजीवी | (क) राज-काज का काम |
| (ii) बुद्धिजीवी | (ख) कम आमदनी |
| (iii) मंत्री | (ग) न्यायाधीश |
| (iv) ऊँचा पद | (घ) ज्यादा आमदनी |

उत्तर: (i - ख), (ii - घ), (iii - क), (iv - ग)

(३) वाक्य पूर्ण कीजिए।

(i) श्रमजीवियों की समाज में -

(ii) अनेक व्यवसाय चल रहे हैं, क्योंकि उनसे -

उत्तर: (i) प्रतिष्ठा नहीं होती और उनको अपना जीवन प्राय: कष्टों में ही बिताना पड़ता है।

(ii) जीवन निर्वाह या धन कमाया जाता है।

### कृति घ (३): शब्द संपदा

(१) परिच्छेद में से शब्द-युग्म शब्द छाँटकर लिखिए।

उत्तर: (i) ऊँचे-ऊँचे (ii) भरण-पोषण (iii) राज-काज

(२) लिंग बदलिए।

(i) अध्यापक (ii) मजदूर (iii) लुहार

उत्तर: (i) अध्यापिका (ii) मजदूरनी (iii) लुहारिन

(३) निम्नलिखित अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।

(i) बुद्धि से संबंधित - (ii) समाज से संबंधित -

(iii) न्यायालय में न्याय देने वाला - (iv) व्यापार करने वाला -

उत्तर: (i) बौद्धिक (ii) सामाजिक (iii) न्यायाधीश (iv) व्यापारी

(४) गद्यांश से ढूँढ़कर विदेशी शब्द लिखिए।

उत्तर: (i) क्लर्क (ii) डॉक्टर

(५) गद्यांश से ढूँढ़कर विलोम शब्द की जोड़ी लिखिए।

उत्तर: ऊँचे x नीचे

### कृति ई (४): स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'श्रमप्रतिष्ठा' पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर: श्रम मनुष्य की संपत्ति है। श्रम ही जीवन है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कर्म की महत्ता बताते हुए कहा है कि कर्म ही पूजा है। सिर्फ कर्म करने से व्यक्ति कर्मयोगी नहीं बन सकता। जब तक मन में कर्म के प्रति आस्था न हो; तब तक व्यक्ति कर्मयोगी नहीं कहलाता। इसलिए मेहनत करने वाले व्यक्ति को हमें छोटा नहीं समझना चाहिए। मनुष्य को जीवन में जो भी कार्य करना पड़े, वह करना ही चाहिए। व्यक्ति को अपने कर्म से कभी भी जी चुराना नहीं चाहिए। श्रम का कार्य करने वाले व्यक्ति को समय निकाल कर बुद्धियुक्त कार्य भी करना चाहिए। श्रम तथा श्रमिक दोनों को सम्मान मिलना चाहिए। इससे समाज में श्रम की प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

## प्रश्न ५ (उ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति उ (१): आकलन कृति

(१) उत्तर लिखिए।

*(i) व्यापारी और उद्योगपतियों के लिए अर्थशास्त्र द्वारा बनाए गए नियम -

उत्तर: (i) खरीद सस्ती-से-सस्ती हो और बिक्री महँगी-से-महँगी।

(ii) मुनाफे की कोई मर्यादा नहीं।

(२) गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -

(i) समाज (ii) बालक

उत्तर: (i) मनुष्य किसके कारण व्यवहारिक बनता है?

(ii) विद्यालय में कौन शिक्षा प्राप्त करते हैं?

*गद्यांश: ५ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ५९-६०*

व्यापारी और उद्योगपतियों के लिए अर्थशास्त्र ने यह नियम बताया है कि खरीद सस्ती-से-सस्ती हो और बिक्री महँगी-से-महँगी। मुनाफे की कोई मर्यादा नहीं। जो कारखाना मजदूरों के शरीर श्रम के बिना चल ही नहीं सकता, उसके मजदूर को हजार-पाँच सौ मासिक से अधिक भले ही न मिले, पर व्यवस्थापकों और पूँजी लगाने वालों को हजारों-लाखों का मिलना गलत नहीं माना जाता।

मनुष्य समाज में रहने से अर्थात समाज की कृपा से ही व्यवहार चलाने लायक बनता है। बालक प्राथमिक शाला से लेकर देश-विदेश के ऊँचे-से-ऊँचे महाविद्यालयों में सीखकर जो योग्यता प्राप्त करता है, वे शिक्षालय या तो सरकार द्वारा चलाए जाते हैं, जिनका खर्च आम जनता से टैक्स के रूप में वसूल किए हुए पैसे से चलता है या दानी लोगों की कृपा से। जो कुछ पढ़ने की फीस दी जाती है, वह तो खर्च के हिसाब से नगण्य है। उसको समाज का अधिक कृतज्ञ रहना चाहिए कि उस पैसे के बल पर वह विद्या पढ़कर योग्यता प्राप्त कर सका। इस सारी शिक्षा में जो कुछ ज्ञान मिलता है, वह भी हजारों वर्षों तक अनेक तपस्वियों ने मेहनत करके जो कण-कण संग्रहीत कर रखा है, उसी के बल पर मिलता है। व्यापारी और उद्योगपति भी व्यापार की कला विद्यालयों से, अपने साथियों से एवं समाज से प्राप्त करते हैं।

### कृति उ (२): आकलन कृति

(i) समझकर लिखिए:

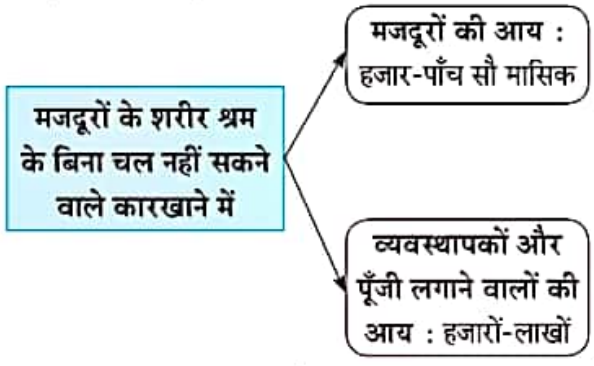


(ii) इनके द्वारा चलाए जाते हैं प्राथमिक शाला से लेकर महाविद्यालय -

उत्तर: शिक्षालय की सरकार द्वारा

(i) यहाँ से निकलता है शिक्षालय या सरकार द्वारा चलाए जाने वाले शालाओं-महाविद्यालयों का खर्च -

उत्तर: आम जनता से टैक्स के रूप में वसूल किए हुए पैसे से अथवा दानी लोगों की कृपा से।

(२) कृति पूर्ण कीजिए।

*(i)

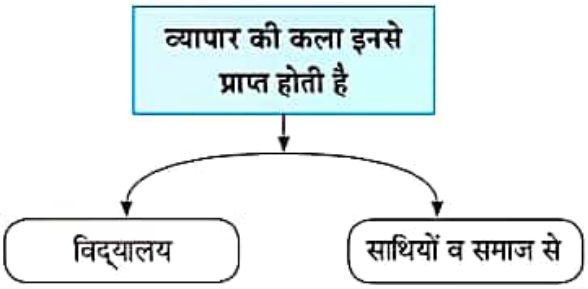


*(ii)

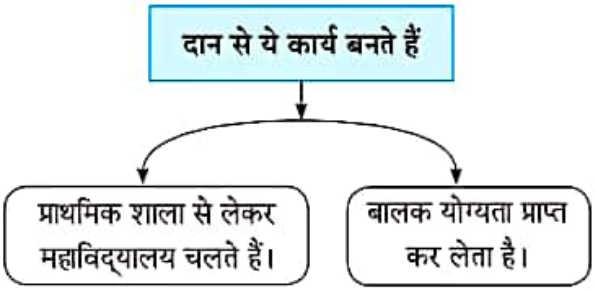


### कृति उ (३): शब्द संपदा

(१) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।

(i) कृतज्ञ (ii) विद्या

उत्तर: (i) एहसानमंद (ii) ज्ञान

*(२) पाठ में कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनके विलोम शब्द भी पाठ में ही प्रयुक्त हुए है; ऐसे शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

(i) महँगी × ..... (ii) बिक्री × .....

(iii) देश × ..... (iv) सही × .....

उत्तर: (i) सस्ती (ii) खरीद (iii) विदेश (iv) गलत

(३) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।

(i) वह विषय जिसमें अर्थ से संबंधित जानकारी होती है -

(ii) व्यवस्था करने वाला -

(iii) उपकार माननेवाला व्यक्ति -

(iv) एकांत में बैठकर तप करने वाला -

उत्तर: (i) अर्थशास्त्र (ii) व्यवस्थापक (iii) कृतज्ञ (iv) तपस्वी

(४) 'समाज' इस शब्द को उचित उपसर्ग व प्रत्यय लगाकर नया शब्द तैयार कीजिए।

उत्तर: असामाजिक : उपसर्ग - अ, प्रत्यय - इक

### कृति उ (४): स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'आर्थिक विषमता के कारण समाज की अवस्था दयनीय हो रही है।' विषय पर अपना मत लिखिए।

उत्तर: हमारे देश में मुट्ठीभर लोग अमीर हैं और अधिकतर लोग गरीब हैं जिन्हें दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती है। यह आर्थिक विषमता का ही परिणाम है। आज के युग में अमीर और अधिक अमीर बनता जा रहा है तथा गरीब और अधिक गरीब बनता जा रहा है। इस आर्थिक विषमता के कारण सामाजिक बुराइयाँ बढ़ रही हैं। हिंसा, बेरोजगारी, मानसिक तनाव, अपराध, भ्रष्टाचार, काला धन, सामाजिक तनाव, अशांति आदि का समाज में वर्चस्व आर्थिक विषमता के कारण ही बढ़ रहा है। आर्थिक विषमता के कारण ही शहर व गाँव के बीच खाई बढ़ रही है। गाँवों में बिजली व शिक्षा की सुविधा आदि का भारी अभाव दिखाई दे रहा है। इसलिए आर्थिक विषमता को दूर करने का उपाय सरकार को शीघ्र ही खोजना चाहिए।

## प्रश्न ६ (ऊ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति ऊ (१): आकलन कृति

(१) निम्नलिखित वाक्य सत्य है या असत्य लिखिए।

(i) योग्यता प्राप्त करने में व्यक्ति का हिस्सा अत्यधिक होता है।

(ii) समाज से कम से कम लेना यही न्याय तथा कर्तव्य मानना चाहिए।

उत्तर: (i) असत्य (ii) सत्य

(२) समझकर लिखिए

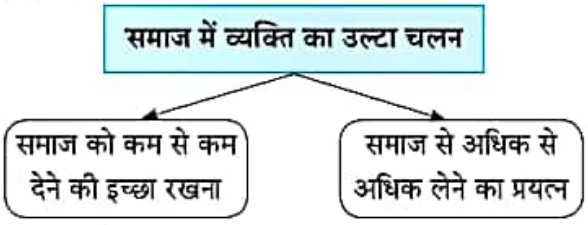


*(३) कृति पूर्ण कीजिए।

*गद्यांश: ६ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ६०*

जब अपनी योग्यता प्राप्त करने में हमारा खुद का हिस्सा अल्पतम है और समाज की कृपा का अंश अत्यधिक तो हमें जो योग्यता प्राप्त हुई है उसका उपयोग समाज को अधिक-से-अधिक देना और उसके बदले में समाज से कम-से-कम लेना, यही न्याय तथा हमारा कर्तव्य माना जा सकता

है। चल रहा है कुछ उल्टा ही। व्यक्ति समाज को कम-से-कम देने की इच्छा रखता है, समाज से अधिक-से-अधिक लेने का प्रयत्न करता है, कुछ भी न देना पड़े तो उसे रंज नहीं होता।

यह गंभीर बुनियादी सवाल है कि क्या बुद्धि का उपयोग विषम व्यवस्था को कायम रखकर पैसे कमाने के लिए करना उचित है? यह तो साफ दिखता है कि आर्थिक विषमता का एक मुख्य कारण बुद्धि का ऐसा उपयोग ही है। शोषण भी प्राय: उसी से होता है। समाज में जो आर्थिक और सामाजिक विषमताएँ चल रही हैं और जिससे शोषण, अशांति होती है, उसे मिटाने के लिए जगत में अनेक योजनाएँ अब तक सामने आईं और इनमें कुछ पर अमल भी हो रहा है। अहिंसा द्वारा यह जटिल प्रश्न हल करना हो तो गांधीजी ने इस आशय का सूत्र बताया, "पेट भरने के लिए हाथ-पैर और ज्ञान प्राप्त करने और ज्ञान देने के लिए बुद्धि। ऐसी व्यवस्था हो कि हर एक को चार घंटे शरीर श्रम करना पड़े और चार घंटे बौद्धिक काम करने का मौका मिले और चार घंटों के शरीर श्रम से इतना मिल जाए कि उसका निर्वाह चल सके।"

### कृति ऊ (२): आकलन कृति

**(१) समझकर लिखिए**

**(i) गद्यांश में प्रयुक्त विषमता का एक मुख्य कारण -**

**(ii) गद्यांश में प्रयुक्त विषयमताओं के दो प्रकार -**

**(iii) आर्थिक व सामाजिक विषमताएँ इन्हें जन्म देती हैं -**

**(iv) शोषण व अशांति जैसे जटिल प्रश्न का हल इसके द्वारा किया जा सकता है -**

उत्तर: (i) बुद्धि का उपयोग विषम व्यवस्था को कायम रखकर पैसे कमाने के लिए करना

(ii) आर्थिक व सामाजिक विषमता

(iii) शोषण व अशांति को

(iv) अहिंसा के द्वारा

**(२) वाक्य पूर्ण कीजिए।**

**(i) व्यक्ति का निर्वाह तब चल सकता है .....**

**(ii) व्यक्ति को तब रंज नहीं होता .....**

उत्तर: (i) जब वह चार घंटे शरीर श्रम व चार घंटे बौद्धिक काम करेगा।

(ii) जब उसे समाज को कुछ भी न देना पड़े।

### कृति ऊ (३): शब्द संपदा

**(१) परिच्छेद में से शब्द-युग्म शब्द छाँटकर लिखिए।**

उत्तर: (i) हाथ-पैर (ii) कम-से-कम

(iii) अधिक-से-अधिक

**(२) वचन बदलिए।**

(i) विषमताएँ (ii) घंटे (iii) हिस्सा (iv) अशांति

उत्तर: (i) विषमता (ii) घंटा (iii) हिस्से (iv) अशांति

***(३) गद्यांश से ढूँढ़कर विलोम शब्द की जोड़ी लिखिए।**

(i) अधिक × ..... (ii) अत्यधिक × .....

उत्तर: (i) कम (ii) अल्पतम

**(४) गद्यांश में से ऐसे चार शब्द ढूँढ़िए जिनमें 'अ' उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाए जा सकते हैं।**

(i) योग्यता (ii) हिंसा (iii) व्यवस्था (iv) ज्ञान

उत्तर: (i) अयोग्यता (ii) अहिंसा (iii) अव्यवस्था (iv) अज्ञान

### कृति ऊ (४): स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'आर्थिक विषमता दूर करने के लिए उपाय' विषय पर अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: आर्थिक विषमता दूर करने के लिए देश के सभी लोगों को एकत्रित होना पड़ेगा। सबसे पहले देश के सभी धनिकों को एकत्रित होकर आर्थिक विकास के लिए रचनात्मक कार्य हाथ में लेने होंगे। देश की आम जनता को रोजगार मिलें इसके लिए कार्य करना पड़ेगा। देश में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को पूरी ईमानदारी से अपना कर प्रतिवर्ष सरकारी दफ्तरों में जमा करना पड़ेगा। धनिकों का कर्तव्य है कि वे अपने देश में निवेश करें; ताकि इससे देश की अर्थव्यवस्था मजबूत हो सके। जिन-जिन रईस लोगों ने अपना धन विदेशी बैंकों में जमा किया है, उन्हें वह सारा धन अपने देश में लाकर बैंकों में जमा करना चाहिए। सभी को श्रम करके मेहनत से पैसा कमाना चाहिए। काले धन व रिश्वत लेने से और देने से सभी को पुरजोर विरोध करना चाहिए। इन प्रयत्नों से विषमता दूर हो सकती है।

## प्रश्न ७ (ए) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति ए (१): आकलन कृति

**(१) कृति पूर्ण कीजिए।**

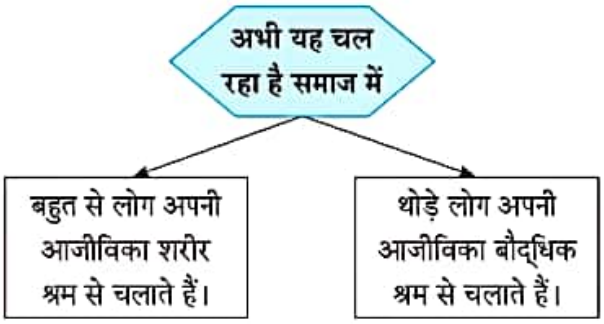


**(२) कारण लिखिए।**

**(i) कुछ लोग आराम से रहते हैं।**

उत्तर: क्योंकि उनके पास अधिक संपत्ति है।

**(ii) सामाजिक उपयोग के बड़े-बड़े कार्य होते हैं।**

उत्तर: क्योंकि धनिकों के पास ढेर सारी संपत्ति हैं और वे सामाजिक कार्य के लिए उसका दान करते हैं।

*गद्यांश: ७ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ६०-६१*

अभी समाज में यह चल रहा है कि बहुत से लोग अपनी आजीविका शरीर श्रम से चलाते हैं और थोड़े बौद्धिक श्रम से। जिनके पास संपत्ति अधिक है, वे आराम में रहते हैं। अनेक लोगों में श्रम करने की आदत भी नहीं है। इस दशा में उक्त नियम का अमल होना दूर की बात है फिर भी उसके पीछे जो तथ्य है, वह हमें स्वीकार करना चाहिए भले ही हमारी दुर्बलता के कारण हम उसे ठीक तरह से न निभा सकें क्योंकि आजीविका की साधन-सामग्री किसी-न-किसी के श्रम बिना हो ही नहीं सकती। इसलिए बिना शरीर श्रम किए उस सामग्री का उपयोग करने का न्यायोचित अधिकार हमें नहीं मिलता। अगर पैसे के बल पर हम सामग्री खरीदते हैं, तो उस पैसे की जड़ भी अंत में श्रम ही है।

धनिक लोग अपनी ज्यादा संपत्ति का उपयोग समाज के हित में ट्रस्टी के तौर पर करें। संपत्ति दान यज्ञ और भूदान यज्ञ का भी आखिर आशय क्या है? अपने पास आवश्यकता से जो कुछ अधिक है, उसपर हम अपना अधिकार न समझकर उसका उपयोग दूसरों के लिए करें।

यह भी बहस चलती है कि धनिकों के दान से सामाजिक उपयोग के अनेक बड़े-बड़े कार्य होते हैं जैसे कि अस्पताल, विद्यालय आदि। अगर व्यक्तियों के पास संपत्ति इकट्ठी न हो तो समाज को ये लाभ कैसे मिलेंगे?

### कृति ए (२): आकलन कृति

**(१) समझकर लिखिए।**

**(i) यह करना चाहिए धनिक लोगों को -**

उत्तर: अपनी अधिक संपत्ति का उपयोग समाज के हित में ट्रस्टी के तौर पर करें।

**(ii) इन दो यज्ञों का उल्लेख गद्यांश में किया गया है -**

उत्तर: संपत्ति दान यज्ञ और भूदान यज्ञ।

**(२) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

**(i) श्रम** **(ii) धनिकों के**

उत्तर: (i) पैसे की जड़ अंत में क्या है?

(ii) किनके दान से सामाजिक उपयोग के बड़े-बड़े कार्य होते हैं?

### कृति ए (३): शब्द संपदा

**(१) निम्नलिखित अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।**

(i) ऐसा स्थान जहाँ बीमार लोगों का इलाज किया जाता है -

(ii) ऐसा स्थान जहाँ पर बच्चों को शिक्षा दी जाती है -

उत्तर: (i) अस्पताल (ii) विद्यालय

**(२) विलोम शब्द लिखिए।**

(i) दुर्बलता × ..... (ii) अंत × .....

(iii) अधिकार × ..... (iv) सामाजिक × .....

उत्तर: (i) सबलता (ii) आदि (iii) अनाधिकार (iv) असामाजिक

**(३) वचन बदलिए।**

(i) आदत (ii) बात

उत्तर: (i) आदतें (ii) बातें

**(४) गद्यांश में से ऐसा एक शब्द ढूँढ़िए जिसमें उपसर्ग व प्रत्यय दोनों लगे हुए हैं।**

उत्तर: दुर्बलता - उपसर्ग : दूर, प्रत्यय : ता

### कृति ए (४): स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'सामाजिक कल्याण के बड़े-बड़े कार्यों से समाज को लाभ मिलता है।' अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: सामाजिक कार्य एक शैक्षिक एवं व्यावसायिक पद्धति है जो सामुदायिक संगठन एवं अन्य पद्धतियों द्वारा लोगों के जीवन स्तर को उन्नत बनाने का प्रयत्न करता है। सामाजिक कार्यों का मुख्य उद्देश्य समाज में सकारात्मक कार्य करके व्यक्तियों की क्षमताओं का विकास करना ताकि व्यक्ति अपनी जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रयत्नबद्ध हो सके। राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, बाबा आमटे, विनोबा भावे आदि महापुरुषों ने समाज-कल्याण के बड़े-बड़े कार्य करके लोगों के कष्ट एवं दुखों को दूर करने का प्रयास किया। इनके महान कार्यों से समाज को अनंत लाभ हुए हैं। समाज ऐसे लोगों के सामाजिक कार्यों से प्रेरणा लेकर स्वयं सामाजिक कार्य करने के लिए अग्रसर होता है।

## प्रश्न ८ (ऐ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति ऐ (१): आकलन कृति

**(१) परिणाम लिखिए।**

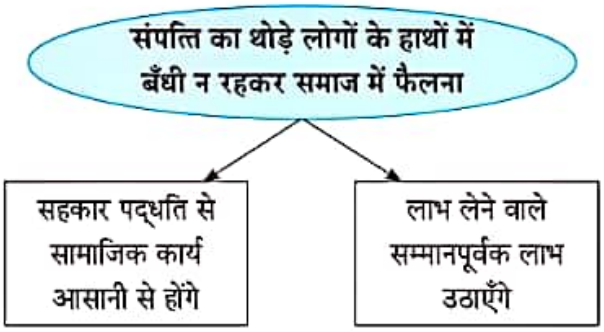


**(२) निम्नलिखित घटकों के कथन लिखिए।**

| घटक | कथन |
|---|---|
| अर्थशास्त्री | उत्पादन की प्रेरणा के लिए व्यक्ति को स्वार्थ के लिए अवसर देने होंगे नहीं तो देश में उत्पादन और संपत्ति नहीं बढ़ सकेगी और बचत भी नहीं होगी। |
| अनुभव | पूँजी, गरीबी या बेकारी की समस्या हल नहीं कर सकी है। |

*गद्यांश: ८ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ६१*

वास्तव में जब संपत्ति थोड़े-से हाथों में बँधी न रहकर समाज में फैली रहेगी तो सहकार पद्धति से बड़े पैमाने पर ऐसे काम आसानी से चलने लगेंगे और उनका लाभ लेने वाले, याचक या दीन की तरह नहीं, सम्मानपूर्वक लाभ उठाएँगे।

अर्थशास्त्री कहते हैं कि उत्पादन की प्रेरणा के लिए व्यक्ति को स्वार्थ के लिए अवसर देने होंगे वरना देश में उत्पादन और संपत्ति नहीं बढ़ सकेगी, बचत भी नहीं होगी। अनुभव बताता है कि पूँजी, गरीबी या बेकारी की समस्या हल नहीं कर सकी है। नैतिक दृष्टि से भी स्वार्थवृत्ति का पोषण करना योग्य नहीं है। बहुत करके स्वार्थ का अर्थ होता है परार्थ की हानि। उसी में से स्पर्धा बढ़ती है, जिसके फलस्वरूप कुछ थोड़े से लोग ही लाभ उठा सकते हैं, बहुसंख्यकों को तो हानि ही पहुँचती है। मानवोचित सहयोग की जगह जंगल का कानून या मत्स्य न्याय चलता है। आखिर यह देखना है कि समाज का कल्याण किस वृत्ति से होगा? अगर समाज में स्वार्थ वृत्ति के लोग अधिक हों, तो क्या कल्याण की आशा रखी जा सकती है? समाज तो परोपकार वृत्ति के बल पर ही ऊँचा उठ सकता है। संपत्ति बढ़ाने के लिए स्वार्थ का आधार दोषपूर्ण है।

## कृति ऐ (२): आकलन कृति

**(१) कृति पूर्ण कीजिए।**

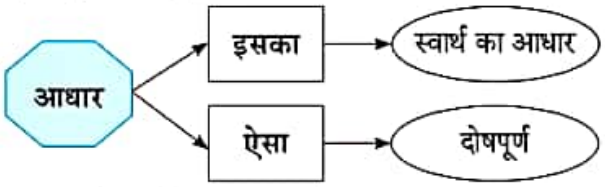


**(२) उचित जोड़ियाँ मिलाइए।**

| 'अ' | 'ब' |
|---|---|
| (i) परोपकारी वृत्ति | (क) परार्थ की हानि |
| (ii) सहकार पद्धति | (ख) स्वार्थवृत्ति का पोषण करना। |
| (iii) नैतिक दृष्टि से गलत | (ग) समाज को ऊँचा उठाने का कार्य |
| (iv) स्वार्थ का अर्थ | (घ) लाभ लेने वाले सम्मानपूर्वक लाभ उठाएँगे। |

**उत्तर:** (i - ग) (ii - घ), (iii - ख), (iv - क)

**(३) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए।**

**स्वार्थवृत्ति का पोषण करने से होने वाली हानियाँ**

↓

समाज में स्पर्धा बढ़ती है।

↓

मानवोचित सहयोग की जगह जंगल का कानून चलने लगता है।

↓

बहुसंख्यकों की हानि होती है।

↓

कुछ थोड़े लोग ही लाभ उठा सकते हैं।

## कृति ऐ (३): शब्द संपदा

**(१) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।**

(i) मुनाफा (ii) धन (iii) भिखारी (iv) मछली

**उत्तर:** (i) लाभ (ii) संपत्ति (iii) भिक्षुक (iv) मत्स्य

**(२) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।**

(i) न्याय × ..... (ii) स्वार्थ × .....

(iii) नैतिक × ..... (iv) बचत × .....

**उत्तर:** (i) अन्याय (ii) परार्थ (iii) अनैतिक (iv) खपत

**(३) निम्नलिखित तालिका पूर्ण कीजिए।**

| गद्यांश में प्रयुक्त उपसर्गयुक्त शब्द | उपसर्ग | गद्यांश में प्रयुक्त प्रत्यययुक्त शब्द | प्रत्यय |
|---|---|---|---|
| अनुभव | अनु | आसानी | ई |
| बहुसंख्यक | बहु | सम्मानपूर्वक | पूर्वक |
| सहकार | सह | नैतिक | इक |
| आधार | आ | दोषपूर्ण | पूर्ण |

**(४) निम्नलिखित तत्सम शब्द का तद्भव रूप लिखिए।**

(i) मत्स्य (ii) हस्त

**उत्तर:** (i) मछली (ii) हाथ

## कृति ऐ (४): स्वमत अभिव्यक्ति

***(१) 'समाज परोपकार वृत्ति के बल पर ही ऊँचा उठ सकता है।' इस कथन से संबंधित अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:** 'परोपकार' का अर्थ है दूसरों पर उपकार करना। परोपकार सभी प्राणियों के प्रति आदर व प्रेम की भावना रखना सिखाता है। कुछ लोग बिना स्वार्थ भाव से दूसरों की भलाई और कल्याण के लिए कार्य करते हैं ऐसे लोग 'परोपकारी' कहलाते हैं। जो कार्य अपने हित, सम्मान और यश की भावना को छोड़कर सर्वथा दूसरों के हित के लिए किए जाते हैं; वे ही परोपकार कहलाते हैं। ऐसे परोपकारी कार्यों से ही समाज ऊपर उठता है; समाज की प्रगति होती है। मदर टेरेसा ने लाखों गरीब व अनाथ बच्चों को अपनाकर उन्हें जीवन जीने का सहारा दिया और उन्हें अपने पैरों पर खड़ा किया। मदर टेरेसा जैसे कई परोपकारी वृत्तियों के महान कार्य से समाज प्रगति की ओर बढ़ रहा है।

**प्रश्न ९ (ओ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति ओ (१): आकलन कृति**

**(१) लिखिए।**

***(i) कल्याणकारी राज्य का अर्थ -**

**(ii) इन पर कर लगाया जाए -**

उत्तर: (i) सब तरह के दुर्बलों को राज्यसत्ता द्वारा मदद मिले अर्थात बड़े पैमाने पर कर वसूल करके उससे गरीबों को सहारा दिया जाए।

(ii) जिनके पास संपत्ति इकट्ठी हुई है।

**(२) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

**(i) गरीब (ii) आर्थिक**

उत्तर: (i) भूख की लाचारी से कौन श्रम करता है?

(ii) गद्यांश में कौन-से क्रांति की बात की गई है?

*गद्यांश: ९ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ६१-६२*

इस संबंध में कुछ भाई अमेरिका का उदाहरण पेश करते हैं। कहते हैं कि जिनके पास संपत्ति इकट्ठी हुई है, उनपर कर लगाकर कल्याणकारी राज्य की स्थापना की जाए। उसी आधार पर भारत को कल्याणकारी (वेल्फेयर) राज्य बनाने की बात चली है। कल्याणकारी राज्य का अर्थ यह समझा जाता है कि सब तरह के दुर्बलों को राज्यसत्ता द्वारा मदद मिले अर्थात बड़े पैमाने पर कर वसूल करके उससे गरीबों को सहारा दिया जाए। भारत जैसे देश में क्या इस बात का बन पाना संभव है? प्राथमिक आवश्यकताओं के बारे में मनुष्य अपने पैरों पर खड़े रहने लायक हुए बिना स्वतंत्र नहीं रह सकता, किसी-न-किसी प्रकार उसे पराधीन रहना होगा।

हमारी सामाजिक विचारधारा में एक बड़ा भारी दोष है। हम शरीर श्रम करना नहीं चाहते वरन उसे हीन दृष्टि से देखते हैं और जिनको शरीर श्रम करना पड़ता है, उन्हें समाज में हीन दर्जे का मानते हैं। अमीर या गरीब, कोई भी श्रम करना नहीं चाहता। धनिक अपने पैसे के बल से नौकरों द्वारा अपना काम चला लेता है। गरीब भूख की लाचारी से श्रम करता है। हमें यह वृत्ति बदलनी चाहिए। शरीर श्रम की केवल प्रतिष्ठा स्थापित कर संतोष नहीं मानना है। उसके लिए हमारे दिल में प्रीति होनी चाहिए। आज श्रमिक भी कर्तव्यपरायण नहीं रहा है। श्रम की प्रतिष्ठा बढ़ाना उसी के हाथ है। जिस श्रम में समाज को जिंदा रहने की क्षमता है, उस श्रम का सही मूल्य अगर श्रमिक जान लेगा तो देश में आर्थिक क्रांति होने में देर नहीं लगेगी।

**कृति ओ (२): आकलन कृति**

**(१) समझकर लिखिए।**

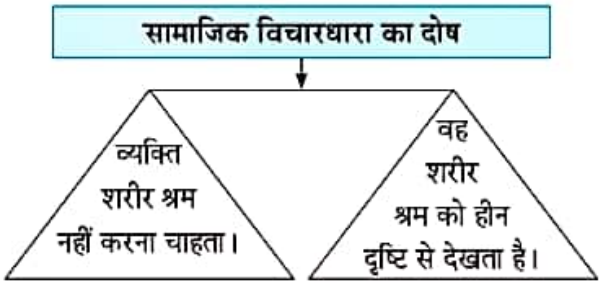


**(२) कारण लिखिए।**

**(i) धनिक शरीर श्रम नहीं करता।**

उत्तर: क्योंकि उसके पास ढेर सारा पैसा होता है। वह अपने पैसे के बल से नौकरों द्वारा अपना काम चला लेता है।

**(ii) गरीब श्रम करता है।**

उत्तर: क्योंकि पेट की भूख मिटाने के लिए उसके पास अन्य कोई साधन नहीं होता।

**(३) सही पर्याय ढूँढ़कर वाक्य पूर्ण कीजिए।**

**(क) तब होगी देश में आर्थिक क्रांति .....**

(i) जब धनिक गरीब की मदद करेगा।

(ii) जब शरीर श्रम को समाज में मान्यता मिलेगी।

(iii) जब श्रम का सही मूल्य श्रमिक जान लेगा।

(iv) जब देश में परिवर्तन होगा।

उत्तर: तब होगी देश में आर्थिक क्रांति जब श्रम का सही मूल्य श्रमिक जान लेगा।

**कृति ओ (३): शब्द संपदा**

**(१) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए।**

(i) हीन (ii) श्रमिक

(iii) क्रांति (iv) लाचारी

उत्तर: (i) रहित (ii) मजदूर (i) परिवर्तन (ii) बेबसी

**(२) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।**

(i) अर्थ × ..... (ii) दुर्बल × .....

(iii) स्वतंत्र × ..... (iv) पराधीन × .....

उत्तर: (i) अनर्थ (ii) सबल (iii) परतंत्र (iv) स्वाधीन

**(३) निम्नलिखित अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।**

(i) अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा से निभाने वाला -

(ii) अर्थ से संबंधित -

(iii) किसी भी क्षेत्र या विषय से संबंधित आमूलचूल परिवर्तन -

उत्तर: (i) कर्तव्यनिष्ठ (ii) आर्थिक (iii) क्रांति

**(४) निम्नलिखित शब्दों के उपसर्ग अलग कीजिए।**

(i) संतोष (ii) पराधीन

उत्तर: (i) उपसर्ग : सम् (ii) उपसर्ग : पर

**(५) निम्नलिखित तत्सम शब्द का तद्भव शब्द लिखिए।**

(i) मूल्य (ii) कल्याण

उत्तर: (i) मोल (ii) भलाई

**कृति ओ (४): स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) 'मेवे फलते श्रम की डाल पर' इस विषय पर अपना मत लिखिए।**

उत्तर: श्रम ही मनुष्य जीवन का सच्चा सौंदर्य है। श्रम का दूसरा नाम ही सफलता है। महाराणा प्रताप और छत्रपति शिवाजी महाराज ने

अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र करने के लिए श्रम किया। महात्मा गांधी जी ने देश को आजाद करने के लिए जो अथक प्रयास किया, वह भी श्रम का ही उदाहरण है। जार्ज वॉशिंगटन, अब्राहम लिंकन, पंडित जवाहरलाल नेहरू आदि नेताओं ने देश के विकास के लिए श्रम किया है। महान वैज्ञानिक न्यूटन, आईन्स्टाइन, डॉ. होमी भाभा, डॉ. सी. वी. रमन आदि ने विज्ञान के क्षेत्र में जो श्रम किया है, उसके परिणामस्वरूप ही आज विज्ञान की तरक्की हुई है। श्रम के कारण ही अट्टालिकाएँ एवं बड़े-बड़े पुलों का निर्माण हुआ है। इसी श्रम के कारण व्यक्ति ने आज अंतरिक्ष व चाँद पर अपना कदम रखकर अपना श्रेष्ठत्व स्वयं सिद्ध किया है।

## प्रश्न १० (औ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति औ (१): आकलन कृति

**(१) कारण लिखिए।**

**(i) गांधीजी ने रचनात्मक कार्यों को लोक चेतना का माध्यम बनाया।**

(i) क्योंकि वे समाज में श्रम और श्रमिक की प्रतिष्ठा स्थापित करना चाहते थे।

**(२) समझकर लिखिए।**

**(i) गांधीजी की मान्यता -**

उत्तर: हरेक को नित्य उत्पादक श्रम करना चाहिए।

**(ii) इसने ली है दया की जगह -**

उत्तर: समता के विचार ने।

**(iii) कानून इसका विकास करने में असमर्थ है -**

उत्तर: मानवोचित गुणों का यानी सद्भावना का विकास करने में

*गद्यांश: १० पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ६२*

गांधीजी ने श्रम और श्रमिक की प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए ही रचनात्मक कार्यों को लोक चेतना का माध्यम बनाया। उनकी मान्यता के अनुसार हरेक को नित्य उत्पादक श्रम करना ही चाहिए। यह उन्होंने श्रम और श्रमिक की प्रतिष्ठा कायम करने के लिए किया।

अब कुछ समय से जगत के सामने दया की जगह समता का विचार आया है। यह विषमता कैसे दूर हो? कहीं-कहीं लोगों ने हिंसा का मार्ग ग्रहण किया उसमें अनेक बुराइयाँ निकलीं जो अब तक दूर नहीं हो सकी हैं। विषमता दूर करने में कानून भी कुछ मदद देता है परंतु कानून से मानवोचित गुणों का, सद्भावना का विकास नहीं हो सकता। महात्मा जी ने हमें जो अहिंसा की विचारधारा दी है, उसके प्रभाव का कुछ अनुभव भी हम कर चुके हैं। भारत की परंपरा का खयाल करते हुए यह संभव दिखता है कि विषमता का प्रश्न बहुत कुछ हद तक अहिंसा के इस मार्ग से हल हो सकना संभव है। इसमें धनिकों से पूरा सहयोग मिलना चाहिए। जैसे राजनीतिक स्वराज्य का प्रश्न काफी हद तक अहिंसा के मार्ग से सुलझा वैसे ही आर्थिक और सामाजिक समता का प्रश्न भी भारत में अहिंसा के मार्ग से सुलझेगा, ऐसी हम श्रद्धा रखें।

### कृति औ (२): आकलन कृति

**(१) कृति पूर्ण कीजिए।**

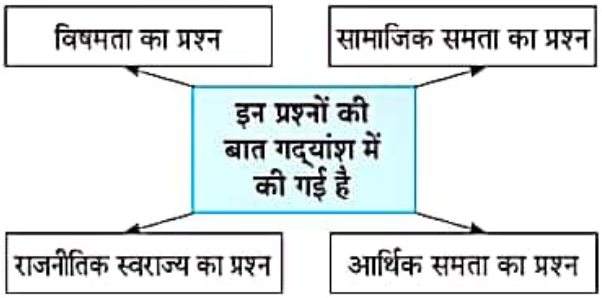


(ii)

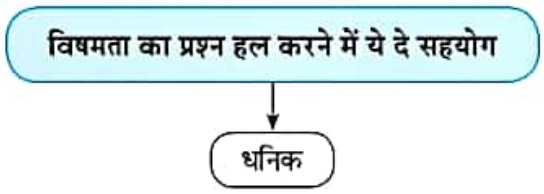


(iii)

**(२) गलत वाक्य सही करके फिर से लिखिए।**

**(i) विषमता का प्रश्न हिंसा के मार्ग से हल हो सकता है।**

उत्तर: विषमता का प्रश्न अहिंसा के मार्ग से हल हो सकता है।

### कृति औ (३): शब्द संपदा

**(१) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।**

(i) मदद (ii) पथ (iii) पद्धति (iv) प्रगति

उत्तर: (i) सहयोग (ii) मार्ग (i) परंपरा (ii) विकास

***(२) गद्यांश में प्रयुक्त विलोम शब्दों की जोड़ियाँ ढूँढ़कर लिखिए।**

उत्तर: (i) हिंसा × अहिंसा (ii) समता × विषमता

**(३) गद्यांश में प्रयुक्त उपसर्गयुक्त शब्द ढूँढ़िए और संबंधित उपसर्ग से अन्य शब्द बनाइए।**

उत्तर: स्वराज्य : उपसर्ग : स्व नया शब्द : स्वतंत्र, स्वजन

**(४) वचन बदलिए।**

(i) बुराई (ii) मान्यता

उत्तर: (i) बुराइयाँ (ii) मान्यताएँ

### कृति औ (४): स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'अहिंसा का महत्त्व' विषय पर अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: 'अहिंसा परमोधर्मः' अर्थात् अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है। अहिंसा का अर्थ है किसी की भी हिंसा न करना। किसी को भी बुरा नहीं कहना। सभी के साथ अच्छा व्यवहार करना। मनुष्य जीवन का मूलाधार अहिंसा है। अहिंसा में सबसे बड़ी शक्ति होती है।

इसी अहिंसा का प्रयोग करके गांधी जी ने भारत को अंग्रेजों के चंगुल से छुड़ाया था। अहिंसा धर्म का पालन करने से ही सिद्धार्थ गौतम भगवान बुद्ध बन गए थे। अहिंसा शत्रु का हृदय परिवर्तन करने की शक्ति रखता है। जो काम हिंसा से नहीं हो सकते हैं; वे अहिंसा के बल पर ही पूर्ण किए जाते हैं। अहिंसा की शक्ति किसी भी परिस्थिति में सशस्त्र शक्ति से सर्वश्रेष्ठ होती है। अहिंसा से व्यक्ति का मन शांति व आनंद का अनुभव करने लगता है। अहिंसा से ही योग की शुरुआत होती है।

## स्वाध्याय विषयक कृतियाँ

***(१) पाठ में प्रयुक्त 'इक' प्रत्ययुक्त शब्दों को ढूँढ़कर लिखिए तथा उनमें से किन्हीं चार का स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

उत्तर: (i) **'इक' प्रत्ययुक्त शब्द** : नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्राकृतिक

(ii) **किन्हीं चार प्रत्ययुक्त शब्द का स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग :**

(१) **नैतिक** : आज समाज से नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है।

(२) **बौद्धिक** : व्यक्ति अपनी बौद्धिक क्षमता के बल पर सभी कार्य कर सकता है।

(३) **सामाजिक** : किसी सामाजिक संस्था का सदस्य होना बहुत अच्छी बात है।

(४) **आर्थिक** : रामलाल की आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब है।

## भाषा बिंदु

***(१) निम्न वाक्यों में अधोरेखांकित शब्द समूह के लिए कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए।**

(i) करामत अली हौले-से लक्ष्मी से स्नेह करने लगा।

**वाक्य:** करामत अली हौले-से लक्ष्मी (की पीठ) पर **हाथ फेरने लगा।**

(ii) सार्वजनिक अस्पताल का खयाल आते ही मैं भयभीत हो गया।

**वाक्य:** सार्वजनिक अस्पताल का खयाल आते ही मैं **काँप उठा।**

(iii) क्या आपने मुझे अपमानित करने के लिए यहाँ बुलाया था?

**वाक्य:** क्या आपने मेरी **इज्जत उतारने** के लिए यहाँ बुलाया था?

(iv) सिरचन को बुलाओ, चापलूसी करता हुआ हाजिर हो जाएगा।

**वाक्य:** सिरचन को बुलाओ, **दुम हिलाता** हुआ हाजिर हो जाएगा।

(v) पंडित बुद्धिराम काकी को देखते ही क्रोध में आ गए।

**वाक्य:** पंडित बुद्धिराम काकी को देखते ही **तिलमिला** गए।

***(२) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका अर्थपूर्ण वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

(i) **गुजर-बसर करना** : आजीविका चलाना

**वाक्य:** रामू मजदूरी करके अपने परिवार का **गुजर-बसर करता** था।

(ii) **गला फाड़ना** : जोर-जोर-से चिल्लाना

**वाक्य:** राम **गला फाड़कर** सब्जियाँ बेच रहा था।

(iii) **कलेजे में हूक उठना** : मन में पीड़ा होना

**वाक्य:** अपने मृत बेटे की याद आते ही बुढ़िया के **कलेजे में हूक उठने लगती है।**

(iv) **सीना तानकर खड़े रहना** : तैयार हो जाना

**वाक्य:** दुश्मन के साथ लड़ने के लिए भारतीय सैनिक **सीना तानकर खड़े हो गए।**

(v) **टाँग अड़ाना** : अड़ंगा डालना

**वाक्य:** यदि तुम मेरे काम में **टाँग अड़ाने** की कोशिश करोगे तो मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।

(vi) **जेब ढीली होना** : पैसे खत्म होना

**वाक्य:** पाँच बच्चों को मेले में घुमाकर लाने के बाद रघू की **जेब ढीली हो गई।**

(vii) **निजात पाना** : छुटकारा पाना

**वाक्य:** परीक्षा से **निजात पाते** ही मैं भ्रमण पर निकला।

(viii) **फूट-फूटकर रोना** : बिलख-बिलख कर रोना

**वाक्य:** इकलौते बेटे की मृत्यु की खबर सुनकर माँ **फूट-फूट कर रोने लगी।**

(ix) **मन तरंगायित होना** : मन प्रफुल्लित होना

**वाक्य:** प्राकृतिक दृश्य देखकर मेरा **मन तरंगायित हो गया।**

(x) **मुँह लटकाना** : उदास हो जाना

**वाक्य:** पिता जी से डाँट मिलने पर विजय **मुँह लटकाकर बैठ गया।**

***(३) पाठ्यपुस्तक में आए मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

उत्तर: (i) **निर्वाह करना** - : किसान दिनभर खेत में श्रम करके अपना **जीवन-यापन करता** है।

(ii) **देखते रह जाना** - बच्चे जादूगर के जादू को बस **देखते रह गए।**

(iii) **शेखी बघारना** - अजय जब देखो तब अपनी **शेखी बघारता रहता है।**

(iv) **डींग मारना** - रमेश अपनी पढ़ाई को लेकर बड़ी **डींगे मारा करता था।**

(v) **बोलबाला होना** - आज के युग में स्मार्ट फोन का काफी **बोलबाला है।**

## उपयोजित लेखन

***(१) निम्न शब्दों के आधार पर कहानी लेखन कीजिए।**
**(मिट्टी, चाँद, खरगोश, कागज)**

**उत्तर :** चाँद का प्रतिबिंब

एक घना जंगल था। उस जंगल में तरह-तरह के प्राणी रहते थे। उस जंगल में एक खरगोश भी रहता था। वह दिखने में बहुत ही सुंदर एवं प्यारा था। उसका श्वेत वर्ण देखकर सभी प्राणी उससे ईर्ष्या करते थे। उसने मिट्टी में अपना बिल बनाया था।

खरगोश बहुत डरपोक था। वह हर दिन हरी घास खाता था। घास खाते समय हवा का झोंका आने पर वह डर जाता था और अपने बिल में घुस जाता था। पूर्णिमा की रात थी। आसमान में चंद्रमा उदित हो गया था। रात में चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश था। खरगोश को लगा कि अब दिन निकल आया है। क्यों न अब स्नान किया जाए, यह सोचकर वह तालाब की ओर बढ़ा। तालाब के पास आकर उसने देखा कि एक पूर्ण गोलाकार श्वेत रूप तालाब के पानी में गिर पड़ा है। उसने पहले ऐसा श्वेत वर्णिय गोल पानी में कभी नहीं देखा था। उसे लगा कि यह गोल आकार का कोई कागज का टुकड़ा होगा। पर उसने सोचा कि यदि वह कागज का टुकड़ा होता तो अब तक गल जाता। जरूर यह कोई जादुई पत्थर है। वह भयभीत हो गया और जोर-जोर से चिल्लाने लगा। उसकी चिल्लाहट सुनकर सभी प्राणी तालाब के किनारे आ पहुँचे। जब उन्हें खरगोश के चिल्लाने का कारण समझा तब वे सभी मिलकर खरगोश की मूर्खता पर हँसने लगे। उन्होंने कहा कि यह कोई गोल कागज या जादुई पत्थर नहीं है बल्कि यह चाँद का प्रतिबिंब है। यह सुनकर खरगोश लज्जित हो गया और उसे अपनी मूर्खता का भी एहसास हो गया। वह दुम दबाकर वहाँ से भाग निकला और अपने बिल में जाकर सो गया और उधर आसमान में चंद्रमा का प्रज्वलित रूप निशा को प्रकाशमय बनाने में व्यस्त था....।

**सीख :** सोच-समझकर कार्य करना चाहिए। जो बिना सोचे-समझे काम करता है, वह अंत में मूर्ख बन जाता है।

## संभाषणीय

*** वर्तमान युग में सभी बच्चों के लिए खेल-कूद और शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हैं। इस विषय पर अपना मत प्रस्तुत कीजिए।**

**उत्तर :** वर्तमान युग विज्ञान व तकनीकी का युग है। इस युग में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति हुई है। आज बच्चों के लिए सभी प्रकार की सुविधा उपलब्ध है। बच्चों के लिए खेल-कूद और शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हैं। भारत सरकार द्वारा सर्व शिक्षा अभियान चलाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत सभी बच्चों के लिए शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। लड़का-लड़की शिक्षा के जिस क्षेत्र में पढ़ाई करना चाहते हैं उस क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं। उन पर किसी भी प्रकार की अड़चन नहीं है। बच्चों को जिन खेलों में रूचि हैं उन खेलों में वे प्रगति कर सकते हैं। उसके लिए उन पर किसी भी प्रकार का बंधन नहीं है। आज जरूरी नहीं कि डॉक्टर का बच्चा ही डॉक्टर बनेगा। एक गरीब व्यक्ति का भी बेटा अपनी लगन और मेहनत के बल पर डॉक्टर बन सकता है और एक साधारण परिवार का लड़का भी क्रिकेटर बन सकता है। आज हमारे देश में खेल-कूद और शिक्षा के क्षेत्र में इतनी प्रगति हुई है कि प्रत्येक स्कूल में शिक्षा के साथ खेल-कूद को बढ़ावा दिया जा रहा है।

❖❖❖

# ८ छापा

*- ओमप्रकाश 'आदित्य' (१९३६-२००९)*

## कवि-परिचय

**जीवन-परिचय** : ओमप्रकाश 'आदित्य' जी का जन्म गुरुग्राम, हरियाणा में हुआ। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की उपाधि हासिल की। आप एक सफल हास्य-व्यंग्य कवि थे। आपको हिंदी की वाचिक परंपरा में हास्य-व्यंग्य का शिखर पुरुष कहा जाता है। आप छंदशास्त्र के भी ज्ञाता थे। इसी कारण काव्य की गहनतम संवेदना का आपको विशेष अनुभव है।

**प्रमुख कृतियाँ** : 'सितारों की पाठशाला' 'उल्लू का इंटरव्यू' 'इधर भी गधे हैं उधर भी गधे हैं' 'मॉडर्न शादी' 'गोरी बैठी छत पर' आदि।

## पद्य-परिचय

**हास्य-व्यंग्य कविता** : हास्य-व्यंग्य कविताएँ समाज में प्रचलित कुरीतियों एवं सामाजिक समस्याओं पर करारा व्यंग्य करती हैं और मनोरंजक हास्य भी उत्पन्न करती हैं।

**प्रस्तावना** : प्रस्तुत कविता 'छापा' एक हास्य-व्यंग्य कविता है। इस कविता के माध्यम से कवि ओमप्रकाश जी ने सामान्य आदमी की आर्थिक स्थिति को समाज के सामने प्रस्तुत किया है। साथ ही कवि ने यह भी दर्शाया है कि किस प्रकार आयकर विभाग के कर्मचारी लोगों के घर पर छापा डालकर सब चीजों की छान-बीन करते हैं।

## सारांश

'छापा' यह एक हास्य-व्यंग्यपरक कविता है। इस कविता के माध्यम से कवि ने आम आदमी की आर्थिक स्थिति का वर्णन किया है। कवि ने दर्शाया है कि आम आदमी के पास समुन्नत साधन नहीं होते हैं। उसके घर में खाली बरतनों के अलावा कुछ भी नहीं होता है। फिर भी आयकर विभाग के अधिकारी उसके घर पर छापा डालते हैं। उसके घर की सारी चीजों को अस्त-व्यस्त कर देते हैं, फिर भी उन्हें कुछ नहीं मिलता है। अंत में हारकर जाते समय वे सिर्फ क्षमा माँगते हुए कहते हैं कि उन्हें किसी ने तो गलत खबर दी थी। यही अधिकारी रईसों के घर जाकर कीमती चीजें अपनी हिरासत में लेते हैं। उन चीज़ों को वे सरकारी कार्यालय में जमा करते हैं। इसलिए कवि कहते हैं कि यदि आयकर विभाग के अधिकारी उन चीज़ों में से कुछ चीज़ों को जिनके घर में कुछ नहीं मिलता, ऐसे गरीब लोगों में बाँट दें तो बहुत ही बढ़िया हो जाएगा।

## शब्दार्थ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रोष | - | गुस्सा | कनस्तर | - | टीन का पीपा |
| अर्जित | - | कमाया हुआ | स्वर्ण | - | सोना |
| अर्थ | - | पैसा / धन | अनधिकृत | - | गैरकानूनी |
| तख्त | - | तख्तों की बनी हुई बड़ी चौकी | शयन कक्ष | - | बेड रूम |

## मुहावरे

**सिर धुनना** - पश्चाताप या शोक के कारण बहुत अधिक दुख प्रकट करना, पछताना।

## भावार्थ

- **मेरे घर छापा ..... बालों में आ रही है धीरे-धीरे।।**

कवि के घर पर आयकर विभाग का बहुत बड़ा छापा पड़ा। आयकर विभाग के कई अधिकारी उनके घर पर पधारे। घर में आते ही उन्होंने कवि से कहा, ''सोना कहाँ है?'' कवि ने बड़े ही सहज भाव से उत्तर दिया, ''सोना तो मेरी आँखों'' में है क्योंकि कई रातों से मैं ठीक से सोया नहीं हूँ।'' वे आग बबूला होकर बोले, ''हम स्वर्ण के बारे में बात कर रहे हैं।'' कवि ने भी जोश में आकर कहा, ''सुवर्ण तो मैंने अपनी कविताओं में बिखेरा है। उस सुवर्णों को मैं नहीं दे सकता।'' फिर उन्होंने झुँझलाकर कहा, ''तुम हमारी बात को ठीक से समझ ही नहीं पा रहे हो। हमें तुम्हारा अनिधकृत रूप से कमाया हुआ अर्थ चाहिए।'' यह सुनकर कवि ने हँसते हुए कहा, ''अर्थ मेरी नई कविताओं में समाया हुआ है। यदि आप उसे ढूँढ़ सकते हैं तो ढूँढ़ लें।'' अब उन्होंने कड़ककर कहा, ''चाँदी कहाँ है?'' कवि ने भी भड़ककर जवाब दिया, ''चाँदी मेरे बालों में धीरे-धीरे आ रही है। मेरे बाल आहिस्ता-आहिस्ता सफेद हो रहे हैं।''

- **वे उद्‌भ्रांत होकर ..... करुण रस समा गया।।**

कवि के घर पर आए आयकर विभाग के अधिकारियों ने कवि से उद्‌भ्रांत होकर पूछा, ''तुमने नोट कहाँ रखे हैं?'' कवि ने तपाक से उत्तर दिया, ''मैं नोट परीक्षा के एक महीने पहले तैयार करता हूँ।'' अब उन्हें गुस्सा आया। इसलिए उन्होंने गरजकर कहा, ''हम आपसे मुद्रा के बारे में पूछ रहे हैं। वह कहाँ है?'' कवि ने भी गरजकर कहा, ''आप मुद्राओं को मेरे चेहरे पर देख सकते हो।'' इसके बाद उन्होंने खड़े होकर कुछ सोचा और फिर वे कवि के शयन-कक्ष में घुस गए। वहाँ पर वे कवि के एक फटे हुए तकिये की रूई नोचकर देखने लगे। शायद उसमें रूपए हों। उन्होंने टूटी अलमारी को भी खोलकर देखा। रसोईघर में जो खाली पीपियाँ थीं उन्हें भी टटोलकर देखा। कवि के बच्चों की गुल्लक को भी टटोला। इतना सब कुछ टटोलने के बाद भी उनके हाथ कुछ नहीं लगा। कवि के घर का खाली जंगल देखकर उनका चेहरा मुरझा गया और उनके बीस सूची हृदय में रौद्र की जगह करुण रस समा गया।

- **वे बोले ..... तो डलवा दीजिए।।**

कवि के घर की पूरी तरह से छान-बीन करने के बावजूद कुछ भी न मिलने के कारण आयकर विभाग के अधिकारियों ने कवि से माफी माँगते हुए कहा कि किसी ने उन्हें गलत सूचना दे दी थी। अपनी असफलता पर वे मन ही मन पछता भी रहे थे। आखिर में वे अपना सिर झुकाकर वापिस जाने लगे तो कवि ने उन्हें जाने से रोका और कहा, ''आप अब अपना सिर मत धुनिए। मैं जो कह रहा हूँ उस बात की ओर ध्यान दीजिए। यदि आपको मेरे घर पर अधिक धन मिलता तो आप ले जाते लेकिन आप लोगों को मेरे घर पर कुछ नहीं मिला। इसलिए आप लोग अब मुझे कुछ न कुछ तो देकर जाइए। जिनके घर में सोने-चाँदी के पलंग एवं सोफे होते हैं, उन्हें आप निकलवा लेते हैं। यह बहुत ही अच्छी बात है। लेकिन जिनके घर में बैठने के लिए भी कुछ नहीं है उनके यहाँ कम से कम एक तख्ता तो डलवा दीजिए।

## MASTER KEY QUESTION SET - 4

**प्रश्न १ (ख) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति अ (१): आकलन कृति**

**(१) समझकर लिखिए।**

(i)

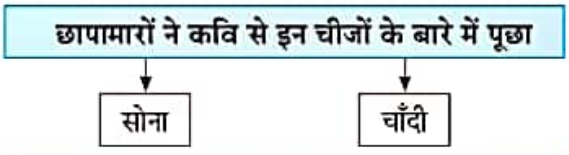


(ii)

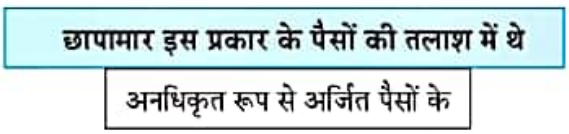


**(२) सही या गलत पहचानकर गलत वाक्य को सही करके फिर से लिखिए।**

(i) कवि के घर में चोर घुसे थे।

(ii) छापामार कवि से उसकी कविताओं की माँग कर रहे थे।

उत्तर: (i) **गलत** : कवि के घर में आयकर विभाग के अधिकारी घुसे थे।

(ii) **गलत** : छापामार कवि से सोना, अर्थ व चाँदी की माँग कर रहे थे।

*पद्यांश १ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ६५*

मेरे घर छापा पड़ा, छोटा नहीं बहुत बड़ा
वे आए, घर में घुसे, और बोले-सोना कहाँ है?
मैंने कहा-मेरी आँखों में हैं, कई रात से नहीं सोया हूँ
वे रोष में आकर बोले - स्वर्ण दो स्वर्ण!
मैंने जोश में आकर कहा- सुवर्ण मैंने अपने काव्य में बिखेरे हैं।
उन्हें कैसे दे दूँ। वे झुँझलाकर बोले, तुम समझे नहीं
हमें तुम्हारा अनधिकृत रूप से अर्जित अर्थ चाहिए
मैं मुसकाकर बोला, अर्थ मेरी नई कविताओं में है
तुम्हें मिल जाए तो ढूँढ़ लो
वे कड़ककर बोले, चाँदी कहाँ है?
मैं भड़ककर बोला-मेरे बालों में आ रही है धीरे-धीरे।।

### कृति अ (२) : आकलन कृति

(१) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए।

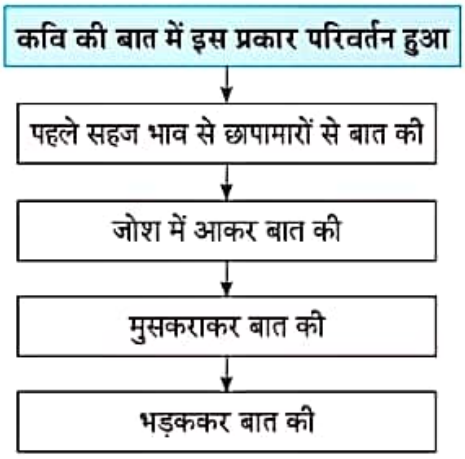


(२) कविता के आधार पर जोड़ियाँ मिलाइए।

| | अ | ब |
|---|---|---|
| * | अर्थ | कवि की नई कविताओं में |
| * | सुवर्ण | कवि की काव्य कृतियों में |
| * | चाँदी | कवि के बालों में |
| | छापा | कवि के घर पर |

(३) ऐसे प्रश्न बनाइए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों।

(i) अनधिकृत (ii) अर्जित

उत्तर: (i) छापामारों ने कवि से कौन-से रूप में कमाए हुए अर्थ की माँग की?

(ii) पद्यांश में अर्थ के लिए कौन-से विशेषण शब्द का प्रयोग हुआ?

### कृति अ (३) : भावार्थ

(१) निम्नलिखित पद्यांशों के भावार्थ लिखिए।

(१) मेरे घर छापा ..... झोंकों से।।

उत्तर: 'छापा' इस कविता के कवि श्री ओमप्रकाश हैं। उनके घर पर आयकर विभाग का बहुत बड़ा छापा पड़ा। आयकर विभाग के कई अधिकारी उनके घर पर पधारें। घर में आते ही उन्होंने कवि से कहा "सोना कहाँ है?" कवि ने बड़े ही सहज भाव से उत्तर दिया, "सोना तो मेरी आँखों में है क्योंकि कई रातों से मैं ठीक से सोया नहीं हूँ।" वे आग बबूला होकर बोले "हम सुवर्ण के बारे में बात कर रहे हैं।" कवि ने भी जोश में आकर कहा, "सुवर्ण तो मैंने अपनी कविताओं में बिखेरा है। उस सुवर्णों को मैं नहीं दे सकता।"

(२) वे झुँझलाकर ..... बालों में आ रही है धीरे-धीरे।।

उत्तर: 'छापा' इस कविता के कवि श्री ओमप्रकाश हैं। उनके घर पर आयकर विभाग का बहुत बड़ा छापा पड़ा। छापामारों ने कवि से झुँझलाकर कहा, "तुम हमारी बात को ठीक से समझ ही नहीं पा रहे हो। हमें तुम्हारा अनधिकृत रूप से कमाया हुआ अर्थ चाहिए।" यह सुनकर कवि ने मुसकराकर बताया, "अर्थ मेरी नई कविताओं में समाया हुआ है। यदि आप उसे ढूँढ़ सकते हैं तो ढूँढ़ लें।" अब उन्होंने कड़ककर कहा, "चाँदी कहाँ है?" कवि ने भी कड़ककर गरजते हुए जवाब दिया, "चाँदी मेरे बालों में धीरे-धीरे आ रही है। मेरे बाल आहिस्ता-आहिस्ता सफेद हो रहे हैं।"

### प्रश्न २ (आ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति आ (१) : आकलन कृति

*(१) संजाल पूर्ण कीजिए।

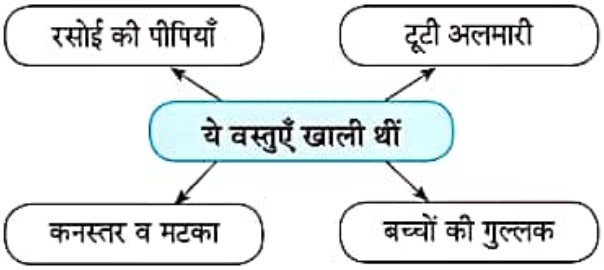


*(२) ऐसे प्रश्न बनाइए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों।

(i) अरण्यकांड (ii) शून्य-ब्रह्मांड

उत्तर: (i) कवि के घर में क्या देखकर छापामारों का खिला हुआ चेहरा मुरझा गया?

(ii) छापामारों को घर की वस्तुओं में क्या मिला?

*पद्यांश २ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ६५-६६*

वे उद्भ्रांत होकर बोले
यह बताओ तुम्हारे नोट कहाँ हैं?
परीक्षा से एक महीने पहले करूँगा तैयार
वे गरजकर बोले, हमारा मतलब आपकी मुद्रा से है
मैं लरजकर बोला,
मुद्राएँ आप मेरे मुख पर देख लीजिए
वे खड़े होकर कुछ सोचने लगे
फिर शयन कक्ष में घुस गए
और फटे हुए तकिये की रूई नोचने लगे
उन्होंने टूटी अलमारी को खोला
रसोई की खाली पीपियों को टटोला
बच्चों की गुल्लक तक देख डाली
पर सब में मिला एक ही तत्व खाली...
कनस्तरों को, मटकों को ढूँढ़ा सब में मिला शून्य-ब्रह्मांड
देखकर मेरे घर में ऐसा अरण्यकांड
उनका खिला हुआ चेहरा मुरझा गया
और उनके बीस सूची हृदय में
रौद्र की जगह करुण रस समा गया।

### कृति ख (२) : आकलन कृति

(१) कविता के आधार पर जोड़ियाँ मिलाइए।

| | अ | ब |
|---|---|---|
| * | मुद्रा | कवि के चेहरे पर |
| | रूई | फटे तकिये की |
| | शून्य-ब्रह्मांड | कनस्तरों और मटकों में |
| | करुण रस | छापामारों के बीस सूची हृदय में |

*(२) कृति पूर्ण कीजिए।

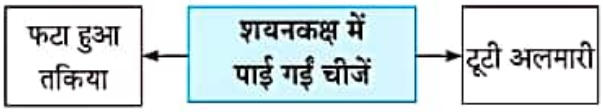


### कृति आ (३) : भावार्थ

(१) निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।

(१) वे उद्भ्रांत होकर ..... मुख पर देख लीजिए।

उत्तर : 'छापा' इस कविता के कवि श्री ओमप्रकाश हैं। उनके घर पर आयकर विभाग का बहुत बड़ा छापा पड़ा। कवि के घर पर आए आयकर विभाग के अधिकारियों ने कवि से उद्भ्रांत होकर पूछा, ''तुमने नोट कहाँ रखे हैं?'' कवि ने तपाक से उत्तर दिया, ''मैं नोट परीक्षा के एक महीने पहले तैयार करता हूँ।'' अब उन्हें गुस्सा आया। उन्होंने गरजकर कहा, ''हम आपसे मुद्रा के बारे में पूछ रहे हैं और वह कहाँ है?'' कवि ने भी लरजकर कहा, ''आप मुद्राओं को मेरे चेहरे पर देख सकते हो।''

(२) वे खड़े होकर ..... करुण रस समा गया।

उत्तर : 'छापा' इस कविता के कवि श्री ओमप्रकाश हैं। उनके घर पर आयकर विभाग का बहुत बड़ा छापा पड़ा। छापामारों ने खड़े होकर कुछ सोचा और फिर वे कवि के शयन कक्ष में घुस गए। वहाँ पर वे कवि के एक फटे हुए तकिये की रूई नोचकर देखने लगे। शायद उसमें रुपए हों। उन्होंने टूटी अलमारी को भी खोलकर देखा। रसोईघर में जो खाली पीपियाँ थीं उन्हें भी टटोलकर देखा। कवि के बच्चों के गुल्लक को भी टटोला। इतना सब कुछ टटोलने के बाद भी उनके हाथ कुछ नहीं लगा। कवि के खाली घर में कुछ था ही नहीं। उन्होंने टीन के पीपे एवं मटके को भी टटोला। फिर भी उनके हाथ कुछ नहीं लगा। कवि के घर का खाली जंगल देखकर उनका चेहरा मुरझा गया और उनके बीस सूची हृदय में रौद्र की जगह करुण रस समा गया।

### प्रश्न ३ (इ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति इ (१) : आकलन कृति

*(१) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए।

(२) कृति पूर्ण कीजिए।

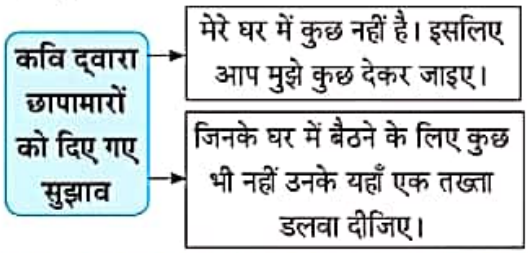


*पद्यांश ३ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ६६*

वे बोले, क्षमा कीजिए, हमें किसी ने गलत सूचना दे दी
अपनी असफलता पर वे मन ही मन पछताने लगे
सिर झुकाकर वापिस जाने लगे
मैंने उन्हें रोककर कहा, ठहरिए!
सिर मत धुनिए मेरी एक बात सुनिए
मेरे घर में अधिक धन होता तो आप ले जाते
अब जब मेरे घर में बिल्कुल धन नहीं है
तो आप मुझे कुछ देकर क्यों नहीं जाते
जिनके घर में सोने चाँदी के पलंग और सोफे हैं
उन्हें आप निकलवा लेते हैं
बहुत अच्छी बात है निकलवा लीजिए
पर जिनके घर में बैठने को कुछ भी नहीं
उनके यहाँ कम-से-कम
एक तख्ता तो डलवा दीजिए ।

### कृति इ (२) : आकलन कृति

*(१) ऐसे प्रश्न बनाइए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों-

(i) तख्त (ii) असफलता

उत्तर : (i) पद्यांश में प्रयुक्त एक साधन, जिस पर बैठा जाता है?

(ii) छापामार किस पर मन ही मन पछताने लगे?

(२) समझकर वाक्य पूर्ण कीजिए।

(i) कवि के घर पर धन होता → तो छापामार ले जाते

(ii) जिनके घर में सोने चाँदी के पलंग व सोफे होते हैं → उन्हें छापामार निकलवा लेते हैं।

*(३) **सोना-चाँदी, अर्थ और मुद्रा इन शब्दों के विभिन्न अर्थ बताते हुए कविता के आधार पर इनके अर्थ स्पष्ट कीजिए।**

(i) **सोना** : नींद : एक क्रिया, एक धातु
**कविता के आधार पर अर्थ** : सुवर्ण

(ii) **चाँदी** : स्वच्छ व शुभ, एक धातु
**कविता के आधार पर अर्थ** : रजत

(iii) **अर्थ** : मतलब, पैसा या धन
**कविता के आधार पर अर्थ** : पैसा

(iv) **मुद्रा** : नोट या रुपए चेहरे का भाव
**कविता के आधार पर अर्थ** : नोट

(४) **समझकर वाक्य पूर्ण कीजिए।**

*(i)



*(ii)



**कृति इ (३): भावार्थ**

(१) **निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।**

(१) **वे बोले ............................ देकर क्यों नहीं जाते।**

**उत्तर:** 'छापा' इस कविता के कवि श्री ओमप्रकाश हैं। उनके घर पर आयकर विभाग का बहुत बड़ा छापा पड़ा। उन्होंने कवि के घर की पूरी तरह से छान-बीन की; परंतु उन्हें कुछ भी न मिला। इसलिए उन्होंने कवि से माफी माँगते हुए कहा कि किसी ने उन्हें गलत सूचना दे दी थी। अपनी असफलता पर वे मन ही मन पछता भी रहे थे। आखिर में वे अपना सिर झुकाकर वापिस जाने लगे तो कवि ने उन्हें जाने से रोका और कहा, ''आप अब अपना सिर मत धुनिए। मैं जो कह रहा हूँ उस बात की ओर ध्यान दीजिए। यदि आपको मेरे घर पर अधिक धन मिलता, तो आप ले जाते लेकिन आप लोगों को मेरे घर पर कुछ नहीं मिला। इसलिए आप लोग अब मुझे कुछ न कुछ तो देकर जाइए।''

(२) **जिनके घर में ........................ तो डलवा दीजिए।**

**उत्तर:** 'छापा' इस कविता के कवि श्री ओमप्रकाश हैं। उनके घर पर आयकर विभाग का बहुत बड़ा छापा पड़ा। उन्होंने कवि के घर की पूरी तरह से छान-बीन की परंतु उन्हें कुछ भी न मिला। इसलिए उन्होंने कवि से माफी माँगते हुए कहा कि किसी ने उन्हें गलत सूचना दे दी थी। तब कवि ने उनसे कहा, ''जिनके घर में सोने-चाँदी के पलंग एवं सोफे होते हैं, उन्हें आप निकलवा लेते हैं। यह बहुत ही अच्छी बात है। लेकिन जिनके घर में बैठने के लिए भी कुछ नहीं हैं उनके यहाँ कम से कम एक बड़ी चौकी (तख्ता) तो डलवा दीजिए।''

(३) **बहुत अच्छी बात ...................... तो डलवा दीजिए।**

**उत्तर:** 'छापा' इस कविता के कवि श्री ओमप्रकाश हैं। उनके घर पर आयकर विभाग का बहुत बड़ा छापा पड़ा। उन्होंने कवि के घर की पूरी तरह से छान-बीन की; परंतु उन्हें कुछ भी न मिला। इसलिए उन्होंने कवि से माफी माँगते हुए कहा कि किसी ने उन्हें गलत सूचना दे दी थी। तब कवि ने उनसे कहा, ''जिनके घर में सोने-चाँदी के पलंग एवं सोफे होते हैं, उन्हें आप निकलवा लेते हैं। यह बहुत ही अच्छी बात है। लेकिन जिनके घर में बैठने के लिए भी कुछ नहीं हैं उनके यहाँ कम से कम एक बड़ी चौकी (तख्ता) तो डलवा दीजिए।''

## उपयोजित लेखन

*(१) **अपने विद्यालय में मनाए गए किसी समारोह का वृत्तांत लेखन कीजिए।**

**उत्तर:** **दिनांक १५ सितंबर २०१७ मुंबई:** शारदा विद्यालय, मुंबई में दिनांक १४ सितंबर २०१७ के दिन सुबह ९:०० बजे बाल-दिवस के अवसर पर विद्यालय के सभी शिक्षकों एवं प्रधानाचार्य जी ने छात्रों को हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। सुबह ठीक ९ बजे विद्यालय के सभागार में समारोह की शुरूआत हुई। सर्वप्रथम प्रधानाचार्य श्री. राजेश शिंदे जी ने सभी छात्रों को संबोधित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। पश्चात विद्यालय की कुछ महिला अध्यापिकाओं ने नृत्य प्रस्तुत कर सभी छात्रों को मंत्रमुग्ध कर दिया। जैसे ही नृत्य खत्म हुआ वैसे ही छात्रों के लिए कई प्रकार के खेलों का आयोजन किया गया। खेल खेलते समय छात्रों का उत्साह देखने लायक था। सभी छात्रों ने बाल–दिवस के अवसर पर विद्यालय में उपस्थित सभी शिक्षकों को धन्यवाद दिए। इस प्रकार १ बजे समारोह खत्म हुआ।

(२) **निम्न मुद्दों के आधार पर विज्ञापन तैयार कीजिए।**

उत्तर:

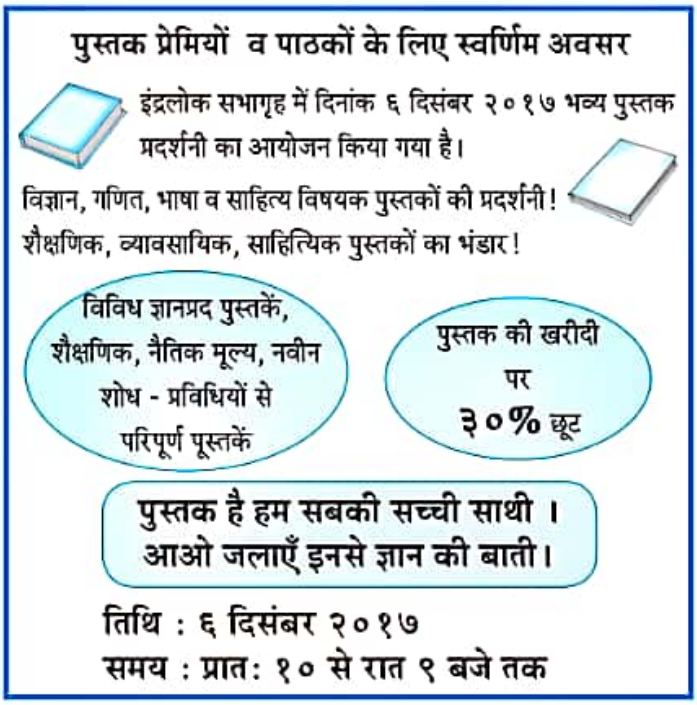


**(३) 'कर जमा करना, देश के विकास को गति देना है' विषय पर अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: कर जमा करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। सरकार अपनी गतिविधियों, निधि और जनता सेवा के लिए इसी कर की राशि का उपयोग करती है। भारत के राष्ट्रीय विकास में आय के रूप में कर की राशि का उपयोग होता है। कर जमा करके व्यापार और उद्योग के प्रतिस्पर्धात्मक युग में सुधार लाया जा सकता है। कर की राशि द्वारा सरकार विविध उपक्रम क्रियान्वित करती हैं। उदा. - सब्सीडी देना, पोस्ट ऑफिस के लिए अनुदान करना, सार्वजनिक क्षेत्रों में प्रगति के कार्य करना (उद्यान निर्माण, विविध सरकारी विद्यालयों का निर्माण, रेल्वे-विकास कार्य) आदि। सेवानिवृत्त लोगों की पेंशन भी कर की राशि से ही अदा की जाती है।

अत: स्पष्ट है कि कर जमा करके हम देश के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

❖❖❖

# ५ ईमानदारी की प्रतिमूर्ति

*- सुनील शास्त्री (१९५०)*

## लेखक-परिचय

**जीवन-परिचय** : लेखक सुनील शास्त्री जी भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी के पुत्र हैं। ये कवि एवं लेखक भी हैं। १९८० में आप सक्रिय राजनीति में आए। इन्हें कविता, संगीत व सामाजिक कार्यों से विशेष लगाव है।

**प्रमुख कृतियाँ** : 'लालबहादुर शास्त्री: मेरे बाबू जी' तथा सामाजिक व आर्थिक बदलाव पर विविध पत्र-पत्रिकाओं में लेखन।

## गद्य-परिचय

**संस्मरण** : प्रस्तुत पाठ एक संस्मरण है। संस्मरण अतीत की घटनाओं पर आधारित होता है। जब किसी व्यक्ति या घटना के साथ जुड़ी हुई यादों पर से समय का आवरण हट जाता है और अतीत की घटनाएँ चलचित्र की भाँति साकार होकर कलम बद्ध हो जाती है तो संस्मरण का आविष्कार होता है।

**प्रस्तावना** : 'ईमानदारी की प्रतिमूर्ति' इस पाठ के माध्यम से लेखक सुनील शास्त्री ने अपने पिता के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालकर उनके 'सादा जीवन-उच्च विचार' वाले दृष्टिकोण से पाठकों को अवगत कराया है।

## सारांश

'ईमानदारी की प्रतिमूर्ति' इस पाठ के लेखक सुनील शास्त्री हैं। वे स्वयं लालबहादुर शास्त्री जी के बेटे हैं। उन्होंने प्रस्तुत पाठ में अपने पिता जी की यादों को ताजा किया है। उनके पिता जी आदर्शवादी व गांधीवादी थे। वे गांधी जी के सिद्धांतों का पालन करते थे। 'सादा जीवन-उच्च विचार' यही उनके जीवन का वचन था। प्रधानमंत्री बनने के बावजूद भी उन्होंने अपनी सादगी एवं ईमानदारी को जीवित रखा। वे स्वभाव से नम्र थे। उनके व्यक्तित्व में आकर्षकता थी। वे सामने वाले पर अपने विचारों का प्रभाव निर्माण करते थे। उन्होंने अपने दोनों बेटे अनिल व सुनील को अच्छे संस्कार दिए। वे बहुत ही संवेदनशील थे। दूसरों की मजबूरी उनसे देखी नहीं जाती थी। इसलिए वे अपनी पत्नी से गहने माँगते हैं; ताकि गरीब लोगों के घर में चूल्हा जल सके। लेखक ने इस पाठ में अपने पिता के साथ बिताए हुए पलों को हसीन कहा है क्योंकि उनके पिता ने उनके व्यक्तित्व को सजाया-सँवारा है। अपने बच्चों से नादानी होने पर वे स्वयं इंपाला गाड़ी के पेट्रोल का किराया देने के लिए तैयार होते हैं। वे खादी के कपड़े फटने के बाद भी पहनते हैं। इन छोटे-छोटे प्रसंगों के द्वारा लेखक ने पाठकों के सामने अपने पिता जी में निहित मानवीय गुणों के दर्शन करवाए हैं।

## शब्दार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रतिमूर्ति | - प्रतिरूप | रूलाई | - रोना |
| अभाव | - किसी चीज का न होना, कमी | दस्तक | - दरवाजे पर आवाज करने की क्रिया |
| रेजिडेंस | - निवास-स्थान | इजाजत | - आज्ञा, स्वीकृति |
| हिदायत | - सलाह या निर्देश | बेतरतीब | - अस्त-व्यस्त, बिखरा हुआ |
| झुँझलाना | - चिढ़ना या क्रोधित होना | किफायत | - मितव्यय |
| इंपाला शेवरलेट | - महँगी ब्रैंड की आलीशान गाड़ी | संतरी | - पहरेदार |

## मुहावरे

| | | | |
|---|---|---|---|
| **फूट-फूटकर रोना** | - जोर-जोर से रोना। | **दस्तक देना** | - दरवाजा खटखटाना। |
| **देखते रह जाना** | - आश्चर्यचकित होना। | | |

## MASTER KEY QUESTION SET - 5

**प्रश्न १ (अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति अ (१) : आकलन कृति**

**(१) उत्तर लिखिए।**

**(i) उन दिनों प्रधानमंत्री को यह गाड़ी मिलती थी -**

उत्तर: इंपाला शेवरलेट

**(ii) लेखक के पिता प्रधानमंत्री बनने से पहले इस राज्य के गृहमंत्री थे -**

उत्तर: उत्तर प्रदेश

**(२) किसने, किससे कहा?**

**(i) ''मैं तो इसे चलाऊँगा नहीं।''**

उत्तर: लेखक के बड़े भाई अनिल ने लेखक से कहा।

**(ii) ''हम लोग वापस आते हैं अभी।''**

उत्तर: लेखक ने ड्राइवर से कहा।

*गद्यांश: १ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ६८*

हमने अपने जीवन में बाबू जी के रहते अभाव नहीं देखा। उनके न रहने के बाद जो कुछ मुझपर बीता, वह एक दूसरी तरह का अभाव था कि मुझे बैंक की नौकरी करनी पड़ी। लेकिन उससे पूर्व बाबू जी के रहते मैं जब जन्मा था तब वे उत्तर प्रदेश में पुलिस मंत्री थे। उस समय गृहमंत्री को पुलिस मंत्री कहा जाता था। इसलिए मैं हमेशा कल्पना किया करता था कि हमारे पास ये छोटी गाड़ी नहीं, बड़ी आलीशान गाड़ी होनी चाहिए। बाबू जी प्रधानमंत्री हुए तो वहाँ जो गाड़ी थी वह थी, इंपाला शेवरलेट। उसे देख-देख बड़ा जी करता कि मौका मिले और उसे चलाऊँ। प्रधानमंत्री का लड़का था। कोई मामूली बात नहीं थी। सोचते-विचारते, कल्पना की उड़ान भरते एक दिन मौका मिल गया। धीरे-धीरे हिम्मत भी खुल गई थी ऑर्डर देने की। हमने बाबू जी के निजी सचिव से कहा - "सहाय साहब, जरा ड्राइवर से कहिए, इंपाला लेकर रेजिडेंस की तरफ आ जाएँ।"

दो मिनट में गाड़ी आकर दरवाजे पर लग गई। अनिल भैया ने कहा- ''मैं तो इसे चलाऊँगा नहीं। तुम्हीं चलाओ।"

मैं आगे बढ़ा। ड्राइवर से चाभी माँगी। बोला- "तुम बैठो, आराम करो, हम लोग वापस आते हैं अभी।"

गाड़ी ले हम चल पड़े। क्या शान की सवारी थी। याद कर बदन में झुरझुरी आने लगी है। जिसके यहाँ खाना था, वहाँ पहुँचा। बातचीत में समय का ध्यान नहीं रहा। देर हो गई।

याद आया बाबू जी आ गए होंगे।

**कृति अ (२) : आकलन कृति**

**(१) सही पर्याय चुनकर उत्तर लिखिए।**

**(i) लेखक और उनके भाई को वापस घर आने में देर हो गई -**

(i) क्योंकि वे अपने मित्रों को आलीशान गाड़ी के बारे में विस्तार से बता रहे थे।

(ii) क्योंकि उन्हें घर से निकलने में ही देरी हो गई थी।

(iii) क्योंकि वे जिसके यहाँ पर खाना खाने के लिए गए थे वहाँ पर बातचीत में समय का ध्यान नहीं रहा।

उत्तर: क्योंकि वे जिसके यहाँ पर खाना खाने के लिए गए थे वहाँ पर बातचीत में समय का ध्यान नहीं रहा।

**(२) सत्य या असत्य पहचानकर लिखिए।**

**(i) सहाय साहब लेखक के पिता के निजी सचिव थे।**

**(ii) लेखक ड्राइवर के साथ बाहर घूमने के लिए गए।**

उत्तर: (i) सत्य (ii) असत्य

**कृति अ (३) : शब्द संपदा**

**(१) मानक वर्तनी के अनुसार शब्द शुद्ध कीजिए।**

**(i) बैण्क (ii) मन्त्री**

उत्तर: (i) बैंक (ii) मंत्री

**(२) समानार्थी शब्द लिखिए।**

**(i) बातचीत (ii) दरवाजा (iii) मौका (iv) बदन**

उत्तर: (i) वार्तालाप (ii) किवाड़ (iii) अवसर (iv) शरीर

**(३) वचन बदलिए।**

**(i) गाड़ी (ii) कल्पना**

उत्तर: (i) गाड़ियाँ (ii) कल्पनाएँ

**(४) नीचे दिए हुए शब्द से कृदंत शब्द बनाइए।**

**(i) झुरझुरी**

उत्तर: झुरझुरना

**कृति अ (४) : स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) 'लेखक ने अपने पिता को बिना बताए उनके कार्यालय की गाड़ी निजी कार्य के लिए आने-जाने के लिए इस्तेमाल की।' आपके अनुसार क्या लेखक ने सही किया या गलत? कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: लेखक ने अपने पिता को बिना बताए उनके कार्यालय की गाड़ी निजी काम के लिए आने-जाने के लिए इस्तेमाल की। मेरे अनुसार यह गलत है। लेखक प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री जी के बेटे थे। लालबहादुर शास्त्री एक कर्त्तव्यनिष्ठ और ईमानदार प्रधानमंत्री थे। उन्हें इस प्रकार का व्यवहार बिलकुल रास नहीं आता। लेखक ने कल्पना की उड़ान भरते हुए जो कुछ सोचा समझा था वह सब कुछ निरर्थक था। कार्यालय की गाड़ी कार्यालयीन काम के लिए ही उपयोग की जानी चाहिए। उसे कोई भी यदि निजी कार्य के लिए उपयोग करता हो, तो यह गलत है। लेखक को इतना कुछ करने से पहले अपने आदर्शवादी पिता के बारे में सोचना चाहिए था।

**प्रश्न २ (आ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति आ (१): आकलन कृति**

**(१) कारण लिखिए।**

**(i) लेखक ने संतरी को सैलूट-वैलूट न करने की हिदायत दी।**

उत्तर: लेखक अपने साथ पिता के कार्यालय की गाड़ी पिता को बिना बताए लेकर गए थे और उन्हें घर आने में देरी भी हो गई थी। संतरी के सैलूट-वैलूट के चक्कर में घर के गेट के पास आवाज न हो तथा पिता जी को उनके आने का पता न चले, इसलिए लेखक ने संतरी को सैलूट-वैलूट न करने की हिदायत दी।

**(ii) लेखक ने अपनी माँ से ऐसा क्यों कहा कि वह सुबह देर तक सोएगा।**

उत्तर: माँ द्वारा लेखक को पता चला कि बाबू जी ने उसके बारे में पूछताछ की है और सुबह बाबू जी कुछ न कुछ कहेंगे। इस कारण उनके कार्यालय जाने तक वह सोता रहेगा और फिर सारा मामला शांत हो जाएगा। इसलिए उसने माँ से कहा कि वह सुबह देर तक सोएगा।

*गद्यांश: २ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ६८-६९*

वापस घर आ फाटक से पहले ही गाड़ी रोक दी। उतरकर गेट तक आया। संतरी को हिदायत दी। यह सैलूट-वैलूट नहीं, बस धीरे से गेट खोल दो। वह आवाज करे तो उसे बंद मत करो, खुला छोड़ दो।

बाबू जी का डर। वह खट-पट सैलूट मारेगा तो बेहतर की आवाज होगी और फिर गेट की आवाज से बाबू जी को हम लोगों के लौटने का अंदाजा हो जाएगा। वे बेकार में पूछताछ करेंगे। अभी बात ताजा है। सुबह तक बात में पानी पड़ चुका होगा। संतरी से जैसा कहा गया, उसने किया। दबे पैर पीछे किचन के दरवाजे से अंदर घुसा। जाते ही अम्मा मिलीं।

पूछा - "बाबू जी आ गए? कुछ पूछा तो नहीं?"

बोली - "हाँ, आ गए। पूछा था। मैंने बता दिया।"

आगे कुछ कहने की हिम्मत नहीं पड़ी, यह जानने-सुनने की बाबू जी ने क्या कहा। फिर हिदायत दी-सुबह किसी को कमरे में मत भेजिएगा। रात देर हो गई। सुबह देर तक सोना होगा।

सुबह साढ़े पाँच-पौने छह बजे किसी ने दरवाजा खटखटाया। नींद टूटी। मैंने बड़ी तेज आवाज में कहा- "देर रात को आया हूँ, सोना चाहता हूँ, सोने दो।"

यह सोचकर कि कोई नौकर चाय लेकर आया होगा जगाने।

लेकिन दरवाजे पर दस्तक फिर पड़ी। झुँझलाता जोर से बिगड़ने के मूड में दरवाजे की तरफ बढ़ा बड़ाबड़ाता हुआ। दरवाजा खोला। पाया, बाबू जी खड़े हैं। हमें कुछ न सूझा। माफी माँगी। बेध्यानी में बात कह गया हूँ। वे बोले- "कोई बात नहीं, आओ-आओ। हम लोग साथ-साथ चाय पीते हैं।"

हमने कहा- "ठीक है!"

**कृति आ (२): आकलन कृति**

**(१) निम्नलिखित वाक्यों को उचित क्रम के अनुसार लिखिए।**

**(i) लेखक ने माँ से कहा कि वह सुबह देर तक सोएगा।**

**(ii) लेखक के दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी।**

**(iii) लेखक ने संतरी को हिदायत दी।**

**(iv) लेखक दबे पैर पीछे किचन के दरवाजे से अंदर घुसा।**

उत्तर: (i) लेखक ने संतरी को हिदायत दी।

(ii) लेखक दबे पैर पीछे किचन के दरवाजे से अंदर घुसा।

(iii) लेखक ने माँ से कहा कि वह सुबह देर तक सोएगा।

(iv) लेखक के दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी।

**(२) गद्यांश पढ़कर ऐसे दो प्रश्न बनाइए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों:**

**(i) नौकर (ii) अम्मा**

उत्तर: (i) लेखक को दरवाजेपर किसके आने का अंदेशा हुआ?

(ii) दबे पैर पीछे किचन के दरवाजे से अंदर घुसते ही लेखक को कौन मिली?

**कृति आ (३): शब्द संपदा**

**(१) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।**

**(i) सलाह (ii) साहस**

उत्तर: (i) हिदायत (ii) हिम्मत

**(२) नीचे दिए हुए शब्द से कृदंत शब्द बनाइए।**

**(i) बड़बड़ाता (ii) झुँझलाता**

उत्तर: (i) बड़बड़ाना (ii) झुँझलाना

**(३) नीचे दिए हुए वाक्यों में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए।**

**(i) माँ सुबह किसी को कमरे में मत भेजिएगा मुझे सोना है**

उत्तर: ''माँ, सुबह किसी को कमरे में मत भेजिएगा। मुझे सोना है।''

**(ii) हाय राम अब क्या होगा पिता जी को सब कुछ पता चल गया है**

उत्तर: ''हाय राम! अब क्या होगा? पिता जी को सब कुछ पता चल गया है।''

**कृति आ (४): स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) 'जब आपसे गलती होती है तब आप क्या करते हैं?' अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: गलती किससे नहीं होती। वह तो सबसे होती है। सभी बच्चे गलती करते हैं। गलतियाँ जाने-अनजाने में होती रहती हैं। जब मैं कोई गलती करता हूँ तब सर्वप्रथम मुझे बहुत डर लगता है। सबसे पहले ख्याल आता है कि अब पिता जी क्या कहेंगे? उनका सामना अब मैं कैसे करूँ? कोई चारा न देखकर मैं अपनी गलती

को छिपाने का प्रयास करता हूँ। पर लाख कोशिश करने के बावजूद मैं उसे छिपाने में असमर्थ हो जाता हूँ। मन में बार-बार प्रश्न उठता रहता है यदि किसी को पता चलेगा तो अपना क्या हश्र होगा? फिर मैं चुपचाप अपनी गलती को सुधारने का प्रयास करता हूँ।

**प्रश्न ३ (इ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति इ (१): आकलन कृति**

**(१) आकृति पूर्ण कीजिए।**

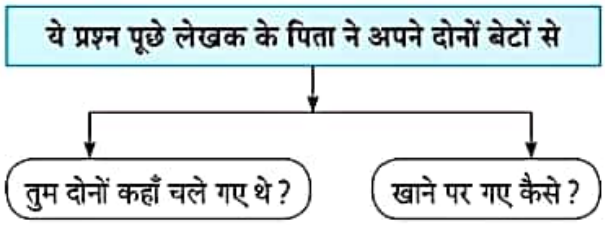


**(२) कृति पूर्ण कीजिए।**

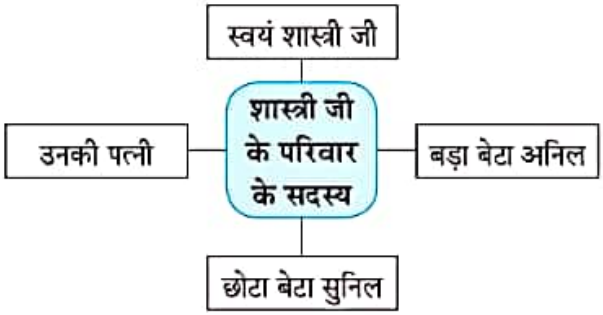


*गद्यांश: ३ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ६९-७०*

बस जल्दी-जल्दी हाथ-मुँह धो चाय के लिए टेबल पर जा पहुँचा। लगा, उन्हें सारी रामकहानी मालूम है पर उन्होंने कोई तर्क नहीं किया। न कुछ जाहिर होने दिया।

कुछ देर बाद चाय पीते-पीते बोले- "अम्मा ने कहा, तुम लोग आ गए हो, पर तुम कहते हो रात बड़ी देर को आए। कहाँ चले गए थे?"

जवाब दिया- "हाँ, बाबू जी! एक जगह खाने पर चले गए थे।"

उन्होंने आगे प्रश्न किया- "लेकिन खाने पर गए तो कैसे? जब मैं आया तो फिएट गाड़ी गेट पर खड़ी थी। गए कैसे?"

कहना पड़ा- "हम इंपाला शेवरलेट लेकर गए थे।"

बोले - "ओह हो, तो आप लोगों को बड़ी गाड़ी चलाने का शौक है।"

बाबू जी खुद इंपाला का प्रयोग न के बराबर करते थे और वह किसी 'स्टेट गेस्ट' के आने पर ही निकलती थी। उनकी बात सुन मैंने अनिल भैया की तरफ देख आँख से इशारा किया। मैं समझ गया था कि यह इशारा इजाजत का है। अब हम उसका आए दिन प्रयोग कर सकेंगे।

चाय खत्म कर उन्होंने कहा- "सुनील, जरा ड्राइवर को बुला दीजिए।"

मैं ड्राइवर को बुला लाया। उससे उन्होंने पूछा- "तुम लॉग बुक रखते हो न?"

उसने 'हाँ' में उत्तर दिया। उन्होंने आगे कहा- "एंट्री करते हो?"

"कल कितनी गाड़ी इन लोगों ने चलाई?"

वह बोला- "चौदह किलोमीटर।"

उन्होंने हिदायत दी- "उसमें लिख दो, चौदह किलोमीटर निजी उपयोग।"

तब भी उनकी बात हमारी समझ में नहीं आई फिर उन्होंने अम्मा को बुलाने के लिए कहा। अम्मा जी के आने पर बोले- "सहाय साहब से कहना, साठ पैसे प्रति किलोमीटर के हिसाब से पैसे जमा करवा दें।"

**कृति इ (२) : आकलन कृति**

**(१) सही या गलत पहचानकर वाक्य सही करके लिखिए।**

**(i) लालबहादुर शास्त्री इंपाला का प्रयोग स्वयं के कार्यों के लिए करते थे।**

उत्तर: गलत: लालबहादुर शास्त्री इंपाला का प्रयोग न के बराबर करते थे।

**(ii) पिता जी के कहने पर अनिल ने जाकर ड्राइवर को बुलाया:**

उत्तर: गलत: पिता जी के कहने पर सुनील ने जाकर ड्राइवर को बुलाया।

**(२) किसने, किससे कहा?**

**(i) ''चौदह किलोमीटर''**

उत्तर: ड्राइवर ने लेखक के पिता जी से कहा।

**(ii) ''तुम लोग लॉग बुक रखते हो न?''**

उत्तर: लेखक के पिता जी ने ड्राइवर से पूछा।

**कृति इ (३) : शब्द संपदा**

**(१) गद्यांश में से शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए।**

उत्तर: (i) जल्दी - जल्दी (ii) हाथ - मुँह

**(२) विलोम शब्द लिखिए।**

(i) जाहिर × ..... (ii) निजी × .....

(iii) जमा × ..... (iv) प्रश्न × .....

उत्तर: (i) गुप्त (ii) सार्वजनिक (iii) खर्च (iv) उत्तर

**(३) गद्यांश में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द लिखिए।**

उत्तर: (i) स्टेट गेस्ट (ii) टेबल (iii) एंट्री (iv) गेट (v) इंपाला शेवरलेट

**कृति इ (४) : स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) 'पिता अपने बच्चों द्वारा की गई गलती को सुधारने में उनकी मदद करता है।' इस पर अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: पिता का स्थान बच्चों के लिए सर्वश्रेष्ठ होता है। पिता अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देता है। वह अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देता है। उनमें मानवीय गुणों का संचार हो इसके लिए उन्हें स्कूल भेजता

है। एक पिता बच्चों द्वारा हुई गलतियों को ठीक से समझकर उन्हें सुधरने का मौका देता है। अपने बच्चों से फिर से ऐसी गलती न हो इसके लिए उनके समक्ष स्वयं अच्छा आदर्श निर्माण करता है। वह अपने बच्चों को सच्चाई, नैतिकता, ईमानदारी आदि गुणों से अवगत कराता है। स्पष्ट है कि पिता अपने बच्चों द्वारा की गई गलती को सुधारने में उनकी मदद करता है।

**प्रश्न ४ (इ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति इ (१) : आकलन कृति**

**(१) आकृति पूर्ण कीजिए।**

(i)

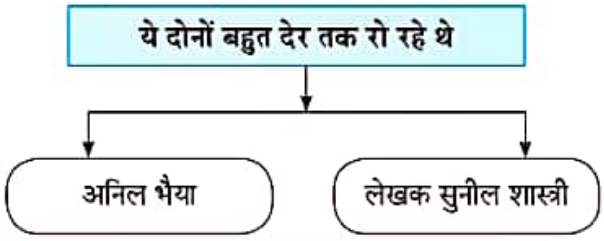


(ii)

**(२) कृति पूर्ण कीजिए।**

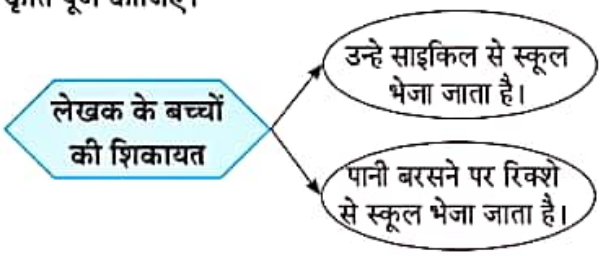


*गद्यांश: ४ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ७०*

इतना जो उनका कहना था कि हम और अनिल भैया वहाँ रुक नहीं सके। जो रुलाई छूटी तो वह कमरे में भागकर पहुँचने के बाद काफी देर तक बंद नहीं हुई। दोनों ही जन देर तक फूट-फूटकर रोते रहे।

आपसे यह बात शान के तहत नहीं कर रहा पर इसलिए कि ये बातें अब हमारे लिए आदर्श बन गई हैं। सक्रिय राजनीति में आने पर, सरकारी पद पाने के बाद क्या उसका दुरुपयोग करने की हिम्मत मुझमें हो सकती है? आप ही सोचें, मेरे बच्चे कहते हैं कि पापा, आप हमें साइकिल से भेजते हैं। पानी बरसने पर रिक्शे से स्कूल भेजते हैं पर कितने ही दूसरे लोगों के लड़के सरकारी गाड़ी से आते हैं। वे छोटे हैं उन्हें कलेजा चीरकर नहीं बता सकता। समझाने की कोशिश करता हूँ। जानता हूँ, मेरा यह समझाना कितना कठिन है फिर भी समय होने पर कभी-कभी अपनी गाड़ी से छोड़ देता हूँ। अपना सरकारी ओहदा छोड़कर आया हूँ और आपके साथ यह सब फिर जिक्र कर तनिक ताजा और नया महसूस करना चाहता हूँ। कोशिश करता हूँ, नींव को पुन: सँजोना-सँवारना कि मेरे मन का महल आज के इस तूफानी झंझावात में खड़ा रह सके।

**कृति ई (२) : आकलन कृति**

**(१) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

**(i) सरकारी गाड़ी (ii) छोटे**

उत्तर: (i) दूसरे लोगों के बच्चे स्कूल कैसे जाते हैं?

(ii) लेखक के बच्चे कैसे हैं?

**(२) समझकर लिखिए।**

**(i) लेखक समय होने पर अपने बच्चों को कभी-कभी सरकारी गाड़ी से स्कूल छोड़ते थे।**

उत्तर: लेखक के बच्चे छोटे थे। वे लेखक से जिद करते थे कि उन्हें भी दूसरे बच्चों की तरह सरकारी गाड़ी से स्कूल में भेजा जाए।

**(ii) लेखक अपने मन के महल को आज के तूफानी झंझावात में खड़ा करने की कोशिश करते हैं।**

उत्तर: क्योंकि युग तेजी से बदल रहा था। उनके पिता के आदर्श उनकी आने वाली पीढ़ी को शायद ही अच्छे लगें। इसलिए लेखक स्वयं पिता के आदर्शों पर कायम और टिके रहना चाहता है।

**कृति ई (३) : शब्द संपदा**

**(१) नीचे लिखे वाक्यों में उचित विरामचिह्नों का प्रयोग कीजिए।**

**(i) लेखक ने अपने बच्चों से कहा यदि दूसरे बच्चे सरकारी गाड़ी से स्कूल आते हैं तो आने दो लेकिन आप सब साइकिल से ही स्कूल जाएँगे**

उत्तर: लेखक ने अपने बच्चों से कहा, ''यदि दूसरे बच्चे सरकारी गाड़ी से स्कूल आते हैं तो आने दो लेकिन आप सब साइकिल से ही स्कूल जाएँगे।''

**(ii) हे भगवान मेरे मन के महल को इस तूफानी झंझावात से सँभालकर रखना**

उत्तर: ''हे भगवान! मेरे मन के महल को इस तूफानी झंझावात से सँभालकर रखना।''

**(२) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।**

**(i) जोर-जोर से बहने वाली हवा का झोंका -**

**(ii) बिना ईंधन के चलने वाली दो पहिए की गाड़ी -**

उत्तर: (i) झंझावात (ii) साइकिल

**कृति ई (४) : स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) 'ईमानदार व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थिति में भी डावाँडोल नहीं होता।' इस कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: ईमानदार व्यक्ति आदर्शवादी होता है। वह परिस्थिति के अनुकूल या प्रतिकूल रहने पर भी विचलित नहीं होता। वह अपने आदर्शों पर कायम रहता है। चाहे कुछ भी हो जाए पर वह अपने सिद्धांतों का कभी त्याग नहीं करता। प्रतिकूल परिस्थिति में अडिग रहने की

शक्ति उसके पास होती है। वह परिस्थिति की मार को सहता है पर अपने आदर्शों को नहीं छोड़ता। वह अपने व्यवहार से दूसरों के लिए एक मिसाल प्रस्तुत करता है। इस प्रकार एक ईमानदार व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थिति में भी डावाँडोल नहीं होता।

**प्रश्न ५ (उ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति उ (१) : आकलन कृति**

**(१) वाक्य पूर्ण कीजिए।**

**(i) उन दिनों को लेखक आज भी याद करते हैं .....**

उत्तर: जो उन्होंने अपने बाबू जी के साथ बिताया था।

**(ii) होड़ थी, हम भाइयों में .....**

उत्तर: किसे कितना काम दिया जाता है और कौन उन्हें कितनी सफाई से करता है।

**(२) कारण लिखिए।**

**(i) लेखक गर्व महसूस करते थे।**

उत्तर: क्योंकि लेखक के पिता जी उन्हें अपना निजी व्यक्तिगत काम सौंपते थे।

**(ii) बाबू जी फटा हुआ कुरता भी पहनते थे।**

उत्तर: क्योंकि फटा हुआ कुरता जाड़े के दिनों में काम आएगा और ऊपर से कोट पहन लिया जाएगा।

*गद्यांश: ५ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ७०-७१*

याद आते हैं बचपन के वे हसीन दिन, वे पल, जो मैंने बाबू जी के साथ बिताए। वे अपना व्यक्तिगत काम मुझे सौंप देते थे और मैं कैसा गर्व अनुभव करता था। एक होड़ थी, जो हम भाइयों में लगी रहती थी। किसे कितना काम दिया जाता है और कौन उसे कितनी सफाई से करता है।

एक दिन बोले- "सुनील, मेरी अलमारी काफी बेतरतीब हो रही है, तुम उसे ठीक कर दो और कमरा भी ठीक कर देना।"

मैंने स्कूल से लौटकर वह सब कर डाला। दूसरे दिन मैं स्कूल जाने के लिए तैयार हो रहा था कि बाबू जी ने मुझे बुलाया। पूछा- "तुमने सबकुछ बहुत ठीक कर दिया, मैं बहुत खुश हूँ पर वे मेरे कुरते कहाँ हैं?"

मैं बोला- "वे कुरते भला! कोई यहाँ से फट रहा था, कोई वहाँ से। वह सब मैंने अम्मा को दे दिए हैं।"

उन्होंने पूछा- यह कौन-सा महीना चल रहा है?

मैंने जवाब दिया- अक्टूबर का अंतिम सप्ताह।

उन्होंने आगे जोड़ा- "अब नवंबर आएगा। जाड़े के दिन होंगे, तब ये सब काम आएँगे। ऊपर से कोट पहन लूँगा न!"

मैं देखता रह गया। क्या कह रहे हैं बाबू जी? वे कहते जा रहे थे- "ये सब खादी के कपड़े हैं। बड़ी मेहनत से बनाए हैं बीनने वालों ने। इसका एक-एक सूत काम आना चाहिए।"

यही नहीं, मुझे याद है, मैंने बाबू जी के कपड़ों की तरफ ध्यान देना शुरू किया था। क्या पहनते हैं, किस किफायत से रहते हैं। मैंने देखा था, एक बार उन्होंने अम्मा को फटा हुआ कुरता देते हुए कहा था- 'इनके रूमाल बना दो।'

**कृति उ (२) : आकलन कृति**

**(१) वाक्यों का उचित क्रम लगाकर वाक्य फिर से लिखिए।**

**(i) बाबू जी ने उनके कुरते के बारे में पूछा।**

**(ii) बाबू जी ऊपर से कोट पहन लेंगे।**

**(iii) बाबू जी ने कहा कि अब जाड़े के दिन शुरू होंगे।**

**(iv) बाबू जी ने लेखक से अपना कमरा ठीक करने के लिए कहा।**

उत्तर: (i) बाबू जी ने लेखक से अपना कमरा ठीक करने के लिए कहा।
(ii) बाबू जी ने उनके कुरते के बारे में पूछा।
(iii) बाबू जी ने कहा कि अब जाड़े के दिन शुरू होंगे।
(iv) बाबू जी ऊपर से कोट पहन लेंगे।

**कृति उ (३) : शब्द संपदा**

**(१) वचन बदलिए।**

**(i) कुरता (ii) कोट**

उत्तर: (i) कुरते (ii) कोट

**(२) परिच्छेद में प्रयुक्त शब्द-युग्म शब्द ढूँढ़कर लिखिए।**

उत्तर: एक-एक

**(३) परिच्छेद में प्रयुक्त उपसर्ग युक्त शब्द ढूँढ़कर लिखिए।**

उत्तर: (i) बेतरतीब : उपसर्ग : बे (ii) अनुभव : उपसर्ग : अनु

**कृति उ (४) : स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) 'क्या लेखक के पिता कंजूस थे?' इस कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: जी नहीं; लेखक के पिता कंजूस नहीं थे। वे मेहनत के पैसों का मोल जानते थे। ऊपर से खादी के कपड़े बनाने के लिए बुनकरों को बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। इसलिए ऐसे कपड़ों का एक-एक सूत काम में आना चाहिए। लेखक के पिता आदर्शवादी थे। वे जानते थे कि देश में कई ऐसे लोग हैं जिन्हें तन ढँकने के लिए चिथड़ा भी नसीब नहीं होता। इसलिए वे कपड़ा फटने के बाद भी उसके रूमाल या अन्य कोई चीज बनाने के लिए घर के सदस्यों को कहते थे।

**प्रश्न ६ (ऊ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति ऊ (१) : आकलन कृति**

**(१) कृति पूर्ण कीजिए।**

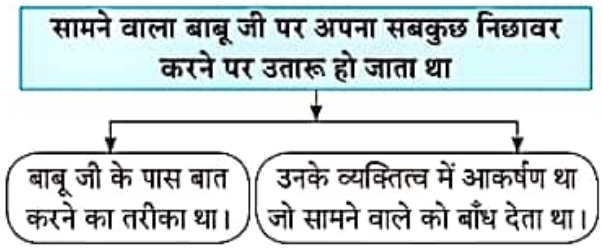


**(२) उत्तर लिखिए।**

**(i) इतने ग्राम का सोना मिला था अम्मा को चढ़ावे के नाम पर -**

उत्तर: पाँच ग्राम

(ii) अम्मा विदा होकर रामनगर आई तब यह मिला अम्मा को -

उत्तर: गहने

*गद्यांश: ६ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ७१*

बाबू जी का एक तरीका था, जो अपने आप आकर्षित करता था। वे अगर सीधे से कहते-सुनील, तुम्हें खादी से प्यार करना चाहिए, तो शायद वह बात कभी भी मेरे मन में घर नहीं करती पर बात कहने के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व का आकर्षण था, जो अपने में सामने वाले को बाँध लेता था। वह स्वत: उनपर अपना सबकुछ निछावर करने पर उतारू हो जाता था।

अम्मा बताती हैं- हमारी शादी में चढ़ावे के नाम पर सिर्फ पाँच ग्राम सोने के गहने आए थे, लेकिन जब हम विदा होकर रामनगर आए तो वहाँ उन्हें मुँह दिखाई में गहने मिले। सभी नाते-रिश्तेवालों ने कुछ-न-कुछ दिया था। जिन दिनों हम लोग बहादुरगंज के मकान में आए, उन्हीं दिनों तुम्हारे बाबू जी के चाचा जी को कोई घाटा लगा था। किसी तरह से बाकी का रुपया देने की जिम्मेदारी हमपर आ पड़ी-बात क्या थी, उसकी ठीक से जानकारी लेने की जरूरत हमने नहीं सोची और न ही इसके बारे में कभी कुछ पूछताछ की।

### कृति ऊ (२) : आकलन कृति

(१) सत्य या असत्य पहचानकर लिखिए।

(i) अम्मा को सभी नाते-रिश्तेदारों ने कुछ न कुछ दिया।

(ii) अम्मा विदा होकर कुशीनगर आई।

उत्तर: (i) सत्य (ii) असत्य

(२) उचित जोड़ियाँ लगाइए।

| 'अ' | 'ब' |
|---|---|
| (i) व्यक्तित्व | (क) बहादुरगंज |
| (ii) मकान | (ख) सोना |
| (iii) पाँच ग्राम | (ग) घाटा |
| (iv) चाचा जी | (घ) आकर्षण |

उत्तर: (i - घ), (ii - क), (iii - ख), (iv - ग)

### कृति ऊ (३) : शब्द संपदा

(१) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।

(i) ब्याह (ii) सगे-संबंधी

उत्तर: (i) शादी (ii) रिश्तेदार

(२) विलोम शब्द लिखिए।

(i) घाटा (ii) प्यार

उत्तर: (i) फायदा (ii) नफ़रत

(३) उचित विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए।

(i) जितना सोना मुझे मिला था उतने में मैं खुश थी

उत्तर: ''जितना सोना मुझे मिला था; उतने में मैं खुश थी।''

### कृति ऊ (४) : स्वमत अभिव्यक्ति

*(१) 'सादा जीवन उच्च विचार' विषय पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर: व्यक्ति का जीवन बहुत ही सादा होना चाहिए पर उसके विचार उच्च होने चाहिए। गांधी जी का जीवन बहुत ही सादा था। वे सिर्फ धोती पहनते थे ताकि देश के करोड़ों लोगों को तन ढँकने के लिए कपड़ा मिले। लेकिन गांधी जी के विचार आदर्शवादी थे। उनके विचारों का प्रभाव जनता पर पड़ा था। इस प्रकार व्यक्ति का जीवन सादा ही होना चाहिए और उसे अपने विचारों से लोगों के मन-मस्तिष्क पर छाप छोड़नी चाहिए। शास्त्री जी का जीवन भी बहुत ही सादा था। सादगी से उन्हें बेहद लगाव था। आखिर वे गांधीजी के अनुयायी थे। देश के महापुरुष स्वामी विवेकानंद के जीवन से सभी परिचित हैं। उनका जीवन भी सादा था पर अपने विचारों से उन्होंने अमेरिका के विद्वानों को भी दाँतों तले ऊँगलियाँ दबाने के लिए मजबूर कर दिया था। जो व्यक्ति अपने जीवन में 'सादा जीवन उच्च विचार' का पालन करता है; वह सफलता की मंजिल पर पहुँच जाता है। वह स्वयं प्रतिकूल परिस्थिति में रहकर दूसरों के लिए आनंद के उपवन का निर्माण करता है।

### प्रश्न ७ (ए) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति ए (१) : आकलन कृति

*(१) कृति पूर्ण कीजिए।

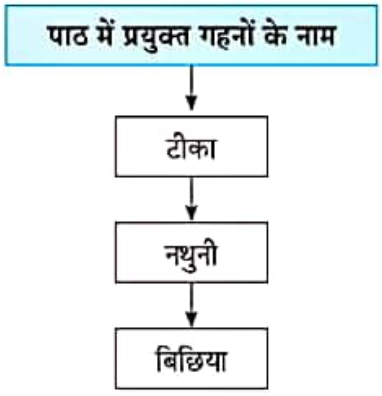


(२) परिणाम लिखिए।

(i) जब मिरजापुर जाओगी और लोग गहनों के संबंध में पूछेंगे तो -

उत्तर: तब लोग हँसेंगे और कहेंगे कि प्रधानमंत्री की पत्नी के पास पहनने के लिए गहने भी नहीं हैं।

(३) चौखट पूर्ण कीजिए।

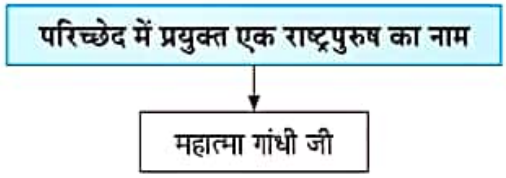


*गद्यांश: ७ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ७१*

एक दिन तुम्हारे बाबू जी ने दुनिया की मुसीबतों और मनुष्य की मजबूरियों को समझाते हुए जब हमसे गहनों की माँग की तो क्षण भर के लिए हमें कुछ वैसा लगा और गहना देने में तनिक हिचकिचाहट महसूस हुई पर यह सोचा कि उनकी प्रसन्नता में हमारी खुशी है, हमने गहने दे दिए। केवल टीका, नथुनी, बिछिया रख लिए थे। वे हमारे सुहागवाले गहने थे। उस दिन तो उन्होंने कुछ नहीं कहा, पर दूसरे दिन वे अपनी पीड़ा न रोक

सके। कहने लगे- "तुम जब मिरजापुर जाओगी और लोग गहनों के संबंध में पूछेंगे तो क्या कहोगी ?"

हम मुसकराईं और कहा- "उसके लिए आप चिंता न करें। हमने बहाना सोच लिया है। हम कह देंगी कि गांधीजी के कहने के अनुसार हमने गहने पहनने छोड़ दिए है। इसपर कोई भी शंका नहीं करेगा।" तुम्हारे बाबू जी तनिक देर चुप रहे, फिर बोले- "तुम्हें यहाँ बहुत तकलीफ है, इसे मैं अच्छी तरह समझता हूँ। तुम्हारा विवाह बहुत अच्छे, सुखी परिवार में हो सकता था, लेकिन अब जैसा है वैसा है। तुम्हें आराम देना तो दूर रहा, तुम्हारे बदन के भी सारे गहने उतरवा लिए।"

हम बोलीं- "पर जो असल गहना है वह तो है। हमें बस वही चाहिए। आप उन गहनों की चिंता न करें। समय आ जाने पर फिर बन जाएँगे। सदा ऐसे ही दिन थोड़े ही रहेंगे। दुख-सुख तो सदा ही लगा रहता है।"

### कृति ए (२) : आकलन कृति

**(१) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

**(i) गहनों (ii) सुहाग**

उत्तर: (i) शास्त्री जी ने अपनी पत्नी से किस चीज़ की माँग की ?

(ii) टीका, नथुनी और बिछिया किसकी निशानी थी ?

**(२) उत्तर लिखिए।**

**(i) शास्त्री जी के मन की पीड़ा -**

उत्तर: अपने पत्नी को सुख नहीं दे सके।

**(ii) शास्त्री जी की पत्नी का असल गहना -**

उत्तर: उनके पति श्री लालबहादुर शास्त्री

### कृति ए (३) : शब्द संपदा

**(१) निम्नलिखित शब्दों के कृदंत रूप लिखिए।**

**(i) हिचकिचाहट (ii) मुसकराई**

उत्तर: (i) हिचकिचाना (ii) मुसकराना

**(२) गद्यांश में से शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए।**

उत्तर: सुख-दुख

**(३) वचन बदलिए।**

**(i) नथुनी (ii) बिछिया**

उत्तर: (i) नथुनियाँ (ii) बिछियाँ

### कृति ए (४) : स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'सच्चा साहस व सच्ची बहादुरी लोगों की रक्षा और उनकी सहायता करने में है ?' अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: साहस व बहादुरी ये उच्च मानवीय गुण हैं, ये गुण जिनके पास होते हैं, वे दीन-दुखी, गरीब, बेबस जनता की सहायता करने के लिए आगे आते हैं। मदर टेरेसा, बाबा आमटे, नेल्सन मंडेला आदि महापुरूषों के पास सच्चा साहस व सच्ची बहादुरी थी। अत: उन्होंने गरीबों की सेवा की थी। दूसरों की सहायता करना साहसी व बहादुर का धर्म होता है। दूसरों का विनाश करना कायरता होती है।

## स्वाध्याय विषयक कृतियाँ

**(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

***(१) संजाल पूर्ण कीजिए।**

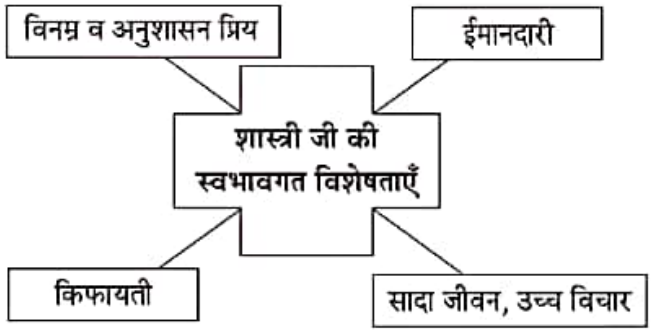


***(२) परिणाम लिखिए।**

**(i) सुबह साढ़े पाँच या पौने छह बजे किसी का दरवाजा खटखटाने का -**

उत्तर: जिसका दरवाजा खटखटाया जा रहा है उस व्यक्ति की नींद खराब होगी और उसे गुस्सा भी आ सकता है।

**(ii) साठ पैसे प्रति किलोमीटर के हिसाब से पैसे जमा करवाने का -**

उत्तर: अब लेखक सरकारी गाड़ी का दुरूपयोग नहीं करेगा।

***(३) वर्ण पहेली से विलोम शब्दों की जोड़ियाँ ढूँढ़कर लिखिए।**

| | | | |
|---|---|---|---|
| दु | अ | ग | प |
| सु | बु | स | रा |
| रु | ख | × | ला |
| प्र | भ | यो | न्न |

---------- × ----------

---------- × ----------

---------- × ----------

---------- × ----------

उत्तर: (i) प्रसन्न × अप्रसन्न (ii) सदुपयोग × दुरूपयोग
(iii) भला × बुरा (iv) सुख × दुख

***(४) 'पर जो असल गहना है वह तो है' इस वाक्य से अभिप्रेत भाव लिखिए।**

उत्तर: लालबहादुर शास्त्री जी की पत्नी के इस कथन से पता चलता है कि उनके लिए अपने जीवन में असली गहना स्वयं लालबहादुर शास्त्री हैं। पत्नी के लिए अपने जीवन में पति से बढ़कर दूसरा कोई अनमोल गहना नहीं होता है। पति के आगे सभी जेवरात तुच्छ होते हैं।

***(५) कुरते के प्रसंग से शास्त्री जी के इस गुण (स्वभाव) का पता चलता है -**

उत्तर: शास्त्री जी किफायती स्वभाव के थे। वे मेहनत और पैसों का मोल जानते थे।

*(६) **पाठ में प्रयुक्त परिमाणों की सूची तैयार कीजिए।**

उत्तर: (i) पाँच ग्राम सोना (ii) एक-एक सूत

*(७) **'पर' शब्द के दो अर्थ लिखकर उनका स्वतंत्र वाक्य में प्रयोग कीजिए।**

उत्तर: (i) **पर:** पंख : **वाक्य :** पक्षी के दो पर होते हैं।

(ii) **पर:** परंतु : **वाक्य :** मैं तुम्हारे घर आने वाला था पर कुछ कारणवश नहीं आ सका।

## भाषा बिंदु

*(१) **निम्न लिखित वाक्यों को व्याकरण नियमों के अनुसार शुद्ध करके फिर से लिखिए।**

(१) करामत अली गाय अपनी घर लाई।
(२) उसने गाय की पीठ पर डंडे बरसाने नहीं चाहिए थी।
(३) करामत अली ने रमजानी पर गाय के देखभाल का जिम्मेदारी सौंपी।
(४) आचार्य अपनी शिष्यों को मिलना चाहते थे।
(५) घर में तख्ते के रखे जाने का आवाज आता है।
(६) लड़के के तरफ मुखातिब होकर रामस्वरूप ने कोई कहना चाहा।
(७) सिरचन को कोई लड़का-बाला नहीं थे।
(८) लक्ष्मी की एक झूब्बेदार पूँछ था।
(९) कन्हैयालाल मिश्र जी बिड़ला के पुस्तक को पढ़ने लगे।
(१०) डॉ. महादेव साहा ने बाजार से नए पुस्तक को खरीदा।
(११) लेखक गोवा को गए उनकी साथ साढू साहब भी थे।
(१२) टिळक जी ने एक सज्जन के साथ की हुई व्यवहार बराबर थी।
(१३) रंगीन फूल की माला बहोत सुंदर लग रही थी।
(१४) बूढ़े लोग, लड़के और कुछ स्त्रियाँ कुएँ पर पानी भर रहे थे।
(१५) लड़का, पिता जी और माँ बाजार को गई।
(१६) बरसों बाद पंडित जी को मित्र का दर्शन हुआ।
(१७) गोवा के बीच पर घूमने में बड़ी मजा आई।
(१८) सामने शेर देखकर यात्री का प्राण मानो मुरझा गया।
(१९) करामत अली के आँखों में आँसू उतर आई।
(२०) मैं मेरे देश को प्रेम करता हूँ।

उत्तर:

(१) करामत अली गाय अपने घर लाया।
(२) उसे गाय की पीठ पर डंडे बरसाना नहीं चाहिए था।
(३) करामत अली ने रमजानी पर गाय की जिम्मेदारी सौंपी।
(४) आचार्य अपने शिष्यों से मिलना चाहते थे।
(५) घर में तख्ते रखने की आवाज आती है।
(६) लड़के की तरफ मुखातिब होकर रामस्वरूप ने कुछ कहना चाहा।
(७) सिरचन कोई लड़के-बच्चे नहीं थे।
(८) लक्ष्मी की पूँछ झूब्बेदार थी।
(९) कन्हैयालाल मिश्र जी बिड़ला की पुस्तक पढ़ने लगे।
(१०) डॉ. महादेव साह ने बाजार से नई पुस्तक खरीदी।
(११) लेखक गोवा गए और उनके साथ साढू साहब भी थे।
(१२) तिलक जी द्वारा एक सज्जन के साथ हुआ व्यवहार बराबर था।
(१३) रंगीन फूलों की माला बहुत सुंदर लग रही थी।
(१४) बूढ़े, लड़के और कुछ स्त्रियाँ कुएँ से पानी निकाल रहे थे।
(१५) लड़का, पिता जी और माता जी के साथ बाज़ार गया।
(१६) बरसों बाद पंडित जी को मित्र के दर्शन हुए।
(१७) गोवा बीच पर घूमने में बड़ा मजा आया।
(१८) सामने शेर देखकर यात्री के प्राण मानो मुरझा गए।
(१९) करामत अली की आँखों में आँसू आए।
(२०) मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ।

## उपयोजित लेखन

*(१) **निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर कहानी लिखिए। उसे उचित शीर्षक दीजिए। (कहानी लेखन)**

**मुद्दे:-** गाँव में लड़कियाँ-सभी पढ़ने में होशियार-गाँव में पानी का अभाव-लड़कियों का घर के कामों में सहायता करना-बहुत दूर से पानी लाना - पढ़ाई के लिए कम समय मिलना - लड़कियों का समस्या पर चर्चा करना-समस्या सुलझाने का उपाय खोजना-उपाय प्राप्त करना - गाँववालों की सहायता से प्रयोग करना - सफलता पाना - प्रेरणा, शीर्षक।

उत्तर: **होशियार लड़कियाँ**

चंद्रपुर नाम का एक छोटा-सा गाँव था। गाँव में रहने वाले सभी लोग बहुत ही सीधे-सादे थे। वे दिनभर अपने-अपने खेतों में काम करते और शाम को घर आकर खाना-पीना खाकर आराम करते। उन सभी की लड़कियाँ स्कूल जाती थीं। आश्चर्य की बात यह थी कि सभी लड़कियाँ पढ़ने में बहुत ही होशियार थीं। सारी की सारी लड़कियाँ समझदार भी थीं। पढ़ाई के अलावा ये सारी लड़कियाँ अपने-अपने घर का सारा काम भी करती थीं। वे खाना बनाने में माहिर थीं।

एक दिन उस गाँव पर संकट आया। गाँव में एक तालाब था। किसी कारणवश उस तालाब का सारा पानी सूख गया। इस कारण गाँव में पानी का अभाव निर्माण हुआ। लड़कियों को अब दूसरे गाँव में पैदल जाकर पानी लाना पड़ता था। इस कारण उन्हें पढ़ाई करने के लिए कम समय मिलता था।

एक दिन गाँव की सारी लड़कियाँ इस समस्या का उपाय ढूँढ़ने के लिए एकत्रित हुईं। उन्होंने आपस में चर्चा करके समस्या का उपाय ढूँढ़ निकाला। उन्होंने अपने माता-पिता को समझाया कि यदि हम सब मिलकर गाँव में कुआँ खुदवाएँ तो हम सबकी समस्या का निराकरण हो सकता है। सभी को अपनी-अपनी लड़कियों की बात सही लगी। सबने मिलकर गाँव में कुआँ खुदवाने का कार्य शुरू कर दिया। कुआँ चालीस फुट खोदा गया था और गाँव वाले उसे और गहराई तक खोदना चाहते थे। पर यह क्या! कुएँ में से झरने पानी के रूप में रिसने लगे। सभी गाँव वाले प्रसन्न हो गए और उन्होंने गाँव की सारी लड़कियों की तारीफ की।

**सीख:** कहानी से यह सीख मिलती है कि समस्या आने पर उसे सुलझाने के लिए उपाय ढूँढ़ने चाहिए। व्यक्ति को समस्या आने पर आलसी नहीं होना चाहिए।

❖❖❖

# ६ हम उस धरती की संतति हैं

*- उमाकांत मालवीय (१९३१-१९८२)*

## कवि-परिचय

**जीवन-परिचय** : उमाकांत मालवीय एक सफल कवि तथा निबंधकार थे। ये हिंदी साहित्य में नवगीत के भगीरथ माने जाते हैं। नवगीतकार के रूप में इन्हें जाना जाता था। प्रयाग विश्वविद्यालय में इन्होंने अध्ययन किया था। कविताओं के अलावा खंडकाव्य एवं बालोपयोगी पुस्तकों का भी लेखन किया। इनके लेखन में भावों की तीव्रता व जन-सरोकारों का रेखांकन स्पष्ट रूप में दिखाई देता है।

**प्रमुख कृतियाँ** : 'मेंहदी और महावर', 'देवकी', 'रक्तपथ', 'एक चावल नेह रीध', 'सुबह रक्तपलाश की' (काव्यसंग्रह) आदि।

## पद्य-परिचय

**कव्वाली** : कव्वाली संगीत की एक लोकप्रिय विधा है। यह किसी की तारीफ में गाया जानेवाला गीत काव्य है। यह काव्य की एक ऐसी विधा है, जिसमें दो दलों की आपस में नोंकझोक होती है। दोनों दल स्वयं का पक्ष बड़े ही कलात्मक ढंग से रखने की भरसक कोशिश करते हैं।

**प्रस्तावना** : प्रस्तुत कव्वाली के द्वारा कवि उमाकांत मालवीय जी ने स्त्री-पुरुष समानता पर बल दिया है। कवि ने कव्वाली के माध्यम से भारत के ऐतिहासिक स्त्री-पुरुष, वीर-वीरांगनाओं के कार्यों को अभिव्यक्त किया है। प्रस्तुत कव्वाली में स्त्री-पुरुष को समाज का महत्त्वपूर्ण अंग बताया गया है।

## सारांश

भारत जिस प्रकार वीरों की भूमि है उसी प्रकार वीरांगनाओं की भी भूमि है। भारत देश का इतिहास इतना संपन्न एवं समृद्ध है कि इस देश का कोई भी राज्य अछूता नहीं होगा, जहाँ से वीर-वीरांगनाएँ देश पर मर मिटने के लिए आगे न आएँ हों? भारत देश की अखंडता बरकरार रखने के लिए विविध-बालाओं ने भी त्याग एवं बलिदान का उदाहरण स्थापित किया है। ध्रुव, प्रहलाद, भरत, रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती, चाँद बीबी, रजिया सुल्ताना, रानी पद्मिनी देवी, सावित्री आदि सब भारत माता की लाड़ली संतान हैं। इन सभी के अनमोल कार्यों ने ही भारत माता का मान बढ़ाया है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए वर्तमान बाल-बालाओं को एक-दूसरे का साथ देना है और भारत माता को प्रगति की ओर ले जाना है। यही इस काव्य का प्रमुख सार है।

## शब्दार्थ

गर - अगर, यदि
मजबूरन - जबरदस्ती
पहिए - चक्र
दतुली - दाँत
शऊर - अच्छी तरह काम करने की योग्यता
खफा - अप्रसन्न, नाराज, रुष्ट, क्रुद्ध
टंटा - व्यर्थ का झंझट, उपद्रव, उत्पात, झगड़ा, लड़ाई

## मुहावरे

**शेखी बघारना** - स्वयं अपनी प्रशंसा करना
**डींग मारना** - बड़ी-बड़ी बातें करना

## विशेष

जौहर - राजस्थान में प्राचीन समय में प्रचलित प्रथा। इसमें स्त्रियाँ विदेशी आक्रमणकारियों से अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए अग्नि में प्रवेश कर प्राणों की आहुति दे देती थीं।

## भावार्थ

- **हम उस धरती के लड़के हैं ..... यहाँ ध्रुव-से बच्चे।**

भारत वीरों की भूमि है। त्याग व बलिदान की भूमि है। इस बात को ध्यान में रखते हुए बड़े जोश एवं आवेश के साथ भारतमाता के ये प्यारे सपूत लड़कियों को संबोधित करते हुए कहते हैं, ''हम उस धरती के पुत्र हैं, जिसका वर्णन करने के लिए हमारे पास शब्द ही नहीं है। यह धरती बहुत महान है। इस धरती की मिट्टी में ध्रुव जैसे कई तपस्वी पुत्र खेले थे।''

- **यह मिट्टी ..... थे नहीं किसी को कुछ गिनते!**

भारत की इस पवित्र मिट्टी से भक्त प्रह्लाद जैसे सच्चे बच्चों ने जन्म लिया। भरत बचपन से ही इतने बहादुर एवं साहसी थे कि वे शेरों के साथ युद्ध करके उन्हें हराते थे और उनके जबड़ों को फैलाकर उनके दाँत गिनने से भी नहीं डरते थे। चित्तौड़ की रक्षा करने हेतु अपने दोनों हाथों में तलवार लेकर लड़ने वाले सर्वश्रेष्ठ योद्धा जयमल ने अकबर की सेना का संहार किया था। ऐसे वीर बच्चों ने भारत की धरती पर जन्म लिया था।

- **इस कारण हम ..... हम उस धरती के लड़के हैं...**

''लड़कों का समूह अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहता है कि हे लड़कियों! हम तुम सबसे महान हैं। हम लड़कों के आगे तुम लोग चुप रहिए। अजी लड़कियों चुप रहिए। हम इस धरती के वीर एवं बहादुर बच्चे हैं।''

- **बातों का जनाब ..... जिस धरती की बातें क्या कहिए।**

भारत वीरांगनाओं की भी भूमि हैं। इस बात को सिर्फ ध्यान में रखते हुए बड़े जोश एवं आवेश के साथ भारतमाता की ये लाड़ली कन्याएँ लड़कों को संबोधित करते हुए कहती हैं, ''आप सिर्फ बातें करने में माहिर हो। आप लोगों के पास बातें करने का कोई ढंग भी नहीं है। अब आप अपनी शेखी मत बघारिए, चुप हो जाइए। अब हमारे बारे में सुनिए। हम उस धरती की कन्याएँ हैं, जिसके बारे में क्या कहना?''

- **अजी क्या कहिए ..... हम उस धरती की लड़की हैं .....**

''भारत की इस मिट्टी में रानी लक्ष्मीबाई ने जन्म लिया था। जिसने अपनी झाँसी की रक्षा करने हेतु स्वयं को कुर्बान कर दिया था। इस मिट्टी में रजिया सुलताना एवं महारानी दुर्गावती ने भी जन्म लिया था। इन रानियों ने रणभूमि में दुश्मन को मुँहतोड़ जवाब दिया था। इस मिट्टी में रानी चाँद बीबी ने जन्म लिया था, जिनकी वीरता को कोई कैसे भूल सकता है! दुश्मन से स्वयं की प्रतिष्ठा एवं मान-मर्यादा की लाज रखने हेतु रानी पद्मिनी ने जौहर किया था। उनके इस त्याग को कोई भला कैसे भूल सकता है! इस भारत की भूमि पर देवी सीता व सावित्री जैसी पतिव्रताओं ने भी जन्म लिया था। अगर आप लोग बड़ी-बड़ी बातें करने से बाज नहीं आओगे, तो हम भी मजबूरन आप सभी पर ताना कसने से पीछे नहीं हटेंगी। आखिर हम भी इसी धरती की ही लड़कियाँ हैं।''

- **यों आप खफा क्यों होती हैं ..... हम उस धरती की संतति हैं ...**

लड़के व लड़कियाँ आपस में समझ जाते हैं कि हमें आपस में लड़ना नहीं चाहिए। आखिर, हम सब इस धरती की संतति हैं। इसलिए वे दोनों मिलकर कहते हैं, ''हम सभी के लिए नाराज होने जैसी कोई भी बात नहीं है। हम आपस में झगड़ा क्यों करें? हममें से कौन महान है, इसमें कुछ भी नहीं रखा है। आपस में झगड़ने से कुछ भी हासिल नहीं होगा, सिर्फ हम बातों को उलझा देंगे। बस, एक ही बात महत्त्वपूर्ण है, ध्रुव हो या रजिया सुलताना एक ही भारत माता के बच्चे हैं। हम सब एक ही भारत माता रूपी रथ के दो पहिए हैं। आखिर, हम सब उसी पवित्र, महान एवं उदात्त धरती की संतति हैं।''

## MASTER KEY QUESTION SET - 6

**प्रश्न १ (अ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति अ (१): आकलन कृति**

**(१) समझकर लिखिए।**

**(i)**

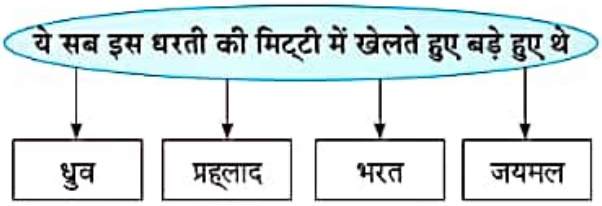


**(२) सही या गलत पहचानकर गलत वाक्य को सही करके फिर से लिखिए।**

***(i) भरत शेर के दाँत गिनते थे।**

**(ii) प्रह्लाद एक तारा है।**

**उत्तर:** (i) सही (ii) गलत

**(२) उचित जोड़ियाँ मिलाइए।**

| 'अ' | 'ब' |
|---|---|
| (i) ध्रुव | (क) सर्वश्रेष्ठ योद्धा |
| (ii) प्रह्लाद | (ख) शेरों के साथ युद्ध |
| (iii) भरत | (ग) ईश्वर के सच्चे भक्त |
| (iv) जयमल | (घ) तपस्वी |

**उत्तर:** (i - घ), (ii - ग), (iii - ख), (iv - क)

*(४) वर्गीकरण कीजिए।
(ध्रुव, प्रह्लाद, भरत, जयमल)

| ऐतिहासिक | पौराणिक |
|---|---|
| जयमल | ध्रुव, प्रह्लाद, भरत |

(५) विशेषताओं के आधार पर पहचानिए।
*(i) अपनी लगन का सच्चा -
*(ii) किसी को कुछ न गिनने वाला -
(iii) शेरों के जबड़ों को खोलकर उनकी दतुली गिनने वाले।

उत्तर: (i) प्रह्लाद (ii) जयमल (iii) भरत

*पद्यांश १ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ७४*

हम उस धरती के लड़के हैं, जिस धरती की बातें
क्या कहिए; अजी क्या कहिए; हाँ क्या कहिए।
यह वह मिट्टी, जिस मिट्टी में खेले थे यहाँ ध्रुव-से बच्चे।

यह मिट्टी, हुए प्रहलाद जहाँ, जो अपनी लगन के थे सच्चे।
शेरों के जबड़े खुलवाकर, थे जहाँ भरत दतुली गिनते,
जयमल-पत्ता अपने आगे, थे नहीं किसी को कुछ गिनते!

इस कारण हम तुमसे बढ़कर, हम सबके आगे चुप रहिए।
अजी चुप रहिए, हाँ चुप रहिए। हम उस धरती के लड़के हैं...

### कृति अ (२): स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'जिद, लगन, मेहनत का फल सफलता है' इस पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर:

"मंजिलें उन्हीं को ही मिलती है
जिनके सपनों में जान होती है।
पंख से कुछ नहीं होता
हौसलों से उड़ान होती है।"

सचमुच जीवन में यदि सफल बनना है तो व्यक्ति को जिद, लगन एवं मेहनत करनी होगी। व्यक्ति के पास जिद का होना अत्यावश्यक होता है। व्यक्ति को कुछ बनने की जिद, लगन की ओर ले जाती है। व्यक्ति अपनी मंजिल पाने के लिए कड़ी मेहनत करना शुरू कर देता है। आहिस्ता-आहिस्ता उसकी मेहनत रंग लाती है और वह अपना मनचाहा ध्येय प्राप्त कर लेता है। दुनिया में जो भी सफल महापुरुष हुए हैं, उन्होंने भी अपने जीवन में जिद, लगन, मेहनत एवं अभ्यास को महत्व दिया था। इसी कारण ही वे सफलता की मंजिल हासिल कर सकें। इसलिए व्यक्ति को जिद, लगन एवं मेहनत के साथ अपनी लक्ष्य की ओर अग्रसर होना चाहिए।

### प्रश्न २ (आ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति आ (१): आकलन कृति

*(१) वर्गीकरण कीजिए।
(लक्ष्मीबाई, सावित्री, दुर्गावती, चाँद बीबी, पद्मिनी, सीता, रजिया सुलताना)

| ऐतिहासिक | पौराणिक |
|---|---|
| लक्ष्मीबाई, दुर्गावती, चाँद बीबी, पद्मिनी, रजिया सुलताना | सावित्री, सीता |

(२) विशेषताओं के आधार पर पहचानिए।
*(i) खूब लड़नेवाली मर्दानी -
(ii) जिसने जौहर किया था -
(iii) जिसने यम से अपने पति के प्राण वापस लाए थे -
(iv) जो प्रभु रामचंद्र की पत्नी थी -
(v) जो बीजापुर और अहमदनगर की संरक्षक थी -
(vi) जिसने अपनी कटार स्वयं ही अपने सीने में भोंक दी थी -
(vii) जो दिल्ली सल्तनत की सुलताना थी -
*(viii) भारत माता के रथ के दो पहिए -

उत्तर: (i) रानी लक्ष्मीबाई (ii) पद्मिनी (iii) सावित्री (iv) सीता (v) चाँद बीबी (vi) रानी दुर्गावती (vii) रजिया सुलताना (viii) लड़का-लड़की (स्त्री-पुरुष)

(३) सही या गलत पहचानकर गलत वाक्य को सही करके फिर से लिखिए।
(i) सीता ने जौहर किया था।

उत्तर: गलत, पद्मिनी ने जौहर किया था।

(ii) सीता ने यमलोक जाकर अपने पति के प्राण वापस लाए थे।

उत्तर: गलत, सावित्री ने यमलोक जाकर अपने पति के प्राण वापस लाए थे।

(iii) रजिया सुलताना झाँसी की रानी थी।

उत्तर: गलत, रानी लक्ष्मीबाई झाँसी की रानी थी।

(४) निम्नलिखित शब्दों से ऐसे प्रश्न बनाइए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों -
(i) ताने (ii) जौहर

उत्तर: (i) अगर लड़के बड़ी-बड़ी बातें करेंगे, तो उन्हें क्या सहना पड़ेगा?
(ii) पद्मिनी ने किसकी ज्वाला जलाई थी?

*पद्यांश २ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ७४*

बातों का जनाब, शऊर नहीं, शेखी न बघारें, हाँ चुप रहिए।
हम उस धरती की लड़की हैं, जिस धरती की बातें क्या कहिए।

अजी क्या कहिए, हाँ क्या कहिए।
जिस मिट्टी में लक्ष्मीबाई जी, जन्मी थीं झाँसी की रानी।
रजिया सुलताना, दुर्गावती, जो खूब लड़ी थीं मर्दानी।
जन्मी थी बीबी चाँद जहाँ, पद्मिनी के जौहर की ज्वाला।
सीता, सावित्री की धरती, जन्मी ऐसी-ऐसी बाला।
गर डींग जनाब उड़ाएँगे, तो मजबूरन ताने सहिए, ताने सहिए, ताने सहिए।
हम उस धरती की लड़की हैं...

**कृति आ (२) :स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) ''प्रत्येक स्त्री में रानी लक्ष्मीबाई होती है।'' इस पर आधारित अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: प्रत्येक स्त्री में रानी लक्ष्मीबाई होती है। नारी माँ दुर्गा का रूप होती है। वह सबला होती है। यदि उसके साथ कोई बदलसलूकी करने की कोशिश करे, तो वह चंडिका का रूप धारण कर लेती है। रानी लक्ष्मीबाई की तरह वह तुरंत अपने अस्तित्व व अस्मिता के लिए लड़ने-मरने को तैयार हो जाती है। संघर्ष करके समाज के साथ लड़ने की ताकत उसमें होती है। आज हमारे देश की नारी अंतरिक्ष में जा रही है। वह वैमानिक बनकर आसमान में उड़ रही है। वैज्ञानिक बनकर वह अनुसंधान कर रही है। राजनीतिज्ञ बनकर देश को चला रही है। भारत की भूतपूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के अद्‌भुत कार्य को कोई भूल नहीं सकता है। इसलिए कहा जाता है कि प्रत्येक स्त्री में रानी लक्ष्मीबाई होती है।

**प्रश्न ३ (इ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति इ (१): आकलन कृति**

**(१) सही या गलत पहचानकर गलत वाक्य को सही करके फिर से लिखिए।**

***(i) झगड़ने से सब कुछ प्राप्त होता है।**

उत्तर: गलत, झगड़ने से बातें और उलझ जाती हैं।

**(ii) स्त्री व पुरुष भारत माता के रथ के दो पहिए हैं।**

उत्तर: सही।

**(२) निम्नलिखित अर्थ को स्पष्ट करने वाली पंक्तियाँ लिखिए।**

**(i) आपको गुस्सा नहीं करना चाहिए।**

उत्तर: यों आप खफा क्यों होती हैं, टंटा काहे का आपस में।

**(ii) ध्रुव व रजिया भारत माता के बच्चे हैं।**

उत्तर: बस बात पते की इतनी है, ध्रुव या रजिया भारत माँ के।

*पद्यांश ३ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ७४*

यों आप खफा क्यों होती हैं, टंटा काहे का आपस में।
हमसे तुम या तुमसे हम बढ़-चढ़कर क्या रक्खा इसमें।

झगड़े से न कुछ हासिल होगा, रख देंगे बातें उलझा के।
बस बात पते की इतनी है, ध्रुव या रजिया भारत माँ के।

भारत मात के रथ के हैं हम दोनों ही दो-दो पहिये, अजी दो पहिये, हाँ दो पहिये।
हम उस धरती की संतति हैं .....

**कृति इ (२): स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) ''स्त्री व पुरुष समाज के प्रमुख अंग है।'' इस पर आधारित अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: स्त्री व पुरुष एक समान होते हैं। कोई एक-दूसरे से बड़ा या छोटा नहीं होता। समाज को चलाने का कार्य उनके द्‌वारा ही होता है। यदि उन दोनों में से किसी एक की कमी हो, तो समाज व देश नहीं चल सकता है। दोनों एक-दूसरे के कंधे से कंधा मिलाकर काम करते हैं। आज हर एक क्षेत्र में पुरुष के साथ स्त्री भी कार्य करती दिखाई दे रही है। दोनों मिलकर भारत देश के विकास के लिए कार्य करते हैं। दोनों की समाज में अपनी अहमियत होती है। दोनों का अस्तित्व समाज व देश के लिए अत्यावश्यक होता है। परिवार भी दोनों के आपसी सांमजस्य व सहयोग से ही चलता है। इसलिए कहा गया है स्त्री व पुरुष समाज के प्रमुख अंग है।

**स्वाध्याय विषयक कृतियाँ**

***(१) सही या गलत पहचानकर गलत वाक्य को सही करके फिर से लिखिए।**

***(i) रानी कर्मवती ने अकबर को राखी भेजी थी।**

उत्तर: गलत, रानी कर्णावती ने अकबर को राखी भेज थी।

***(ii) भरत शेर के दाँत गिनते थे।**

उत्तर: सही

***(iii) ध्रुव आकाश में खेले थे।**

उत्तर: गलत, ध्रुव मिट्‌टी में खेले थे।

**(४) कविता से प्राप्त संदेश लिखिए।**

उत्तर: कविता से प्राप्त संदेश: स्त्री व पुरुष एक समान होते हैं। कोई एक-दूसरे से बड़ा या छोटा नहीं होता। दोनों का अस्तित्व समाज व देश के लिए अत्यावश्यक होता है। स्त्री-पुरुष समानता पर सभी को बल देना चाहिए। इसलिए वर्तमान बालकों-बालिकाओं को एक-दूसरे का साथ देना है तथा भारत माता को प्रगति की ओर ले जाना है। क्योंकि वे ही आनेवाले भारत की पीढ़ी हैं। राष्ट्र के विकास की आधारशिला हैं।

❖❖❖

# ७ महिला आश्रम

*- काका कालेलकर (१८८५)*

## लेखक-परिचय

**जीवन-परिचय** : लेखक काका कालेलकर जी का जन्म सन् १८८५ में महाराष्ट्र के सातारा जिले में हुआ। इनका पूरा नाम दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर था। ये गांधीवादी स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षाविद, पत्रकार, उच्चकोटी के विचारक व लेखक थे। मराठी, संस्कृत, हिंदी, गुजराती, बांग्ला व अंग्रेजी भाषाओं पर इनका समान अधिकार था। ये एक सशक्त लेखक थे। किसी भी सुंदर दृश्य का वर्णन अथवा कठिन समस्या का सुगम विश्लेषण करना इनके लिए बेहद सहज और सरल था। इन्होंने राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए विशेष योगदान दिया।

**प्रमुख कृतियाँ** : 'हिंदी: राष्ट्रीय शिक्षा के आदर्शों का विकास', 'जीवन-संकृति की बुनियाद', 'नक्षत्रमाला', 'स्मरणयात्रा', 'धर्मोदय' (आत्मचरित्र) आदि।

## गद्य-परिचय

**पत्र** : पत्र लिखना और पढ़ना सबको भाता है। शब्दों के विस्तार के साथ बहुत-सी भावनाएँ चिट्ठियों में सिमटती जाती हैं। आहिस्ता-आहिस्ता यह साहित्य में अवतीर्ण होने लगी और साहित्य की एक लोकप्रिय विधा बन गई। पत्र-लेखन हिंदी साहित्य की एक ऐसी विधा है, जिसमें हम मनचाही बातें लिख सकते हैं। इसके द्वारा हम अनुज को सलाह दे सकते हैं और किन्हीं कारणों से बड़ों से अब तक जो बातें हम संकोचवश नहीं कह पाए, वह लिखकर कह सकते हैं।

**प्रस्तावना** : 'महिला आश्रम' इस पत्रात्मक पाठ के माध्यम से लेखक काका कालेलकर जी ने महिला आश्रम की स्थापना एवं उसकी सुचारू व्यवस्था के लिए आवश्यक नियमों के बारे में बताया है। इसके साथ ही उनके गांधीवादी विचार; उनका अनुभव; विश्व व प्रकृति के प्रति उनके हृदय में जो अपार प्रेम है, इसके भी दर्शन होते हैं।

## सारांश

'महिला आश्रम' एक पत्रात्मक पाठ है। यहाँ पर दो पत्र दिए गए हैं। दोनों पत्र लेखक काका कालेलकर जी द्वारा सरोज को लिखे गए हैं। इन पत्रों के द्वारा उन्होंने महिला आश्रम की स्थापना के लिए सरोज का मार्गदर्शन किया है। उन्होंने बहुत ही सरल एवं स्पष्ट शब्दों में आश्रम के नियमों से सरोज को परिचित कराया है। उनके अनुसार महिला आश्रम के लिए किसी से पैसे माँगने की जरूरत नहीं है। वह किसी एक धर्म से जुड़ा नहीं होना चाहिए। आश्रम में स्वावलंबन, सदाचार, सेवा-भक्ति आदि के वातावरण का आग्रह होता है। लेखक प्रकृति से अपार प्रेम करते थे। तरह-तरह के फूल व पौधे उन्हें प्यारे लगते थे। वे गांधीवादी विचारधारा के समर्थक थे। वे गांधीजी के आदेशानुसार हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए उर्दू सीख रहे थे और उन्होंने सरोज को भी उर्दू सीखने के लिए कहा।

## शब्दार्थ

| | | |
|---|---|---|
| व्यवस्था | - | प्रबंध |
| फूल | - | सुमन |
| कमजोर | - | अशक्त |
| एकता | - | ऐक्य |
| आराम | - | विश्राम |
| चिरंजीव | - | दीर्घायु |
| संचालन | - | प्रबंधन |
| स्वावलंबन | - | आत्मनिर्भर |
| झंझट | - | परेशानी |
| कलह | - | विवाद, झगड़ा |
| कुढ़न | - | खीझ |
| बेखटके | - | बिना किसी संकोच के, निसंकोच |

## MASTER KEY QUESTION SET - 7

**प्रश्न १ (अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति अ (१) : आकलन कृति**

**(१) कृति पूर्ण कीजिए।**

(i)

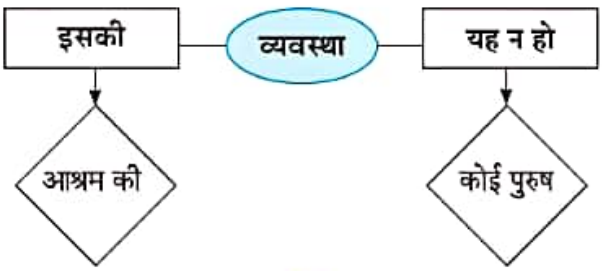


(ii)

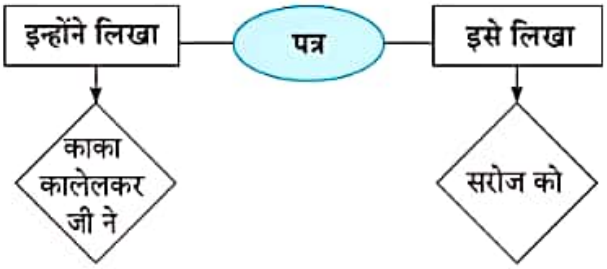


**(२) समझकर लिखिए।**

**(i) आश्रम में दाखिल होने के लिए इनकी आवश्यकता होगी -**

**(ii) आश्रम का अर्थ -**

**उत्तर:** (i) पूरी पहचान व परिचय (ii) होम या घर

**(३) आकृति पूर्ण कीजिए।**

(i)

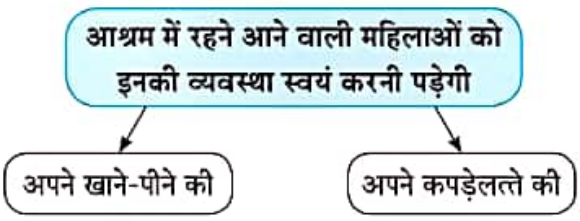


*गद्यांश: १ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ७६*

प्रिय सरोज,

जिस आश्रम की कल्पना की है उसके बारे में कुछ ज्यादा लिखूँ तो बहन को सोचने में मदद होगी, आश्रम यानी होम (घर) उसकी व्यवस्था में या संचालन में किसी पुरुष का संबंध न हो। उस आश्रम का विज्ञापन अखबार में नहीं दिया जाए। उसके लिए पैसे तो सहज मिलेंगे, लेकिन कहीं माँगने नहीं जाना है। जो महिला आएगी वह अपने खाने-पीने की तथा कपड़े लत्ते की व्यवस्था करके ही आए। वह यदि गरीब है तो उसकी सिफारिश करने वाले लोगों को खर्च की पक्की व्यवस्था करनी चाहिए। पूरी पहचान और परिचय के बिना किसी को दाखिल नहीं करना चाहिए। दाखिल हुई कोई भी महिला जब चाहे तब आश्रम छोड़ सकती है। आश्रम को ठीक न लगे तो एक या तीन महीने का नोटिस देकर किसी को आश्रम से हटा सकता है लेकिन ऐसा कदम सोच कर लेना होगा।

**कृति अ (२) : आकलन कृति**

**(१) निम्नलिखित विधान सत्य है या असत्य लिखिए।**

**(i) आश्रम में दाखिल हुई महिला जब चाहे तब आश्रम छोड़ सकती है।**

**(ii) आश्रम में रहने आने वाली महिला के खाने-पीने की व्यवस्था आश्रम करेगा।**

**उत्तर:** (i) सत्य (ii) असत्य

**(२) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

**(i) पैसे (ii) खर्च**

**उत्तर:** (i) आश्रम के लिए क्या माँगने की जरूरत नहीं है?

(ii) सिफारिश करने वालों को गरीब महिला के लिए किसकी पक्की व्यवस्था करनी चाहिए?

***(३) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए।**

**कृति अ (३) : शब्द संपदा**

**(१) गद्यांश में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द लिखिए।**

**उत्तर:** (i) होम (ii) नोटिस

**(२) विलोम शब्द लिखिए।**

(i) पूरी × ..... ज्यादा × .....

**उत्तर:** (i) अधूरी (ii) कम

**(३) वचन बदलिए।**

(i) महिला (ii) बहन

**उत्तर:** (i) महिलाएँ (ii) बहनें

(४) नीचे दिए हुए शब्दों में उचित उपसर्ग लगाकर नए शब्द निर्माण कीजिए।

उत्तर: (i) प्रिय: उपसर्ग : अ शब्द : अप्रिय
(ii) व्यवस्था: उपसर्ग : अ शब्द : अव्यवस्था

### कृति अ (४) : स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'आश्रम व्यवस्था के अपने नियम होते हैं वहाँ पर रहने वालों को उनका पालन करना जरूरी होता है।' इस पर आधारित अपने विचार लिखिए।

उत्तर: प्रत्येक व्यवस्था के अपने नियम होते हैं। कोई भी व्यवस्था हो; वह सुचारु रूप से चले, इसके लिए नियम बनाए जाते हैं। आश्रम व्यवस्था के भी अपने नियम होते हैं। चाहे वह अनाथ आश्रम हो या महिला आश्रम। आश्रम में रहने वालों को अपना आचरण एवं व्यवहार शुद्ध रखना होता है। आश्रम के सुचारु रूप से चलने में कोई दिक्कत न हो, इसके लिए सभी को नियमों का पालन करना पड़ता है। आश्रम में रहने वाला यदि एक व्यक्ति भी बुरा आचरण या नियमों का उल्लंघन करे, तो उसे आश्रम द्वारा नोटिस या चेतावनी दी जाती है। यदि ऐसा नहीं किया गया, तो आश्रम में रहने वाले अन्य लोग भी उसी का अनुकरण करने लगेंगे। इसलिए आश्रम व्यवस्था के नियमों का वहाँ पर रहने वालों को पालन करना जरूरी होता है।

## प्रश्न २ (आ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति आ (१): आकलन कृति

(१) संजाल पूर्ण कीजिए।

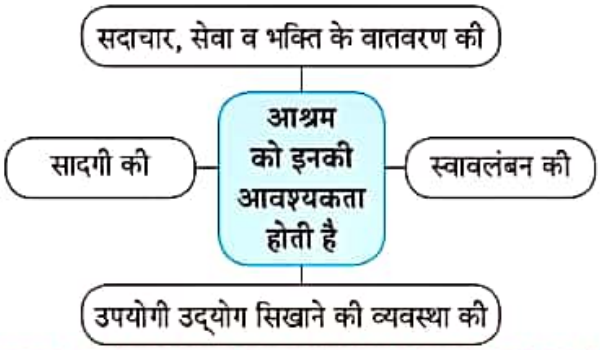


*गद्यांश: २ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ७६*

आश्रम किसी एक धर्म से चिपका नहीं होगा। सभी धर्म आश्रम को मान्य होंगे, अत: सामान्य सदाचार, भक्ति तथा सेवा का ही वातावरण रहेगा। आश्रम में स्वावलंबन हो सके उतना ही रखना चाहिए। सादगी का आग्रह होना चाहिए। आरंभ में पढ़ाई या उद्योग की व्यवस्था भले न हो सके लेकिन आगे चलकर उपयोगी उद्योग सिखाए जाएँ। पढ़ाई भी आसान हो। आश्रम शिक्षा-संस्था नहीं होगी लेकिन कलह और कुढ़न से मुक्त स्वतंत्र वातवरण जहाँ हो ऐसा मानवतापूर्ण आश्रय स्थान होगा, जहाँ परेशान महिलाएँ बेखटके अपने खर्च से रह सकें और अपने जीवन का सदुपयोग पवित्र सेवा में कर सकें। ऐसा आसान आदर्श रखा हो और व्यवस्था पर समिति का झंझट न हो तो बहन सुंदर तरीके से चला सके ऐसा एक बड़ा काम होगा। उनके ऊपर ऐसा बोझ नहीं आएगा जिससे कि उन्हें परेशानी हो।

### कृति आ (२): आकलन कृति

(१) कारण लिखिए।

(i) आश्रम का वातावरण स्वतंत्र एवं मानवतापूर्ण हो।

उत्तर: ताकि आश्रम में रहने वाली परेशान महिलाएँ बेखटके रहकर अपने जीवन का सदुपयोग पवित्र सेवा कार्य करने में कर सकें।

(ii) आश्रम की व्यवस्था पर समिति का झंझट न हो।

उत्तर: ताकि आश्रम व्यवस्था को सुंदर तरीके से चलाया जा सके।

### कृति आ (३) : शब्द संपदा

(१) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।

(i) पद्धति (ii) प्रबंध (iii) वाद (iv) तकलीफ

उत्तर: (i) तरीका (ii) व्यवस्था (iii) कलह (iv) परेशानी

(२) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।

(i) किसी संस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए गठित संगठन -

(ii) अपना काम स्वयं करना -

उत्तर: (i) समिति (ii) स्वावलंबन

(३) गद्यांश में प्रयुक्त उपसर्गयुक्त शब्द ढूँढ़िए और संबंधित उपसर्गों से अन्य शब्द बनाइए।

उत्तर: (i) बेखटके: उपसर्ग : बे ; नया शब्द : बेसहारा, बेदखल
(ii) स्वतंत्र: उपसर्ग : स्व ; नया शब्द : स्वदेश, स्वागत

### कृति इ (४) : स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'आश्रम किसी एक धर्म से चिपका नहीं होता।' इस कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।

उत्तर: आश्रम किसी एक धर्म से चिपका नहीं होता। आश्रम को सभी धर्म मान्य होते हैं। आश्रम में रहने आने वाले परेशान या दीन-दुखी लोग अलग-अलग धर्मों के होते हैं। यदि आश्रम किसी एक धर्म का पक्ष लेगा तो वहाँ पर रहने वाले अन्य धर्म के लोगों को परेशानी या दिक्कत हो सकती है। इसलिए आश्रम किसी भी एक धर्म को अपनाता नहीं है। उसके लिए सारे धर्म एक समान होते हैं। वह सर्वधर्म समभाव की भावना को अपनाता है। आश्रम व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए इसकी बेहद जरूरत होती है। आश्रम मानवता के धर्म का पालन करता है और आश्रम में रहने वाले सभी लोगों को उसका पालन करने के लिए प्रेरित करता है।

## प्रश्न ३ (इ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति इ (१): आकलन कृति

(१) कारण लिखिए।

(i) संस्था चलाने का भार आने वाली बहनें ही उठाएँगी।

उत्तर: क्योंकि उनमें से कई कुशल होंगी।

(ii) बहन की शक्ति, कुशलता और मर्यादा का ख्याल लेखक को है।

उत्तर: क्योंकि बहन से उनका बहुत वर्षों से परिचय है।

(२) कृति पूर्ण कीजिए।

(i)

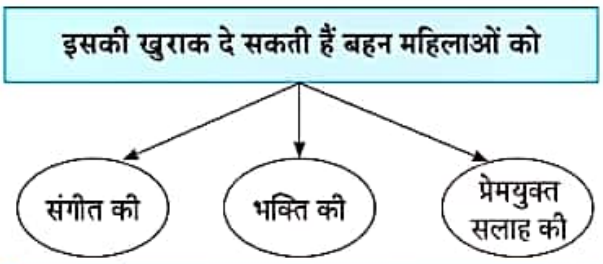


(ii)

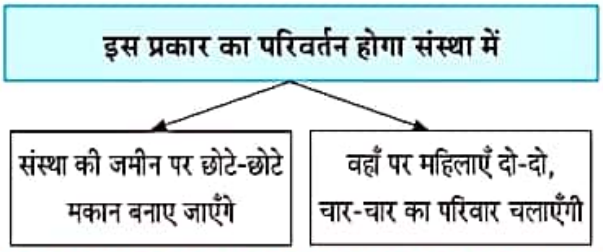


*गद्यांश: ३ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ७६-७७*

संस्था चलाने का भार तो आनेवाली बहनें ही उठा सकेंगी क्योंकि उनमें कई तो कुशल होंगी। बहन उनको संगीत की, भक्ति की तथा प्रेमयुक्त सलाह की खुराक दें। आगे चलकर संस्था की जमीन पर छोटे-छोटे मकान बनाए जाएँगे और उसमें संस्था के नियम के अधीन रहकर आने वाली महिलाएँ दो-दो, चार-चार का परिवार चलाएँगी, ऐसी संस्थाएँ मैंने देखी हैं। इसलिए जो बिलकुल संभव है, बहुत ही उपयोगी है। ऐसा ही काम मैंने सूचित किया है, इतने वर्ष के बहन के परिचय के बाद उनकी शक्ति कुशलता और उनकी मर्यादा का ख्याल मुझे है। प्रत्यक्ष कोई हिस्सा लिए बिना मेरी सलाह और सहारा तो रहेगा ही। आगे जाकर बहन को लगेगा कि उनको तो मात्र निमित्तमात्र होना था। संस्था अपने आप चलेगी। समाज में ऐसी संस्था की अत्यंत आवश्यकता है। उस आवश्यकता में से ही उसका जन्म होगा। मुझे इतना विश्वास न होता तो बहन के लिए ऐसा कुछ मैं सूचित ही नहीं करता। तुम दोनों इस सूचना का प्रार्थनापूर्वक विचार करना लेकिन जल्दी में कुछ तय न करके यथासमय मुझे उत्तर देना। बहन यदि हाँ कहे तो अभी से आगे का विचार करने लगूँगा।

### कृति इ (२): आकलन कृति

(१) **वाक्य पूर्ण कीजिए।**

(i) **लेखक संस्था के बारे में तब आगे का विचार करेंगे .....**

उत्तर: जब सरोज बहन उन्हें 'हाँ' कह दें।

(ii) **बहन स्वयं संस्था के लिए निमित्तमात्र होगी .....**

उत्तर: जब संस्था अपने आप चलेगी।

(२) **ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए कि जिनके उत्तर निम्न शब्द हों।**

(i) **बहन** (ii) **संस्था**

उत्तर: (i) लेखक सरोज को इस नाम से संबोधित करते थे?

(ii) समाज को किसकी आवश्यकता है?

### कृति इ (३) : शब्द संपदा

(१) **वचन बदलिए।**

(i) संस्था (ii) लता

(iii) शक्ति (iv) प्रार्थना

उत्तर: (i) संस्थाएँ (ii) लताएँ (iii) शक्तियाँ (iv) प्रार्थनाएँ

(२) **नीचे लिखे हुए वाक्य में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए।**

(i) **क्या समाज को ऐसी संस्थाओं की आवश्यकता नहीं होती है**

उत्तर: क्या समाज को ऐसी संस्थाओं की आवश्यकता नहीं होती है?

(३) **गद्यांश में से तत्सम शब्द ढूँढ़कर लिखिए।**

उत्तर: (i) प्रार्थना (ii) कुशल

(४) **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।**

(i) संभव × ..... (ii) कुशल × .....

उत्तर: (i) असंभव (ii) अकुशल

### कृति इ (४) : स्वमत अभिव्यक्ति

(१) **'संस्था व समाज का आपस में संबंध होता है।' इस कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: जब दो या दो से अधिक व्यक्ति मिलकर किसी एक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कार्यशील होते हैं तो संस्था की आवश्यकता पड़ती है। संस्था एक गतिशील क्रियात्मक प्रक्रिया है। संस्थाएँ अनेक प्रकार की होती हैं। जैसे सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, व्यावसायिक या वैज्ञानिक। संस्थाएँ व्यक्ति विकास को बढ़ावा देती हैं। संस्थाएँ लोगों के बीच समन्वय स्थापित करती हैं। संस्था के माध्यम से रचनात्मक विचारधारा को प्रोत्साहन मिलता है। एक समाज में इस प्रकार की कई संस्थाएँ होती हैं। इन संस्थाओं का समाज के साथ गहरा संबंध होता है क्योंकि वे समाज का प्रमुख अंग होती हैं। समाज में घटित क्रियाओं का संस्थाओं के कार्य पर प्रभाव पड़ता है। समाज की रीतिनुसार संस्था का कार्य आगे बढ़ता है। इस प्रकार संस्था व समाज का आपस में संबंध होता है।

### प्रश्न ४ (ई) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति ई (१): आकलन कृति

*(१) **तालिका पूर्ण कीजिए।**

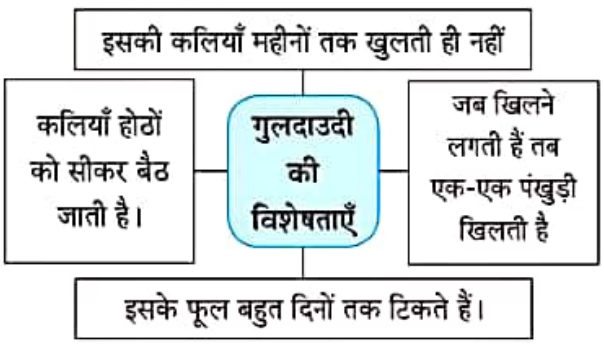

*गद्यांश: ४ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ७७*

यहाँ सर्दी अच्छी है। फूलों में गुलदाउदी, क्रिजेन्थीमम फूल बहार में हैं। उसकी कलियाँ महीनों तक खुलती ही नहीं मानो भारी रहस्य की बात पेट में भर दी हो और होठों को सीकर बैठ गई हों। जब खिलती हैं तब भी एक-एक पंखुड़ी करके खिलती हैं। वे टिकते हैं बहुत। गुलाब भी खिलने लगे हैं। कोस्मोस के दिन गए। उन्होंने बहुत आनंद दिया। जिनिया का एक पौधा, रास्ते के किनारे पर था जो आए सो उसकी कली तोड़े। फिर मैंने इस बड़े पौधे को वहाँ से निकालकर अपने सिरहाने के पास लगा दिया, फिर इसने सुंदर फूल दिए। इसकी आँखें मानो उत्कटता से बोलती हों, ऐसी लगतीं। दो-एक महीने फूल देकर अंत में वह सूख गया। परसों ही मैंने उसे बिदा दी।

- काका का दोनों को सप्रेम शुभाशीष
गुरु : २१. १२. ४४

### कृति ई (२) : आकलन कृति

**(१) समझकर लिखिए।**

**(i) गद्यांश में प्रयुक्त फूलों के नाम -**

उत्तर: गुलदाउदी, क्रिजेन्थीमम, गुलाब, कोस्मोस, जिनिया।

**(ii) इस पौधे को लगाया लेखक ने अपने सिरहाने -**

उत्तर: कोस्मोस

**(२) उचित जोड़ियाँ मिलाइए।**

| 'अ' | 'ब' |
|---|---|
| (i) सुंदर | (क) रहस्य |
| (ii) बहुत | (ख) सर्दी |
| (iii) अच्छी | (ग) आनंद |
| (iv) भारी | (घ) फूल |

उत्तर: (i - घ), (ii - ग), (iii - ख), (iv - क)

### कृति ई (३) : शब्द संपदा

**(१) परिच्छेद में से शब्द-युग्म छाँटकर लिखिए।**

उत्तर: (i) एक-एक (ii) दो-एक

**(२) विलोम शब्द लिखिए।**

(i) सर्दी × ..... (ii) खिलना × .....

उत्तर: (i) गरमी (ii) मुरझाना

**(३) समानार्थी शब्द लिखिए।**

(i) किनारा (ii) पेट

(iii) आशीष (iv) आनंद

उत्तर: (i) तट (ii) उदर (iii) आशीर्वाद (iv) हर्ष

**(४) निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम शब्द लिखिए।**

(i) होठ (ii) आशीर्वाद

उत्तर: (i) ओष्ठ (ii) आशीष

### कृति ई (४) : स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'प्रकृति मानव-मन को प्रेरणा देती है।' अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: प्रकृति को ईश्वर का दूसरा रूप कहा जाता है। प्रकृति सुंदर होती है। उसके कई रूप होते हैं। पहाड़, झरने, पेड़, पौधे, फूल, तालाब, नदी, सागर आदि उसके विविध रूप हैं। प्रकृति के सान्निध्य में मानव का विकास होता है। वह उसे प्रेरित करती है। उसके सदाबहार रूप को देखकर इंसान को सत्यम-शिवम्-सुंदरम् का एहसास होने लगता है। महाकवि वाल्मीकि ने कविता लिखने की प्रेरणा प्रकृति से ही प्राप्त की। इसी प्रकृति के सान्निध्य में रहकर भगवान बुद्ध को आत्मज्ञान प्राप्त हुआ था। न्यूटन को गुरूत्वाकर्षण का सिद्धांत ढूँढ़ निकालने में इसी प्रकृति ने ही मदद की थी। जब हम चिंताग्रस्त हो जाते हैं; तब हम मानसिक शांति के लिए प्रकृति के ही सानिध्य में जाते हैं। इसलिए कहा गया है कि प्रकृति मानव-मन को प्रेरणा देती है। वह मनुष्य की सहचरी-सहगामिनी है।

## प्रश्न ५ (उ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति उ (१) : आकलन कृति

***(१) कारण लिखिए।**

**(i) काका जी ने कंपास बॉक्स मँगवा कर रखा।**

उत्तर: क्योंकि वे तारों के नक्शे बनाना चाहते हैं।

**(ii) लेखक ने फूल के गमले अपने पास से निकाल दिए।**

उत्तर: क्योंकि उनकी तरफ ध्यान देने की उनकी इच्छा नहीं होती है।

**(२) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

(i) चिरंजीव (ii) उर्दू

उत्तर: (i) लेखक ने रैहाना के लिए किस विशेषण शब्द का प्रयोग किया है?

(ii) हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए कौन-सी भाषा सीखनी आवश्यक है?

*गद्यांश: ५ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ७७*

प्रिय सरोज,

तुम्हारा १६ से १८ तक लिखा हुआ पत्र आज अभी मिला। इस महीने में मैंने इन तारीखों को पत्र लिखे हैं - तारीख १,९,१५ और चौथा आज लिख रहा हूँ। अब तुमको हर सप्ताह मैं लिखूँगा ही। तुम्हारी तबीयत कमजोर है तब तक चिरंजीव रैहाना मुझे पत्र लिखेगी तो चलेगा। मुझे हर सप्ताह एक पत्र मिलना ही चाहिए।

पूज्य बापू जी चाहते हैं तो हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए मुझे अपनी सारी शक्ति उर्दू सीखने के पीछे खर्च करनी चाहिए। तुमको मैंने एक संदेश भेजा था कि तुम उर्दू लिखना सीखो । लेकिन अब तो मेरा एक ही संदेश है-पूरा आराम लेकर पूरी तरह ठीक हो जाओ।

तारों के नक्शे बनाने के लिए कंपास बॉक्स भी मँगाकर रखा है। लेकिन अब तक कुछ हो नहीं पाया है।

मैंने अपने फूल के गमले अपने पास से निकाल दिए हैं। सादे क्रोटन को ही रहने दिया है।

सबको काका का सप्रेम शुभाशीष।

### कृति उ (२) : आकलन कृति

(१) समझकर लिखिए।

(i) एक महीने में इतनी बार पत्र लिखे लेखक ने -

उत्तर: चार बार

(ii) बापू जी की चाह -

उत्तर: हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए उर्दू भाषा सीखनी अत्यावश्यक है।

(१) कृति पूर्ण कीजिए।

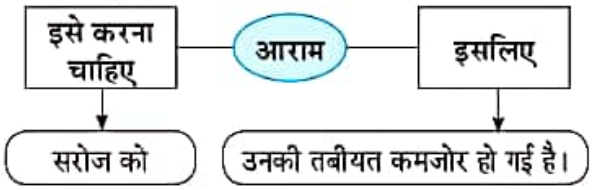


### कृति उ (३) : शब्द संपदा

(१) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।

(i) चाह (ii) पूजनीय

(iii) खत (iv) स्वास्थ्य

उत्तर: (i) इच्छा (ii) पूज्य (iii) पत्र (iv) तबीयत

(२) विलोम शब्द लिखिए।

(i) एकता × ..... (ii) आज × .....

(iii) इच्छा × ..... (iv) पास × .....

उत्तर: (i) अनेकता (ii) कल (iii) अनिच्छा (iv) दूर

(३) निम्नलिखित शब्द के अनेकार्थी शब्द लिखिए।

(i) पत्र

उत्तर: (i) खत, पेड़ की पत्ती

(४) निम्नलिखित शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।

(i) सात दिनों का समूह -

उत्तर: (i) सप्ताह

### कृति उ (४): स्वमत अभिव्यक्ति

*(१) 'पत्र लिखने का सिलसिला सदैव जारी रहना चाहिए।' इस कथन पर अपना मत लिखिए।

उत्तर: पत्र-लेखन एक कला है। पत्रों का हमारे जीवन में सदैव महत्त्वपूर्ण स्थान बना रहेगा। कई महापुरुषों द्वारा लिखे गए पत्रों से हमें कई प्रकार की जानकारी प्राप्त होती है। महापुरुषों द्वारा लिखे गए पत्रों में अनुभवों का भण्डार भरा हुआ होता है। ऐसे पत्र हमारे पथ-प्रदर्शक होते हैं। रिश्तेदार एवं मित्रों को लिखे गए पत्रों में एक अपनापन होता है; मिठास होती है। व्यक्ति पत्र लिखते समय अपने मन के भावों को भी उसमें उतारता है। पत्र दो व्यक्तियों को भावात्मक दृष्टि से बाँध देते हैं। कहा भी गया है, पत्र किसी भी भाषा में लिखा जाए, उसमें छिपा प्रेम एक होता है । इसलिए हर व्यक्ति पत्रों को सँभाल कर रखता है। यदि व्यक्ति अपनेपन व प्रेम की भावना को बनाए और संजोए रखना चाहता है, तो उसे पत्र लिखने का सिलसिला सदैव जारी रखना चाहिए।

### स्वाध्याय विषयक कृतियाँ

*(१) जिन्हें 'ता' प्रत्यय लगता हो ऐसे शब्द पाठ से ढूँढ़कर उन प्रत्ययसाधित शब्दों की सूची बनाइए।

उत्तर:

| शब्द | 'ता' | प्रत्यय साधित शब्द |
|---|---|---|
| मानव | ता | मानवता |
| आवश्यक | ता | आवश्यकता |
| उत्कट | ता | उत्कटता |
| एक | ता | एकता |

*(२) पाठ में प्रयुक्त पर्यायवाची शब्द लिखकर उसका स्वतंत्र वाक्य में प्रयोग कीजिए।

(i) कलह : विवाद या झगड़ा : वाक्य : उन दोनों में कलह हुआ।

(ii) कुढ़न : खीझ : वाक्य : उसकी बात पर मुझे कुढ़न हुई।

(iii) व्यवस्था : प्रबंध : वाक्य : मैंने मेहमानों के खाने-पीने की व्यवस्था की।

(iv) फूल : सुमन : वाक्य : मैंने बाजार से गुलाब के पाँच फूल लाए।

(v) आँख : नयन : वाक्य : उसकी एक आँख तिरछी है।

(vi) कमजोर : अशक्त वाक्य : वह बहुत कमजोर हो गया है।

(vii) ध्यान : एकाग्रता : वाक्य : मैंने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया।

(viii) एकता : ऐक्य वाक्य : एकता में शक्ति होती है।

(ix) आराम : विश्राम : वाक्य : परिश्रम के बाद आराम अत्यंत आवश्यक होता है।

(x) रास्ता : पथ : वाक्य : मेरा रास्ता मत काटो।

(xi) चिरंजीव : दीर्घायु : वाक्य : भीष्म को चिरंजीव बने रहने का वरदान मिला था।

### भाषा बिंदु

*(१) इन शब्दों से बने मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(१) आँख

(i) आँख दिखाना : गुस्सा होना।

**वाक्य:** यदि अजय को कोई कुछ काम के लिए कहता है, तो वह तुरंत आँख दिखाता है।

(ii) **आँख का तारा होना** : बहुत प्रिय होना।

**वाक्य:** हर बच्चा अपने माता-पिता की आँख का तारा होता है।

(२) **मुँह**

(i) **मुँह ताकना** : दूसरे पर आश्रित होना।

**वाक्य:** आलसी लोग काम के लिए हमेशा दूसरों का मुँह ताकते रहते हैं।

(ii) **कलेजा मुँह को आना** : बहुत घबरा जाना।

**वाक्य:** अचानक बिजली चले जाने से मेरा कलेजा मुँह को आ गया।

(३) **दाँत**

(i) **दाँत खट्टे करना** : लड़ाई में हराना।

**वाक्य:** पांडवों ने कौरवों के दाँत खट्टे कर दिए।

(ii) **दाँतों तले ऊँगली दबाना** : आश्चर्यचकित होना।

**वाक्य:** जादूगर का जादू देखकर मैंने दाँतों तले ऊँगली दबा ली।

(४) **हाथ**

(i) **अपनी जान से हाथ धोना** : मरना।

**वाक्य:** हाइवे पर गाड़ी ज्यादा तेज़ चलाने पर कई लोग अपनी जान से हाथ धो चुके हैं।

(ii) **दाहिना हाथ होना** : बहुत बड़ा सहायक होना।

**वाक्य:** सरदार वल्लभभाई पटेल गांधीजी के दाहिने हाथ थे।

(५) **हृदय**

(i) **हृदय रो पड़ना** : अत्यधिक दुखी होकर रोना।

**वाक्य:** इकलौते बेटे की मृत्यु पर माँ का हृदय रो पड़ा।

(ii) **हृदय से लगाना** : गले लगाना।

**वाक्य:** ससुराल जाते समय माँ ने अपनी बेटी को हृदय से लगाया।

## उपयोजित लेखन

***(१) 'संदेश वहन के आधुनिक साधनों से लाभ-हानि' इस विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लिखिए।**

**उत्तर:** संदेश वहन मानव की प्रगति के लिए महत्त्वपूर्ण है। इस दुनिया के एक देश में बैठे लोगों को दूसरे देशों से जोड़ता है। आज मानव सभ्यता प्रगति की ओर अग्रसर है। इसका मुख्य श्रेय संदेश वहन के आधुनिक साधनों को ही जाता है।

ई-मेल, दूरभाष, ट्विटर, फैक्स, फेसबुक मैसेज, व्हॉटसएप, ये संदेश वहन के आधुनिक साधन हैं। इनके माध्यम से दो या दो से अधिक व्यक्ति एक-दूसरे से मीलों दूर रहकर भी आपस में बातचीत और संदेशों का आदान-प्रदान कर सकता हैं। इतना ही नहीं वे एक-दूसरे को स्क्रीन पर प्रत्यक्ष देख भी सकते हैं। फैक्स मशीनों के द्वारा कागज पर लिखकर दूसरे देश में बैठे व्यक्ति को संदेश भेजा जा सकता है। ई-मेल को फैक्स का उत्तम रूप माना जा सकता है। संदेश वहन के साधनों के कारण सभी देशों का आपसी संपर्क बढ़ गया है। आज व्यापार से संबंधित कार्य संदेशवहन के कारण घर या कार्यालय में बैठे-बैठे संपन्न किए जा सकते हैं।

संदेश वहन के जिस प्रकार कुछ लाभ हैं वैसी ही कुछ हानियाँ भी हैं। कोई-कोई लोग दिन-रात ई-मेल, मोबाइल, ट्विटर, फैक्स, फेसबुक मैसेज, व्हाटसएप का इस्तेमाल करते हैं; जिससे उनकी आँखों की रोशनी कमजोर हो जाती है। इस रोग से महीनों तथा वर्षों तक छुटकारा नहीं मिल पाता। संदेश वहन के साधनों का लगातार इस्तेमाल करने से व्यक्ति मानसिक तनाव का शिकार हो जाता है। जिससे व्यक्ति का स्वास्थ्य घातक रूप से प्रभावित होता है।

***(२) अपने मित्र या सहेली को जिला विज्ञान प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त होने के उपलक्ष्य में बधाई देते हुए पत्र लिखिए। (पत्र निम्न स्वरूप में हो)**

**दिनांक:** .....
**संबोधन :**
**अभिवादन :**
**प्रारंभ :** .....
**विषय विवेचन :** .....
**समापन :** .....
**हस्ताक्षर:** .....
**नाम :** .....
**पता :** .....
.....
.....
**ई-मेल आई. डी. :** .....

**उत्तर:** १० जनवरी, २०१८

प्रिय मित्र निकेतन,

सप्रेम नमस्ते।

निकेतन, तुम कैसे हो? आशा करता हूँ कि तुम ठीक होगे। मैं भी यहाँ पर ठीक हूँ।

कल ही मैंने समाचार पत्र में पढ़ा कि तुम्हें जिला विज्ञान प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह समाचार पढ़कर मैं फूला न समाया। इसलिए तुम्हें हार्दिक बधाई देने के लिए मैं यह

पत्र लिख रहा हूँ। तुम्हें विज्ञान में बेहद रूचि है। तुम हमेशा विज्ञान से संबंधित पुस्तकों का वाचन करते रहते हो। मुझे तुम पर बहुत गर्व महसूस हो रहा है। मुझे याद है, तुमने विज्ञान प्रदर्शनी के लिए मॉडल एवं प्रकल्प तैयार करने के लिए पिछले महीने से ही तैयारी शुरू कर दी थी। आखिर, तुम्हारी मेहनत रंग लाई और तुम्हें प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। तुम्हारे द्वारा निर्मित यह प्रकल्प तुम्हारी सृजनात्मकता एवं प्रतिभा की गवाही देता है। सचमुच, तुम मेरे मित्र हो, यह मेरे लिए बड़ी खुशी की बात है। मेरे परिवार वालों ने भी तुम्हें हार्दिक बधाई दी है।

और क्या लिखूँ? तुम्हारी प्रशंसा के लिए मेरे पास शब्द ही नहीं है। जैसे ही ग्रीष्मावकाश शुरू हो जाएँ वैसे ही तुम मेरे घर पर रहने के लिए आ जाना। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा। अपनी माता जी एवं पिता जी को मेरा सादर प्रणाम कहना।

.....

कुमार संदेश जोशी
२०२, पारिजात,
नारायण मार्ग,
मुंबई ४०० ०२०.
kumarsandesh16@gmail.com

***(२) भाषण-संभाषण : 'अनुशासन स्वयं विकास का प्रथम चरण है।' कथन पर चर्चा कीजिए।**

उत्तर : अनुशासन मानव-जीवन का आवश्यक अंग है। अनुशासन का अर्थ है नियमों का पालन करना। मनुष्य विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। अनुशासन का पालन करने से मनुष्य सुखद और उज्ज्वल भविष्य की राह निर्धारित करता है। अनुशासित जीवन-शैली व्यक्ति को स्वस्थ रखती है। अनुशासन के कारण काम करने का दृढ़-संकल्प व्यक्ति के मन में बना रहता है। अनुशासन का पालन करने से व्यक्ति नियम-कानून के अनुसार काम करता है और अपने लक्ष्य पर निगाह बनाए रखता है। इस प्रकार अनुशासन से ही मनुष्य का पूर्ण विकास संभव है। इसलिए कहा गया है कि अनुशासन स्वयं विकास का प्रथम चरण है।

❖❖❖

# ८ अपनी गंध नहीं बेचूँगा

*- बालकवि बैरागी (१९३१)*

## कवि-परिचय

**जीवन-परिचय** : बालकवि बैरागी का जन्म १० फरवरी १९३१ को मध्य प्रदेश के मंदसौर में हुआ था। इन्होंने विक्रम विश्वविद्यालय से हिंदी में स्नातकोत्तर की उपाधि धारण की। इनका वास्तविक नाम श्री नंदरामदास बैरागी है। साहित्य एवं राजनीति में इन्हें विशेष रूचि है। बैरागीजी राजनीति में भी सक्रिय हैं। इन्होंने बाल-साहित्य को समृद्ध किया है। इनकी कविताएँ ओजगुण से संपन्न हैं।

**प्रमुख कृतियाँ** : 'गौरव गीत', 'दरद दीवानी', 'दो टूक', 'भावी रक्षक', 'आओ बच्चों', 'गाओ बच्चों' (काव्यसंग्रह) आदि।

## पद्य-परिचय

**गीत** : गीत हिंदी साहित्य की महत्त्वपूर्ण काव्य विधा है। जो गाया जाता है; वह गीत होता है। इसमें एक मुखड़ा तथा कुछ अंतरे होते हैं। प्रत्येक अंतरे के बाद मुखड़े को दोहराया जाता है।

**प्रस्तावना** : प्रस्तुत गीत के द्वारा कवि बालकवि बैरागी जी ने फूल के माध्यम से स्वाभिमान जैसे मानवीय गुण का दर्शन करवाया है। प्रस्तुत गीत से पता चलता है कि फूल किसी भी परिस्थिति में अपनी गंध नहीं बेचता। वह स्वाभिमानी है। मनुष्य को भी फूल के इस गुण को अपनाना चाहिए।

## सारांश

प्रस्तुत गीत के माध्यम से बालकवि बैरागी ने समझाया है कि स्वाभिमान ही जीवन है। व्यक्ति को परिस्थिति के प्रतिकूल होने के बावजूद भी अपने स्वाभिमान को नहीं बेचना चाहिए। स्वाभिमान व्यक्ति को जीवन में ऊँचा उठाने में सहायक सिद्ध होता है। स्वाभिमान के कारण ही व्यक्ति तेजस्वी बनता है। कवि कहते हैं कि फूल के पास अपनी गंध होती है। हम फूल की पंखुड़ियों को एक-दूसरे से अलग कर सकते हैं, लेकिन चाहकर भी उसकी गंध को उससे अलग नहीं कर सकते। फूल अपनी स्वाभिमान रूपी गंध से अलग नहीं होना चाहता। इसलिए वह कहता है कि चाहे कुछ भी हो जाए वह अपनी गंध नहीं बेचेगा।

## शब्दार्थ

| | | |
|---|---|---|
| सुमन | - | फूल |
| डाली | - | टहनी |
| मंडी | - | बाजार |
| उपवन | - | वाटिका |
| पँखुरी | - | पँखुड़ियाँ |
| खुद्दारी | - | स्वाभिमान |
| फागुन | - | फाल्गुन का महीना |
| अंतर | - | फर्क |
| माटी | - | मिट्टी |
| गंध | - | महक, सुगंध |
| कोंपल | - | कोमल नई पत्तियाँ |
| अरुणाई | - | लालिमा, लाली |
| अनुबंध | - | समझौता, बंधन, प्रतिज्ञा पत्र |
| प्रतिबंध | - | रुकावट, विघ्न, बाधा |

## भावार्थ

- **चाहे सभी ..... अपनी गंध नहीं बेचूँगा।।**

फूल कहता है कि चाहे भले ही सारे सुमन बिक जाएँ या चाहे सारे उपवन भी बिक जाएँ। इतना ही नहीं चाहे सौ फागुन भी बिक जाएँ फिर भी वह अपनी गंध नहीं बेचेगा। चाहे परिस्थिति प्रतिकूल हो या अनुकूल वह अपनी गंध बेचने के लिए बिलकुल भी तैयार नहीं होगा । वह अपने स्वाभिमान को मिटने नहीं देना चाहता।

- **जिस डाली ने ..... सौगंध नहीं बेचूँगा। अपनी गंध नहीं बेचूँगा।।**

फूल कहता है कि पेड़ की डाली ने उसे अपनी गोद में खिलाया है और नई कोमल पत्तियों ने उसे लालिमा प्रदान की है। काँटों ने उसकी रक्षा के लिए लक्ष्मणरेखा जैसी चौकी बनाकर उसकी जान बचाई है। इन सभी के अनंत उपकार वह भूलना नहीं चाहता। इसलिए वह कहता है कि इन सभी को मुझे नोचने-तोड़ने अथवा किसी भी मालिन को समर्पित करने का पहला हक है। फूल उस पर मँडराने वाली तितलियों को और उसका मोल लगाने वालों को बड़े ही स्वाभिमान से कहता है कि उसकी सौगंध उसका संस्कार है। उसे वह कदापि नहीं बेचेगा। चाहे कुछ भी हो पर वह अपनी गंध नहीं बेचेगा।

- **मौसम से क्या ..... अनुबंध नहीं बेचूँगा। अपनी गंध नहीं बेचूँगा।।**

फूल कहता है कि उसे किसी भी मौसम से सरोकार नहीं है क्योंकि मौसम तो आते-जाते रहते हैं। जो मौसम उसे प्रफुल्लित करेगा; उस दाता रूपी मौसम से वह सब कुछ प्राप्त कर लेगा और जो मौसम उससे कुछ लेकर जाएगा, उसे वह नष्ट करेगा। उसे अपने ऊपर मँडराकर गीत गाने वाले भँवरे तथा पतझड़ के रोने-धोने से भी कुछ लेना-देना नहीं है। उस पर कोई पिचकारी में कृत्रिम रंग भरकर डालेगा, तो भी उस पर किसी भी प्रकार का असर नहीं होगा। वह बड़े स्वाभिमान के साथ उसकी नीलामी लगाने वालों तथा पल-पल उसकी कीमत बढ़ानेवालों से कहता है कि उसने अपने आप से समझौता कर लिया है कि वह अपनी गंध नहीं बेचेगा।

- **मुझको मेरा अंत ..... प्रतिबंध नहीं बेचूँगा। अपनी गंध नहीं बेचूँगा।।**

फूल कहता है कि उसे अपना अंत पता है। वह ज्यादा दिनों तक जीवित नहीं रह सकता। उसकी प्रत्येक पंखुड़ी एक-एक करके झर जाएगी। फिर भी वह मरने से पहले पवन परी के साथ हर एक घर में स्वच्छंद विहार करना चाहता है। यदि उससे कुछ भूल-चूक हुई होगी, तो वह अपनी गंध के द्वारा सबसे माफी माँगेगा। फूल की खुद्दारी का सभी को पता लगने में देर न लगेगी। यह मंडी रूपी दुनिया उसके स्वाभिमान से एक दिन अवश्य परिचित होगी। फूल इतना स्वाभिमानी है कि वह बिकने से बेहतर मर जाना तथा मिट्टी में झर जाना पसंद करेगा। वह अपने मन से तन पर लगाए गए प्रतिबंध से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं करेगा। वह अपनी गंध हरगिज नहीं बेचेगा।

## MASTER KEY QUESTION SET - 8

**प्रश्न १ (अ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति अ (१) : आकलन कृति**

**(१) आकृति पूर्ण कीजिए।**

***(२) लिखिए।**

**(i) फूल के अनुसार उसे तोड़ने का पहला अधिकार इन्हें है -**

**उत्तर :** डाली, कोंपल व काँटे

**(३) तात्पर्य लिखिए।**

**(i) लक्ष्मण जैसी चौकी देकर जिन काँटों ने जान बचाई।**

**उत्तर :** जिस प्रकार लक्ष्मण ने सीता माता की सुरक्षा के लिए एक रेखा खींचकर उन्हें उस रेखा के अंदर रहने के लिए कहा था, उसी प्रकार काँटों ने फूल की रक्षा के लिए चौकी बनाकर उसकी जान बचाई है।

***(४) आकृति पूर्ण कीजिए।**

*पद्यांश १ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ८०*

चाहे सभी सुमन बिक जाएँ चाहे ये उपवन बिक जाएँ
चाहे सौ फागुन बिक जाएँ पर मैं गंध नहीं बेचूँगा
अपनी गंध नहीं बेचूँगा।।

जिस डाली ने गोद खिलाया जिस कोंपल ने दी अरुणाई
लछमन जैसी चौकी देकर जिन काँटों ने जान बचाई
इनको पहिला हक आता है चाहे मुझको नोचें-तोड़े
चाहे जिस मालिन से मेरी पँखुरियों के रिश्ते जोड़ें
ओ मुझपर मँडराने वालों मेरा मोल लगाने वालों
जो मेरा संस्कार बन गई वो सौगंध नहीं बेचूँगा।
अपनी गंध नहीं बेचूँगा।।

### कृति अ (२) : आकलन कृति

(१) उत्तर लिखिए।

(i) फूल का संस्कार -

(ii) कोंपल ने फूल को यह दिया -

(iii) पद्यांश में प्रयुक्त एक माह का नाम -

उत्तर: (i) कृतज्ञता का भाव (ii) अरुणाई (iii) फागुन

(२) पद्यांश द्वारा मिलने वाला संदेश लिखिए।

उत्तर: व्यक्ति को फूल की तरह अपने स्वाभिमान को जीवित रखना चाहिए। अपना स्वाभिमान कभी नहीं खोना चाहिए।

(३) सूची बनाइए।

(i) इनका फूल से संबंध है -

उत्तर: डाली, कोंपल, काँटे, मालिन, मौसम, माली, पवन, भँवरे

(४) समझकर लिखिए।

फूल इन्हें कह रहा है कि वह अपनी सौगंध नहीं बेचेगा

- उस पर मँडराने वालों को
- उसका मोल लगाने वालों को

(५) कारण लिखिए।

(i) फूल अपनी सौगंध नहीं बेचेगा।

उत्तर: क्योंकि फूल के लिए उसकी कृतज्ञता ही उसका संस्कार बन गई है जो उसके लिए एक सौगंध है।

### कृति अ (३) : भावार्थ

(१) निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।

(i) चाहे सभी सुमन बिक जाएँ ..... पर मैं गंध नहीं बेचूँगा।

उत्तर: फूल कहता है कि चाहे भले ही सारे सुमन बिक जाएँ या चाहे सारे उपवन भी बिक जाएँ। इतना ही नहीं चाहे सौ फागुन भी बिक जाएँ फिर भी वह अपनी गंध नहीं बेचेगा। चाहे परिस्थिति प्रतिकूल हो या अनुकूल वह अपनी गंध अथवा स्वाभिमान बेचने के लिए हरगिज़ भी तैयार नहीं होगा। वह अपने स्वाभिमान को मिटने देना नहीं चाहता।

(ii) जिस डाली ने ..... काँटों ने जान बचाई।

उत्तर: फूल कहता है कि पेड़ की डाली ने उसे अपनी गोद में खिलाया है और नई कोमल पत्तियों ने उसे लालिमा प्रदान की है। काँटों ने उसकी रक्षा के लिए लक्ष्मणरेखा जैसी चौकी बनाकर उसकी जान बचाई है। इन सभी के अनंत उपकार वह भूलना नहीं चाहता।

(iii) ओ मुझपर मँड़राने वालो ..... अपनी सौगंध नहीं बेचूँगा।

उत्तर: फूल उस पर मँडराने वाली तितलियों को और उसका मोल लगाने वालों को बड़े ही स्वाभिमान से कहता है कि उसकी डाली, कोंपल व काँटों के प्रति कृतज्ञता का भाव उसका संस्कार है। उसे वह कदापि नहीं बेचेगा। चाहे कुछ भी हो पर वह अपनी गंध नहीं बेचेगा।

## प्रश्न २ (आ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति आ (१) : आकलन कृति

(१) कारण लिखिए।

*(i) फूल को मौसम से कुछ लेना नहीं है।

उत्तर: क्योंकि मौसम तो आता-जाता रहेगा।

(ii) फूल ने स्वयं से अनुबंध किया है।

उत्तर: क्योंकि वह अपनी गंध को हरग़िज भी नहीं बेचना चाहता।

*(२) निम्नलिखित पंक्ति से स्पष्ट होने वाला अर्थ लिखिए।

(i) 'दाता होगा तो दे देगा खाता होगा तो खाएगा'-

उत्तर: इस पंक्ति में फूल कहता है कि जो मौसम उसे प्रफुल्लित करेगा; उस दाता रूपी मौसम से वह सब कुछ प्राप्त कर लेगा और जो मौसम उससे कुछ लेकर जाएगा उसे वह नष्ट करेगा। अर्थात उसे मौसम से कुछ लेना-देना नहीं है।

*(३) आकृति पूर्ण कीजिए।

फूल बेचना नहीं चाहता

- अपना अनुबंध
- अपनी गंध

*पद्यांश २ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ८०*

मौसम से क्या लेना मुझको ये तो आएगा-जाएगा
दाता होगा तो दे देगा खाता होगा तो खाएगा।
कोमल भँवरों के सुर सरगम पतझरों का रोना-धोना
मुझपर क्या अंतर लाएगा पिचकारी का जादू-टोना
ओ नीलाम लगाने वालो पल-पल दाम बढ़ाने वालों
मैंने जो कर लिया स्वयं से वो अनुबंध नहीं बेचूँगा।
अपनी गंध नहीं बेचूँगा।।

### कृति आ (२) : आकलन कृति

(१) समझकर लिखिए।

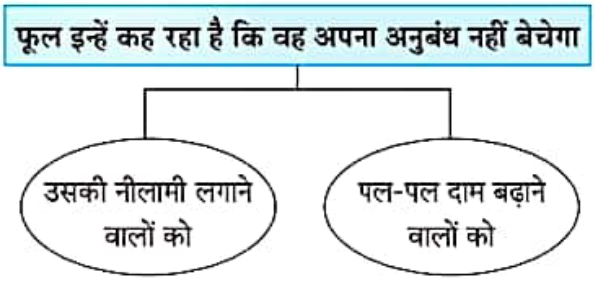


(२) उचित जोड़ियाँ लगाइए।

| 'अ' | 'ब' |
|---|---|
| (i) कोमल | (क) रोना-धोना |
| (ii) सुर | (ख) जादू-टोना |
| (iii) पतझड़ | (ग) सरगम |
| (iv) पिचकारी | (घ) भँवरें |

उत्तर: (i - घ), (ii - ग), (iii - क), (iv - ख)

(३) उचित पर्याय चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

(i) फूल को अपने पर मँडराकर गीत गाने वाले भँवरों/पक्षियों से भी कुछ लेना-देना नहीं है।

उत्तर: फूल को अपने पर मँडराकर गीत गाने वाले भँवरों से भी कुछ लेना-देना नहीं है।

(ii) फूल का पतझड़/वसंत के रोने-धोने से भी किसी प्रकार का संबंध नहीं है।

उत्तर: फूल का पतझड़ के रोने-धोने से भी किसी प्रकार का संबंध नहीं है।

### कृति आ (३) : निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।

(१) कोमल भँवरों ..... जादू टोना।

उत्तर: फूल को अपने ऊपर मँडराकर गीत गाने वाले भँवरों तथा पतझड़ के रोने-धोने से कुछ भी लेना-देना नहीं है। कोई पिचकारी में कृत्रिम रंग भरकर डालेगा, तो भी उस पर किसी प्रकार का असर नहीं होगा।

(२) ओ नीलाम लगाने वालों ..... अनुबंध नहीं बेचूँगा।

उत्तर: फूल बड़े स्वाभिमान के साथ निलामी लगाने वालों तथा पल-पल दाम बढ़ाने वालों से कहता है कि उसने अपने आप से समझौता कर लिया है कि वह अपनी गंध नहीं बेचेगा।

### प्रश्न ३ (इ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति इ (१) : आकलन कृति

*(१) कृति पूर्ण कीजिए।

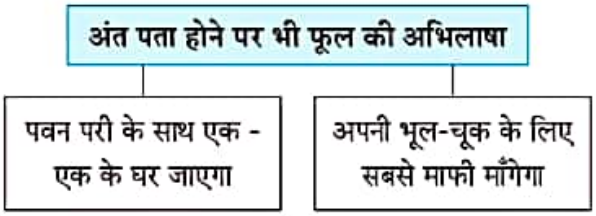


(२) निम्नलिखित पदयांश पढ़कर ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों -

(i) मंडी (ii) फूल को

उत्तर: (i) खुद्दारी को कौन समझेगा?

(ii) किसे अपना अंत पता है?

*पद्यांश ३ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ८०*

मुझको मेरा अंत पता है पँखुरी-पँखुरी झर जाऊँगा
लेकिन पहिले पवन परी संग एक-एक के घर जाऊँगा
भूल-चूक की माफी लेगी सबसे मेरी गंध कुमारी
उस दिन ये मंडी समझेगी किसको कहते हैं खुद्दारी
बिकने से बेहतर मर जाऊँ अपनी माटी में झर जाऊँ
मन ने तन पर लगा दिया जो वो प्रतिबंध नहीं बेचूँगा।

### कृति इ (२) : आकलन कृति

(१) लिखिए।

*(i) फूल को बिक जाने से भी बेहतर लगता है।

उत्तर: मरकर अपनी मिट्टी में झर जाना।

(ii) फूल इस प्रकार झर जाएगा।

उत्तर: अपनी पंखुड़ी-पंखुड़ी गिराकर।

*(२) आकृति पूर्ण कीजिए।

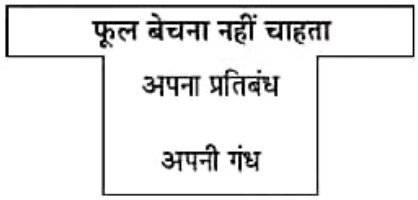


(३) उत्तर लिखिए।

(i) यह माँगेंगी भूल-चूक की माफी -

उत्तर: फूल की गंध कुमारी।

(४) समझकर लिखिए।

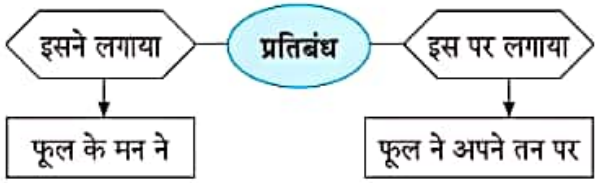

### कृति इ (३): भावार्थ

(१) निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।

(i) **मुझको मेरा अंत ..... घर जाऊँगा।**

उत्तर: फूल कहता है कि उसे अपना अंत पता है। वह ज्यादा दिनों तक जीवित नहीं रह सकता। उसकी प्रत्येक पंखुड़ी एक-एक करके झर जाएगी। फिर भी वह मरने से पहले पवन परी के साथ स्वच्छंद विहार करते हुए एक-एक के घर जाएगा।

(ii) **बिकने से बेहतर ..... प्रतिबंध नहीं बेचूँगा।**

उत्तर: फूल इतना स्वाभिमानी है कि वह बिकने से बेहतर मरकर मिट्टी में झर जाना अधिक पसंद करेगा। वह अपने मन से तन पर लगाए गए प्रतिबंध से किसी भी प्रकार से समझौता नहीं करेगा।

### पद्य-विश्लेषण

*(१) **निम्न मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए:**

(i) रचनाकार का नाम (ii) रचना का प्रकार

(iii) पसंदीदा पंक्ति (iv) पसंदीदा होने का कारण

(v) कविता से प्राप्त संदेश/प्रेरणा

उत्तर: (i) **रचनाकार का नाम:** बालकवि बैरागी

(ii) **रचना का प्रकार :** गीत

(iii) **पसंदीदा पंक्ति :**

बिकने से बेहतर मर जाऊँ अपनी माटी में झर जाऊँ

मन ने तन पर लगा दिया जो वो प्रतिबंध नहीं बेचूँगा।

(iv) **पसंदीदा होने का कारण:** उपर्युक्त पंक्ति में फूल अपने स्वाभिमान और सम्मान के लिए मर जाना और मरकर मिट्टी में झर जाना अधिक पसंद करता है। वह इस निर्णय पर किसी भी कीमत पर अडिग रहना चाहता है। यदि व्यक्ति में सम्मान और स्वाभिमान की भावना न हो तो उसका जीवन निरर्थक होता है।

(v) **कविता से प्राप्त संदेश या प्रेरणा:** स्वाभिमान ही जीवन है। स्वाभिमान के बिना जीवन निरर्थक होता है। स्वाभिमान से व्यक्ति की सम्मान व प्रतिष्ठा बनी रहती है।

❖❖❖

# १ जब तक जिंदा रहूँ, लिखता रहूँ

*- विश्वनाथ प्रसाद तिवारी (१९४०)*

**लेखक-परिचय :**

**जीवन-परिचय :** विश्वनाथ प्रसाद तिवारी का जन्म २० जून, १९४० को देवरिया, उत्तर प्रदेश में हुआ था। विश्वनाथ प्रसाद तिवारी २०१३ से लेकर २०१७ तक साहित्य अकादमी के अध्यक्ष पद पर कार्यरत रहे। आप 'दस्तावेज' नामक साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका के संस्थापक संपादक भी हैं। २०११ में इन्हें 'व्यास पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। इनकी रचनाओं का कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

**प्रमुख कृतियाँ :** आखर अनंत, चीजों को देखकर, फिर भी कुछ रह जाएगा, बेहतर दुनिया के लिए, साथ चलते हुए, शब्द और शताब्दी आदि **(कविता संग्रह)**। आधुनिक हिंदी कविता, समकालीन हिंदी कविता, रचना के सरोकार, कविता क्या है, गद्य के प्रतिमान, आलोचना के हाशिए पर, छायावादोत्तर हिंदी गद्य-साहित्य, नए साहित्य का तर्क-शास्त्र आदि **(आलोचना)**। आत्म की धरती, अंतहीन आकाश **(यात्रा-संस्मरण)**। एक नाव के यात्री **(संस्मरण)**।

**गद्य-परिचय :**

**साक्षात्कार :** 'जब तक जिंदा रहूँ, लिखता रहूँ' यह एक साक्षात्कार है। दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच बातचीत एवं विचारों का आदान-प्रदान साक्षात्कार कहलाता है। इसमें एक व्यक्ति प्रश्न पूछता है और दूसरा व्यक्ति प्रश्नों के जवाब देता है अथवा अपनी राय व्यक्त करता है।

**प्रस्तावना :** लेखक ने प्रस्तुत साक्षात्कार से अमृतलाल नागर से यह जानने की कोशिश की है कि स्वतंत्रता के पूर्व सामाजिक परिस्थितियाँ कैसी थीं और तत्कालीन ऐतिहासिक आंदोलनों का साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा था ?

**सारांश**

प्रस्तुत पाठ में लेखक विश्वनाथ तिवारी जी ने अमृतलाल नागर जी का साक्षात्कार लिया है। लेखक ने अमृतलाल जी से स्वतंत्रता के पूर्व साहित्यिक माहौल कैसा था, यह जानने की कोशिश की है। इस साक्षात्कार के माध्यम से हमें पता चलता है कि अमृतलाल नागर जी को बचपन से ही पढ़ने लिखने का शौक था। बंकिमचंद्र से लेकर प्रेमचंद तक के साहित्य का उन्होंने वाचन किया था। अमृतलाल जी सामाजिक आंदोलनों में हिस्सा लेते थे। महात्मा गांधी जी के व्यक्तित्व का भी उनके विचारों पर प्रभाव पड़ा था। अपने उपन्यासों के लिए सामग्री इकट्ठा करने के लिए वे फील्डवर्क भी करते थे और सफाई कर्मियों की बस्तियों में भी जाते थे। उनका मानना है कि मन और प्राण दोनों अलग-अलग होते हैं। मन एक ऐसा निर्मल जल है जिसको जीवन के संस्कार रँगते हैं। मन प्राण से ही सधता है। अपनी पत्नी की मृत्यु के पश्चात वे जीवन से निराश हो गए थे फिर भी लिखने की उम्मीद ने उन्हें स्वस्थ बनाए रखा। इसलिए वे कहते हैं कि जब तक जिंदा रहूँ; तब तक लिखता ही रहूँ।

**शब्दार्थ**

- साक्षात्कार - इंटरव्यू
- माहौल - परिस्थितियाँ
- प्रभाव - असर
- प्रमाण - गवाही
- आंदोलन - अभियान
- घुट्टी - शैशवावस्था के शिशुओं को पिलाया जानेवाला कड़वा रस
- जन्मांध - जन्म से अंधे
- संकलन - संग्रह
- भेंट - मिलना,
- आजानुबाहु - लंबी बाँह वाला

# MASTER KEY QUESTION SET - 9

**प्रश्न १ (अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति अ (१): आकलन कृति**

**(१) संजाल पूर्ण कीजिए।**

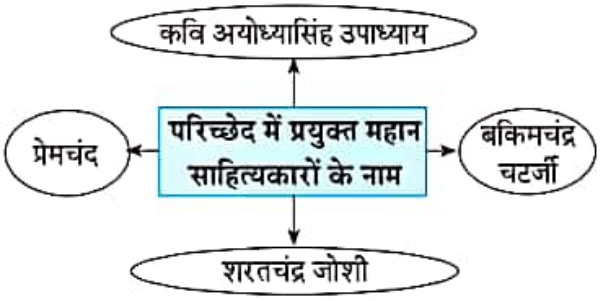


***(२) कृति पूर्ण कीजिए।**

| लेखक | पुस्तक |
|---|---|
| बंकिमचंद्र चटर्जी | आनंदमठ |
| प्रभातकुमार मुखोपाध्याय | देशी और विलायती (उपन्यास) |

***(३) उत्तर लिखिए ।**

**(i) नागर जी की पहली कविता को प्रस्फुटित करने वाला अनुभव-**

उत्तर: १९२८-१९२९ में साइमन कमीशन के बहिष्कार के समय का लाठीचार्ज।

*गद्यांश: १ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ८२*

**तिवारी जी:** नागरजी, मैं आपको आपके लेखन के आरंभ काल की ओर ले चलना चाहता हूँ। जिस समय आपने लिखना शुरू किया उस समय का साहित्यिक माहौल क्या था? किन लोगों से प्रेरित होकर आपने लिखना शुरू किया और क्या आदर्श थे आपके सामने?

**नागर जी:** लिखने से पहले तो मैंने पढ़ना शुरू किया था। आरंभ में कवियों को ही अधिक पढ़ना था। सनेही जी, अयोध्यासिंह उपाध्याय की कविताएँ ज्यादा पढ़ीं। छापे का अक्षर मेरा पहला मित्र था। घर में दो पत्रिकाएँ मँगाते थे मेरे पितामह। एक 'सरस्वती' और दूसरी 'गृहलक्ष्मी'। उस समय हमारे सामने प्रेमचंद का साहित्य था, कौशिक का था। आरंभ में बंकिम के उपन्यास पढ़े। शरतचंद्र को बाद में। प्रभातकुमार मुखोपाध्याय का कहानी संग्रह 'देशी और विलायती' १९३० के आसपास पढ़ा। उपन्यासों में बंकिम के उपन्यास १९३० में ही पढ़ डाले। 'आनंदमठ', 'देवी चौधरानी' और एक 'राजस्थानी टीम पर लिखा हुआ उपन्यास, उसी समय पढ़ा था।

**तिवारी जी:** क्या यही लेखक आपके लेखन के आदर्श रहे?

**नागरजी:** नहीं, कोई आदर्श नहीं। केवल आनंद था पढ़ने का। सबसे पहले कविता फूटी साइमन कमीशन के बहिष्कार के समय १९२८-१९२९ में। लाठीचार्ज हुआ था। इस अनुभव से ही पहली कविता फूटी-'कब लौं कहौं लाठी खाय!' इसे ही लेखन का आरंभ मानिए।

**कृति अ (२) आकलन कृति**

**(१) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

**(i) छापे का अक्षर (ii) बंकिम**

उत्तर: (i) अमृतलाल नागर का पहला मित्र कौन था?

(ii) १९३० में अमृतलाल जी ने किसके उपन्यास पढ़े?

**(२) सत्य या असत्य पहचानकर लिखिए।**

**(i) प्रेमचंद अमृतलाल जी के आदर्श थे।**

**(ii) 'आनंदमठ' बंकिम जी का उपन्यास है।**

उत्तर: (i) असत्य (ii) सत्य

***(३) आकृति पूर्ण कीजिए।**

| | | | |
|---|---|---|---|
| अमृतलाल नागर जी के साहित्य सृजन में सहायक | लेखक | बंकिमचंद्र चटर्जी | प्रेमचंद |
| | पत्रिकाएँ | सरस्वती | गृहलक्ष्मी |

**कृति: अ: (३) शब्द संपदा**

**(१) मानक वर्तनी के अनुसार शुद्ध शब्द लिखिए।**

(i) आनन्दमठ (ii) लाठीचारज

उत्तर: (i) आनंदमठ (ii) लाठीचार्ज

**(२) लिंग बदलिए।**

(i) कवि (ii) लेखक (iii) चौधरानी

उत्तर: (i) कवयित्री (ii) लेखिका (iii) चौधरी

**(३) वचन बदलिए।**

(i) कहानी (ii) कविता

उत्तर: (i) कहानियाँ (ii) कविताएँ

**(४) नीचे दिए हुए शब्द का कृदंत रूप लिखिए।**

(i) लेखक (ii) चल

उत्तर: (i) लिखना (ii) चलना

**कृति अ (४): स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) 'कविता लिखना एक सहज कला होती है।' इस कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: कविता लिखना एक सहज कला होती है। हर कोई इस कला में माहिर नहीं होता। कविता व्यक्ति सहज भाव से लिखता है। कविता भावना का उद्‌गार होती है। कविता लिखते समय व्यक्ति के मन में प्रसंगों की प्रतिमा अपने आप तैयार हो जाती है। फिर व्यक्ति उनकी अभिव्यक्ति कविता के माध्यम से सहज रूप में करता है। यह एक ऐसी कला है जिसके लिए व्यक्ति का भावनाशील एवं संवेदनशील होना नितांत आवश्यक होता है।

**प्रश्न २ (आ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति आ (१): आकलन कृति**

**(१) किसने, किससे कहा ?**

**(i) "मेरे पिता सरकारी कर्मचारी थे।"**

उत्तर: अमृतलाल नागर जी ने लेखक तिवारी से कहा।

(ii) ''क्या क्रांतिकारी आंदोलनों का आप पर कुछ प्रभाव पड़ा?''

उत्तर: लेखक तिवारी जी ने अमृतलाल नागर जी से पूछा।

(२) समझकर लिखिए।

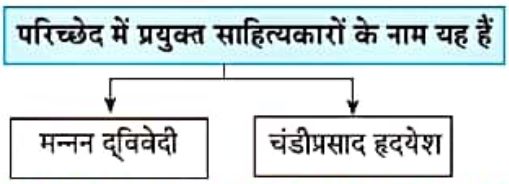


*गद्यांश: २ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ८२ - ८३*

तिवारी जी: इस घटना के बाद आप राजनीति की ओर क्यों नहीं गए?

नागर जी: नहीं गया क्योंकि पिताजी सरकारी कर्मचारी थे। १९२९ के बाद मेरी रुचि बढ़ी-पढ़ने में भी और सामाजिक कार्यों में भी। लेकिन मेरी पहली कहानी छपी १९३३ में 'अपशकुन'। तुम्हारे गोरखपुर के मन्नन द्विवेदी लिख रहे थे उन दिनों। चंडीप्रसाद हृदयेश थे जिनकी लेखन शैली ने मुझे बहुत प्रभावित किया।

तिवारी जी: क्या उन दिनों आपपर गांधीजी के व्यक्तित्व का भी कुछ प्रभाव पड़ा?

नागर जी : हाँ, निश्चित रूप से पड़ा। पिताजी ने आंदोलनों में भाग लेने से रोका। वह रोकना ही मेरे लेखन के लिए अच्छा हुआ।

तिवारी जी: आपके लेखन में गरीबों के प्रति जो करुणा है वह किससे प्रभावित है?

नागर जी: वह तो अपने समाज से ही उभरी थी। मेरी पहली कहानी 'प्रायश्चित' इसका प्रमाण है। हमारे पारिवारिक संस्कार भी थे। मेरे पिताजी में एक अद्‌भुत गुण था। वे किसी के दुख-दर्द में तुरंत पहुँचते थे। इसने मुझे बहुत प्रभावित किया।

तिवारी जी: उस समय तो क्रांतिकारी आंदोलन भी हो रहे थे। क्या उनका भी आप पर कुछ प्रभाव पड़ा?

नागर जी: उसी से तो पिताजी ने डाँटा और रोका। काकोरी बमकांड हो चुका था। १९२१ से आंदोलन तेज हो गए थे।

### कृति आ (२): आकलन कृति

(१) कृति पूर्ण कीजिए।

(i)

(ii)

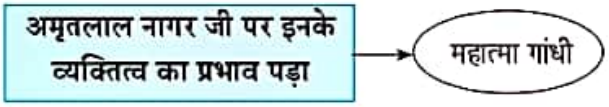


(२) उत्तर लिखिए।

*(i) नागर जी अपने पिता जी के इस गुण से प्रभावित थे -

उत्तर: दूसरों के दुख-दर्द में तुरंत पहुँचना।

(ii) परिच्छेद में प्रयुक्त एक हिंसक घटना -

उत्तर: काकोरी बमकांड

### कृति आ (३): शब्द संपदा

(१) गद्यांश में से तत्सम शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर: रुचि, संस्कार

(२) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

(i) गुण × ..... (ii) तेज × .....

उत्तर: (i) अवगुण (ii) धीमा

(३) निम्नलिखित शब्दों से प्रत्यय अलग करके लिखिए।

(i) व्यक्तित्व (ii) पारिवारिक

उत्तर: (i) शब्द : व्यक्ति : प्रत्यय : त्व

(ii) शब्द : परिवार : प्रत्यय : इक

(४) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग का प्रयोग कीजिए।

(i) रुचि (ii) गुण

उत्तर: (i) अरुचि (ii) अवगुण

### कृति आ (४): स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'करुणा साहित्य का एक प्रमुख अंग होती है।' इस कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।

उत्तर: साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज में जो घटित होता है उसका प्रतिबिंब साहित्य में झलकता है। समाज की दुख भरी घटनाओं की छाया साहित्य में प्रखर रूप में प्रकट होती है। व्यक्ति की पीड़ा, दुख-दर्द एवं उस पर होने वाले अन्याय को वाणी देने का कार्य साहित्य के द्वारा ही होता है। फ्रेंच राज्यक्रांति हो या दलितों के उत्थान के लिए की गई क्रांति, उन्हें वाणी देने का कार्य साहित्य द्वारा ही सिद्ध हुआ था। करुणा के बिना साहित्य की पूर्ण रूप से अभिव्यक्ति प्रस्तुत नहीं की जा सकती। आखिर, वेदना की देवी महादेवी वर्मा जी के करुण साहित्य से कौन परिचित नहीं है?

### प्रश्न ३ (इ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति (इ) १ : आकलन कृति

(१) उचित घटना क्रम लगाकर वाक्य फिर से लिखिए।

(i) अमृतलाल जी ने 'महाकाल' यह उपन्यास लिखा।

(ii) अमृतलाल जी की जवाहरलाल नेहरू जी से भेंट हुई।

(iii) जवाहरलाल जी की माँ मेडिकल कॉलेज में दाखिल थीं।

उत्तर:

(i) जवाहरलाल जी की माँ मेडिकल कॉलेज में दाखिल थीं।

(ii) अमृतलाल जी की जवाहरलाल नेहरू जी से भेंट हुई।

(iii) अमृतलाल जी ने 'महाकाल' यह उपन्यास लिखा।

*गद्यांश: ३ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ८३ - ८४*

**तिवारी जी :** क्या सामाजिक आंदोलनों, जैसे आर्य समाज का भी आप पर कुछ प्रभाव पड़ा?

**नागर जी :** आरंभिक असर है थोड़ा जरूर। मेरे पिताजी में एक अच्छी बात थी कि उन्होंने मुझे सामाजिक आंदोलनों में जाने से कभी नहीं रोका। जवाहरलाल नेहरू से मेरी भेंट १९३३ में हुई। उनकी माँ मेडिकल कॉलेज में दाखिल थीं और उसी समय मेरा छोटा भाई भी वहाँ दाखिल था। नेहरू जी जेल में थे। उनकी माँ के पास कुछ कश्मीरी लोगों को छोड़कर कोई आता-जाता नहीं था। मैं उनकी माता जी के पास रोज जाता था। पंडित जी जब जेल से छूटे तो मेरी उनसे वहीं भेट हुई जो प्राय: होती रहती थी। उनसे खूब बातें होती थीं- हर तरह की।

**तिवारी जी :** आपका पहला उपन्यास कौन-सा है?

**नागर जी:** पहला उपन्यास लिखा १९४४ में 'महाकाल', जो छपा १९४६ में। बंगाल से लौटकर इसे लिखा था।

**तिवारी जी :** क्या यही बाद में 'भूख' नाम से प्रकाशित हुआ।

**नागर जी:** हाँ।

**तिवारी जी:** नागर जी, आप अपने समय के और कौन-कौन से लेखकों के संपर्क-प्रभाव में रहे?

**नागर जी:** जगन्नाथदास रत्नाकर, गोपाल राय गहमरी, प्रेमचंद, किशोरी लाल गोस्वामी, लक्ष्मीधर वाजपेयी आदि के नाम याद आते हैं। माधव शुक्ल हमारे यहाँ आते थे। वे आजानुबाहु थे, ढीला कुरता पहनते थे और कुरते की जेब में जलियाँवाला बाग की खून सनी मिट्टी हमेशा रखे रहते थे। १९३१ से ३७ तक मैं प्रतिवर्ष कोलकाता जाकर शरतचंद्र से मिलता रहा, उनके गाँव भी गया।

### कृति (इ) २ : आकलन कृति

**(१) कारण लिखिए।**

**(i) अमृतलाल जी पर सामाजिक आंदोलनों का प्रभाव पड़ा।**

**उत्तर:** क्योंकि उनके पिता ने उन्हें सामाजिक आंदोलनों में जाने से कभी नहीं रोका था।

**(ii) अमृतलाल जी जवाहरलाल जी की माँ को मिलने जाया करते थे।**

**उत्तर:** क्योंकि जवाहरलाल जी की माँ जिस मेडिकल कॉलेज में दाखिल थीं, उसी समय अमृतलाल जी का छोटा भाई भी उस मेडिकल कॉलेज में दाखिल था।

***(२) संजाल पूर्ण कीजिए।**

### कृति इ (३) : शब्द संपदा

**(१) नीचे लिखे शब्दों के अर्थ गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।**

(i) देहात (ii) मुलाकात

**उत्तर:** (i) गाँव (ii) भेंट

**(२) परिच्छेद में प्रयुक्त शब्द युग्म व विदेशी शब्द ढूँढ़कर लिखिए।**

(i) शब्द-युग्म (ii) विदेशी शब्द

**उत्तर:** (i) आता-जाता, कौन-कौन, संपर्क-प्रभाव (ii) मेडिकल कॉलेज, जेल

### कृति इ (४) : स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'सामाजिक आंदोलन एवं व्यक्ति विकास का संबंध' अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:** 'सामाजिक आंदोलन एवं व्यक्ति विकास' इनका आपस में बहुत गहरा संबंध है। देश की आज़ादी से पहले कई प्रकार के सामाजिक आंदोलन हुए। इन सामाजिक आंदोलनों ने समाज में क्रांति स्थापित करने का कार्य किया था। लोगों ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेकर सामाजिक आंदोलनों की शक्ति बढ़ाई थी। सामाजिक आंदोलनों ने लोगों को इंसाफ के लिए लड़ने की प्रेरणा दी। लोगों को अच्छी-बुरी प्रथाओं से सतर्क बनाकर शिक्षा के लिए प्रेरित किया। इन्हीं सामाजिक आंदोलनों का प्रभाव देश के साहित्यकारों पर भी पड़ा। उन्होंने आंदोलनों से प्रेरणा लेकर भारत के उत्थान हेतु साहित्य की रचना की। इस प्रकार सामाजिक आंदोलन व्यक्ति विकास में सहायक सिद्ध हुए।

## प्रश्न ४ (ई) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति ई (१) : आकलन कृति

**(१) निम्नलिखित गलत वाक्य सही करके फिर से लिखिए।**

**(i) मन माध्यम है और देखने वाली आँख है।**

**उत्तर:** आँख माध्यम है और देखने वाला मन है।

**(ii) लेखक तिवारी ने पूरे अखंड भारतवर्ष का भ्रमण किया है।**

**उत्तर:** अमृतलाल नागर जी ने अखंड भारतवर्ष का भ्रमण किया है।

**(२) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

**(i) श्लोक (ii) तुलसीदास**

**उत्तर:** (i) अमृतलाल जी के पिता अमृतलाल जी से बचपन में क्या याद करवाते थे?

(ii) बचपन में अमृतलाल जी को क्या घुट्टी में पिलाया गया था?

*गद्यांश: ४ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ८४ - ८५*

**तिवारी जी :** पुराने साहित्यकारों में आप किसको अपना आदर्श मानते हैं?

**नागर जी :** तुलसीदास को तो मुझे घुट्टी में पिलाया गया है। बाबा, शाम को नित्य प्रति 'रामचरितमानस' मुझसे पढ़वाकर सुनते थे। श्लोक जबरदस्ती याद करवाते थे।

**तिवारी जी :** नागर जी, आपने 'खंजन नयन' में सूरदास के चमत्कारों का बहुत विस्तार से वर्णन किया है। क्या इनपर आपका विश्वास है?

**नागर जी :** नेत्रहीनों के चमत्कार हमने बहुत देखे हैं। उनकी भविष्यवाणियाँ कभी-कभी बहुत सच होती हैं। सूरपंचशती के अवसर पर काफी विवाद चला था कि सूर जन्मांध थे या नहीं। सवाल यह है कि देखता कौन है? आँख या मन? आँख माध्यम हैं, देखने वाला मन है।

**तिवारी जी :** आपने क्या कभी अपने लिखने की सार्थकता की परख की है?

**नागर जी :** हाँ, मेरे पास बहुत से पत्र आते हैं। मेरे उपन्यासों के बारे में, खास तौर से जिनसे पाठकीय प्रतिक्रियाओं का पता चलता है।

**तिवारी जी :** नागर जी, आपने भ्रमण तो काफी किया है....

**नागर जी :** हाँ, पूरे अखंड भारत वर्ष का। पेशावार से कन्याकुमारी तक। बंगाल से कश्मीर तक। इन यात्राओं का यह लाभ हुआ कि मैंने कैरेक्टर (चरित्र) बहुत देखे और उनके मनोविज्ञान को भी समझने का मौका मिला।

**तिवारी जी :** अपने समय के लेखकों में आप किन्हें पसंद करते हैं?

**नागर जी :** अगर दिल से पूछो तो एक ही आदमी। उसे बहुत प्यार करता हूँ। वह है रामविलास शर्मा। प्रभात कुमार मुखोपाध्याय का संग्रह 'देशी और विलायती' अगर मिल जाए तो फिर पढ़ना चाहूँगा। बदलते हुए भारतीय समाज के सुंदर चित्र हैं उसकी कहानियों में। टॉलस्टॉय और चेखव की रचनाएँ भी मुझे प्रिय हैं।

### कृति ई (२) आकलन कृति

**(१) कृति पूर्ण कीजिए।**

(i)

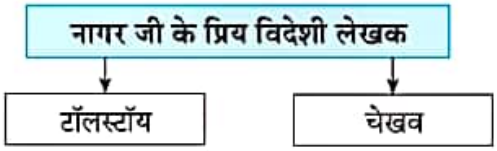


(ii)

**(२) समझकर लिखिए।**

(i)

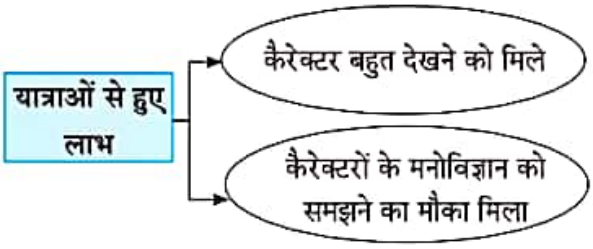


(ii)

### कृति ई (३) : शब्द संपदा

**(१) परिच्छेद में से शब्द-युग्म शब्द छाँटकर लिखिए।**

**उत्तर :** कभी-कभी

**(२) 'प्रतिक्रिया' शब्द में से उपसर्ग अलग कीजिए तथा अन्य दो शब्द बनाइए।**

**उत्तर :** **प्रतिक्रिया** : उपसर्ग : प्रति **अन्य शब्द** : प्रतिघात, प्रतिपल

**(३) समानार्थी शब्द लिखिए।**

(i) शाम (ii) विवाद (iii) नेत्र

**उत्तर :** (i) संध्या (ii) झगड़ा (iii) नयन

**(४) निम्नलिखित शब्द में उचित उपसर्ग व प्रत्यय का प्रयोग करके एक नया शब्द बनाइए।**

(i) वर्णन

**उत्तर :** (i) उपसर्ग: अ **प्रत्यय:** इय **नया शब्द** : अवर्णनीय

### कृति ई (४) : स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'आँख माध्यम होता है किंतु देखता तो मन है।' इसपर अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर :** ईश्वर ने मनुष्य को आँखें दी हैं जिससे मनुष्य देख सकता है। आँखें भले ही देखने का कार्य करती हैं पर वह सिर्फ बाह्य रूप से। बाह्य रूप से भी बढ़कर होती है, व्यक्ति की आंतरिक शक्ति जिसमें व्यक्ति का मन स्थित होता है। आंतरिक शक्ति से देखी गई वस्तु को व्यक्ति कभी भी नहीं भूल सकता है। इसलिए कहा भी गया है कि परमात्मा को देखने के लिए तन रूपी आँखों की नहीं, मनरूपी आँखों की जरूरत होती है। कवि सूरदास अंधे थे, फिर भी अपनी मन की आँखों से वे ईश्वर को देखते थे और उसे अपनी रचनाओं में साकार करते थे।

### प्रश्न ५ (उ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति (उ) १ : आकलन कृति

**(१) संजाल पूर्ण कीजिए।**

(i)

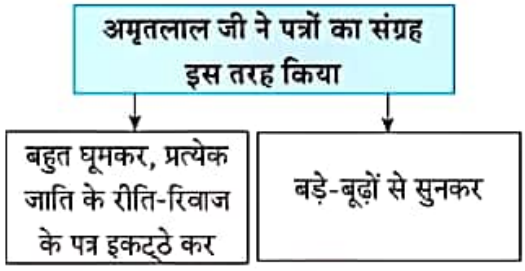


**(२) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

(i) फिल्डवर्क (ii) मन

**उत्तर :** (i) अमृतलाल जी ने अपने उपन्यासों के लिए क्या किया है?

(ii) प्राण से क्या सधता है?

*गद्यांश: ५ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ८५*

**तिवारी जी :** आपने तो पत्रों का भी बहुत संकलन किया है?

**नागर जी :** हाँ, बहुत। पत्रों का संग्रह भी काफी है, लेकिन वह व्यवस्थित नहीं है। मैंने प्रत्येक जाति के रीति-रिवाज भी इकट्ठे किए हैं। इसके लिए घूमना बहुत पड़ा है। बड़े-बूढ़ों से सुनकर भी बहुत कुछ प्राप्त किया है। 'गदर के फूल' के लिए मुझे बहुत लोगों से मिलना-जुलना पड़ा।

**तिवारी जी :** आपने अपने उपन्यासों के लिए फिल्डवर्क बहुत किया है।

**नागर जी :** हाँ, बहुत करना पड़ा है। 'नाच्यो बहुत गोपाल' के लिए सफाईकर्मियों की बस्तियों में जाना पड़ा। उनके रीति-रिवाजों का अध्ययन करना पड़ा।

**तिवारी जी :** नागर जी, क्या आप मन और प्राण को अलग-अलग मानते हैं?

**नागर जी :** हाँ, प्राण को मन से अलग करना पड़ेगा। मन की गति आगे तक है। प्राण को वहाँ तक खींचना पड़ता है। मन एक ऐसा निर्मल जल है जिससे जीवन के संस्कार रँगते हैं। मन, प्राण से ही सधता है।

**तिवारी जी :** सूर में आपने मन को ही पकड़ा है।

**नागर जी :** हाँ, सूर ने एक जगह लिखा है - 'मैं दसों दिशाओं में देख लेता हूँ।' जब पूरी प्राणशक्ति एक जगह केंद्रित होगी तो 'इंट्यूटिव आई' बनाएगी।

**तिवारी जी :** नागर जी, हम लोगों ने आपका बहुत समय लिया, बल्कि आपकी उम्र और स्वास्थ्य का भी लिहाज नहीं किया।

**नागर जी :** स्वास्थ्य ठीक है मेरा। पत्नी की मृत्यु के बाद एक टूटन आ गई थी, लेकिन फिर मैंने सोचा कि लिखने के सिवा और चारा क्या है। तुम लोग यह मनाओ कि जब तक जिंदा रहूँ, लिखता रहूँ।

### कृति उ (२): आकलन कृति

**(१) कारण लिखिए।**

**(i) अमृतलाल जी को सफाई कर्मियों की बस्तियों में जाना पड़ा।**

**उत्तर :** अपने उपन्यास के लिए सामग्री जुटाने के लिए उन्हें सफाई कर्मियों की बस्तियों में जाना पड़ा।

**(ii) मन की गति आगे तक है। प्राण को वहाँ तक खींचना पड़ता है।**

**उत्तर :** मन एक ऐसा निर्मल जल है जिससे जीवन के संस्कार रँगते हैं। मन प्राण से ही सधता है।

**(२) निम्नलिखित विधान सत्य है या असत्य लिखिए।**

**(i) 'नाच्यो बहुत गोपाल' यह एक कहानी संग्रह है।**

**(ii) 'गदर के फूल' यह अमृतलाल जी की रचना है।**

**उत्तर :** (i) असत्य (ii) सत्य

### कृति उ (३): शब्द संपदा

**(१) वचन बदलिए।**

(i) रीति (ii) बस्ती

**उत्तर :** (i) रीतियाँ (ii) बस्तियाँ

**(२) परिच्छेद में प्रयुक्त विदेशी शब्द व शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए।**

**उत्तर :** **विदेशी शब्द :** फील्डवर्क, इंट्यूटिव आई

**शब्द युग्म :** रीति-रिवाज, अलग-अलग

**(३) 'केंद्रित' इस शब्द में 'इत' यह प्रत्यय है। 'इत' यह प्रत्यय लगाकर अन्य दो शब्द बनाइए।**

**उत्तर :** निलंबित, प्रणित

**(४) निम्नलिखित वाक्य में उचित विराम चिन्हों का प्रयोग कीजिए।**

**(i) ये कोठेवालियाँ अमृतलाल नागर जी की रचना है**

**उत्तर :** (i) 'ये कोठेवालियाँ' अमृतलाल नागर जी की रचना है।

### कृति उ (४): स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) अपनी प्रिय साहित्यिक विधा के बारे में अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर :** कहानी, उपन्यास, कविता आदि साहित्य की विविध विधाएँ हैं। पर मेरी प्रिय साहित्यिक विधा 'डायरी लेखन' है। स्वतंत्रता के बाद डायरी लेखन साहित्य की एक प्रमुख विधा बन गई है। कई साहित्यकारों ने डायरी लेखन करके इस विधा को अमर बना दिया है। मुझे भी डायरी लिखने का शौक है। हर दिन मैं पंद्रह से बीस मिनट का समय निकालकर अपनी दिनभर की घटित घटनाओं को लेखन बद्ध करता हूँ। डायरी लिखते समय मैं चिंतन करता हूँ और स्वयं को परिपूर्ण बनाने हेतु बदलाव लाने का प्रयास करता हूँ। अपनी डायरी के पुराने पन्ने पढ़कर की गई गलतियों से कुछ नया सीखने की कोशिश करता हूँ। यह भी ध्यान में रखता हूँ कि भविष्य में वही गलतियाँ दुबारा न हों। इस प्रकार से, डायरी लेखन की यह अनोखी विधा मुझे कलात्मक आनंद प्रदान करती है।

## स्वाध्याय विषयक कृतियाँ

*** (१) कोष्ठक में दी गई नागर जी की साहित्य कृतियों का वर्गीकरण कीजिए।**

(कब लौं कहौं लाठी खाय, खंजन नयन, अपशकुन, नाच्यों बहुत गोपाल, महाकाल, प्रायश्चित, गदर के फूल)

| कहानी | उपन्यास | अन्य |
|---|---|---|
| अपशकुन | नाच्यों बहुत गोपाल | कब लौं कहौं लाठी खाय |
| प्रायश्चित | – | गदर के फूल |
| महाकाल | – | खंजन नयन |

***(२) आकृति पूर्ण कीजिए।**

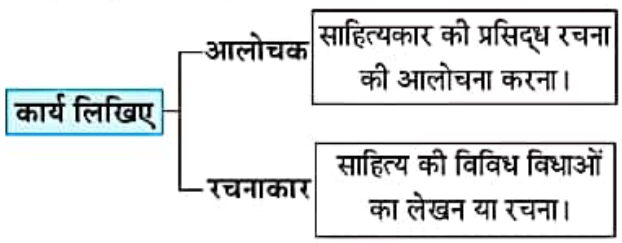

*(३) एक शब्द में उत्तर लिखिए।

(i) नागर जी के आलोचक -

(ii) इस रचना के लिए नागर जी को बहुत लोगों से मिलना पड़ा -

(iii) नागर जी का पहला उपन्यास -

उत्तर: (i) रामिवलास शर्मा (ii) गदर के फूल (iii) महाकाल

## भाषा बिंदु

*(१) निम्न वाक्यों में आई हुई मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया को रेखांकित करके संबंधित तालिका में लिखिए।

(i) उनके रीति-रिवाजों का अध्ययन करना पड़ा।

(ii) माता-पिता का यह रंग देखते तो वे बूढ़ी काकी को और सताया करते।

(iii) उसकी ननद रूठ गई।

(iv) वे हड़बड़ा उठे।

(v) वे पुस्तक पकड़े न रख सके।

(vi) उन्होंने पुस्तक लौटा दी।

(vii) समुद्र और भयावह दिखने लगा।

(viii) मैं गोवा को पूरी तरह समझ नहीं पाया।

(ix) काकी घटनास्थल पर आ पहुँची।

(x) अवश्य ही लोग खा-पीकर चले गए।

उत्तर:

| | मुख्य क्रिया | सहायक क्रिया |
|---|---|---|
| (i) | करना | पड़ा |
| (ii) | सताना | करते |
| (iii) | रुठना | गई |
| (iv) | हड़बड़ाना | उठे |
| (v) | रखना | सके |
| (vi) | लौटाना | दी |
| (vii) | दिखना | लगा |
| (viii) | समझना | पाया |
| (ix) | आना | पहुँची |
| (x) | चलना | गए |

*(२) पाठों में प्रयुक्त सहायक क्रियाओं वाले दस वाक्य ढूँढ़कर मुख्य क्रिया और सहायक क्रियाएँ चुनकर लिखिए।

उत्तर:

| अ. क्र. | वाक्य | मुख्य क्रिया | सहायक क्रिया |
|---|---|---|---|
| (१) | मैं आपको आपके लेखन के आरंभ काल की ओर ले चलना चाहता हूँ। | चलना | चाहता हूँ |
| (२) | आरंभ में कवियों को ही अधिक पढ़ता था। | पढ़ना | था |
| (३) | उपन्यासों में बंकिम के उपन्यास १९३० में ही पढ़ डाले। | पढ़ना | डाले |
| (४) | बंगाल से लौटकर इसे लिखा था। | लिखना | था |
| (५) | १९२१ से आंदोलन तेज हो गए थे। | होना | थे |
| (६) | अंधों के चमत्कार हमने बहुत देखे हैं। | देखना | हैं |
| (७) | सूरपंचशती के अवसर पर काफी विवाद चला था। | चलना | था |
| (८) | सूर में आपने मन को ही पकड़ा है। | पकड़ना | है |
| (९) | जब तक जिंदा रहूँ, लिखता रहूँ। | लिखना | रहूँ |
| (१०) | प्राण को मन से अलग करना पड़ेगा। | करना | पड़ेगा |

*(३) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित कारक चिह्नों से कीजिए तथा संबंधित कारक और कारक चिह्न तालिका में वाक्य के सामने लिखिए।

उत्तर:

| अ. क्र. | वाक्य | कारक | कारक चिह्न |
|---|---|---|---|
| (१) | चाची अपने कमरे ..... निकल रही थी। | अपादान कारक | से |
| (२) | मैं बंडल ..... खोलकर देखने लगा। | कर्म कारक | को |
| (३) | आवाज ..... मेरा ध्यान बँटाया। | अधिकरण कारक | पर |
| (४) | हमारे शहर .... एक कवि है। | अधिकरण कारक | में |
| (५) | कितने दिनों ..... छुट्टियाँ हैं। | संबंध कारक | की |
| (६) | मानू रेल ..... ससुराल चली गई। | करण कारक | से |
| (७) | उन्हें पुस्तक ले आने ..... कहा। | संप्रदान कारक | के लिए |
| (८) | पर्यटन ..... बहुत भी आनंद मिला। | करण कारक | से |
| (९) | शरीर को कुछ समय ..... विश्राम मिल जाता है। | संबंध कारक | का |
| (१०) | बस ..... गोवा घूमने की योजना बनाई। | करण कारक | द्वारा |
| (११) | बुद्धिराम स्वभाव ..... सज्जन थे। | संबंध कारक | के |
| (१२) | रूपा घटना स्थल ..... आ पहुँची। | अधिकरण कारक | पर |
| (१३) | ..... यह बुढ़िया कौन है ? | संबोधन कारक | अरे! |

**(४) पाठ में प्रयुक्त विभिन्न कारकों का एक-एक वाक्य छाँटकर उनसे कारक और कारक चिह्न चुनकर लिखिए।**

| अ. क्र. | वाक्य | कारक | कारक चिह्न |
|---|---|---|---|
| (१) | मैंने पढ़ना शुरू किया था। | कर्ता कारक | ने |
| (२) | मैं आरंभ में कवियों को अधिक पढ़ता था। | कर्म कारक | को |
| (३) | उसी से पिता ने डाँटा और रोका। | करण कारक | से |
| (४) | इसके लिए घूमना बहुत पड़ा। | संप्रदान कारक | के लिए |
| (५) | पंडित जी जब जेल से छूटे तब मेरी उनसे भेंट हुई। | अपादान कारक | से |
| (६) | इसे लेखन का आरंभ मानिए। | संबंध कारक | का |
| (७) | नेहरू जी जेल में थे। | अधिकरण कारक | में |
| (८) | अरे! जब तक जिंदा रहूँ, तब तक लिखता रहूँगा। | संबोधन कारक | अरे! |

## उपयोजित लेखन

***(१) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर उस पर आधारित ऐसे पाँच प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों।**

श्री. सी. वी. रामन ने छात्रावस्था में ही विज्ञान के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का सिक्का देश में ही नहीं विदेशों में भी जमा लिया था। बात यह थी कि रमन का एक साथी छात्र ध्वनि के संबंध में कुछ प्रयोग कर रहा था। उसे कुछ कठिनाइयाँ प्रतीत हुईं, संदेह हुए। वह अपने अध्यापक जोन्स साहब के पास गया। परंतु वह भी उसका संदेह निवारण न कर सके। रामन को पता चला तो उन्होंने उसे समस्या का अध्ययन-मनन किया और इस संबंध में उस समय के प्रसिद्ध लार्ड रेले के निबंध पढ़े और उस समस्या का एक नया ही हल खोज निकाला। यह हल पहले हल से सरल और अच्छा था। लार्ड रेले को इस बात का पता चला तो उन्होंने रामन की प्रतिभा की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अध्यापक जोन्स भी प्रसन्न हुए और उन्होंने रामन से इस प्रयोग के संबंध में लेख लिखने को कहा। रामन ने लेख लिखकर श्री जोन्स को दिया, पर जोन्स उसे जल्दी लौटा न सके। कारण संभवत: यह था कि वह उसे पूरी तरह आत्मसात न कर सके।

**उत्तर:** (i) श्री. सी. वी. रामन ने कौन-से क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का सिक्का देश-विदेश में जमा लिया था?

(ii) ध्वनि के संबंध में कुछ प्रयोग कौन कर रहा था?

(iii) रामन का साथी अपनी कठिनाइयाँ लेकर किसके पास गया?

(iv) रामन का साथी जोन्स साहब के पास क्यों गया?

(v) रामन की प्रतिभा की भूरि-भूरि प्रशंसा किसने की?

## लेखनीय

***(१) किसी खिलाड़ी का साक्षात्कार लेने हेतु प्रश्नों की सूची बनाइए।**

(i) आपका पूरा नाम बताइए।

(ii) आपने कब-से खेल में रुचि लेना आरंभ कर दिया था?

(iii) आप खेलने के लिए कैसे समय निकालते थे?

(iv) आप प्रतिदिन कितने घंटे तक खेल का अभ्यास करते थे?

(v) आपके प्रशिक्षक कौन थे?

(vi) आपके प्रशिक्षक ने आपका किस प्रकार मार्गदर्शन किया?

(vii) खेल से संबंधित किसी अविस्मरणीय घटना के बारे में बताइए।

(viii) आप वर्तमान पीढ़ी को क्या संदेश देना चाहते हैं?

***(२) उचित जोड़ियाँ मिलाइए।**

| 'अ' रचना | उत्तर | 'ब' रचनाकार |
|---|---|---|
| (१) देसी और विलायती | प्रभात कुमार मुखोपाध्याय | (क) तुलसीदास |
| (२) अपशकुन | अमृतलाल नागर | (ख) बंकिमचंद्र चटर्जी |
| (३) आनंद मठ | बंकिमचंद्र चटर्जी | (ग) अमृतलाल नागर |
| (४) रामचरित मानस | तुलसीदास | (घ) प्रभात कुमार मुखोपाध्याय |

## संभाषणीय

***(१) 'आज के समय में पत्र लेखन की सार्थकता' इस विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।**

**उत्तर:** विज्ञान व तकनीकी के इस युग में संचार माध्यमों का इतना प्रचार-प्रसार हो गया है कि आज लोग अपने सगे-संबंधियों को पत्र लिखना ही भूल गए हैं। आज लोग इंटरनेट ई-मेल, वॉट्स-एप आदि के माध्यम से शीघ्र संदेश भेज रहे हैं। इसलिए आज 'डाकिया डाक लाया.....' और उसका इंतजार करने के दिन नदारद हो गए हैं। चाहे कुछ भी हो, पत्र-लेखन साहित्य की एक प्रमुख विधा मानी जाती है। आज हमने भले कितनी ही प्रगति क्यों न कर ली हों, फिर भी हम पत्र-लेखन की महत्ता को अस्वीकार नहीं कर सकते। आज भी कई लोग एक-दूसरे को पत्र लिखते हैं। पत्र के जरिए व्यक्ति अपने मन की भावनाओं को जितना

अधिक अभिव्यक्त कर सकता है, उतना अन्य साधनों से नहीं कर सकता। पत्र लेखन वह कला है, जिससे हमें विश्व के इतिहास एवं पुरानी घटनाओं के बारे में पता चला है। आज भी पत्र मानव समाज के विकास में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

## अभिव्यक्ति

**(१) 'ज्ञान था आनंद प्राप्ति का साधन : वाचन' पर अपने विचार लिखिए।**

उत्तर : जिस प्रकार व्यक्ति के शरीर को भोजन की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मस्तिष्क के लिए वाचन अत्यंत आवश्यक है। वाचन के द्‌वारा हम अपने जीवन के दु:ख को भूलकर पठन-पाठन का आनंद प्राप्त करते हैं। समाचारपत्रों, पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हमें विविध जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। विश्व के विविध भागों में घटित होनेवाली घटनाओं का ज्ञान प्राप्त होता हैं। इसके अतिरिक्त वाचन शिक्षा प्राप्ति में भी सहायक है। पाठ्यपुस्तक पढ़ने से ज्ञानप्राप्ति होती हैं तथा संदर्भ ग्रंथ पढ़ने से ज्ञान की पिपासा शांत होती है। वाचन के माध्यम से ही व्यक्ति अपनी बातों को स्पष्ट रूप से कहकर उनका प्रतिपादन करता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वाचन ज्ञान तथा आनंद प्राप्ति का उत्तम साधन है।

❖❖❖

# १० बूढ़ी काकी

*- प्रेमचंद (१८८० - १९३६)*

## लेखक-परिचय

**जीवन-परिचय** : प्रेमचंद आधुनिक हिंदी कहानी के पितामह माने जाते हैं। उनका असली नाम धनपतराय था। १८९८ में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक स्थानीय विद्यालय में नियुक्त हो गए। १९१९ में बी.ए. करने के बाद वे शिक्षा विभाग में इंस्पेक्टर के पद पर नियुक्त हुए। उन्होंने कहानी और उपन्यास की एक ऐसी परंपरा का विकास किया, जिसने पूरी सदी के साहित्य का मार्गदर्शन किया। प्रेमचंद जी को 'कलम का सिपाही' कहा जाता है।

**प्रमुख कृतियाँ** : 'सेवा सदन', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'निर्मला', 'कायाकल्प', 'गबन', 'कर्मभूमि', 'गोदान', 'मंगलसूत्र' (अपूर्ण) (**उपन्यास**)। संग्राम, कर्बला और प्रेम की वेदी (**नाटक**) 'हंस', 'माधुरी', 'जागरण' आदि (**संपादन**)। 'मानसरोवर' (**कहानी संग्रह**)।

## गद्य-परिचय

**कहानी** : 'कहानी' गद्य लेखन की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। जीवन के किसी एक घटना के रोचक वर्णन को 'कहानी' कहते हैं। कहानी रमणीय होती है और सबके लिए मनोरंजन का काम करती है।

**प्रस्तावना** : 'बूढ़ी काकी' कहानी के माध्यम से कहानीकार प्रेमचंद जी ने हमारे समाज में वृद्धों की दयनीय स्थिति का बड़े ही मार्मिक ढंग से वर्णन किया है। साथ ही यह बताने का प्रयास किया है कि बुजुर्ग उपेक्षा के पात्र बन गए हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि हम उनकी उचित देखभाल करें और उन्हें भावनात्मक संरक्षण प्रदान करें।

## सारांश

कहानी की प्रमुख पात्र बूढ़ी काकी है। उनके पति और बेटों की मृत्यु हो गई है। अत: उन्होंने अपनी सारी संपत्ति अपने भतीजे बुद्धिराम के नाम कर दी। संपत्ति लिखाते समय बुद्धिराम ने काकी की उचित देखभाल और भरण-पोषण करने के बड़े-बड़े वादे किए थे। लेकिन जैसे ही संपत्ति मिली वैसे ही उसमें परिवर्तन आ गया। वह और उसकी पत्नी रूपा काकी का ठीक से ख्याल नहीं रखते थे। काकी को भरपेट भोजन भी मुश्किल से मिलता था।

बुद्धिराम के बड़े बेटे मुखराम का तिलकोत्सव था। तरह-तरह के व्यंजन बनाए गए थे। कचौड़ी, पूड़ियाँ, दही आदि चीजें पकाई गई थीं। काकी को इन व्यंजनों की महक रोक न सकी और वह स्वयं हाथ के बल रेंगती हुई रसोईघर में आ गई। जैसे ही रूपा ने काकी को देखा तो वह उन पर बहुत गुस्सा हुई। आखिर काकी अपनी कोठरी में चली गई। उन्होंने निश्चय किया अब वह स्वयं खाना खाने के लिए नहीं जाएगी। फिर भी उनकी जिह्वा की तृष्णा ने उन्हें एक जगह पर बैठने नहीं दिया और वे उस स्थान पर पहुँच गई; जहाँ पर सभी लोग बैठकर खाना खा रहे थे। एक व्यक्ति ने उन्हें देखा तो वह चिल्लाने लगा। जैसे ही बुद्धिराम को पता चला वे तुरंत दौड़कर आए और काकी को घसीटकर अंधेरी कोठरी में ले जाकर पटक दिया।

बुद्धिराम की छोटी लड़की लाड़ली काकी से अत्यंत प्रेम करती थी। वह जानती थी कि उसके माता-पिता किस तरह काकी को प्रताड़ित करते रहते हैं। उसने अपने हिस्से की पूड़ियाँ नहीं खाईं बल्कि काकी के लिए उन्हें सँभालकर रखा। रात के ग्यारह बजे घर के सब लोग सो जाने के बाद वह पूड़ियाँ लेकर काकी के पास चली जाती है और काकी को पूड़ियाँ खिलाती है। थोड़ी-सी पूड़ियाँ खाकर काकी का मन नहीं भरता। वह लाड़ली के सहारे उस स्थान पर जाती है, जिस स्थान पर सभी मेहमानों ने बैठकर खाना खाया था। वहाँ जाकर पड़ी हुई जूठी पत्तलों से जूठन निकालकर काकी खाने लगती है। उसी वक्त रूपा नींद से उठ जाती है और देखती है कि काकी जूठी पत्तलों से पूड़ियों के टुकड़े निकाल निकालकर खा रही हैं। यह दृश्य देखकर करूणा और भय से उसकी आँखें भर आती हैं। उसे इस बात का ज्ञान हो जाता है कि उसने बहुत बड़ा अधर्म किया है। वह ईश्वर से मिलने वाले दंड से डरती है। वह तुरंत रसोईघर में जाकर काकी के लिए व्यंजनों की संपूर्ण सामग्री सजाकर ले आती है और काकी से परमात्मा द्वारा अपने अपराध को क्षमा दिलाने के लिए कहती है। काकी भी सब कुछ भूलकर पूड़ियाँ खाते-खाते सदिच्छाएँ देती है। रूपा का हृदय परिवर्तन हो जाता है।

## शब्दार्थ

| | | |
|---|---|---|
| पुनरागमन | - | फिर से आना |
| कालांतर | - | बहुत समय |
| सब्जबाग | - | प्रलोभन |
| चेष्टा | - | इच्छा |
| प्रतिकूल | - | विरुद्ध |
| पश्चात्ताप | - | प्रायश्चित |
| क्षुधा | - | भूख |
| क्रोधातुर | - | गुस्से में आकर |
| भलमनसाहत | - | सज्जनता या शराफत |
| अर्द्धांगिनी | - | पत्नी |
| कदाचित | - | कभी-कभी, शायद |
| मद | - | नशा |
| अभिप्राय | - | अर्थ, मतलब |
| तृष्णा | - | इच्छा |
| विस्मयपूर्ण | - | व्याकुलता या आश्चर्य |
| प्रबंध | - | व्यवस्था |
| वाटिका | - | उद्यान |
| उद्विग्न | - | उदास या हताश |
| ठंडाई | - | शीतल पेय |
| तरकारी | - | सब्जी |
| लू | - | गरम हवा |
| सदिच्छाएँ | - | अच्छी इच्छाएँ |
| सिसकना | - | सिसकी भरकर रोना |
| अनुराग | - | प्रेम, प्रीति |
| कुल्ली करना | - | मुँह साफ करने के लिए उसमें पानी लेकर फेंकने की क्रिया |
| भगोड़ा | - | भागा हुआ |

## मुहावरे

| | | |
|---|---|---|
| **स्वर्ग सिधारना** | - | मृत्यु होना। |
| **मौन धारण करना** | - | चुप हो जाना। |
| **पेट में आग लगना** | - | बहुत तेज़ भूख लगना। |
| **गला फाड़ना** | - | शोर करना, चिल्लाना। |
| **कलेजे में हूक उठना** | - | मन में वेदना उत्पन्न होना। |

## MASTER KEY QUESTION SET - 10

**प्रश्न १ (अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति अ (१) : आकलन कृति**

**(१) कारण लिखिए।**

**(i) बूढ़ी काकी रोने लगती।**

उत्तर: क्योंकि घर वाले बाजार से लाई हुई वस्तु काकी को खाने के लिए नहीं देते थे।

**(ii) काकी ने भतीजे के नाम पर अपनी सारी संपत्ति लिख दी थी।**

उत्तर: क्योंकि उनके पति एवं बच्चों की मृत्यु हो चुकी थीं। अब भतीजे के अलावा उनका कोई नहीं था।

**(२) समझकर लिखिए।**

**(i) बुद्धिराम जी का स्वभाव -**

**(ii) रूपा का स्वभाव -**

उत्तर: (i) सज्जन (ii) तीव्र

(iii)

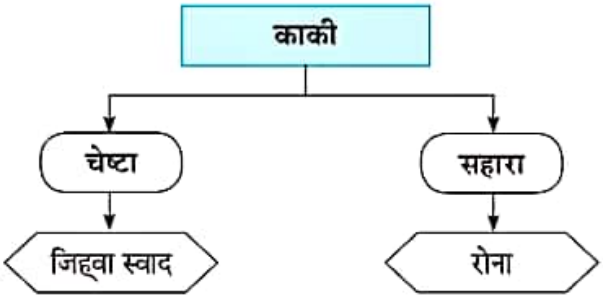


**(३) निम्नलिखित विधान सत्य है या असत्य पहचान कर लिखिए।**

**(i) काकी को अपनी भतीजे की भलमनसाहत खलती थी।**

**(ii) बचपन बुढ़ापे का पुनरागमन होता है।**

उत्तर: (i) सत्य (ii) असत्य

**(४) कृति पूर्ण कीजिए।**

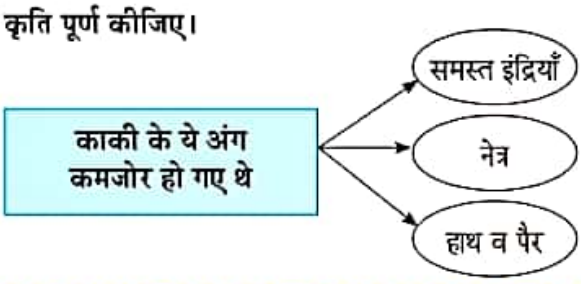


*गद्यांश: १ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ८९*

बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है। बूढ़ी काकी में जिह्वा स्वाद के सिवा और कोई चेष्टा शेष न थी और न अपने कष्टों की ओर आकर्षित करने के लिए रोने के अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा ही। समस्त इंद्रियाँ, नेत्र-हाथ और पैर जवाब दे चुके थे। पृथ्वी पर पड़ी रहतीं और घरवाले कोई बात उनकी इच्छा के प्रतिकूल करते, भोजन का समय टल जाता या उसका परिमाण पूर्ण न होता अथवा बाजार से कोई वस्तु आती और न मिलती तो ये रोने लगती थीं। उनका रोना-सिसकना साधारण रोना न था, वे गला फाड़-फाड़ कर रोती थीं।

उनके पतिदेव को स्वर्ग सिधारे कालांतर हो चुका था। बेटे तरुण हो-होकर चल बसे थे। अब एक भतीजे के सिवाय और कोई न था। उसी भतीजे के नाम उन्होंने अपनी सारी संपत्ति लिख दी। लिखाते समय भतीजे ने खूब लंबे-चौड़े वादे किए किंतु वे सब वादे केवल कुली डिपो के दलालों के दिखाए हुए सब्जबाग थे। यद्यपि उस संपत्ति की वार्षिक आय

डेढ़-दो सौ रुपये से कम न थी तथापि बूढ़ी काकी को पेट भर भोजन भी कठिनाई से मिलता था। इसमें उनके भतीजे पंडित बुद्धिराम का अपराध था अथवा उनकी अर्द्धांगिनी श्रीमती रूपा का, इसका निर्णय करना सहज नहीं। बुद्धिराम स्वभाव के सज्जन थे किंतु उसी समय तक जबकि उनके कोष पर कोई आँच न आए। रूपा स्वभाव से तीव्र थी सही, पर ईश्वर से डरती थी। अतएव बूढ़ी काकी को उसकी तीव्रता उतनी न खलती थी जितनी बुद्धिराम की भलमनसाहत।

### कृति अ (२) : स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन होता है।' कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: बचपन में बच्चा शरारत करना, रोना, चीखना-चिल्लाना, जिद करना, मचलना, अन्य बच्चों के साथ झगड़ना, खेलना आदि प्रकार की क्रियाएँ करता है। आखिर, इसे ही तो बचपन कहा जाता है। जैसे-जैसे वह बड़ा हो जाता है, वैसे–वैसे वह समझदार हो जाता है। बचपन की सारी शरारतें पीछे रह जाती हैं। जवानी एवं प्रौढ़ावस्था के बाद व्यक्ति बूढ़ा हो जाता है। बूढ़ा हो जाने पर उसकी समस्त इंद्रियाँ एवं हाथ-पैर ढीले पड़ जाते हैं। ऐसे में उसे दूसरों के सहारे की जरूरत पड़ती है। वह कहता रहता है; चिल्लाता रहता है; बात-बात पर गुस्सा हो जाता है; छोटे बच्चों की तरह जिद करता है या रोता भी है। उन्हें भी किसी के सहारे और देखभाल की जरूरत पड़ती है। इसलिए कहा गया है कि बुढ़ापा बचपन का पुनरागमन होता है।

### प्रश्न २ (आ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति आ (१): आकलन कृति

**(१) गद्यांश के आधार पर वाक्य पूर्ण कीजिए।**

**(i) बुद्धिराम भलामानुष बन बैठे हैं .....**

उत्तर: काकी द्वारा किसी संपत्ति के कारण।

**(ii) रूपा के घटनास्थल पर पहुँचते ही .....**

उत्तर: काकी अपनी जिह्वा कृपाण का कदाचित ही प्रयोग करती थीं।

**(२) समझकर लिखिए।**

(i)

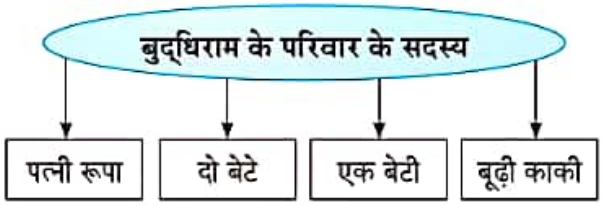


**(ii) इससे प्रेम करती थी काकी -**

उत्तर: बुद्धिराम की छोटी लड़की से।

(iii)

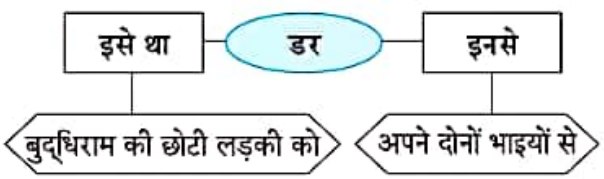


**(३) कृति पूर्ण कीजिए।**

(i)

**(४) कारण लिखिए।**

***(i) अंग्रेजी पढ़े हुए नवयुवक उदासीन थे।**

उत्तर: क्योंकि उन्हें गँवार मंडली में बोलना अथवा सम्मिलित होना अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल लगता था।

*गद्यांश: २ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ८९-९०*

बुद्धिराम को कभी-कभी अपने अत्याचार का खेद होता था। विचारते कि इसी संपत्ति के कारण मैं इस समय भलामानुष बना बैठा हूँ। लड़कों को बुड्ढों से स्वाभाविक विद्वेष होता ही है और फिर जब माता-पिता का यह रंग देखते तो वे बूढ़ी काकी को और सताया करते। कोई चुटकी काटकर भागता, कोई उनपर पानी की कुल्ली कर देता! काकी चीख मारकर रोतीं। हाँ, काकी क्रोधातुर होकर बच्चों को गालियाँ देने लगतीं तो रूपा घटनास्थल पर आ पहुँचती। इस भय से काकी अपनी जिह्वा कृपाण का कदाचित ही प्रयोग करती थीं।

संपूर्ण परिवार में यदि काकी से किसी को अनुराग था तो वह बुद्धिराम की छोटी लड़की लाड़ली थी। लाड़ली अपने दोनों भाइयों के भय से अपने हिस्से की मिठाई-चबैना बूढ़ी काकी के पास बैठकर खाया करती थी। यही उसका रक्षागार था।

रात का समय था। बुद्धिराम के द्वार पर शहनाई बज रही थी और गाँव के बच्चों का झुंड विस्मयपूर्ण नेत्रों से गाने का रसास्वादन कर रहा था। चारपाइयों पर मेहमान विश्राम कर रहे थे। दो-एक अंग्रेजी पढ़े हुए नवयुवक इन व्यवहारों से उदासीन थे। वे इस गँवार मंडली में बोलना अथवा सम्मिलित होना अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल समझते थे।

### कृति आ (२) : स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'बच्चे अपने माता-पिता का अनुसरण करते हैं।' कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: बच्चे मन के सच्चे व निष्पाप होते हैं। वे बड़ों का अनुसरण करते हैं। जिस प्रकार माता-पिता उन्हें संस्कार देते हैं; बच्चे उसी प्रकार उनका अनुसरण करते हैं। यदि उनके माता-पिता घर के बड़े बुजुर्ग यानी दादा-दादी का अपमान करते हैं, तो बच्चे भी उनका अनुसरण करते हुए दादा-दादी को भला-बुरा कहते हैं। यदि बच्चों को बचपन से ही अच्छी शिक्षा दी जाए और उन्हें अच्छे संस्कार दिए जाए तो बच्चे संस्कारी बनते हैं। उनमें मानवीय मूल्य संवर्धित होते हैं। इसलिए प्रत्येक अभिभावक का यह कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दें एवं उनके सामने आपस में अच्छा व्यवहार व आचरण कर एक आदर्श स्थापित करें, ताकि बच्चे भी उनके सद्आचरण का अनुसरण करें।

**प्रश्न ३ (इ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति इ (१) : आकलन कृति**

**(१) कृति पूर्ण कीजिए ।**

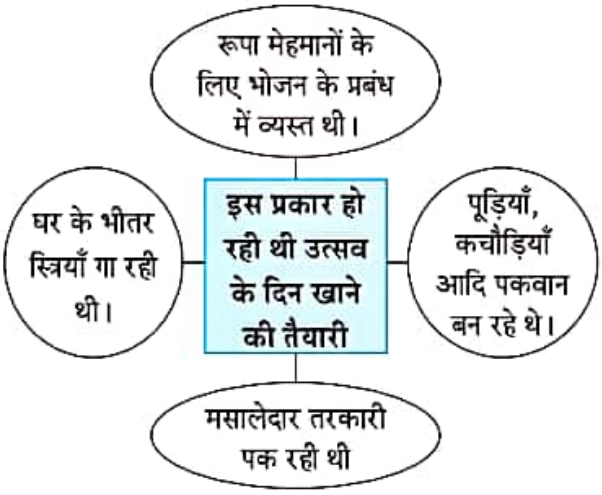


**(२) निम्नलिखित वाक्य सही है या गलत पहचान कर लिखिए और गलत वाक्यों को फिर से सही कीजिए।**

**(i) बुद्धिराम के बड़े लड़के मुखराम का जन्मदिन था।**

उत्तर: गलत : बुद्धिराम के बड़े लड़के मुखराम का तिलक था।

**(ii) भट्ठियों पर कड़ाह चढ़ रहे थे।**

उत्तर: सही

**(३) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक शब्दों में लिखिए।**

**(i) घी और मसाले की सुगंध कैसी थी?**

उत्तर: क्षुधावर्धक।

**(ii) बूढ़ी काकी किसके बल सरकती हुई उतरी?**

उत्तर: हाथों के बल

*गद्यांश: ३ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ९०*

आज बुद्धिराम के बड़े लड़के मुखराम का तिलक आया था। यह उसी का उत्सव था। घर के भीतर स्त्रियाँ गा रही थीं और रूपा मेहमानों के लिए भोजन के प्रबंध में व्यस्त थी। भट्ठियों पर कड़ाह चढ़ रहे थे। एक में पूड़ियाँ-कचौड़ियाँ निकल रही थीं, दूसरे में अन्य पकवान बन रहे थे। एक बड़े हंडे में मसालेदार तरकारी पक रही थी। घी और मसाले की क्षुधावर्धक सुगंध चारों और फैली हुई थी।

बूढ़ी काकी अपनी कोठरी में शोकमय विचार की भाँति बैठी हुई थीं। यह स्वाद मिश्रितसुगंध उन्हें बेचैन कर रही थी।

'आह! कैसी सुगंध है? अब मुझे कौन पूछता है? जब रोटियों ही के लाले पड़े हैं तब ऐसे भाग्य कहाँ कि भरपूर पूड़ियाँ मिलें?' यह विचार कर उन्हें रोना आया, कलेजे में हूक-सी उठने लगी परंतु रूपा के भय से उन्होंने फिर मौन धारण कर लिया।

फूल हम घर में भी सूँघ सकते हैं परंतु वाटिका में कुछ और बात होती है। इस प्रकार निर्णय करके बूढ़ी काकी हाथों के बल सरकती हुई बड़ी कठिनाई में चौखट से उतरीं और धीरे-धीरे रेंगती हुई कड़ाह के पास आ बैठीं।

**कृति इ (२) : स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) काकी का कड़ाह के पास जाकर बैठना उचित था या अनुचित? इस पर अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: काकी बूढ़ी हो गई थीं। उनकी समस्त इंद्रियाँ एवं हाथ-पैर ढीले पड़ गए थे। उनके लिए जीवित थी सिर्फ जिह्वा, जो व्यंजनों का स्वाद पाना चाहती थी। काकी ने अपनी सारी संपत्ति जिस बुद्धिराम के नाम कर दी थी; वह काकी को खाने के लिए ठीक से अच्छी चीजें नहीं देता था। इसलिए काकी खाने के लिए हमेशा लालायित रहती थी। घर में तिलकोत्सव होने के कारण पूड़ियाँ बनाई जा रही थीं। खाने की आशा से काकी हाथों के बल सरकती हुई कड़ाह के पास आकर बैठ जाती है। बूढ़ी हो जाने के बाद अब काकी को सिवाय भोजन के किसी भी प्रकार की सूझबूझ नहीं है। आखिर बुढ़ापा बचपन का ही पुनरागमन होता है। इसलिए काकी का कड़ाह के पास जाकर बैठना न उचित था और न अनुचित। वह तो एक बाल सुलभ सहज प्रक्रिया थी।

**प्रश्न ४ (ई) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति ई (१) : आकलन कृति**

**(१) तालिका पूर्ण कीजिए।**

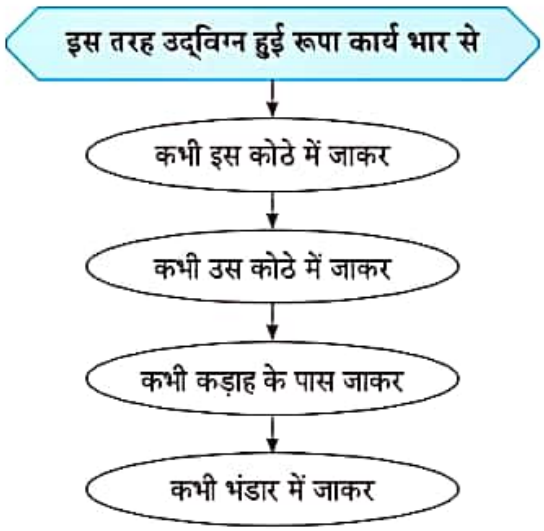


**(२) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

**(i) ठंडाई** **(ii) गर्मी**

उत्तर: (i) महाराज ने क्या मँगाई?

(ii) परिच्छेद में किस मौसम का वर्णन हुआ है?

(३) संजाल पूर्ण कीजिए।

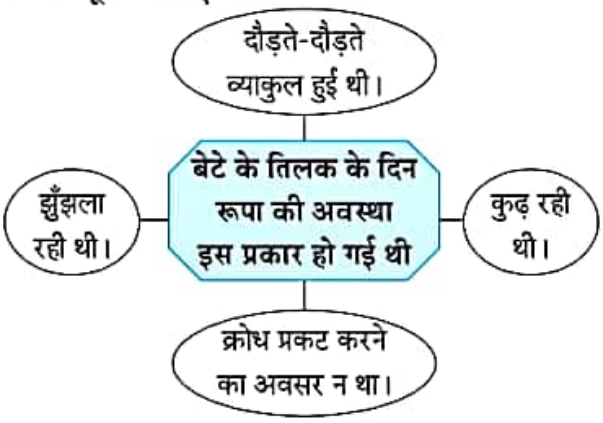


(४) किसने, किससे कहा?

(i) "ऐसे पेट में आग लगे ।"

उत्तर: रूपा ने काकी से कहा।

(ii) "जरा ढोल मंजीरा उतार दो।"

उत्तर: एक आदमी ने रूपा से कहा।

*गद्यांश: ४ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ९०-९१*

रूपा उस समय कार्य भार से उद्विग्न हो रही थी। कभी इस कोठे में जाती, कभी उस कोठे में, कभी कड़ाह के पास आती, कभी भंडार में जाती। किसी ने बाहर से आकर कहा- 'महाराज ठंडाई माँग रहे हैं।' ठंडा देने लगी। आदमी ने आकर पूछा- 'अभी भोजन तैयार होने में कितना विलंब है? जरा ढोल-मंजीरा उतार दो।' बेचारी अकेली स्त्री दौड़ते-दौड़ते व्याकुल हो रही थी, झुँझलाती थी, कुढ़ती थी, परंतु क्रोध प्रकट करने का अवसर न पाती थी। भय होता, कहीं पड़ोसिनें यह न कहने लगें कि इतने में उबल पड़ीं। प्यास से स्वयं कंठ सूख रहा था। गर्मी के मारे फुँकी जाती थी परंतु इतना अवकाश भी नहीं था कि जरा पानी पी ले अथवा पंखा लेकर झले। यह भी खटका था कि जरा आँख हटी और चीजों की लूट मची। इस अवस्था में उसने बूढ़ी काकी को कड़ाह के पास बैठा देखा तो जल गई। क्रोध न रुक सका। वह बूढ़ी काकी पर झपटी और उन्हें दोनों हाथों से झटककर बोली- "ऐसे पेट में आग लगे, पेट है या भाड़? कोठरी में बैठते हुए क्या दम घुटता था? अभी मेहमानों ने नहीं खाया, भगवान को भोग नहीं लगा, तब तक धैर्य न हो सका? आकर छाती पर सवार हो गई। इतना ठूँसती है न जाने कहाँ भस्म हो जाता है। भला चाहती हो तो जाकर कोठरी में बैठो, जब घर के लोग खाने लगेंगे तब तुम्हें भी मिलेगा। तुम कोई देवी नहीं हो कि चाहे किसी के मुँह में पानी न जाए, परंतु तुम्हारी पूजा पहले ही हो जाए।"

## कृति ई (२): स्वमत अभिव्यक्ति

(१) 'रूपा द्वारा काकी के प्रति किया गया व्यवहार पूर्णत: अनुचित था।' कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।

उत्तर: काकी बूढ़ी महिला है। देखा जाए तो जिस घर में रूपा रह रही है; वह घर काकी का ही है। इतना ही नहीं, अपने बेटे के तिलक पर पैसा खर्च करके जो खाना वह बना रही थी वह पैसा भी काकी का ही है। फिर भी उसे काकी की कद्र नहीं है। रूपा को सिर्फ घर पर आए मेहमानों की पड़ी है लेकिन घर रहने वाले काकी की भूख के बारे में उसे तनिक भी ख्याल नहीं रहता। भले ही वह तिलक के दिन कामकाज में व्यस्त है। परंतु काकी की उम्र और उनकी स्थिति का ख्याल तो रखना ही चाहिए था। उसे काकी के प्रति मनुष्य जैसा व्यवहार करना चाहिए था।

## प्रश्न ५ (उ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति उ (१) : आकलन कृति

(१) समझकर लिखिए।

(i) काकी को इस पर दुख हुआ -

(ii) काकी को इस पर क्रोध नहीं था -

(iii) गद्यांश में प्रयुक्त व्यंजनों के नाम -

उत्तर: (i) अपनी जल्दबाजी पर (ii) रूपा पर

(iii) पूड़ियाँ, दही, शक्कर, कचौड़ियाँ, रायता, तरकारी आदि।

(२) सत्य या असत्य पहचानकर लिखिए।

(i) काकी को अपने आप पर पश्चात्ताप हुआ।

(ii) काकी को पूड़ियाँ अच्छी नहीं लगती थीं।

उत्तर: (i) सत्य (ii) असत्य

(३) कारण लिखिए।

(i) बूढ़ी काकी चलने के लिए तैयार हुई।

उत्तर: क्योंकि उन्हें लगा कि वह तो घर की ही एक सदस्य है। वह कोई मेहमान नहीं है कि जिसे खाने के लिए आमंत्रित किया जाए।

(ii) काकी को स्वयं पर पश्चात्ताप हुआ।

उत्तर: क्योंकि वह मेहमानों के खाना खाने के पहले ही खाना खाने के लिए गई थी।

*गद्यांश: ५ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ९१*

बूढ़ी काकी अपनी कोठरी में जाकर पश्चात्ताप कर रही थीं कि मैं कहाँ से कहाँ पहुँच गई। उन्हें रूपा पर क्रोध नहीं था। अपनी जल्दबाजी पर दुख था। सच ही तो है जब तक मेहमान लोग भोजन कर न चुकेंगे, घरवाले कैसे खाएँगे! मुझसे इतनी देर भी न रहा गया। सबके सामने पानी उतर गया। अब, जब तक कोई बुलाने न आएगा, नहीं जाऊँगी।

मन-ही-मन इसी प्रकार का विचार कर वह बुलाने की प्रतीक्षा करने लगीं। उन्हें एक-एक पल, एक-एक युग के समान मालूम होता था। धीरे-धीरे एक गीत गुनगुनाने लगीं। उन्हें मालूम हुआ कि मुझे गाते देर हो गई। क्या इतनी देर तक लोग भोजन कर ही रहे होंगे। किसी की आवाज नहीं सुनाई देती। अवश्य ही लोग खा-पीकर चले गए। मुझे कोई बुलाने नहीं आया। रूपा चिढ़ गई है, क्या जाने न बुलाए। सोचती हो कि आप ही आएँगी, वह कोई मेहमान तो नहीं जो उन्हें बुलाऊँ। बूढ़ी काकी चलने के लिए तैयार हुई। यह विश्वास कि एक मिनट में पूड़ियाँ और मसालेदार तरकारियाँ सामने आएँगी, उनकी स्वादेंद्रियों को गुदगुदाने लगा। उन्होंने मन में तरह-तरह के मनसूबे बाँधे, पहले तरकारी से पूड़ियाँ खाऊँगी, फिर दही और शक्कर से, कचौड़ियाँ रायते के साथ मजेदार मालूम होंगी। चाहे कोई बुरा माने चाहे भला, मैं तो माँग-माँगकर खाऊँगी, लोग यही न कहेंगे कि इन्हें विचार नहीं? कहा करें, इतने दिन के बाद पूड़ियाँ मिल रही हैं तो मुँह जूठा करके थोड़े ही उठ जाऊँगी!

### कृति उ (२) : स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'अपमानित होने के बावजूद भी काकी खाना खाने के लिए स्वयं गई।' आपके अनुसार काकी ने सही किया या गलत? इस कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:** काकी अपमानित होने के बावजूद भी खाना खाने के लिए स्वयं गई। मेरे अनुसार काकी का ऐसा करना गलत नहीं है। आखिर काकी एक वृद्ध महिला है। काकी स्वयं को घर का सदस्य मानती थी। वह परिवार में सबसे बड़ी और बुजुर्ग थीं। इस अवस्था में इन्हें खाने के स्वाद के अतिरिक्त किसी में रुचि नहीं थी। पूड़ियाँ और मसालेदार तरकारियाँ आदि के विचार से काकी की स्वादेंद्रियाँ गुदगुदाने लगी। इन्हीं सब कारणों से काकी अपमानित होने के बाद भी खाना खाने के लिए स्वयं जाने को तैयार हुईं जो एक वृद्ध मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है।

## प्रश्न ६ (ऊ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति ऊ (१) : आकलन कृति

**(१) तालिका पूर्ण कीजिए।**

**मेहमान मंडली की क्रियाएँ**

- कोई खाकर ऊँगलियाँ चाट रहा था।
- कोई खाना खाने वालों की ओर तिरछी नजर से देख रहा था।
- कोई दही खाकर जीभ चटकारता था।
- कोई दही का दूसरा दोना माँगने में संकोच कर रहा था।

**(२) कारण लिखिए।**

**(i) कई आदमी चौंककर उठ खड़े हुए।**

**उत्तर:** क्योंकि जहाँ पर लोग खाना खा रहे थे वहाँ पर रेंगते हुए काकी पहुँच गई।

**(ii) बूढ़ी काकी को भोजन के लिए किसी ने भी नहीं पूछा।**

**उत्तर:** क्योंकि बुद्धिराम व रूपा ने काकी को निर्लज्जता के लिए दंड देने का निश्चय कर लिया था।

**(iii) बुद्धिराम काकी को घसीटते हुए कोठरी में ले गया।**

**उत्तर:** जहाँ पर बैठकर सारे मेहमान खाना खा रहे थे वहाँ पर रेंगते हुए जाकर काकी ने उनके रंग में भंग डालने का प्रयास किया था। इसलिए क्रोधित होकर बुद्धिराम काकी को घसीटते हुए कोठरी में ले गया।

**(३) समझकर लिखिए।**

**(i) अप्रत्यक्ष रूप से इसे भगोड़ा कर्जदार कहा गया है -**

**(ii) अप्रत्यक्ष रूप से इसे निर्दयी महाजन कहा गया है -**

**उत्तर:** (i) बूढ़ी काकी को (ii) बुद्धिराम को

**(iii) इन पर करुणा नहीं आई बुद्धिराम व रूपा को**

- काकी की दीनता पर
- काकी के बुढ़ापे पर
- काकी के हतज्ञान पर

*गद्यांश: ६ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ९१-९२*

मेहमान मंडली अभी बैठी हुई थी। कोई खाकर ऊँगलियाँ चाटता था, कोई तिरछे नेत्रों से देखता था कि और लोग अभी खा रहे हैं या नहीं। कोई इस चिंता में था कि पत्तल पर पूड़ियाँ छूटी जाती हैं, किसी तरह इन्हें भीतर रख लेता। कोई दही खाकर जीभ चटकारता था परंतु दूसरा दोना माँगते संकोच करता था कि इतने में बूढ़ी काकी रेंगती हुई उनके बीच में जा पहुँची। कई आदमी चौंककर उठ खड़े हुए। पुकारने लगे- "अरे यह बुढ़िया कौन है? यह कहाँ से आ गई? देखो किसी को छू न दे।"

पंडित बुद्धिराम काकी को देखते ही क्रोध से तिलमिला गए। पूड़ियों का थाल लिए खड़े थे। थाल को जमीन पर पटक दिया और जिस प्रकार निर्दयी महाजन अपने किसी बेईमान और भगोड़े कर्जदार को देखते ही झपटकर उसका टेंटुआ पकड़ लेता है उसी तरह लपक उन्हें अंधेरी कोठरी में धम से पटक दिया। आशा रूपी वाटिका लू के एक झोंके में नष्ट-विनष्ट हो गई।

मेहमानों ने भोजन किया। घरवालों ने भोजन किया परंतु बूढ़ी काकी को किसी ने न पूछा। बुद्धिराम और रूपा दोनों ही बूढ़ी काकी को उनकी निर्लज्जता के लिए दंड देने का निश्चय कर चुके थे। उनके बुढ़ापे पर, दीनता पर, हतज्ञान पर किसी को करुणा न आई थी, अकेली लाड़ली उनके लिए कुढ़ रही थी।

### कृति ऊ (२) : स्वमत अभिव्यक्ति

***(१) 'बुजुर्ग आदर-सम्मान के पात्र होते हैं, दया के नहीं।' कथन पर अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:** बुजुर्ग समाज के लिए सांस्कृतिक विरासत की तरह होते हैं। हमें उनका आदर-सम्मान करना चाहिए। वे हमारे संरक्षक एवं मार्गदर्शक होते हैं। वे हमारे घर की धरोहर होते हैं। वे हमारे सच्चे पथ-प्रदर्शक होते हैं। उनकी बातों को सुनना चाहिए। बुजुर्गों की सीख हमारा भाग्य बदल सकती है। जब हम मुसीबत में फँस जाते हैं तब उससे बाहर निकलने के लिए वे ही हमारी मदद कर सकते हैं क्योंकि उनके पास जीवन का गहरा अनुभव होता है। हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम अपने घर के बुजुर्ग की सेवा करें। उनसे प्यार करें। उनका आदर सम्मान करें। वे बुजुर्ग हो गए हैं। इसलिए हमें उन्हें सँभालना है नहीं तो दुनिया हम पर हँसेगी; ऐसा सोचना उन पर दया दिखाने जैसा ही है। हमें अपने मन से इस प्रकार के विचारों को त्याग कर निष्ठा एवं अपनत्व की भावना से उनका ख्याल रखना चाहिए। हमारा कर्त्तव्य है कि हम उन्हें भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करें।

**प्रश्न ७ (ए) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति ए (१) : आकलन कृति**

**(१) चौखटों में दी सूचना के अनुसार शब्द में परिवर्तन कीजिए।**

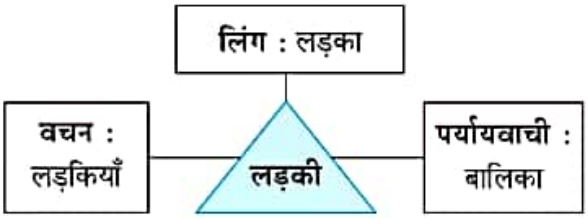


**(२) जोड़ियाँ मिलाइए।**

| 'अ' | 'ब' |
|---|---|
| (i) भोली लड़की | (क) गुड़ियों की |
| (ii) निर्दयी | (ख) हृदय |
| (iii) पिटारी | (ग) लाड़ली के माता-पिता |
| (iv) अधीर | (घ) लाड़ली |

**उत्तर:** (i - घ), (ii - ग), (iii - क), (iv - ख)

**(३) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -**

**(i) लाड़ली (ii) पूड़ियाँ**

**उत्तर:** (i) काकी ने किसे अपनी गोद में बिठाया?

(ii) काकी क्या देखकर प्रसन्न हुई?

**(४) कारण लिखिए।**

**(i) लाड़ली को नींद इसलिए नहीं आ रही थी।**

**उत्तर:** क्योंकि उसे काकी को पूड़ियाँ खिलानी थीं।

**(ii) माता-पिता द्वारा काकी को निर्दयता से घसीटने पर यह हुआ।**

**उत्तर:** लाड़ली का हृदय ऐंठकर रह गया।

**(५) कारण लिखिए।**

**(i) लाड़ली ने पूड़ियाँ छिपाकर रखी :**

**उत्तर:** क्योंकि वह उन पूड़ियों को काकी के पास लेकर जाना चाहती थीं।

*गद्यांश: ७ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ९२*

लाड़ली को काकी से अत्यंत प्रेम था। बेचारी भोली लड़की थी। बालविनोद और चंचलता की उसमें गंध तक न थी। दोनों बार जब उसके माता-पिता ने काकी को निर्दयता से घसीटा तो लाड़ली का हृदय ऐंठकर रह गया। वह झुँझला रही थी कि यह लोग काकी को क्यों बहुत-सी पूड़ियाँ नहीं दे देते। उसने अपने हिस्से की पूड़ियाँ बिलकुल न खाई थीं। अपनी गुड़ियों की पिटारी में बंद कर रखी थीं। उन पूड़ियों को काकी के पास ले जाना चाहती थी। उसका हृदय अधीर हो रहा था। बूढ़ी काकी मेरी बात सुनते ही उठ बैठेंगी, पूड़ियाँ देखकर कैसी प्रसन्न होंगी! मुझे खूब प्यार करेंगी।

रात के ग्यारह बज गए थे। रूपा आँगन में पड़ी सो रही थी। लाड़ली की आँखों में नींद न आती थी। काकी को पूड़ियाँ खिलाने की खुशी उसे सोने न देती थी। उसने पूड़ियों की पिटारी सामने ही रखी थी। जब विश्वास हो गया कि अम्मा सो रही हैं, तो अपनी पिटारी उठाई और बूढ़ी काकी की कोठरी की ओर चली।

सहसा कानों में आवाज आई- "काकी, उठो मैं पूड़ियाँ लाई हूँ।" काकी ने लाड़ली की बोली पहचानी। चटपट उठ बैठीं। दोनों हाथों से लाड़ली को टटोला और उसे गोद में बैठा लिया। लाड़ली ने पूड़ियाँ निकालकर दीं।

**कृति ए (२) : स्वमत अभिव्यक्ति**

**(१) 'बच्चे मन के सच्चे होते हैं। उनके पास न ईर्ष्या होती है और न द्वेष।' अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:** बच्चे मन के सच्चे होते हैं। इनका मन कोरे कागज की तरह होता है। हम जो छाप बच्चों के मन मस्तिष्क पर डालेंगे उसका असर आजीवन दिखेगा। बच्चों में बुद्धिमत्ता बड़ों से तनिक भी कम नहीं होती। इनके कोमल मन-मस्तिष्क से भय दूर करना, इन्हें आत्मविश्वासी बनाना, सोचने-निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना हमारा कर्तव्य है। उनके पास ईर्ष्या व द्वेष जैसी भावनाएँ नहीं होती हैं। वे निष्पाप होते हैं। उनके मन में किसी के लिए भी मैल नहीं होता है। उनका हृदय छलरहित होता है। वे सभी के साथ नाता जोड़ने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।

**प्रश्न ८ (ए) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति ए (१) : आकलन कृति**

**(१) किसने, किससे कहा?**

**(i) ''क्या तुम्हारी अम्मा ने दी हैं।''**

**उत्तर:** काकी ने लाड़ली से पूछा।

**(ii) ''अम्मा सोती हैं।''**

**उत्तर:** लाड़ली ने काकी से कहा।

**(२) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।**

**(i) पाँच/दस मिनट में पिटारी खाली हो गई।**

**उत्तर:** पाँच मिनट में पिटारी खाली हो गई।

**(ii) काकी का अधीर/गंभीर मन इच्छा के प्रबल प्रवाह में बह गया।**

**उत्तर:** काकी का अधीर मन इच्छा के प्रबल प्रवाह में बह गया।

**(३) समझकर लिखिए।**

**(i) इस स्थान पर लेकर जाने की इच्छा व्यक्त की काकी ने -**

**उत्तर:** जहाँ पर मेहमानों ने बैठकर खाना खाया था।

**(ii) पूड़ियाँ खाने के बाद काकी द्वारा घटित क्रियाएँ -**

**उत्तर:** बार-बार होंठ चाटना व चटखारे भरना।

*गद्यांश: ८ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ९२-९३*

काकी ने पूछा- "क्या तुम्हारी अम्मा ने दी हैं?"

लाड़ली ने कहा- "नहीं, यह मेरे हिस्से की हैं।"

काकी पूड़ियों पर टूट पड़ीं। पाँच मिनट में पिटारी खाली हो गई।

लाड़ली ने पूछा- "काकी, पेट भर गया।"

जैसे थोड़ी-सी वर्षा, ठंडक के स्थान पर और भी गरमी पैदा कर देती है, उसी भाँति इन थोड़ी पूड़ियों ने काकी की क्षुधा और इच्छा को और उत्तेजित कर दिया था। बोली- "नहीं बेटी, जाकर अम्मा से और माँग लाओ।"

लाड़ली ने कहा- "अम्मा सोती हैं, जगाऊँगी तो मारेंगी।"

काकी ने पिटारी को फिर टटोला। उसमें कुछ खुरचन गिरे थे। उन्हें निकालकर वे खा गईं। बार-बार होंठ चाटती थीं, चटखारें भरती थीं।

हृदय मसोस रहा था कि और पूड़ियाँ कैसे पाऊँ। संतोष सेतु जब टूट जाता है तब इच्छा का बहाव अपरिमित हो जाता है। मतवालों को मद का स्मरण करना उन्हें मदांध बनाता है। काकी का अधीर मन इच्छा के प्रबल प्रवाह में बह गया। उचित और अनुचित का विचार जाता रहा। वे कुछ देर तक उस इच्छा को रोकती रहीं सहसा लाड़ली से बोली- "मेरा हाथ पकड़कर वहाँ ले चलो जहाँ मेहमानों ने बैठकर भोजन किया है।"

### कृति ए (२) : स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'संतोष सेतु जब टूट जाता है तब इच्छा का बहाव अपरिपक्व हो जाता है।' इस कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:** यह कथन सर्वथा उचित है कि जब संतोष सेतु टूट जाता है तब इच्छा का बहाव अपरिमित हो जाता है। संतोष व्यक्ति को मिली एक ऐसी उपलब्धि है जो धन के समान है। व्यक्ति के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उसकी संतुष्टि होती है। संतुष्ट न होने वाला धनवान व्यक्ति भी मानसिक दुर्बलता एवं निर्धन व्यक्तियों की श्रेणी में आ जाता है। व्यक्ति अपने संस्कारों के द्वारा संतुष्टि प्राप्त कर सकता है। पर जब व्यक्ति का संतोष सेतु टूट जाता है तब उसकी इच्छा का बहाव अपरिपक्व हो जाता है। फिर वह किसी चीज को पाने के लिए कुछ भी कर सकता है। उस वक्त उसे सूझता नहीं है कि वह सही कर रहा है या गलत। उसकी इच्छाएँ उसे मानसिक पतन की ओर ले जाती हैं।

### प्रश्न ९ (ओ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति ओ (१) : आकलन कृति

**(१) उचित जोड़ियाँ मिलाइए।**

| 'अ' | 'ब' |
|---|---|
| (i) स्वादिष्ट | (क) काकी |
| (ii) सलोनी | (ख) खस्ता |
| (iii) सुकोमल | (ग) कचौड़ियाँ |
| (iv) बुद्धिहीन | (घ) दही |

**उत्तर:** (i - घ), (ii - ग), (iii - ख), (iv - क)

**(२) समझकर लिखिए।**

(i)

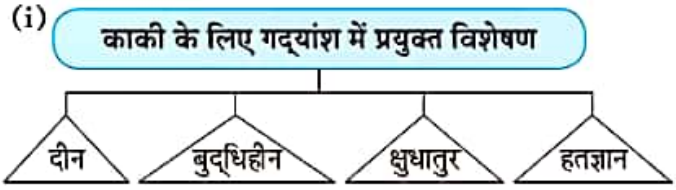


(ii)

**(३) कारण लिखिए।**

**(i) रूपा का हृदय सन्न हो गया।**

**उत्तर:** क्योंकि काकी पत्तलों पर से पूड़ियों के टुकड़े उठा-उठाकर खा रही थीं।

**(ii) रूपा को क्रोध नहीं आया।**

**उत्तर:** क्योंकि उसकी चचेरी सास पूड़ियों के कुछ ग्रासों के लिए पतित व निकृष्ट कर्म कर रही थी।

**(४) किसने, किससे कहा?**

**(i) "मेरे बच्चों पर दया करो।"**

**उत्तर:** रूपा ने ईश्वर से कहा।

*गद्यांश: ९ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ९३-९४*

लाड़ली उनका अभिप्राय समझ न सकी। उसने काकी का हाथ पकड़ा और ले जाकर जूठे पत्तलों के पास बैठा दिया। दीन, क्षुधातुर, हतज्ञान बुढ़िया पत्तलों से पूड़ियों के टुकड़े चुन-चुनकर भक्षण करने लगी। ओह दही कितना स्वादिष्ट था, कचौड़ियाँ कितनी सलोनी, खस्ता कितना सुकोमल! काकी बुद्धिहीन होते हुए भी इतना जानती थीं कि मैं वह काम कर रही हूँ जो मुझे कदापि न करना चाहिए। मैं दूसरों की जूठी पत्तल चाट रही हूँ। परंतु बुढ़ापा तृष्णा रोग का अंतिम समय है जब संपूर्ण इच्छाएँ एक ही केंद्र पर आ लगती हैं। बूढ़ी काकी में यह केंद्र उनकी स्वादेंद्रियाँ थीं।

ठीक उसी समय रूपा की आँखें खुलीं। उसे मालूम हुआ कि लाड़ली मेरे पास नहीं है। वह चौंकी, चारपाई के इधर-उधर ताकने लगी कि कहीं नीचे तो नहीं गिर पड़ी। उसे वहाँ न पाकर वह उठी तो क्या देखती है कि लाड़ली जूठे पत्तलों के पास चुपचाप खड़ी है और बूढ़ी काकी पत्तलों पर से पूड़ियों के टुकड़े उठा-उठाकर खा रही हैं। रूपा का हृदय सन्न हो गया। परिवार का एक बुजुर्ग दूसरों की जूठी पत्तल टटोले, इससे अधिक शोकमय दृश्य असंभव था। पूड़ियों के कुछ ग्रासों के लिए उसकी चचेरी सास ऐसा पतित और निकृष्ट कर्म कर रही है। ऐसा प्रतीत होता मानो जमीन रुक गई, आसमान चक्कर खा रहा है। संसार पर कोई आपत्ति आने वाली है। रूपा को क्रोध न आया। शोक के सम्मुख क्रोध कहाँ? करुणा और भय से उसकी आँखें भर आईं! इस अधर्म के पाप का भागी कौन है? उसने सच्चे हृदय से गगन मंडल की ओर हाथ उठाकर कहा, "परमात्मा, मेरे बच्चों पर दया करो। इस अधर्म का दंड मुझे मत दो, नहीं तो मेरा सत्यानाश हो जाएगा।"

### कृति ओ (२) : स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'आज हमारे समाज में कई ऐसे बुजुर्ग हैं, जिन्हें दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती।' इस पर अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:** आज हमारे समाज में कई ऐसे गरीब, अनाथ व लाचार बुजुर्ग हैं, जिन्हें खाने के लिए दो वक्त की रोटी भी नहीं मिलती है। उनके पास रहने के लिए घर भी नहीं होता। वे सड़क के किनारे पड़े रहते हैं। उनके पास पहनने के लिए ठीक से वस्त्र भी नहीं होते हैं। ऐसे बुजुर्गों में से कइयों को उनके बच्चों ने घर से निकाल दिया होता है। ऐसी स्थिति में कोई चारा न पाकर वे भीख माँगकर या अमीरों के समारोह में भोजन के पश्चात फेंकी गई जूठी पत्तलों से बचा हुआ अन्न खाकर अपना पेट भरने का प्रयास करते हैं। पेट भरने के लिए उन्हें ऐसे पतित व निकृष्ट कर्म से घृणा नहीं आती।

## प्रश्न १० (औ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

### कृति औ (१) : आकलन कृति

**(१) किसने, किससे कहा?**

**(i) ''आज मेरे बेटे का तिलक था''**

**उत्तर:** रूपा ने ईश्वर से कहा।

**(ii) ''भोजन कर लो।''**

**उत्तर:** रूपा ने काकी से कहा।

**(२) निम्नलिखित विधान सत्य है या असत्य लिखिए।**

**(i) खाना खाते समय काकी के हृदय से सदिच्छाएँ निकल रही थीं।**

**(ii) रूपा को अपने किए पर पछतावा नहीं हुआ।**

**उत्तर:** (i) सत्य (ii) असत्य

**(३) कारण लिखिए।**

**(i) रूपा ने अपने आपको निर्दयी कहा।**

**उत्तर:** जिस काकी की संपत्ति से उसे सब कुछ मिला था, उसकी दुर्गति का कारण वह बनी थी। इसलिए रूपा ने अपने आपको निर्दयी कहा।

**(ii) रूपा ने काकी से ईश्वर की प्रार्थना करने के लिए कहा।**

**उत्तर:** रूपा ने काकी के साथ अधर्म और तिरस्कार व्यवहार किया था। इसलिए वह डर रही थी कि ईश्वर उसके इस अपराध को क्षमा न करें।

*गद्यांश: १० पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ९४*

रूपा को अपनी स्वार्थपरता और अन्याय इस प्रकार प्रत्यक्ष रूप में कभी न दीख पड़े थे। वह सोचने लगी- 'हाय! कितनी निर्दयी हूँ। जिसकी संपत्ति से मुझे दो सौ रुपया वार्षिक आय हो रही है, उसकी यह दुर्गति! और मेरे कारण! हे दयामय भगवान! मुझसे बड़ी भारी चूक हुई है, मुझे क्षमा करो! आज मेरे बेटे का तिलक था। सैकड़ों मनुष्यों ने भोजन किया। मैं उनके इशारों की दासी बनी रही। अपने नाम के लिए सैकड़ों रुपये व्यय कर दिए परंतु जिसकी बदौलत हजारों रुपये खाए, उसे इस उत्सव में भी भरपेट भोजन न दे सकी। केवल इसी कारण कि, वह वृद्धा असहाय है।'

रूपा ने दीया जलाया, अपने भंडार का द्वार खोला और एक थाली में संपूर्ण सामग्रियाँ सजाकर बूढ़ी काकी की ओर चली।

रूपा ने कंठावरुद्ध स्वर में कहा- "काकी उठो, भोजन कर लो। मुझसे आज बड़ी भूल हुई उसका बुरा न मानना। परमात्मा से प्रार्थना कर दो कि वह मेरा अपराध क्षमा कर दें।"

भोले-भाले बच्चों की भाँति, जो मिठाइयाँ पाकर मार और तिरस्कार सब भूल जाता है, बूढ़ी काकी वैसे ही सब भूलकर बैठी हुई खाना खा रही थीं। उनके एक-एक रोएँ से सच्ची सदिच्छाएँ निकल रही थीं और रूपा बैठी इस स्वर्गीय दृश्य का आनंद लेने में निमग्न थी।

### कृति औ (२) : स्वमत अभिव्यक्ति

**(१) 'व्यक्ति को अपनी गलती का पश्चात्ताप होना सबसे बड़ी बात होती है।' इस कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:** गलती प्रत्येक व्यक्ति से होती है। दुनिया में ऐसा कोई नहीं है कि जिससे गलती न हो। गलती करने के बाद यदि इंसान को अपने किए पर पश्चात्ताप हो तो निश्चित रूप से उसका हृदय परिवर्तन हो जाता है। ऐसा व्यक्ति फिर अपने जीवन में दोबारा गलती करने की सोचता नहीं है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो कई बार गलती कर लेते हैं फिर भी उन्हें अपनी गलती का एहसास नहीं होता। ऐसे लोग सचमुच निर्दयी होते हैं। लेकिन जिन्हें एहसास होता है, वे आत्मग्लानि से भर जाते हैं। उनके हृदय में संवेदनशीलता एवं पर दुख कातरता निर्माण हो जाती है और वे मानवीय मूल्यों की राह पर चलना शुरू कर देते हैं। इसलिए कहा गया है कि व्यक्ति को एक बार अपनी गलती का एहसास होना सबसे बड़ी बात होती है।

## स्वाध्याय विषयक कृतियाँ

***(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**उत्तर:**

| स्वभाव के आधार पर पात्र का नाम | | |
|---|---|---|
| (i) | क्रोधी | रूपा |
| (ii) | लालची | बुद्धिराम |
| (iii) | शरारती | लाड़ली |
| (iv) | स्नेहिल | बूढ़ी काकी |

***(२) कृति पूर्ण कीजिए:**

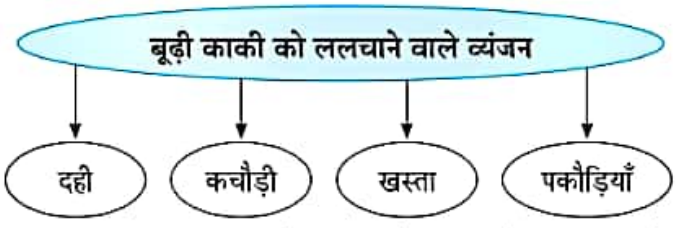


***(३) बुद्धिराम का काकी के प्रति दुर्व्यवहार दर्शाने वाली चार बातें।**

**उत्तर:** (i) बूढ़ी काकी का कोठरी में शोकमय होकर बैठना।

(ii) रूपा का भय।

(iii) काकी को अँधेरी कोठरी में पटकना।

(iv) काकी के साथ अन्याय व तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करना।

***(४) कारण लिखिए।**

**(i) बूढ़ी काकी ने भतीजे के नाम सारी संपत्ति लिख दी।**

**उत्तर:** क्योंकि भतीजे बुद्धिराम के सिवाय बूढ़ी काकी का कोई नहीं था।

**(ii) बुद्धिराम ने काकी को अँधेरी कोठरी में धम से पटक दिया।**

**उत्तर:** बूढ़ी काकी के मेहमान मंडली में जाकर बैठने से क्रोधित होकर बुद्धिराम ने काकी को अंधेरी कोठरी में धम से पटक दिया।

***(५) चौखट में दी सूचना के अनुसार शब्द में परिवर्तन कीजिए।**

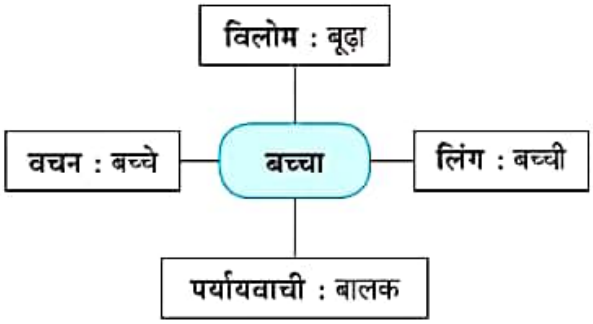


## भाषा बिंदु

***(१) निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए।**

| अ.क्र | मूल क्रिया | प्रथम प्रेरणार्थक रूप | द्वितीय प्रेरणार्थक रूप |
|---|---|---|---|
| (i) | भुलना | भुलाना | भुलवाना |
| (ii) | पीसना | पिसाना | पिसवाना |
| (iii) | माँगना | मँगाना | मँगवाना |
| (iv) | तोड़ना | तुड़ाना | तुड़वाना |
| (v) | बेचना | बेचाना | बेचवाना |
| (vi) | कहना | कहाना | कहवाना |
| (vii) | नहाना | नहलाना | नहलवाना |
| (viii) | खेलना | खिलाना | खिलवाना |
| (ix) | खाना | खिलाना | खिलवाना |
| (x) | फैलना | फैलाना | फैलवाना |
| (xi) | बैठना | बिठाना | बिठवाना |
| (xii) | लिखना | लिखाना | लिखवाना |
| (xiii) | जुटना | जुटाना | जुटवाना |
| (xiv) | दौड़ना | दौड़ाना | दौड़वाना |
| (xv) | देखना | दिखाना | दिखवाना |
| (xvi) | जीना | जिलाना | जिलवाना |

***(२) पठित पाठों से किन्हीं दस मूल क्रियाओं का चयन करके उनके प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रुप निम्नतालिका में लिखिए।**

| अ.क्र | मूल क्रिया | प्रथम प्रेरणार्थक रूप | द्वितीय प्रेरणार्थक रूप |
|---|---|---|---|
| (i) | पड़ना | पड़ाना | पड़वाना |
| (ii) | कुढ़ना | कुढ़ाना | कुढ़वाना |
| (iii) | करना | कराना | करवाना |
| (iv) | चुकना | चुकाना | चुकवाना |
| (v) | पकड़ना | पकड़ाना | पकड़वाना |
| (vi) | सुनना | सुनाना | सुनवाना |
| (vii) | निकलना | निकालना | निकलवाना |
| (viii) | देना | दिलाना | दिलवाना |
| (ix) | चाटना | चटाना | चटवाना |
| (x) | बोलना | बुलाना | बुलवाना |

## उपयोजित लेखन

***(१) 'मेरा प्रिय वैज्ञानिक' विषय पर निबंध लेखन कीजिए।**

**उत्तर:**

### मेरा प्रिय वैज्ञानिक

"भारत माँ का अमर सपूत,
माँ का मान बढ़ाने आया।
परमाणु के शांतिपूर्ण उपयोग में,
अपना हाथ बढ़ाने आया।"

हमारे देश में कई महान वैज्ञानिकों ने जन्म लिया। जिन्होंने अपने कार्य से भारत देश को उन्नति के शिखर तक पहुँचाया। मैं जिनके कार्यों से अत्यंत प्रभावित हूँ, वे हैं - डॉ. होमी जहाँगीर भाभा। ये मेरे प्रिय वैज्ञानिक हैं।

जब पूरा विश्व सभी क्षेत्रो में प्रगति कर रहा था, परमाणु-ऊर्जा जब एक चर्चा का विषय था, उस समय भारत इस क्षेत्र में कहीं भी नहीं था। लेकिन तभी भारत माता के इस अमर सपूत ने अपने परमाणु उर्जा के ज्ञान की चकाचौंध से दुनिया को चकित कर दिया। आज भारत ने परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में जो कुछ किया, हमारे देश में जितने भी परमाणु - शक्ति स्टेशन हैं, वहा डॉ. भाभा के सफल प्रयासों की वजह से हैं। हमारे देश में परमाणु-ऊर्जा कार्य की शुरुआत १९४५ में डॉ. भाभा ने ही की थी। वे ही 'भारतीय परमाणु ऊर्जा कमिशन' के प्रथ सभापति थे। डॉ. भाभा का जन्म ३० अक्टूबर, १९०९ को मुंबई में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा भी मुंबई में हुई। स्नातक होने के बाद वे उच्च शिक्षा के लिए कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय गए।

अपनी पढ़ाई के दौरान उन्हें बहुत से वजीफे और मैडल

प्राप्त हुए। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में उन्होंने फर्मी और पौली जैसे वैज्ञानिकों के साथ काम किया। १९३७ में भाभा ने कॉस्मिक किरणों के क्षेत्र में वॉल्टर हिटलर के साथ काम किया। अपने इस कार्य के लिए उन्हें बहुत प्रसिद्धि मिली। १९४० में वे भारत लौट आए। १९४५ में डॉ. भाभा ने टाटा अनुसंधान संस्थान की स्थापना की। एक कुशल वैज्ञानिक होने के साथ डॉ. भाभा एक कुशल शासक भी थे। उनके कुशल नेतृत्व में भारतीय वैज्ञानिक परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में तेजी से प्रगति करने लगे। उनके इन्हीं प्रयत्नों के फलस्वरूप, १९४५ में एशिया का पहला परमाणु रिएक्टर मुंबई के निकट ट्रॉम्बे में स्थापित किया गया।

१९५५ में जेनेवा में हुए संयुक्त राष्ट्र की परमाणु के शांतिपूर्ण उपयोग के लिए हुई सभा का प्रतिनिधित्व भी डॉ. भाभा ने किया। डॉ. भाभा ही पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने परमाणु बम पर रोक लगाने की पहल की थी। डॉ. भाभा अपनी योग्यता के बल पर ही पहले प्रधानमंत्री पंडित नेहरू और दूसरे प्रधानमंत्री श्री लालबहादूर शास्त्री के वैज्ञानिक सलाहकार थे। डॉ. भाभा के संरक्षण में पहला परमाणु शक्ति स्टेशन तारापुर नगर में बनाया गया। १८ मई, १९६४ को भारत का पहला न्युक्लियर संयंत्र पोखरन (राजस्थान) में डॉ. भाभा के अनुसंधान कार्य के फलस्वरूप स्थापित किया गया।

कुल मिलाकर डॉ. भाभा की वैज्ञानिक सफलताएँ गिनी नहीं जा सकती। ये महान वैज्ञानिक २५ जनवरी, १९६६ में एक वायु दुर्घटना की वजह से स्वर्गवासी हो गए। डॉ. भाभा के सम्मान में ट्रॉम्बे में स्थित परमाणु ऊर्जा संस्थान का नाम 'भाभा परमाणु अनुसंधान' कर दिया गया। डॉ. भाभा एक अच्चे कलाकार भी थे। उन्हें साहित्य और कला में विशेष रुचि थी। उनका जीवन अत्यंत सीधा और सरल था। वे एक अच्छे वक्ता और मधुरभाषी थे। अपने इन महान उपलब्धियों और गुणों की वजह से न सिर्फ वे भारत के बल्कि पूरी दुनिया के चहेते थे। इस महान वैज्ञानिक की जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम है।

**''विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे वह,**
**नाम था - होमी जहाँगीर भाभा।**
**अपने ज्ञान के बल पर जिसने,**
**जीत लिया था दिल दुनिया का।''**

❖❖❖

# ११ समता की ओर

*- मुकुटधर पांडेय (१८९५ - १९८९)*

## कवि-परिचय

**जीवन-परिचय** : आपका जन्म १८९५ में छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई। पंडित रविशंकर विश्वविद्यालय से इन्हें डी. लिट. की उपाधि प्राप्त हुई। इन्हें भारत सरकार ने १९७६ में 'पद्म श्री' से सम्मानित किया। पंडितजी छायावाद के समर्थक थे। इसलिए इनकी रचनाओं में मानवीकरण, आध्यात्मिकता और गीतात्मकता के तत्त्व दिखाई देते हैं। छायावाद के नामकरण का श्रेय इन्हें ही जाता है।

**प्रमुख कृतियाँ** : 'पूजाफूल', 'शैलबाला' **(कविता संग्रह)**, 'लच्छमा' **(अनूदित उपन्यास)**, 'परिश्रम' **(निबंध)**, 'हृदयदान', 'मामा', 'स्मृतिपंज' आदि।

## पद्य-परिचय

**छायावादी काव्य:** छायावादी काव्य सामान्य रूप से स्वच्छंद कल्पना वैभव की वह स्वच्छंद प्रवृत्ति हैं, जो देश-कालगत वैशिष्ट्यों के साथ संसार की सभी जातियों के विभिन्न उत्थानशील युगों की आशा-आकांक्षा में निरंतर व्यक्त होती है।

**प्रस्तावना** : 'समता की ओर' इस कविता में कवि मुकुटधर पांडेय जी ने बताया है कि शिशिर ऋतु में पड़ने वाली अत्यधिक ठंड के कारण अभावग्रस्त व्यक्तियों का जीवन दुख-दर्द से भर जाता है। धनिक लोगों पर शिशिर ऋतु में पड़ने वाली अत्यधिक ठंड का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। वे अपने ही मस्ती में जीवनयापन करते रहते हैं। प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने अमीरी-गरीबी के भेदभाव को मिटाकर समाज में समता स्थापित करने पर बल दिया है।

## सारांश

प्रस्तुत कविता छायावादी कविता का एक अंश है। इस कविता के माध्यम से कवि ने एक उत्थानशील युग निर्माण की आशा की है। कवि चाहता है कि समाज में समता स्थापित हो जाए। पहले हमारे समाज में समानता थी। किसी को भी किसी चीज की कमी नहीं थी। लेकिन आज हमारे समाज की दशा बहुत ही खराब है। चारों ओर असमानता दिखाई दे रही है। अमीरी-गरीबी का भेदभाव दिखाई दे रहा है। शिशिर ऋतु में पड़ने वाली अत्यधिक ठंड के माध्यम से कवि ने समाज के अमीर व गरीब वर्ग पर प्रकाश डाला है। अमीर वर्ग पर शिशिर ऋतु की ठंड का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता; लेकिन गरीब वर्ग अत्यधिक ठंड से ठिठुरता है। कवि का संवेदनशील मन गरीबों की भलाई के बारे में सोचता है और उनके उद्धार हेतु आगे आने की प्रेरणा देता है।

## शब्दार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| कुंझटिका | - कुहरा | शून्य | - खाली |
| तुषार | - पाला, हवा में मिली हुई भाप जो जमकर श्वेत हिम कणों के रूप में दिखाई देती है। | लख | - देखकर |
| | | निपट | - एकदम |
| | | पौ-बारे | - लाभ ही लाभ |
| पद्मदल | - कमल दल | कंपित बदन | - ठिठुरता शरीर |
| ताल | - तालाब | द्युतिहीन | - तेजहीन |
| नृप | - राजा | स्यार | - गीदड़, सियार |
| निशा काल | - रात्रि प्रहर | पांडुवर्ण | - पीला रंग |
| श्वान | - कुत्ता | पाला | - बर्फ, हिम |

**भावार्थ**

- **बीत गया हेमंत भ्रात ..... कुंझटिका है छाई।**

ऋतुएँ आती-जाती रहती हैं। हेमंत के चले जाने के बाद शिशिर ऋतु आती है। इस ऋतु में अत्यधिक ठंड पड़ती है। इस ऋतु में प्रकृति तेजहीन हो जाती है। अत्यधिक ठंड से पेड़-पौधे भी ठिठुरने लगते हैं। पेड़ के पत्ते शाखा से अलग होकर टूटने लगते हैं। धरती पर कोहरा छा जाता है।

- **पड़ता खूब ..... लोग दुख पाते।**

शिशिर ऋतु में अत्यधिक ठंड के कारण रात के समय तुषार गिरते हैं। इस कारण तालाब में खिले हुए कमल के फूल तड़पने लगते हैं। वे भी ठंड को उसी प्रकार सह नहीं पाते; जिस प्रकार अन्यायी राजा के दंडों को प्रजा नहीं सह पाती।

- **निशा काल ..... रोते हैं।**

शिशिर ऋतु में पड़ने वाली अत्यधिक ठंड का प्रभाव जिस प्रकार मनुष्यों पर पड़ता है; उसी प्रकार अन्य प्राणियों पर भी पड़ता है। लोग तो ठंड से बचने के लिए रात के समय अपने-अपने घरों में जाकर सो जाते हैं। लेकिन दूसरे प्राणियों का हाल बुरा होता है। कुत्ता व सियार जैसे जानवर अत्यधिक ठंड से ठिठुरने लगते हैं और अपना दुख व्यक्त करते हुए बार-बार चिल्लाकर रोते हैं।

- **अर्द्धरात्रि को ..... भय पाता।**

शिशिर ऋतु में आधी रात के समय यदि कोई घर से बाहर आँगन में आ जाए, तो उसे आसमान में तारे दिखाई नहीं देते। मानो, तारे भी अत्यधिक ठंड से आसमान में नहीं आते हैं। इसलिए शून्य आसमान को देखकर लोगों के मन में भय उत्पन्न होता है।

- **तारे निपट ..... कुछ आया।**

अत्यधिक ठंड के कारण आसमान में तारे दिखाई नहीं दे रहे हैं; मानो उन्होंने मलिन (चमकहीन) अवस्था प्राप्त कर ली है। आसमान में उदित चंद्र ने भी पीला-सफेद वर्ण धारण कर लिया है। चंद्र व तारों की इस अवस्था को देखकर कवि कल्पना करता है कि मानो किसी राज्य पर किसी प्रकार का राष्ट्रीय संकट आ गया हो।

- **धनियों को है ..... शिशिर दुख सारे।**

शिशिर ऋतु में पड़ने वाली अत्यधिक ठंड का प्रभाव धनिकों पर नहीं पड़ता है क्योंकि वे साधन संपन्न है। वे दिन-रात मौज कर रहे हैं। उनके तो लाभ ही लाभ हैं। लेकिन अभावग्रस्त लोगों का जीवन बहुत ही तकलीफों से भरा हुआ है। अत्यधिक ठंड से उनका जीवन बहुत ही पीड़ादायक हो गया है। शिशिर ऋतु में पड़ने वाली अत्यधिक ठंड से वे बेहाल और बदहाल हो गए हैं।

- **वे खाते हैं ..... और न भाजी।**

धनिक लोग हलुवा-पूड़ी और ताजी दूध-मलाई खाते हैं लेकिन दीन-दुखियों को खाने के लिए सूखी रोटी-सब्जी व भाजी भी नसीब नहीं होती। अर्थात उनके जीवन में घोर दरिद्रता और अभावग्रस्तता है।

- **वे सुख से ..... नित पाले।**

शिशिर ऋतु में पड़ने वाली अत्यधिक ठंड से बचने के लिए धनिक लोग रंगीन व कीमती शाल-दुशाले शरीर पर ओढ़ लेते हैं। इसके विपरीत दीन-दुखी लोगों के काँपते शरीर पर बर्फ ही गिरती रहती है। यानी उनका शरीर ठंड में ठिठुरता है और उसे ढँकने के लिए उनके पास शाल-दुशाले नहीं होते। गरीबी की चोट से वे हर पल आहत होते हैं।

- **वे हैं सुख ..... सदा उदासी।**

धनिक लोग सुख साधन से समृद्ध हैं। वे बहुत ही बड़े व अच्छे घरों में निवास करते हैं। इसके विपरीत दीन-दुखी लोगों की स्थिति अत्यंत दयनीय हैं। उनके टूटे-फूटे घरों में हमेशा उदासी छाई हुई रहती है। उनके पास दुख के अलावा कुछ भी नहीं होता।

- **पहले हमें ..... करती जाती।**

पुराने जमाने में हमारे समाज में अमीरी-गरीबी का भेदभाव नहीं था। चारों ओर समता ही समता थी। सभी को खाने के लिए चीजें आसानी से मिल जाती थीं। किसी को किसी भी प्रकार की चिंता नहीं सताती थी। प्रकृति माता के समान सभी का एक-समान पालन-पोषण करती थी।

• हमको भाई का ..... नहीं क्या होगा।

समाज में अमीर भाइयों को गरीब भाइयों की भलाई के बारे में अवश्य विचार करना चाहिए। अमीरों को गरीबों पर उपकार करना चाहिए और उन्हें अभावग्रस्त जीवन से बाहर निकालना चाहिए। आखिर, एक भाई को दूसरे भाई की भलाई के विषय में अवश्य सोचना चाहिए। समाज से अमीरी-गरीबी का भेदभाव दूर करके पुन: समता प्रस्थापित करनी चाहिए। आपसी सहृदयता व बंधुता द्वारा समाज कल्याण करना चाहिए।

## MASTER KEY QUESTION SET - 11

**प्रश्न १ (अ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति अ (१): आकलन कृति**

**(१) इस अर्थ में आए शब्द लिखिए।**

| क्र | अर्थ | शब्द |
|---|---|---|
| (१) | तेजहीन | द्युतिहीन |
| (२) | मौसम | ऋतु |
| (३) | पाला | तुषार |
| (४) | सियार | स्यार |

***(२) कृति पूर्ण कीजिए।**

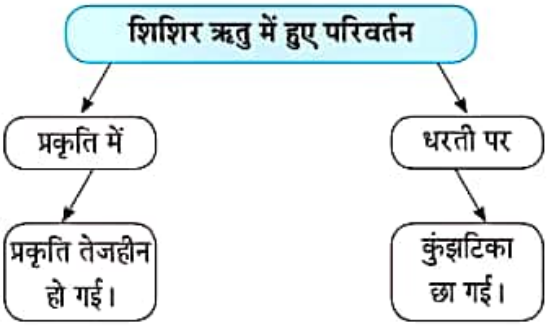


**(३) उत्तर लिखिए।**

**(i) इससे की है शिशिर ऋतु की तुलना -**

उत्तर: अन्यायी राजा के साथ।

**(ii) इसके कारण लोग दुख भोगते हैं -**

उत्तर: अन्यायी राजा के दंडों के कारण।

*पद्यांश : १ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ९७*

बीत गया हेमंत भ्रात, शिशिर ऋतु आई!
प्रकृति हुई द्युतिहीन, अवनि में कुंझटिका है छाई।

पड़ता खूब तुषार पद्मदल तालों में बिलखाते,
अन्यायी नृप के दंडों से यथा लोग दुख पाते।

निशा काल में लोग घरों में निज-निज जा सोते हैं,
बाहर श्वान, स्यार चिल्लाकर बार-बार रोते हैं।

**कृति अ (२): आकलन कृति**

**(१) समझकर लिखिए।**

**(i)**

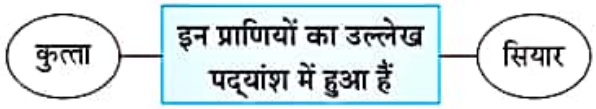


**(ii)**

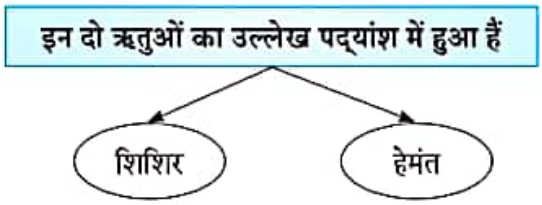


**(२) उचित कारण लिखकर वाक्य पूर्ण कीजिए।**

**(i) पदमदल तालों में बिलखाते हैं।**

उत्तर: क्योंकि अत्यधिक ठंड के कारण उन पर तुषार पड़ रहे हैं।

**(ii) श्वान और स्यार चिल्ला रहे हैं।**

उत्तर: क्योंकि शिशिर ऋतु में पड़ने वाली अत्यधिक ठंड को वे सह नहीं पा रहे हैं।

**कृति अ (३): निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।**

**(१) बीत गया हेमंत भ्रात ..... कुंझटिका है छाई।**

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ 'समता की ओर' इस कविता से ली गई हैं। इस कविता के कवि मुकुटधर पांडेय हैं। प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने अमीरी-गरीबी के भेदभाव को मिटाकर समाज में समता प्रस्थापित होनी चाहिए, इस पर बल दिया है।

ऋतु आते-जाते रहती हैं। हेमंत के चले जाने के बाद शिशिर ऋतु आती है। इस ऋतु में अत्यधिक ठंड पड़ती है। इस ऋतु में प्रकृति तेजहीन हो जाती है। अत्यधिक ठंड से पेड़-पौधे भी ठिठुरने लगते हैं। पेड़ के पत्ते शाखा से अलग होकर टूटने लगते हैं। धरती पर कुंझटिका छा जाती है।

**(२) पड़ता खूब ..... लोग दुख पाते।**

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ 'समता की ओर' इस कविता से ली गई हैं। इस कविता के कवि मुकुटधर पांडेय हैं। प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने अमीरी-गरीबी के भेदभाव को मिटाकर समाज में समता प्रस्थापित होनी चाहिए, इस पर बल दिया है।

शिशिर ऋतु में अत्यधिक ठंड के कारण रात के समय तुषार गिरते हैं। इस कारण तालाब में खिले हुए कमल के फूल बिलखने लगते हैं। वे भी ठंड को उसी प्रकार सह नहीं पाते; जिस प्रकार अन्यायी राजा के दंडों को प्रजा सह नहीं पाती।

**(३) निशा काल ..... रोते हैं।**

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ 'समता की ओर' इस कविता से ली गई हैं। इस कविता के कवि मुकुटधर पांडेय हैं। प्रस्तुत कविता के माध्यम

से कवि ने अमीरी-गरीबी के भेदभाव को मिटाकर समाज में समता प्रस्थापित करने पर बल दिया है।

शिशिर ऋतु में पड़ने वाली अत्यधिक ठंड का प्रभाव जिस प्रकार मनुष्यों पर पड़ता है; उसी प्रकार अन्य प्राणियों पर भी पड़ता है। लोग तो ठंड से बचने के लिए रात के समय अपने-अपने घरों में जाकर सो जाते हैं। लेकिन दूसरे प्राणियों का हाल बुरा होता है। कुत्ता व सियार जैसे जानवर अत्यधिक ठंड से ठिठुरने लगते हैं और अपना दुख व्यक्त करते हुए बार-बार चिल्लाकर रोते हैं।

**प्रश्न २ (आ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति आ (१) : आकलन कृति**

**(१) उचित जोड़ियाँ लगाइए।**

| 'अ' | 'ब' |
|---|---|
| (i) शून्य गगन मंडल | (क) धनिक |
| (ii) राष्ट्रीय कष्ट | (ख) चाँद |
| (iii) पांडुवर्ण | (ग) राज्य |
| (iv) मौज | (घ) अर्द्धरात्रि |

उत्तर: (i - घ), (ii - ग), (iii - ख), (iv - क)

***(२) अंतर स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर:

| धनी | दीन-दरिद्र |
|---|---|
| (१) धनी लोग दिन-रात मौज कर रहे हैं। | (१) दीन-दरिद्र के माथे पर शिशिर ऋतु में पड़ने वाली अत्यधिक ठंड का दुख है। |
| (२) इनके लाभ ही लाभ हैं। | (२) ये अभावग्रस्त हैं। |
| (३) इनके पास ठंड से बचने के लिए साधन है। ये साधन संपन्न हैं। | (३) इनके पास ठंड से बचने के लिए साधन नहीं है। |

*पद्यांश २ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. १७*

अर्द्धरात्रि को घर से कोई जो आँगन को आता,
शून्य गगन मंडल को लख यह मन में है भय पाता।

तारे निपट मलीन चंद ने पांडुवर्ण है पाया,
मानों किसी राज्य पर है, राष्ट्रीय कष्ट कुछ आया।

धनियों को है मौज रात-दिन हैं उनके पौ-बारे,
दीन दरिद्रों के मत्थे ही पड़े शिशिर दुख सारे।

**कृति आ (२) : आकलन कृति**

**(१) निम्नलिखित कथन सत्य है या असत्य लिखिए।**

**(i) शिशिर ऋतु में दिन में आसमान में तारे दिखाई देते हैं।**

**(ii) शून्य गगन मंडल देखकर लोगों के मन में भय उत्पन्न हो जाता है।**

उत्तर: (i) असत्य (ii) सत्य

**(२) इस अर्थ में आए शब्द लिखिए।**

उत्तर:

| | शब्द | नए शब्द |
|---|---|---|
| (१) | गरीब | दीन या दरिद्र |
| (२) | एकदम | निपट |
| (३) | अमीर | धनी |
| (४) | देखकर | लख |

**कृति आ (३) : निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।**

**(१) अर्द्धरात्रि को ..... भय पाता।**

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ 'समता की ओर' इस कविता से ली गई हैं। इस कविता के कवि मुकुटधर पांडेय हैं। प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने अमीरी-गरीबी के भेदभाव को मिटाकर समाज में समता प्रस्थापित करने पर बल दिया है।

शिशिर ऋतु में आधी रात के समय यदि कोई घर से बाहर आँगन में आ जाए, तो उसे आसमान में तारे दिखाई नहीं देते। मानो, तारे भी अत्यधिक ठंड से आसमान में नहीं आते हैं। इसलिए शून्य आसमान को देखकर लोगों के मन में भय उत्पन्न होता है।

**(२) तारे निपट ..... कुछ आया।**

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ 'समता की ओर' इस कविता से ली गई हैं। इस कविता के कवि मुकुटधर पांडेय हैं। प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने अमीरी-गरीबी के भेदभाव को मिटाकर समाज में समता प्रस्थापित करने पर बल दिया है।

अत्यधिक ठंड के कारण आसमान में तारे दिखाई नहीं दे रहे हैं; मानो उन्होंने मलिन (चमकहीन) अवस्था प्राप्त कर ली है। आसमान में उदित चंद्र ने भी पीला-सफेद वर्ण धारण कर लिया है। चंद्र व तारों की इस अवस्था को देखकर कवि कल्पना करता है कि मानो किसी राज्य पर किसी प्रकार का राष्ट्रीय संकट आ गया हो।

**(३) धनियों को है ..... शिशिर दुख सारे।**

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ 'समता की ओर' इस कविता से ली गई हैं। इस कविता के कवि मुकुटधर पांडेय हैं। प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने अमीरी-गरीबी के भेदभाव को मिटाकर समाज में समता प्रस्थापित करने पर बल दिया है।

शिशिर ऋतु में पड़ने वाली अत्यधिक ठंड का प्रभाव धनिकों पर नहीं पड़ता है क्योंकि वे साधन संपन्न है। वे दिन-रात मौज कर रहे है। उनके तो लाभ ही लाभ हैं। लेकिन अभावग्रस्त लोगों का जीवन बहुत ही तकलीफों से भरा हुआ है। अत्यधिक ठंड से उनका जीवन बहुत ही पीड़ादायक हो गया है। शिशिर ऋतु में पड़ने वाली अत्यधिक ठंड से वे बेहाल और बदहाल हो गए हैं।

**प्रश्न ३ (इ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति इ (१): आकलन कृति**

**(१) संजाल पूर्ण कीजिए।**

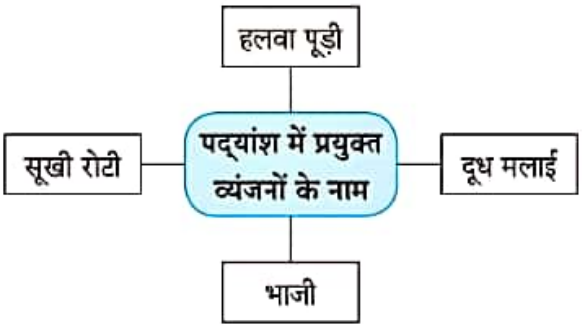


**(२) निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों -**

**(i) पाले (ii) उदासी**

**उत्तर:** (i) दीन-गरीबों के शरीर पर क्या गिरते हैं?

(ii) दीन-गरीबों के टूटे-फूटे घर में क्या छाई रहती है?

*पद्यांश ३ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. १७*

वे खाते हैं हलुवा-पूड़ी, दूध-मलाई ताजी,
इन्हें नहीं मिलती पर सूखी रोटी और न भाजी।

वे सुख से रंगीन कीमती ओढ़ें शाल-दुशाले,
पर इनके कंपित बदनों पर गिरते हैं नित पाले।

वे हैं सुख साधन से पूरित सुघर घरों के वासी,
इनके टूटे-फूटे घर में छाई सदा उदासी।

**कृति इ (२): आकलन कृति**

***(१) अंतर स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर:**

| धनी | दीन-दरिद्र |
|---|---|
| (१) धनी लोग हलुवा-पूड़ी व दूध-मलाई खाते हैं। | (१) दीन दरिद्र ठंड में ठिठुरते रहते हैं। |
| (२) ये ठंड से बचने के लिए शरीर पर रंगीन-कीमती शाल-दुशाले ओढ़ते हैं। | (२) इनके पास ऊनी कपड़े नहीं होते हैं। इनके शरीर पर पाले गिरते रहते हैं। |
| (३) ये सुख साधन से पूर्ण होते हैं। ये बड़े विशाल घरों में रहते हैं। | (३) ये टूटे-फूटे घर में रहते हैं। इनके घर में सदा उदासी छाई रहती है। |

**(२) समझकर लिखिए।**

**(i) शाल-दुशाले ऐसी हैं -**

**(ii) ठंड में दीन-दरिद्रों का बदन ऐसा रहता है -**

**उत्तर:** (i) रंगीन व कीमती (ii) कंपित

**कृति इ (३): निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।**

**(१) वे खाते हैं ..... और न भाजी।**

**उत्तर:** प्रस्तुत पंक्तियाँ 'समता की ओर' इस कविता से ली गई हैं। इस कविता के कवि मुकुटधर पांडेय हैं। प्रस्तुत कविता के द्वारा कवि ने अमीरी-गरीबी के भेदभाव को मिटाकर समाज में समता प्रस्थापित करने पर बल दिया है।

धनिक लोग हलुवा-पूड़ी और ताजी दूध-मलाई खाते हैं लेकिन दीन-दुखियों को खाने के लिए सूखी रोटी व भाजी भी नसीब नहीं होती। अर्थात उनके जीवन में घोर दरिद्रता और अभावग्रस्तता है।

**(२) वे सुख से ..... नीत पाले।**

**उत्तर:** प्रस्तुत पंक्तियाँ 'समता की ओर' इस कविता से ली गई हैं। इस कविता के कवि मुकुटधर पांडेय हैं। प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने अमीरी-गरीबी के भेदभाव को मिटाकर समाज में समता प्रस्थापित करने पर बल दिया है।

शिशिर ऋतु में पड़ने वाली अत्यधिक ठंड से बचने के लिए धनिक लोग रंगीन व कीमती शाल-दुशाले शरीर पर ओढ़ लेते हैं। इसके विपरीत दीन-दुखी लोगों के काँपते शरीर पर बर्फ ही गिरती रहती है। यानी उनका शरीर ठंड में ठिठुरता है और उसे ढँकने के लिए उनके पास शाल-दुशाले नहीं होते। गरीबी की चोट से वे हर पल आहत होते हैं।

**(३) वे हैं सुख ..... सदा उदासी।**

**उत्तर:** प्रस्तुत पंक्तियाँ 'समता की ओर' इस कविता से ली गई हैं। इस कविता के कवि मुकुटधर पांडेय हैं। प्रस्तुत कविता के द्वारा कवि ने अमीरी-गरीबी के भेदभाव को मिटाकर समाज में समता प्रस्थापित करने पर बल दिया है।

धनिक लोग सुख साधन से समृद्ध हैं। वे बहुत ही बड़े व अच्छे घरों में निवास करते हैं। इसके विपरीत दीन-दुखी लोगों की स्थिति अत्यंत दयनीय हैं। उनके टूटे-फूटे घरों में हमेशा उदासी छाई हुई रहती है। उनके पास दुख के अलावा कुछ भी नहीं होता।

**प्रश्न ४ (ई) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

**कृति ई (१): आकलन कृति**

**(२) इस अर्थ में आए शब्द लिखिए।**

**उत्तर:**

| | शब्द | नए शब्द |
|---|---|---|
| (१) | पेट | उदर |
| (२) | जननी | माता |
| (३) | कुदरत | प्रकृति |
| (४) | अहसान | उपकार |

(२) अंतर स्पष्ट कीजिए।

| पहला जमाना | आधुनिक जमाना |
|---|---|
| (१) पहले के जमाने में लोगों को पेट की चिंता नहीं सताती थी। | (१) आधुनिक जमाने में अमीर-गरीब का भेदभाव दिखाई देता है। |
| (२) सबको पेटभर खाने के लिए मिलता था। | (२) गरीबों के घर खाने के लाले पड़े हुए हैं। |
| (३) पहले चारों ओर समता का बोलबाला था। | (३) समाज में असमानता दिखाई देती है। |

*पद्यांश ४ - पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ९७*

पहले हमें उदर की चिंता थी न कदापि सताती,
माता सम थी प्रकृति हमारी पालन करती जाती।।

हमको भाई का करना उपकार नहीं क्या होगा,
भाई पर भाई का कुछ अधिकार नहीं क्या होगा।

**कृति ई (२) : आकलन कृति**

(१) समझकर लिखिए।

(i) पहले यह थी माता समान -

(ii) पहले नहीं इसकी चिंता -

उत्तर: (i) प्रकृति (ii) उदर की

(२) निम्नलिखित वाक्य पूर्ण कीजिए।

(i) पहले प्रकृति हमारा पालन करती थी क्योंकि .....

(ii) हमें एक-दूसरे पर उपकार करना है क्योंकि .....

उत्तर: (i) वह हमारी माता थी। (ii) हम आपस में भाई-भाई हैं।

*(३) 'हमको भाई का ..... नहीं क्या होगा।' इस पंक्तियों से मिलने वाला संदेश लिखिए।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि यह संदेश देते हैं कि एक भाई को दूसरे भाई की भलाई के बारे में अवश्य सोचना चाहिए। समाज से अमीरी-गरीबी का भेदभाव दूर होकर फिर से समता स्थापित होनी चाहिए। सभी के कल्याण हेतु प्रत्येक व्यक्ति को विश्व को बंधुत्व के भाव को अपनाना चाहिए।

**कृति ई (३) : निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।**

(१) पहले हमें ..... करती जाती।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ 'समता की ओर' इस कविता से ली गई हैं। इस कविता के कवि मुकुटधर पांडेय हैं। प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने अमीरी-गरीबी के भेदभाव को मिटाकर समाज में समता प्रस्थापित करने पर बल दिया है।

पुराने जमाने में हमारे समाज में अमीरी-गरीबी का भेदभाव नहीं था। चारों ओर समता ही समता थी। सभी को खाने के लिए चीजें आसानी से मिल जाती थीं। किसी को किसी भी प्रकार की चिंता नहीं सताती थी। प्रकृति माता के समान सभी का एक-समान पालन पोषन करती थी।

(२) हमको भाई का ..... नहीं क्या होगा।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ 'समता की ओर' इस कविता से ली गई हैं। इस कविता के कवि मुकुटधर पांडेय हैं। प्रस्तुत कविता के आधार पर कवि ने अमीरी-गरीबी के भेदभाव को मिटाकर समाज में समता प्रस्थापित करने पर बल दिया है।

समाज में अमीर भाइयों को गरीब भाइयों की भलाई के बारे में अवश्य विचार करना चाहिए। अमीरों को गरीबों पर उपकार करना चाहिए और उन्हें अभावग्रस्त जीवन से बाहर निकालना चाहिए। आखिर, एक भाई को दूसरे भाई की भलाई के बारे में जरूर सोचना चाहिए। समाज से अमीरी-गरीबी का भेदभाव दूर होकर फिर से समता प्रस्थापित करनी चाहिए। आपसी सहृदयता व बंधुता द्वारा समाज का कल्याण करना चाहिए।

## स्वाध्याय विषयक कृतियाँ

*(१) तालिका पुर्ण कीजिए।

उत्तर:

| ऋतुएँ | अंग्रेजी माह | हिंदी माह |
|---|---|---|
| १. वसंत | मार्च, अप्रैल | चैत्र, वैसाख |
| २. ग्रीष्म | मई, जून | जेष्ठ, आषाढ़ |
| ३. वर्षा | जुलाई, अगस्त | सावन, भाद्रपद |
| ४. शरद | सितंबर, अक्टूबर | आश्विन, कार्तिक |
| ५. हेमंत | नवंबर, दिसंबर | मार्गशीर्ष, पौष |
| ६. शिशिर | जनवरी, फरवरी | माघ, फाल्गुन |

## पद्य-विश्लेषण

*(३) निम्न मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए।

(i) कविता के कवि/रचनाकार का नाम

(ii) काव्य प्रकार

(iii) पसंदीदा पंक्ति

(iv) पसंदीदा होने का कारण

(v) कविता से प्राप्त संदेश

उत्तर: (i) **कविता के कवि/रचनाकार का नाम** : कवि मुकुटधर पांडेय

(ii) **काव्य प्रकार** : छायावादी काव्य

(iii) **पसंदीदा पंक्ति** : हमको भाई का ..... नहीं क्या होगा।

(iv) **पसंदीदा होने का कारण** : प्रस्तुत पंक्तियाँ समाज में अमीर भाइयों को गरीब भाइयों की भलाई के बारे में विचार करने के लिए प्रवृत्त करती है। इन पंक्तियों में समाज से अमीरी-गरीबी का भेदभाव दूर करके समता स्थापित करने की बात बताई गई है। इसलिए प्रस्तुत पंक्तियाँ मुझे बेहद पसंद हैं।

(v) **कविता से प्राप्त संदेश :** विश्व-बंधुत्व जैसी मानवीय भावना को अपनाकर एक-दूसरे के साथ बंधुत्व का व्यवहार करना।

## उपयोजित लेखन

*(१) 'विश्व बंधुता-वर्तमान युग की माँग' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लेखन कीजिए।

**उत्तर :**

**सर्वे भवन्तु सुखिनः,**
**सर्वे सन्तु निरामयाः।**
**सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,**
**मा कश्चित दुःखभाग्भवेत्।**

इसका अर्थ यह है, दुनिया में सब सुखी व निरोगी रहें; सब भद्र देखें व कोई भी दुखी न हो। दुनिया के सभी लोगों को एक-दूसरे की भलाई के बारे में सदैव सोचना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को भाईचारे की भावना अपनानी चाहिए। हमारी भारतीय संस्कृति इसी विश्व बंधुत्व का संदेश देती है। विश्व बंधुत्व का सही अर्थ है, सबको भाई समझने का भाव। समस्त संसार के विकास के लिए विश्व बंधुत्व जरूरी है।

आज मनुष्य विनाश के कगार पर खड़ा है उसे अपने स्वार्थों ने जकड़ लिया है। वह अपनी स्वार्थ की पूर्ति के लिए भयानक अस्त्रों-शस्त्रों के निर्माण की होड़ लगाए जा रहा है। मनुष्य विनाश के लिए अणुबम व परमाणु बम आदि बनाकर अपनी अपार शक्ति का परिचय दे रहा है। इससे अशांति एवं भयानक वातावरण निर्माण हो रहा है। इसलिए विश्व बंधुत्व वर्तमान युग की माँग है। बच्चों को विश्व-बंधुत्व की शिक्षा देकर ही महात्मा गांधी जी के सपनों को साकार किया जा सकता है। विश्व में शांति की स्थापना हेतु विश्व बंधुत्व की अत्यंत जरूरत है। आज चारों ओर अशांति एवं वैमनस्य का वातावरण दिखाई दे रहा है। सर्वत्र आराजकता फैली हुई है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र की सीमा पर आक्रमण करने के लिए तत्पर है। भारत पर आक्रमण करने के लिए ही कई देश तैयार हैं। वे सिर्फ अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह बहुत ही गलत बात है। इससे विश्व में अशांति फैलेगी। इसे रोकने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को विश्व बंधुत्व को अपनाना पड़ेगा। विश्व में शांति बनाए रखने के लिए इसकी बहुत जरूरत है।

विश्व बंधुत्व एक ऐसा मानवीय गुण है, जिसे अपनाने से सबका भला होगा। संस्कृत सुभाषित में कहा भी गया है:

**अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।**
**उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।**

❖❖❖

| समय : २ घंटे | नमूना अभ्यास प्रश्नपत्र-२ (दूसरी इकाई-पाठ १ से ११) | पूर्णांक : ४० |
|---|---|---|

## विभाग १ – गद्य

**प्रश्न १ (अ) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।** (८)

**कृति अ (१) : आकलन कृति** (२)

(१) आकृति पूर्ण कीजिए।

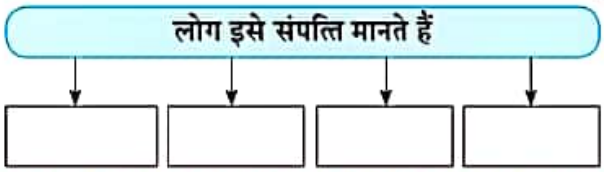


संपत्ति के स्वामित्व और उसके अधिकार की बात जानने के लिए यह समझना जरूरी है कि संपत्ति किसे कहते हैं और वह बनती कैसे है?

आमतौर से माना जाता है कि रुपया, नोट या सोना-चाँदी का सिक्का ही संपत्ति है, लेकिन यह ख्याल गलत है क्योंकि ये तो संपत्ति के माप-तौल के साधन मात्र हैं। संपत्ति तो वे ही चीजें हो सकती हैं जो किसी-न-किसी रूप में मनुष्य के उपयोग में आती हैं। उनमें से कुछ ऐसी हैं जिनके बिना मनुष्य जिंदा नहीं रह सकता एवं कुछ सुख-सुविधा और आराम के लिए होती हैं। अन्न, वस्त्र और मकान मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताएँ हैं, जिनके बिना उसकी गुजर-बसर नहीं हो सकती। इनके अलावा दूसरी अनेक चीजें हैं जिनके बिना मनुष्य रह सकता है।

**कृति अ (२) : आकलन कृति** (२)

(१) समझकर लिखिए।

(i) मनुष्य को जीवन जीने के लिए इनकी आवश्यकता होती है -

(ii) वास्तविक अर्थ में मनुष्य की संपत्ति यह है -

**कृति अ (३) : शब्द संपदा** (२)

(१) 'सु' उपसर्ग जोड़कर नया शब्द बनाइए।

(२) गद्यांश में प्रयुक्त शब्द-युग्म चुनकर लिखिए।

**कृति अ (४) : स्वमत अभिव्यक्ति** (२)

(१) 'वर्तमान युग का इंसान भौतिक संपत्ति का दास बन गया है।' कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए।

## विभाग २ – पद्य

**प्रश्न २ (अ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।** (६)

**कृति च (१): आकलन कृति** (२)

(१) आकृति पूर्ण कीजिए।

वे उद्‌भ्रांत होकर बोले,
यह बताओ तुम्हारे नोट कहाँ हैं ?
परीक्षा से एक महीने पहले करूँगा तैयार
वे गरजकर बोले हमारा मतलब आपकी मुद्रा से है
मैं लजकर बोला,
मुद्राएँ आप मेरे मुख पर देख लीजिए,
वे खड़े होकर कुछ सोचने लगे
फिर शयन कक्ष में घुस गए
और फटे हुए तकिये की रूई नोचने लगे
उन्होंने टूटी अलमारी को खोला
रसोई की खाली पीपियों को टटोला
बच्चों की गुल्लक तक देख डाली
पर सब में मिला एक ही तत्त्व खाली...
कनस्तरों को, मटकों को ढूँढ़ा सब में मिला शून्य-ब्रह्मांड
देखकर मेरे घर में ऐसा अरण्यकांड
उनका खिला हुआ चेहरा मुरझा गया
और उनके बीस सूची हृदय में
रौद्र की जगह करुण रस समा गया।

**कृति अ (२) : आकलन कृति** (२)

(१) निम्नलिखित शब्दों से ऐसे प्रश्न बनाए जिनके उत्तर दिए गए शब्द हों -

(i) अरण्यकांड (ii) शून्य-ब्रह्मांड

**कृति अ (३) : सरल भावार्थ**

(१) निम्नलिखित पंक्तियों का सरल शब्दों में भावार्थ लिखिए। (२)

वे उद्‌भ्रांत होकर ..... मुख पर देख लीजिए।

**प्रश्न २ (आ) निम्नलिखित दो पठित कविताओं में से किसी एक का पद्य-विश्लेषण नीचे दिए गए बिंदुओं के आधार पर कीजिए।** (६)

(१) बरषहिं जलद (२) अपनी गंध नहीं बेचूँगा

(i) रचना का नाम (ii) रचना का प्रकार (iii) पसंदीदा पंक्ति

(iv) पसंदीदा होने का कारण (v) रचना से प्राप्त संदेश

## विभाग ३ – पूरक पठन

**प्रश्न ३ (अ) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।** (४)

**कृति अ (१) : आकलन कृति** (२)

(१) संजाल पूर्ण कीजिए।

**काकी के लिए गद्यांश में प्रयुक्त विशेषण**

लाड़ली उनका अभिप्राय समझ न सकी। उसने काकी का हाथ पकड़ा और ले जाकर जूठे पत्तलों के पास बैठा दिया। दीन, क्षुधातुर, हतज्ञान बुढ़िया पत्तलों से पूड़ियों के टुकड़े चुन-चुनकर भक्षण करने लगी। ओह दही कितना स्वादिष्ट था, कचौड़ियाँ कितनी सलोनी, खस्ता कितना सुकोमल! काकी बुद्धिहीन होते हुए भी इतना जानती थीं कि मैं वह काम कर रही हूँ जो मुझे कदापि न करना चाहिए। मैं दूसरों की जूठी पत्तल चाट रही हूँ। परंतु बुढ़ापा तृष्णा रोग का अंतिम समय है जब संपूर्ण इच्छाएँ एक ही केंद्र पर आ लगती हैं। बूढ़ी काकी में यह केंद्र उनकी स्वादेंद्रियाँ थीं।

ठीक उसी समय रूपा की आँखें खुलीं। उसे मालूम हुआ कि लाड़ली मेरे पास नहीं है। वह चौंकी, चारपाई के इधर-उधर ताकने लगी कि कहीं नीचे तो नहीं गिर पड़ी। उसे वहाँ न पाकर वह उठी तो क्या देखती है कि लाड़ली जूठे पत्तलों के पास चुपचाप खड़ी है और बूढ़ी काकी पत्तलों पर से पूड़ियों के टुकड़े उठा-उठाकर खा रही हैं। रूपा का हृदय सन्न हो गया। परिवार का एक बुजुर्ग दूसरों की जूठी पत्तल टटोले, इससे अधिक शोकमय दृश्य असंभव था। पूड़ियों के कुछ ग्रासों के लिए उसकी चचेरी सास ऐसा पतित और निकृष्ट कर्म कर रही है। ऐसा प्रतीत होता मानो जमीन रुक गई, आसमान चक्कर खा रहा है। संसार पर कोई आपत्ति आने वाली है। रूपा को क्रोध न आया। शोक के सम्मुख क्रोध कहाँ? करुणा और भय से उसकी आँखें भर आईं! इस अधर्म के पाप का भागी कौन है? उसने सच्चे हृदय से गगन मंडल की ओर हाथ उठाकर कहा, "परमात्मा, मेरे बच्चों पर दया करो। इस अधर्म का दंड मुझे मत दो, नहीं तो मेरा सत्यानाश हो जाएगा।"

**कृति अ (२): स्वमत अभिव्यक्ति** (२)

(१) "गरीबी व बुढ़ापा व्यक्ति के लिए संघर्ष है।" कथन पर आधारित मत लिखिए।

## विभाग ४ – भाषा अध्ययन (व्याकरण)

**प्रश्न ४ भाषा अध्ययन विषयक प्रश्न** (८)

**(१) निम्नलिखित रेखांकित शब्द का शब्दभेद लिखिए।** (१)

(i) सिरचन का मुँह लाल हो गया।

**(२) (अ) निम्नलिखित वाक्य में से अव्यय पहचानिए।** (१)

(i) वह भारी कदमों से आगे बढ़ने लगा।

**(अ) निम्नलिखित अव्यय का वाक्य में प्रयोग कीजिए।** (१)

(i) इसलिए

**(३) काल परिवर्तन कीजिए।** (१)

(i) यहाँ चयन होगा। (सामान्य वर्तमानकाल)

**(४) संधि-विच्छेद कीजिए।** (१)

(i) निश्चल

**(५) निम्नलिखित वाक्यों के भेद पहचानकर लिखिए।** (१)

(i) तुम्हारी बात मुझे अच्छी नहीं लगी।

(ii) हाय! कितनी निर्दयी हूँ मैं।

**(६) निम्नलिखित वाक्यों में से सहायक क्रिया पहचानकर लिखिए।** (१)

(i) वे हड़बड़ा उठे।

(ii) अवश्य ही लोग खा-पीकर चले गए।

**(७) निम्नलिखित कारक शब्द का वाक्य-प्रयोग कीजिए।** (१)

(i) के लिए

## विभाग ५ – उपयोजित लेखन

### प्रश्न ५ पत्रलेखन/कहानी लेखन

(१) **निम्नलिखित पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए।** (४)

अपने मित्र/सहेली को जिला विज्ञान प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त होने के उपलक्ष्य में बधाई देते हुए पत्र लिखिए।

**अथवा**

'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' इस सुवचन पर आधारित कहानी लिखिए।

### प्रश्न ६ प्रसंग वर्णन/निबंध लेखन

(१) 'सुरक्षा गार्ड' के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए। (४)

**अथवा**

(२) **निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए।**

(i) एकता की शक्ति (ii) जनसंख्या-नियंत्रण

❖❖❖

# अपठित बोध

## १ अपठित गद्यांश

'अपठति' का अर्थ है जो पहले पढ़ा न गया हो। अपठित गद्यांश का उद्देश्य होता है - छात्रों के गद्य की समझ को परखना तथा उनमें समझने की प्रतिभा का विकास करना।

किसी भी गद्यांश पर आधारित प्रश्नों का उत्तर देने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें -

(i) गद्यांश को दो-तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ें।

(ii) पूछे गए सभी प्रश्नों के उत्तर ध्यान से लिखिए।

(iii) शीर्षक ऐसा हो, जिसका संबंध गद्यांश के मूलभाव से हो।

(iv) शीर्षक कम-से-कम शब्दों का होना चाहिए।

**(अ) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर कृतियाँ पूर्ण कीजिए।**

**(१) आकृति पूर्ण कीजिए।**

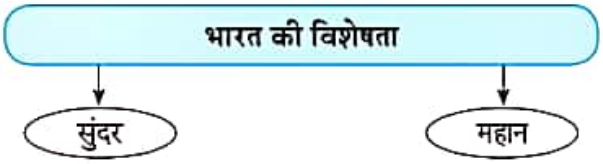


**(२) उत्तर लिखिए।**

**(i) अमरनाथ के अलावा हिमालय की श्रेणियों में बसे अन्य तीर्थस्थान हैं-**

उत्तर: (i) गंगोत्री (ii) यमुनोत्री (iii) केदारनाथ (iv) बदरीनाथ

भारत जैसा सुंदर और महान देश दूसरा कौन-सा है, जिसके उत्तर में हिमालय जैसा विश्व प्रसिद्ध विशाल पर्वत है। इस पर्वत को हम देवताओं का स्वर्ग कहें, ऋषियों का तपोवन कहें, प्राकृतिक सुषमा का भंडार कहें, पवित्र निर्मल जलाशयों का आगार कहें, हिम का मुकुट कहें, उत्तर का प्रहरी कहें या संसार का सौंदर्य कहें या जो कुछ भी कहें, वह पूर्ण रूप से सत्य होगा। इस पुण्यभूमि का भारत के इतिहास से गहरा संबंध है। भूगोल का यह मानदंड है। मंदिरों का यह क्षेत्र है। तीर्थ यात्रियों के लिए यह धर्म भूमि है और सैलानियों के लिए स्वर्ग।

विशाल हिमालय पर्वत की श्रेणियाँ कश्मीर से असम तक फैली हुई हैं। इन श्रेणियों में अमरनाथ, बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री आदि अनेक तीर्थ स्थान हैं जिनके दर्शन के लिए देश के विभिन्न प्रदेशों के निवासी लालायित रहते हैं। इसी पर्वत श्रेणी में कश्मीर है, जो पृथ्वी का स्वर्ग कहलाता है।

**(३) (i) कृति पूर्ण कीजिए।**

**(ii) विलोम शब्द लिखिए।**

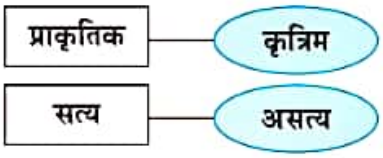


**(४) 'हमारा प्यारा देश' पर अपने विचार लिखिए।**

उत्तर: शायद ही कोई ऐसा होगा जिसे अपने देश से प्यार न होगा। हमारा देश विश्व की प्राचीनतम संस्कृति वाला देश है। हमारी संस्कृति का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व है - अनेकता में एकता। प्रेम, भाईचारा, सत्य, अहिंसा, मानवता, आदर आदि गुण हमें हमारी संस्कृति ने दिए हैं। हमारी भाषा भी विश्व की सबसे प्राचीनतम भाषा है। हिमालय पर्वत भारत की शान है। गंगा नदी भारत की सबसे बड़ी नदी है। विज्ञान एवं तकनीक में हमने ढेर सारी प्रगति कर ली है। विश्व की महान शक्ति के रूप में हम उभर रहे हैं।

**(आ) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर कृतियाँ पूर्ण कीजिए।**

**(१)(i) आकृति पूर्ण कीजिए।**

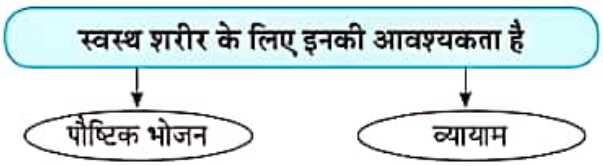


**(ii) ये हैं व्यायाम के लाभ -**

उत्तर: (i) शरीर में शुद्ध रक्त का संचार होना (ii) शरीर का पुष्ट बन जाना (iii) मस्तिष्क का स्वस्थ रहना

**(२) उचित विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए।**

**(१) दूसरी सावधानी यह है कि .....**

(i) नियमित व्यायाम करना चाहिए।

(ii) प्रात: टहलने जाना चाहिए।

(iii) सही व्यायाम का चुनाव करना चाहिए।

उत्तर: दूसरी सावधानी यह है कि सही व्यायाम का चुनाव करना चाहिए।

स्वस्थ शरीरवाला मनुष्य ही इस संसार के सभी प्रकार के सुखों को भोग सकता है तथा सुखमय जीवन बिता सकता है। स्वस्थ शरीर के लिए पौष्टिक भोजन तथा व्यायाम दोनों ही अतिआवश्यक हैं। व्यायाम करने का भी ढंग होता है। इसे करते समय सदा कुछ सावधानियाँ बरतनी चाहिए। पहली सावधानी यह है कि आयु, समय व शरीर की क्षमता के अनुसार ही व्यायाम करना चाहिए। दूसरी सावधानी यह है कि सही व्यायाम का चुनाव करना चाहिए तथा व्यायाम की उचित मात्रा निश्चित करनी चाहिए। तीसरी सावधानी यह है कि शुद्ध वायु, प्रकाशवाले खुले स्थान में व्यायाम करना चाहिए। व्यायाम के तुरंत बाद स्नान नहीं करना चाहिए। व्यायाम के अनेक लाभ हैं - इससे शरीर में शुद्ध रक्त का संचार होता है, भोजन ठीक से पचता है, शरीर पुष्ट बन जाता है, थकान का अनुभव कम होता है तथा मस्तिष्क भी स्वस्थ रहता है।

**(३) (i) समानार्थी शब्द लिखिए।**

| | |
|---|---|
| उम्र | आयु |
| हवा | वायु |

**(ii) प्रत्यय लगाकर उचित शब्द बनाइए।**

| | |
|---|---|
| सावधान | सावधानी |
| प्रकृति | प्राकृतिक |

**(४) 'व्यायाम का महत्त्व' पर अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:** व्यायाम से मानसिक तनाव और थकान मिटती है। शरीर का रक्त शुद्ध हो जाता है तथा पूरे शरीर में ताजगी आती है। व्यायाम यदि खुले स्थान में या किसी पार्क में किया जाए तो अधिक लाभ मिलता है। फेफड़ों को शुद्ध वायु पर्याप्त मात्रा में मिलती है। पेशियों और अस्थियों को ताकत मिलती है। शरीर का दर्द और ऐंठन मिट जाती है। ज्ञानेन्द्रियों में सजगता आती है। संपूर्ण शरीर प्राकृतिक दशा में कार्य करने लगता है। शारीरिक दुर्बलता और सुस्ती समाप्त हो जाती है। इस तरह व्यायाम के प्रभाव से शरीर में नवजीवन का संचार होता है। बूढे और बीमार लोग भी अपने भीतर स्फूर्ति का अनुभव करने लगते हैं।

**(इ) सूचना के अनुसार निम्नलिखित कृतियाँ परिच्छेद पढ़कर पूर्ण कीजिए।**

**(१) कारण लिखिए**

**(i) कंप्यूटर विज्ञान की अद्‌भुत देन है।**

**उत्तर:** क्योंकि कंप्यूटर बटन दबाते ही सारी जानकारी दे देता है।

**(ii) उचित विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण लिखिए।**

**(१) कंप्यूटर एक .....**

(i) जादुई बक्सा है।

(ii) जादुई घड़ी है।

(iii) जादुई चिराग है।

**उत्तर:** कंप्यूटर एक जादुई बक्सा है।

**(२) कृति पूर्ण कीजिए।**

**(i) इन समस्याओं का कंप्यूटर समाधान कर देता है -**

**उत्तर:** (i) रेल्वे आरक्षण की समस्या (ii) बैंकों में रिकार्ड रखने की समस्या (iii) लाखों-करोड़ों की गणना करने की समस्या (iv) क्रिकेट के मैदान में अंपायर की निर्णायक की भूमिका से संबंधित समस्या

कंप्यूटर-एक जादुई बक्सा है, जो बटन दबाते ही सारी जानकारी दे देता है। यह सचमुच विज्ञान की अद्‌भुत देन है। आज इसकी उपयोगिता इतनी बढ़ गई है कि छोटा बच्चा भी इसे चलाना आसानी से सीख लेता है। चाहे क्रिकेट के मैदान में अंपायर की निर्णयक की भूमिका हो या लाखों-करोड़ों की गणना हो, रेलवे आरक्षण कराना हो अथवा दफ़्तरों, बैंकों में रिकार्ड रखने हों-कंप्यूटर पलक झपकते ही आपकी समस्या का समाधान कर देता है। इसकी महत्ता को देखते हुए आज सभी के लिए इसकी जानकारी अनिवार्य-सी होती जा रही है। इंटरनेट के साथ जुड़ जाने से तो इसकी उपयोगिता और भी बढ़ गई है। इसके माध्यम से जो जनकारी चाहो, तुरंत मिल जाती है। यह आज मानव समस्याओं के समाधान में कल्पतरू सिद्ध हो रहा है।

**(३) (i) विलोम शब्द लिखिए।**

| | |
|---|---|
| उपयोग | दुरुपयोग |
| समस्या | समाधान |
| मानव | दानव |
| आसान | मुश्किल |

**(४) 'कंप्यूटर : एक अनिवार्य आवश्यकता' पर अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:** आज मानव तकनीकी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए बेतहाशा व्याकुल है। आज मानव हर क्षेत्र में नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। आजकल संस्थाओं तथा उद्‌योग धंधों में कंप्यूटर का प्रयोग विशाल पैमाने पर हो रहा है। औद्‌योगिक क्षेत्र में मशीनों तथा कारखानों का संचालन करने के लिए कंप्यूटर को प्रयोग में लाया जाता है। सूचना एवं समाचार के संदर्भ में भी कंप्यूटर अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहा है। कंप्यूटर नेटवर्क के द्‌वारा विश्वभर

के नगर एक-दूसरे से एक परिवार की भाँति जुड़ गए हैं। बैंकों में हिसाब-किताब रखने के लिए कंप्यूटर का प्रयोग अधिक से अधिक किया जा रहा है। यही नहीं, घर के कंप्यूटरों को भी बैंक के कंप्यूटरों से संबद्ध किया जा सकता है। आज अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में कंप्यूटर राम-बाण सिद्ध हुआ है। इसके द्वारा अतंरिक्ष के विशाल पैमाने पर चित्र एकत्र किए जा रहे हैं।

**(ई) निम्नलिखित अपठित गद्यांश के आधार पर कृतियाँ पूर्ण कीजिए।**

**(१) आकृति पूर्ण कीजिए।**

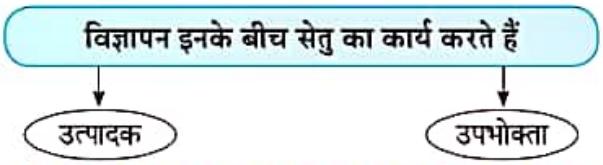


विज्ञापन का उद्देश्य होता है - प्रचार-प्रसार द्वारा जनमानस में वस्तु की विशिष्ट छवि अंकित कर उसकी बिक्री बढ़ाना। इस प्रकार ये उत्पादक व उपभोक्ता के बीच सेतु का कार्य करते हैं। विज्ञापन विविध प्रकार के होते हैं - व्यापारिक, शैक्षिक, नियुक्ति संबंधी, धार्मिक, मनोरंजन संबंधी आदि। चुनाव के समय तो विशेष रूप से राजनीतिक दल इनसे लाभ उठाते हैं। इसलिए आज हम उसी वस्तु को खरीदने के लिए आगे आते हैं, जिसका विज्ञापन हमने अधिक पढ़ा, सुना अथवा देखा है। वस्तुत: सच्चाई यह है कि खरीदते समय माल नहीं नाम खरीदा जाता है। अत: विज्ञापनों का भी यह दायित्व है कि वे वस्तुओं के गुणों को बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन करके उपभोक्ताओं को गुमराह करने की बजाय उन्हें उत्पादन के गुणों से परिचित कराएँ, तभी विज्ञापन अपने उद्देश्य में सफल होगा।

**(२)**

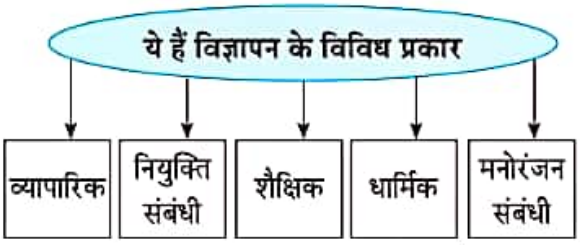


**(३) (i) समानार्थी शब्द लिखिए।**

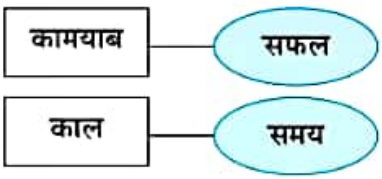


**(ii) 'इत' प्रत्यय लगाकर दो शब्द बनाइए।**

**उत्तर:** (i) अंकित (ii) उत्पादित

**(४) 'विज्ञापनों का सामाजिक दायित्व' पर अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर:** विज्ञापन की दुनिया काफी मायावी है। बाजारीकरण के मौजूदा दौर में विज्ञापनों का महत्त्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। आज उत्पादक किसी भी तरह से अपने उत्पाद को बाज़ार में बेचना चाहता है और इसके लिए वह विज्ञापनों का सहारा लेकर अपने उत्पाद के लिए उपभोक्ताओं को पैदा करता है। यदि विज्ञापन में उत्पाद की सही जानकारी न देकर उपभोक्ताओं को मूर्ख बनाने का प्रयत्न किया गया है या फिर झूठे वादे किए गए हैं, तो कहीं न कहीं इन विज्ञापनों के प्रस्तुतकर्ता समाज को धोखा दे रहे है और इनके घातक परिणाम हो सकते हैं। विशेष रूप से छोटे बच्चों की मानसिकता के साथ खिलवाड़ कर उन्हें अपने जाल में फँसाना बहुत ही अनैतिक है। प्रस्तुतकर्ताओं को एक मर्यादा में रह कर ही इन विज्ञापनों का निर्माण करना चाहिए। विज्ञापनों का समाज पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है, अत: इनका प्रयोग समाज की भलाई के रूप में किया जाना चाहिए ना कि स्वयं के निजी लाभ के लिए।

**(उ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश के आधार पर कृतियाँ कीजिए।**

**(१) उचित विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए।**

**(i) सबसे सरल एवं सशक्त साधन .....**

(i) समाचारपत्र है।

(ii) विज्ञापन है।

(iii) दूरदर्शन के न्यूज चैनल हैं।

**उत्तर:** सबसे सरल एवं सशक्त साधन दूरदर्शन के न्यूज चैनल हैं।

वर्तमान युग में समाचारों को आम जनता तक पहुँचाने के सबसे सरल एवं सशक्त साधन दूरदर्शन के न्यूज चैनल हैं। ये विश्व के किसी भी कोने में घटित घटना की कुछ ही क्षणों में न केवल सूचना देते हैं, वरन् दृश्य भी प्रस्तुत कर देते हैं। पर आज दूरदर्शन पर समाचार देनेवाले अनेक चैनल आ गए हैं, जो चौबीसों घंटे चलते रहते हैं वे बार-बार एक ही घटना को दोहराते हैं। यहाँ तक कि कुछ चैनल तो घटनाओं में अपनी ओर से नमक-मिर्च लगाने में भी पीछे नहीं रहते, जिससे कई बार जहाँ एक ओर दर्शक नीरसता का अनुभव करते हैं, वहीं गुमराह भी होते हैं। अत: इन चैनलों का यह उत्तरदायित्व है कि ये घटना के सच्चे स्वरूप को ही सामने लाएँ।

**(२) न्यूज चैनलों का कार्य**

(i) विश्व के किसी भी कोने में घटित घटना की कुछ ही क्षणों में सूचना देना (ii) घटित घटना की सूचना देते समय दृश्य भी प्रस्तुत करना।

**(३)(i) कृति पूर्ण कीजिए।**

(ii) विलोम शब्द लिखिए।

(i) आगे × ..... (ii) सच्चा × .....

उत्तर: (i) पीछे (ii) झूठा

(४) 'न्यूज चैनलों का दायित्व' विषय पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर: समाज में जो कुछ घटित होता है, उसका लेखा-जोखा देने का काम न्यूज चैनल करते हैं। वे हमें सत्य स्थिति से रूबरू कराते हैं। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि कोई न्यूज चैनल वास्तविक घटना में अपनी ओर से संशोधन करके दर्शकों को गुमराह करते हैं। यदि ऐसा होता है तो यह बहुत ही गलत बात है। न्यूज चैनलों का दायित्व है कि वे जो कुछ समाज में हो रहा है, उस सत्य स्थिति से लोगों को परिचित कराएँ। उन्हें बिना वजह अपनी ओर से नमक-मिर्च लगाकर समाचार को प्रसारित करने का कार्य नहीं करना चाहिए। किसी भी खबर को प्रसारित करते समय उन्हें पक्षपात नहीं करना चाहिए। अत: न्यूज चैनलों का दायित्व है कि वे समाजहित को ध्यान में रखते हुए न्यूज प्रसारित करें।

## स्वाध्याय

**निम्नलिखित अपठित गद्यांश के आधार पर कृतियाँ पूर्ण कीजिए।**

**परिच्छेद-१**

एक बार सब मित्रों ने बस से नैनीताल की यात्रा करने का निश्चय किया। इससे पहले मैंने बस में कभी यात्रा नहीं की थी, अत: बस-यात्रा के नाम से ही मैं उत्साह से भर उठा। बस उछलती-कूदती, झूला झुलाती गंतव्य की ओर बढ़ती जा रही थी, तब ऐसा लग रहा था कि हमारे साथ पेड़-पौधे भी चल रहे हैं। पहाड़ की घुमावदार सड़कों पर एक मोड़ से दूसरे मोड़ पर बढ़ती बस अचानक जोरदार झटके से रुकी। एक बार तो मुझे लगा कि बस यहीं सब कुछ समाप्त, पर दूसरे क्षण ही ज्ञात हुआ कि अचानक दूसरी बस के सामने आ जाने के कारण ड्राइवर को ज़ोर से ब्रेक लगाना पड़ा। यह सुनकर जान में जान आई। इस प्रकार बस यात्रा के रोमांचक क्षणों को अनुभव करते हुए हमें अपनी बस-यात्रा आजीवन अविस्मरणीय रहेगी।

(अ) (१) कारण लिखिए।

(i) यात्रा के नाम से ही लेखक उत्साह से भर उठा -

(ii) लेखक के जान में जान आ गई -

(२) उत्तर लिखिए।

(i) इन्होंने निश्चय किया -

(ii) परिच्छेद में प्रयुक्त प्राकृतिक रम्य स्थल का नाम -

(३)(i) विलोम शब्द लिखिए।

(i) मित्र × ..... (ii) उत्साह × .....

(ii) परिच्छेद में आए विदेशी शब्द लिखिए।

(४) मेरी अविस्मरणीय यात्रा इस विषय पर अपने विचार लिखिए।

**परिच्छेद-२**

जहाँ कोयल मीठी वाणी से सबके मन को अपनी ओर आकर्षित करती है, वहीं कौए की काँव-काँव किसी को अच्छी नहीं लगती। वाणी का प्रभाव अत्यंत व्यापक होता है। मधुर वचन बोलनेवाले और सुननेवाले, दोनों को ही आनंद पहुँचाते हैं। इसलिए तुलसीदास जी ने कहा भी है - तुलसी मीठे वचन ते सुख उपजत चहुँ ओर। मनुष्य मीठे वचनों से दूसरों के हृदय को जीत लेता है। वह शत्रु को भी मित्र बनाने का सामर्थ्य रखता है, जबकि कटुभाषी से सब दूर भागते हैं। उसके वचन तो दूसरों के हृदय को तीर की तरह छेदते हैं। इसलिए कबीरदास जी ने समझाते हुए कहा भी है -

**ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय।**
**औरन को सीतल करे, आपहुँ सीतल होय।।**

(आ) (१) उचित विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए।

(१) मनुष्य मीठे वचनों से -

(i) दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

(ii) सभी को अपना बना लेता है।

(iii) दूसरों के हृदय को जीत लेता है।

(२) उत्तर लिखिए।

(i) कौए की वाणी -

(ii) मनुष्य इससे दूसरों के हृदय को जीत लेता है -

(३) (i) उचित प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए।

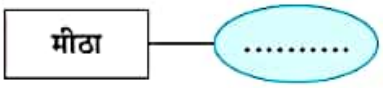


(ii) परिच्छेद में आए शब्द-युग्म चुनकर लिखिए।

(४) मधुर वचन पर अपने विचार लिखिए।

**परिच्छेद-३**

इस संसार में सबसे अमूल्य वस्तु है, 'समय'। इस संसार में सभी चीज़ों को घटाया-बढ़ाया जा सकता है, पर समय को नहीं। समय किसी के अधीन नहीं रहता। न वह रुकता है, न ही वह किसी की प्रतीक्षा करता है। विद्यार्थी जीवन में समय का अत्यधिक महत्त्व है। समय का सदुपयोग करनेवाला व्यक्ति भावी जीवन में सफल होकर एक श्रेष्ठ नागरिक बनता है। जेम्स वॉट, मैडम क्यूरी, आइंस्टीन, एडीसन आदि ने समय के एक-एक क्षण का सदुपयोग करके अपने क्षेत्र में सफलता हासिल की। समय का सदुपयोग केवल उद्यमी तथा कर्मठ व्यक्ति कर सकता है, आलसी नहीं। आलस्य ही समय का सबसे बड़ा शत्रु है। विद्यार्थियों को इस शत्रु से सावधान रहना चाहिए। इसके लिए उन्हें अच्छे लोगों की संगति में रहना चाहिए। सत्संगति के कारण व्यक्ति अपने अमूल्य समय को व्यर्थ की बातों में नहीं गँवाता।

**(इ) (१) समझकर लिखिए -**

**(i) इन महापुरूषों के नाम परिच्छेद में आए हैं -**

**(२) कारण लिखिए।**

(i) समय किसी के अधीन नहीं रहता -

(ii) आलस्य ही समय का सबसे बड़ा शत्रु है -

**(३) (i) उचित उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाइए।**

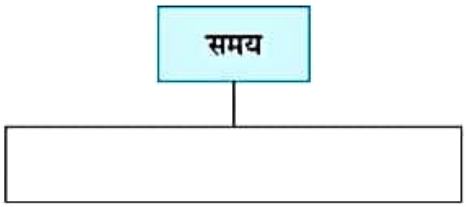


**(ii) परिच्छेद में आए विदेशी शब्द चुनकर लिखिए।**

**(४) सत्संगति के लाभ इस विषय पर अपने विचार लिखिए।**

**परिच्छेद-४**

इसमें संदेह नहीं कि यदि देश में विघटनकारी और विध्वंसात्मक तत्त्वों को कठोरता से नहीं दबाया गया तो राष्ट्रीय एकता का पावन लक्ष्य कभी प्राप्त नहीं होगा तथा इसी प्रकार अराजकता एवं हिंसा का दौर चलता रहेगा। अत: प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है कि अपने संकीर्ण विचारों को त्यागकर अपने दृष्टिकोण को उदार, सहिष्णु और विस्तृत बनाए। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि विभिन्नता में एकता ही हमारे देश की एकता की विलक्षण पहचान है। इतने बड़े देश में कुछ सैद्धांतिक मतभेद होना स्वाभाविक है। प्राकृतिक विशेषताओं के कारण भी विभेद पाया जाना अपरिहार्य है, परंतु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सहिष्णुता और समन्वय की भावना हमारी संस्कृति का प्राण है।

**(ई) (१) उचित विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए।**

**(१) सहिष्णुता और समन्वय की भावना .....**

(i) हमारी संस्कृति की शान है।

(ii) हमारी संस्कृति का प्राण है।

(iii) हमारी संस्कृति की पहचान है।

**(२) समझकर लिखिए।**

(i)

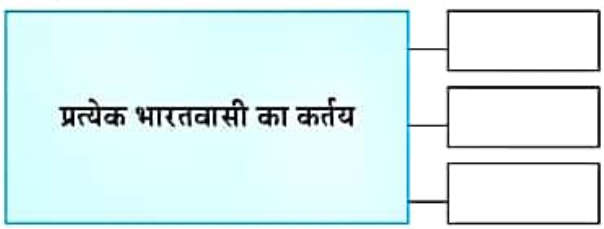


**(३) (i) प्रत्यययुक्त दो शब्द परिच्छेद में से चुनकर लिखिए।**

(ii)

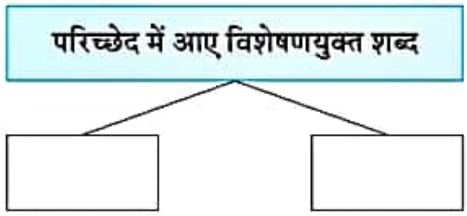


**(४) 'राष्ट्रीय एकता देश की सबसे बड़ी शक्ति होती है।' अपने विचार लिखिए।**

**परिच्छेद-५**

देव-दुर्लभ मनुष्य-योनि को प्राप्त करके भी जो व्यक्ति अपने चरित्र की ओर से उदासीन रहता है। वह नर से पशु अथवा असुर बनकर स्वयं ही अपने पतन का कारण बन जाता है। हमारे पूर्वजों ने इस भेद का पता लगाकर मनुष्य को उपदेश दिया कि तुम्हारी उन्नति चरित्र निर्माण में सन्निहित है। चरित्र निर्माण के उद्देश्य से ही उन्होंने जीवन को चार आश्रमों में बाँटा और सबसे पहले ब्रह्मचर्य आश्रम का विधान बनाया। नगरों के कोलाहल से दूर, वनों में गुरू के आश्रम में विद्याध्ययन करते समय विद्यार्थी सद्गृहस्थ बनने के योग्य बनकर आता था तथा बाद में वही राष्ट्र का सच्चा नागरिक बन जाता था। हमारा जीवन चरित्र की नींव पर खड़ा है। नींव में यदि कमी रह गई तो हमारा जीवन रूपी भवन धाराशायी हो जाएगा। मकान चाहे कितना ही सुंदर बना हो किंतु यदि नींव कमज़ोर है तो एक-न-एक दिन गिरेगा ही; साथ में अनेकों के नाश का कारण भी बनेगा। रावण, हिरण्यकश्यपु, दुर्योधन आदि के उदाहरण इस बात के प्रमाण हैं।

**(उ) (१) समझकर लिखिए।**

(i) तब हमारा जीवनरूपी शरीर धराशायी हो जाएगा -

(ii) रावण, हिरण्यकश्यपु, दुर्योधन आदि के उदाहरण से आप समझते हैं कि .....

**(२) उत्तर लिखिए।**

(i) इन्होंने जीवन को चार आश्रमों में बाँटा -

**(३)(i) परिच्छेद के आधार पर 'आ' उपसर्ग लगाकर दो शब्द बनाइए।**

**(ii) संधि-विच्छेद कीजिए।**

(i) विद्यार्थी (ii) निर्माण

**(४) हमारा जीवन चरित्र की नींव पर खड़ा है। अपने विचार लिखिए।**

❖❖❖

# २ अपठित पद्यांश

**प्रश्न १. अपठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

यदि तू लौट पड़ेगा थक कर
अंधड़ काल बवंडर से डर,
प्यार तुझे करने वाले ही देखेंगे तुझ को हँस-हँस कर।
खग! उड़ते रहना जीवन भर!
और मिट गया चलते-चलते,
मंजिल पथ तय करते-करते,
तेरी खाक चढ़ाएगा जग उन्नत भाल और आँखों पर।
खग! उड़ते रहना जीवन भर!

**(१) आकृति पूर्ण कीजिए।**

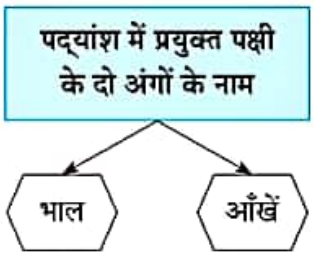


**(२) समझकर लिखिए।**

(i) पथ पर चलते-चलते पीछे लौटने पर कौन हँसकर देखेगा?

(ii) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए।

(क) खग (ख) काल

**उत्तर:** (i) हमें प्यार करने वाले ही पथ पर चलते-चलते पीछे लौटने पर हँसकर देखेंगे।

(ii) (क) पक्षी (ख) समय

**(३) निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।**

*यदि तू लौट पड़ेगा थककर,*
*अंधड़ कालबवंडर से डर,*
*प्यार तुझे करने वाले ही देखेंगे तुझको हँस-हँसकर।*

**उत्तर:** कवि खग के माध्यम से मानव को सदैव चलते रहने की प्रेरणा दे रहे हैं। कवि पक्षी से निर्भीकता, साहस, हिम्मत के साथ जीवनभर उड़ने को कह रहे हैं। कवि का मानना है कि अगर हम थककर या आँधी-तूफान से डरकर वापस लौट आएँगे, तब हमें प्यार करनेवाले ही हमें देखकर हमारी खिल्ली उड़ाएँगे, हम पर हँसेंगे। इसलिए कवि हमें कहता है कि तुम आशावादी बनकर सतत मंजिल की ओर बढ़ते जाओ।

**प्रश्न २. अपठित पद्यांश को पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

जीवन में फिर नया विहान हो
एक प्राण एक कंठ गान हो
बीत अब रही विषाद की निशा
दीखने लगी प्रयाण की दिशा
गगन चूमता अभय निशान हो
हम विभिन्न हो गए विनाश में
हम अभिन्न हो रहे विकास में
एक श्रेय प्रेम समान हो।

**(१) कृति पूर्ण कीजिए।**

(i) सभी जन इस सूत्र में बँध जाएँ → एकता के सूत्र में

(ii) इसकी निशा बीत रही है → विषाद की

**(२) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।**

(i) सभी के विचारों में एकता/अनेकता हो।

(ii) दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

(क) निशा × ..... (ख) प्रेम × .....

**उत्तर:** (i) सभी के विचारों में एकता हो।

(ii) (क) भोर (ख) नफरत

**(३) निम्नलिखित पठित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।**

*"हम विभिन्न हो गए विनाश में,*
*हम अभिन्न हो रहे विकास में,*
*एक श्रेय, प्रेम समान हो।"*

**उत्तर:** अभावग्रस्त इंसान के प्रति सहानुभूति दिखाते हुए देशप्रेमी कवि 'जनगीत' कविता के माध्यम से नए भारत को बनाने की प्रेरणा दे रहे हैं। कवि स्पष्ट कर रहे हैं कि विनाश के समय हम अलग-अलग हो गए थे, पर अब हम भारत के विकास में एक होकर रहेंगे। भारत की उन्नति ही अब हमारी खुशी, श्रेय और प्रेम है। इसके लिए हमें अन्याय-अत्याचार का विरोध करना पड़े, तब भी करेंगे। निडर होकर हम सारी बुराइयों का सामना करेंगे।

**प्रश्न ३. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

मत कहो, आकाश में कुहरा घना है,
यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है।

सूर्य हमने भी नहीं देखा सुबह का,
क्या करोगे, सूर्य का क्या देखना है।

इस सड़क पर इस कदर कीचड़ बिछा है,
हर किसी का पाँव घुटने तक सना है।

**(१) कृति पूर्ण कीजिए।**

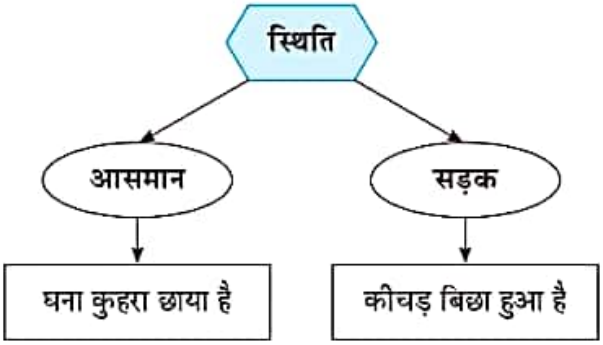


**(२) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।**

(i) सर्वत्र भ्रष्टाचार/मिट्टी का कीचड़ फैला हुआ है।

(ii) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(क) आकाश (ख) सूर्य

**उत्तर:** (i) सर्वत्र भ्रष्टाचार का कीचड़ फैला हुआ है।

(ii) (क) नभ (ख) रवि

**(३) निम्नलिखित पठित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।**

*''इस सड़क पर इस कदर कीचड़ बिछा है,*
*हस किसी का पाँव घुटने तक सना है।''*

**उत्तर:** कवि दुष्यंत कुमार ने अपनी कविता को माध्यम बनाकर आज की घिनौनी मानसिकता वाली राजनीति का वर्णन किया है। सड़क पर इस कदर कीचड़ बिछा है कि हर किसी का पाँव घुटनों तक सन गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि आज के नेता भी आम आदमी की नहीं सुनते। वे भी औरों की तरह सिर्फ पैसा, प्रसिद्धि और शौक के लिए राजनीति कर रहे हैं। उन्हें आम जनता से कोई लेना-देना नहीं है। कवि के अनुसार सभी राजनेता एक ही थाली के चट्टे-बट्टे बन गए हैं और अपना स्वार्थ साध रहे हैं।

**प्रश्न ४. अपठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

हिंद के बहादुरों शूरवीर बालकों
थाम लो सँभालकर देश की मशाल को!
अंधकार का गरूर आन-बान तोड़ दो
बालकों, भविष्य के लिए मिसाल छोड़ दो,
दो नई-नई दिशा वर्तमान काल को!

**(१) कृति पूर्ण कीजिए।**

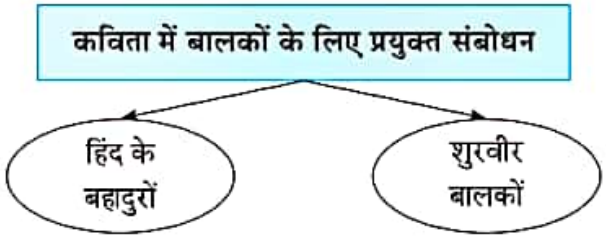


**(२)(i) गद्यांश में प्रयुक्त शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए।**

**(ii) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।**

(क) बहादुर × ..... (ख) अंधकार × .....

**उत्तर:** (i) आन-बान, नई-नई

(ii) (क) डरपोक (ख) प्रकाश

**(३) निम्नलिखित पठित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।**

*''अंधकार का गरूर आन-बान तोड़ दो*
*बालकों, भविष्य के लिए मिसाल छोड़ दो,*
*दो नई-नई दिशा वर्तमान काल को!''*

**उत्तर:** कवि नई पीढ़ी के कंधों पर देश की बागडोर सौंपते हुए उसे नई दिशा देकर विजय अभियान के साथ प्रगतिपथ पर ले जाने के भाव की प्रेरणा दे रहे हैं। कवि इस पद्यांश में स्पष्ट कर रहे हैं कि हिंद के बहादुर, शूरवीर बालकों, तुम शान-ओ-शौकत की जिंदगी को तोड़ दो। अंधकार के गुरूर को भी छोड़ दो; ताकि भविष्य के बच्चों के समक्ष तुम मिसाल छोड़ सको कि तुमने राष्ट्रहित के लिए, निडर, दृढ़चित्त होकर देश को सँभाला था। आज वर्तमान देश को नई-नई दिशा दो; ताकि देश को आजादी सुचारू रूप में मिल सके।

**प्रश्न ५. अपठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

लहरें उठती है, गिरती है, नाविक तट पर पछताता है
तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है
निर्झर में गति ही जीवन है, रुक जाएगी यह गति जिस दिन
उस दिन मर जाएगा मानव, जग दुर्दिन की घड़ियाँ गिन-गिन,

निर्झर कहता है - बढ़े चलो, तुम पीछे मत देखो मुड़कर।
यौवन कहता है - बढ़े चलो, सोचो मत क्या होगा चलकर।

(१) कृति पूर्ण कीजिए।

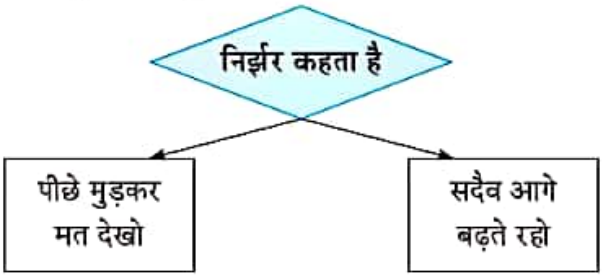


(२) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

(i) (क) चलना ही जीवन/मृत्यु है।

(ख) निर्झर का जीवन उसका ठहराव/गति है।

(ii) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(क) निर्झर (ख) मानव

उत्तर: (i) (क) चलना ही जीवन है।

(ख) निर्झर का जीवन उसकी गति है।

(ii) (क) झरना (ख) मनुष्य

(३) निम्नलिखित पठित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।

*''निर्झर कहता है - बढ़े चलो, तुम पीछे मत देखो मुड़कर।*
*यौवन कहता है - बढ़े चलो, सोचो मत क्या होगा चलकर।''*

उत्तर: कवि ने निर्झर को गतिशीलता का प्रतीक माना है। निर्झर कहता है कि तुम मेरे समान बढ़ते चलो, चाहे राह में कितनी भी बाधाएँ क्यों न आएँ। तुम्हें पीछे मुड़कर नहीं देखना है कि पीछे क्या-क्या घट गया है। निर्झर का यौवन अपनी मस्ती में मतवाला बनकर कहता है कि तुम लगातार बढ़ते चलो। तुम यह मत सोचो कि आगे चलकर क्या होगा? आगे चलकर तुम्हारा अच्छा ही होगा। इसी तरह मानव-जीवन भी है। मानव का निरंतर चलते रहना ही जीवन है।

## स्वाध्याय

**प्रश्न १. अपठित पद्यांश को पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

भला कौन लिपि नागरी सी भली है।
सरलता मृदुलता में हिंदी ढली है।
इसी में मिली वह निराली थली है।
सुगमता जहाँ सादगी से पली है।
मृदुलमति किसी से न ऐसी खिलेगी।
सहज बोध भाषा न ऐसी मिलेगी।

(१) कृति पूर्ण कीजिए :-

(२) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

(i) (क) हिंदी भाषा कठिन/सरल है।

(ख) हिंदी की लिपि नागरी/सुगमता है।

(ii) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

(क) सहज x ..... (ख) भली x .....

(३) निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।

''मृदुलमति किसी से न ऐसी खिलेगी।
सहज बोध भाषा न ऐसी मिलेगी।''

**प्रश्न २. अपठित पद्यांश को पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

स्नेह निर्झर बह गया!
रेत ज्यों तन रह गया।
आम की यह डाल जो सूखी दिखी,
कह रही है - अब यहाँ पिक या शिखी
नहीं आते; पंक्ति मैं वह हूँ लिखी
नहीं जिसका अर्थ -
जीवन दह गया है।

(१) कृति पूर्ण कीजिए।

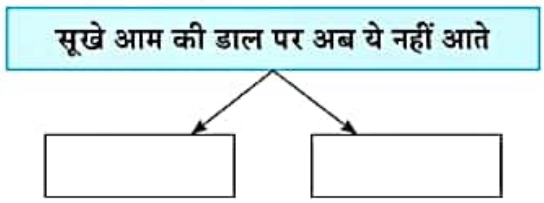


(२) समझकर लिखिए।

(i) (क) आम के डाल की स्थिति -

(ख) यह दह गया -

(ii) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(क) स्नेह (ख) डाल

(३) निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।

''आम की यह डाल जो सूखी दिखी,
कह रही है - ''अब यहाँ पिक या शिखी
नहीं आते; पंक्ति मैं वह हूँ लिखी
नहीं जिसका अर्थ .....''

**प्रश्न ३. निम्नलिखित पद्यांश के आधार पर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**

वे मुस्काते फूल, नहीं
जिनको आता है मुर्झाना,
वे तारों के दीप, नहीं
जिनको भाता है बुझ जाना।

**(१) कृति पूर्ण कीजिए।**

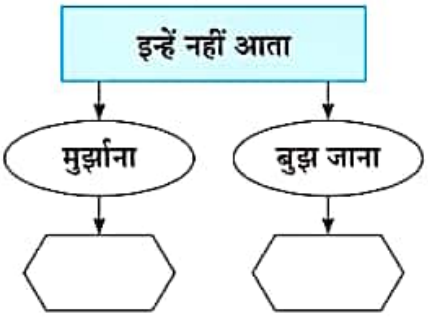


**(२) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।**

(i) (क) हमें मुश्किल परिस्थितियों में पीछे हटना चाहिए / धैर्य रखना चाहिए।
(ख) जीवन में हमेशा सच्चाई/बुराई की राह चुननी चाहिए।

(ii) निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखिए।
(क) दीप (ख) भाना

**(३) निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।**

**''वे तारों के दीप, नहीं**
**जिनको आता है बुझ जाना।''**

❖❖❖

# भाषा अध्ययन (व्याकरण)

## १ शब्द-भेद

वर्णों का ऐसा समूह जिसका निश्चित अर्थ होता है, उसे 'शब्द' कहते हैं।

क + म + ल = कमल, यह शब्द है क्योंकि इसका अर्थ है।

म + क + ल = मकल, यह शब्द नहीं है क्योंकि इसका कोई अर्थ नहीं है।

**शब्द के भेद**

| विकारी (सव्यय) | अविकारी (अव्यय) |
|---|---|
| (१) संज्ञा (Noun) | (१) क्रियाविशेषण (Adverb) |
| (२) सर्वनाम (Pronoun) | (२) संबंधसूचक (Preposition) |
| (३) विशेषण (Adjective) | (३) समुच्चयबोधक (Conjunction) |
| (४) क्रिया (Verb) | (४) विस्मयादिबोधक (Interjection) |

**विकारी शब्द (सव्यय) (Declinable Words):**

जिन शब्दों के रूप में लिंग (Gender), वचन (Number), कारक (Case) आदि के अनुसार विकास या परिवर्तन होता है, उन्हें **'विकारी'** शब्द कहते हैं। विकारी शब्द के चार भेद होते है :

(१) संज्ञा (Noun) (२) सर्वमान (Pronoun)

(३) विशेषण (Adjective) (४) क्रिया (Verb)

### (१) संज्ञा : (नाम शब्द ) (Noun Naming words)

प्रत्येक व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव, गुण और अवस्था का अपना-अपना नाम होता है। व्याकरण में नाम को ही **'संज्ञा'** कहते हैं। जो शब्द किसी वस्तु, प्राणी, स्थान, पदार्थ, गुण, दोष, अदृश्य वस्तु या समूह का नाम बताता है, उसे **'संज्ञा'** (नाम) कहते हैं।

**उदाहरण :**

(i) रमेश आज जोधपुर से सूरत जाएगा।

(ii) बकरी एक पालतू पशु है।

(iii) गंगा हिमालय से निकलती है।

(iv) सभी के साथ प्रेमपूर्वक से रहो।

(v) बचपन आनंददायी होता है।

**(२) संज्ञा के भेद (Kinds of Nouns):**

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper noun)

(ख) जातिवाचक संज्ञा (Common noun)

(ग) भाववाचक संज्ञा (Abstract noun)

(घ) द्रव्यवाचक संज्ञा (Material noun)

(ङ) समूहवाचक संज्ञा (Collective noun)

**(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper noun):** जिन संज्ञा शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, विशेष प्राणी, विशेष स्थान, विशेष वस्तु का पता चलता है, उन्हें **'व्यक्तिवाचक संज्ञा'** कहते हैं।

**उदाहरण : विशेष व्यक्तियों के नाम :** छत्रपति शिवाजी, बाबा साहब आंबेडकर, महाराणा प्रताप, मदर टेरेसा, बाबा आमटे, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, सरदार वल्लभभाई पटेल, जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गांधी आदि।

**विशेष स्थानों के नाम :** मैसूर, त्रिवेंद्रम, लक्ष्मीनारायण मंदिर, लाल किला, तामजहल, प्रयाग, शिमला आदि।

**विशेष वस्तुओं के नाम :** किताब, हॉकी, फुटबॉल आदि।

**विशेष प्राणियों के नाम :** चेतक (घोड़े का नाम), ऐरावत (हाथी का नाम)

**(ख) जातिवाचक संज्ञा (Common noun):** जिन संज्ञा शब्दों से एक ही प्रकार के प्राणियों, वस्तुओं और स्थानों आदि का पता चलता है, उन्हें **'जातिवाचक संज्ञा'** कहते हैं।

**उदाहरण : प्राणी :** मछली, गधा, चींटी, लड़की, आदमी, नारी, घोड़ा, हाथी, शेर, चीता आदि।

**स्थान :** बाजार, नगर, गली, देश, पहाड़, नदी, स्टेशन आदि।

**वस्तु :** जूता, मेज़, स्कूटर, सब्जी, पुस्तक, खिड़की आदि।

**(ग) भाववाचक संज्ञा (Abstract noun):** जिस संज्ञा को देखा या स्पर्श नहीं किया जा सकता परंतु उसका भाव, गुण-दोष, अवस्था या कर्म को जाना जा सकता है; उसे **'भाववाचक संज्ञा'** कहते हैं।

**जैसे :** कोमलता, सौंदर्य, ऊँचाई, लंबाई, चौड़ाई, दृढ़ता, तीव्रता, अच्छाई, बुराई आदि।

(i) रमेश शांत स्वभाव का लड़का है।

(ii) बचपन में बच्चे खूब खेलते हैं।

(iii) उस बालक के प्रति मेरे हृदय में दया उमड़ आई।

(iv) राजेश की इमानदारी ने मुझे मोहित कर लिया।

उपर्युक्त वाक्यों में शांत, बचपन, दया और इमानदारी ऐसे शब्द हैं जो विशेषता, गुण, स्थिति अथवा भाव का बोध करा रहे हैं। ऐसे शब्द **'भाववाचक संज्ञा'** कहलाते हैं।

निम्नलिखित चार प्रकार के विकारी शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं:

**(१) जातिवाचक संज्ञा से -**

| जातिवाचक | भाववाचक | जातिवाचक | भाववाचक |
|---|---|---|---|
| बूढ़ा | बुढ़ापा | शिशु | शैशव |
| दास | दासता | जाति | जातीयता |
| साधु | साधुत्व | देश | देशी |
| लड़का | लड़कपन | स्वामी | स्वामित्व |
| इंसान | इंसानियत | परिवार | पारिवारिक |
| नारी | नारीत्व | देवता | देवत्व |
| प्रभु | प्रभुता | युवा | यौवन |
| शिक्षक | शिक्षा | मानव | मानवता |
| बंधु | बंधुता | शत्रु | शत्रुता |
| मजदूर | मजदूरी | स्त्री | स्त्रीत्व |
| माता | मातृत्व | भाई | भाईचारा |
| आदमी | आदमीयत | राष्ट्र | राष्ट्रीयता |
| पात्र | पात्रता | गुर | गुरुत्व |
| पंडित | पांडित्य | हिंदू | हिंदुत्व |
| सेवक | सेवा | सती | सतीत्व |

**(२) विशेषण से -**

| विशेषण | भाववाचक | विशेषण | भाववाचक |
|---|---|---|---|
| अमीर | अमीरी | स्वस्थ | स्वास्थ्य |
| खट्टा | खटास | निर्धन | निर्धनता |
| गर्म | गर्मी | मूर्ख | मूर्खता |
| ऊँचा | ऊँचाई | काला | कालिया |
| मोटा | मोटापा | हरा | हरियाली |
| चतुर | चतुराई | सफल | सफलता |
| कोमल | कोमलता | विस्तृत | विस्तार |
| दृढ़ | दृढ़ता | उदार | उदारता |
| मधुर | मधुरता | नम्र | नम्रता |
| उच्च | उच्चता | विद्वान | विद्वत्ता |

**(३) क्रिया से -**

| क्रिया | भाववाचक | क्रिया | भाववाचक |
|---|---|---|---|
| मिलना | मेल | खोजना | खोज |
| बैठना | बैठक | जागना | जागरण |
| पढ़ना | पढ़ाई | चलना | चाल |
| लिखना | लिखाई | सोचना | सोच |
| दौड़ना | दौड़ | चिल्लाना | चिल्लाहट |
| हँसना | हँसी | उछलना | उछाल |
| चढ़ना | चढ़ाई | काटना | कटाई |
| उतरना | उतराई | पकड़ना | पकड़ |
| गिरना | गिरावट | बचना | बचाव |
| कमाना | कमाई | थकना | थकावट |

**(४) सर्वनाम से -**

| सर्वनाम | भाववाचक | सर्वनाम | भाववाचक |
|---|---|---|---|
| मम | ममत्व | निज | निजता |
| पराया | परायापन | सर्व | सर्वस्व |

**(घ) द्रव्यवाचक संज्ञा (Material noun):** जो संज्ञा किसी पदार्थ या ढेर में मिलने वाली वस्तु का नाम बताती है, उसे **'द्रव्यवाचक संज्ञा'** कहते हैं।

उदाहरण : चावल, गेहूँ, सोना, पेट्रोल, पीतल, ताँबा, लोहा, कोयला, लकड़ी, मिट्टी, दूध, घी, आदि। सभी द्रव्यवाचक संज्ञा शब्दों का प्रयोग एकवचन में ही किया जाता है क्योंकि ये द्रव्य गणनीय नहीं होते।

**(ङ) समूहवाचक संज्ञा (Collective noun) :** जिन शब्दों से किसी समूह या समुदाय का बोध हो, उन्हें **'समूहवाचक'** या **'समुदायवाचक संज्ञा'** कहते हैं।

उदाहरण : अंगूरों का गुच्छा, मनुष्य का परिवार, अनाज का ढेर, ताश की गड्डी, मधुमक्खियों का झुंड, धनिया की गड्डी, कक्षा, भीड़, सेना, पुलिस, जत्था, टुकड़ी, दल, टोली, पार्टी आदि इन सभी शब्द समूह को एक इकाई के रूप में प्रकट करने के कारण एकवचन में प्रयुक्त किया जाता है।

**प्रश्न** निम्नलिखित वाक्यों में आए हुए रेखांकित संज्ञा शब्दों के भेद लिखिए।

(१) <u>बुढ़ापा</u> बहुधा <u>बचपन</u> का पुनरागमन हुआ करता है।

उत्तर: भाववाचक संज्ञा : बुढ़ापा, बचपन

(२) <u>काकोरी बमकांड</u> हो चुका था।

उत्तर: व्यक्तिवाचक संज्ञा : काकोरी बमकांड

(३) <u>श्लोक</u> जबरदस्ती याद करवाते थे।

उत्तर: जातिवाचक संज्ञा : श्लोक

(४) <u>गहना</u> देने में <u>हिचकिचाहट</u> महसूस हुई।

उत्तर: द्रव्यवाचक संज्ञा : गहना
भाववाचक संज्ञा : हिचकिचाहट

(५) ऊपर से <u>कोट</u> पहन लूँगा न।

उत्तर: जातिवाचक संज्ञा : कोट

(६) गरीब भूख की लाचारी से श्रम करता है।

उत्तर: भावावचक संज्ञा : लाचारी, श्रम

(७) मानू मोहर छापवाली धोती का दाम निकालकर देने लगी।

उत्तर: व्यक्तिवाचक संज्ञा : मानू

(८) सरकार अब ज्यादा चीनी लेने वालों पर टैक्स लगाएगी।

उत्तर: समूहवाचक संज्ञा : सरकार

(९) बीबी जी के कमरे में से हारमोनियम उठा ला और सितार भी।

उत्तर: जातिवाचक संज्ञा : बीबी जी,
व्यक्तिवाचक संज्ञा : हारमोनियम व सितार

(१०) चीजों का एक पूरा परिवार है जिसकी सेवा में हूँ।

उत्तर: समूहवाचक संज्ञा : परिवार

(११) गुलामी करना और करवाना उसके स्वभाव में है।

उत्तर: भाववाचक संज्ञा : गुलामी

(१२) रावण का पुतला कहीं भी नहीं जलाया जाता है।

उत्तर: व्यक्तिवाचक संज्ञा : रावण

(१३) पत्थरों के बीच में पानी भर गया है।

उत्तर: द्रव्यवाचक संज्ञा : पत्थरों, पानी

(१४) सोनाबाई की लड़की दवा की शीशी लेकर कथकली नृत्य करने लगी।

उत्तर: व्यक्तिवाचक संज्ञा : सोनाबाई
द्रव्यवाचक संज्ञा : दवा की शीशी

## (२) सर्वनाम (Pronoun)

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले पद 'सर्वनाम' कहलाते हैं। जैसे : वह, हम, तुम, तू, वे, उसे, कौन, यह, क्या, कोई आदि।

**सर्वनाम के भेद (Kinds of Pronoun) -**

(क) पुरुषवाचक सर्वमान (ख) निश्चयवाचक सर्वमान
(ग) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (घ) प्रश्नवाचक सर्वनाम
(ङ) संबंधवाचक सर्वनाम (च) निजवाचक सर्वनाम

**(क) पुरुषवाचक सर्वमान (Personal Pronoun):** जो सर्वनाम शब्द किसी पुरुष के नाम के बदले प्रयुक्त होते हैं तथा जो बोलने वाले, सुनने वाले अथवा जिसके बारे में कुछ कहा जाए - इन तीनों पुरुषों का बोध कराते हैं, उन्हें **'पुरुषवाचक सर्वनाम'** कहते हैं।

**जैसे :** (i) मैं प्रतिदिन समय पर खेलने जाता हूँ।
(ii) तुम क्यों चिल्ला रहे हो?
(iii) वह पढ़ रहा है।

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं :

(१) **उत्तम पुरुष (First Person) :** बोलने वाला व्यक्ति स्वयं अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हें 'उत्तम पुरुष सर्वनाम' कहते हैं।

(२) **मध्यम पुरुष (Second Person) :** जो सर्वनाम शब्द सुनने वाले के लिए प्रयुक्त किया जाता है, उसे 'मध्यम पुरुष सर्वनाम' कहते हैं।

(३) **अन्य पुरुष (Third Person) :** जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग बोलने वाला अथवा लिखने वाला व्यक्ति सुनने व पढ़ने वाले के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति के लिए करता है, वे 'अन्य पुरुष सर्वनाम' कहलाते हैं।

**जैसे :** वह, उसे, उसका, उसकी, उसके, वे, उनका, उनकी, उनके, उन्हें, उन्होंने आदि।

**विशेष :** यदि एक ही वाक्य में उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष सर्वनाम एक साथ कर्ता के स्थान पर आते हैं, तो इनका क्रम इस प्रकार रखना चाहिए - पहले मध्यम पुरुष, फिर अन्य पुरुष तथा अंत में उत्तम पुरुष।

जैसे :

| क्रम | अशुद्ध वाक्य | शुद्ध वाक्य |
|---|---|---|
| (१) | मैं, तुम और वह जाएँगे। | तुम, वह और मैं जाएँगे। |
| (२) | वह, मैं और तुम चलेंगे। | तुम, वह और मैं चलेंगे। |

**(ख) निश्चयवाचक सर्वमान (Definite Pronoun) :** जिस सर्वनाम शब्द से पास या दूर की किसी वस्तु अथवा व्यक्ति का निश्चयात्मक बोध होता है, उसे 'निश्चयवाचक सर्वनाम' कहते हैं। जैसे : यह, ये, वह वे आदि।

**विशेष :** निश्चयवाचक सर्वनाम का प्रयोग अन्य पुरुष की तरह ही हो सकता है। जैसे :

(i) यह मेरी पुस्तक है, इसे मैंने पढ़ लिया है।

(ii) वह आम का पेड़ है। इसमें बहुत सारे आम हैं।

**विशेष :** निश्चयवाचक सर्वनाम के सामने यदि संज्ञा शब्द रख दिया तो वह सर्वनाम न रहकर विशेषण बन जाता है। निश्चयवाचक सर्वनाम वह तभी कहलाएगा, जब निश्चित संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त किया गया हो।

**(ग) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite Pronoun):** अनिश्चित प्राणी, पदार्थ अथवा वस्तु के बदले प्रयुक्त किया जाने वाला सर्वनाम शब्द 'अनिश्चयवाचक सर्वनाम' कहलाता है।

**जैसे :** (i) बाहर कोई चिल्ला रहा है। (ii) पेड़ से कुछ फल गिरे हैं।

**विशेष :** 'कोई' सर्वनाम का प्रयोग प्राय: व्यक्ति के लिए किया जाता है जबकि 'कुछ' सर्वनाम का प्रयोग वस्तु अथवा पदार्थ के लिए किया जाता है।

**(घ) प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun) :** जो सर्वनाम शब्द प्रश्न के रूप में किसी संज्ञा शब्द (व्यक्ति, वस्तु, या पदार्थ) के स्थान पर प्रयुक्त किए जाते हैं, उन्हें 'प्रश्नवाचक सर्वनाम' कहते हैं।

जैसे : (i) देखो, वहाँ कौन आया है? (ii) दाल में क्या पड़ा है?
(iii) अंदर कौन गया है? (iv) वे क्या माँग रहे हैं?

उपर्युक्त अधोरेखांकित किए गए प्रश्नवाचक शब्द किसी न किसी संज्ञा शब्द के बदले प्रयुक्त हुए हैं; अतएव ये प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

**विशेष** : 'कौन' का प्रयोग प्राय: किसी प्राणी के लिए तथा 'क्या' का प्रयोग किसी वस्तु के लिए किया जाता है।

| क्रम | अशुद्ध वाक्य | शुद्ध वाक्य |
|---|---|---|
| (१) | वहाँ **क्या** आया था? | वहाँ **कौन** आया था? |
| (२) | कमरे में **क्या** बैठा है? | कमरे में **कौन** बैठा है? |
| (३) | मामाजी **कौन** लाए हैं? | मामाजी **क्या** लाए हैं? |
| (४) | तुम **कौन** चाहते हो? | तुम **क्या** चाहते हो? |

(ङ) **संबंधवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)** : जो सर्वनाम शब्द दो सर्वनामों में परस्पर संबंध का बोध कराते हैं और प्रधान वाक्य को आश्रित वाक्य से जोड़ते हैं, वे **'संबंधवाचक सर्वनाम'** कहलाते हैं।

जैसे : (i) जिसकी लाठी, उसकी भैंस।
(ii) जैसा करोगे, वैसा भरोगे।
(iii) जो डर गया, वो मर गया।

(च) **निजवाचक सर्वनाम (Reflexive Pronoun)**: जो सर्वनाम शब्द कर्ता स्वयं अपने लिए प्रयुक्त करता है, वे 'निजवाचक सर्वनाम' कहलाते हैं।

जैसे : (i) वह **स्वयं** पढ़ेगा।
(ii)वह **आप ही** बोले जा रहा था।
(iii) उसने **अपने आप** सब काम कर लिए।
(iv) इसे मैं **खुद** करूँगा।

आप शब्द का प्रयोग पुरुषवाचक (आदरसूचक) तथा निजवाचक दोनों प्रकार के सर्वनामों के रूप में किया जाता है।

जैसे :

(१) आप कृपया उधर जाइए। (पुरुषवाचक सर्वनाम)
(२) आप कल हमारे घर आइए। (पुरुषवाचक सर्वनाम)
(३) यह समस्या मैं अपने आप ही हल करूँगा। (निजवाचक सर्वनाम)
(४) मैं आप ही आ जाऊँगा। (निजवाचक सर्वनाम)

**सर्वनाम के संबंध में ध्यान रखने योग्य विशेष बातें -**

(१) अन्य पुरुष बहुवचन रूप का सर्वनाम आदरसूचक होने पर भी एक व्यक्ति के लिए ही प्रयुक्त होता है।

जैसे : तुलसीदास महान कवि थे। उन्होंने 'रामचरितमानस' की रचना की।
यहाँ 'उन्होंने' एक व्यक्ति के लिए ही प्रयुक्त हुआ है।

(२) 'तू' का प्रयोग आजकल नहीं किया जाता। केवल भगवान के लिए अथवा बहुत अधिक प्रेम या निकटता आदि प्रकट करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

जैसे : (i) हे प्रभु! तू सृष्टि का पालनहार है।
(ii) मित्र! तुझे मेरे जन्मदिन पर आना ही पड़ेगा।
(iii) अरे मनोज! तू कहाँ गया था?

(३) लेखक, कवि, नेता, राजा-महाराजा आदि अपने लिए 'मैं' के स्थान पर प्राय: 'हम' का प्रयोग करते हैं।

जैसे : राजा ने कहा, ''हम जनता की रक्षा करेंगे''।

(४) निश्चित करने के अर्थ में 'कौन' के साथ 'सा', 'सी', 'से' भी लगते हैं।

जैसे : तुम्हारा घर कौन-सा है?

(५) **'क्या'** सर्वनाम का प्रयोग कभी-कभी विस्मयादिबोधक की तरह किया जाता है।

जैसे : क्या! वह चला गया।

(६) कुछ सर्वनाम शब्दों पर बल देने के लिए 'ही' का प्रयोग किया जाता है।

जैसे : तुम + ही = तुम्ही, सब + ही = सभी
यह + ही = यही, वह + ही = वही आदि।

**प्रश्न १ निम्नलिखित में प्रयुक्त सर्वनाम को पहचानकर लिखिए।**

(१) वे गला फाड़-फाड़ कर रोती थीं।

उत्तर: वे

(२) क्या आदर्श थे आपके सामने?

उत्तर: क्या, आपके

(३) मैंने लिखने से पहले ही पढ़ना शुरू किया था।

उत्तर: मैंने

(४) उनकी भविष्यवाणियाँ कभी-कभी बहुत सच होती है।

उत्तर: उनकी

(५) तुम्हारे बदन के भी सारे गहने उतरवा लिए।

उत्तर: तुम्हारे

(६) यह कौन-सा महीना चल रहा है?

उत्तर: यह

(७) जो हम शौक से करना चाहते हैं; उसके लिए रास्ते निकाल लेते हैं।

उत्तर: हम

(८) मुझे जीवन को सहज और खुले ढंग से जीना पसंद है।

उत्तर: मुझे

(९) हमारे अंदर की दुनिया बाहर की दुनिया से कहीं ज्यादा बड़ी है।

उत्तर: हमारे

(१०) हम यहाँ चार-छ: दिन रहे, लेकिन हमारी एक ही दिनचर्या रही।

उत्तर: हम, हमारी

(११) आप भी अपनी रूचि के अनुसार हाथ आजमा सकते हैं।

उत्तर: आप

(१२) उसकी आँखों में आँसू उतर आए।

उत्तर: उसकी

(१३) वह खुद किसी थके-माँदे बूढ़े बैल की तरह भारी कदमों से आगे बढ़ने लगा।

उत्तर: वह

(१४) शायद वह तुमसे मिलने भी आएगा।

उत्तर: वह

(१५) वह बड़ी भयभीत और घबराई थी।

उत्तर: वह

(१६) वह स्वयं लक्ष्मी को लेकर आगे बढ़ने लगा।

उत्तर: स्वयं

**प्रश्न २ निम्नलिखित सर्वनाम शब्दों का अपने वाक्यों में उचित प्रयोग कीजिए।**

(१) तुम

उत्तर: तुम अपना काम स्वयं करो।

(२) स्वयं

उत्तर: मैं स्वयं बाजार सब्जी खरीदने जाऊँगा।

(३) तुमने

उत्तर: तुमने मेरे साथ बुरा व्यवहार किया है।

(४) तुम्हें

उत्तर: आजकल तुम्हें क्या हो गया है?

(५) आप

उत्तर: आप गरमी की छुट्टियों में क्या कर रहे हैं?

(६) कौन

उत्तर: दरवाजे पर कौन आकर खड़ा है?

(७) मेरी

उत्तर: मेरी आवाज ही मेरी पहचान है।

## (३) विशेषण (Adjective):

**निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और अधोरेखांकित किए गए शब्दों की विशेषताओं पर ध्यान दीजिए -**

(i) हमारे विद्यालय का विशाल भवन बड़ा सुंदर है। यह भारतीय शैली से बना है।

(ii) भीतरी भवन लाल, पीले और सफेद रंग का है।

(iii) इस भवन में चालीस कमरे हैं।

(iv) कुछ कमरे बड़े और कुछ छोटे हैं। कुछ नए और कुछ पुराने हैं।

(v) यह भवन बड़ा ऊँचा और विस्तृत है।

आपने देखा कि अधोरेखांकित किए गए शब्द किसी न किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता का बोध करा रहे हैं। वे विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

| | | | |
|---|---|---|---|
| (१) | आकारबोधक | - | बड़े, छोटे। |
| (२) | गुणबोधक | - | सुंदर, विशाल। |
| (३) | स्थानबोधक | - | भारतीय। |
| (४) | रंगबोधक | - | लाल, पीला, सफेद। |
| (५) | रूपबोधक | - | ऊँचा, विस्तृत। |
| (६) | स्थिति और दशाबोधक | - | नए, पुराने। |
| (७) | संख्याबोधक | - | (निश्चित और अनिश्चित संख्या) चालीस, कुछ। |
| (८) | दिशाबोधक | - | बाहरी, भीतरी। |
| (९) | संकेतबोधक | - | यह, इस |

उपर्युक्त विशेषताओं के अतिरिक्त विशेषण पद संज्ञा अथवा सर्वनाम की कुछ दूसरी विशेषताओं का भी बोध कराता है।

**जैसे :** (१) स्पर्शबोधक - चिकना, कोमल, स्निग्ध, खुरदरा आदि।

(२) स्वादबोधक - खट्टा, मीठा, खारा, चटपटा, तीखा आदि।

(३) ध्वनिबोधक - कर्कश, मधुर, कटु, उग्र आदि।

(४) गंधबोधक - दुर्गंधित, सुगंधित आदि।

(५) दोषबोधक - बुरा, दुष्ट, घटिया, क्रूर, अत्याचारी, हीन, दीन आदि।

**विशेष :** ऐसे पद जो वाक्य में संज्ञा अथवा सर्वनाम पदों की विशेषताओं का बोध कराते हैं, उन्हें 'विशेषण' कहते हैं।

**जैसे :** अच्छा, बुरा, छोटा, बड़ा, तीन, चार, कुछ, भारी, तीन, किलो, यह, वह, वे आदि।

**निम्नलिखित सभी तरह के शब्द विशेषण हैं -**

**रंग** - लाल, पीला, नीला, मटमैला, श्यामल, रंगीन, बदरंग, हरा आदि।

**गुण/दोष** - अच्छा, बुरा, श्रेष्ठ, घटिया, बढ़िया, उत्तम, शानदार, बेकार आदि।

**अनिश्चित परिमाण** - कम, अधिक, थोड़ा, बहुत, लंबा - चौड़ा, कुछ आदि।

**निश्चित परिमाण** - दस किलो, दो गज, चार टन, तीन किलोमीटर आदि।

**निश्चित संख्या** - तीन, चार, पाँच, बीस, तीस आदि।

**अनिश्चित संख्या** - कुछ, थोड़े, बहुत, कम, अधिक आदि।

**सर्वनाम** - यह, वह, वे, ये, कौन आदि ऐसे सभी शब्द जिनका प्रयोग विशेषण के रूप में हो रहा है।

## (३) विशेषण के भेद (Kinds of Adjective):

**विशेषण के चार भेद होते हैं -**

(क) गुणवाचक विशेषण

(ख) संख्यावाचक विशेषण (निश्चित और अनिश्चित संख्यावाचक)

(ग) परिमाणवाचक विशेषण (निश्चित और अनिश्चित परिमाणवाचक)

(घ) संकेतवाचक / सार्वनामिक विशेषण

**(क) गुणवाचक विशेषण (Qualitative Adjective) :** निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और देखिए कि इनमें प्रयुक्त विशेषण शब्द संज्ञाओं की किस प्रकार की विशेषता का बोध करा रहे हैं -

(i) सेठ रामलाल एक सज्जन और भला व्यक्ति है।

(ii) उसके अच्छे और चरित्रवान मित्र हैं।

(iii) उसे सभी दयालु, चतुर और ईमानदार व्यक्ति मानते हैं।

(iv) उसका सफेद रंग का शानदार घर है।

(v) उसका नौकर रामू लालची और आलसी व्यक्ति है।

उपर्युक्त वाक्यों में **अधोरेखांकित** किए गए शब्द अपने-अपने विशेष्यों के गुण-दोष का बोध करा रहे हैं; अतएव जो विशेषण अपने विशेष्य के गुण-दोष, रूप-रंग आदि का बोध कराता है, उसे **'गुणवाचक विशेषण'** कहते हैं।

**(ख) संख्यावाचक विशेषण (Adjective of Number):** नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए और अधोरेखांकित किए गए शब्दों पर विशेष ध्यान दीजिए -

(i) तीन आदमी दो बच्चों के साथ मेला देखने जा रहे हैं।

(ii) मैदान में पाँच वृक्ष खड़े हैं।

(iii) हमारे गाँव में आज चार हाथी आए हैं।

(iv) गंदा पानी पीने से सैकड़ों लोग अस्वस्थ हो गए।

(v) कुछ बच्चे शिक्षक की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

(vi) थोड़े - से लोगों ने ही वह भारी शिला उठा ली।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त दो प्रकार के संख्याबोधक शब्द आए हैं।

(१) निश्चित संख्याबोधक।

(२) अनिश्चित संख्याबोधक।

तीन, दो, पाँच, चार निश्चित संख्याबोधक शब्द हैं, जो आदमी, बच्चों, वृक्षों और हाथियों की निश्चित संख्या का बोध करा रहे हैं तथा सैकड़ों, कुछ, थोड़े-से शब्द लोगों और बच्चों की अनिश्चित संख्या का बोध करा रहे हैं। अतएव-

जो पद संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध कराते हैं, वे **'संख्यावाचक विशेषण'** कहलाते हैं। निश्चित संख्या का बोध कराने वाले **'निश्चित संख्यावाचक'** और अनिश्चित संख्या का बोध कराने वाले **'अनिश्चित संख्यावाचक'** विशेषण कहलाते हैं।

**(ग) परिमाणवाचक विशेषण (Adjective of Quantity):** नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए और रेखांकित शब्दों पर विशेष ध्यान दीजिए -

(i) सुरेंद्र बाल्टी में कुछ लीटर दूध लिए हुए था।

(ii) सैकड़ों टन अनाज पानी में भीगने से सड़ गए।

(iii) थोड़ा चावल भिखारी को दे दो।

(iv) मैं पाँच लीटर पेट्रोल खरीद कर लाया हूँ।

(v) इन परदों में कुछ मीटर कपड़ा लग जाएगा।

(vi) वह बहुत लंबा-चौड़ा स्टेडियम है।

उपर्युक्त वाक्यों में कुछ लीटर, सैकड़ों टन, थोड़ा, पाँच लीटर, कुछ मीटर तथा लंबा-चौड़ा ऐसे पद (शब्द) हैं जो 'दूध', 'अनाज', 'चावल', 'पेट्रोल', 'कपड़ा' तथा 'स्टेडियम' आदि विशेष्यों की परिमाणबोधक विशेषता का बोध करा रहे हैं। इसलिए ये सभी शब्द **'परिमाणवाचक विशेषण'** हैं। अतएव -

जो पद संज्ञा या सर्वनाम के परिमाण का बोध कराएँ, वे **'परिमाणवाचक विशेषण'** कहलाते हैं।

**जैसे** : कुछ, थोड़ा, बहुत, अधिक, दो टन, पाँच लीटर, चार किलो, दो गज आदि।

उपर्युक्त उदाहरणों में आपने ध्यान दिया होगा कि ये परिमाणवाचक विशेषण दो प्रकार के हैं -

(१) निश्चित परिमाणवाचक।

(२) अनिश्चित परिमाणवाचक।

**(१) निश्चित परिमाणवाचक :** वे परिमाणवाचक विशेषण पद जो किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम पद के निश्चित परिमाण का बोध कराएँ, **'निश्चित परिमाणवाचक विशेषण'** कहलाते हैं।

**जैसे** : दो किलो, पाँच लीटर, दो गैलन, तीन मीटर आदि।

**(२) अनिश्चित परिमाणवाचक :** वे परिमाणवाचक विशेषण पद जो किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम पद के अनिश्चित परिमाण का बोध कराएँ, 'अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण' कहलाते हैं।

**जैसे** : थोड़ा पानी, कई मन आदि।

**(घ) संकेतवाचक/सार्वनामिक विशेषण (Demonstrative Adjective):** नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए और अधोरेखांकित शब्दों पर विशेष ध्यान दीजिए -

(i) वे लोग खेल रहे हैं।

(ii) यह घोड़ा बहुत तेज दौड़ता है।

(iii) वह लड़का अच्छा बल्लेबाज है।

(iv) ये लड़कियाँ महाविद्यालय में पढ़ती हैं।

(v) कोई व्यक्ति उधर से गया है।

(vi) आपका घर बहुत सुंदर है।

(vii) मेरा भाई बीमार है।

(viii) तुम्हारी बहन कक्षा में प्रथम आई है।

(ix) आपके पिताजी अच्छे डॉक्टर हैं?

(x) तुम्हारे हाथ में क्या है?

उपर्युक्त वाक्यों में वे, यह, वह, ये, कोई, आपका, मेरा, तुम्हारी, आपके और तुम्हारे ऐसे पद हैं जो सर्वनाम होते हुए भी यहाँ लोग, घोड़ा, लड़का, लड़कियाँ, व्यक्ति, घर, भाई, बहन, पिताजी और हाथ संज्ञाओं की ओर संकेत कर रहे हैं। इसलिए अधोरेखांकित किए गए सभी पद संकेतवाचक विशेषण अथवा सार्वनामिक विशेषण हैं। अत:

जो विशेषण पद किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम की ओर संकेत करते हैं, वे संकेतवाचक अथवा सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।

**जैसे** : ये, यह, वे, वह, कोई आदि।

**परिमाणवाचक और संख्यावाचक विशेषण में अंतर:**

| परिमाणवाचक विशेषण | संख्यावाचक विशेषण |
|---|---|
| (१) उस गिलास में थोड़ा दूध है। | मैदान में कुछ पेड़ खड़े हैं। |
| (२) थोड़ा पानी ले आइए। | कुछ पुस्तकें मुझे दे दो। |
| (३) उस मैदान में बहुत मिट्टी पड़ी है। | मेले में बहुत लोग आए। |
| (४) तुम्हारे खेत में कितने मन गेहूँ हुआ? | तुम्हें कितने रुपए चाहिए? |
| (५) मुझे तीन लीटर पेट्रोल दे दो। | मुझे तीन विद्यार्थी दिखाई दिए। |
| (६) उसे दो गज कपड़ा चाहिए। | मुझे दो कमरे बनवाने हैं। |
| (७) शायद चार किलो आलू गोदाम में रखे हैं। | हमारे घर में चार कुर्सियाँ हैं। |

आपने देखा कि वर्ग एक में आए संज्ञा-शब्दों की विशेषताएँ परिमाण में बताई गई हैं, जबकि वर्ग दो में प्रयुक्त संज्ञा शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द संख्याबोधक हैं, उन्हें तौला या मापा नहीं जा सकता। जिन संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की गिनती हो सके, वे 'संख्यावाचक विशेषण' कहलाते हैं।

**सार्वनामिक विशेषण और सर्वनाम में अंतर -**

यदि सर्वनाम शब्द संज्ञा की विशेषता बताते हुए प्रयुक्त होते हैं, तो वे 'सार्वनामिक विशेषण' कहलाते हैं और यदि अकेले (संज्ञा के स्थान पर) प्रयुक्त हों तो सर्वनाम कहलाते हैं।

**जैसे** :

(१) यह **मेरा** मकान है। (सार्वनामिक विशेषण)

(१) यह मकान **मेरा** है। (सर्वनाम)

(२) यह घर मोहन का है। (सार्वनामिक विशेषण)

(२) यह मोहन का घर है। (सर्वनाम)

**प्रत्यय एवं उपसर्ग जोड़कर बनने वाले विशेषण:**

(i) प्रत्यय जोड़ने पर - इमारत + ई = **इमारती**
व्यवहार + इक = **व्यावहारिक**

(ii) उपसर्ग जोड़ने पर - अ + टल = **अटल**
निर् + आकार = **निराकार**
अ + खाद्य = **अखाद्य**

**विशेषण-रचना तालिका**

| शब्द | विशेषण | शब्द | विशेषण |
|---|---|---|---|
| उदासी | उदास | गर्व | गर्वीला |
| मिठास | मीठा | चमक | चमकीला |
| चाचा | चचेरा | जहर | जहरीला |
| मामा | ममेरा | नोक | नुकीला |
| नीति | नैतिक | रस | रसीला |
| अभिमान | अभिमानी | विष | विषैला |
| अज्ञान | अज्ञानी | सुर | सुरीला |
| ऊपर | ऊपरी | गुण | गुणवान |
| खेल | खिलाड़ी | बुद्धि | बुद्धिमान |
| तप | तपस्वी | भाग्य | भाग्यवान |
| धन | धनी | मूल्य | मूल्यवान |
| पूजा | पुजारी | फल | फलित |
| बाहर | बाहरी | श्री | श्रीमान |
| रोग | रोगी | दया | दयालु |
| विदेश | विदेशी | श्रद्धा | श्रद्धालु |
| अपमान | अपमानित | झगड़ा | झगड़ालू |
| लखनऊ | लखनवी | लड़ना | लड़ाकू |
| कष्ट | कष्टदायी | पेट | पेटू |
| दुख | दुखदायी | टिकना | टिकाऊ |
| सुख | सुखदायी | आराम | आरामदायक |
| आगे | अगला | गाना | गायक |
| नीचे | निचला | रक्षा | रक्षक |
| पीछे | पिछला | भाव | भावुक |
| काँटा | कँटीला | अंतर | आंतरिक |
| खर्च | खर्चीला | आत्मा | आत्मिक |
| इतिहास | ऐतिहासिक | आदर | आदरणीय |
| समाज | सामाजिक | घृणा | घृणित |
| दर्शन | दर्शनीय | दिन | दैनिक |
| पर्वत | पर्वतीय | धर्म | धार्मिक |
| प्रार्थना | प्रार्थनीय | नीति | नैतिक |
| मान | माननीय | पशु | पाशविक |
| राष्ट्र | राष्ट्रीय | पीड़ा | पीड़ित |
| वंदना | वंदनीय | पुराण | पौराणिक |
| स्थान | स्थानीय | प्रकृति | प्राकृतिक |

| शब्द | विशेषण |
|---|---|
| मरना | मरियल |
| सड़ना | सड़ियल |
| जाति | जातीय |
| सम्मान | सम्मानजनक |
| रुचि | रुचिकर |
| हिंसा | हिंसक |
| व्यक्ति | व्यक्तिगत |
| संदेह | संदिग्ध |
| सीमा | सीमांत/सीमित |
| अंत | अंतिम |
| आदि | आदिम |
| दूध | दुधिया |
| भूल | भुलक्कड़ |
| महत्त्व | महत्त्वपूर्ण |

| शब्द | विशेषण |
|---|---|
| पृथ्वी | पार्थिव |
| भूत | भौतिक |
| मूल | मौलिक |
| वर्ष | वार्षिक |
| विज्ञान | वैज्ञानिक |
| संप्रदाय | सांप्रदायिक |
| सप्ताह | साप्ताहिक |
| सुख | सुखी |
| साहित्य | साहित्यिक |
| हर्ष | हर्षित |
| कुल | कुलीन |
| नमक | नमकीन |
| प्रात:काल | प्रात:कालीन |
| रंग | रंगीन |

**प्रश्न निम्नलिखित वाक्यों में आए हुए विशेषण शब्दों को रेखांकित करके उनके भेद लिखिए।**

(१) बूढ़ी काकी में जिह्वा स्वाद के सिवा और कोई चेष्टा शेष न थी।

**उत्तर:** विशेषण शब्द : बूढ़ी (गुणवाचक विशेषण)

(२) तिवारी जी ने अखंड भारतवर्ष का भ्रमण किया है।

**उत्तर:** विशेषण शब्द : अखंड (गुणवाचक विशेषण)

(३) इस वर्ष बड़ी भीषण गरमी पड़ रही थी।

**उत्तर:** विशेषण शब्द : भीषण (गुणवाचक विशेषण)

(४) सबकी अपनी-अपनी सांस्कृतिक परंपरा है।

**उत्तर:** विशेषण शब्द : सांस्कृतिक (गुणवाचक विशेषण)

(५) खुशी इस बात की थी कि ऐसा रोमांचक दृश्य पहली बार देखा।

**उत्तर:** विशेषण शब्द : रोमांचक (गुणवाचक विशेषण)

(६) शीतल हवा के झोकों से मन प्रसन्न हो गया।

**उत्तर:** विशेषण शब्द : शीतल (गुणवाचक विशेषण)

(७) घर में जो सूखा चारा पड़ा था, उसके सामने डालने लगा।

**उत्तर:** विशेषण शब्द : सूखा (गुणवाचक विशेषण)

(८) जिनिया का एक पौधा रास्ते के किनारे पर था।

**उत्तर:** विशेषण शब्द : एक (निश्चित संख्यावाचक विशेषण)

(९) उस दिन लड़के ने तैश में आकर लक्ष्मी की पीठ पर चार डंडे बरसा दिए थे।

**उत्तर:** विशेषण शब्द : चार (निश्चित संख्यावाचक विशेषण)

(१०) रमजानी कुछ क्षण खड़ी रही।

**उत्तर:** विशेषण शब्द : कुछ (अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण)

(११) हमारी शादी में चढ़ावे के नाम पर सिर्फ पाँच ग्राम सोने के गहने आए थे।

**उत्तर:** विशेषण शब्द : पाँच (निश्चित परिमाणवाचक विशेषण)

(१२) करामत अली ने थोड़ा चारा गाय को खिलाया।

**उत्तर:** विशेषण शब्द : थोड़ा (अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण)

(१३) इस मँहगाई के जमाने में सिर्फ सादा चारा देने में ही तीन साढ़े तीन सौ महीने का खर्चा है।

**उत्तर:** विशेषण शब्द : इस (सार्वनामिक विशेषण)

(१४) यह समस्या हमें पहले से पता थी।

**उत्तर:** विशेषण शब्द : यह (सार्वनामिक विशेषण)

(१५) उस गली में पेड़ भी नहीं हैं।

**उत्तर:** विशेषण शब्द : उस (सार्वनामिक विशेषण)

## (४) क्रिया (Verb):

'क्रिया' का अर्थ होता है 'काम'। काम या तो होता है अथवा किया जाता है।

जैसे : (अ) ड्राइवर ट्रक चला रहा है।

(ब) अध्यापक कक्षा में पढ़ाते हैं।

(क) चिड़िया पेड़ पर बैठी है।

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और अधोरेखांकित किए गए शब्दों को ध्यानपूर्वक देखिए। ये सभी शब्द वाक्यों में काम के करने या होने का बोध करा रहे हैं -

(१) शिक्षिका कविता सुना रही है।

(२) बच्चा खेल रहा है।

(३) तेनाली रमन बहुत बड़े विद्वान थे।

(४) रमेश पुस्तक पढ़ रहा है।

(५) यह एक तोता है।

आपने ध्यान दिया होगा कि उपर दिए गए पहले, दूसरे और चौथे वाक्यों में सुनाने, खेलने और पढ़ने के कार्य किए जा रहे हैं, जबकि तीसरे और पाँचवे वाक्य में थे और है शब्दों से कार्य के होने का संकेत मिल रहा है। इसलिए - ऐसे सभी शब्द, जो काम के होने अथवा करने का बोध करा रहे हों, 'क्रिया' कहलाते हैं। किसी काम के करने अथवा होने का बोध कराने वाले पदों को क्रिया कहते हैं।

क्रिया की परिभाषा से स्पष्ट है कि क्रियाओं को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है - (१) करना (कार्यवाची) (२) होना (अस्तित्ववाची) जैसे : खाना, खेलना, पढ़ना, सोना, देना (कार्यवाची) तथा होना (अस्तित्ववाची) आदि।

**धातु (Root)** : क्रिया के मूलरूप को 'धातु' कहते हैं।

क्रिया के विविध रूप किसी न किसी 'धातु' से ही बनते हैं।

उदाहरण - 'लिख' धातु से लिखा, लिखूँगा, लिखे, लिखो आदि क्रियापद बनाए गए हैं।

## क्रिया के भेद (Kinds of Verb):

**निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और क्रियापदों के अंतर को ध्यान से देखिए।**

(i) रमेश ने खाना **खाया**।

(ii) सुमित **खेल रहा है**।

(iii) अतुल ने वंदना को पुस्तक **दी**।

उपर्युक्त पहले वाक्य में **खाया** क्रिया का कर्ता रमेश है और **खाना** कर्म है, दूसरे वाक्य में **खेल रहा है** क्रिया का कर्ता सुमित है, पर इस वाक्य में कोई कर्म नहीं है। तीसरे वाक्य में दी क्रिया का कर्ता अतुल है किंतु कर्म दो हैं। प्रथम कर्म वंदना है और द्वितीय कर्म पुस्तक है। अतएव इन तीनों वाक्यों में क्रिया के निम्नलिखित तीन रूप देखे जा सकते हैं, जिन्हें क्रिया के भेद कहते हैं -

(क) सकर्मक क्रिया (Transitive Verb)

(ख) अकर्मक क्रिया (Intransitive Verb)

(ग) द्विकर्मक क्रिया (Verb with two objects)

**(क) सकर्मक क्रिया (Transitive Verb):** जिन क्रियाओं में कर्म उपस्थित रहता है, उन्हें 'सकर्मक क्रिया' कहते हैं।

जैसे : (i) आकाश ने चित्र बनाया।

(ii) मैंने पुस्तक पढ़ी।

(iii) तुमने पानी पिया।

(iv) निशांत ने दीपक को बुलाया।

ऊपर दिए गए वाक्यों की क्रियाओं में चित्र, पुस्तक, पानी और दीपक कर्म उपस्थित हैं, अतएव बनाया, पढ़ी, पिया और बुलाया क्रियाएँ सकर्मक हैं।

**(ख) अकर्मक क्रिया (Intransitive Verb):** जिन क्रियाओं में कर्म अनुपस्थित रहता है, उन्हें 'अकर्मक क्रिया' कहते हैं।

जैसे : (i) आकाश सो रहा है। (ii) महिला हँस रही है।

इन वाक्यों में कर्ता है, क्रिया है, किंतु कर्म नहीं है, अतएव ये सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

**विशेष** : कभी-कभी अकर्मक क्रियाएँ सकर्मक भी बनाई जाती हैं। जैसे :

| क्रम | अकर्मक | सकर्मक |
|---|---|---|
| (१) | रवि दौड़ता है। | रवि एक दौड़ दौड़ता है। |
| (२) | सैनिक लड़ता है। | सैनिक लड़ाई लड़ता है। |

**विशेष : सकर्मक तथा अकर्मक क्रिया की पहचान** : मूल क्रिया से क्या, किसे या किस को लगाकर प्रश्न पूछे जाने पर यदि उत्तर कहीं छिपा हुआ होने पर भी मिल जाए तो क्रिया सकर्मक होगी और यदि उत्तर न मिले तो अकर्मक।

जैसे : (१) राजेश वीणा बजाता है। (२) आकाश सो रहा है।

**वाक्य** : (१) में यदि क्रिया से प्रश्न करें 'क्या बजाता है?' तो उत्तर मिलता है - वीणा, अत: 'बजाता है' क्रिया सकर्मक है, परंतु वाक्य (२) में 'क्या सो रहा है?' प्रश्न करने पर कोई उत्तर नहीं होता, अत: 'सो रहा है' क्रिया अकर्मक है।

**(ग) द्विकर्मक क्रिया (Verb with two objects):**

जब किसी क्रिया के साथ दो-दो कर्म जुड़े हों तो ऐसी क्रिया 'द्विकर्मक क्रिया' कहलाती है।

जैसे : (i) माँ ने बहन को खाना दिया। (ii) भाई ने सुनील को पुस्तक दी।

उपर्युक्त वाक्यों में अधोरेखांकित दो-दो कर्म आए हैं, अतएव इन वाक्यों की क्रियाएँ द्विकर्मक क्रिया कहलाती हैं।

**क्रिया के कुछ अन्य भेद:**

(१) **सामान्य क्रिया** : जब केवल एक ही क्रिया का प्रयोग किया जाता है, तो उसे 'सामान्य क्रिया' कहते हैं।

जैसे : तुम कब आए? जल्दी चलो। वह गया। मैं कल जाऊँगा आदि।

(२) **संयुक्त क्रिया** : जब दो या दो से अधिक क्रियाओं का एक साथ प्रयोग किया जाता है, तो उसे 'संयुक्त क्रिया' कहते हैं।

जैसे : नितिन गाने लगा। मैंने खाना खा लिया। वे दोनों खेलने गए।

(३) **प्रेरणार्थक क्रिया** : जब कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य को उसे करने की प्रेरणा देता है, वहाँ 'प्रेरणार्थक क्रिया' होती है। जैसे : माँ बच्चे को आया से सुलवाती है। दादी डाकिए से पत्र लिखवाती है। अध्यापिका छात्रों से पाठ पढ़वाती है।

प्रेरणार्थक क्रिया के दो भेद होते है -

(१) प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया

(२) द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया

**प्रश्न १ निम्नलिखित वाक्यों में आई हुई क्रियाओं को रेखांकित कीजिए और उनके भेद पहचानिए।**

(१) लक्ष्मी ने आज भी दूध नहीं दिया।

उत्तर: सकर्मक क्रिया : नहीं दिया।

(२) असम की राजधानी शिलाँग है।

उत्तर: सकर्मक क्रिया : है

(३) सबसे पहले हम अंजुना बीच पहुँचे।

उत्तर: सकर्मक क्रिया : पहुँचे

(४) सिरचन को बुँदिया क्यों नहीं देती?

उत्तर: सकर्मक क्रिया : देती

(५) हमें यह वृत्ति बदलनी चाहिए।

उत्तर: सकर्मक क्रिया : बदलनी चाहिए

(६) इसमें धनिकों से पूरा सहयोग मिलना चाहिए।

उत्तर: सकर्मक क्रिया : मिलना चाहिए

(७) मैंने दरवाजा खोल दिया।
उत्तर: सकर्मक क्रिया : खोल दिया

(८) जानता था कि यहाँ भी चयन नहीं होगा।
उत्तर: सकर्मक क्रिया : होगा

(९) प्राय: एक साथ ड्यूटी पर जाते।
उत्तर: अकर्मक क्रिया : जाते

(१०) वक्त सब पर आता है।
उत्तर: अकर्मक क्रिया : आता है

(११) मुहल्लेवाले अपनी फुरसत से आते हैं।
उत्तर: अकर्मक क्रिया : आते हैं

(१२) हम आगे बढ़ गए।
उत्तर: अकर्मक क्रिया : बढ़ गए

(१३) मैं तो इस चलाऊँगा नहीं।
उत्तर: अकर्मक क्रिया : चलाऊँगा नहीं

(१४) याद आया बाबू जी आए होंगे।
उत्तर: अकर्मक क्रिया : आए होंगे

(१५) देर रात को आया हूँ।
उत्तर: अकर्मक क्रिया : आया हूँ

**प्रश्न २ निम्नलिखित वाक्यों में संयुक्त क्रिया को पहचानकर उसे रेखांकित कीजिए।**

(१) एक जगह खाने पर चले गए थे।
उत्तर: संयुक्त क्रिया : चले गए थे

(२) सामने से एक कार आ रही थी।
उत्तर: संयुक्त क्रिया : आ रही थी

(३) यह नदी वर्षभर पानी से भरी रहती है।
उत्तर: संयुक्त क्रिया : भरी रहती है

(४) नीला पानी काले पत्थरों पर पछाड़ खाता रहता है।
उत्तर: संयुक्त क्रिया : खाता रहता है

(५) ब्याह तय करने आए हो।
उत्तर: संयुक्त क्रिया : करने आए हो

(६) उमा सहसा चुप हो जाती है।
उत्तर: संयुक्त क्रिया : हो जाती है

(७) आज वह समझा कि सत्य कुछ समय के लिए निराश हो सकता है।
उत्तर: संयुक्त क्रिया : हो सकता है

## अविकारी शब्द (अव्यय) Indeclinable words

जिन शब्दों में लिंग (Gender), वचन (Number), कारक (Case) आदि के अनुसार विकार या परिवर्तन नहीं होता है, उन्हें 'अविकारी' शब्द कहते हैं।

**अविकारी शब्द के चार भेद होते हैं :**

(१) क्रियाविशेषण अव्यय (Adverb)
(२) संबंधसूचक अव्यय (Preposition)
(३) समुच्चयबोधक अव्यय (Conjunction)
(४) विस्मयादिबोधक अव्यय (Interjection)

### (१) क्रियाविशेषण अव्यय (Adverb):

क्रिया की विशेषता बतानेवाले शब्द को **'क्रियाविशेषण अव्यय'** कहते हैं।

- आज, कल, आजकल, परसों, अब, अभी, तभी, कब अचानक, सहसा, अक्सर, चुपचाप, एकदम, हमेशा, लगातार, सदैव, तुरंत, फौरन, पहले
- यहाँ, वहाँ, आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, सामने, बाहर, भीतर, इधर, उधर, आसपास
- धीरे-धीरे, हौले-हौले, बार-बार, पीछे-पीछे, अभी-अभी, कभी-कभी
- बहुत, बिल्कुल, लगभग, काफी, इतना

**विशेष** : क्रियाविशेषण अव्यय चार तरह से क्रिया की विशेषता बतलाते हैं - (१) क्रिया कब हुई? (काल) (Time) (२) क्रिया कहाँ हुई? (स्थान) (Place) (३) क्रिया कैसे हुई? (रीति) (Manner) (४) क्रिया कितनी हुई? (परिमाण) (Quantity)

**प्रश्न १ क्रियाविशेषण अव्यय पहचानिए:**

(i) वह **आज** जाएगा। (कब?) (Adverb of Time)
(ii) नौकर **भीतर** आया। (कहाँ?) (Adverb of Place)
(iii) गाड़ी **धीरे-धीरे** चलती है। (कैसे?) (Adverb of Manner)
(iv) गर्मी **बहुत** बढ़ रही है। (कितनी?) (Adverb of Quantity)

**प्रश्न २ क्रियाविशेषण अव्यय का अर्थपूर्ण वाक्यों में प्रयोग:**

(१) अचानक
वाक्य: बरसात **अचानक** रुक गई। (कैसे?)

(२) बाहर
वाक्य: आप **बाहर** रुकिए। (कहाँ?)

(३) कभी-कभी
वाक्य: गाड़ी **कभी-कभी** बिगड़ जाती है। (कब?)

(४) काफी
वाक्य: समय **काफी** बीत गया। (कितना?)

(२) **संबंधसूचक अव्यय (Preposition)** : जिस अव्यय के द्वारा संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ सूचित होता है, उसे 'संबंधसूचक अव्यय' कहते हैं।

- आगे, पीछे, पहले, उपरांत, नीचे, सामने, पास, आसपास, प्रति, यहाँ, बीच, अंदर, बाहर, द्वारा
- लिए, कारण, सिवा, बदले, अलावा, अतिरिक्त, समान, साथ, ओर, बराबर, तरफ, वजह, भाँति

**विशेष** : प्राय: संबंधसूचक अव्यय से पहले (**का, की, के, रा, री, ने, नी, ने, से**) विभक्ति प्रत्यय (Suffix) होते हैं।

**प्रश्न १ संबंधसूचक अव्यय पहचानिए।**

(i) सीट **के नीचे** सामान रखा हुआ था।
(ii) आप**की खातिर** मुझे तकलीफ झेलनी पड़ी।
(iii) जहाज़ मेरी **तरफ** बढ़ने लगा।
(iv) तुम्हारे **बाद** यहाँ कोई नहीं आया।
(v) हमें आप**का साथ** चाहिए।

**प्रश्न २ संबंधसूचक अव्यय का अर्थपूर्ण वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

(१) साथ
वाक्य: राम **के साथ** सीता भी वन को गई।
(२) कारण
वाक्य: दुर्योधन **के कारण** महाभारत हुआ।
(३) बीच
वाक्य: राम और भरत **के बीच** अथाह प्रेम था।
(४) तरह
वाक्य: पिता **की तरह** बेटा भी इमानदार था।
(५) पास
वाक्य: मेरे घर **के पास** तालाब है।

(३) **समुच्चयबोधक अव्यय (Conjunction)** : दो शब्दों या दो वाक्यों को जोड़नेवाले अव्यय को **'समुच्चयबोधक अव्यय'** कहते हैं।

- और, तथा, एवं (And)
- अथवा, या (or)
- किंतु, परंतु, लेकिन, पर (But)
- क्योंकि (Because)
- बल्कि (But also)
- अन्यथा, वरना, नहीं तो, फिर भी (otherwise, or else)
- इसलिए, ताकि (That's why, so that)
- मानो (Suppose)
- कि (that)
- अगर, मगर, 'यदि ... तो', 'अगर ... तो', (If ... then)
- 'यद्यपि ... तथापि'। (eventhough ... then)

**प्रश्न १ समुच्चयबोधक अव्यय पहचानिए।**

(i) पेड़ में फल **और** फूल थे।
(ii) पिताजी चाहते थे **कि** मैं पायलट बनूँ।
(iii) वे आगे बढ़ने लगे **लेकिन** चौकीदार ने उन्हें रोका।
(iv) उसने मेहनत से पढ़ाई की **पर** उसके अंक अच्छे नहीं थे।

**प्रश्न २ समुच्चयबोधक अव्यय का अर्थपूर्ण वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

(१) क्योंकि
वाक्य: सेठ जी को पुलिस ने पकड़ा **क्योंकि** उन्होंने कानून तोड़ा था।
(२) इसलिए
वाक्य: सभी लोगों ने देश के लिए अपनी जान दे दी **इसलिए** देश आज़ाद हुआ।
(३) ताकि
वाक्य: हमें एकजुट होना चाहिए **ताकि** हम भ्रष्टाचार का मुकाबला कर सकें।
(४) अथवा
वाक्य: हम शिमला जाएँगे **अथवा** मसूरी।

(४) **विस्मयादिबोधक अव्यय (Interjection)** : जिन अव्ययों के द्वारा आश्चर्य, दुख, सुख, नफरत आदि भाव प्रकट होते हैं, उन्हें - **'विस्मयादिबोधक अव्यय'** कहते हैं।

- हाँ, जी हाँ, अच्छा, शाबाश, भला, हाय, आह, ओह, उफ, आहा, अरे, अरी, अजी, हे भगवान, भई, सच, वाह, ओहो।

**विशेष** : यह अव्यय वाक्य के प्रारंभ में आता है तथा इस अव्यय के बाद (, या !) चिह्न लगा होता है।

**प्रश्न १ विस्मयादिबोधक अव्यय पहचानिए।**

(i) **अरे**, यह तुम्हे क्या हो गया ?
(ii) **हाँ**, यह तुम्हारी साइकिल है।
(iii) **अच्छा** ! तो घबराने की कोई बात नहीं।
(iv) **वाह** ! तुमने बहादुरी का काम किया।

**प्रश्न २ विस्मयादिबोधक अव्यय का अर्थपूर्ण वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

(१) शाबास
वाक्य: **शाबास** ! तुम परीक्षा में प्रथम आए।
(२) छि
वाक्य: **छि** ! कितनी बदबू आ रही है।
(३) वाह
वाक्य: **वाह** ! तुम्हारे विचार कितने अच्छे हैं।
(४) उफ
वाक्य: **उफ** ! आज बहुत गर्मी है।
(५) अच्छा
वाक्य: **अच्छा** ! तो यह काम तुमने किया ?

## अभ्यास प्रश्न

**प्रश्न १ निम्नलिखित वाक्यों में आए हुए अव्ययों को रेखांकित कीजिए और अव्यय भेद लिखिए।**

(१) आज बुद्धिराम के बड़े लड़के मुखराम का तिलक आया था।
उत्तर: आज : क्रियाविशेषण अव्यय

(२) सरकार अब ज्यादा चीनी लेने वालों पर टैक्स लगाएगी।

उत्तर: अब : क्रियाविशेषण अव्यय

(३) अभी समाज में यह चल रहा है।

उत्तर: अभी : क्रियाविशेषण अव्यय

(४) शायद वह तुमसे मिलने भी आएगा।

उत्तर: शायद : क्रियाविशेषण अव्यय

(५) इसके पहले एक मोटर मुझे भारी दामों में खरीद चुकी है।

उत्तर: इसके पहले : क्रियाविशेषण अव्यय

(६) चुपचाप पड़ा रहूँगा।

उत्तर: चुपचाप : क्रियाविशेषण अव्यय

(७) पत्रों का संग्रह भी काफी है लेकिन वह व्यवस्थित नहीं है।

उत्तर: लेकिन : समुच्चयबोधक अव्यय

(८) यह तो साफ दिखता है कि आर्थिक विषमता का एक मुख्य कारण बुद्धि का ऐसा उपयोग ही है।

उत्तर: कि : समुच्चयबोधक अव्यय

(९) रातों में भी गरम लू और उमस से चैन नहीं मिलता था।

उत्तर: और : समुच्चयबोधक अव्यय

(१०) तुम जब मिरजापुर आओगी और लोग गहनों से संबंध में पूछेंगे तो क्या कहोगी ?

उत्तर: और : समुच्चयबोधक अव्यय

(११) दूध में कोई मिठाई न मिले तो कोई बात नहीं किंतु बात में जरा भी झाला वह नहीं बरदाश्त कर सकता।

उत्तर: किंतु : समुच्चयबोधक अव्यय

(१२) पत्नी की मृत्यु के बाद एक टूटन आ गई थी।

उत्तर: के बाद : संबंधसूचक अव्यय

(१३) उसके लिए आप चिंता न करें।

उत्तर: के लिए : संबंधसूचक अव्यय

(१४) जिनिया के पौधे को मैंने अपने सिरहाने के पास लगा दिया।

उत्तर: के पास : संबंधसूचक अव्यय

(१५) मैंने बाबू जी के कपड़ों की तरफ ध्यान देना शुरू किया था।

उत्तर: की तरफ : संबंधसूचक अव्यय

(१६) आप भी अपनी रूचि के अनुसार हाथ आजमा सकते हैं।

उत्तर: के अनुसार : संबंधसूचक अव्यय

(१७) इसके विपरीत अंजुना बीच गहरा और नीले पानीवाला है।

उत्तर: के विपरीत : संबंधसूचक अव्यय

(१८) पत्थरों के बीच में पानी भर गया है।

उत्तर: के बीच : संबंधसूचक अव्यय

(१९) मुझे सोया जानकर वापस जाने के बजाय वे सोचने लगे।

उत्तर: के बजाय : संबंधसूचक अव्यय

(२०) ओह! कंबख्त ने कितनी बेदर्दी से पीटा है।

उत्तर: ओह! : विस्मयादिबोधक अव्यय

(२१) हँ हँ हँ! तकल्लुफ किस बात का।

उत्तर: हँ हँ हँ!: विस्मयादिबोधक अव्यय

(२२) अबे! धीरे-धीरे चल।

उत्तर: अबे! विस्मयादिबोधक अव्यय

## स्वाध्याय

**प्रश्न १ निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्दों को पहचानकर रेखांकित कीजिए और उसके भेद लिखिए।**

(i) कोमल मीठा गाती है।

(ii) विजय मेहनती लड़का है।

(iii) उसने आज सफेद वस्त्र पहने हैं।

(iv) हिमालय एक ऊँचा पर्वत हैं।

(v) उसके पास चार किताबें हैं।

(vi) वह आदमी बहुत इमानदार है।

**प्रश्न २ निम्नलिखित वाक्यों के अधोरेखांकित अव्ययों का भेद लिखिए।**

(i) धीरे-धीरे सँपेरे ने साँप को पिटारे में बंद किया।

(ii) पहले तो उसने इधर-उधर फन मारे।

(iii) हाय! यह लाचारी।

(iv) उसके भीतर से वह सदा सोचा करता और कहा करता, "हे भगवान!"

**प्रश्न ३ निम्नलिखित वाक्यों में आए अव्यय को चुनकर उनके भेद लिखिए।**

(i) इसके पश्चात वे सेवाक्षेत्र में आईं।

(ii) आश्रमों और औषधालयों की स्थापना की।

(iii) सम्मान के साथ विदा किया गया।

(iv) रेलगाड़ी सर-सर भागती हुई आगे निकल गई।

**प्रश्न ४ निम्नलिखित अव्ययों को पहचानकर अव्यय के रूप में ही अर्थपूर्ण वाक्यों में प्रयोग कीजिए। प्रत्येक अव्यय के लिए एक स्वतंत्र वाक्य हो। प्रयुक्त अव्यय को अधोरेखांकित कीजिए।**

| | | |
|---|---|---|
| (i) हे भगवान! | (ii) बिना | (iii) लेकिन |
| (iv) की ओर | (v) बिल्कुल | (vi) पास |
| (vii) इसलिए | (viii) सामने | (ix) काश! |

❖❖❖

# २ क्रिया के काल

जिसके द्‌वारा क्रिया के होने या करने के समय का ज्ञान होता है, उसे काल कहते हैं। काल के तीन भेद होते हैं:

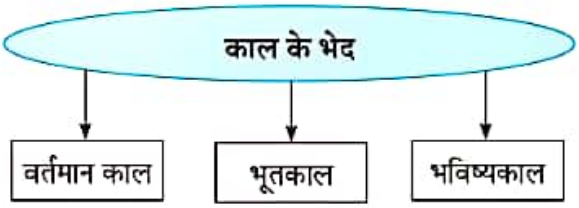


(१) **वर्तमान काल** : क्रिया के जिस रूप से क्रिया के चल रहे समय का बोध हो, उसे 'वर्तमान काल' कहते हैं।

उदा. रमेश पुस्तक **पढ़ता है।**

(२) **भूतकाल** : क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय का बोध हो, उसे 'भूतकाल' कहते हैं।

उदा. माँ ने खाना **बनाया था।**

(३) **भविष्यकाल** : क्रिया के जिस रूप से क्रियाएँ आनेवाले समय में होने का बोध कराएँ; उसे 'भविष्यकाल' कहते हैं।

उदा. सुनील विद्‌यालय **जाएगा।**

## वर्तमान काल

**वर्तमान काल के तीन भेद होते हैं :**

(१) **सामान्य वर्तमान काल** : क्रिया के अंत में प्राय: ता है, ती है, ती हैं, ते हैं, ता हूँ, ती हूँ, ते हो, ती हो लगा रहता है।

उदा. माँ बाजार **जाती है।**

(२) **अपूर्ण वर्तमान काल** : क्रिया के अंत में रहा है, रही है, रही हैं, रहे हैं, रहा हूँ, रही हूँ, रहे हो, रही हो लगा रहता है।

उदा. माँ बाजार **जा रही है।**

(३) **पूर्ण वर्तमान काल** : क्रिया के अंत में आ है/या है/इ है/ए है लगा रहता है।

उदा. माँ बाजार **गई है।**

## भूतकाल

**भूतकाल के तीन भेद होते हैं :**

(१) **सामान्य भूतकाल** : क्रिया के अंत में आ/या/ई ए लगा रहता है। (था, थी, थीं, थे का प्रयोग नहीं होता है)

उदा. विजय खेलने **गया।**

(२) **अपूर्ण भूतकाल** : क्रिया के अंत में रहा था, रही थी, रही थीं, रहे थे लगा रहता है।

उदा. विजय खेलने **जा रहा था।**

(३) **पूर्ण भूतकाल** : क्रिया के अंत में आ, या, इ, ए, था, थी, थीं, थे लगा रहता है।

उदा. विजय खेलने **गया था।**

## भविष्यकाल

**भविष्यकाल के तीन भेद होते हैं :**

(१) **सामान्य भविष्यकाल** : जिस क्रिया से यह पता चले कि अब क्रिया सामान्य रूप से होने वाली है।

उदा. संजय पुस्तक **पढ़ेगा।**

(२) **संभाव्य भविष्यकाल** : क्रिया के भविष्य में होने की संभावना हो।

उदा. हो सकता है कल **बरसात हो।**

(३) **हेतु-हेतु मद्‌ भविष्यकाल** : भविष्य काल का वह रूप, जिसमें क्रिया का होना किसी कारण पर निर्भर हो।

उदा. तुम मेहनत करोगे, तो सफल हो **जाओगे।**

## अभ्यास प्रश्न

**प्रश्न १ निम्नलिखित वाक्यों का कोष्ठक में दी गई सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए।**

(१) उसमें कुछ खुरचन गिरी थी। (सामान्य वर्तमान काल)

उत्तर: उसमें कुछ खुरचन गिरती है।

(२) पाँच मिनट में पिटारी खाली हो गई। (सामान्य भविष्यकाल)

उत्तर: पाँच मिनट में पिटारी खाली हो जाएगी।

(३) सहसा कानों में आवाज आई। (अपूर्ण वर्तमान काल)

उत्तर: सहसा कानों में आवाज आ रही है।

(४) प्राण को मन से अलग करना पड़ेगा। (सामान्य भूतकाल)

उत्तर: प्राण को मन से अलग करना पड़ा।

(५) मन की गति आगे तक है। (पूर्ण भूतकाल)

उत्तर: मन की गति आगे तक थी।

(६) आपने भ्रमण तो काफी किया है। (अपूर्ण भूतकाल)

उत्तर: आप भ्रमण तो काफी कर रहे थे।

(७) मेरे पास बहुत से पत्र आते हैं। (पूर्ण वर्तमान काल)

उत्तर: मेरे पास बहुत से पत्र आए हैं।

(८) अब उनकी तरफ ध्यान देने की इच्छा नहीं होती। (पूर्ण भूतकाल)

उत्तर: अब उनकी तरफ ध्यान देने की इच्छा नहीं हुई थी।

(९) लेकिन अब तक कुछ हो नहीं पाया है। (सामान्य भूतकाल)

उत्तर: लेकिन अब तक कुछ हो नहीं पाया।

(१०) उसके लिए आप चिंता न करें। (सामान्य वर्तमान काल)

उत्तर: उसके लिए आप चिंता नहीं करते हैं।

(११) मैंने स्कूल से लौटकर वह सब कर डाला। (पूर्ण वर्तमान काल)

उत्तर: मैंने स्कूल से लौटकर वह सब कर डाला है।

(१२) अब नवंबर आएगा (सामान्य वर्तमान काल)

उत्तर: अब नवंबर आता है।

(१३) हम इंपाला शेवरलेट लेकर गए थे। (अपूर्ण वर्तमान काल)

उत्तर: हम इंपाला शेवरलेट लेकर जा रहे हैं।

(१४) एक जगह खाने पर चले गए थे। (सामान्य भूतकाल)

उत्तर: एक जगह खाने पर चले गए।

(१५) वे आगे प्रश्न करते हैं। (सामान्य भविष्यकाल)

उत्तर: वे आगे प्रश्न करेंगे।

(१६) लेकिन दरवाजे पर दस्तक फिर पड़ी। (सामान्य वर्तमान काल)

उत्तर: लेकिन दरवाजे पर दस्तक फिर पड़ती है।

## स्वाध्याय

**प्रश्न १ निम्नलिखित वाक्यों के काल पहचानकर उसके भेद लिखिए।**

(i) अब वह काम में जुट जाएगी।

(ii) उस समय वे पूजा करेंगे।

(iii) वह दूध मेज पर रखती है।

(iv) घोड़ा बेदम हो गया है।

(v) आनंद का क्षण आ गया था।

(vi) परिवार ने समाचार पढ़ा।

(vii) उन्हें अक्ल आ जाती है।

(viii) बहुत से नेता आए।

(ix) समय आ गया।

(x) फूलों के बाद लंबी फलियाँ निकलेंगी।

(xi) हम चुप हो गए।

(xii) वह लगातार रो रहा था।

(xiii) बकरी दीवार के नीचे दब जाएगी।

(xiv) नारायण दास पूर्व की ओर जाएगा।

(xv) वे गर्व महसूस करते हैं।

**प्रश्न १ निम्नलिखित वाक्यों का कोष्ठक में दी गई सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए।**

(i) पूजा का सामान कितना लगता है। (सामान्य भविष्यकाल)

(ii) पंडित परमसुख मुस्कुराए। (अपूर्ण भूतकाल)

(iii) यह तो पंडित जी ठीक कह रहे हैं। (सामान्य वर्तमान काल)

(iv) हिरन भूमि पर लोट गया था। (सामान्य भूतकाल)

(v) वह बिल्कुल बेसुध हो गया। (सामान्य भविष्यकाल)

(vi) गाडी आ रही है। (पूर्ण भूतकाल)

(vii) तुम बहुत थक गए होगे। (पूर्ण वर्तमान काल)

(viii) एक कवि सम्मेलन में दोनों साथ गए। (सामान्य भविष्यकाल)

(ix) वह गाड़ी तो अब बिक गई है। (सामान्य भूतकाल)

(x) बुराई की घड़ी आ गई थी। (सामान्य भूतकाल)

(xi) कोई खास विचार किसी खास शब्द में ही समाएगा। (सामान्य वर्तमान काल)

(xii) परंतु यही आज भारी होगा। (अपूर्ण वर्तमान काल)

(xiii) आनंद भवन अतिथियों से भरा हुआ था। (पूर्ण वर्तमान काल)

(xiv) किसी तरह का वे मौका ही नहीं देते हैं। (सामान्य भूतकाल)

(xv) वे तौलकर बोलेंगे। (अपूर्ण भूतकाल)

(xvi) ये नीम के पेड़ बरगद, पीपल आदि के समान फैले हुए हैं। (पूर्ण भूतकाल)

(xvii) वह रो रहा था। (सामान्य भविष्यकाल)

(xviii) अब क्या हो रहा है? (सामान्य भविष्यकाल)

(xix) चूनेवाले को पकड़कर लाया जाता है। (सामान्य भूतकाल)

(xx) सिपाही उसे पकड़कर ले जाते हैं। (अपूर्ण भूतकाल)

❖❖❖

# ३ संधि

**संधि :** दो वर्णों के परस्पर मिलने से स्वर तथा व्यंजन में जो परिवर्तन आता है; उसे **'संधि'** कहते है।

जैसे : शब्द + अर्थ = शब्दार्थ

संधि का अर्थ है - जोड़ या मेल। व्याकरण की दृष्टि से संधि का अर्थ है - वर्णों में मेल।

**संधि के प्रकार :** संधि तीन प्रकार की होती हैं।

(१) स्वर संधि
(२) व्यंजन संधि
(३) विसर्ग संधि

## स्वर संधि

दो स्वरों के मेल से किसी एक स्वर या दोनों स्वरों में जो परिवर्तन होता है, वह 'स्वर संधि' कहलाता है।

**स्वर संधि के प्रकार :** स्वर संधि पाँच प्रकार की होती है।

(१) दीर्घ संधि (२) गुण संधि (३) वृद्धि संधि
(४) यण संधि (५) अयादि संधि

(१) **दीर्घ संधि :** जब दो समान वर्ण अथवा स्वर पास-पास आते हैं तो दोनों मिलकर उसी वर्ण का दीर्घ स्वर बन जाते हैं, इसे 'दीर्घ संधि' कहते हैं। (ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के आगे क्रमश: आ, ई, ऊ, बन जाते हैं।)

जैसे :

| अ + अ = आ | अ + आ = आ |
|---|---|
| राम + अवतार = रामावतार | पर + आत्मा = परमात्मा |
| परम + अर्थ = परमार्थ | शून्य + आकार = शून्याकार |
| गंगा + अमृत = गंगामृत | प्रतीक्षा + अर्थ = प्रतीक्षार्थ |
| **आ + आ = आ** | **इ + इ = ई** |
| महा + आत्मा = महात्मा | मुनि + इंद्र = मुनींद्र |
| दया + आनंद = दयानंद | गिरि + ईश = गिरीश |
| रवि + इंद्र = रवींद्र | कपि + ईश्वर = कपीश्वर |
| **ई + इ = ई** | **ई + ई = ई** |
| योगी + इंद्र = योगींद्र | जानकी + ईश = जानकीश |
| नारी + इच्छा = नारीच्छा | पत्नी + ईश्वर = पत्नीश्वर |
| लघु + उत्तर = लघूत्तर | भानु + उदय = भानूदय |
| **उ + ऊ = ऊ** | **ऊ + उ = ऊ** |
| सिंधु + ऊर्जा = सिंधूर्जा | वधू + उत्सव = वधूत्सव |
| लघु + ऊर्मि = लघूर्मि | भू + उद्धार = भूद्धार |

(२) **गुण संधि :**

(i) यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' आए तो 'ए' बन जाता है।
(ii) 'अ' या 'आ' के बाद 'उ' या 'ऊ' आए तो 'ओ' बन जाता है।
(iii) 'अ' या 'आ' के बाद 'ऋ' आए तो 'अर्' हो जाता है।

जैसे :

| अ + इ = ए | अ + ई = ए |
|---|---|
| नर + इंद्र = नरेंद्र | गण + ईश = गणेश |
| शुभ + इच्छा = शुभेच्छा | सुर + ईश = सुरेश |
| रमा + इंद्र = रमेंद्र | लंका + ईश = लंकेश |
| यथा + इष्ट = यथेष्ट | महा + ईश्वर = महेश्वर |
| **अ + उ = ओ** | **आ + ऊ = ओ** |
| पर + उपकार = परोपकार | सूर्य + उष्मा = सूर्योष्मा |
| पूर्व + उदय = पूर्वोदय | मुख + ऊर्जा = मुखोर्जा |
| महा + उदय = महोदय | गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि |
| गंगा + उत्सव = गंगोत्सव | महा + ऊष्मा = महोष्मा |
| **आ + ऋ = अर्** | **अ + ऋ = अर्** |
| महा + ऋषि = महर्षि | सप्त + ऋषि = सप्तर्षि |
| राजा + ऋषि = राजर्षि | देव + ऋषि = देवर्षि |

(३) **वृद्धि संधि :**

(i) यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आते हैं, तो 'ऐ' हो जाता है।
(ii) 'अ/आ' के बाद 'ओ' या 'औ' आते हैं, तो 'औ' हो जाता है।

जैसे :

| अ + ए = ऐ | अ + ऐ = ऐ |
|---|---|
| धन + एक = धनैक | मत + ऐक्य = मतैक्य |
| हित + एषि = हितैषी | राज + ऐश्वर्य = राजैश्वर्य |
| सदा + एव = सदैव | महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य |
| तथा + एव = तथैव | माता + ऐश्वर्य = मातैश्वर्य |
| **अ + ओ = औ** | **अ + औ = औ** |
| दंत + ओष्ठ = दंतौष्ठ | जल + औध = जलौध |
| परम + ओज = परमौज | देव + औदार्य = दैवौदार्य |
| महा + ओजस्वी = महौजस्वी | महा + औध = महौध |
| महा + ओज = महौज | महा + औषध = महौषध |

(४) **यण संधि :**

(i) यदि 'इ' या 'ई' के आगे कोई भिन्न स्वर आए, तो 'य्' बन जाता है।
(ii) 'ऋ' के बाद कोई भिन्न स्वर आए, तो 'र' बन जाता है।

जैसे :

| इ + अ = य | इ + आ = या |
|---|---|
| गति + अवरोध = गत्यवरोध | अभि + आगत = अभ्यागत |
| अति + अंत = अत्यंत | वि + आप्त = व्याप्त |
| **इ + उ = यु** | **इ + ऊ = यू** |

| | |
|---|---|
| अभि + उदय = अभ्युदय<br>उपरि + उक्त = उपर्युक्त | प्रति + ऊष = प्रत्यूष<br>वि + ऊह = व्यूह |
| **इ + ए = ये** | **ई + अ = य** |
| प्रति + एक = प्रत्येक<br>अधि + एता = अध्येता | नदी + अर्पण = नद्यर्पण<br>देवी + अर्पण = देव्यर्पण |
| **ई + आ = या** | **ई + उ = यु** |
| देवी + आराधना = देव्याराधना<br>सखी + आगमन = सख्यागमन | सखी + उचित = सख्युचित<br>नदी + उद्गम = नद्युद्गम |
| **ई + ऊ = यू** | **उ + अ = व** |
| नदी + ऊर्मि = नद्यूर्मि | मनु + अंतर = मन्वंतर |
| **उ + आ = वा** | **उ + इ = वि** |
| सु + आगत = स्वागत<br>मधु + आलय = मध्वालय | अनु + इत = अन्वित<br>अनु + इति = अन्विति |
| **उ + ई = वी** | **उ + ए = वे** |
| अनु + ईक्षण = अन्वीक्षण<br>अनु + ईक्षक = अन्वीक्षक | अनु + ऐषण = अन्वेषण<br>अनु + एषक = अन्वेषक |
| **ऊ + आ = वा** | **ऋ + अ = र** |
| वधू + आगमन = वध्वागमन<br>भू + आदि = भ्वादि | मातृ + अनुमति = मात्रानुमति<br>पितृ + अनुमति = पित्रनुमति |
| **ऋ + इ = रि** | **ऋ + उ = रू** |
| पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा<br>मातृ + इच्छा = मात्रिच्छा | भ्रातृ + उपदेश = भ्रात्रुपदेश<br>पितृ + उपदेश = पित्रुपदेश |

(५) **अयादि संधि :** यदि 'ए', 'ऐ', 'ओ' या 'औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आता है, तो 'ए' का अय, 'ऐ' का 'आय', 'ओ' का 'अव' तथा 'औ' का आव हो जाता है।

| | |
|---|---|
| **ए + अ = अय** | **ऐ + अ = आय** |
| ने + अन = नयन<br>चे + अन = चयन | नै + अक = नायक<br>गै + अक = गायक |
| **ऐ + इ = आयि** | **ओ + अ = अव** |
| नै + इका = नायिका<br>गै + इका = गायिका | पो + अन = पवन<br>भो + अन = भवन |
| **ओ + अ = आव** | **ओ + इ = अवि** |
| पौ + अन = पावन<br>पौ + अक = पावक | पो + इत्र = पवित्र<br>भो + इष्य = भविष्य |
| **औ + इ = आवि** | **औ + उ = आवु** |
| नौ + इक = नाविक | भौ + अक = भावुक |

## व्यंजन संधि

जब किसी व्यंजन के बाद कोई स्वर या व्यंजन आता है और दोनों के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे 'व्यंजन संधि' कहते है।

## व्यंजन संधि के नियम

(i) **वर्ण के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण से परिवर्तन-**
यदि 'क्, च्, ट्, त्, प्' के बाद किसी वर्ग का तीसरा या चौथा व्यंजन ('ग्', 'घ', 'ज्', 'झ्', 'ड्', 'ढ्', 'द्', 'ध्', 'ब', 'भ्') अथवा 'य्', 'र्', 'ल्', 'व्', 'ह्' या कोई स्वर आ गए, तो वर्ग का पहला वर्ण अपने ही वर्ग के तीसरे वर्ण में बदल जाता है।

जैसे :

| **क् → ग्** | **च् → ज्** |
|---|---|
| दिक् + गज = दिग्गज<br>वाक् + दत्ता = वाग्दत्ता | अच् + अंत = अजंत<br>अच् + अंबु = अजंबु |
| **द् → ड्** | **त् → द्** |
| षट् + आनन = षडानन<br>षट् + दर्शन = षड्दर्शन | तत् + भव = तद्भव<br>जगत् + ईश = जगदीश |

(ii) **वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तन :**
किसी वर्ग के पहले या तीसरे व्यंजन के बाद यदि कोई नासिक्य व्यंजन (जिनका उच्चारण 'नाक' की सहायता से होता है।)

जैसे : 'ङ्', 'ञ्', 'ण्', 'न्', 'म्') आता है, तो वर्ग के पहले या तीसरे व्यंजन के स्थान पर अपने ही वर्ग का पाँचवाँ वर्ण आ जाता है।

| **क् → ङ्** |
|---|
| वाक् + मय = वाङ्मय<br>दिक् + नाद = दिङ्नाद |
| **त् → न्** |
| चित् + मय = चिन्मय<br>सत् + मति = सन्मति |
| **ट् → ण्** |
| षट् + मास = षण्मास<br>षट् + मुख = षण्मुख |

(iii) यदि 'त्' के बाद 'च्', 'छ्', 'ज्', 'झ्', 'ट्', 'ठ्', 'ड्', 'ढ्', 'ल्' हो तो -

| **त् + च् = च्** | **त् + छ् = च्** |
|---|---|
| सत् + चरित्र = सच्चरित्र<br>सत् + चित् = सच्चित् | जगत् + छाया = जगच्छाया<br>उत् + छिन्न = उच्छिन्न |
| **त् + ज् = ज्** | **त् + ट् = ट्** |
| सत् + जन = सज्जन<br>जगत् + जननी = जगज्जननी | तत् + टिका = तट्टीका<br>सत् + टीका = सट्टीका |
| **त् + ड् = ड्** | **त् + ल् = ल्** |
| उत् + डयन = उड्डयन | उत् + लेख = उल्लेख |

(iv) यदि 'त्' के बाद 'श्' व्यंजन आता है, तो 'त्' का 'च्' हो जाता है और 'श्' व्यंजन 'छ्' में बदल जाता है।

जैसे :

**त् + श् = च्छ**

(i) उत् + श्वास = उच्छ्वास

(ii) उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

(v) यदि 'त्' व्यंजन के बाद 'ह्' व्यंजन आता है, तो 'त्' का 'द्' हो जाता है और 'ह्' व्यंजन 'ध्' में बदल जाता है।

जैसे :

**त् + ह् = द्ध**

(i) उत् + हार = उद्धार

(ii) पद् + हति = पद्धति

(vi) यदि किसी स्वर के बाद 'छ' व्यंजन आता है, तो 'छ' से पहले 'च्' व्यंजन जुड़ जाता है।

जैसे : (i) वि + छेद = विच्छेद (ii) स्व + छंद = स्वच्छंद

(vii) 'म्' के बाद जिस वर्ण का व्यंजन आता है, 'म्' उसी व्यंजन के वर्ग का नासिक्य अथवा अनुस्वार ('ङ्' 'ञ', 'ण्', 'न्', 'म्') बन जाता है।

जैसे : (i) सम् + गीत = संगीत (ii) शम् + का = शंका

(viii) 'म्' व्यंजन के बाद यदि 'य', 'र', 'ल', 'व', 'स', 'श', 'ह' व्यंजन हो, तो 'म्' का अनुस्वार हो जाता है।

जैसे : (i) सम् + वत = संवत (ii) सम् + सार = संसार
(iii) सम + लग्न = संलग्न (iv) सम् + यम = संयम

(ix) 'म्' व्यंजन के बाद यदि 'म्' व्यंजन ही आता है, तो 'म्' व्यंजन का द्वित्व ('म्म') हो जाता है।

जैसे :

**म् + म् = म्म्**

(i) सम् + मान = सम्मान

(ii) सम् + मिलित = सम्मिलित

(x) यदि 'स्' व्यंजन के पहले 'अ', 'आ' के अलावा कोई अन्य स्वर आता है, तो 'स्' का 'ष्' हो जाता है।

जैसे :

(i) वि + सम = विषम

(ii) नि + सेध = निषेध

(iii) सु + सुप्त = सुषुप्त

(xi) यदि 'ऋ', 'र्', 'ष्', के बाद 'न्' व्यंजन आता है, तो वह 'ण्' में बदल जाता है।

जैसे :

(i) विष् + नु = विष्णू (ii) पूर + न = पूर्ण
(iii) ऋ + न = ऋण (iv) कृष् + न = कृष्ण
(v) परि + नाम = परिणाम (vi) तृष्ण + ना = तृष्णा

## विसर्ग संधि

विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन संधि आने से विसर्ग में जो परिवर्तन होता है, उसे 'विसर्ग संधि' कहते हैं।

## विसर्ग संधि के नियम

(i) यदि विसर्ग से पहले 'अ' स्वर हो और बाद में 'अ' या वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा व्यंजन हो अथवा 'य्', 'र', 'ल्', 'व', 'ह्' में से कोई भी व्यंजन हो, तो विसर्ग का परिवर्तन 'ओ' में हो जाता है।

जैसे : (i) तप: + बल = तपोबल (ii) अध: + पतन = अधोपतन
(iii) मन: + विनोद = मनोविनोद (iv) मन: + ज = मनोज

(ii) यदि विसर्ग से पहले 'अ', 'आ' के अलावा कोई भी स्वर हो तथा बाद में वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा व्यंजन हो अथवा 'य्', 'र्', 'ल्', 'व्', 'ह्' में से कोई भी व्यंजन हो, तो विसर्ग का परिवर्तन 'र्' में हो जाता है।

जैसे : (i) नि: + धन = निर्धन (ii) पुन: + जन्म = पुनर्जन्म
(iii) नि: + भय = निर्भय (iv) नि: + यात = निर्यात

(iii) यदि विसर्ग के बाद 'त्' या 'स्' हो, तो विसर्ग 'स्' में बदल जाता है।

जैसे : (i) नि: + सार = निस्सार (ii) नम: + ते = नमस्ते

(iv) यदि विसर्ग से पहले कोई स्वर हो और बाद में 'च्', 'छ्', या 'श्' व्यंजन हो, तो विसर्ग का 'श्' हो जाता है।

जैसे : (i) नि: + चल = निश्चल (ii) नि: + छल = निश्छल

(v) यदि विसर्ग से पहले 'इ' या 'उ' हो और विसर्ग के बाद 'क्', 'ख्', 'ट्', 'ठ्', 'प्' 'फ्' में से कोई वर्ण हो, तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है।

जैसे : (i) नि: + ठुर = निष्ठुर (ii) धनु: + टंकार = धनुष्टंकार
(iii) दु: + ट = दुष्ट (iv) नि: + पक्ष = निष्पक्ष

(vi) यदि विसर्ग के बाद 'त्', 'थ्' व्यंजन हो, तो 'स्' हो जाता है।

जैसे : (i) दु: + तर = दु:स्तर (ii) मरू: + थल = मरूस्थल

(vii) यदि विसर्ग के बाद 'र' व्यंजन आता है, तो विसर्ग का लोप हो जाता है और विसर्ग के पहले आने वाला 'ह्स्व' स्वर 'दीर्घ' हो जाता है।

जैसे : (i) नि: + रज = नीरज (ii) नि: + रव = नीरव

(viii) यदि विसर्ग के बाद 'क', 'ख्' अथवा 'प्', 'फ्' व्यंजन आएँ, तो विसर्ग में काई परिवर्तन नहीं होता।

(i) रज: + कण = रज:कण (ii) पय: + पान = पय:पान

अपवाद: (i) नम: + कार = नमस्कार (ii) पुर: + कार = पुरस्कार

(ix) यदि विसर्ग के पहले 'अ', 'आ' स्वर आते हो और बाद में 'अ', 'आ' के भिन्न कोई भी स्वर आए तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

जैसे : (i) अत: + एव = अतएव

## स्वाध्याय

**प्रश्न १ निम्नलिखित संधि-विच्छेद शब्दों के भेद पहचानकर लिखिए।**

(i) सार + अंश (ii) सम् + तोष

(iii) जगत् + ईश (iv) नि: + तेज

(v) उत् + यान (vi) मन: + रथ

(vii) देव + इंद्र (viii) धर्म + आत्मा

(ix) सम् + चय (x) विद्या + अर्थी

(xi) दु: + गुण (xii) सूर्य + अस्त

(xiii) अहम् + कार (xiv) नि: + छल

**प्रश्न २ निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए।**

(i) पर + उपकार (ii) सत् + मित्र

(iii) सति + ईश (iv) सम् + पूर्ण

(v) दु: + जन (vi) सम् + ध्या

(vii) हिम + आलय (viii) दु: + आचार

**प्रश्न ३ निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए।**

(i) भावार्थ (ii) देवालय

(iii) नरेश (iv) संसार

(v) संसाधन (vi) दुस्साहस

(vii) दुर्बल (viii) निराशा

❖❖❖

# ४ वाक्य के भेद

**वाक्य :** सार्थक शब्दों का वह व्यवस्थित समूह जो हमारे विचारों या भावों को पूर्ण रूप से प्रकट करें, 'वाक्य' कहलाता है।

**वाक्य के भेद :** (१) रचना के आधार पर (२) अर्थ के आधार पर

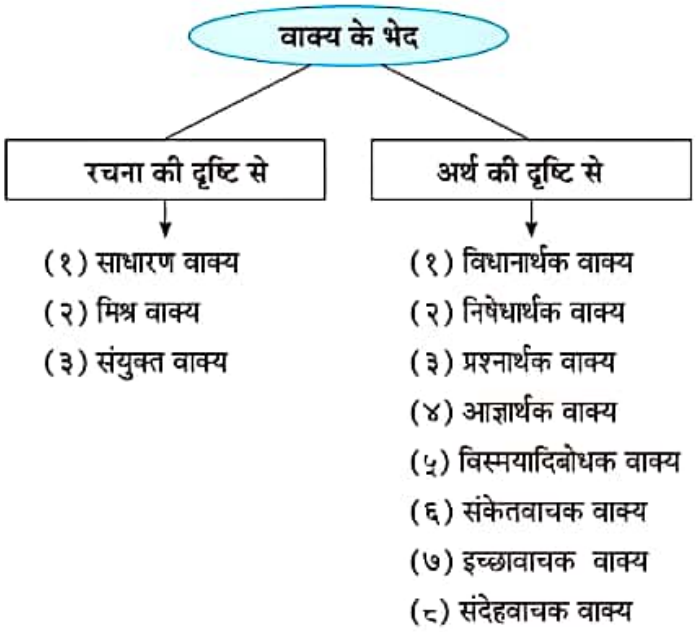


**(१) रचना के आधार पर वाक्य के प्रकारों की जानकारी निम्नलिखित रूप में है :**

**(i) सरल वाक्य :** जिस वाक्य में एक उद्देश्य यानी कर्ता हो व एक ही विधेय यानी क्रिया हो, उसे सरल वाक्य कहते हैं।

**जैसे :** (१) करामत अली ने गाय को चारा खिलाया।

(२) रूपा की आँखे खुलीं।

उपर्युक्त दोनों वाक्य में क्रमश: 'करामत अली' व 'रूपा' ये दोनों उद्देश्य हैं और 'खिलाया' व 'खुलीं' ये दोनों क्रिया हैं। अत: उपर्युक्त वाक्य सरल वाक्य के उदाहरण हैं।

**(ii) संयुक्त वाक्य :** जिस वाक्य में समानता के आधार पर दो उपवाक्य समुच्चयबोधक से जुड़ते हैं, वे संयुक्त वाक्य होते हैं। 'और', 'परंतु', 'अथवा', 'इसलिए', 'या', 'तथा' आदि अव्ययों के योग से ये वाक्य जुड़े हुए होते हैं।

**जैसे :** (१) करामत अली ने गाय को चारा खिलाया और वह घर के बाहर चला गया।

(२) रूपा की आँखें खुलीं और वह इधर-उधर देखने लगी।

(३) फूल हम घर में भी सूँघ सकते हैं परंतु वाटिका की कुछ और ही बात होती है।

(४) वे इस गँवार मंडली में बोलना अथवा सम्मिलित होना अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल समझते थे।

उपर्युक्त चारों वाक्य में दो अलग-अलग वाक्य हैं और वे क्रमश: 'और', 'परंतु', 'अथवा' इन समुच्चयबोधक से जुड़े हुए हैं। अत: उपर्युक्त वाक्य संयुक्त वाक्य के उदाहरण हैं।

**(iii) मिश्रित वाक्य :** जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य तथा दूसरा आश्रित उपवाक्य हो, वह मिश्र वाक्य होता है।

**जैसे :** (१) जैसे ही करामत अली ने गाय को चारा खिलाया वैसे ही वह घर के बाहर चला गया।

(२) जैसे ही रूपा की आँखें खुलीं वैसे ही वह इधर-उधर देखने लगी।

(३) वह झुँझला रही थी कि यह लोग काकी को क्यों बहुत-सी पूड़ियाँ नहीं दे देते।

(४) जब विश्वास हो गया कि अम्मा सो रही है तो अपनी पिटारी उठाई और बूढ़ी काकी की कोठरी की ओर चली।

उपर्युक्त चारों वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य तथा दूसरा आश्रित उपवाक्य है और क्रमश: 'जैसे-वैसे', 'जैसे-वैसे', 'कि', 'जब-तो', इनसे जुड़े हुए हैं। इन्होंने दोनों उपवाक्यों को जोड़कर एक बना दिया है। अत: उपर्युक्त वाक्य मिश्र वाक्य के उदाहरण हैं।

**(२) अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद निम्नलिखित रूप में हैं :**

**(१) विधानार्थक वाक्य :** जिस वाक्य से किसी कार्य के होने का बोध हो; उसे 'विधानार्थक वाक्य' कहते हैं।

**जैसे :** (i) वह वृद्धा असहाय है।

(ii) उसने काकी का हाथ पकड़ा।

(iii) रात के ग्यारह बज गए थे।

(iv) मेहमानों ने भोजन किया।

(v) वह पृथ्वी पर पड़ी रहती थी।

**(२) निषेधार्थक वाक्य :** जिस वाक्य से किसी बात या कार्य के न होने का बोध हो; उसे 'निषेधार्थक वाक्य' कहते हैं।

**जैसे :** (i) वह वृद्धा असहाय नहीं है।

(ii) उसने काकी का हाथ नहीं पकड़ा।

(iii) रात के ग्यारह नहीं बजे थे।

(iv) मेहमानों ने भोजन नहीं किया।

(v) वह पृथ्वी पर नहीं पड़ी रहती थी।

(३) **प्रश्नार्थक वाक्य :** जिस वाक्य से किसी प्रश्न के पूछे जाने का बोध होता है; उसे 'प्रश्नार्थक वाक्य' कहते हैं।

**जैसे :** (i) क्या उन दिनों आप पर गांधी जी के व्यक्तित्व का भी कुछ प्रभाव पड़ा?

(ii) आपका पहला उपन्यास कौन-सा है?

(iii) आप अपने समय के और कौन-कौन-से लेखकों के संपर्क-प्रभाव में रहे?

(iv) पुराने साहित्यकारों में आप किसको अपना आदर्श मानते हैं?

(v) अपने समय के लेखकों में आप किन्हें पसंद करते है?

(४) **आज्ञार्थक वाक्य :** जिस वाक्य से किसी प्रकार की आज्ञा या अनुमति का बोध होता है; उसे 'आज्ञार्थक वाक्य' कहते हैं।

**जैसे :** (i) गाय बेच दो।

(ii) अब उस तख्त को उधर मोड़ दे।

(iii) जल्दी जा।

(iv) गाने को पूरा करो उमा।

(v) अब मुझे कह लेने दीजिए बाबू जी।

(५) **विस्मयादिबोधक वाक्य :** जिस वाक्य से किसी प्रकार के विस्मय, हर्ष, दुख, आश्चर्य या घृणा आदि का बोध होता है; उसे 'विस्मयादिबोधक वाक्य' कहते हैं।

**जैसे :** (i) ओह! कंबख्त ने कितनी बेदर्दी से पीटा है।

(ii) हँ हँ हँ! तकल्लुफ किस बात का।

(iii) अबे! धीरे-धीरे चल।

(iv) अभी ठहरो, बेटी!

(६) **संकेतवाचक वाक्य :** जिस वाक्य से किसी प्रकार के संकेत का बोध होता है; उसे 'संकेतवाचक वाक्य' कहते हैं।

**जैसे :** (i) यह जो तस्वीर टँगी हुई है, वह उसी ने बनाई है।

(ii) जो हम शौक से करना चाहते हैं, वह इसी ने बनाई है।

(iii) लक्ष्मी अगर दूध नहीं देगी, तो इसका क्या करेंगे?

(iv) बहन यदि कहें तो अभी से आगे का विचार करने लगूँगा।

(७) **इच्छावाचक वाक्य :** जिस वाक्य से किसी तरह की इच्छा, आशा, शुभकामना आदि प्रकट हो; वह 'इच्छावाचक वाक्य' होता है।

**जैसे :** (i) तुम विजय प्राप्त करो।

(ii) खुदा करे, तुम्हारी हर मुराद पूरी हो।

(८) **संदेहवाचक वाक्य :** जिस वाक्य से किसी बात का संदेह पता चले; वह 'संदेहवाचक वाक्य' कहलाता है।

**जैसे :** (i) शायद कल बरसात हो।

(ii) तुम तब तक आ चुके रहोगे।

## अभ्यास प्रश्न

**प्रश्न १ निम्नलिखित वाक्यों के अर्थ के आधार पर प्रकार पहचानिए।**

(i) रहमान से गलती हो गई है।

(ii) वह करामत अली के मित्र ज्ञान सिंह की निशानी थी।

(iii) दाग कुछ हल्के पड़ गए थे।

(iv) हम उसका विस्तार नहीं करते।

(v) उस गली में पेड़ भी नहीं है।

(vi) वहाँ चिड़ियाँ घोसले नहीं बनाती।

(vii) इसमें परेशान होने की क्या जरूरत है?

(viii) मैं कहाँ हूँ?

(ix) कहिए अब दर्द कैसा है?

(x) उसे ठीक-ठाक करके नीचे लाना।

(xi) उमा से कह देना कि जरा करीने से आए।

(xii) बीबी जी के कमरे से हारमोनियम उठा ला।

(xiii) खूबसूरती पर टैक्स!

(xiv) थोड़ा और बैठी रहो, उमा!

(xv) जी हाँ, जाइए, जरूर चले जाइए!

(xvi) अनया घर जानेवाली थी।

**उत्तर :** (i) विधानार्थक वाक्य (ii) विधानार्थक वाक्य (iii) विधानार्थक वाक्य (iv) निषेधार्थक वाक्य (v) निषेधार्थक वाक्य (vi) निषेधार्थक वाक्य (vii) प्रश्नार्थक वाक्य (viii) प्रश्नार्थक वाक्य (ix) प्रश्नार्थक वाक्य (x) आज्ञार्थक वाक्य (xi) आज्ञार्थक वाक्य (xii) आज्ञार्थक वाक्य (xiii) विस्मयादिबोधक वाक्य (xiv) विस्मयादिबोधक वाक्य (xv) विस्मयादिबोधक वाक्य (xvi) विधानार्थक वाक्य

**प्रश्न २. निम्नलिखित वाक्यों के रचना के आधार पर प्रकार पहचानिए।**

(i) जब पूरी शक्ति केंद्रित होगी तो 'इंट्यूटिव आई' बनाएगी।

(ii) तुम लोग यह मनाओ कि जब तक जिंदा रहूँ, लिखता रहूँ।

(iii) हम लोगों ने आपका बहुत समय लिया बल्कि आपकी उम्र और स्वास्थ्य का भी लिहाज नहीं किया।

(iv) प्राण को मन से अलग करना पड़ेगा।

(v) अभी बात ताजा है।

(vi) बहन यदि कहें तो अभी से आगे का विचार करने लगूँगा।

(vii) जो महिला आएगी वह अपने खाने-पीने की तथा कपड़ेलत्ते की व्यवस्था करके ही आए।

(viii) उसके लिए पैसे तो सहज मिलेंगे लेकिन कहीं माँगने नहीं जाना है।

**उत्तर:** (i) मिश्र वाक्य (ii) मिश्र वाक्य (iii) संयुक्त वाक्य (iv) सरल वाक्य (v) सरल वाक्य (vi) मिश्र वाक्य (vii) मिश्र वाक्य (viii) संयुक्त वाक्य

**प्रश्न ३. निम्नलिखित वाक्यों में सूचना के अनुसार वाक्य परिवर्तन कीजिए।**

(i) तुम उसे ठीक कर दो और कमरा भी ठीक कर देना। (सरल वाक्य)

**उत्तर:** तुम उसे ठीक करके कमरे को भी ठीक कर देना।

(ii) एक होड़ थी जो हम भाइयों में लगी रहती थी। (सरल वाक्य)

**उत्तर:** हम भाइयों में एक होड़ लगी रहती थी।

(iii) आज श्रमिक भी कर्तव्यपरायण नहीं रहा है। (मिश्र वाक्य)

**उत्तर:** आज जो श्रमिक है वह भी कर्तव्यपरायण नहीं रहा है।

(iv) हमारी विचारधारा में एक बड़ा भारी दोष है। (मिश्र व संयुक्त वाक्य)

**उत्तर:** **मिश्र वाक्य** - हमारी जो विचारधारा है, उसमें एक बड़ा भारी दोष है।

**संयुक्त वाक्य** - हमारी एक विचारधारा है परंतु उसमें एक बड़ा भारी दोष है।

(v) यह गंभीर बुनियादी सवाल है। (मिश्र वाक्य)

**उत्तर:** यह जो एक सवाल है, वह गंभीर बुनियादी है।

(vi) भ्रष्टाचार एक ऐसा कीड़ा है जो देश को घुन की तरह खा रहा है। (संयुक्त वाक्य)

**उत्तर:** भ्रष्टाचार एक कीड़ा है और वह देश को घुन की तरह खा रहा है।

(vii) संसार पर कोई आपत्ति आने वाली है। (मिश्र वाक्य)

**उत्तर:** यह जो संसार है उस पर कोई आपत्ति आने वाली है।

## स्वाध्याय

**प्रश्न १. निम्नलिखित वाक्यों में सूचना के अनुसार वाक्य परिवर्तन कीजिए।**

(i) लाड़ली उनका अभिप्राय समझ न सकी। (मिश्र वाक्य)

(ii) लिखने से पहले तो मैंने पढ़ना शुरू कर दिया था। (संयुक्त वाक्य)

(iii) यहाँ सर्दी अच्छी है। (संयुक्त वाक्य)

**प्रश्न २. निम्नलिखित वाक्यों के रचना के आधार पर प्रकार पहचानिए।**

(i) पर जो असल गहना है वह तो है।

(ii) उन्होंने कहा कि ये सब खादी के कपड़े हैं।

(iii) तुम उसे ठीक कर दो और कमरा भी ठीक कर देना।

**प्रश्न ३. निम्नलिखित वाक्यों के अर्थ के आधार पर प्रकार पहचानिए।**

(i) जो परिश्रम करेगा; वह सफल होगा।

(ii) तुम परिश्रम करते; तो अवश्य सफल होते।

(iii) यदि काकी की अपनी संतान होती तो, शायद इतना उनका बुरा हाल नहीं होता।

❖❖❖

# ५ मुहावरे

'मुहावरा' अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है - अभ्यास। हालाँकि हिंदी में यह शब्द रूढ़ हो गया है, जिसका अर्थ है - जनजीवन में प्रचलित ऐसा वाक्यांश, जो लक्षणा या व्यंजना द्वारा सिद्ध हो और सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ प्रकट करने में हो, जैसे - 'आँखें फाड़कर देखना' का अर्थ वास्तव में आँखें फाड़कर देखना न होकर आश्चर्य से देखना होता है।

इस तरह हम कह सकते हैं कि मुहावरे वे वाक्यांश हैं, जो अपने सामान्य अर्थ से हटकर विशेष अर्थ का बोध कराते हैं।

**विशेष :** जब वाक्य में मुहावरे प्रयोग किए जाते हैं तो उनकी क्रिया कर्ता के लिंग, वचन, कारक के अनुसार परिवर्तित हो जाती है,

**जैसे :** इधर-उधर की हाँकना।

**उदाहरण :**

(i) रमेश दिनभर इधर-उधर की हाँकता रहता है।

(ii) उमा दिनभर इधर-उधर की हाँकती रहती है।

## अभ्यास प्रश्न

**प्रश्न १ निम्नलिखित मुहावरे व उनके अर्थों की उचित जोड़ियाँ मिलाइए।**

| मुहावरे | | अर्थ |
|---|---|---|
| (१) | अंजाम देना | पूरा करना |
| (२) | आँख न उठाना | जरा भी न देखना |
| (३) | कान खड़े रहना | सचेत रहना |
| (४) | कान में गूँजना | सतत सुनाई देना |
| (५) | कान में पहुँचना | मालूम हो जाना |
| (६) | खिल-खिलाकर हँसना | जोर से हँसना |
| (७) | खिसक जाना | दूर हो जाना |
| (८) | खून सवार होना | किसी को मार डालने तक को उद्यत होना |
| (९) | खेल करना | काम बिगाड़ना |
| (१०) | गवारा न करना | स्वीकार न होना |
| (११) | गहरा छू जाना | अति वेदना अनुभव करना |
| (१२) | गाँठ से जाना | हाथ से छूट जाना |
| (१३) | चरणों में झुकना | अति विनम्र होना |

**प्रश्न २ निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

(i) **हृदय में घुल जाना** - कोई बात अंदर तक पहुँच जाना।

**वाक्य :** शिक्षक की बातें **हृदय में घुल गईं।**

(ii) **कान खड़े रहना** - सचेत रहना।

**वाक्य :** बापू का संदेश सुनने के लिए लोगों के **कान खड़े रहते।**

(iii) **हृदय पर दाग देना** - अमिट छाप पड़ना।

**वाक्य :** बापू सीख नहीं देते थे, बल्कि **हृदय पर दाग देते थे।**

(iv) **गवारा न करना** - स्वीकार न कर पाना।

**वाक्य :** मैं बुरी बातों को **गवारा नहीं कर सकता।**

(v) **तोलकर बोलना** - बहुत सोच-समझकर बोलना।

**वाक्य :** एक चालाक व्यक्ति हमेशा **तोलकर बोलता है।**

(vi) **बातों में आ जाना** - बात पर भरोसा कर लेना।

**वाक्य :** भोले-भाले लोग आसानी से दूसरों की **बातों में आ जाते हैं।**

(vii) **शिकार होना** - पीड़ित होना।

**वाक्य :** आज लोग भ्रष्ट व्यवस्था के **शिकार हो रहे हैं।**

(viii) **डोर हाथ में आना** - महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलना।

**वाक्य :** परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने की **डोर मेरे हाथ आ गई।**

(ix) **दीवार टूट जाना** - समस्या खत्म होना।

**वाक्य :** वर्षों से चली आ रही असमानता, भेदभाव और छुआछूत की **दीवार टूट रही है।**

**प्रश्न ३ रेखांकित वाक्यांशों के बदले कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से योग्य मुहावरे का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए।**
**(पैर पकड़ना, चंपत होना, जान में जान आना, कमर कसना, ताँता बँधा रहना)**

(i) मनोज को परीक्षा की तैयारी पूरी करने पर धीरज प्राप्त हुआ।

**उत्तर :** मनोज को परीक्षा की तैयारी पूरी करने पर जान में जान आई।

(ii) चोर ने अपने अपराध के लिए पुलिस से क्षमा याचना की।

**उत्तर :** चोर ने अपने अपराध के लिए पुलिस के पैर पकड़ लिए।

(iii) चोर चोरी करके गायब हो गया।

**उत्तर :** चोर चोरी करके चंपत हो गया।

(iv) रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों से सामना करने के लिए तैयार हो गई।

**उत्तर :** रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों से सामना करने के लिए कमर कस ली।

(v) महात्मा के दर्शन के लिए हमेशा लोगों की भीड़ लगी रहती।

**उत्तर :** महात्मा के दर्शन के लिए हमेशा लोगों का ताँता बँधा रहता।

## स्वाध्याय

**प्रश्न १ निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

(i) पाप कटना (ii) दीवार टूट जाना
(iii) हाथ में आना (iv) लाल-पीला होना
(v) साँस फूलना (vi) सीमा न रहना
(vii) मुँह फेरना (viii) तिलिस्म टूटना
(ix) निगल जाना (x) झेंप जाना
(xi) तौलकर बोलना (xii) मन न लगना

**प्रश्न २ निम्नलिखित मुहावरों के अर्थों को पहचानकर उचित मुहावरा लिखिए।**

(i) बेईज्जत होना (ii) बहुत क्रोधित होना
(iii) पराजित होना (iv) डटकर मुकाबला करना
(v) बड़ी-बड़ी बातें करना (vi) बहुत शर्मिंदा होना
(vii) चुगली करना (viii) बदनाम करना
(ix) अच्छी तरह याद रखना (x) इंकार करना
(xi) मूर्ख बनाना (xii) खुशामद करना

**प्रश्न ३ रेखांकित वाक्यांशो के बदले कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से योग्य मुहावरे का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए।**

(कान लगाकर सुनना, आँखों का तारा, आसमान सर पर उठाना, खरी-खोटी सुनाना)

(i) बच्चे अपनी माँ को बहुत प्यारे लगते हैं।
(ii) विद्यार्थी कक्षा में बहुत शोर कर रहे हैं।
(iii) लोग मंत्री की बातों को ध्यान से सुन रहे थे।
(iv) अध्यापक ने अनिल और विशाल को आपस में लड़ने के लिए खूब डाँटा।

❖❖❖

# ६ वाक्य शुद्धीकरण

वाक्य को शुद्ध रूप से लिखने के लिए हिंदी भाषा की 'वर्णमाला और मात्राओं' का उचित ज्ञान महत्त्वपूर्ण हैं। हिंदी भाषा में कुल १३ स्वर (vowels) हैं, जिन्हें ३३ व्यंजन (consonants) और संयुक्त व्यंजन से मिलाने पर भाषा बनती है।

**हिंदी की वर्णमाला :**

| स्वर मात्राएँ | अ - | आ ा | इ ि | ई ी | उ ु | ऊ ू | ए े |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उदाहरण | अब | आज | इधर | कोई | उधर | ऊपर | एक |
| **स्वर मात्राएँ** | **ऐ ै** | **ओ ो** | **औ ौ** | **अं अनुस्वार** | **अः विसर्ग** | **ऋ ृ** | |
| उदाहरण | ऐनक | ओर | और | अंधा | छिः<br>अतः<br>पुनः | कृष्ण<br>मृत<br>वृद्ध | |

| व्यंजन | क ट | ख ठ | ग ड | घ ढ | ङ ण | च त | छ थ | ज द | झ ध | ञ न |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | प ष | फ स | ब ह | भ | म | य | र | ल | व | श |
| **संयुक्त व्यंजन** | | क्ष (क् + ष = क्ष) | | | | त्र (त् + र = त्र) | | | | |
| | | ज्ञ (ग् + य = ज्ञ) | | | | श्र (श् + र = श्र) | | | | |

**विशेष :**

(१) ड के नीचे बिंदु (.) लगाने पर (ड़) बनता है।
उदाहरण : (ड) डगर, डाली, डब्बा
(ड़) लड़ाई, खिलाड़ी, झगड़ा

(२) ढ के नीचे बिंदु (.) लगाने पर (ढ़) बनता है।
उदाहरण : (ढ) ढोंग, ढूँढना, ढोल
(ढ़) बढ़ना, पढ़ना, चढ़ना

जब हम ध्वनि को अपने भीतर खींचते हैं, तब छोटी मात्रा (ि , ु) आती है और जब हम ध्वनि को अपने बाहर धकेलते हैं, तब बड़ी मात्रा (ी , ू) आती है।

**उदाहरण :**

| छोटी मात्रा (ह्रस्व) छोटी इ (ि) | बड़ी मात्रा (दीर्घ) बड़ी ई (ी) | छोटी मात्रा (ह्रस्व) छोटी उ (ु) | बड़ी मात्रा (दीर्घ) बड़ी ऊ (ू) | ए की मात्रा (े) | ऐ की मात्रा (ै) | ओ की मात्रा (ो) | औ की मात्रा (ौ) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किताब | कीचड़ | कुछ | कूड़ा | केला | कैवल्य | कोयल | कौशल |
| खिलना | खीर | खुश | खूब | खेल | खैर | खोजना | खौलना |
| गिरना | गीला | गुलाब | गूलर | गेरुआ | गैया | गोरा | गौर |
| घिरना | घी | घुड़सवारी | घूमना | घेरना | घैया | घोड़ा | घौद |
| चिड़िया | चीता | चुराना | चूल्हा | चेचक | चैतन्य | चोटी | चौक |
| छिलका | छीलना | छुटकारा | छूट | छेड़ना | छैला | छोटा | छौंकना |
| ज़िद | जीत | जुलूस | जूता | जेल | जैसा | जोड़ना | जौहरी |
| झिड़कना | झील | झुकना | झूठा | झेलना | - | झोली | झौरे |
| टिकट | टीला | टुकड़ा | टूटना | टेढ़ा | टैनरी | टोकरी | टौरना |
| ठिकाना | ठीक | ठुकराना | ठूँसना | ठेका | लठैत | ठोकर | ठौर |
| डिगना | डील | डुबाना | डूबना | डेरा | डैना | डोर | डौलदार |
| ढिबरी | ढीला | ढुलाई | ढूँढ़ना | ढेर | ढैया | ढोर | ढौरी |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तिरछा | तीस | तुरंत | तूफान | तेरा | तैरना | तोड़ना | तौलना |
| थिरकना | पोथी | थुलथुला | थूकना | थे | थैला | थोड़ा | हथौड़ा |
| दिन | दीपक | दुकान | दूर | देर | दैवत | दोनों | दौलत |
| धिक्कार | आधी | धुलाई | धूप | धेनु | धैर्य | धोती | धौल |
| निशा | नीला | नुकसान | नूतन | नेक | नैन | नोक | नौकर |
| पिता | पीला | पुल | पूजा | पेड़ा | पैसा | पोसना | पौधा |
| फिल्म | फीका | फुर्ती | फूल | फेफड़ा | फैलना | फोड़ना | फौरन |
| बिजली | बीतना | बुलाना | बूझना | बेकार | बैल | बोलना | बौना |
| भिखारी | भीड़ | भुलाना | भूकंप | भेद | भैया | भोर | भौतिक |
| मित्रता | मीठा | मुबारक | मूल्य | मेल | मैया | मोर | मौका |
| रिश्ता | रीढ़ | रुकावट | रूठना | रेखा | रैन | रोना | रौद्र |
| लिखना | लीडर | लुटेरा | लूटना | लेखक | लैस | लोटा | लौटना |
| विकास | वीर | युवक | यूनान | वेतन | वैकुंठ | योगदान | यौवन |
| शिकायत | शीतल | शुरू | शून्य | शेर | शैली | शोर | शौर्य |
| सितार | सीख | सुगंध | सूखा | सेना | सैर | सोना | सौहार्द |
| हिमालय | हीरा | हुक्म | हूबहू | हेकड़ी | हैवान | होना | हौवा |

(१) सम्मान देने पर अथवा बहुवचन होने पर अनुस्वार (बिंदु) का प्रयोग किया जाता है।

**उदाहरण :** वह हमारे अध्यापक हैं। (सम्मान देने पर)

लड़के खेलते हैं। (बहुवचन होने पर)

(२) किसी की कोई वस्तु, व्यक्ति या पदार्थ के लिए तथा वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के बाद **बड़ी की** (For Belonging) का प्रयोग किया जाता है।

**उदाहरण :** (i) राम की माताजी ने कहा।

(ii) वह अजय की पुस्तक है।

(३) दो वाक्यों को जोड़ने के लिए समुच्चयबोधक अव्यय के रूप में वाक्य में क्रिया के बाद **छोटी कि** (For conjunction 'that') का प्रयोग किया जाता है।

**उदाहरण :** (i) सुनील ने बताया कि कल स्कूल की छुट्टी रहेगी।

(ii) आदेश बोला कि वह पिकनिक नहीं जाएगा।

वाक्य को शुद्ध करने के लिए वचन, लिंग तथा काल पर भी ध्यान देना आवश्यक होता है। यहाँ एक ही वाक्य दोनों वचनों, दोनों लिंगों तथा तीनों काल में लिखकर प्रस्तुत किया जा रहा है।

(१)

| एकवचन पुल्लिंग | काल |
|---|---|
| मैं खाना खाता हूँ। | वर्तमानकाल |
| मैं खाना खाता था। | भूतकाल |
| मैं खाना खाऊँगा। | भविष्यकाल |

(२)

| बहुवचन पुल्लिंग | काल |
|---|---|
| हम खाना खाते हैं। | वर्तमानकाल |
| हम खाना खाते थे। | भूतकाल |
| हम खाना खाएँगे। | भविष्यकाल |

(३)

| एकवचन स्त्रीलिंग | काल |
|---|---|
| मैं खाना खाती हूँ। | वर्तमानकाल |
| मैं खाना खाती थी। | भूतकाल |
| मैं खाना खाऊँगी। | भविष्यकाल |

(४)

| बहुवचन स्त्रीलिंग | काल |
|---|---|
| हम खाना खाती हैं। | वर्तमानकाल |
| हम खाना खाती थीं। | भूतकाल |
| हम खाना खाएँगी। | भविष्यकाल |

## अभ्यास प्रश्न

**प्रश्न: निम्नलिखित वाक्यों को व्याकरण-नियमों के अनुसार शुद्ध करके फिर से लिखिए।**

(१) सदा ऐसा दिन थोड़े ही रहेगा।

**उत्तर :** सदा ऐसे दिन थोड़े ही रहेंगे।

(२) तुम्हारे विवाह बहुत अच्छे, सुखी परिवार में हो सकता थे।

**उत्तर :** तुम्हारा विवाह बहुत अच्छे, सुखी परिवार में हो सकता था।

(३) लड़कियों के अधिक पढ़ने की जरूरतें नहीं है।

**उत्तर :** लड़कियों को अधिक पढ़ने की जरूरत नहीं है।

(४) उसके बीवी रमजानी बोली।

उत्तर : उसकी बीवी रमजानी बोली।

(५) उसके पीठ पर हाथ फेरे।

उत्तर : उसकी पीठ पर हाथ फेरा।

(६) रहमान के गलती हो गया।

उत्तर : रहमान से गलती हो गई।

(७) उसके घर की दरवाजे में भैंस या गाय बँधी रहती।

उत्तर : उसके घर के दरवाजे पर भैंस या गाय बँधी रहती।

(८) उन्होंने मेरे टाँग के टूटे हिस्से को जोर से दबाई।

उत्तर : उन्होंने मेरी टाँग के टूटे हिस्से को जोर दे दबाया।

(९) सोनाबाई की लड़की ने दवा का शीशी पटक दिया।

उत्तर : सोनाबाई की लड़की ने दवा की शीशी पटक दी।

(१०) शरीर चिपचिपाती रहती हैं।

उत्तर : शरीर चिपचिपाता रहता है।

(११) ये समस्या हमको पहले से पता थी।

उत्तर : यह समस्या हमें पहले से पता थी।

(१२) उस गली पर पेड़ भी नहीं हैं।

उत्तर : उस गली में पेड़ भी नहीं है।

(१३) दिल्ली शहर में घर को ढूँढ़ रहे हूँ।

उत्तर : दिल्ली शहर में घर ढूँढ़ रहा हूँ।

(१४) कॉलेजों के तो छुट्टियाँ नहीं हैं।

उत्तर : कॉलेज की तो छुट्टियाँ नहीं हैं।

(१५) सरकार ने अब ज्यादा चीनी लेने वाली पर टैक्स लगाएगी।

उत्तर : सरकार अब ज्यादा चीनी लेने वालों पर टैक्स लगाएगी।

## स्वाध्याय

**प्रश्न १ निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके फिर से लिखिए।**

(i) मैंने किसी का अनिष्ट करना नहीं चाहता।

(ii) गुस्सा बेचारे बच्ची में उतार रहे हो।

(iii) एक बार गोपाल बहोत बिमार हुआ था।

(iv) सच, कितने महान थे मदर टेरेसा।

(v) आज के इस कड़वे यथार्थ पर तिखे प्रकाश डाल रहा हैं।

(vi) सौभाग्य की बात की गाड़ी समय पर थीं।

**प्रश्न २ निम्नलिखित शब्दों को मानक-वर्तनी के अनुसार लिखिए।**

(i) परपंच (ii) द्वंद्व (iii) औद्यौगीक

(iv) प्रारथना (v) कौषल (vi) परीमान

(vii) किरतन (viii) अत्यंत्य (ix) अनिरणीत

❖❖❖

# ७ सहायक क्रिया

वाक्य में मूल क्रिया के अलावा जो अन्य क्रियाएँ प्रयोग की जाती हैं, उन्हें 'सहायक क्रिया' कहा जाता है। सहायक क्रिया मुख्य क्रिया के अर्थ को स्पष्ट और वाक्य को पूर्ण करने में सहायक होती है।

**जैसे:** (१) सीता हँसती है।

(२) उसने पत्र पढ़ लिया है।

(३) वह अब तो लिख चुका होगा।

उपर्युक्त वाक्यों में हँसती क्रिया के साथ है, पढ़ क्रिया के साथ लिया है तथा लिख क्रिया के साथ चुका होगा सहायक क्रियाएँ हैं।

**ध्यान दीजिए -** पहली क्रिया मुख्य क्रिया है और दूसरी सहायक क्रिया।

**सहायक क्रियाएँ वाक्य में दो प्रकार का कार्य करती हैं :**

(१) क्रिया के अर्थ में विशेषताएँ लाती हैं।

(२) क्रिया का काल बताती हैं।

**अभ्यास प्रश्न**

**प्रश्न १ निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त मुख्य और सहायक क्रिया पहचानकर लिखिए।**

(i) उन्होंने पौधे को अपने सिरहाने लगा दिया।

**उत्तर:** मुख्य क्रिया - लगा : लगना

सहायक क्रिया - दिया : देना

(ii) बहन यदि हाँ कहे तो अभी से आगे का विचार करने लगूँगा।

**उत्तर:** मुख्य क्रिया - करने : करना

सहायक क्रिया - लगूँगा : लगना

(iii) दो मिनट में गाड़ी आकर दरवाजे पर लग गई।

**उत्तर:** मुख्य क्रिया - लग : लगना

सहायक क्रिया - गई : जाना

(iv) पूरा आराम लेकर पूरी तरह ठीक हो जाओ।

**उत्तर:** मुख्य क्रिया - हो : होना

सहायक क्रिया - जाओ : जाना

(v) मैंने फूल के गमले अपने पास से निकाल दिए।

**उत्तर:** मुख्य क्रिया - निकाल : निकालना

सहायक क्रिया - दिए : देना

(vi) दूसरे दिन वे अपनी पीड़ा न रोक सके।

**उत्तर:** मुख्य क्रिया - रोक : रोकना

सहायक क्रिया - सके : सकना

(vii) हमने बहाना सोच लिया।

**उत्तर:** मुख्य क्रिया - सोच : सोचना

सहायक क्रिया - लिया : लेना

(viii) समय आ जाने पर फिर बन जाएँगे।

**उत्तर:** मुख्य क्रिया - बन : बनना

सहायक क्रिया - जाएँगे : जाना

(ix) तुम्हारे बदन के भी सारे गहने उतरवा लिए।

**उत्तर:** मुख्य क्रिया - उतरवा : उतरवाना

सहायक क्रिया - लिए : लेना

(x) इनके रूमाल बना दो।

**उत्तर:** मुख्य क्रिया - बना : बनाना

सहायक क्रिया - दो : देना

(xi) ये बातें अब हमारे लिए आदर्श बन गई।

**उत्तर:** मुख्य क्रिया - बन : बनना

सहायक क्रिया - गईं : जाना

(xii) दोनों ही जन देर तक फूट-फूटकर रोते रहे।

**उत्तर:** मुख्य क्रिया - रोते : रोना

सहायक क्रिया - रहे : रहना

(xiii) वे छोटे हैं, उन्हें कलेजा चीरकर नहीं बता सकता।

**उत्तर:** मुख्य क्रिया - बता : बताना

सहायक क्रिया - सकता : सकना

(xiv) यह उन्होंने श्रम और श्रमिक की प्रतिष्ठा कायम करने के लिए किया।

**उत्तर:** मुख्य क्रिया - लिए : लेना

सहायक क्रिया - किया : करना

(xv) वह विद्या पढ़कर योग्यता प्राप्त कर सका।

**उत्तर:** मुख्य क्रिया - कर : करना

सहायक क्रिया - सका : सकना

(xvi) युवक के सही उत्तर की दाद देते हुए उसका चयन कर लिया।

**उत्तर:** मुख्य क्रिया - कर : करना

सहायक क्रिया - लिया : लेना

(xvii) एकाएक पैर ठिठक गए।

**उत्तर:** मुख्य क्रिया - ठिठक : ठिठकना

सहायक क्रिया - गए : जाना

(xviii) कुछ दिन पहड़ों पर बिता आएँ।

उत्तर: मुख्य क्रिया - बिता : बिताना

सहायक क्रिया - आएँ : आना

(xix) गरम-गरम भूनकर मसाला लगाकर दूँगा।

उत्तर: मुख्य क्रिया - लगाकर : लगाना

सहायक क्रिया - दूँगा : देना

## स्वाध्याय

**प्रश्न १ निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त सहायक क्रिया पहचानकर लिखिए।**

(i) सीता घर चली गई।

(ii) मैंने निबंध लिख दिया।

(iii) वह जोर-जोर से हँसने लगा।

(iv) वह अपने घर चलते बना।

(v) राज अपना काम कर पाया।

(vi) तुम्हें स्कूल जाना चाहिए।

(vii) पेड़ से पत्ता गिर पड़ा।

(viii) रामलाल कहानियाँ सुना करते थे।

(ix) राम को स्कूल जाना चाहिए।

(x) तुम सोये हुए थे।

(xi) तुम हमेशा खुश रहते होगें।

(xii) मेरा पड़ोसी आया था।

(xiii) मैंने खाना खा लिया है।

(xiv) वह बाजार जला गया।

(xv) वह अनुभवी खिलाड़ी बन गए।

(xvi) सब मज़दूर चले गए।

(xvii) आप खाना खा लीजिए।

(xviii) वह कल आया था।

(xix) हिंदी एक आसान भाषा हो गई।

(xx) उसे कल आना है।

(xxi) वह विद्यालय नहीं गया था।

**प्रश्न २ निम्नलिखित सहायक क्रिया का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

(i) था (ii) हुआ है (iii) रहा था (iv) है

(v) हुए थे (vi) लिया है (vii) आया है (viii) दिए थे

❖❖❖

# ८ प्रेरणार्थक क्रिया

जब कर्ता स्वयं कार्य न करके, अन्य को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, तब वह क्रिया 'प्रेरणार्थक क्रिया' कहलाती है।

**उदाहरण :** (i) महेश कुत्ते को दूध पिलाता है।

(ii) प्रकाश खरगोश को गाजर खिलाता है।

इन दोनों वाक्यों में पिलाता, खिलाता प्रेरणार्थक क्रियाएँ हैं, क्योंकि यहाँ कर्ता स्वयं कार्य नहीं कर रहा है, बल्कि किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित कर रहा है।

**उदाहरण :** (i) बच्चा खाना खाता है। (स्वयं)

(ii) माँ बच्चे को खाना खिलाती है। (प्रेरित होकर)

दोनों स्थितियों में बच्चा खाना खा रहा है, परंतु प्रथम वाक्य में वह स्वयं खाना खा रहा है, जबकि दूसरे वाक्य में माँ द्वारा प्रेरित किए जाने पर खाना खा रहा है।

(i) प्रेरणा देने वाला - प्रेरक कर्ता

(ii) प्रेरणा प्राप्त करके कार्य करने वाला - प्रेरित कर्ता

**प्रेरणार्थक क्रिया के भेद निम्नलिखित रूप में हैं :**

(i) **प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया :**

जब कर्ता स्वयं कार्य करने की प्रेरणा देता है, तब वह क्रिया 'प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया' कहलाती है।

**उदाहरण :** विनोद रमेश को पाठ पढ़ाता है।

(कर्ता स्वयं रमेश को पाठ पढ़ने की प्रेरणा दे रहा है)

(ii) **द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया :**

जब कर्ता कार्य में स्वयं सम्मिलित न होकर किसी अन्य को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, तब वह क्रिया 'द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया' कहलाती है।

**उदाहरण :** अशोक मदन से मनोज को पाठ पढ़वाता है।

(विनोद स्वयं प्रेरित न करके मदन को कार्य करने के लिए प्रेरित कर रहा है।)

**प्रश्न १ निम्नलिखित मूल क्रियाओं के प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए।**

| मूल क्रिया | प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया | द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया |
|---|---|---|
| लिखना | लिखाना | लिखवाना |
| पीना | पिलाना | पिलवाना |
| सीखना | सिखाना | सिखवाना |
| बोलना | बुलाना | बुलवाना |
| मिलना | मिलाना | मिलवाना |
| भागना | भगाना | भगवाना |
| जागना | जगाना | जगवाना |
| जाँचना | जँचाना | जँचवाना |
| भीगना | भिगाना | भिगवाना |
| लूटना | लुटाना | लुटवाना |
| पूछना | पुछाना | पुछवाना |
| जलना | जलाना | जलवाना |
| सोना | सुलाना | सुलवाना |
| माँगना | मँगाना | मँगवाना |
| भूलना | भुलाना | भुलवाना |
| तपना | तपाना | तपवाना |
| खाना | खिलाना | खिलवाना |
| दिखना | दिखाना | दिखवाना |
| मरना | मराना | मरवाना |
| चलना | चलाना | चलवाना |
| खीझना | खिझाना | खिझवाना |
| नाचना | नचाना | नचवाना |
| बैठना | बिठाना | बिठवाना |
| फैलना | फैलाना | फैलवाना |
| रोना | रुलाना | रुलवाना |
| हँसना | हँसाना | हँसवाना |
| रखना | रखाना | रखवाना |
| निकलना | निकालना | निकलवाना |
| पकड़ना | पकड़ाना | पकड़वाना |
| पढ़ना | पढ़ाना | पढ़वाना |
| सुनना | सुनाना | सुनवाना |

| मूल क्रिया | प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया | द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया |
|---|---|---|
| मचना | मचाना | मचवाना |
| चाटना | चटाना | चटवाना |
| लगना | लगाना | लगवाना |
| पटकना | पटकाना | पटकवाना |
| सजना | सजाना | सजवाना |
| भरना | भराना | भरवाना |
| लिखना | लिखाना | लिखवाना |
| समझना | समझाना | समझवाना |
| भेजना | भिजाना | भिजवाना |
| मानना | मनाना | मनवाना |
| खरीदना | खरीदाना | खरीदवाना |
| उठना | उठाना | उठवाना |

**प्रश्न २ निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त प्रेरणार्थक क्रिया रूप पहचानकर उसका प्रकार लिखिए।**

(१) फिर अचानक उन्होंने होटेल मैनेजर को बुलवाया।

**उत्तर:** बुलवाया - द्वितीय प्रेरणार्थक

(२) उसने झोंपड़ी में टोकरी उतारी।

**उत्तर:** उतारी - प्रथम प्रेरणार्थक

(३) उसने थोड़ी मिठाईनुमा चीजें निकाली।

**उत्तर:** निकाली - प्रथम प्रेरणार्थक

(४) आज उसे खाना पकाना है।

**उत्तर:** पकाना - प्रथम प्रेरणार्थक

(५) मालिक ने बच्चों से कहकर नौकरों से सारी सफाई करवाई।

**उत्तर:** करवाई - द्वितीय प्रेरणार्थक

(६) दादी कहानी सुनाती है।

**उत्तर:** सुनाती - प्रथम प्रेरणार्थक

(७) वह अपने लड़के से दान करवाता था।

**उत्तर:** करवाता - द्वितीय प्रेरणार्थक

(८) वह सबसे हाथ मिलाता है।

**उत्तर:** मिलाता - प्रथम प्रेरणार्थक

(९) उसने घर को बच्चों से सजवाया।

**उत्तर:** सजवाया - द्वितीय प्रेरणार्थक

(१०) वह बच्चे को दवा पिलाती है।

**उत्तर:** पिलाती - प्रथम प्रेरणार्थक

## स्वाध्याय

**प्रश्न ३ निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए।**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| (i) | सीना | (v) | रोना | (ix) | लेटना |
| (ii) | देना | (vi) | खाना | (x) | खेलना |
| (iii) | धोना | (vii) | ओढ़ना | (xi) | हँसना |
| (iv) | जीना | (viii) | फैलना | (xii) | दौड़ना |

❖❖❖

# १ कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जोड़ा जाए, उसे 'कारक' कहते हैं।

**जैसे:** (i) लता **ने** उपहार लाया।

(ii) उस**का** बेटा होनहार है।

(iii) विद्यालय **में** छात्र हैं।

(iv) अजय **ने** तरकश **से** बाण निकाला।

उपर्युक्त वाक्यों में 'ने', 'का', 'में', 'से' आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। यदि हम इन शब्दों को हटा दें, तो हम वाक्यों के अर्थ को ठीक से नहीं समझ सकते। वाक्यों का अर्थ ठीक से समझने के लिए उपर्युक्त शब्दों की जरूरत है। इन शब्दों को हिंदी व्याकरण में कारक चिह्न कहते हैं। यह कारक विभक्तियाँ (चिह्न) हैं। इनके प्रयोग से वाक्य में आए सभी शब्दों के परस्पर संबंध का हमें पता चलता है।

**कारक व विभक्तियाँ**

| क्र. | कारक | कारक चिह्न |
|---|---|---|
| (i) | कर्ता कारक | ने, परसर्ग रहित |
| (ii) | कर्म कारक | को, परसर्ग रहित |
| (iii) | करण कारक | से, के द्‌वारा |
| (iv) | संप्रदान कारक | के लिए, को |
| (v) | अपादान कारक | से |
| (vi) | संबंध कारक | का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी |
| (vii) | अधिकरण कारक | में, पर |
| (viii) | संबोधन कारक | हे, अरे |

**परसर्ग या विभक्तियाँ :** कारक चिह्नों को परसर्ग या विभक्तियाँ भी कहते हैं। जैसे - ने, को, से आदि।

(१) **कर्ता कारक :** वाक्य के जिस शब्द से कार्य करने वाले का बोध होता है, उसे 'कर्ता कारक' कहते हैं।

**जैसे:** (i) विद्‌या **ने** गाना गाया। (ii) **हर्षिता** खेल रही है।

(२) **कर्म कारक :** वाक्य मे क्रिया का फल जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द पर पड़ता है, वह 'कर्म कारक' कहलाता है।

**जैसे:** (i) अध्यापक ने छात्र **को** पढ़ाया।

(ii) ताहेर **फल** खाता है।

(३) **करण कारक:** करण का अर्थ साधन या माध्यम होता है। जिस माध्यम या साधन से कर्ता क्रिया करता है; उसे 'करण कारक' कहते हैं।

**जैसे:** (i) छात्र पेंसिल **से** लिखते हैं।

(ii) रामू ने रस्सी **के द्‌वारा** जाल बनाया।

(४) **संप्रदान कारक:** वाक्य में कर्ता जिसके लिए कुछ कार्य करता है; उसे व्यक्त करने वाले शब्दो को 'संप्रदान कारक' कहते हैं।

**जैसे:** (i) मैंने राज **के लिए** किताब लाई।

(ii) मंदा ने नंदा **को** किताब दी।

(५) **अपादान कारक:** वाक्य में संज्ञा के जिस रूप से किसी के अलग होने की क्रिया का बोध हो; उसे 'अपादान कारक' कहते हैं।

**जैसे:** (i) वह बाजार **से** घर आया।

(ii) छत्ते **से** शहद नीचे गिरने लगा।

(६) **संबंध कारक:** वाक्य में संज्ञा के जिस रूप से दो संज्ञाओं या सर्वनामों के परस्पर संबंध का पता चले; उसे 'संबंध कारक' कहते हैं।

**जैसे:** (i) विजय संजय **का** बेटा है।

(ii) उन**की** पत्नी का नाम रमा है।

(७) **अधिकरण कारक:** वाक्य में शब्द के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध हो; वह 'अधिकरण कारक' कहलाता है।

**जैसे:** (i) घर **में** चोर घुस गया है।

(ii) वहाँ **पर** कोई नहीं था।

(८) **संबोधन कारक:** वाक्य में शब्द के जिस रूप से किसी को बुलाने अथवा संबोधित करने के भाव का पता चले; उसे 'संबोधन कारक' कहते हैं।

**जैसे:** (i) हे राम! मेरी रक्षा करो।

(ii) अरे! यह क्या हो गया?

**निम्नलिखित वाक्यों में कारक व कारकचिह्न के उदाहरण दिए गए हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए :**

| क्र. | वाक्य | कारक | कारक चिह्न |
|---|---|---|---|
| (i) | तुम दोनों इस सूचना <u>का</u> प्रार्थना पूर्वक विचार करना। | संबंध कारक | का |
| (ii) | आगे जाकर बहन <u>को</u> ऐसा लगेगा। | कर्म कारक | को |
| (iii) | आश्रम कुढ़न <u>से</u> मुक्त होना चाहिए। | अपादन कारक | से |
| (iv) | उस<u>के</u> लिए पैसे तो सहज मिलेंगे। | संप्रदान कारक | के लिए |

| क्र. | वाक्य | कारक | कारक चिह्न |
|---|---|---|---|
| (v) | मैं ड्राइवर को बुला लाया। | कर्म कारक | को |
| (vi) | उन्होंने आगे प्रश्न किया। | कर्ता कारक | ने |
| (vii) | बाबू जी घर आ गए। | कर्ता कारक | परसर्ग रहित |
| (viii) | महात्मा जी ने हमें अहिंसा की विचारधारा दी है। | कर्ता कारक, संबंध कारक | ने की |
| (ix) | धनिकों से पूरा सहयोग मिलेगा। | अपादन कारक | से |
| (x) | समाज में आर्थिक विषमता है। | अधिकरण कारक | में |
| (xi) | उसी के बल पर मिलता है। | अधिकरण कारक | पर |
| (xii) | गुलामी की प्रथा संसार भर में हजारों वर्षों तक चलती रही। | संबोधन कारक | की |
| (xiii) | अरे! यहाँ पर एक भी चिड़िया नहीं दिख रही है। | संबोधन कारक अधिकरण कारक | अरे! पर |
| (xiv) | आसमान में चिड़िया उड़ रही है। | अधिकरण कारक | में |
| (xv) | दुनिया से स्वार्थ की भावना खत्म होगी। | अपादान कारक संबंध कारक | से की |

## स्वाध्याय

**प्रश्न १ निम्नलिखित वाक्यों से संबंधित कारक चिह्न पहचानकर उसके भेद लिखिए।**

(i) मेरे साढू साहब भी सपरिवार हमारे साथ शामिल हो गए।
(ii) लेखक उपन्यास लिखता है।
(iii) अरे! भैया पेड़े खिलाओ, दवा गिरना शुभ होता है।
(iv) अस्पताल में लोग मिलने आने लगे।
(v) सोनबाई ने एक पल लड़की को घूरा।

**प्रश्न २ रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित विभक्ति द्वारा कीजिए।**

(i) अपनी पुस्तकों ..... सँभालकर रखिए।
(ii) साधु ..... सभी ..... प्रसाद दिया।
(iii) पिताजी अभी-अभी बाज़ार ..... आए।
(iv) लेखक अपने भाई ..... बहुत छोटे हैं।
(v) पेड़ ..... पत्ते गिरने लगे।

**प्रश्न ३ निम्नलिखित वाक्यों मे उचित कारक चिह्न का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए।**

(i) वह ने बोला कि वह बाज़ार जाएगा।
(ii) हम मेले को जाएँगे।
(iii) अशोक में बौद्ध धर्म प्रचार किया।
(iv) गंगा हिमालय को निकलती है।
(v) रेलगाड़ी पटरी की चलती है।
(vi) अध्यापिका ने बच्चों पर पढ़ाया।
(vii) मोहन पिता में प्रार्थना करेंगे।
(viii) राम को रावण को मारा।

❖❖❖

# १० विरामचिह्न

भाषा में स्थान विशेष पर रुकने अथवा उतार-चढ़ाव आदि दिखाने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'विराम चिह्न' कहते हैं।

## विरामचिह्नों के प्रकार

(१) **पूर्ण विराम (।)** : प्रत्येक वाक्य की समाप्ति पर इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

**उदाहरण** : किशोर ने किताब खरीदी।

(२) **उपविराम (:)** : उपविराम का प्रयोग संवाद लेखन, एकांकी लेखन या नाटक लेखन में वक्ता के नाम के बाद किया जाता है।

**उदाहरण** : भ्रष्टाचार: एक समस्या

(३) **अर्धविराम (;)** : इसमें उपविराम से भी कम ठहराव होता है। यदि खंडवाक्य का आरंभ वरन, पर, परन्तु, किन्तु, क्योंकि, इसलिए, तो भी आदि शब्दों से हो तो उसके पहले इसका प्रयोग करना चाहिए।

**उदाहरण** : वह परीक्षा में फेल हो गया; क्योंकि उसने पढ़ाई नहीं की थी।

(४) **अल्प विराम (,)** : इसमें बहुत कम ठहराव होता है।

**उदाहरण** : माँ बाजार से शक्कर, चावल, दाल व सब्जियाँ लाईं।

(५) **प्रश्नबोधक (?)** : वक्ता जब किसी से प्रश्न पूछते है; तब लिखित भाषा में वाक्य के अंत में प्रश्नबोधक चिह्न का प्रयोग करते हैं।

**उदाहरण** : तुमने आज क्या किया?

(६) **विस्मयादिबोधक (!)** : विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा, प्रेम आदि भावों को प्रकट करनेवाले शब्दों के आगे इसका प्रयोग होता है।

**उदाहरण** : अहा! मजा आ गया।

(७) **योजक चिह्न (-)** : द्वंद्व समास के दो पदों के बीच, सहचर शब्दों के बीच में इसका प्रयोग करते हैं।

**उदाहरण** : दिन-रात, सुबह-सुबह

(८) **निर्देशक चिह्न (–)** : यह चिह्न योजक चिह्न से थोड़े बड़े आकार में होता है।

**उदाहरण** : गांधी जी का मानना था - मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं।

(९) **उद्धरण चिह्न ('') ("")** : जब वक्ता किसी अन्य व्यक्ति के कथन को उद्धृत करता है तो उस उद्धृत कथन को लिखित भाषा में उद्धरण चिह्नों के अंतर्गत दिखाया जाता है। इसके दो प्रकार हैं: इकहरा उद्धरण चिह्न (''), दोहरा उद्धरण चिह्न ("")

**उदाहरण** : (i) ''अंकित बेटा! तुम्हारी भाषण प्रतियोगिता कब है?''

(ii) तुलसीदास ने 'रामचरित मानस' लिखा।

(१०) **त्रुटिपूरक/हंसपद चिह्न (ˆ)** : वाक्य में छूटे हुए शब्द को इस चिह्न का प्रयोग कर ऊपर लिखा जाता है।

**उदाहरण** : अध्यापक ने कक्षा में कहानी ˆ सुनाई।

(११) **कोष्ठक चिह्न ([ ], ( ))** : कोष्ठक का प्रयोग कठिन शब्द को स्पष्ट करने, भाव को बताने, अक्षरों या अंकों को प्रकट करने के लिए किया जाता है।

**उदाहरण** : (i) सैनिक पूरे दम-खम (ताकत) से लड़ रहे थे।

(ii) राजा : (कुछ सोचकर) अब इस प्रश्न का हल मुझे ही तलाशना होगा।

(iii) (१), (२), (३) अथवा (क), (ख), (ग) आदि।

(१२) **अपूर्ण सूचक चिह्न (× × ×)** : नाटक, उपन्यास अथवा कहानी में उसके किसी अंक या भाग की समाप्ति पर इसका प्रयोग होता है।

(१३) **समाप्ति सूचक चिह्न (—o—)** : इस चिह्न का प्रयोग कहानी, उपन्यास, नाटक आदि के समाप्त होने पर किया जाता है।

(१४) **विस्तार चिह्न (.....)** : वाक्य अथवा कथन को बढ़ाने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

**उदाहरण** : यदि मैं प्रधानमंत्री होता तो .....

(१५) **लाघव चिह्न (.)** : बड़े अंशों को जब संक्षेप में लिखना होता है, तब लाघव चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

**उदाहरण**: प्रोफेसर : प्रो., डॉक्टर : डॉ.

(१६) **विवरण चिह्न (:-)** : जब वाक्यांशों के बारे में कोई सूचना, निर्देश या विवरण आदि देना होता है, तब विवरण चिह्न का प्रयोग होता है।

**उदाहरण** : कहानी लेखन के मुद्दे नीचे दिए जा रहे हैं :-

### अभ्यास प्रश्न

**प्रश्न१ निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए।**

(i) रूपा ने कंठावरुद्ध स्वर में कहा काकी उठो भोजन कर लो

**उत्तर:** रूपा ने कंठावरुद्ध स्वर में कहा, ''काकी उठो, भोजन कर लो।''

(ii) वह सोचने लगी हाय कितनी निर्दयी हूँ

**उत्तर:** वह सोचने लगी - 'हाय! कितनी निर्दयी हूँ।'

(iii) जिसकी संपत्ति से मुझे दो सौ रुपया वार्षिक आय हो रही है उसकी यह दुर्गति और मेरे कारण हे दयामय भगवान

**उत्तर:** जिसकी संपत्ति से मुझे दो सौ रुपया वार्षिक आय हो रही है, उसकी यह दुर्गति! और मेरे कारण! हे दयामय भगवान!

(iv) वह चौंकी चारपाई के इधर उधर ताकने लगी कि कहीं नीचे तो नहीं गिर पड़ी

**उत्तर:** वह चौंकी, चारपाई के इधर-उधर ताकने लगी कि कहीं नीचे तो नहीं गिर पड़ी।

(v) बोली नहीं बेटी जाकर अम्मा से और माँग लाओ

**उत्तर:** बोली - ''नहीं बेटी, जाकर अम्मा से और माँग लाओ।''

(vi) काकी ने पूछा क्या तुम्हारी अम्मा ने दी हैं

**उत्तर:** काकी ने पूछा- ''क्या तुम्हारी अम्मा ने दी हैं?''

(vii) पुकारने लगे अरे यह बुढ़िया कौन है यह कहाँ से आ गई देखो किसी को छू न दे

**उत्तर:** पुकारने लगे- ''अरे यह बुढ़िया कौन है? यह कहाँ से आ गई? देखो किसी को छू न दे।''

(viii) आह कैसी सुगंध है अब मुझे कौन पूछता है

**उत्तर:** आह! कैसी सुगंध है? अब मुझे कौन पूछता है।

(ix) बेटे तरुण हो होकर चल बसे थे

**उत्तर:** बेटे तरुण हो-होकर चल बसे थे।

(x) नागर जी हम लोगों ने आपका बहुत समय लिया बल्कि आपकी उम्र और स्वास्थ्य का भी लिहाज नहीं किया।

**उत्तर:** नागर जी, हम लोगों ने आपका बहुत समय लिया। बल्कि आपकी उम्र और स्वास्थ्य का भी लिहाज नहीं किया।

(xi) जब पूरी प्राणशक्ति एक जगह केंद्रित होगी तो इंट्यूटिव आई बनाएगी

**उत्तर:** जब पूरी प्राणशक्ति एक जगह केंद्रित होगी तो 'इंट्यूटिव आई' बनाएगी।

(xii) नाच्यो बहुत गोपाल के लिए सफाई कर्मियों की बस्तियों में भी जाना पड़ा

**उत्तर:** 'नाच्यो बहुत गोपाल' के लिए सफाई कर्मियों की बस्तियों में भी जाना पड़ा।

(xiii) पुराने साहित्यकारों में आप किसको अपना आदर्श मानते हैं

**उत्तर:** पुराने साहित्यकारों में आप किसको अपना आदर्श मानते हैं?

(xiv) बाबा शाम को नित्य प्रति रामचरितमानस मुझसे पढ़वाकर सुनते थे

**उत्तर:** बाबा, शाम को नित्य प्रति 'रामचरितमानस' मुझसे पढ़वाकर सुनते थे।

(xv) जगन्नाथदास रत्नाकर गोपाल राय गहमरी प्रेमचंद किशोरी लाल गोस्वामी लक्ष्मीधर वाजपेयी आदि के नाम याद आते हैं

**उत्तर:** जगन्नाथदास रत्नाकर, गोपाल राय गहमरी, प्रेमचंद, किशोरी लाल गोस्वामी, लक्ष्मीधर वाजपेयी आदि के नाम याद आते हैं।

(xvi) पिता जी ने आंदोलन में भाग लेने से रोका

**उत्तर:** पिता जी ने आंदोलन में भाग लेने से रोका।

(xvii) जवाब दिया हाँ बाबू जी एक जगह खाने पर चले गए थे।

**उत्तर:** जवाब दिया- ''हाँ, बाबू जी! एक जगह खाने पर चले गए थे''

(xviii) बालक प्राथमिक शाला से लेकर देश विदेश के ऊँचे से ऊँचे महाविद्यालयों में सीखकर जो योग्यता प्राप्त करता है वे शिक्षालय सरकार द्वारा चलाए जाते हैं

**उत्तर:** बालक प्राथमिक शाला से लेकर देश-विदेश के ऊँचे-से-उँचे महाविद्यालयों में सीखकर जो योग्यता प्राप्त करता है, वे शिक्षालय सरकार द्वारा चलाए जाते हैं।

(xix) सिरचन दादा मानू इतना ही बोल सकी

**उत्तर:** ''सिरचन दादा!'' मानू इतना ही बोल सकी।

(xx) मुंह ही मुंह में बड़बड़ाया माफ कर लक्ष्मी रहमान बड़ा मूर्ख है

**उत्तर:** मुँह-ही-मुँह में बड़बड़ाया- ''माफ कर लक्ष्मी, रहमान बड़ा मूर्ख है।''

## स्वाध्याय

**प्रश्न १ निम्नलिखित विराम-चिह्नों के नाम लिखिए।**

(i) ? (ii) —o— (iii) ‸ (iv) .

(v) '' '' (vi) ; (vii) ! (viii) :-

**प्रश्न २ निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए।**

(i) अजय ने पूछा राजेश क्या तुमने मेरी किताब ली है

(ii) आह कितना सुंदर दृश्य है

(iii) पुलिस गुस्से में तुम थाने चलो

(iv) रमेश ने डॉ से दवाई ली

(v) अमर बाजार जाना चाहता था किन्तु माँ ने उसे पढ़ने को कहा

❖❖❖

# ११ शब्द संपदा

## (१) एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द

कोई भी शब्द पूरी तरह दूसरे शब्द का पर्याय नहीं हो सकता। दो पर्याय से लगने वाले शब्दों में भी सूक्ष्म-सा अंतर अवश्य रहता है। नीचे कुछ ऐसे शब्द-युग्म दिए जा रहे हैं, जिन्हें भ्रम से पर्याय मान लिया जाता है। वस्तुत: इनमें अर्थ की दृष्टि से स्पष्ट अंतर होता है -

(१) अस्त्र - जो हथियार फेंक कर चलाया जाए। जैसे - बाण
शस्त्र - जो हथियार हाथ में थामकर चलाया जाए। जैसे - तलवार

(२) अज्ञ - जिसे कुछ ज्ञान न हो।
अनभिज्ञ - जिसे किसी विशेष बात की जानकारी न हो।

(३) अभिमान - बल, धन आदि का वास्तविक बड़प्पन।
अहंकार - अपने गुण और शक्ति को आवश्यकता से अधिक समझ लेना।

(४) अमूल्य - जिस वस्तु के मूल्य का अनुमान न लगाया जा सके।
बहुमूल्य - बहुत कीमती।

(५) आधि - मानसिक कष्ट। जैसे-चिंता।
व्याधि - शारीरिक कष्ट। जैसे-ज्वर, खाँसी आदि।

(६) अपराध - सामाजिक कानून का उल्लंघन करना।
पाप - प्राकृतिक एवं धार्मिक नियमों का उल्लंघन करना।

(७) अद्‌वितीय - जिसकी बराबरी का और कोई दूसरा न हो।
अनुपम - जिसकी किसी से उपमा न दी जा सके।

(८) अनुभव - व्यवहार या अभ्यास से प्राप्त ज्ञान।
अनुभूति - चिंतन या मनन से प्राप्त ज्ञान।

(९) अनुरूप - समानता या उपयुक्तता का भाव।

(१०) अवस्था (वय) - किसी प्राणी का जिया हुआ काल।
आयु - संपूर्ण जीवन-काल।

(११) आज्ञा - पूज्य या महान व्यक्तियों द्‌वारा छोटों को दिया गया दिशा-निर्देश।

(१२) अधिक - आवश्यकता से ज्यादा।
पर्याप्त - आवश्यकता के अनुसार

(१३) अनुसंधान - अज्ञात या विस्तृत तथ्यों को प्रकट करना।
अविष्कार - किसी नई वस्तु या मशीन का निर्माण करना।

(१४) इच्छा - किसी वस्तु को पाने की स्वाभाविक इच्छा।
लालसा - किसी वस्तु को अपने पास हर प्रकार से रखने की तीव्र इच्छा।

(१५) उत्साह - काम करने की उमंग।
साहस - शक्ति या साधन न होने पर भी काम करना।

(१६) उपहास - अपमान करने की भावना से किसी की हँसी उड़ाना।
परिहास - समवयस्कों (हमउम्र) के साथ खुशियाँ मनाना।

(१७) कृपा - अपने से छोटों को सुखी करने की चेष्टा।
दया - दूसरों के दुख दूर करने की स्वाभाविक इच्छा।

(१८) दुख - साधारण कष्ट।
शोक - प्रियजन की मृत्यु से उत्पन्न दुख।

(१९) ग्लानि - किए हुए कुकर्मों पर पछतावा।
लज्जा - अनुचित काम करने पर संकोच का भाव।

(२०) प्रेम - मनुष्य का मनुष्य के प्रति स्वाभाविक संबंध बताने वाला सामान्य शब्द।
प्रणय - पति-पत्नी का प्रेम।

## (२) विलोम शब्द

कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनका अर्थ किसी अन्य शब्द के अर्थ से उलट होता है। ये शब्द आपस में विलोम कहे जाते हैं। कुछ विपरीतार्थक शब्द इस प्रकार हैं -

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| अर्थ | अनर्थ | आकर्षण | विकर्षण |
| अनाथ | सनाथ | आर्द्र | शुष्क |
| अपना | पराया | आध्यात्मिक | भौतिक |
| अमृत | विष | आस्तिक | नास्तिक |
| अल्पज्ञ | बहुज्ञ | आलसी | परिश्रमी |
| आलोक | अंधकार | अधिक | न्यून |
| आशा | निराशा | अतिवृष्टि | अनावृष्टि |
| आवश्यक | अनावश्यक | अमीर | गरीब |

| | | | |
|---|---|---|---|
| आदान | प्रदान | अधुनातन | पुरातन |
| आगत | अनागत | अनुराग | विराग |
| आय | व्यय | अनुकूल | प्रतिकूल |
| आग | पानी | अँधेरा | उजाला |
| आर्य | अनार्य | अवनति | उन्नति |
| आगत | विगत | अल्पायु | दीर्घायु |
| अनुरक्ति | विरक्ति | आदि | अंत |
| अनुज | अग्रज | आसक्ति | अनासक्ति |
| आकाश | पाताल | आभ्यंतर | बाह्य |
| उत्थान | पतन | घृणा | प्रेम |
| उदार | अनुदार | चर | अचर |
| उत्कृष्ट | निकृष्ट | चंचल | स्थिर |
| उचित | अनुचित | जय | पराजय |
| उदय | अस्त | जड़ | चेतन |
| उत्तर | दक्षिण | जटिल | सरल |
| उदयाचल | अस्ताचल | जीवन | मरण |
| उतार | चढ़ाव | जागृति | सुषुप्ति |
| उद्धत | विनीत | जंगम | स्थावर |
| उत्कर्ष | अपकर्ष | झूठ | सच |
| उन्नति | अवनति | ठंडा | गरम |
| उपस्थित | अनुपस्थित | तटस्था | पक्षपाती |
| उर्वरा | ऊसर | तामसिक | सात्विक |
| उद्दंड | विनम्र | दाएँ | बाएँ |
| उत्तीर्ण | अनुत्तीर्ण | दुर्लभ | सुलभ |
| उपयोगी | अनुपयोगी | देय | अदेय |
| ऊँच | नीच | देव | दानव |
| ऋण | उऋण | धर्म | अधर्म |
| धनी | निर्धन | एक | अनेक |
| धृष्ट | विनीत | ऐच्छिक | अनैच्छिक |
| न्याय | अन्याय | एकदेशीय | सर्वदेशीय |
| निंदा | प्रशंसा | ऐहिक | पारलौकिक |
| निश्चित | अनिश्चित | ओछा | उदार |
| निर्बल | सबल | कटु | मधुर |
| निर्मल | मलिन | कायर | वीर |
| नूतन | पुरातन | कनिष्ठ | वरिष्ठ/जेष्ठ |
| पक्ष | विपक्ष | कठोर | मृदु |
| प्रस्तुत | अप्रस्तुत | कृत्रिम | स्वाभाविक |
| क्रय | विक्रय | कृश | हृष्ट-पुष्ट |
| कृपालु | क्रूर | कीर्ति | अपकीर्ति |
| कृतज्ञ | कृतघ्न | कोमल | कठोर |
| क्रिया | प्रतिक्रिया | खरा | खोटा |
| कुटिल | सरल | खंडन | मंडन |
| खल | सज्जन | गहरा | उथला |

### (३) अनेकार्थी शब्द

अनेकार्थी शब्द एक से अधिक अर्थ दे सकता है। जैसे - कल शब्द के तीन अर्थ हैं।

उदा. आगामी दिवस, पिछला दिवस, मधुर ध्वनि।

**हिंदी में प्रचलित कुछ अनेकार्थी शब्द इस प्रकार हैं**

अक्षर - नष्ट न होने वाले, ईश्वर वर्ण।

अधर - अंतरिक्ष, निचला होंठ, धरती और आसमान के मध्य।

अनंत - आकाश, ईश्वर, विष्णु, शेषनाग।

अंबर - आकाश, कपड़ा, कपास।

अपेक्षा - आवश्यकता, तुलना, आशा।

अब्ज - शंख, कमल, कपूर, चंद्रमा।

अब्धि - सरोवर, समुद्र।

अभिजात - कुलीन, मनोहर, पूज्य।

अमर - सरोवर, समुद्र।

अरूण - सूर्य का सारथी, प्रात: कालीन सूर्य, सिंदूर, रक्तवर्ण, लाल।

अर्थ - धन, व्याख्या, उद्देश्य।

अलि - भँवरा, सखी, कोयल।

अवकाश - बीच का समय, अवसर, छुट्टी।

अवधि - सीमा, निर्धारित समय।

अंक - गोद, गणना के अंक, मध्य।

आम - एक फल, सामान्य, मामूली।

आदि - प्रारंभ, वगैरह।

आराम - सुख-चैन, बगीचा।

उत्सर्ग - त्याग, समाप्ति, दान।

उत्तर - जवाब, बाद का, एक दिशा का नाम।

कनक - सोना, धतूरा, गेहूँ।

कर - हाथ, किरण, हाथी की सूँड़, टैक्स, 'करना' क्रिया का आज्ञार्थक रूप।

कल - चैन, बीता हुआ कल, आने वाला दिन, मशीन, शोर।

काम - कार्य, कामना, वासना।

काल - समय, मृत्यु।
कक्षा - कार्य, कामना, वासना।
कुंडल - कान का आभूषण, साँप की गेंडुरी।
कुल - सब, वंश।
खग - पक्षी, आकाश।
खर - गधा, तेज।
गति - चाल, दशा, मोक्ष।
ग्रहण - लेना, चाँद-सूर्य का ग्रहण।
गुण - विशेषता, रस्सी।
गुरु - महान, शिक्षक, बड़ा।
घट - घड़ा, हृदय, शरीर।
घन - बादल, घटा, स्वामी, क्षत्रिय।
दंड - डंडा, सजा, एक व्यायाम, डंठल।
दक्षिण - दाहिना, दक्षिण दिशा, अनुकूल।
नव - नया, नौ।
नाक - नासिका, स्वर्ग।
नाग - साँप, हाथी।
निशान - चिह्न, ध्वजा, डंका।
पतंग - सूर्य, उड़ाई जाने वाली गुड़िया, एक कीड़ा।
पत्र - चिट्ठी, पत्ता, समाचार-पत्र, पत्रा।
पद - चरण, शब्द, ओहदा, कविता का चरण।
पय - दूध, पानी, अमृत।
पृष्ठ - पन्ना, पीठ, पीछे का भाग, सतह।
ब्याज - छल, सूद, बहाना।
भूत - बीता हुआ, प्रेत, प्राणी।
मत - राय, संप्रदाय, निषेध।
मधु - मीठा, शहद, शराब।
मुद्रा - मोहर, सिक्का, मुख का भाव, छाया।

### (४) पर्यायवाची शब्द

| शब्द | पर्यायवाची शब्द |
|---|---|
| अग्नि | ज्वाला, पावक, अनल, आग। |
| अमृत | सोम, अमी, अमिय, सुधा, पीयूष। |
| अश्व | तुरंग, वाजि, घोड़ा, हय, सैंधव। |
| अँधेरा | अंधकार, तिमिर, तम। |
| अहंकार | घमंड, दंभ, दर्प, अभिमान। |
| आकाश | गगन, अंबर, नभ, व्योम, शून्य। |
| आँख | नेत्र, लोचन, चक्षु, दृग, नयन। |
| आभूषण | भूषण, अलंकार, गहना। |
| कपड़ा | वस्त्र, अंबर, वसन, चीर, पट। |
| कमल | पंकज, जलज, वारिज, नीरज, सरोज। |
| कामदेव | काम, मदन, मनोज, अनंग, रतिनाथ। |
| कोयल | पिक, श्यामा, वसंतदूत, कोकिल। |
| कृष्ण | मोहन, गोपाल, गिरिधर, मुरलीधर, वंशीधर, केशव। |
| क्रोध | कोप, गुस्सा, रोष। |
| गंगा | भागीरथी, मंदाकिनी, सुरसरि, सुरनदी, सुरसरिता। |
| गृह | घर, आलय, सदन, गेह, निकेतन, धाम। |
| चंद्र | चाँद, चंद्रमा, शशि, विधु, सुधाकर, इंदु। |
| जल | पानी, अंबु, तोय, नीर, सलिल। |
| जंगल | वन, अरण्य, विपिन, कानन। |
| तलवार | खड्ग, असि, चंद्रहास, करवाल। |
| तालाब | जलाशय, तड़ाग, पुष्कर, सरोवर। |
| तीर | बाण, शर, इषु, शिलीमुख। |
| दया | कृपा, करुणा, अनुकंपा। |
| दुख | शोक, पीड़ा, वेदना, विषाद, कष्ट। |
| दूध | दुग्ध, पय, गोरस, क्षीर, स्तन्य। |
| देवता | देव, सुर, अमर, निर्जर, विबुध। |
| धन | अर्थ, वित्त, मुद्रा, संपत्ति, द्रव्य। |
| नदी | सरिता, तटिनी, सलिला, तरंगिणी। |
| नौकर | दास, अनुचर, सेवक, परिचारक। |
| पहाड़ | पर्वत, अचल, भूधर, नग, गिरि। |
| पक्षी | खग, विहग, नभचर, अंडज, पखेरू। |
| पवन | हवा, वायु, समीर, अनिल, वात, मरुत। |
| पति | नाथ, स्वामी, कांत, वल्लभ, भर्ता। |
| पुत्र | तनय, नंदन, सुत, बेटा, तनुज। |
| पुत्री | तनया, सुता, बेटी, तनुजा, दुहिता, कन्या। |

### (५) वाक्यांशों के लिए एक शब्द

आज का युग अति व्यस्त है। ऐसे समय में थोड़े शब्दों में पूरी बात कहने की कला का बहुत महत्त्व है। सुंदर, सुगठित, कसी हुई वाक्य-रचना के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग करना चाहिए जो अपने-आप में वाक्यांश हों। उदाहरणतया - 'वह अवसर आने पर इतना बदल जाता है कि मैं उसका विश्वास नहीं कर सकता।' इतने लंबे वाक्य को संक्षेप में हम यों कह सकते हैं -

'उस अवसरवादी का मैं विश्वास नहीं कर सकता।'

बाद वाला वाक्य संक्षिप्त, कसा हुआ तथा प्रभावशाली है। इस तरह के कसावपूर्ण सुगठित वाक्यों के लिए आवश्यक है कि छात्रों को ऐसे शब्दों का ज्ञान हो जिनमें विस्तृत अर्थ समेटे जा सकें। हिंदी में प्रचलित कुछ इस प्रकार के शब्द निम्नलिखित हैं -

| एक शब्द | अनेक शब्द |
|---|---|
| अंधविश्वास | बिना विचार किया हुआ विश्वास। |
| अद्‌वितीय | जिसके बराबर कोई दूसरा न हो। |
| अकरणीय | जो करने योग्य न हो। |
| अदृश्य | जो दिखाई न दे। |
| अकर्मण्य/निकम्मा | जो कर्म न करता हो। |
| अधीर | जिसमें धैर्य न हो। |
| अकल्पनीय | जिसकी कल्पना न की जा सके। |
| अनंत | जिसका अंत न हो। |
| अकाट्य | जिसे काटा न जा सके। |
| अनश्वर | जिसका कभी नाश न हो। |
| अकारण | जिसका कोई कारण न हो। |
| अनाथ | जिसका कोई स्वामी न हो। |
| अकिंचन | जिसके पास कुछ न हो। |
| अनादि | जिसका आदि न हो। |
| अखाद्य | जो खाने योग्य न हो। |
| अनाम | जिसका नाम न हो। |
| अगम्य | जहाँ जाया न जा सके। |
| अनावृष्टि | वर्षा न होना। |
| अगेय | जिसे गाया न जा सके। |
| अनिवार्य | जिसका निवारण न हो सके। |
| अगोचर | जिसे देखा न जा सके। |
| अनियमित | बिना किसी नियम के। |
| अग्रगामी | जो सबसे आगे चलता हो। |
| उद्‌दंड | जिसे दंड का भय न हो। |
| अभूतपूर्व | जो बात पहले न हुई हो। |
| उपकृत | जिस पर उपकार किया गया हो। |
| अभेद्य | जिसे भेदा न जा सके। |
| उपर्युक्त | ऊपर कहा गया। |
| अमर | कभी न मरने वाला। |
| उऋण | जिसने ऋण चुका दिया हो। |
| अमूल्य | जिसका मूल्य न आँका जा सके। |
| एकतंत्र | एक व्यक्ति का राज्य। |
| अर्धवार्षिक | आधे वर्ष में एक बार होने वाला। |
| एकांगी | जिसमें एक ही अंग पर बल दिया गया हो। |
| अल्पभाषी | थोड़ा बोलने वाला। |
| अल्पव्ययी | थोड़ा खर्च करने वाला। |
| ऐहिक, लौकिक | इस संसार से संबंधित। |
| अल्पज्ञ | थोड़ा ज्ञान रखने वाला। |
| औपचारिक | शिष्टाचारवश किया गया कार्य। |
| अल्पाहारी | कम भोजन करने वाला। |
| कंकटाकीर्ण | काँटों से भरा हुआ। |
| अवध्य | जो वध करने योग्य न हो। |
| कटुभाषी | जो कड़वा बोलता हो। |
| अवर्णनीय | जिसका वर्णन न किया जा सके। |
| कपटी | जिसके मन में कपट हो। |
| अवसरवादी | अवसर के अनुसार बदल जाने वाला। |
| कुशाग्रबुद्‌धि | तेज बुद्‌धि वाला। |
| अस्पृश्य | जिसे छूना वर्जित हो। |
| कृतघ्न | किए हुए उपकार को न मानने वाला। |
| अक्षम्य | जो क्षमा करने योग्य न हो। |
| कृतज्ञ | किए हुए उपकार को मानने वाले |
| अज्ञातवासी | जिसके वास का पता न हो। |
| खंडित | जो टुकड़े-टुकड़े हो गया हो। |
| अज्ञेय | जिसे जाना न जा सके। |
| गगनचुंबी | आकाश को छूने वाला। |
| आकस्मिक | अचानक होने वाली बात। |
| गुप्तचर | छिपकर टोह लेने वाला। |
| नभचर | आकाश में घूमने वाला। |
| गोपनीय | छिपाने योग्य। |
| आकाशवृत्ति | आजीविका अनिश्चित होना। |
| चक्रपाणि | जिसके हाथ में चक्र हो, विष्णु। |
| आडंबर | ऊपरी बनावट या तड़क-भड़क। |
| चिकित्सक | चिकित्सा करने वाला। |
| आतिथ्य | अतिथि का सत्कार। |
| छिद्रान्वेषी | दूसरों के दोष देखनेवाला। |
| आत्मश्लाघी | अपनी प्रशंसा करने वाला। |
| जलचर | जल में रहने वाला। |
| आत्महंता, आत्मघाती | अपनी हत्या स्वयं करने वाला। |
| जिजीविषा | जीने की प्रबल इच्छा। |

| | |
|---|---|
| आत्महत्या | अपनी हत्या स्वयं करना। |
| जितेंद्रिय | जिसने इंद्रियों को वश में कर लिया हो। |
| आद्योपांत | आदि से अंत तक। |
| आयात | दूसरे देश से मँगाया जाना। |
| जिज्ञासु | जिसमें जानने की इच्छा हो। |
| आस्तिक | ईश्वर में विश्वास रखने वाला। |
| तटस्थ | जो किसी से संबंधित न हो। |
| आज्ञाकारी | दी हुई आज्ञा का पालन करने वाला। |
| ईर्ष्यालु | जो दूसरों से ईर्ष्या करता हो। |
| त्रैमासिक | तीन मास में एक बार होने वाला। |
| दत्तक | गोद लिया हुआ पुत्र। |
| परोपकारी | जो दूसरों पर उपकार करता हो। |
| दुग्धाहारी | दुग्ध पीकर निर्वाह करने वाला। |
| परोपजीवी | जो दूसरों के सहारे जीता हो। |
| दुभाषिया | दो भाषाओं का ज्ञाता, जो दो भिन्न भाषियों की वार्ता का अर्थ एक-दूसरे को समझाता है। |
| परोक्ष | जो सामने न हो। |
| पर्णकुटी | पत्तों द्वारा बनाई हुई कुटिया। |
| पांडुलिपि/हस्तलिखित | हाथ द्वारा लिखी हुई। |
| दूरदर्शी | आगे की सोचने वाला। |
| पारंगत | जो किसी विद्या या कला में कुशल हो। |
| पारदर्शक | जिसके आर-पार देखा जा सके। |
| दुराचारी | बुरा आचरण करने वाला। |
| पारलौकिक | दूसरे लोक से संबंधित। |
| दुर्दम्य | जिसका दमन करना कठिन हो। |
| पाषाण हृदय | पत्थर जैसे दिल वाला। |
| दुर्निवार | जिसे दूर करना कठिन हो। |
| पाश्चात्य | पश्चिमी देशों से संबंधित। |
| पाक्षिक | दो सप्ताह में एक बार होने वाला। |
| दुर्भेद्य | जिसको भेदना कठिन हो। |
| प्रियभाषी/प्रियंवद | प्रेमपूर्वक बोलने वाला। |
| दुर्लघ्य | जिसे लाँघना कठिन हो। |
| पुनरुक्ति | किसी उक्ति को पुन: कहना। |
| दुर्विनीत | जो विनम्र न हो। |

### (६) उपसर्ग

ऐसे शब्दांश जो मूल शब्दों से पहले जुड़कर नए शब्द की रचना करते हैं तथा शब्द के अर्थ को बदल देते हैं, 'उपसर्ग' कहलाते हैं। जैसे - आ, निर्, अव आदि। उपसर्ग तीन प्रकार के होते हैं - (क) संस्कृत के उपसर्ग (ख) हिंदी के उपसर्ग (ग) अन्य भाषाओं के उपसर्ग।

**आगे प्रमुख उपसर्ग तथा उनसे बनने वाले शब्द दिए जा रहे हैं -**

**हिंदी के उपसर्ग -**

| क्र. | उपसर्ग | अर्थ | शब्द |
|---|---|---|---|
| (१) | अ | अभाव, निषेध | अचेत, अछूत, अमोल, अथाह। |
| (२) | अन | अभाव, निषेध | अनपढ़, अनदेखा, अनसुनी, अनबन। |
| (३) | अध | आधा | अधखिला, अधजला, अधपचा, अधपका। |
| (४) | उन | कम | उन्नीस, उनतीस, उनचास, उनसठ। |
| (५) | औ (अव) | निषेध, हीन | औघड़, औचक, औसर, औगुण। |
| (६) | क (कु) | बुरा, हीन | कपूत, कुचाल, कुढंग, कुबोल। |
| (७) | चौ | चार | चौराहा, चौपाया, चौमासा, चौपाई। |
| (८) | नि | रहित बिना | निडर, निपूत्ता, निहत्था, निधड़क। |
| (९) | दु | दो, बुरा | दुबला, दुगना, दुराहा, दुष्काल। |
| (१०) | बिन | रहित, बिना | बिनखाया, बिनचाहा, बिनब्याहा, निषेध बिनजाना। |
| (११) | भार | पूरा, भरा हुआ | भरमार, भरपूर, भरसक, भरपेट। |
| (१२) | स/सु | अच्छा, सहित | सुफल, सुजान, सुडौल, सुघड़। |

**संस्कृत के उपसर्ग -**

| क्र. | उपसर्ग | अर्थ | शब्द |
|---|---|---|---|
| (१) | अति | अधिक, बहुत | अतिरिक्त, अत्यंत, अत्यधिक, अतिउत्तम। |
| (२) | अधि | प्रधानता | अधिकार, अधिनायक, अधिपति, अध्यादेश। |
| (३) | अनु | पीछे | अनुकरण, अनुभूति, अनुकूल, अनुगमन। |
| (४) | आप | बुरा, हीन | अपकीर्ति, अपकार, अपयश, अपशब्द। |
| (५) | अभि | सामने | अभिमान, अभिभाषण, अभिलाषी, अभिभावक। |
| (६) | अव | बुरा पतन | अवगुण, अवनति, अवशेष। |
| (७) | आ | तक, सहित | आमरण, आक्रोश, आकार, आजन्म। |
| (८) | उत् | ऊपर, श्रेष्ठ | उत्कर्ष, उत्पत्ति, उद्भव, उद्गम। |
| (९) | उप | निकट, समान | उपदेश, उपचार, उपकार, उपकरण। |
| (१०) | दुस् | हीन, बुरा | दुस्साहस, दुस्साध्य, दुष्कर, दुष्कर्म। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| (११) | दुर् | बुरा | दुर्घटना, दुर्गुण, दुर्लभ, दुराचार। |
| (१२) | निर् | बिना | निर्भय, निर्जन, निर्मल, निर्धन। |
| (१३) | निस् | बिना, रहित | निस्तेज, निश्छल, निष्कपट |
| (१४) | नि | बिना | निबंध, निषेध, नियम, निपात। |
| (१५) | परा | नाश | पराजय, पराभव, पराक्रम, परास्त। |
| (१६) | परि | अनादर, उल्टा | परिक्रमा, परिकल्पना, परिणाम, परिधि। |
| (१७) | प्र | अधिक, अतिशय | प्रबल, प्रयत्न, प्रगति, प्रताप। |
| (१८) | प्रति | विरुद्ध, हरेक | प्रतिकूल, प्रतिकार, प्रत्येक, प्रतिक्षण। |
| (१९) | वि | अभाव, विशेषता | विपथ, विपक्ष, विजय, विलक्षण। |
| (२०) | सम | अच्छा, सहित | संयोग, संजय, सम्मान, संतुलन। |
| (२१) | सु | शुभ, मंगल | सुकर्म, सुगम, सुपुत्र, सुनयन। |
| (२२) | अ | निषेध, अभाव | अज्ञान, अमग, अधर्म, अहिंसा। |

**उर्दू फारसी के उपसर्ग -**

| क्र. | उपसर्ग | अर्थ | शब्द |
|---|---|---|---|
| (१) | कम | हीन, थोड़ा | कमबख्त, कमज़ोर, कमदाम, कमउम्र। |
| (२) | खुश | उत्तम, अच्छा | खुशबू, खुशदिल, खुशखबरी, खुशहाल। |
| (३) | ग़ैर | अलग, बिना | गिरफ़िम्मेदार, ग़ैरसरकारी, गैरकानूनी, ग़ैरहाज़िर। |
| (४) | ना | नहीं | नाराज़, नादान, नालायक, नापसंद, नासमझ। |
| (५) | बा | सहित | बाइज्ज़त, बाकायदा, बदकिस्मत, बदसूरत। |
| (६) | बद | बुरा | बदबू, बदतमीज, बदकिस्मत, बदसूरत। |
| (७) | बे | अभाव, बिना | बेहोश, बेशक, बेदाग़, बेरहम। |
| (८) | हम | साथ | हमउम्र, हमराज, हमशक्ल, हमवतन। |

## (७) प्रत्यय

**प्रत्यय** - जो शब्द या अक्षर शब्दों के अंत में जुड़कर मूल शब्द का अर्थ परिवर्तित कर देते हैं, उन्हें 'प्रत्यय' कहते हैं।

**जैसे -**

(१) सुंदर (विशेषण) + ता (प्रत्यय) = सुंदरता (भाववाचक संज्ञा)

(२) भारत (संज्ञा) + ईय (प्रत्यय) = भारतीय (विशेषण)

(३) क्रोध (भाववाचक संज्ञा) + ईत = क्रोधित (विशेषण) (प्रत्यय)

(४) मनुष्य (जातिवाचक संज्ञा) + ईत = क्रोधित (विशेषण) (प्रत्यय)

(५) खेलना (क्रिया) + आड़ी (प्रत्यय) = खिलाड़ी (संज्ञा)

### प्रत्यय के प्रकार

**प्रत्यय के दो प्रकार होते हैं -**

(१) **कृदंत प्रत्यय** (२) **तद्धित प्रत्यय**

(१) **कृदंत प्रत्यय** - जो प्रत्यय क्रियाओं के अंत में जोड़े जाते हैं, उन्हें **'कृदंत प्रत्यय'** कहते है।

**जैसे -** उड़ना + आन = उड़ान

भटकना + आव = भटकाव

घबराना + आहट = घबराहट

गाना + वाला = गानेवाला

यहाँ आन, आव, आई, आहट और वाला कृदंत प्रत्यय है।

(२) **तद्धित प्रत्यय** - जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के अंत में जोड़े जाते हैं, उन्हें 'तद्धित प्रत्यय' कहते हैं।

**जैसे -** मानव + ता = मानवता

अपना + त्व = अपनत्व

चतुर + आई = चतुराई

सुंदर + य = सौंदर्य

बच्चा + पन = बचपन

यहाँ ता, त्व, आई, य और पन तद्धित प्रत्यय है।

**(अ) प्रमुख कृदंत प्रत्यय -**

(१) आव - पड़ाव, घेराव, सुझाव

(२) आवट - सजावट, मिलावट, लिखावट

(३) आहट - पहनावा, छलावा, बढ़ावा

(४) आहट - जगमगाहट, सरसराहट, चिल्लाहट

(५) आई - लिखाई, लड़ाई, सिलाई

(६) आन - उड़ान, थकान, मिलान

(७) ई - हँसी, बोली, धमकी

(८) ता - कर्ता, धर्ता, दाता

(९) त - बचत, खपत

(१०) आऊ - बिकाऊ, काम-चलाऊ, टिकाऊ

(११) अक - वाहक, धारक, गायक

(१२) वाला - नाचनेवाला, जानेवाला, बोलनेवाला

(१३) अवना - सुहावना, लुभावना

(१४) ऐया - गवैया

(१५) आक - तैराक

(१६) आड़ी - खिलाड़ी

(१७) आ - झूला

(१८) ओरा - चटोरा
(१९) ओड़ा - भगोड़ा
(२०) आकू - लड़ाकू
(२१) क - मारक, घोलक, बैठक
(२२) ऐत - लड़ैत, चढ़ैत
(२३) एरा - लुटेरा, बसेरा

**(ब) प्रमुख तद्धित प्रत्यय -**

(१) आ - भूखा, प्रिया, विनीता
(२) आई - चतुराई, भलाई, बुराई
(३) ता - सुंदरता, प्रभुता, श्रेष्ठता
(४) आऊ - ऊपजाऊ, पंडिताऊ, बटाऊ
(५) आका - धमाका, धड़ाका
(६) आयत - बहुतायत, तिसरायत, अपनायत
(७) आलू - झगड़ालू, लजालू
(८) आलु - दयालु, कृपालु, ईर्ष्यालु
(९) आवट - अमावट
(१०) आर - लुहार, सुनार, कुम्हार
(११) इन - धोबिन, मालिन, तेलिन
(१२) इया - दुखिया, रसिया, बिटिया
(१३) इला - रंगीला, जहरीला, रसीला
(१४) ऊ - पेटू, बाजारू, ढालू
(१५) ई - मजदूरी, खुशी, पहाड़ी
(१६) एरा - सँपेरा, ममेरा, चचेरा
(१७) एला - अकेला, सौतेला
(१८) औड़ा - हथौड़ा
(१९) औती - बपौती, कठौती
(२०) हारा - लकड़हारा, मनिहारा
(२१) य - सौंदर्य, माधुर्य, ऐश्वर्य
(२२) त्व - मनुजत्व, अपनत्व, बंधुत्व
(२३) पन - परायापन, पीलापन, अकेलापन

## (८) लिंग

हिंदी में लिंग को दो वर्गों में बाँटा गया हैं :-

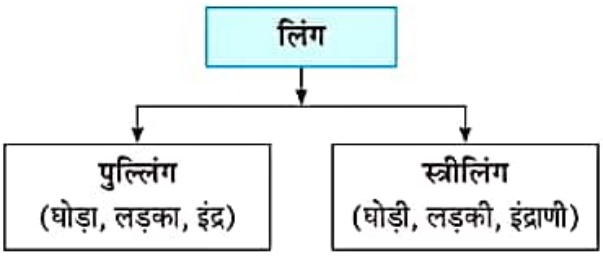


जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं, उन्हें **पुल्लिंग** कहते हैं और जो शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं, उन्हें **स्त्रीलिंग** कहते हैं। हिंदी में अधिकांश पुल्लिंग शब्दों से स्त्रीलिंग शब्द बनाए जाते हैं।

**लिंग में परिवर्तन के नियम :-**

**(१) 'ता' से अंत होने पर 'ता' के स्थान पर 'त्रा' करके :**

| पुल्लिंग | स्त्रीलिंग | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| नेता | नेत्री | कर्ता | कर्त्री |
| दाता | दात्री | धाता | धात्री |
| वक्ता | वक्त्री | विधाता | विधात्री |

**(२) 'आ' प्रत्यय जोड़कर :**

| पुल्लिंग | स्त्रीलिंग | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| सुत | सुता | महोदय | महोदया |
| शिष्य | शिष्या | बाल | बाला |
| मूर्ख | मूर्खा | पूज्य | पूज्या |

**(३) 'वान/मान' से समाप्त होनेवाले पुल्लिंग के साथ 'वती/मती' प्रत्यय जोड़कर :**

| पुल्लिंग | स्त्रीलिंग | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| ज्ञानवान | ज्ञानवती | बुद्धिमान | बुद्धिमती |
| बलवान | बलवती | श्रीमान | श्रीमती |
| रूपवान | रूपवती | आयुष्यमान | आयुष्मती |

**(४) 'इका' प्रत्यय जोड़कर :**

| पुल्लिंग | स्त्रीलिंग | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| नायक | नायिका | सेवक | सेविका |
| गायक | गायिका | लेखक | लेखिका |
| याचक | याचिका | साधक | साधिका |

**(५) 'इना' प्रत्यय जोड़कर :**

| पुल्लिंग | स्त्रीलिंग | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| हंस | हंसिनी | तपस्वी | तपस्विनी |
| प्रार्थी | प्रार्थिनी | अभिमानी | अभिमानिना |
| स्वामी | स्वामिनी | यशस्वी | यशस्विनी |

**(६) 'नि' प्रत्यय जोड़कर :**

| पुल्लिंग | स्त्रीलिंग | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| शेर | शेरनी | मोर | मोरनी |
| चोर | चोरनी | भील | भीलनी |
| सिंह | सिंहनी | राक्षस | राक्षसनी |

(७) 'इन' प्रत्यय जोड़कर :

| पुल्लिंग | स्त्रीलिंग | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| लुहार | लुहारिन | कहार | कहारिन |
| सुनार | सुनारिन | ग्वाला | ग्वालिन |
| पापी | पापिन | साँप | साँपिन |

(८) 'इया' प्रत्यय जोड़कर :

| पुल्लिंग | स्त्रीलिंग | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| चूहा | चुहिया | लोटा | लुटिया |
| बूढ़ा | बुढ़िया | कुत्ता | कुतिया |
| डिब्बा | डिबिया | बेटा | बिटिया |

(९) 'ई' प्रत्यय जोड़कर :

| पुल्लिंग | स्त्रीलिंग | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| लड़का | लड़की | मामा | मामी |
| घोड़ा | घोड़ी | चाचा | चाची |
| पुत्र | पुत्री | देव | देवी |

(१०) 'आईन' प्रत्यय जोड़कर :

| पुल्लिंग | स्त्रीलिंग | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| ठाकुर | ठकुराइन | बाबू | बबुआइन |
| हलवाई | हलवाइन | पंडित | पंडिताइन |
| गुरु | गुरुआइन | लाला | ललाइन |

(११) 'आना' प्रत्यय जोड़कर :

| पुल्लिंग | स्त्रीलिंग | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| इंद्र | इंद्राणी | नौकर | नौकरानी |
| मेहतर | मेहतरानी | जेठ | जेठानी |
| देवर | देवरानी | सेठ | सेठानी |
| मुग़ल | मुग़लानी | क्षत्रिय | क्षत्राणी |

(१२) कुछ स्त्रीलिंग वाची शब्दों में प्रत्यय जोड़कर पुल्लिंग बनाए जाते हैं :

| पुल्लिंग | स्त्रीलिंग | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| मौसा | मौसी | जीजा | जीजी |
| बहनोई | बहन | ननदोई | ननद |

(१३) भिन्न रूप वाले शब्दों का लिंग परिवर्तन :

| पुल्लिंग | स्त्रीलिंग | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| वीर | वीरांगना | कवि | कवयित्री |
| बेटा | बहू | राजा | रानी |
| वर | वधू | विधूर | विधवा |
| बैल | गाय | सास | ससुर |
| सम्राट | सम्राज्ञी | नपुंसक | बाँझ |
| बादशाह | बेग़म | भाई | भाभी |
| बुआ | फूफा | पुरुष | स्त्री |
| युवक | युवती | पति | पत्नी |
| पिता | माता | बाप | माँ |
| साहब | बीबी/मेम | साला | सरहज |
| नर | नारी, मादा | विद्वान | विदुषी |

## (९) वचन परिवर्तन

शब्द के जिस रूप से एक या अनेक का बोध हो, उसे **'वचन'** कहते हैं। हिंदी में वचन को दो वर्गों में बाँटा जाता है :-

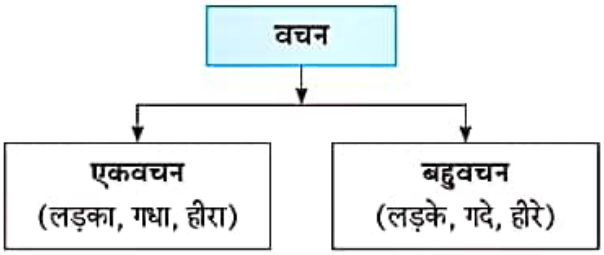


**वचन परिवर्तन के नियम :**

हिंदी में शब्दों का वचन बदलने के प्रमुख नियम इस प्रकार हैं-

(अ) **पुल्लिंग शब्दों के नियम :**

(१) **'आ' से अंत होने वाली संज्ञाओं के अंतिम 'आ' को 'ए' में बदलकर; जैसे -**

| एकवचन | बहुवचन | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| घड़ा | घड़े | बच्चा | बच्चे |
| बेटा | बेटे | छाता | छाते |
| लोटा | लोटे | कपड़ा | कपड़े |
| केला | केले | लड़का | लड़के |
| चीता | चीते | रुपया | रुपये |
| घोड़ा | घोड़े | बूढ़ा | बूढ़े |

**अपवाद :** निम्नलिखित शब्दों के साथ यह नियम नहीं चलता -

(i) संस्कृत के कुछ 'आ' से अंत होने वाले पुल्लिंग शब्दों में : भ्राता, राजा, पिता, देवता, अभिनेता, कर्ता, चंद्रमा, आदि में।

(ii) संबंधों की सूचना देनेवाले शब्दों में : माता, नाना, चाचा, लाला आदि।

(आ) स्त्रीलिंग शब्दों के नियम:

(१) 'अ' से अंत होने वाली स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंतिम 'अ' को 'एँ' ( ँ ) करके -

| एकवचन | बहुवचन | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| रात | रातें | झील | झीलें |
| बात | बातें | कलम | कलमें |
| आँख | आँखें | नहर | नहरें |
| सड़क | सड़कें | दीवार | दीवारें |
| बहन | बहनें | पुस्तक | पुस्तकें |

(२) आकारात स्त्रीलिंग शब्दों में अंतिम 'आ' के आगे 'एँ' जोड़कर -

| एकवचन | बहुवचन | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| सभा | सभाएँ | कथा | कथाएँ |
| माता | माताएँ | लता | लताएँ |
| कन्या | कन्याएँ | भावना | भावनाएँ |
| अध्यापक | अध्यापिकाएँ | महिला | महिलाएँ |

(३) 'इ' से अंत होने वाली संज्ञाओं में अंत में 'याँ' लगाकर -

| एकवचन | बहुवचन | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| जाति | जातियाँ | पंक्ति | पंक्तियाँ |
| नीति | नीतियाँ | निधि | निधियाँ |
| तिथि | तिथियाँ | राशि | राशियाँ |
| रीति | रीतियाँ | समिती | समितियाँ |

❖❖❖

(४) 'ई' से अंत होने वाली स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंतिम 'ई' को 'याँ' ( ँ ) करके -

| एकवचन | बहुवचन | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| नदी | नदियाँ | स्त्री | स्त्रियाँ |
| रानी | रानियाँ | सखी | सखियाँ |
| रोटी | रोटियाँ | थाली | थालियाँ |
| लड़की | लड़कियाँ | नारी | नारियाँ |

(५) 'आ' से अंत होने वाली स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंतिम 'आ' को 'एँ' ( ँ ) करके -

| एकवचन | बहुवचन | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| सेना | सेनाएँ | गौ | गौएँ |
| धेनु | धेनुएँ | वधु | वधुएँ |
| ऋतु | ऋतुएँ | बहु | बहुएँ |
| माता | माताएँ | कथा | कथाएँ |
| कविता | कविताएँ | लता | लताएँ |
| लेखिका | लेखिकाएँ | माला | मालाएँ |
| बालिका | बालिकाएँ | अध्यापिका | अध्यापिकाएँ |

(६) 'या' से अंत होने वाली संज्ञाओं को बहुवचन के बदलने के लिए अंत में ( ँ ) जोड़ा जाता है -

| एकवचन | बहुवचन | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| बुढ़िया | बुढ़ियाँ | डिबिया | डिबियाँ |
| गुड़िया | गुड़ियाँ | चिड़िया | चिड़ियाँ |

# उपयोजित लेखन

## १ पत्र-लेखन

पत्र संचार का एक माध्यम है। पत्र के द्वारा हम अपनी बात, विचार और समस्या को दूर बैठे व्यक्ति तक पहुँचा सकते हैं। अपने विचार को स्पष्ट और प्रभावशाली तरीके से रखने के लिए पत्र-लेखन की कला का ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

**पत्र-लेखन के दो भेद निम्नलिखित रूप में है :**

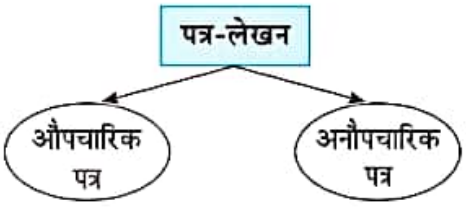


**(१) औपचारिक पत्र :**

इसके अंतर्गत प्रार्थना पत्र, व्यावसायिक पत्र और कार्यालयीन पत्र आते हैं।

**(२) अनौपचारिक पत्र :**

इसके अंतर्गत मित्र, रिश्तेदारों, परिवार के सदस्यों को लिखे जानेवाले पत्र सम्मिलित जाते हैं।

**पत्र-लेखन में निम्नलिखित बातें आवश्यक हैं:**

**(i) दिनांक :**

दिनांक ऊपर बाईं ओर लिखें। जिस दिन आप पत्र लिख रहे हैं उसी दिन का दिनांक लिखिए। इसमें दिनांक, महीने का पूरा नाम और वर्ष लिखिए।

**(ii) पद और पता :**

दिनांक के नीचे दूसरी पंक्ति में **सेवा में,** लिखें। फिर जिसे पत्र लिख रहे हैं, उसका पद (**श्रीमान व्यवस्थापक**) दूसरी पंक्ति में लिखे और तीसरी पंक्ति में उसका **पता** लिखें।

**उदाहरण :**

सेवा में,
श्रीमात व्यवस्थापक जी,
नूतन पुस्तक भंडार,
सागर दर्शन,
बाजारपेठ
पूना - ४०००० ४।

**(iii) विषय :**

पते के बाद नीचे की पंक्ति पर **विषय** शीर्षक दीजिए और पत्र का विषय लिखिए।

**उदाहरण :**

**विषय :** पुस्तकों की माँग हेतु निवेदन पत्र।

**(iv) संबोधन :**

जिसे पत्र लिखना है, उसके लिए शिष्टतापूर्ण संबोधन लिखें।

**जैसे**-माननीय महोदय, या माननीय महोदया ... आदि।

**(v) विषय की व्याख्या :**

संबोधन के बाद पत्र का मुख्य भाग अर्थात विषयवस्तु का आरंभ होता है। पत्र को **आरंभ, मध्य** और **अंत** इन तीन भागों में बाँटें।

**(vi) प्रेषक के हस्ताक्षर :**

अंत में पत्र की बाँईं ओर समापन-सूचक शब्दों के साथ पत्र लिखने वाले के हस्ताक्षर होते हैं।

**उदाहरण :**

भवदीय अथवा भवदीया,
रमेश पाटील अथवा रमा पाटील।
आपका आज्ञाकारी छात्र अथवा आपकी आज्ञाकारी छात्रा,
रमेश पाटील अथवा रमा पाटील।

**(vii) प्रेषक का नाम, पता व ई-मेल आईडी :**

प्रेषक अर्थात पत्र लिखनेवाला व्यक्ति। प्रेषक के हस्ताक्षर के बाद नीचे की पंक्ति में प्रेषक का नाम, पता व ई-मेल आईडी लिखें। पत्र में अपना वास्तविक नाम व पता कहीं भी न लिखें। प्रश्नपत्रिका में जो नाम व पता दिया गया हो, उसे ही लिखें। अगर नाम नहीं दिया गया है तो क, ख, ग लिखें। पता व ई-मेल आईडी काल्पनिक लिखें।

**(viii) पत्र की भाषा :**

पत्र की भाषा, शुद्ध और प्रवाहमयी होनी चाहिए। पत्र में कठिन भाषा का प्रयोग आवश्यक नहीं है। औपचारिक पत्र भावुकता रहित, संक्षिप्त और सरल होना चाहिए।

**संबोधन तथा अभिवादन :**

संबोधन तथा अभिवादन दोनों महत्त्वपूर्ण होते हैं। इसके अंतर्गत पत्र लिखने वाले की सावधानी, कुशलता और सहृदयता का परिचय देना चाहिए। संबोधनों में विशेषण भी महत्त्वपूर्ण होते हैं।

**उदाहरण :**

श्रद्धेय दादाजी, पूजनीय, आदरणीय, पूजनीया, प्रियवर, चिरंजीव।

**मुख्य विषय :**

पत्र का मुख्य विषय सहज-स्वाभाविक होना चाहिए। उसमें रिश्तों की मधुर सुगंध होनी चाहिए। विषय में औपचारिकता की बजाय हृदय की सच्चाई प्रकट होनी चाहिए। विषय के आरंभ में परिवारजनों का हाल-चाल पूछना चाहिए तथा अंत में उनके लिए उचित आदर या स्नेह प्रकट करना चाहिए।

**विषय का आरंभ :**

तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर हाल मालूम हुआ। आशा है तुम स्वस्थ और प्रसन्न होगे।

**विषय का अंत :**

माता-पिता को मेरी ओर से सादर नमस्कार कहना। अनुज को स्नेह! स्मिता को प्यार! चाची को प्रणाम कहें।

सभी पारिवारजनों को यथायोग्य प्रणाम कहें। शेष शुभ!, शेष मिलने पर!, आज इतना ही! अच्छा, फिर मिलेंगे।

**उपसंहार :**

पत्र के अंत में पत्र-लेखक बाई ओर नीचे आत्मीयता प्रकट करता हुआ अपना नाम लिखता है।

**जैसे :** आपका सुपुत्र, भवदीय, आपका अनुज, तुम्हारा प्रिय, तुम्हारा अपना, तुम्हारा अभिन्न मित्र, आपका ही, तुम्हारा ही।

**व्यक्तिगत पत्र के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित रूप में हैं :**

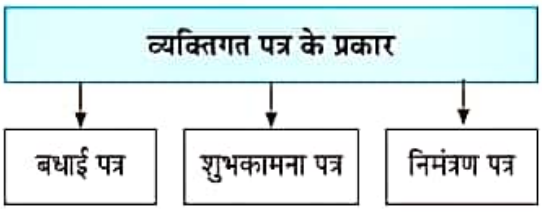


**(१) विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण होने पर अपने मित्र को एक बधाई-पत्र लिखिए।**

दिनांक - २७ अप्रैल, २०१८

प्रिय विजय

मधुर स्मृति!

बहुत-बहुत बधाई हो! मुझे अभी-अभी तुम्हारे मित्र नीरज का टेलिफोन संदेश मिला। पता चला कि तुमने इस वर्ष नौवीं कक्षा में अपने विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। अगले वर्ष तुम्हारी बोर्ड की परीक्षा होनी है। आशा है, उसमें भी तुम अपने माता-पिता का नाम उज्ज्वल करोगे।

अजय! मुझे इस समाचार से बहुत प्रसन्नता हुई है। मन में इतनी खुशी हुई कि सारे जरूरी काम छोड़कर तुम्हें बधाई-पत्र लिख रहा हूँ। मेरी ओर से हार्दिक बधाई। ईश्वर करें तुम दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करों। मम्मी-पापा भी तुम्हें आशीर्वाद दे रहे हैं।

पुन: बधाई के साथ।

तुम्हारा मित्र,

अजय

नाम : अजय सिंह

पता : अशोक नगर,
वी. पी. रोड,
नाशिक - ०२।

ई-मेल आईडी : ajay123@gmail.com

**शुभकामना-पत्र**

**(२) पवन शर्मा, १८३ गाँधी नगर, पटना के निवासी हैं। अपने मित्र इंद्रभूषण, १८-ए, विजयनगर, दिल्ली को नव वर्ष पर शुभकामना-पत्र लिखते है।**

दिनांक - २४ दिसंबर, २०१७

प्रिय इंदुभूषण

स्नेह!

१ जनवरी, २०१७ से शुरू होने वाला यह नया वर्ष तुम्हारे जीवन में सुख-समृद्धि की वर्षा करे। तुम्हारा जीवन खुशियों से भर जाए। मेरी शुभकामना स्वीकार करो।

धन्यवाद!

तुम्हारा,

पवन शर्मा

नाम : पवन शर्मा

पता : १८२ निर्मल पार्क,
गाँधी नगर, पटना

ई-मेल आईडी : pawan123@gmail.com

**निमंत्रण-पत्र**

**(३) अपने मित्र को जन्मदिवस पर निमंत्रण-पत्र लिखिए।**

दिनांक - मार्च २५, २०१८

प्रिय पंकज

स्नेह!

आशा है स्वस्थ होगे। मैं भी यहाँ कुशल हूँ। मित्र! इस बार मेरा जन्म-दिन धूमधाम से मनाने की तैयारियाँ है। अत: तुम २० मार्च की तिथि मेरे लिए सुरक्षित कर लो। तुम १९ मार्च की रात तक पहुँच जाओ, ताकि सभी कार्यक्रमों में शामिल हो सको। कार्यक्रम इस प्रकार है -

प्रात: ७ बजे हवन-यज्ञ होगा। हवन के बाद धार्मिक प्रवचन होंगे। इसके बाद मित्र-मंडली रंगारंग कार्यक्रम पेश करेगी। इसके बाद सहभोज होगा।

माताजी व पिताजी को चरण-स्पर्श। १९ मार्च को आना न भूलना।

तुम्हारा,

राकेश

नाम : राकेश कुमार

पता : ६३७-ए, सेक्टर-१२, इस्पात नगर, बोकारो।

ई-मेल आईडी : rakesh123@gmail.com

## औपचारिक-पत्र

**(१) सार्वजनिक गणेशोत्सव के समय २४ घंटे ऊँची आवाज में रेकॉर्ड बजने के कारण कोल्हापुर में रहने वाले करन/करिश्मा वेद के अध्ययन में बाधा पड़ती है। इस संदर्भ में वह शहर कोतवाल, शहर विभाग, कोल्हापुर को शिकायत पत्र लिखता/लिखती है।**

दिनांक - ५ मार्च, २०१८

सेवा में,

श्रीमान कोतवाल साहब,

शहर विभाग, कोल्हापुर।

विषय : सार्वजनिक गणेशोत्सव के समय ध्वनि प्रदूषण का शिकायती पत्र।

माननीय महोदय,

मैं दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। इस पत्र द्वारा मैं रिकॉर्ड बजने के कारण अध्ययन में पड़नेवाली बाधा की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।

शहर में आजकल चारों तरफ गणेशोत्सव की धूम है। दिन-रात शहर में रिकार्ड बज रहे हैं। परीक्षा करीब है और पढ़ाई ठीक से नहीं हो पा रही है। आवाज़ इतनी तेज रहती है कि पढ़ने में मन नहीं लगता है। हम कई बार रिकार्ड बजानेवालों से शिकायत कर चुके हैं लेकिन उन्होंने हमारी बात पर ध्यान नहीं दिया। रिकार्ड बजाने की समय-सीमा निर्धारित होनी चाहिए, ताकि हम शांतिपूर्ण ढंग से अध्ययन कर सकें।

अत: आपसे प्रार्थना है कि विद्यार्थियों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए उचित कार्यवाही करने की कृपा करें।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

धन्यवाद!

भवदीय,

करन वेद।

नाम : करन वेद

पता : बगीचा बिल्डिंग,

कोल्हापुर।

ई-मेल आईडी : karan123@gmail.com

**(२) गांधी नगर, अमरावती में अशुद्ध जल की आपूर्ति होने के कारण वहाँ के निवासी त्रस्त हैं। इस संदर्भ में महेश शर्मा/महिमा शर्मा, स्वास्थ्य अधिकारी, महानगर पालिका, अमरावती को शिकायत पत्र लिखता/ लिखती है।**

दिनांक - १५ मार्च, २०१८

सेवा में,

श्रीमान स्वास्थ्य अधिकारी जी,

महानगर पालिका,

अमरावती - ३५५४२१

विषय : अशुद्ध जल की आपूर्ति के संबंध में शिकायत पत्र।

माननीय महोदय,

मैं आपके शहर का एक निवासी हूँ। बड़े दुख के साथ आपको सूचित करना पड़ रहा है कि पिछले कई दिनों से शहर में अशुद्ध जल की आपूर्ति की जा रही है। अशुद्ध जल पीने से सारा शहर महामारी की चपेट में आ गया है। लोग डायरिया जैसी भयंकर बीमारी के शिकार हो रहे हैं। महानगर पालिका के अधिकारी अब तक अनजान बने हुए हैं और नगर निवासी परेशान हैं। शुद्ध जल की आपूर्ति के बिना बीमारी पर नियंत्रण पाना असंभव है। यदि समय रहते ध्यान न दिया गया तो स्थिति और भी बिगड़ सकती है।

अत: आपसे प्रार्थना है कि जनहित को ध्यान में रखते हुए तत्काल उचित कार्यवाही करने की कृपा करें।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

धन्यवाद!

भवदीय,

महेश शर्मा।

नाम : महेश शर्मा

पता : गांधी नगर,

अमरावती - ३५५४२१

ई-मेल आईडी : mahesh@gmail.com

**(३) रामपुर, थाना में कचरे के डिब्बे में भरा कचरा सड़ रहा है। अत: वहाँ के निवासी त्रस्त हैं। इस संदर्भ में प्रेम/प्रतिमा वर्मा, स्वास्थ्य अधिकारी, नगर परिषद, थाना को शिकायत पत्र लिखता/लिखती है।**

दिनांक - १८ मार्च, २०१८

सेवा में,
श्रीमान स्वास्थ्य अधिकारी जी,
नगर परिषद, थाना।

**विषय :** मुहल्ले की गंदगी के संबंध में शिकायत पत्र।

माननीय महोदय,

मैं आपके शहर का एक निवासी हूँ। इस पत्र के द्वारा मैं आपका ध्यान शहर में फैली गंदगी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

पिछले कुछ दिनों से मुहल्ले में गंदगी ज्यादा ही बढ़ गई। कचरे के डिब्बे में भरा कचरा सड़ रहा है। अंदर से ज्यादा कचरा बाहर पड़ा हुआ है। एक तो सफाई कर्मचारी नियमित आते नहीं और आते भी हैं तो बाहर का कचरा छोड़ देते हैं। चारों तरफ बदबू फैल रही ही। मच्छरों का प्रकोप बढ़ गया है। लोग भयंकर बीमारी के शिकार हो रहे हैं।

अत: आपसे प्रार्थना है कि नागरिकों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए शीघ्र ही उचित कार्यवाही करने की कृपा करें।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

धन्यवाद!

भवदीय,
प्रेम वर्मा।

नाम : प्रेम वर्मा
पता : ४/सी रूप दर्शन,
रामपुर, थाना।
ई-मेल आईडी : prem@gmail.com

**(४) लक्ष्मीनगर, अमरावती निवासी संतोष/संगीता तिवारी ने कुछ पुस्तकें मँगवाई थीं किंतु पुस्तकों की कम प्रतियों की प्राप्ति तथा फटी पुस्तकों के कारण वे त्रस्त हैं। इस संदर्भ में वह व्यवस्थापक, शीतल बुक डेपो, मंगलवार पेठ, पूना को शिकायत पत्र लिखता/लिखती है।**

दिनांक - ५ मार्च, २०१८

सेवा में,
श्रीमान व्यवस्थापक जी,
शीतल बुक डिपो, मंगलवार पेठ,
पूना - ४११०३०

**विषय :** पुस्तकों की कम प्रतियों की प्राप्ति तथा फटी पुस्तकों के लिए शिकायत पत्र।

माननीय महाशय,

मैं आपका नियमित ग्राहक हूँ। इस पत्र के द्वारा मैं आपका ध्यान मँगवाई गई पुस्तकों की कम प्रतियों तथा तीन फटी पुस्तकों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

मैंने दस दिन पहले ही आपके यहाँ से पुस्तकें मँगवाई थीं। बड़े दुख के साथ लिखना पड़ रहा है कि पुस्तकें संख्या में अपूर्ण हैं और कुछ प्रतियाँ फटी हुई हैं। हिंदी व्याकरण और अंग्रेजी की दस प्रतियाँ मँगवाई थीं लेकिन आठ ही प्राप्त हुई हैं। इसके अलावा 'भारत की खोज', 'वीर सावरकर की जीवनी' तथा 'गोदान' पुस्तकों की प्रतियाँ फटी हुई हैं। ये तीनों पुस्तकें पोस्ट पार्सल के माध्यम से वापस भेज रहा हूँ। कैश मेमो क्रमांक २२२/ए दिनांक २५ फरवरी, २०१८ है। बिल की झेरॉक्स कॉपी पत्र के साथ भेज रहा हूँ। आशा करता हूँ कि पत्र मिलते ही उपर्युक्त विषय पर आप ध्यान देंगे और नई पुस्तकें भिजवाने की व्यवस्था करेंगे।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

धन्यवाद!

भवदीय,
संतोष तिवारी।

नाम : संतोष तिवारी
पता : लक्ष्मीनगर, अमरावती।
ई-मेल आईडी : santosh@gmail.com

**(५) सोनिया औषधि भंडार, शहीद चौक, जालंधर आयुर्वेदिक औषधियाँ ५०% मूल्य में उपलब्ध**

१. कायम चूर्ण
२. च्यवनप्राश
३. द्राक्षासव
४. शहद ..... आदि

**उपर्युक्त विज्ञापन पढ़कर फिरोजपुर से रमेश/रमा पांडे विविध औषधियों की माँग करते हुए पत्र लिखता/लिखती है।**

दिनांक - ५ मार्च, २०१८

सेवा में,
श्रीमान व्यवस्थापक जी,
सोनिया औषधि भंडार,
शहीद चौक, जालंधर।

**विषय :** औषधियाँ मँगवाने के लिए प्रार्थना पत्र।

माननीय महोदय,

मैं आपका नियमित ग्राहक हूँ। मुझे जिन औषधियों की आवश्यकता होती है, वे सभी आपके यहाँ आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं।

पिछले तीन-चार सालों से मैं आपके यहाँ से औषधियाँ खरीद रहा हूँ। कुछ दिन पहले ही मैंने आपके औषधि भंडार से कुछ दवाएँ मँगवाई थीं। उन दवाओं के सेवन से मुझे बहुत आराम मिला है। कुछ और आयुर्वेदिक औषधियाँ मँगवाना चाहता हूँ। पाँच सौ रुपए का पोस्टल ऑर्डर पत्र के साथ भेज रहा हूँ।

**दवाओं की सूची इस प्रकार है :**

| क्रम संख्या | औषधि का नाम | मात्रा |
|---|---|---|
| १ | कायम चूर्ण | ३०० ग्राम |
| २ | च्यवनप्राश | ८०० ग्राम |
| ३ | द्राक्षासव | ५ बोतल |
| ४ | शहद | १ बोतल |

आशा है कि आप शीघ्र ही औषधियाँ भेजने की कृपा करेंगे।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

धन्यवाद!

भवदीय,
रमेश पांडे।

नाम : रमेश पांडे
पता : अमृतनगर, फिरोजपुर।
ई-मेल आईडी : ramesh@gmail.com

**(६) नासिक निवासी सुंदर/सुंदरी शर्मा की छोटी बहन बीमार है। अत: वह तीन दिन की छुट्टी के लिए अपने प्रधानाध्यापक, तिलक विद्यालय, नासिक के नाम प्रार्थना पत्र लिखता/लिखती है।**

दिनांक - ५ मार्च, २०१८

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाध्यापक जी,
तिलक विद्यालय, इंद्रापथ,
नासिक।

**विषय :** तीन दिनों की छुट्टी के लिए प्रार्थना-पत्र।

माननीय महोदय,

मैं सुंदर शर्मा, कक्षा दसवी 'अ' में पढ़नेवाला छात्र हूँ। मेरा अनुक्रमांक २० है।

मेरी छोटी बहन पिछले कई दिनों से बीमार है। वह इस समय अस्पताल में भर्ती है। उसे अनिद्रा, रक्तचाप जैसी बीमारियों ने घेर रखा है। वह चल-फिर नहीं सकती है। पिताजी जरूरी काम से नगर के बाहर गए हैं। इसलिए मुझे तीन दिन की छुट्टी की आवश्यकता है।

अत: आपसे प्रार्थना है कि मुझे दिनांक ५ मार्च, २०१६ से ७ मार्च, २०१६ तक तीन दिन की छुट्टी प्रदान करने की कृपा करें। इन तीन दिनों में पढ़ाई का जो व्यवधान होगा, उसे मैं अवश्य पूर्ण कर लूँगा।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

धन्यवाद!

आपका आज्ञाकारी छात्र,
सुंदर शर्मा।
पता : १५ अ, शिवपुरी, नासिक।
ई-मेल आईडी : ssharma@gmail.com

**(७) 'विश्व ओजोन दिवस' (१६ सितंबर) के अवसर पर रैली निकालने के लिए आवश्यक अनुमति प्राप्त करने हेतु अपने ग्राम, तहसील, जिले के संबंधित अधिकारी को पत्र लिखिए।**

अथर्व देशमुख
आदर्श विद्यालय,
बदलापुर : ५०७८९६
दिनांक : १० मार्च, २०१८

सेवा में,
श्रीमान जिला अधिकारी,
नगर परिषद, बदलापुर।

**विषय :** 'विश्व ओजोन दिवस' के अवसर पर रैली निकालने के लिए आवश्यक अनुमति प्राप्त करने हेतु पत्र।

माननीय महोदय,

मैं कुमार अथर्व देशमुख आदर्श विद्यालय, बदलापुर का 'विद्यालय गतिविधि प्रमुख' हूँ। मैं यह पत्र आपको विद्यालय के प्रधानाचार्य जी के आदेशानुसार लिख रहा हूँ।

आप जानते हैं, १० सितंबर के दिन 'विश्व ओजोन दिन' के रूप में मनाया जाता है। अत: हम अपने विद्यालय की ओर से इस दिन की महत्ता एवं जागरूकता लोगों में निर्माण करने हेतु एक रैली निकालना चाहते हैं। इस दिन विद्यालय की ओर से सुबह ९ बजे निकाली जाने वाली रैली में कुल मिलाकर ८० बच्चे व ८ शिक्षक होंगे। यह रैली हमारे विद्यालय के सामने से गंगाधर रोड के मेन हायवे तक निकाली जाएगी। वहाँ से हम करीबन ११ बजे तक विद्यालय में वापस आ जाएँगे। रैली के दरम्यान सड़क से

आने-जानेवाले लोगों को हम 'प्रदूषण पर रोक लगाना व ओजोन को सुरक्षा प्रदान करना' आदि से परिचित कराएँगे।

आशा है कि आप हमें रैली निकालने की अनुमति देंगे। हम आपके अनुमति पत्र की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

धन्यवाद !

भवदीय,

अर्थव देशमुख।

आदर्श विद्यालय

(विद्यालय गतिविधि प्रमुख)

ई-मेल आईडी : atharva@gmail.com

## स्वाध्याय

**प्रश्न १ निम्नलिखित पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए।**

(i) मंगेश/मीना जोशी अत्यधिक बीमार होने के कारण अस्पताल में भर्ती है। इस कारण वह छमाही परीक्षा में उपस्थित नहीं रह सकता/सकती। अत: वह इस संदर्भ में प्रधानाध्यापक, आदर्श विद्यालय, पुणे के नाम प्रार्थना पत्र लिखता/लिखती है।

(ii) गांधी चौक, नासिक में स्ट्रीट लाइट न होने के कारण वहाँ के निवासी त्रस्त हैं। इस संदर्भ में दीपक/दीपाली राय उपअभियंता, महाराष्ट्र राज्य विद्युत मंडल, नासिक को शिकायत पत्र लिखता/लिखती है।

(iii) मुंबई निवासी अंतिमा/लता जाधव राजभाषा रत्न की परीक्षा देना चाहता/चाहती है। अत: वह राष्ट्रभाषा रत्न की नियमावली व पाठ्यपुस्तक सूची की माँग करते हुए परीक्षा मंत्री, राजभाषा प्रचार समिती, वर्धा के नाम पत्र लिखता/लिखती है।

(iv) गणेशोत्सव में होने वाली भीड़, दंगा-फसाद से कला नगर, नागपुर के निवासी त्रस्त हैं। इस संदर्भ में सुरक्षा हेतु पुलिस की संख्या में वृद्धि का अनुरोध करते हुए राज/रमा शिंदे, डी. एस. पी. महोदय, सुरक्षा विभाग, नागपुर को प्रार्थना पत्र लिखता/लिखती है।

(v) माधव/माधवी शर्मा का छोटा भाई आठवीं कक्षा में नवोदय बोर्डिंग स्कूल, नासिक में पढ़ता है। वह पढ़ाई में उसकी प्रगति जानना चाहता/चाहती है। अत: वर्ग अध्यापक, नवोदय बोर्डिंग स्कूल, नासिक को पत्र लिखता/लिखती है।

(vi) आपके चाचाजी चुनाव जीत गए हैं। मतदाताओं की अपेक्षाओं में खरे उतरने की कामना करते हुए उन्हें बधाई पत्र लिखिए।

❖❖❖

# २ कहानी-लेखन

किसी घटना के रोचक व मनोरंजनपूर्ण वर्णन को 'कहानी' कहते हैं। यह साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधा है। इसके द्वारा जिज्ञासा और कल्पनाशक्ति के साथ-साथ भाषाई कौशल और क्षमताएँ भी विकसित होती हैं।

➢ **कहानी-लेखन के संबंध में ध्यान देने योग्य बातें :**

(१) रूपरेखा के आधार पर कहानी लिखने के पहले रूपरेखा दो-तीन बार पढ़ लेनी चाहिए।

(२) हर वाक्य पूर्ण तथा क्रम से लिखें।

(३) कहानी का यथोचित विस्तार होना चाहिए।

(४) भाषा सरल तथा मुहावरेदार होनी चाहिए।

(५) एक घटना पूरी हो जाए, तो दूसरी घटना नए परिच्छेद से शुरू करनी चाहिए।

(६) कहानी लिखने के साथ उसका शीर्षक पूछा जाता है। अत: शीर्षक ऐसा देना चाहिए, जो कथा-वस्तु को व्यक्त करता हो। शीर्षक संक्षिप्त और आकर्षक होना चाहिए।

(७) कहानी से क्या सीख मिलती है, यह भी पूछा जाता है। अत: ध्यान से कहानी पढ़ने पर सीख का पता चल जाता है।

(८) कहानी को लिखकर रूपरेखा से मिला लेना चाहिए, जिससे कोई बाहरी बात न आने पाए।

(९) शीर्षक और सीख यदि नहीं भी पूछे गए हैं, तो भी लिखना अनिवार्य है।

(१०) कहानी के प्रसंगानुसार वातावरण का निर्माण होना चाहिए। उदाहरणार्थ, यदि गाँव में कहानी घटती है, तो गाँव का रोचक व सही वर्णन अपेक्षित है।

(११) कहानी में आए संवाद अवतरण चिह्न में लिखना अपेक्षित है।

(१२) कहानी के लिए शब्द सीमा ८० से १०० तक होनी चाहिए।

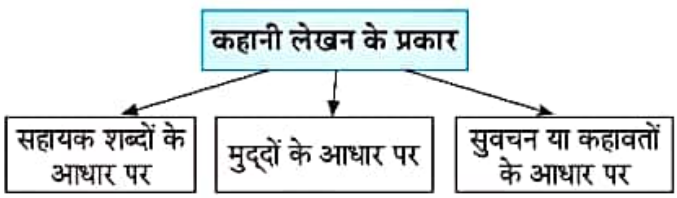


**प्रश्न १ निम्नलिखित कहावत के आधार पर कहानी लिखिए।**

जैसी करनी वैसी भरनी

**उत्तर:** **जैसी करनी वैसी भरनी**

गणेशपुर नामक गाँव में एक किसान के घर एक पालतू हाथी रहता था। वह बड़ा चालाक था। वह नियमित रूप से प्रतिदिन सबेरे के समय तालाब पर पानी पीने जाता था। उस रास्ते में एक दर्जी की दुकान पड़ती थी। वह रोज उसे खाने के लिए फल देता था। हाथी इस उपकार का बदला चुकाने के लिये तालाब से लौटते समय दर्जी को एक कमल का फूल देता था। इस प्रकार दोनों में गहरी दोस्ती हो गई।

एक दिन दर्जी ने मन में सोचा - क्यों न आज हाथी के साथ मजाक करूँ। जब हाथी प्रतिदिन के नियमानुसार फल लेने आया, तो दर्जी ने फल के बदले हाथी की सूँड में सुई चुभा दी। हाथी खून का घूँट पीकर तालाब पर चला गया। रास्ते में मन-ही-मन बदला लेने की युक्ति सोचने लगा।

तालाब से लौटते समय वह अपनी सूँड में कीचड़ भर लाया और दर्जी की दुकान में डाल दिया। दुकान में रखे सारे नए कपड़े खराब हो गए दर्जी अपनी करतूत से हुई हानि देखकर पछताने लगा।

**सीख :** इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि जैसा बीज बोओगे, वैसा फल पाओगे।

**प्रश्न २ निम्नलिखित शब्दों के आधार पर कहानी लिखिए।**

(स्त्री, अन्न, पत्थर, चोरी, महात्मा, न्याय)

**उत्तर:** **महात्मा का न्याय**

रामपुर नामक गाँव में लोग आनंद की जिंदगी व्यतीत करते थे। एक बार एक स्त्री ने किसी के घर से अन्न चुराया, क्योंकि माँगने पर भी उसे कुछ खाने को नहीं मिला था। वह चोरी करते हुए पकड़ी गई। लोगों ने स्वयं निर्णय लिया कि इसे सज़ा दी जाए।

लोग उस पर पत्थर फेंकने लगे। वह चिल्लाने लगी, पर किसी ने उसकी एक न सुनी। उसी समय वहाँ से एक महात्मा गुजरे। उन्होंने जब यह देखा तो इसका कारण पूछा। लोगों ने उस अन्न चुरानेवाली की सारी घटना कह सुनाई और कहा कि अब आप ही इसका फैसला करें।

महात्मा ने लोगों से कहा कि इसे दंड अवश्य मिलना चाहिए, क्योंकि इसने पाप किया है। यह सुनकर गाँववाले प्रसन्न होकर उसे दंड देने के लिए उतावले हो गए। महात्मा ने उन्हें रोका और कहा, ''पहला पत्थर वह मारे जिसने जीवन में कभी कोई पाप नहीं किया हो।'' यह सुनकर सब लोग एक दूसरे का मुँह देखने लगे, क्योंकि वहाँ कोई ऐसा नहीं था, जिसने कभी कोई पाप न किया हो। सब लोगों के हाथों से पत्थर गिर गए। सभी ने महात्मा से क्षमा माँगी और उस स्त्री को माफ कर दिया।

**सीख :** इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि सबसे बड़ा दंड अपराधी को क्षमा करना है।

**प्रश्न ३ निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर कहानी लिखिए।**

**मुद्दे :** शरारती चरवाहा ..... झूठ बोलने की आदत ..... चिल्लाना कि शेर आया ..... किसानों का दौड़कर आना ..... चरवाहे द्वारा किसानों का मजाक उड़ाना ..... तीन-चार बार ऐसे ही करना ..... सचमुच शेर का आ जाना ..... मदद के लिए कोई न आना।

उत्तर: **झूठ का परिणाम**

लखनपुर नामक गाँव में राजू नाम का एक शरारती चरवाहा रहता था। वह भेड़-बकरी चराने का काम करता था। उसे झूठ बोलने की आदत थी। एक दिन वह भेड़-बकरी चरा रहा था। उसी समय अचानक उसके मन में एक शरारत करने का विचार आया। वह पेड़ पर चढ़कर चिल्लाने लगा, 'शेर आया, मुझे बचाओ।'

आस-पास खेतों में काम करनेवाले किसान दौड़ते हुए उसे बचाने के लिए आए। वे इधर-उधर देखने लगे, उन्हें कहीं भी शेर नजर नहीं आया। उन्हें इस तरह अचंभित देख पेड़ पर बैठा राजू जोर-जोर से हँसने लगा। किसान अपना-सा मुँह लिए चले गए। कुछ दिन के बाद फिर राजू ने यह शरारत दोबारा की। किसान फिर आए और दुखी होकर चले गए।

इस तरह राजू ने कई बार अपनी शरारत से लोगों को तंग किया। एक दिन सचमुच शेर आ गया। वह मारे भय के जोर से चिल्लाने लगा, 'बचाओ... बचाओ, शेर आया.... शेर आया।'

लेकिन इस बार कोई किसान उसकी मदद के लिए नहीं आया। शेर राजू को मार कर खा गया। उसे झूठ बोलने का फल मिल गया।

**सीख:** इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा सच बोलना चाहिए।

**प्रश्न ४ निम्नलिखित कहावत के आधार पर कहानी लिखिए।**

जैसे को तैसा

उत्तर: **जैसे को तैसा**

एक घने जंगल में कई प्रकार के पशु-पक्षी आराम से रहते थे। वहीं तालाब के पास एक सारस भी रहता था। उसकी टाँगे और चोंच पतली और बड़ी लंबी थीं। वह मछलियों को अपनी चोंच में पकड़ता और खाता था।

एक दिन एक धूर्त लोमड़ी के यहाँ से सारस को भोजन का निमंत्रण मिला। सारस बड़ा ही प्रसन्न हुआ।

लोमड़ी के घर भोजन में स्वादिष्ट खीर बनाई गई थी और उसे थाली में परोसा गया था। सारस की चोंच लंबी थी, उसे खीर खाने में बड़ी मुश्किल हुई और वह कुछ न खा सका।

यह सब देखकर सारस कुछ न बोला और मन ही मन इसका बदला लेने की बात सोचता हुआ घर लौटा। कई दिनों के बाद एक दिन उसे मौका मिल ही गया।

सारस ने लोमड़ी को भोजन का निमंत्रण दिया। वह बहुत खुश हो गई और सारस के यहाँ पहुँच गई। सारस ने स्वादिष्ट खीर बनाई और सुराही में खाने के लिए परोसी। सुराही की गर्दन का आकार पतला था उसमें उसका मुँह नहीं जा सकता था। अत: लोमड़ी कुछ न खा सकी और उसे भूखा रहना पड़ा और वह बहुत शर्मिंदा हुई।

**सीख:** इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि किसी के साथ बुरा करके उससे अपने लिए भले ही उम्मीद नहीं करनी चाहिए।

**प्रश्न ५ निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर कहानी लिखिए।**

**मुद्दे:** एक व्यापारी का व्यापार करने हेतु गाँव-गाँव घूमना ..... पेड़ की छाँव में विश्राम करना ..... बड़े पेड़ पर लगे छोटे फल देखकर ईश्वर की कृति पर हँसना ..... एक फल का उसके सिर पर गिरना ..... फल छोटे होने के कारण चोट न आना ..... ईश्वर से क्षमा माँगना।

उत्तर: **ईश्वर की कृति**

एक व्यापारी कई सालों से गाँव-गाँव घूमकर व्यापार करता था। जब कभी वह थक जाता, तो किसी बड़े पेड़ की छाँव में विश्राम करता, वहीं खाना खाता और फिर दूसरे गाँव के लिए रवाना हो जाता। कई बार वह यह सोचकर मन ही मन बहुत प्रसन्न होता था कि उसके जैसा बुद्धिमान कोई नहीं है।

एक बार वह सदैव की भाँति व्यापार के लिए घर से निकला। दो चार गाँव घूमने पर वह थक गया। उसने थोड़ी दूर पर एक तालाब देखा। वहीं पास में एक बहुत बड़ा आम का पेड़ भी था। उसने उसी पेड़ के नीचे विश्राम करने का निश्चय किया।

अपने साथ लाया हुआ भोजन खा कर उसने ठंडा पानी पिया और पेड़ के नीचे ठंडी छाँव में विश्राम करने लगा। अचानक उसकी नजर पेड़ पर पड़ी। उसमें आम के कच्चे फल लगे हुए थे। व्यापारी विचार करने लगा कि ईश्वर भी बड़ा विचित्र है, उसने इतने बड़े पेड़ पर छोटे फल क्यों लगाए? बड़े पेड़ पर तो बड़े फल होने चाहिए। छोटी-छोटी लता पर तरबूज-खरबूज जैसे बड़े-बड़े फल लगते हैं। कितनी अजीब बात है। तभी अचानक एक आम उसके सिर पर गिरा और सारी बात उसकी समझ आ गई।

उसने ईश्वर से क्षमा माँगी और सोचने लगा कि यदि इस वृक्ष पर बड़ा फल लगा होता और वह मेरे सिर पर गिरा होता, तो मैं मर जाता। ईश्वर ही सबसे बुद्धिमान है। वह जो करता है, सोच-समझकर ही करता है।

**सीख:** इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि भगवान जो भी कार्य करता है, वह अच्छी तरह सोच-समझकर ही करता है। अत: उस पर हमें पूर्ण रूप से विश्वास करना चाहिए।

**प्रश्न ६ निम्नलिखित सुवचन के आधार पर कहानी लिखिए।**

**मुद्दे:** कंगाल भिखारी का लक्ष्मी माता की प्रार्थना करना ..... देवी का प्रसन्न होकर वरदान माँगने के लिए कहना ..... मुहरों की माँग करना ..... देवी द्वारा शर्त - मुहरें नीचे गिरेंगी तो वे मिट्टी बन जाएँगी ..... झोली फैलाना ..... अधिक पाने के लालच में झोली का फट जाना।

उत्तर: **लालच बुरी बला है।**

एक बहुत दुखी और कंगाल भिखारी था। वह 'लक्ष्मी माँ, लक्ष्मी माँ' बोलता और धन पाने के लिए उनसे प्रार्थना करता रहता था। एक दिन लक्ष्मी जी उस पर प्रसन्न होकर उसके सामने प्रकट हुईं। लक्ष्मी जी ने उस भिखारी से कहा, ''मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। तुम कोई भी वरदान माँग सकते हो।''

भिखारी ने लक्ष्मी जी से सोने की मुहरें माँगी। लक्ष्मी जी ने कहा, ''ठीक है, मैं तुम्हें सोने की मुहरें दूँगी, पर एक शर्त है। जो मुहरें जमीन पर गिरेंगी, वे मिट्टी बन जाएँगी।''

भिखारी ने लक्ष्मी जी के सामने अपनी फटी-पुरानी झोली फैलाई। लक्ष्मीजी ने कुछ मुहरें झोलीं में डालीं और पूछा, ''बस?'' भिखारी ने कहा, ''नहीं माँ, कुछ और दीजिए।'' इस प्रकार वह लालच में पड़कर अधिक से अधिक मुहरें माँगता रहा। लक्ष्मी माँ उसकी झोली में मुहरें डालती रहीं।

भिखारी की फटी-पुरानी झोली भर गई और मुहरों का वजन सह न सकी। वह एकदम से फट गई और सारी मुहरें जमीन पर बिखर गईं। शर्त के अनुसार वे सब मुहरें मिट्टी बन गईं। भिखारी बहुत पछताया। उसने लक्ष्मी माता से कुछ कहना चाहा, परंतु तब तक वे अदृश्य हो चुकी थीं।

**सीख:** इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि लोभ मनुष्य का शत्रु है। हमें अधिक लोभ नहीं करना चाहिए।

**प्रश्न ७ निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर कहानी लिखिए।**

**मुद्दे:** घना जंगल राजहंस और कौआ ..... कौए का राजहंस के रंग-रूप पर जलना ..... शिकार का जंगल में आकर पेड़ के नीचे सो जाना ..... शिकार को छाँव मिले, अत: राजहंस द्वारा पंख फैलाना ..... कौए द्वारा शिकारी के चेहरे पर बीट करना ..... राजहंस को दोषी समझकर उसकी हत्या कर देना।

**उत्तर:**

**कुसंगति का फल**

कई साल पहले की बात है। एक घना जंगल था। जंगल के बीच में एक तालाब था। उसमें हमेशा पानी भरा रहता था। पेड़ों पर तरह-तरह के पक्षी रहते थे। तालाब में एक राजहंस रहता था। उसका रंग-रूप बहुत ही सुंदर था। तालाब के पास ही बरगद के पेड़ पर एक कौआ रहता था। वह राजहंस का रंग-रूप देखकर उससे बहुत जलता था।

एक दिन एक शिकारी उस जंगल में आया। वह बहुत थका हुआ था, इसलिए उस बरगद के पेड़ के नीचे आकर बैठ गया। कुछ सोच रहा था कि अचानक उसे नींद आ गई। कुछ देर बाद पेड़ के पत्तों में से छनकर सूरज की तेज किरणें शिकारी के मुँह पर पड़ने लगीं। यह देखकर राजहंस को शिकारी पर दया आई।

पेड़ की डाली पर बैठकर राजहंस ने अपने बड़े-बड़े पंख फैला दिए और शिकारी के मुँह पर फिर से छाया कर दी। दुष्ट कौए से हंस की भलाई और शिकारी का आराम नहीं देखा गया। उसने सोचा कि यदि किसी तरह शिकारी को जगा दिया जाए, तो उस हंस का नामोनिशान न रहे। फिर वह तुरंत शिकारी के सिर पर बीट करके उड़ गया। इससे शिकारी जाग गया। उसने ऊपर पेड़ पर राजहंस को देखकर उसी को दोषी माना। उसने क्रोधित होकर अपने तीर से उस हंस को मार डाला।

**सीख:** इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि दुष्ट पड़ोसी से बचकर रहना चाहिए।

**प्रश्न ८ निम्नलिखित शब्दों के आधार पर कहानी लिखिए।**

**(जमींदार, खेत, आमदनी, नौकर-चाकर, सैर)**

**उत्तर:**

**मेहनत का फल**

कहानी बहुत पुरानी है। रायगढ़ नाम का एक गाँव था। उसी गाँव में रायचंद्र नामक एक जमींदार रहता था। उसके पास खूब धन-दौलत और जमीन थी। उसकी जमीन पर नौकर-चाकर खेती करते थे। रायचंद्र कभी-कभी ही खेतों पर जाता था। धीरे-धीरे उसने अनुभव किया कि खेतों से मिलनेवाली आमदनी कम होती जा रही है। उसके मित्र विजय प्रताप ने सलाह दी कि तुम सैर करने के बहाने खेतों पर जाया करो।

दूसरे दिन रायचंद्र ने खेतों पर जाने का सोचा। जब वह खेतों पर पहुँचा तो वहाँ कुछ नौकर काम पर आए ही नहीं थे। खेती के औजार भी गायब थे। उस दिन से रायचंद्र चौकन्ना हो गया। वह प्रतिदिन खेतों पर जाने लगा, खेतों की देखभाल करने लगा और अपनी देखरेख में नौकरों से काम करवाने लगा। वह खुद भी मजदूरों के साथ खेतों पर काम करने लगा। मालिक को अपने साथ काम करता देखकर नौकरों का भी उत्साह बढ़ गया।

सारे नौकर मन लगाकर काम करने लगे। मन लगाकर काम करने से आमदनी बढ़ गई। इससे जमींदार को इस बात का एहसास हो गया कि मालिक को भी मजदूरों के साथ कभी-कभी काम करना चाहिए। इस प्रकार सबकी मेहनत से आमदनी बढ़ गई।

**सीख:** इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि इंसान को हमेशा परिश्रम और लगन से काम करना चाहिए।

**प्रश्न ९ निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर कहानी लिखिए।**

**मुद्दे:** दो गहरे मित्र ..... मच्छीमारी करना ..... समुद्र में जाना ..... तूफान का आना ..... नाव का पानी में उलटना ..... तख्ते का सहारा लेना ..... तख्ता एक का भार सँभालने में समर्थ ..... अविवाहित मित्र का दूसरे मित्र से अपनी माँ की देखभाल करने का आश्वासन लेना ..... तख्ता छोड़ना .... दूसरे का बच जाना।

**उत्तर:**

**सच्ची मित्रता**

राम और श्याम गहरे मित्र थे। वे दोनों मच्छीमार थे और समुद्र के किनारे एक गाँव में रहते थे। राम की शादी हो चुकी थी और वह एक बच्चे का पिता भी था। श्याम अभी अविवाहित था।

एक दिन दोनों मित्र एक ही नाव में बैठकर समुद्र में मछली पकड़ने के लिए निकले। वे सागर में दूर तक पहुँच गए। उसी समय अचानक तूफानी हवा चलने लगीं और सागर में उँची-उँची लहरें उछलने लगीं। दोनों मित्र जिस नाव में बैठे थे, वह पुरानी थी। तूफानी लहरों के थपेड़ों से वह टूट गई।

दोनों मित्र उस नाव के टूटे तख्ते को पकड़कर किनारे पहुँचने की कोशिश करने लगे, पर वह तख्ता मुश्किल से एक ही आदमी का भार संभाल सकता था। दोनों को लगा कि इस तरह तो दोनों ही डूब जाएँगे।

उस हालत में श्याम ने कहा, ''राम, तुम इस तख्ते से किनारे पर जाओ। तुम पर पत्नी और बच्चे की जिम्मेदारी है। तुम मेरी बूढ़ी माँ की देखभाल करते रहना।'' राम ने मना कर दिया।

किंतु तब तक श्याम तख्ता छोड़ चुका था। देखते ही देखते वह तूफानी लहरों में समा गया। राम बड़ी मुश्किल से किनारे पहुँचा।

श्याम के बलिदान पर सारे गाँव में शोक मनाया गया। सबके होंठों पर एक ही बात थी, मित्र हो तो श्याम जैसा हो।

**सीख:** इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि सच्ची मित्रता अनमोल रत्न की भाँति होती है।

**प्रश्न १० निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर कहानी लिखिए।**

**मुद्दे:** चंचल बच्चा ..... पढ़ाई में दिलचस्पी न लेना ..... परीक्षा में अनुत्तीर्ण होना ..... आत्महत्या करने का विचार मन में आना ..... जंगल में जाना ..... बंदर के बच्चे को पेड़ पर चढ़ते हुए देखना, गिरना फिर चढ़ना, फिर गिरना ..... अंत में पेड़ पर चढ़ना ..... पढ़ाई करना ..... सफल होना।

**उत्तर:** **जीत या हार, रहो तैयार**

बहुत पुराने समय की घटना है। सुजानगढ़ नामक राज्य में दिनकर नाम का बालक रहता था। वह अत्यधिक चंचल था। अपनी पढ़ाई के अलावा वह सभी कामों में खूब दिलचस्पी लेता था, इसलिए वह परीक्षा में कम अंक पाता रहा। अंततः वह परीक्षा मे अनुत्तीर्ण हो गया। अपने माता-पिता, गुरुजनों और मित्रों के सुझाव व प्रोत्साहन पर वह दुबारा पढ़ाई में जुट गया, लेकिन दूसरे वर्ष भी उसके प्रयास में उसे सफलता हाथ नहीं लगी।

एक ही कक्षा में दुबारा अनुत्तीर्ण होने पर वह निराशा में घिर गया। उसे लगा कि ऐसे असफल जीवन से बेहतर इस जीवन का अंत करना होगा। आत्महत्या के विचार से वह घर से चल पड़ा। राह से गुजरते हुए उसका ध्यान एक बगीचे की ओर गया।

उसने देखा कि बंदर का एक छोटा बच्चा पेड़ पर चढ़ने का प्रयास कर रहा था। बंदर का बच्चा बार-बार ऊपर चढ़ने की कोशिश करता, बार-बार जमीन पर गिर पड़ता। इतने पर भी वह निराश नहीं हुआ। उसने अपना प्रयास लगातार जारी रखा। अंत में वह पेड़ पर चढ़ने में सफल हो गया। बंदर के बच्चे की सफलता देखकर दिनकर फूला नहीं समाया।

दिनकर को ध्यान आया कि वह भी बंदर के बच्चे की भाँति प्रयास कर सकता है। इसके बाद वह घर लौट आया और एकाग्रचित्त होकर पढ़ने लगा। उसे अच्छे अंक प्राप्त होने लगे, श्रेष्ठ प्रदर्शन के कारण उसे पुरस्कार मिलने लगे। सभी ने दिनकर की इस सफलता पर प्रसन्न होकर बधाइयाँ दीं। दिनकर भी अपनी सफलता और अपने प्रयास पर गौरवान्वित अनुभव कर रहा था।

**सीख:** इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि सफलता पाने के लिए किए गए सभी सच्चे और गंभीर प्रयास व्यक्ति को काबिल और कामयाब बना ही देते हैं।

**प्रश्न ११ निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर कहानी लिखिए।**

**मुद्दे:** गरीब कसाई ..... मांस बेचना ..... अजीब मुर्गी मिलना ..... प्रति दिन सोने का अंडा ..... रईस बन जाना ..... मन में लालच आना ..... मुर्गी के पेट से सारे अंडे निकालने का विचार ..... मुर्गी को काटना ..... कुछ न मिलना ..... पछताना।

**उत्तर:** **लालच का फल**

गंगापुर में एक गरीब कसाई रहता था। दिनभर मांस बेचने से जो मिलता, उसी से अपने परिवार का गुजारा करता था। एक दिन कसाई की किस्मत खुल गई। उसे कहीं से एक बढ़िया मुर्गी मिल गई। कसाई खुशी-खुशी उसे घर ले आया।

वह मुर्गी रोज सबेरे सोने का अंडा देने लगी। इससे कुछ ही दिनों में वह कसाई अमीर हो गया। उसकी पत्नी दूसरों के घरों में काम करती थी, परंतु अब उसने काम करना भी छोड़ दिया। धीरे-धीरे गाँव में मुर्गी की चर्चा होने लगी।

एक दिन कसाई ने सोचा यह मुर्गी रोज सोने के अंडे देती है। इसके पेट में ऐसे बहुत से अंडे होंगे। क्यों न इसको काटकर सारे अंडे निकाल लूँ। वह चाकू ले आया और उसने मुर्गी का पेट काट डाला। मुर्गी छटपटाकर मर गई।

कसाई ने देखा मुर्गी के पेट में तो एक भी अंडा नहीं था। रोज जो अंडा मिलता था, अब वह भी नहीं मिलेगा, क्योंकि मुर्गी तो मर चुकी थी। कसाई अपनी मूर्खता पर पछताने लगा।

**सीख:** इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि लालच करनेवालों को अंत में पछतावे के सिवा कुछ नहीं मिलता।

## स्वाध्याय विषयक कृतियाँ

**प्रश्न १ निम्नलिखित शब्दों के आधार पर कहानी लिखिए।**

(i) चार मित्र, एकता, एक-दूसरे की सहायता, शिकारी, रक्षा करना।

(ii) ऋषि, नदी में स्नान, बिच्छू, बचाना, बिच्छू का डंक मारना, स्वभाव

**प्रश्न २ निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर कहानी लिखिए।**

(i) एक मंदबुद्धि विद्यार्थी ..... स्त्रियों को कुएँ से पानी निकालते हुए देखना ..... पत्थर पर रस्सी के गहरे निशान देखना ..... बोध होना ..... मन लगाकर पढ़ना ..... विद्वान बनना।

(ii) एक राजा ..... लड़ाई में हार ..... डरकर गुफा में छिप जाना ..... मकड़ी द्वारा टूटे हुए जाल को फिर से बनाना ..... साहस का संचार होना ..... फिर से चढ़ाई करना ..... खोया हुआ राज्य वापस पाना .....।

**प्रश्न ३ निम्नलिखित कहावत के आधार पर कहानी लिखिए।**

(i) बुरे का अंत बुरा

(ii) जिसका काम उसी को साझे

❖❖❖

# ३ गद्य आकलन

प्रश्न पूछना अथवा प्रश्न निर्माण करना एक कला है। 'गद्य आकलन' के अंतर्गत एक गद्यखंड दिया जाएगा तथा उस गद्यखंड पर आधारित पाँच प्रश्नों की निर्मिती अपेक्षित होगी।

**प्रश्न का निर्माण करते समय निम्नलिखित बातें ध्यान देने योग्य हैं:**

(१) प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में हों; ऐसे ही प्रश्न बनाएँ जाएँ।

(२) प्रश्नों के उत्तर गद्यांश में ही हों।

(३) प्रश्न सार्थक हों तथा प्रश्न के अंत में प्रश्नचिह्न का प्रयोग आवश्यक है।

(४) छात्रों को प्रश्न का उत्तर नहीं लिखना है।

(५) छात्र का प्रश्न की निर्मिती के लिए निम्न प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग कर सकते हैं:

**प्रश्न १ निम्नलिखित गद्यखंड को ध्यानपूर्वक पढ़कर पाँच प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में लिखे जा सकें।**

**उदाहरण:** भारत की अलग-अलग भाषाओं के प्रमुख धर्मग्रंथों में ज्ञान-विज्ञान की एक-सी धारा बहती है। वेद, रामायण, महाभारत, पुराण आदि भारत के प्राचीन ग्रंथ हैं। इन्हीं के आधार पर सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य का विकास हुआ है। हिंदी में तुलसीदास की तो दक्षिण में कंबन की रामायण प्रसिद्ध है। कबीर, नानक, मीरा आदि संतों के पद देश के सभी भागों में गाए जाते हैं। महात्मा गाँधी, कविवर रवींद्रनाथ, सुब्रह्मण्यम भारती जैसे महान व्यक्तियों पर सारा देश समान रूप से गर्व करता है।

**प्रश्न का नमूना**

(१) दक्षिण में क्या प्रसिद्ध है?

(२) धर्मग्रंथों में कौन-सी धारा बहती है?

(३) प्राचीन ग्रंथ कौन-से हैं?

(४) किन संतों के पद गाए जाते हैं?

(५) सारा देश किन पर गर्व करता है?

(१) सुंदर प्रतिभा, मनभावनी चाल और स्वच्छंद प्रकृति ये ही दो-चार बातें देखकर मित्रता की जाती है। पर जीवन-संग्राम में साथ देने वाले मित्रों में इनसे कुछ अधिक बातें चाहिए। मित्र केवल उसे नहीं कहते, जिसके गुणों की तो हम प्रशंसा करें, पर जिसे हम स्नेह न कर सकें। जिससे हम अपने छोटे काम को तो निकालते जाएँ, पर भीतर ही भीतर घृणा करते रहें। मित्र सच्चे पथ-प्रदर्शक के समान होना चाहिए, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें। मित्र भाई के समान होना चाहिए, जिसे हम अपना प्रीतिपात्र बना सकें। हमारे और मित्र के बीच सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए, ऐसी सहानुभूति जिससे दोनों मित्र एक-दूसरे की बराबर खोज-खबर लें। ऐसी सहानुभूति, जिससे एक के हानि-लाभ को दूसरा अपना हानि-लाभ समझे। मित्रता के लिए आवश्यक नहीं है कि दोनों मित्र एक ही प्रकार का कार्य करते हों या एक ही रुचि के हों। दो भिन्न प्रकृति के मनुष्यों में भी बराबर की प्रीति और मित्रता देखी जाती है।

**प्रश्न:**

(१) किन बातों को देखकर मित्रता की जाती है?

(२) हमारे और मित्र के बीच क्या होनी चाहिए?

(३) मित्र किसे नहीं कहना चाहिए?

(४) सच्चा मित्र कैसा होता है?

(५) मित्रता के लिए क्या आवश्यक नहीं है?

(२) हमारे देश में धर्मों-संप्रदायों के अनेक उपासनागृह, मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर और गुरुद्वारे हैं। सभी शांति चाहते हैं, पर शांति का दर्शन कहीं होता नहीं। हर जगह कोई न कोई आंदोलन छिड़ा है। पत्थर, सीमेंट, गारे-चूने से बने इन भव्य, पवित्र स्थानों से मनुष्य की नैतिकता को कोई बल क्यों नहीं मिलता? जरूरत इस बात की है कि इन धार्मिक स्थानों से नैतिकता और शांति का संदेश प्रसारित हो। इन स्थानों में परंपरागत पुजारियों की जगह गणमान्य विद्वान हों, जो हमारे मन को शांति दें और उसमें एक विशेष आस्था का संचार करें। हमें आज धार्मिक क्षेत्र में आवश्यकता है ऐसी वैचारिक क्रांति की, जो सत्साहित्य की एवं चरित्र निर्माण करें।

**प्रश्न:**

(१) सभी क्या चाहते हैं?

(२) हमारे देश में कौन-कौन से धार्मिक स्थान हैं?

(३) आज धार्मिक क्षेत्र में हमें किन-किन बातों की आवश्यकता है?

(४) हर जगह क्या छिड़ा हुआ है?

(५) धार्मिक स्थानों से क्या प्रसारित होना चाहिए?

(३) हँसने का सामाजिक पक्ष भी होता है। हँसकर हम लोगों को अपने निकट ला सकते हैं और व्यंग्य करके उन्हें दूरस्थ बना देते हैं। जिसको भगाना हो, उसकी थोड़ी देर हँसी-खिल्ली उड़ाइए, वह तुरंत बोरिया-बिस्तर गोलकर पलायन करेगा। जितनी मुक्त हँसी होगी, उतना समीप व्यक्ति खिंच आएगा, इसलिए तो श्रोताओं की सहानुभूति अपनी ओर घसीटने के लिए चतुर वक्ता अपना भाषण किसी रोचक कहानी या घटना से आरंभ करते हैं। सामाजिक नियमों और मूल्यों को मान्यता दिलाने और रूढ़ियों को निष्कासित करने में पुलिस या कानून आदि सहायता नहीं करते, किंतु वहाँ हास्य का चाबुक अचूक बैठता है। मजाक के कोड़े, उपहास-डंक और हास्य-बाण मारकर आदमी को रास्ते पर लाया जा सकता है। इस प्रकार गुमराह बने हुए समाज की रक्षा की जा सकती है।

प्रश्न:

(१) आदमी को किस तरह रास्ते पर लाया जा सकता है?

(२) चतुर वक्ता अपने भाषण का प्रारंभ रोचक कहानी या घटना से क्यों करता है?

(३) समाज में हँसी और व्यंग्य का क्या उपयोग होता है?

(४) हास्य का चाबुक कौन-सा विशेष कार्य करता है?

(५) रूढ़ियों को निष्कासित करने में कौन सहायता नहीं करता है?

(४) विधाता ने हमें दशेंद्रियाँ दी हैं। यह मानव को ईश्वर की बड़ी देन है। हमें ईश्वर ने दो आँखें, दो कान, दो हाथ, दो पैर और एक मुँह दिया है। इन इंद्रियों से ही मनुष्य सामर्थ्यशाली बना है। विधाता का हमें दो आँखे देने का मतलब यही है कि शत्रु और मित्र को देखने की हमारी दृष्टि समान हो। दो कान इसलिए दिए हैं कि एक कान से अच्छाई ग्रहण करें और दूसरे कान से बुराई निराव दें। दो हाथ इसलिए दिए हैं कि वह एक हाथ से ले और दूसरे हाथ से बाँटते रहें। दो पैर इसलिए दिए हैं कि हम कदम-कदम मिलाते हुए देश की ताकत बढ़ाएँ। विधाता ने हमें एक ही मुँह दिया है, इसका कारण क्या है? इसलिए कि वह एकवचनी हो, देने के लिए वचनबद्ध हो।

प्रश्न:

(१) विधाता ने हमें एक मुँह क्यों दिया है?

(२) मनुष्य कौन-सी इंद्रियों से सामर्थ्यशाली बना है?

(३) विधाता ने हमें क्या-क्या दिया है?

(४) ईश्वर की मानव के लिए सबसे बड़ी देन क्या है?

(५) हमें दो कान किसलिए दिए गए हैं?

(५) परोपकार मनुष्य के सभी गुणों का मूल है। परोपकार के कारण मनुष्य के जीवन में अनेक प्रकार के गुण आ जाते हैं। परोपकार एक ऐसा जादू है, जो मनुष्य के हृदय में पवित्रता, दया, क्षमा, त्याग, प्रेम आदि गुणों को उत्पन्न करता है। इस प्रकार परोपकार सभी गुणों की खान है। सत्य तो यह है कि परोपकारी मनुष्य साक्षात् ईश्वर के समान होता है। उसका हृदय सागर की भाँति विशाल होता है। संपूर्ण मानव समाज के लिए इसमें प्रेम भरा रहता है। अत: परोपकारी मनुष्य विश्वबंधु होता है। परोपकार से मनुष्य को सच्चा आनंद और सच्चा सुख मिलता है। राजा अपनी शक्ति के बल पर मनुष्य के शरीर पर अधिकार कर सकता है, किंतु परोपकार करनेवाला मनुष्य असंख्य मनुष्यों के मन को जीत लेता है।

प्रश्न:

(१) कौन विश्वबंधु होता है?

(२) परोपकार मनुष्य के लिए कैसा जादू है?

(३) परोपकारी मनुष्य किसके समान होता है?

(४) परोपकार से मनुष्य को क्या मिलता है?

(५) मनुष्य के सभी गुणों का मूल क्या है?

(६) भारतीय संगीत में देश के सभी भागों के संगीत का समावेश होता है। पंजाब का भांगड़ा, गुजरात का गरबा, उड़ीसा का ओड़ीसी, आंध्र का कुचीपुड़ी तथा केरल का कथकली आदि नृत्य सारे देश में लोकप्रिय हैं। भारत के सभी प्रांत एक ही केंद्रीय सत्ता के अधीन हैं। सारे देश का एक संविधान, एक कानून, एक राष्ट्रध्वज तथा एक राष्ट्रगीत है। भारतीय सेना में सभी प्रांतों के सैनिक हैं। क्रिकेट, हॉकी, फुटबॉल जैसे खेलों की राष्ट्रीय टीम में अलग-अलग प्रांतों के खिलाड़ी चुने जाते हैं।

प्रश्न:

(१) कौन-कौन-से खेलों की राष्ट्रीय टीम हैं?

(२) कौन-कौन-से नृत्य देश में लोकप्रिय हैं?

(३) भारत के सभी प्रांत किसके अधीन हैं?

(४) भारत देश में कितने संविधान, कानून, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगीत है?

(५) सभी प्रांतों के सैनिक किस सेना में हैं?

(७) भाग्य पर विश्वास करने वालों का दावा है कि पिछले जन्म के कर्मों के अनुसार सफलता मिलती है या सुख-दुख आते हैं। कई बार भरसक प्रयत्न करने के बाद भी व्यक्ति असफल हो जाता है, तो दुखी हो उठता है। यह मानने के उसे लिए मजबूर होना पड़ता है कि भाग्य में वही लिखा था। सफलता केवल प्रयत्न और परिश्रम से ही नहीं मिलती। उसके लिए व्यावहारिक ज्ञान, सूझ-बूझ, धैर्य, आत्मविश्वास, एकाग्रता आदि कई गुण आवश्यक हैं। काम को बिना समझे, गलत ढंग से, उचाट मन से, उद्देश्य की पूरी और स्पष्ट जानकारी पाए बिना कितना भी परिश्रमपूर्वक किया जाए, तो भी सफलता मिलना संभव नहीं होता है। जब आवश्यक गुणों के अभाव में मेहनत करने

वाले को सफलता नहीं मिलती तो कहा जाता है कि पिछले जन्म के कर्मों के कारण उसे सफलता नहीं मिली। तब व्यक्ति अपने भाग्य को अपनी असफलता का उत्तरदायी मानकर चुप बैठा जाता है। भाग्यवाद व्यक्ति को निराश, निष्क्रिय और अकर्मण्य बना देता है। अगर असफलता के कारणों को ढूँढा जाए और पुरुषार्थी बनकर उस काम को फिर से करने का संकल्प किया जाए, तो असफलता के कारणों से बचने की समझ आती है और व्यक्ति सफल हो सकता है।

प्रश्न:

(१) व्यक्ति सफल कब हो सकता है?

(२) भाग्यवादी लोग क्या मानते हैं?

(३) सफलता के लिए व्यक्ति में कौन-कौन-से गुण होने चाहिए?

(४) भाग्यवाद में विश्वास करने का क्या परिणाम होता है?

(५) व्यक्ति दुखी कब हो जाता है?

(८) बातचीत में निपुण होने के लिए सबसे पहला उपाय यह है कि अपना सामान्य ज्ञान बढ़ाएँ, अपना शब्दज्ञान बढ़ाएँ तथा अधिकतर लोगों के बीच ही रहिए। एकांतप्रिय व्यक्ति कभी इस कला को नहीं सीख सकता। एक अन्य गुण जो कि इस कला के लिए अनिवार्य है, वह यह है कि आप अपने में सहनशक्ति उत्पन्न करें। दूसरों की बातों को यदि आप रुचिपूर्वक नहीं सुनेंगे तो आपकी बात कौन सुनेगा। सबसे बड़ी खूबी यह पैदा कीजिए कि अपने सामने वाले को कभी काटिए मत, उसकी किसी भावना को जान-बूझकर ठेस पहुँचाने की कोशिश न करें। यदि उसकी किसी बात का प्रतिवाद करना बातचीत के लिए जरूरी भी हो जाए, तो पहले उससे सहमत हो जाएँ और फिर अपना मत कुछ इस ढंग से प्रस्तुत करें कि वह आपसे असहमत होते हुए भी सहमत होने को तैयार हो जाए। अत: यह बात गाँठ बाँध लें कि आपका चाहे जो भी क्षेत्र हो, उसमें सफल होने के लिए आपको बातचीत की कला सीखनी ही होगी।

प्रश्न:

(१) बातचीत में निपुण होने की कला को कौन नहीं सीख सकता?

(२) बातचीत में निपुणता प्राप्त करने के लिए सबसे पहले क्या करना चाहिए?

(३) बातचीत में निपुण होने के लिए सहनशील होना क्यों आवश्यक है?

(४) किसी की बात का प्रतिवाद कैसे करना चाहिए?

(५) किसी भी क्षेत्र में सफल होने के लिए किस कला का सीखना जरूरी है?

(९) समय की पाबंदी का उद्देश्य है अपने कार्य को मन लगाकर ठीक समय पर, निश्चित अवधि के भीतर सफलतापूर्वक पूर्ण करना। जो लोग समय के पाबंद होते हैं, उन्हें अपने कार्य करने के लिए किसी की प्रेरणा या किसी के अनुरोध की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि उनकी आत्मा ही उन्हें अपने प्रत्येक कार्य में प्रवृत्त करती है। समय की पाबंदी करने वाले उत्साही और फुर्तीले होते हैं, अपने कार्यों को योजनाबद्ध रीति से करते हैं और अपने काम के समय का पूरा-पूरा उपयोग करने का ध्यान रखते हैं। ऐसे मनुष्य आमोद-प्रमोद के लिए, अपने मित्रों और सगे-संबंधियों से मिलने-जुलने के लिए तथा विश्राम और शयन के लिए उचित अवकाश भी निकाल लेते हैं, परंतु इसके विपरीत समय की पाबंदी की उपेक्षा करने वाले लोग तनाव में रहते हैं, उनका समय इधर-उधर आलस्य और प्रमाद करने में व्यर्थ ही व्यतीत हो जाता है और वे सदा काम के बोझ की शिकायत करते रहते हैं।

प्रश्न:

(१) तनाव में कौन रहते हैं?

(२) समय की पाबंदी का क्या उद्देश्य है?

(३) उत्साही और फुर्तीले कौन लोग होते हैं?

(४) समय के पाबंद मनुष्य किन-किन कार्यों के लिए उचित अवकाश निकाल लेते हैं?

(५) काम के बोझ की शिकायत कौन करता है?

(१०) वार्तालाप की शिष्टता मनुष्य को आदर का पात्र बनाती है और समाज में उसकी सफलता के लिए रास्ता साफ कर देती है। शिष्टता का समाज पर प्रभाव पड़ता है, किंतु विषभरे कनकघटों की संसार में कमी नहीं है। यह प्रभाव ऊपरी होता है और पोशाक का मान जब तक भाषण से पुष्ट नहीं होता है, तब तक स्थायी नहीं होता। मधुर भाषी के लिए करनी और कथनी का साम्य आवश्यक है, किंतु कर्म के लिए वचन पहली सीढ़ी है। मधुर वचन ही विश्वास उत्पन्न कर भय और आतंक का परिमार्जन कर देते हैं। कटु भाषी लोगों से लोग हृदय खोलकर बात करने से डरते हैं। सामाजिक व्यवहार के लिए विचारों का आदान-प्रदान आवश्यक है और वह भाषा की शिष्टता और स्पष्टता के बिना प्राप्त नहीं होता। भाषा की सार्थकता इसी में है कि वह दूसरों पर यथेष्ट प्रभाव डाल सके। जब बुरे वचन आदमी को रुष्ट कर सकते हैं, तो मधुर वचन दूसरे को प्रसन्न भी कर सकते हैं। शब्दों का जादू बड़ा जबर्दस्त होता है।

प्रश्न:

(१) भाषा की सार्थकता किसमें है?

(२) वार्तालाप की शिष्टता से मनुष्य को क्या लाभ होता है?

(३) मधुर वचन किस प्रकार प्रभाव डालते हैं?

(४) सामाजिक व्यवहार के लिए क्या आवश्यक है?

(५) शब्दों का जादू क्या कर सकता है?

(११) एक बार भगवान बुद्ध का प्रचारक घूम रहा था। उसे एक भिखारी मिला। वह प्रचारक उसे धर्म का उपदेश देने लगा। उस भिखारी ने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया। उसमें उसका मन ही नहीं लगता था। प्रचारक नाराज हुआ। बुद्ध के पास जाकर बोला, ''वहाँ एक भिखारी बैठा है, मैं उसे इतने अच्छे-अच्छे सिखावन दे रहा था, तो भी वह सुनता ही नहीं।'' बुद्ध ने कहा, ''उसे मेरे पास लाओ।'' वह प्रचारक उसे बुद्ध के पास ले गया। भगवान बुद्ध ने उसकी दशा देखी। उन्होंने ताड़ लिया कि भिखारी तीन-चार दिनों से भूखा है। उन्होंने उसे पेट भरकर खिलाया और कहा, ''अब जाओ।'' प्रचारक ने कहा, ''आपने उसे खिला तो दिया, लेकिन उपदेश कुछ भी नहीं दिया।'' भगवान बुद्ध ने कहा, ''आज उसके लिए अन्न ही उपदेश था। आज उसे अन्न की सबसे ज्यादा जरूरत थी। वह उसे पहले देना चाहिए। अगर वह जिएगा तो कल सुनेगा।''

प्रश्न:

(१) प्रचारक क्यों नाराज हुआ?

(२) भिखारी ने किसकी तरफ ध्यान नहीं दिया?

(३) प्रचारक ने भिखारी के बारे में बुद्ध से क्या शिकायत की?

(४) भगवान बुद्ध ने क्या ताड़ लिया?

(५) भिखारी को किस उपदेश की आवश्यकता थी?

(१२) स्वाधीन भारत में अभी तक अँग्रेजी हवाओं में कुछ लोग यह कहते मिलेंगे - जब तक विज्ञान और तकनीकी ग्रंथ हिंदी में न हों, तब तक कैसे हिंदी में शिक्षा दी जाए। जब कि स्वामी श्रद्धानंद स्वाधीनता से भी चालीस साल पहले गुरुकुल काँगड़ी में हिंदी के माध्यम से विज्ञान जैसे गहन विषयों की शिक्षा दे रहे थे। ग्रंथ भी हिंदी में थे और पढ़ाने वाले भी हिंदी के थे। जहाँ चाह होती है, वहीं राह निकलती है। एक लंबे अरसे तक अंग्रेज गुरुकुल काँगड़ी को भी राष्ट्रीय आंदोलन का अभिन्न अंग मानते रहे। इसमें कोई संदेह भी नहीं कि गुरुकुल के स्नातकों में स्वाधीनता की अजीब तड़प थी। जहाँ स्वामी श्रद्धानंद जैसा प्राध्यापक हो, वहाँ राष्ट्रीयता नहीं पनपेगी तो कहाँ पनपेगी। स्वामी जी से मिलने देश के प्रमुख राष्ट्रीय नेता भी गुरुकुल आते रहते थे।

प्रश्न:

(१) स्वामीजी ने हिंदी के माध्यम से कौन-कौन-से विषयों की शिक्षा दी?

(२) स्वामी श्रद्धानंद कौन थे?

(३) गुरुकुल काँगड़ी के बारे में अंग्रेजी की क्या मान्यता थी?

(४) गुरुकुल काँगड़ी के स्नातकों की क्या विशेषता थी?

(५) स्वाधीनता से चालीस साल पहले स्वामी श्रद्धानंद ने क्या साबित कर दिया था?

## स्वाध्याय

**प्रश्न : निम्नलिखित परिच्छेद पढ़िए और उस पर आधारित आकलन हेतु पाँच प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों:**

(१) पुस्तक का मानव जीवन में बहुत महत्त्व है। मानव ने सर्वप्रथम पुस्तक का आरंभ अपने अनुभूत ज्ञान को विस्मृति से बचाने के लिए किया था। विकास के आदिकाल में पत्ते, ताड़पत्र, ताम्रपत्र आदि साधन इस ज्ञानसंग्रह के सहायक रहे हैं, ऐसा पुस्तक का इतिहास स्वयं बताता है। पुस्तकें मानव को अपना अनुभव विस्तृत करने में सहायक होती हैं, साथ ही उन्होंने अपने पूर्वजों के सभी प्रकार के कृत्यों को जीवित रखने की जिम्मेदारी भी सँभाली हुई है। आज के युग में प्राचीन वीरों, धार्मिक महात्माओं, ऋषियों, नाटककारों, कवियों आदि का पता हम इन्हीं पुस्तकों के सहारे पाते हैं। पुस्तकें ही अंतर्राष्ट्रीय विचारक्षेत्र में विभिन्न देशों के दृष्टिकोणों को एक आधार पर सोचने के लिए बाध्य करती हैं।

(२) प्रेम एक ऐसी अलौकिक शक्ति है, जिससे मनुष्य को अनंत लाभ होते हैं। प्रेम से मानसिक विकार दूर होते हैं, विचारों में कोमलता आती है, सद्गुणों की सृष्टि होती है। दु:खों का नाश और सुखों की वृद्धि होती है और यहाँ तक कि मनुष्य की आयु बढ़ती है। प्रेम ही मनुष्य को साहसी, धीर और सहनशील बना देता है। बिना प्रेम की अच्छी सुख-सामग्री हमें तनिक भी प्रसन्न नहीं कर सकती, पर प्रेम की सहायता से हम बिना और किसी सुख-सामग्री के भी परम सुखी हो सकते हैं। अत: प्रत्येक मनुष्य को अपना स्वभाव मिलनसार और प्रेमपूर्ण बनाना चाहिए।

❖❖❖

# ४ वृत्तांत लेखन

किसी घटना या समारोह का विस्तृत वर्णन वृत्तांत कहलाता है। वृत्तांत लेखन यानी किसी उपलक्ष्य में सम्पन्न कार्यक्रम और समारोह का विवरण पत्र-पत्रिका, समाचार पत्रों आदि में प्रकाशित करने के लिए यह लिखा जाता है। यह सत्य घटना पर आधारित होता है। इसे रिपोर्ताज भी कहते हैं।

**वृत्तांत-लेखन के लिए आवश्यक बातें:**

(१) **शीर्षक:** वृत्तांत को एक उचित शीर्षक दें।

(२) **स्थान:** वृत्तांत या घटना का स्थान लिखें।

(३) **दिनांक:** वृत्तांत का दिनांक लिखें।

(४) **समारोह/कार्यक्रम:** इसके अंतर्गत कौन-सा समारोह या कार्यक्रम है, उसका नाम लिखें।

(५) **कार्यक्रम अध्यक्ष/प्रमुख:** इसके अंतर्गत कार्यक्रम में उपस्थित अध्यक्ष, अतिथि एवं कार्यक्रम-प्रमुख का उल्लेख होता है।

(६) **शैली:** वृत्तांत वर्णनात्मक एवं कथनात्मक शैली में लिखा होना चाहिए।

(७) **संक्षिप्त:** वृत्तांत संक्षेप में, क्रमवार और प्रभावी होना चाहिए। इसमें आशयपूर्ण, आवश्यक और उचित बातों का ही समावेश होना चाहिए।

(८) **भाषा:** वृत्तांत भूतकाल में लिखा होना चाहिए तथा उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम जैसे - मुझे, हमें, मैं, मेरे आदि शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(९) **समापन एवं आभार प्रदर्शन:** समारोह के अंत में समापन एवं आभार प्रदर्शन का वर्णन होना चाहिए।

**वृत्तांत-लेखन के लिए निम्नलिखित सूत्रों का इस्तेमाल होता है:-**

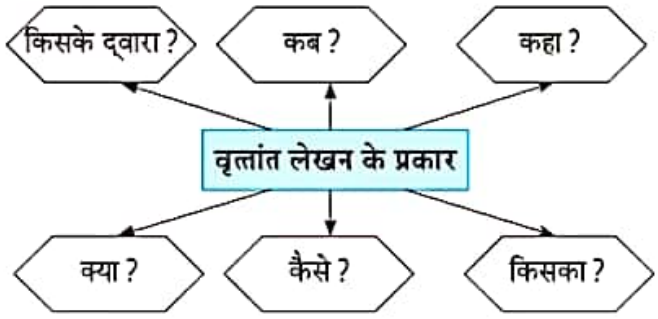


(i) **When (कब):** घटना कब हुई? (घटना के दिनांक और समय का उल्लेख।)

(ii) **Where (कहाँ):** घटना कहाँ संपन्न हुई? (घटना के स्थान का उल्लेख।)

(iii) **Whom (किसके द्वारा):** कार्यक्रम का आयोजन किस संस्था द्वारा संपन्न हुआ? (कार्यक्रम आयोजित करने वाली संस्था का उल्लेख।)

(iv) **Whose (किसका):** किसकी अध्यक्षता में संपन्न हुआ? (अध्यक्ष एवं प्रमुख अतिथि का उल्लेख।)

(v) **What (क्या):** समारोह का क्या कार्यक्रम था? (कार्यक्रम का उल्लेख।)

(vi) **How (कैसे):** कार्यक्रम कैसे संपन्न हुआ? (कार्यक्रम का वर्णन एवं समापन।)

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर सीमित शब्दों में वृत्तांत-लेखन लिखने में आसानी होती है।

**प्रश्न १ नीचे दिए विषय पर ६० से ८० शब्दों में वृत्तांत-लेखन कीजिए।**

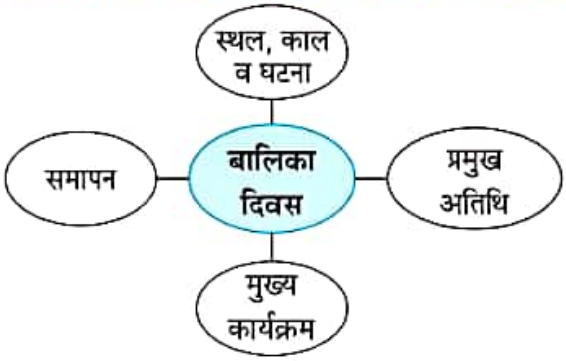


दिनांक २५ जनवरी, २०१८ : मुंबई : इस दिन नूतन विद्यालय, मुंबई में राष्ट्रीय बालिका दिवस का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर प्रमुख अतिथि के रूप में रिलायंस फाउंडेशन की चेअरमैन श्रीमती नीता अंबानी जी उपस्थित थीं। सुबह ठीक ९ : ०० बजे कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। विद्यालय की विद्यार्थी प्रमुखा कुमारी अंजलि ने पुष्पगुच्छ देकर मुख्य अतिथि महोदया जी का स्वागत किया। स्कूल प्राचार्या श्रीमती लता जी ने बालिका दिवस के अवसर पर सभी छात्राओं को बधाइयाँ दी। अतिथि महोदया जी ने भी अपने वक्तव्य में बालिका दिवस का महत्त्व बताया। उन्होंने 'आज की बालिका जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति कर रही है' इस तथ्य से सभी को अवगत कराया। विद्यालय की छात्राओं ने नृत्य व नाटिका का रँगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत कर इस दिन की शोभा में चार-चाँद लगा दिए। कक्षा दसवीं की एक छात्रा ने अपने प्रभावपूर्ण भाषण में सभी बालिकाओं को भविष्य के लिए हार्दिक बधाई देते हुए सभी का धन्यवाद किया। इस प्रकार सुबह ११ बजे कार्यक्रम का समापन हुआ

**प्रश्न २ नीचे दिए विषय पर ६० से ८० शब्दों में वृत्तांत-लेखन कीजिए।**

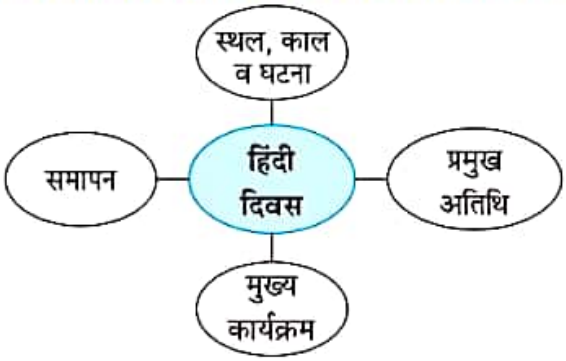

दिनांक १५ सितंबर, २०१८ : मुंबई : इस दिन भारती विद्यालय, मुंबई में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया था। प्रमुख अतिथि के रूप में हिंदी भाषा की सुप्रसिद्ध लेखिका श्रीमती वीणा चौधरी जी कार्यक्रम में उपस्थित थीं। सुबह ठीक १०:०० बजे कार्यक्रम की शुरुआत हई। विद्यालय के विद्यार्थी प्रमुख शैलेश कुमार ने पुष्पगुच्छ देकर मुख्य अतिथि महोदया जी का स्वागत किया। स्कूल की प्राचार्या श्रीमती विमला जी ने हिंदी दिवस का महत्त्व बताया। उन्होंने 'आज हिंदी भारत के हर क्षेत्र में ही नहीं, अपितु विदेशों में भी बोली व जानी जाती है' इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। विद्यालय में हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता, हिन्दी भाषण-प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया था। विद्यालय के कुछ छात्रों ने नृत्य व नाटिका का रँगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत कर इस दिन की शोभा में चार-चाँद लगा दिए। कक्षा दसवीं के एक छात्र ने अपने प्रभावपूर्ण भाषण में 'हिन्दी दिवस' के अवसर पर सभी का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद किया। सुबह १२ बजे कार्यक्रम का समापन हुआ।

**प्रश्न ३ नीचे दिए विषय पर ६० से ८० शब्दों में वृत्तांत-लेखन कीजिए।**

**(१) अपने परिवेश में मनाए गए 'अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग' दिवस का वृत्तांत लिखिए।**

दिनांक ४ दिसंबर, २०१८ : मुंबई : कला विद्यालय, मुंबई में 'अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस' का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर प्रमुख अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध समाजसेवी, नोबेल पुरस्कार प्राप्त श्रीमान कैलाश सत्यार्थी जी को आमंत्रित किया गया था। सुबह ९.३० बजे कार्यक्रम शुरू हुआ था। विद्यालय के विद्यार्थी प्रमुख कुमार विजय ने पुष्पगुच्छ भेंट करके मुख्य अतिथि महोदय जी का सत्कार किया। स्कूल के प्रधानाचार्य श्री योगेश दत्त जी ने 'अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस' के अवसर पर सभी को संबोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक वर्ष ३ दिसंबर को यह दिन संपूर्ण विश्व में मनाया जाता है। अतिथि महोदय जी ने भी अपने वक्तव्य में 'अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस' का महत्त्व बताया। उन्होंने दिव्यांगों के प्रति सामाजिक भेदभाव को मिटाने और उनके जीवन को और बेहतर बनाने के लिए सभी को एकत्रित होकर इस दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने 'दिव्यांग' इस विषय पर भावनात्मक नाटक का आयोजन कर सभी को भावविह्वल कर दिया। विद्यालय के कुछ छात्रों ने नृत्य व नाटिका प्रस्तुत कर दर्शकों की खूब वाह-वाही बटोरी कक्षा दसवीं की एक छात्रा ने अपने भाषण में इस अंतर्राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर समाज में दिव्यांगों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए इस दिन को बड़े पैमाने पर मनाने के लिए सभी को एकत्रित होने की बात को प्रभावपूर्ण तरीके प्रस्तुत किया। अंत में विद्यालय के प्रधानाध्यापक जी ने सभी को हार्दिक बधाई देते हुए सबका धन्यवाद किया। इस प्रकार सुबह ११ बजे कार्यक्रम का समापन हुआ।

**(२) अपने परिवेश में मनाए गए 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' का वृत्तांत लिखिए।**

दिनांक २९ फरवरी, २०१८ : मुंबई : समीक्षा विद्यालय मुंबई में 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर प्रमुख अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक श्रीमान रघुनाथ माशेलकर जी को आमंत्रित किया गया था। सुबह ठीक ९ : ०० बजे कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री अजीत चौधरी ने पुष्पगुच्छ और शाल देकर मुख्य अतिथि महोदय जी का स्वागत किया। स्कूल की उप- प्राचार्या श्रीमती विद्या जी ने 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' के अवसर पर सभी को संबोधित करते हुए कहा कि इस दिन भारत के महान वैज्ञानिक श्री रमन जी ने अपनी खोज की घोषणा की थी। अत: प्रत्येक वर्ष २९ फरवरी को यह दिन भारत में 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' के रूप में मनाया जाता है। अतिथि महोदय जी ने भी अपने वक्तव्य में इस दिवस का महत्त्व बताया। उन्होंने छात्रों को विज्ञान के प्रति प्रेरित एवं आकर्षित होकर वैज्ञानिक उपलब्धियाँ प्राप्त करने के लिए अग्रसर होने की ओर सबका ध्यान खींचा। विद्यालय के छात्रों ने विज्ञान पर आधारित नाटिका प्रस्तुत की। विद्यालय के छात्रों ने विज्ञान प्रदर्शनी में हिस्सा लेकर अपने प्रकल्पों द्वारा सभी का दिल जीत लिया। कक्षा सातवीं के छात्रों ने विज्ञान प्रश्नोत्तरी व संगोष्ठी आयोजित कर सभी को विज्ञान के प्रति आकर्षित किया। अंत में विद्यालय की उप-प्राचार्या जी ने इस दिन के अवसर पर सभी का अभिनंदन प्रकट किया। राष्ट्रगान के साथ १२ बजे कार्यक्रम का समापन हुआ।

## स्वाध्याय

**प्रश्न १ नीचे दिए विषय पर ६० से ८० शब्दों में वृत्तांत लेखन कीजिए। वृत्तांत में स्थल, काल व घटना का उल्लेख आवश्यक है।**

**(i) अपने स्कूल में मनाए गए 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' का वृत्तांत लिखिए।**

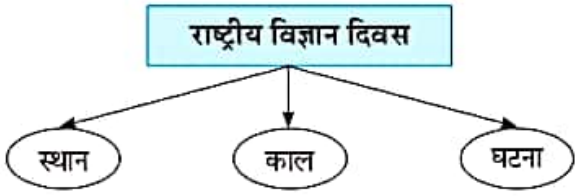


**(ii) अपने स्कूल में मनाए गए 'क्रीडा महोत्सव' का वृत्तांत लिखिए।**

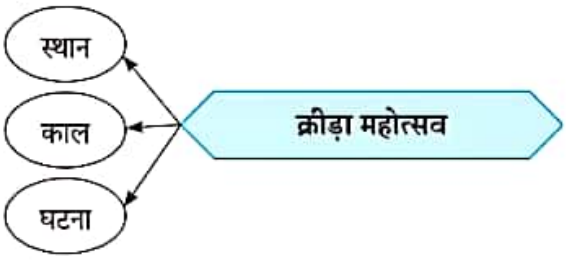


**(iii) अपने स्कूल में मनाए गए 'शहीद दिवस' का वृत्तांत लिखिए।**

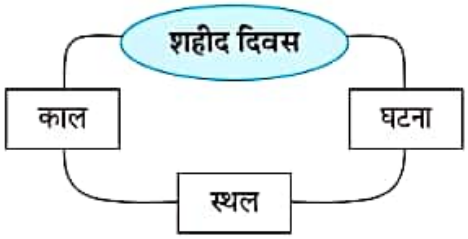

(iv) अपने स्कूल में मनाए गए 'वन महोत्सव' का वृत्तांत लिखिए।

(v) अपने स्कूल में मनाए गए 'वैश्विक महिला दिवस' का वृत्तांत लिखिए।

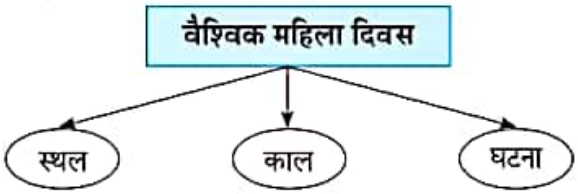


(vi) अपने स्कूल में मनाए गए 'वार्षिक पुरस्कार वितरण दिवस' का वृत्तांत लिखिए।

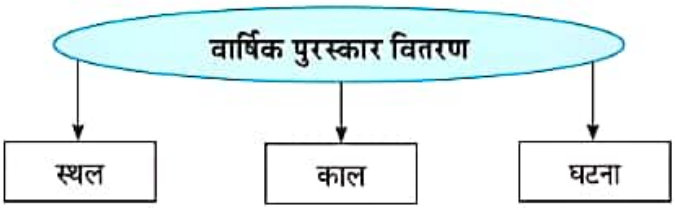


(v) विद्यालय में मनाए गए 'वार्षिक महोत्सव कार्यक्रम' पर वृत्तांत लिखिए।

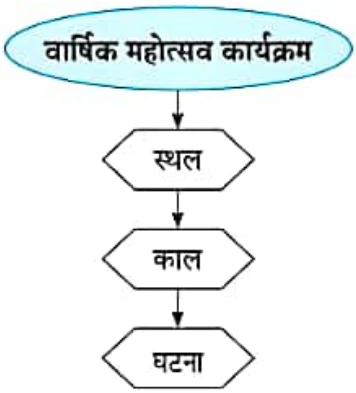


❖❖❖

# ५ विज्ञापन लेखन

विज्ञापन = वि + ज्ञापन
विशेष जानकारी देना। यानी किसी के बारे में विशेष रूप से जानकारी देने वाला।

(i) विज्ञापन किसी वस्तु की अधिक प्रसिद्धि और बिक्री हेतु, अधिक प्रचार करने के लिए, थोड़े शब्दों में ही जन साधारण तक पहुँचाने हेतु बनाए जाते हैं।

(ii) विज्ञापन का उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों तक जानकारी पहुँचाना होता है। वर्तमान समय में विज्ञापन को देखकर व उससे प्रभावित होकर लोग उस वस्तु को खरीदते हैं।

**विज्ञापन बनाते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है :**

(i) जिस वस्तु का विज्ञापन बनाना हो, उसका चित्र रंगीन, स्पष्ट, बड़ा व आकर्षक हो।

(ii) विज्ञापित-वस्तु को एक नाम दें।

(iii) विज्ञापित-वस्तु की विशेषताओं के बारे में लिखना चाहिए। जैसे - मूल्य, गुणवत्ता, कंपनी, ब्रांड।

(iv) प्रस्तुतीकरण में नवीनता होनी चाहिए।

(v) यदि हो सके तो तुकबंदी वाली पंक्तियों का प्रयोग करें।

**कृति (१): विज्ञापन तैयार कीजिए।**

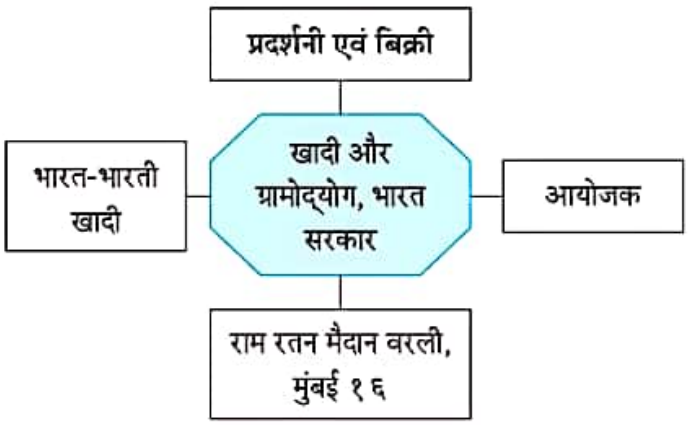


सभ्यता-संस्कृति की है, सिर्फ एक पहचान
भारत-भारती खादी
हम सबकी आन-बान और शान!

आयोजन - विशुद्ध खादी की नई पहचान- 'भारत-भारती खादी'

'खादी और ग्रामोद्योग विभाग' भारत सरकार

खादी मार्क

**प्रदर्शनी एवं बिक्री**
राम-रतन मैदान, वरली मुंबई - १६
प्रात: १०.०० बजे से शाम ७.०० बजे तक

**गांधीजी का स्वप्न साकार करें।**

**कृति (१): विज्ञापन तैयार कीजिए।**

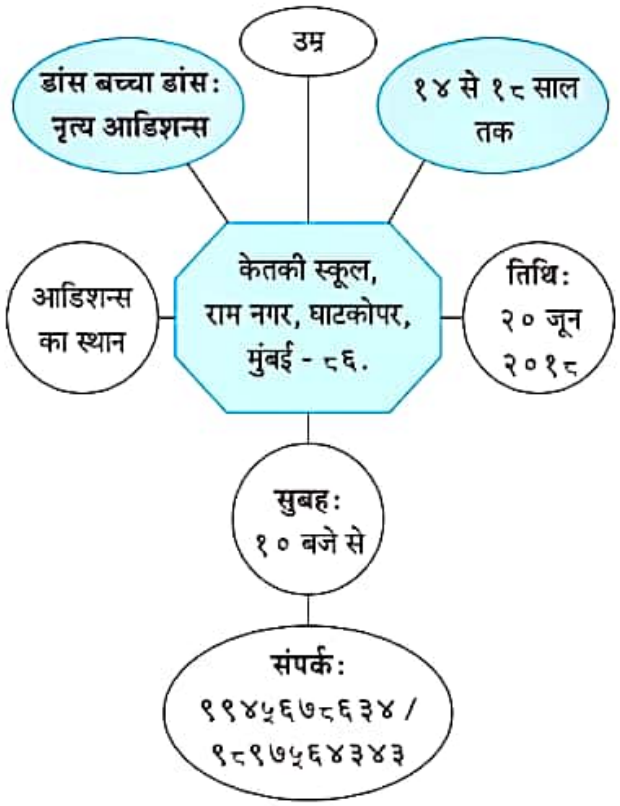

**तब मचेगी धूम**

जब
शुरू होंगे
आडिशन्स

मुंबई आडिशन्स

दिनांक : २० जून, २०१८ - सुबह : १० बजे से

**डांस बच्चा डांस**

**उम्र : १४ से १८ साल**

**स्थान :** केतकी स्कूल, राम नगर, घाटकोपर, मुंबई - ८६.

संपर्क : ९९४५६७८६३४ / ९८९७५६४३४३

**कृति (३) : विज्ञापन तैयार कीजिए।**

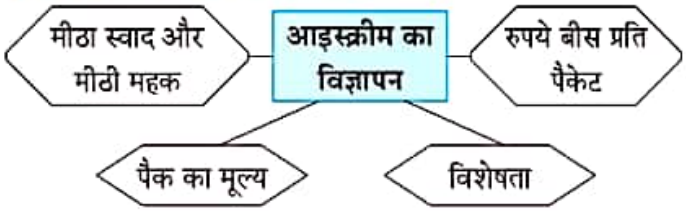


''आई-आई आइस्क्रीम आई, शीतल-शीतल 'ठंडक' लाई!''

**अनूठे स्वादों से भरपूर**

'ठंडक बच्चों को भाए
बड़े-बूढ़ों को ललचाए!'
मीठा स्वाद और मीठी महक
खाते ही आप महसूस करेंगे
कुछ ठंडा-ठंडा कूल-कूल

**पैक का मूल्य - ₹ २०.००**

सभी जगह उपलब्ध
अनमोल प्रॉडक्ट, मुंबई

**कृति (४) : विज्ञापन तैयार कीजिए।**

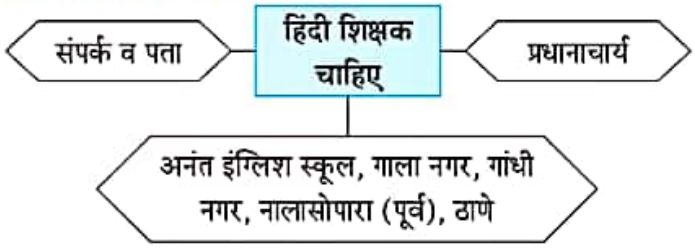


**शिक्षक चाहिए! शिक्षक चाहिए!**

**योग्यता** - प्रशिक्षित स्नातक, बी.एड./डी.टी.एड.

**विषय** - हिंदी, अंग्रेजी

**पद** - शिक्षण सेवक पद

आवेदन पत्र दिनांक १५ मई, २०१८ तक सुबह ९ बजे से शाम ४ बजे तक।

चयनित अभ्यर्थी को ही साक्षात्कार के लिए बुलाया चाएगा।

सेवा में, प्रधानाचार्य, अनंत इंग्लिश स्कूल, माध्यमिक विद्यालय, गाला नगर, गांधी रोड, नालासोपारा (पूर्व), ठाणे।

**कृति (५) : विज्ञापन तैयार कीजिए।**

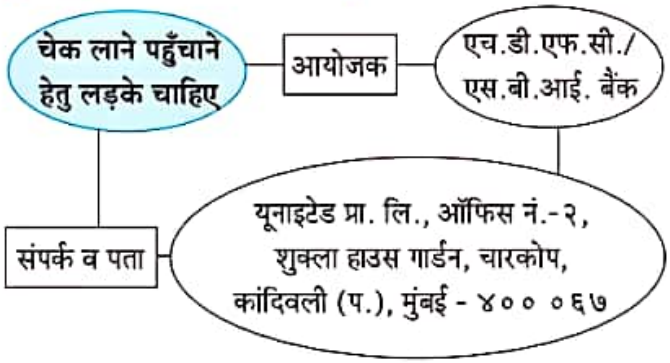


**एच.डी.एफ.सी., एस.बी.आई.**

बैंक में चेक पिक-अप के लिए
सेंट्रल, वेस्टर्न, हार्बर एरिया के लिए जानकार लड़के चाहिए।
फिक्स ५०००/- + इंसेंटिव, कमाएँ ८०००/-.

**बायोडेटा के साथ मिलें:**

यूनाइटेड प्रा. लि., ऑफिस नं.-२, शुक्ला हाउस गार्डन,
चारकोप, कांदिवली (प.),
**मुंबई** - ४०० ०६७.
**फोन:** ६४५१ ९१९२ / ६२२१ १११

**कृति (६) : विज्ञापन तैयार कीजिए।**

**चाहिए ..... चाहिए ..... चाहिए .....**

दादर सेंट्रल के डिपार्टमेंटल स्टोर के लिए
सेल्स के लिए युवक-युवतियों की आवश्यकता है।

| शैक्षणिक पात्रता | आयु सीमा | आवश्यक कागजात |
|---|---|---|
| स्नातक | २१ से २५ तक | आधार कार्ड व पैन कार्ड कॉपी |

**❖ कार्य करने की कालावधि ❖**

सुबह : ९ बजे से ३ बजे तक

या

दोपहर ३ बजे से रात १० बजे तक

**❖ संपर्क ❖**

**प्रबंधक :** डिपार्टमेंटल स्टोर
दादर सेंट्रल
मुंबई : ४०० ०२०

मोबाइल नंबर : ९९८७६५४३२
ई-मेल आई. डी. : deptdadar91@gmail.com

**कृति (७) : विज्ञापन तैयार कीजिए।**

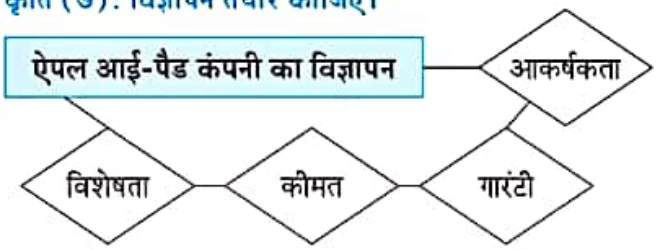


**सभी ग्राहकों के लिए खुशखबर !!!**

आया आया ऐपल कंपनी का आई-पैड आया
ढेर सारे प्रोग्राम व ऐप अपने साथ लाया
जो भी करे इस्तेमाल, वह हो जाए खुशहाल!!!

| विशेषता | गारंटी | कीमत | आकर्षकता |
|---|---|---|---|
| ऐपल का भंडार | दो साल | सिर्फ ५५,००० | विविध रंगों में उपलब्ध |

**❖ संपर्क ❖**

ऐपल डिस्ट्रीब्युटर्स,
रामरतन मॉल,
मुंबई : ४०० ०१०

मोबाइल नंबर : ९९६६७८६६५
ई-मेल आई. डी. : appleipad45@gmail.com

## स्वाध्याय

**कृति (१) : विज्ञापन तैयार कीजिए।**

**कृति (२) : विज्ञापन तैयार कीजिए।**

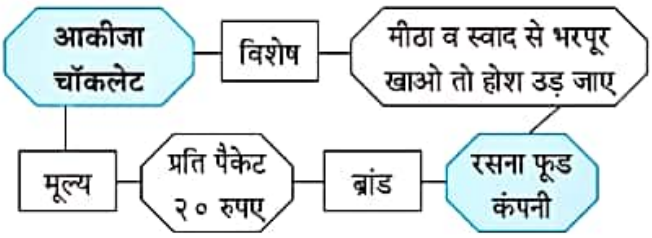


**कृति (३) : विज्ञापन तैयार कीजिए।**

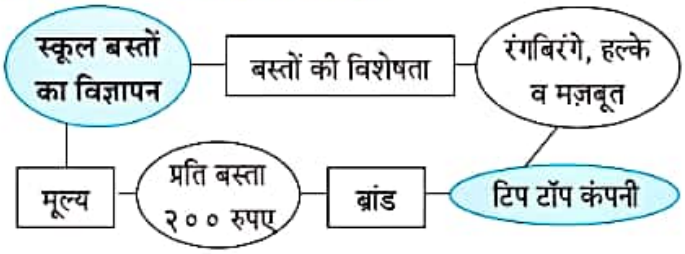


**कृति (४) : विज्ञापन तैयार कीजिए।**

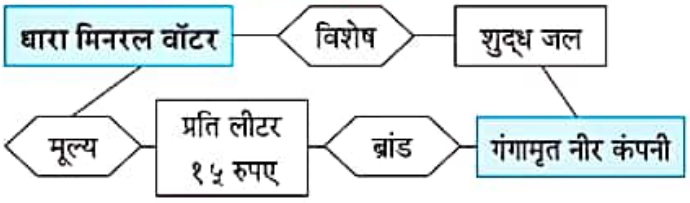


**कृति (५) : विज्ञापन का प्रारूप तैयार कीजिए।**

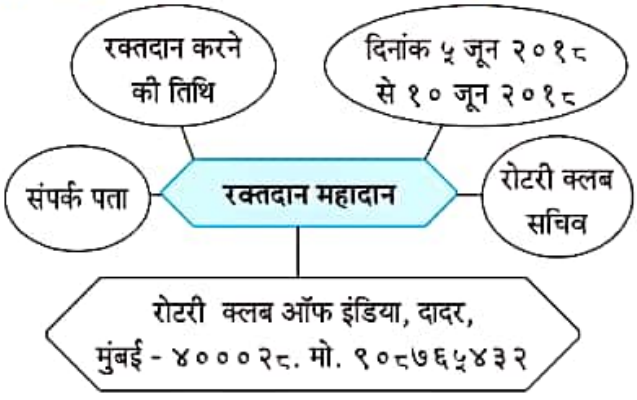


❖❖❖

# ६ निबंध लेखन

किसी विषय पर अपने विचारों, कल्पनाओं, अनुभवों तथा प्राप्त जानकारियों को क्रमबद्ध परिच्छेद के रूप में अपनी भाषा शैली में लिखना ही **'निबंध लेखन'** है।

**निबंध के प्रकार**

| वर्णनात्मक | आत्मकथनात्मक | कल्पनात्मक | विचारात्मक | चरित्रात्मक |
|---|---|---|---|---|
| • मेरा प्रिय नेता | • साइकिल की आत्मकथा | • यदि मेरी लॉटरी लग जाए... | • विज्ञान से लाभ-हानी | • मेरा प्रिय गायक |
| • मेरा प्रिय वैज्ञानिक | • दीपक की आत्मकथा | • यदि मैं डॉक्टर होता... | • जन सेवा ही ईश्वर सेवा है | • मेरा प्रिय खिलाड़ी |
| • ऐतिहासिक स्थल की सैर | • फटी पुस्तक की आत्मकथा | • यदि मोबाइल न होता तो.... | • समाचार पत्र | • मेरा प्रिय अभिनेता |
| • नदी किनारे दो घंटे | • मैं हिमालय बोल रहा हूँ। | • यदि ऐनक न होता तो.... | • विज्ञान के चमत्कार | • मेरा प्रिय लेखक |

**निबंध लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें :**

(i) जिसके विषय में हमें अधिक जानकारी हो, जो विषय आसान लगे, उसी विषय पर निबंध लिखना चाहिए।

(ii) निबंध मुख्यत: तीन भागों में लिखना चाहिए।

(i) प्रारंभ या प्रस्तावना या भूमिका।

(ii) मध्य या प्रसार या विषय प्रतिपादन या विषय व्याख्या।

(iii) अंत अथवा उपसंहार।

(iii) निबंध का प्रारंभ आकर्षक, सहज और संक्षिप्त होना चाहिए।

(iv) प्रारंभ और अंत किसी महापुरुष के कथन, कविता या सामान्य सत्य से करना चाहिए, जिससे पढ़नेवाला प्रेरित हो।

(v) विषय विस्तार तीन परिच्छेदों में होना चाहिए।

(vi) निबंध का अंत या उपसंहार अलग परिच्छेद में होना चाहिए।

(vii) निबंध की भाषा सरल और शुद्ध होनी चाहिए। निबंध में व्याकरण की गलतियाँ नहीं होनी चाहिए।

(viii) निबंध में कोई बात बार-बार नहीं लिखनी चाहिए।

(ix) निबंध में मुहावरों तथा कहावतों का यथा एवं योग्य प्रयोग करना चाहिए।

(x) निबंध की भाषा में प्रवाह तथा विचारों में नवीनता होनी चाहिए।

**उदाहरण के रूप में निबंध के विविध प्रकारों के आधार पर निम्नलिखित निबंध दिए जा रहे हैं:**

### (१) विज्ञान के चमत्कार

विज्ञान वह व्यवस्थित ज्ञान है; जो विचार, अवलोकन, अध्ययन और प्रयोग से मिलता है। विज्ञान यानी किसी भी विषय का क्रमबद्ध ज्ञान। आज का हमारा युग विज्ञान का युग है। आज चारों ओर विज्ञान का बोलबाला है। छोटी सुई से लेकर हवाई जहाज तक सारी चीजें विज्ञान की ही देन हैं। विज्ञान के कारण मनुष्य का जीवन सुखकर एवं खुशहाल हो गया है।

विज्ञान के चमत्कारों की यदि बात करें तो चारों और व्याप्त सारी चीजें विज्ञान की ही देन हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जैसे कि विद्या, उद्योग, अनुसंधान, तकनीकी, संदेश वहन, यातायात, कंप्यूटर, चिकित्सा आदि में विज्ञान ही विज्ञान दिखाई देता है। आखिर, सच ही कहा गया है 'जय विज्ञान।'

विद्युत विज्ञान का ही अद्भुत वरदान है। इसने इंसान के जीवन से अंधकार मिटा दिया है। अंतरिक्ष विज्ञान में हुई प्रगति के कारण मनुष्य चाँद पर जा पहुंचा है। अब वह मंगल पर जाने की तैयारी कर रहा है। चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान ने सफलता हासिल कर ली है। अब असाध्य से असाध्य रोगों का भी निदान आसान हो गया है। हृदय प्रत्यारोपण एवं नेत्र प्रत्यारोपण आसानी से होने लगे हैं। कैंसर जैसी भयानक बीमारी का इलाज आसान हो गया है। आज विज्ञान ने अंधे को आँखें दी हैं, बहरे को कान दिए हैं, गूँगे को वाणी दी है, दिव्यांग को शारीरिक अवयव दिए हैं। विज्ञान के कारण नाभिकीय ऊर्जा का उत्पादन बढ़ने लगा है। इस ऊर्जा का सकारात्मक कामों के लिए उपयोग हो रहा है। विज्ञान के कारण यातायात के साधन सुलभ हो गए हैं। आज हम कुछ घंटों में अमरीका जा सकते हैं। संदेश वहन के साधनों में भी प्रगति हो गई है। मोबाइल, फेसबुक, गूगल आदि ने संपूर्ण दुनिया को एक-दूसरे के करीब लाकर रख दिया है। आज हमारा देश विज्ञान के कारण कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो गया है। विज्ञान का और एक बड़ा चमत्कार है 'मुद्रण यंत्रों का आविष्कार।' मुद्रण यंत्रों के आविष्कार ने पुस्तकों का निर्माण किया है। इस कारण ज्ञान का चारों ओर प्रचार व प्रसार हुआ है। हमारे दैनंदिन जीवन में भोजन पकाने से लेकर अन्य सारी सुख-सुविधाओं का निर्माण विज्ञान के कारण ही सुलभ हुआ है। इसलिए आज विज्ञान कामधेनु गाय की तरह मनुष्य की सारी इच्छाएँ पूर्ण कर रहा है। सच ही कहा गया है -

**आज की दुनिया विचित्र नवीन**
**प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन।**
**हैं बँधे नर के करों में वारि-विद्युत-भाप**
**हुक्म पर चढ़ता-उतरता है पवन का ताप।**
**है नहीं बाकी कहीं व्यवधान**
**लाँघ सकता नर सरित-गिरि-सिंधु एक समान।**

**(२) मैं हिमालय बोल रहा हूँ.....**

**मेरे नगपति! मेरे विशाल!**
**साकार, दिव्य, गौरव विराट्,**
**पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल!**
**मेरी जननी के हिम-किरीट!**
**मेरे भारत के दिव्य भाल!**
**मेरे नगपति! मेरे विशाल!**

राष्ट्रकवि दिनकर की ये पंक्तियाँ मेरे ही सम्मान और श्रेष्ठता को स्थापित करती हैं। जी हाँ! मैं संसार का सबसे ऊँचा पहाड़ हूँ। इसलिए तो मुझे नगपति व गिरिराज भी कहते हैं। मैं बर्फ का घर हूँ। मुझ पर हमेशा बर्फ जमी रहती है। मैं उत्तर भारत में सहस्रों मील तक फैला हुआ हूँ। आखिर भारत देश का दिव्य भाल हूँ। मेरी ऊँची चोटियाँ प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं। आदिकाल से मेरा महत्त्व है। भारतीय पुराणों में मेरा वर्णन किया गया है। पुराणों के अनुसार भगवान शंकर मेरे ही पर्वत 'कैलाश' पर निवास करते हैं। मेरे आँचल में बद्रीनाथ, केदारनाथ, अमरनाथ आदि प्रसिद्ध तीर्थस्थल हैं। यहाँ पर प्रतिवर्ष बहुत सारे लोग आते हैं। मेरा प्राकृतिक सौंदर्य देखने के लिए लाखों पर्यटक आते हैं।

पर्वतारोहियों के लिए मैं एक सुखद जगह हूँ। क्या आपको पता है, दुनिया के विभिन्न प्रदेशों से आए हुए, कई लोगों ने मेरे सर्वोच्च शिखर एवरेस्ट की चढ़ाई की है। यदि मैं न होता तो देश के अधिकतर उत्तरी बाग में मरूभूमि होती। मैं मानसूनी हवाओं को रोककर रखता हूँ। इसी कारण उत्तर भारत में जोरों से वर्षा होती है। इसी कारण यहाँ की नदियाँ पानी से भरी होती है। ग्रीष्म के महीने में सूर्य की रोशनी के कारण मेरी चोटियों से बर्फ पिघलने लगती है और वह जल के रूप में नदियों से बहने लगती है।

मैं एक मनोरम रम्य स्थल हूँ। मेरे चारों ओर प्राकृतिक वैभव बिखरा हुआ है। देवदार व चीड़ जैसे ऊँचे-ऊँचे पेड़ मेरी शोभा बढ़ा रहे हैं। रंग-बिरंगे पक्षी व जानवर मेरी गोद में आनंद से रहते हैं। मेरे पास आयुर्वेद का भंडार है। विविध प्रकार की जड़ी-बूटियों का मेरे पास संग्रह है। मेरे वनों से लोगों को फल-फूल, लकड़ियाँ, गोंद आसानी से मिल जाते हैं। लोगों को कागज बनाने के लिए लुगदी भी मैं ही प्रदान करता हूँ।

इसी कारण महाकवि पंत जी लिखते हैं -

**समाधिस्थ सौंदर्य हिमालय**
**आत्मानुभूति लय**
**हँसता जहाँ अशेष**
**ज्योतिर्भूमि जय भारत देश।**

**(३) मेरा प्रिय खिलाड़ी**

भारत खिलाड़ियों का देश है। मेजर ध्यानचंद, सचिन तेंदुलकर, सुनील गावस्कर, कपिल देव, महेंद्र सिंह धोनी व विराट कोहली जैसे खिलाड़ियों ने देश का नाम विश्व खेल में प्रसिद्ध किया है। ये सारे खिलाड़ी मुझे प्रिय हैं। फिर भी मेरा सबसे प्रिय पसंदीदा खिलाड़ी है सचिन तेंदुलकर। सचिन क्रिकेट की शान व भारत की जान है।

सचिन तेंदुलकर का जन्म २४ अप्रैल १९७३ में हुआ था। सचिन का जन्म राजापुर के मराठी ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनके बड़े भाई अजीत ने उन्हें क्रिकेट खेलने के लिए प्रोत्साहित किया था। सचिन जब मुंबई के शारदाश्रम विद्यामंदिर में पढ़ाई कर रहे थे, तब वहीं पर प्रशिक्षक रमाकांत अचरेकर के सान्निध्य में उन्होंने अपने क्रिकेट जीवन की शुरुआत की।

सन १९८९ में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण के पश्चात उन्होंने बल्लेबाजी में कई कीर्तिमान स्थापित किए हैं। उन्होंने टेस्ट व एकदिवसीय मैच में सर्वाधिक शतक बनाए हैं। वह टेस्ट मैच में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं। इतना ही नहीं, वह टेस्ट मैच में १४००० से अधिक रन बनाने वाले विश्व के एकमात्र खिलाड़ी हैं। आज वह क्रिकेट के इतिहास में विश्व के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाजों में गिने जाते हैं।

सचिन तेंदुलकर को अनेक पुरस्कार मिले हैं। 'राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार' से सम्मानित एकमात्र क्रिकेट खिलाड़ी हैं। सन २००८ में वे पद्म विभूषण से भी पुरस्कृत किए जा चुके हैं। भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित होने वाले वह सर्वप्रथम खिलाड़ी और सबसे कम उम्र के व्यक्ति हैं। भारत सरकार ने सचिन को यह सम्मान देने के लिए नियमों में बदलाव तक किया। सचिन तेंदुलकर को क्रिकेट का भगवान माना जाता है।

वर्तमान में सचिन महाराष्ट्र के सांसद हैं। वे समाजसेवा भी करते हैं। उन्होंने कई गरीब बच्चों को पढ़ाने का जिम्मा भी लिया है। वे बहुत ही प्रिय व मृदुवाणी से सबसे बातें करते हैं। इसलिए सचिन तेंदुलकर मेरे प्रिय खिलाड़ी हैं।

**(४) घायल सैनिक की आत्मकथा**

**''भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।**
**वह हृदय नहीं निरा पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।''**

जी हाँ, मेरी आत्मकथा रंगीन नहीं, रोमांचक है विलास से ही नहीं, साहस से भी भरी हुई है। मै हूँ भारतीय सैनिक!

मेरा जन्म सह्याद्रि के पहाड़ी प्रदेश में हुआ था। हमारे इलाके में खेती-बाड़ी के लायक जमीन बहुत कम थी, इसलिए बहुत से लोग सेना में भर्ती हो जाते थे। हमें बचपन से ही विशेष रूप से शारीरिक तालीम दी जाती थी। मेरे दादाजी एक सैनिक थे। मेरे पिता भी एक सैनिक थे और उन्होंने अनेक वर्षों तक सेना में रह कर भारतमाता की सेवा करने का अवसर प्राप्त किया था। मेरे मन में भी पिताजी की तरह एक सैनिक बनकर भारतमाता की सेवा करने की प्रबल अभिलाषा थी। अंतत: जवान होते-होते मैंने घुड़सवारी, तैरना, पहाड़ पर चढ़ना सीख लिया।

आखिर वह दिन मेरे जीवन में आ ही गया, जिसका मुझे हर पल इंतजार रहता था। मेरी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था। मैं महाराष्ट्र के एक सैनिक स्कूल में भर्ती हो गया। चंद दिनों में ही मेरी मेहनत रंग लाई। मैंने सैनिक शिक्षा प्राप्त कर ली। मशीनगन, राइफल, टैंक, तोप आदि चलाने में निपुण हो गया। साथ ही कार, मोटर, ट्रक चलाने में भी अनेक प्रमाण पत्र प्राप्त किए। युद्ध स्थल की कार्यवाही, फायरिंग और गोलंदाजी का

काफी अनुभव भी प्राप्त किया।

मुझे सबसे पहले भारत-चीन सीमा पर भेजा गया। मैं वहाँ अपने साथियों के साथ देश की रक्षा करने में लगा ही था, तभी अक्टूबर, १९६२ में एक दिन चीनी सैनिकों ने हमारी चौकी पर अचानक हमला कर दिया। वे सैकड़ों थे, जबकि हम कुल ३० थे, फिर भी हमने उन्हें नाको चने चबवा दिए। अकेले मैंने ४० चीनियों को मौत के घाट उतार दिया था, परंतु दु:ख तब ज्यादा हुआ, जब हमें पता चला कि हमारे २० सैनिक भाई शहीद हो गए। तीन-चार सौ सैनिकों के सामने हम दस कहाँ तक टिक पाते? तभी पता चला कि हमारी सहायता के लिए सैकड़ों भारतीय सैनिक आ गए हैं। हमारी ताकत बढ़ते देखकर चीनी सैनिक नौ दो ग्यारह हो गए।

सन १९६२ में चीन से और १९६५ में मैं पाकिस्तानी सेना से लड़ा। १९६५ में तो मैं अपने बहादुर साथियों के साथ लाहौर तक चला गया। यदि ताश्कंद समझौता न होता तो हमारी छावनी लाहौर में होती।

युद्ध विराम के बाद मैं अपने गाँव लौटा। माँ खुशी के मारे पागल हो गई। पत्नी और मुन्ना दोनों बहुत प्रसन्न हुए। गाँव के लोगों को मैंने अपने अनुभव सुनाए। लेकिन कुछ समय के बाद पाकिस्तानी सेना ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया। देश के रक्षायज्ञ में अपनी आहुति देने के लिए मैं चल पड़ा। कश्मीर सीमा पर हमने जी-जान से पाकिस्तानी सैनिकों का सामना किया।

इस भिड़ंत में मेरे पैरों में गोलियाँ लगीं, फिर भी तुरंत इलाज किए जाने से मैं बच गया। मुझे अपनी वीरता के उपलक्ष्य में भारत सरकार से 'वीरचक्र' प्राप्त हुआ।

आज मुझमें पहले जैसी शक्ति नहीं रही है। फिर भी मुझे इसका गम नहीं है तथा युद्ध में लगे घाव तो मेरे जीवन के अमूल्य आभूषण हैं। अवसर आने पर अपने प्राण तक न्योछावर कर दूँगा। पिछले साल कारगिल युद्ध में वीरता दिखाने के लिए मेरे बेटे को भी 'वीरचक्र' प्रदान किया गया था। अच्छा, अब आज्ञा चाहता हूँ। 'जय हिंद'!

**''तन समर्पित, मन समर्पित और यह जीवन समर्पित।**
**चाहता हूँ, देश की धरती! तुझे कुछ और भी दूँ।।''**

### (५) पानी की समस्या और उपाय

कवि रहीम की उक्ति 'बिन पानी सब सून' अक्षरश: सत्य है। बिना पानी के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। जहाँ पानी है, वहीं जीवन है। पृथ्वी ही ऐसा अभी तक का ज्ञात ग्रह है, जहाँ पानी है और समुचित मात्रा में है। पृथ्वी का करीब तीन-चौथाई भाग पानी से घिरा हुआ है। अन्य ग्रहों जैसे - शनि, बृहस्पति, मंगल या फिर चंद्रमा पर जीवन के कोई लक्षण नहीं, क्योंकि वहाँ पानी नहीं है।

विडंबना यह है कि भारत जो पवित्र नदियों की भूमि कहलाता है, उसी देश को पानी की विकट समस्या से जूझना पड़ रहा है। हमारे देश में हजारों गाँव ऐसे हैं, जहाँ लोग पीने तक का पानी दूर-दूर से लाकर काम चलाते हैं। गर्मियों में तो और भी बदतर हालत हो जाती है। सरकारी आँकड़ों में तो ९० प्रतिशत जनसंख्या को पानी उपलब्ध है, लेकिन सर्वेक्षण करने पर पाया गया है कि केवल ३० प्रतिशत जनसंख्या ही उसका लाभ उठा पाती है। इसके अलावा जहाँ कहीं सरलता से पानी उपलब्ध है भी, तो वह प्रदूषित होता है।

सवाल यह उठता है कि आखिर इतनी विपुल जल-राशि के होते हुए भी हमारे सामने पानी की इतनी गहरी समस्या क्यों उठी है?

इस समस्या का सबसे बड़ा कारण है-दिन दूनी रात चौगुनी रफ्तार से बढ़ती जनसंख्या। उसकी भौतिक आवश्यकताओं और भोगवादी प्रवृत्ति ने ही इस समस्या को जन्म दिया है। औद्योगीकरण ने पानी का जबरदस्त दोहन तो किया ही है, उसे प्रदूषित करने में भी सबसे आगे रहा है। कल-कारखानों का गंदा पानी नदियों में बहाए जाने की मूर्खता का ही दंड है, जो आज मनुष्य शुद्ध पानी की बूँद-बूँद को तरस रहा है। फसल की ज्यादा पैदावार के लिए कृत्रिम खादों का बढ़ता प्रयोग तथा कीटनाशक दवाएँ जमीन को खराब तो कर ही रही हैं, जमीन के अंदर के पानी को भी विषाक्त बना रही हैं।

मनुष्य ने पेड़ों पर कुल्हाड़ी चलाते समय यह नहीं सोचा कि वह अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है। पेड़ बारिश के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करते हैं। बारिश के पानी तथा भूमि-क्षरण (Soilerosion) को अपनी जड़ों के द्वारा बहने से रोकते हैं। पेड़ों को काटने की मूर्खता का ही परिणाम है कि कहीं सूखा तो कहीं बाढ़ की विभीषिका का रौद्र रूप दिखाई पड़ता है।

इस समस्या से निपटने के लिए सबसे पहले जरूरी यह है कि वर्षा के जल को हम व्यर्थ न जाने दें। उसे संचित करने की दिशा में जरूरी कदम बढ़ाएँ। तालाब, कुएँ आदि का ज्यादा से ज्यादा निर्माण हो। वृक्षारोपण व्यापक पैमाने पर हो। हर बिल्डिंग की छतों से बारिश का पानी सीधे जमीन के अंदर जाए। इसके लिए भी योजना बनाकर क्रियान्वित की जाए। जमीन के अंदर पानी ज्यादा से ज्यादा जाएगा, तो पानी का स्तर बढ़ेगा और नलकूपों द्वारा पानी की माँग को पूरा किया जा सकेगा। वाटर हार्वेस्टिंग का प्राचीन और नया दोनों रूप पानी के संचयन के लिए फायदेमंद है। नदियों का पानी स्वच्छ बना रहे, इसके लिए कल कारखानों के पानी की निकासी का अलग प्रबंध किया जाना चाहिए। ये कार्य व्यक्तिगत, सामाजिक तथा राष्ट्रीय सभी रूपों में व्यापक पैमाने पर हो, तभी सफल हो सकेगा। प्रकृति ने हमें जो जीवन का आधार दिया है, उसका कृतज्ञ होते हुए उसका संरक्षण करें तथा प्रदूषित होने से बचाएँ, इसी में हमारी भलाई है।

अगर हम अब भी इस दिशा में जागरूक नहीं हुए, तो आनेवाली स्थिति कितनी विकट हो सकती है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। जल ही बचपन हे जल ही यौवन है; न जलाओ जल को जल ही जीवन है।

### (६) पर्यावरण व विकास

'पर्यावरण' शब्द 'परि' तथा 'आवरण' दो शब्दों से मिलकर बना है। इसका अर्थ है - चारों ओर का वातावरण, जिससे पृथ्वी ढँकी और सुरक्षित है। इसमें जल, मिट्टी, वायु, गैस, पेड़-पौधे और वनस्पतियाँ

आदि सभी शामिल हैं। ये सब मिलकर एक संतुलित वातावरण तैयार करते हैं, जिन पर समस्त प्राणियों का अस्तित्व निर्भर होता है। जब-जब किसी भी कारणवश इनके साथ छेड़खानी की गई, इनके नियमों का उल्लंघन किया गया; तब-तब मनुष्य प्राकृतिक विपदाओं का शिकार हुआ है। चाहे वह बाढ़ की विभीषिका हो या अकाल की चपेट।

प्रकृति ने हमारे लिए एक माँ की तरह सुखद, सुरक्षित एवं स्वस्थ वातावरण का निर्माण किया है। हमें उसकी रक्षा करते हुए उसका उपभोग करना चाहिए। कहा गया है - ''रक्षये प्रकृति पांतुलिका।'' अर्थात प्रकृति प्राणियों की रक्षा करती है। लेकिन हम मनुष्य अपने स्वार्थ और भौतिक सुखों की होड़ में प्रकृति माँ के इस वरदान की उपेक्षा कर उसे दूषित करने में लग गए। जैसे-जैसे मनुष्य विकास की तरफ बढ़ता गया, वैज्ञानिक आविष्कार करते गए, वैसे-वैसे पर्यावरण-प्रदूषण का खतरा भी बढ़ता गया।

पर्यावरण-प्रदूषण की समस्या आधुनिक युग की देन है। वैज्ञानिक उन्नति के साथ उद्योग धंधों का विकास हुआ। अनेक कल-कारखाने स्थापित किए। अनेक घातक अस्त्र-शस्त्र बनने लगे। इन सबसे उत्पन्न जहरीले पदार्थ वायु, जल में मिलकर उसकी प्राकृतिक रचना को असंतुलित करने लगे। अब जीवन रक्षक यही पर्यावरण हमारे लिए घातक बनना शुरू हो गया।

विकास की इस अंधी दौड़ ने हमारी नदियों के शुद्ध जल को भी दूषित कर दिया है। कल-कारखानों का गंदा पानी सीधे नदियों में बहा दिया जाता है। इसी दूषित जल को पीने के लिए मनुष्य बाध्य है और अनेक रोगों का शिकार हो जाता है।

वाहनों के नित नए विकास और उनकी बढ़ती तादाद ने हमारी प्राणवायु को भी जहरीला बना दिया है। वाहनों से निकले गैस, धुआँ वगैरह मनुष्य के जीवन में जहर घोल रहे हैं।

वैज्ञानिक उन्नति ने मनुष्य को जहाँ विकास के अवसर सुलभ कराए, वहीं वह हमारी त्रासदी का कारण भी बना। भोपाल गैस की दुर्घटना इसका ज्वलंत उदाहरण है। इसमें हजारों लोग मौत की नींद सो गए और जो बच गए वे विकलांग होकर विकास के इस अभिशप्त जीवन को जीने के लिए मजबूर हो गए।

प्रत्येक विकासशील देश स्वयं को सामरिक दृष्टि से संपन्न बनाने के लिए हथियारों की होड़ कर रहा है। परमाणु-परीक्षण से जो रेडियोधर्मी तरंगें बनती हैं, वे वर्षों तक नष्ट नहीं होतीं और वायुमंडल में मिलकर पीढ़ी दर पीढ़ी के लिए अभिशाप बनकर उपस्थित हो जाती हैं।

जनसंख्या की वृद्धि पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाला सबसे बड़ा कारण है। बढ़ती माँगों को पूरा करने के लिए कृत्रिम खादों का बढ़ता प्रयोग, कीटनाशक दवाओं के लगातर छिड़काव ने भूमि और उसके भीतरी जल को प्रदूषित किया है। वायु भी प्रदूषित हुई है। आवास की समस्या हल करने के लिए भी वनों की अंधाधुंध कटाई ने पर्यावरण को सबसे ज्यादा नुकसान पहुँचाया है। समय-समय पर आने वाली प्राकृतिक विपदाएँ इसका प्रमाण हैं। प्राचीनकाल से इन्हीं विपदाओं से बचे रहने के लिए पेड़-पौधों, वनों को देवी-देवता समझकर उन्हें पूजा जाता था। मनुस्मृति में तो पेड़ काटनेवालों को नरक का भागी बताया गया है -

**''छेदनं वृक्ष जातीनां द्वितीय नरकं स्मृतम्।''**

पर्यावरण को बचाने के लिए जागरूकता फैल तो रही है, पर जब प्रत्येक नागरिक इसके लिए अपना योगदान नहीं देता, तब तक यह सफलता नहीं मिल सकती। पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए निम्नलिखित कार्य किए जाने चाहिए- अधिकाधिक मात्रा में वृक्ष लगाए जाएँ और उनका संरक्षण किया जाए। नदियों के जल को प्रदूषित करने वालों को कड़ा दंड दिया जाए। तेज ध्वनि के उपकरणों, वाहनों पर ध्वनि नियंत्रण लागू किया जाए। इसका उल्लंघन करने वालों को कड़ी से कड़ी सजा देने पर ही ये फलीभूत हो सकता है।

अभी भी वक्त है। यदि समय रहते मनुष्य सचेत न हुआ, तो मानव-जीवन का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा। अत: यह शस्य श्यामला वसुंधरा, जो एक माँ की तरह हमारी रक्षा करती है, हमारा पोषण करती है, उसके प्रति हमारा कर्तव्य है कि उसे सुरक्षित रखने में पूरा योगदान करें। वरना वह दिन दूर नहीं, जब अपनी जीवन-डोर हम खुद अपने हाथों से काट बैठेंगे।

### (७) यदि मैं प्राध्यापक होता ...

**''गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लगाउँ पाँय।**
**बलिहारी गुरु आपनो, गोविंद दियो बताय।।''**

विद्यालयों में विद्यार्थियों को यदि समुचित ज्ञान (शिक्षा) मिले तो ही वे भारत के अच्छे नागरिक, कर्मनिष्ठ, सच्चे समाज सेवक और आदर्श देश भक्त बन सकते हैं। प्रत्येक विद्यालय की समस्त व्यवस्था का भार उसके प्रधानाध्यापक पर होता है। विद्यालय की सफलता और उन्नति उसी के कंधे पर होती है। अत: यदि मैं अपने विद्यालय का प्रधानाध्यापक होता तो अपने आप को बहुत भाग्यशाली समझता। देश सेवा का इससे बढ़कर अवसर दूसरा क्या हो सकता है?

अपने विद्यालय का प्रधानाध्यापक बनकर मैं विद्यार्थी के जीवन का सर्वांगीण विकास करने के लिए तन-मन-धन से निरंतर प्रयत्नशील रहता। मैं अपने विद्यालय में ऐसे अध्यापकों की नियुक्ति करता, जो न सिर्फ अपने-अपने विषय के विद्वान (पंडित) होते, बल्कि जो विद्यार्थियों की कठिनाई को अपनी कुशलता से सरल कर देते। विद्यार्थियों को विज्ञान की अच्छी शिक्षा प्राप्त हो, अत: इसके लिए एक संपन्न प्रयोगशाला की व्यवस्था करता। कंप्यूटर की अच्छी शिक्षा का भी प्रबंध करता, साथ ही साथ विद्यालय के पुस्तकालय को हर तरह से समृद्ध बनाता। विद्यार्थियों का बहुमुखी विकास हो, उसके लिए चित्रकला, संगीत शिक्षा, वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ रखता। सभी विद्यार्थियों के लिए शैक्षणिक पर्यटनों का समय-समय पर आयोजन करता। विद्यार्थियों को खेलकूद आदि का महत्त्व बताते हुए उनके लिए एक सुंदर खेल के मैदान का भी प्रबंध करता।

'विद्यार्थी ही हमारे देश के भविष्य हैं।' यह बात मैं पूरी तरह ध्यान में रखकर उनके चरित्र-निर्माण और अनुशासन पर विशेष बल

देता। विद्यार्थियों में सत्य, अहिंसा, श्रमनिष्ठ, कर्तव्यपालन, दया, क्षमाशीलता, संयम आदि गुणों के विकास के लिए मैं सदा प्रयत्नशील रहता। विद्यार्थियों की सभी समस्याओं का उचित निदान करने के लिए हमेशा तैयार रहता। गरीब विद्यार्थियों की उचित आर्थिक सहायता करना न भूलता।

मैं खुद अपने जीवन में सादगी, संयम, सत्य, अहिंसा, नियमितता, कर्तव्यनिष्ठा, श्रमनिष्ठा आदि से विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करने का निरंतर प्रयत्न करता। मैं अपने विद्यालय के सभी शिक्षकों तथा कर्मचारियों के प्रति स्नेहमय सौहार्दपूर्ण-सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करता, परंतु कभी किसी शिक्षक या कर्मचारी की छोटी-सी लापरवाही को भी बर्दाश्त नहीं करता। विद्यार्थियों के माता-पिता तथा अभिभावकों से प्रेमपूर्ण व्यवहार करता। उनके द्वारा प्राप्त सुझाव व शिकायतों को हल करने का प्रयत्न करता।

इस प्रकार मुख्याध्यापक बनकर मैं अपने विद्यालय के विद्यार्थियों के भविष्य को ऐसा तराशता कि सफलता उनके कदम खुद ब खुद चूमती। क्या जीवन में मैं अपनी अभिलाषाओं को पूर्ण कर पाऊँगा... ?

### (८) यदि समाचार पत्र न होते...

समाचार पत्रों का हमारे जीवन में बड़ा महत्त्व है। समाचार पत्र एक ऐसा आईना है कि जिसमें संसार के सभी भाव छिपे होते हैं। उसे पढ़कर हम गहरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। हम अपनी तुलना संसार के लोगों से कर सकते हैं। समाचार पत्र आज लोगों की जरूरत बन गए हैं।

शहर से लेकर गाँव तक आज लोग समाचार पत्र के दीवाने बन गए हैं। सुबह-सुबह चाय पीते-पीते देश-दुनिया की खबर पढ़ते रहते हैं। गाँव का व्यक्ति समाचार पत्र पढ़ने के लिए कई किलोमीटर की यात्रा तय करके बाजारों तक जाकर देश-दुनिया की खबर लेता हैं। यह हमें संसार की सारी जानकारी देता है। अगर समाचार पत्र न होते, तो हम सब इन जानकारियों से अनजान होते। आज दुनिया का नजारा बदल रहा है। कहीं लोकतंत्र तो कहीं राजतंत्र, तो कहीं सैनिक शासन आ रहा है। सारी स्थिति की जानकारी समाचार पत्र देते रहते हैं।

आज हर देश अपने पड़ोसी देश की गतिविधि जानना चाहता है। वह हमें समाचार पत्र के माध्यम से मिलती है। समाचार पत्र इतना मजबूत हो गया है कि आज कहीं जाने की जरूरत नहीं है। घर बैठे हम समाचार पत्रों के माध्यम से सब कुछ जान सकते हैं। यह हमारे राजनैतिक ज्ञान को बढ़ाता है।

विज्ञापन की दुनिया का यह एक अनोखा भाग है। आज यह गाड़ी, दुकान, मकान आदि की जानकारी देता है। किसे क्या लेना है, क्या बेचना है वह समाचार पत्र में देखकर उसका लाभ ले सकता है। यह आज लाखों को रोजगार दे रहा है। सुबह-सुबह लोग समाचार पत्रों को बेचकर अपने परिवार के लिए रोटी-रोजी का प्रबंध करते हैं। समाचार पत्र न होते हो लोगों को दुनिया की जानकारी कौन देता? कोने-कोने की खबर एक-दूसरे तक कौन पहुँचाता?

आज लोग लाखों की संख्या में समाचार माध्यमों से जुड़कर रोटी कमा रहे हैं। कुछ समाचार पत्र ऐसे होते हैं, जो प्रचार माध्यमों का दुरुपयोग करके समाज में भ्रम, अफवाह फैलाकर नफरत के बीज बो रहे हैं। यह ठीक नहीं है। लोकतंत्र में अपनी बात कहने का हक सबको है। लेकिन जो राष्ट्रविरोधी हो, ऐसे समाचार देकर जनमानस के खिलाफ कार्य करना मानवता के खिलाफ है। यदि समाचार पत्र न होते तो आज लोग एक-दूसरे के करीब न होकर बहुत दूर होते।

### (९) परोपकार

परोपकार दो शब्दों से मिलकर बना है, पर + उपकार अर्थात दूसरों पर उपकार करना। संसार में अनेक प्रकार के मनुष्य पाए जाते हैं। उनमें से कुछ ऐसे होते हैं, जो बिना स्वार्थ भाव को लेकर दूसरों की भलाई के लिए कार्य करते हैं। ऐसे पुरुष परोपकारी कहे जाते हैं और उनके द्वारा दूसरों के हित के लिए किया गया कार्य परोपकार कहा जाता है। जो कार्य अपने हित, सम्मान और यश की भावना को छोड़कर सर्वथा दूसरों के हित की इच्छा के लिए किए जाते हैं, वे ही परोपकार कहे जाते हैं।

परोपकारी व्यक्ति का जन्म दया और प्रेम के संयोग से होता है। यह एक ऐसी भावना है, जो विशाल हृदय तथा बड़ी सोच वाले मनुष्य के हृदय में रहती है। परोपकार को स्पष्ट करते हुए तुलसीदास ने कहा है -

**''परहित सरिस धर्म नहिं भाई।**
**पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।''**

अर्थात इस संसार में दूसरों की भलाई के समान धर्म तथा दूसरों को पीड़ा पहुँचाने के समान कोई पाप नहीं है। वे लोग जो सदा अपने बारे में ही सोचते हैं और जिनके दिल में स्वार्थ भरा रहता है, वे इसका अनुभव नहीं कर सकते हैं। जिस मनुष्य में परोपकार की भावना नहीं रहती, वह गुप्त जी के शब्दों में मनुष्य कहलाने योग्य नहीं हैं -

**''वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।**
**पशु प्रवृत्त है वही जो आप-आप ही चरे।।''**

अपना पेट तो पशु भी भर लेते हैं, पर जो दूसरों का हित करता है, वही मनुष्य कहलाने का अधिकारी है। परोपकार के गुण के कारण मनुष्य को पशुओं से अलग समझा जाता है।

विद्वान पुरुष अपनी विद्या द्वारा अशिक्षित मनुष्यों को शिक्षित करके परोपकार करते हैं बलवान पुरुष शारीरिक शक्ति से निर्बलों पर परोपकार करते है। वे गरीब और शोषित व्यक्ति पर हो रहे अत्याचार का विरोध करते हैं। धनवान अपने धन के द्वारा गरीबों की सहायता करके परोपकार करते हैं। दुखी मनुष्य को धैर्य बँधाना, प्यासे को पानी पिलाना, अंधे को रास्ता दिखाना आदि ऐसे कार्य हैं, जिनको हम परोपकार कहते हैं।

परोपकार करने वाले का यश राजमहलों से लेकर झोपड़ियों तक फैल जाता है। उसका सब जगह आदर होता है। परोपकार द्वारा अनेक लोग लाभान्वित होते हैं। वे अपनी कठिनाइयों को परोपकारी की

सहायता से दूर कर लेते हैं। जब व्यक्तियों की उन्नति होगी और वे सुखी होंगे तो उनके साथ-साथ समाज की उन्नति भी हो जाएगी। परोपकारी का जीवन दूसरों के लिए आदर्श बन जाता है। आज परोपकार के कारण ही समाज का अस्तित्व कायम है।

इस प्रकार हमें परोपकार मात्र सेवा की भावना को ही लेकर करना चाहिए। परोपकार करते समय हमें यह अभिमान नहीं होना चाहिए कि हमनें व्यक्ति के लिए भलाई का कार्य किया। परोपकार हमें नि:स्वार्थ भाव से करना चाहिए।

## स्वाध्याय

**निम्नलिखित मुद्दों के अनुसार निबंध लिखिए।**

**प्रश्न १ वर्णनात्मक निबंध**

(१) बचपन की मधुर यादें (२) मेरी माँ
(३) बाढ़ का दृश्य (४) रेल्वे स्टेशन पर एक घंटा
(५) मेरी अविस्मरणीय यात्रा (६) महात्मा गांधी

**प्रश्न २ आत्मकथात्मक निबंध**

(१) बूढ़े की आत्मकथा
(२) बाढ़ पीड़ित की आत्मकथा
(३) वृक्ष की आत्मकथा
(४) अनाथ बालक की आत्मकथा
(५) सह्याद्रि की आत्मकथा अथवा मैं सह्याद्रि बोल रहा हूँ
(६) एक किले की आत्मकथा (७) फूल की आत्मकथा
(८) बादल की आत्मकथा (९) पंछी की आत्मकथा

**प्रश्न ३ कल्पनात्मक निबंध**

(१) यदि मैं पंछी होता .....
(२) यदि परीक्षाएँ न होतीं .....
(३) यदि मैं शिक्षामंत्री होता .....
(४) यदि मैं वैज्ञानिक होता .....
(५) यदि कक्षा में शिक्षक न जाते .....

**प्रश्न ४ विचारात्मक निबंध**

(१) विज्ञापन से लाभ-हानि
(२) विज्ञान के चमत्कार और लाभ-हानि
(३) भाषा-मनुष्य के लिए वरदान
(४) समय का महत्त्व और सदुपयोग
(५) वृक्ष लगाओ, देश बचाओ अथवा वृक्षारोपण
(६) श्रम का महत्त्व

**प्रश्न ५ चरित्रात्मक निबंध**

(१) मेरा प्रिय नेता (२) मेरा प्रिय वैज्ञानिक
(३) मेरा प्रिय पालतू पशु (४) मेरा प्रिय लेखक

❖❖❖

| समय : ३ घंटे | नमूना कृतिपत्रिका - १ | पूर्णांक : १०० |
|---|---|---|

## विभाग १ – गद्य (२४)

**प्रश्न १ (अ) परिच्छेद के आधार पर सूचनानुसार निम्नलिखित कृतियाँ पूर्ण कीजिए।** (८)

लक्ष्मी शांत खड़ी अपने जख्मों पर तेल लगवाती रही। वह करामत अली के मित्र ज्ञान सिंह की निशानी थी। ज्ञान सिंह और करामत अली एक-दूसरे के पड़ोसी तो थे ही, वे कारखाने में भी एक ही विभाग में काम करते थे। प्राय: एक साथ ड्यूटी पर जाते और एक साथ ही वापस लौटते।

ज्ञान सिंह को मवेशी पालने का बहुत शौक था। प्राय: उसके घर के दरवाजे पर भैंस या गाय बँधी रहती। तीन बरस पहले उसने एक जर्सी गाय खरीदी थी। उसका नाम उसने लक्ष्मी रखा था। अधेड़ उम्र की लक्ष्मी इतना दूध दे देती थी कि उससे घर की जरूरत पूरी हो जाने के बाद बाकी दूध गली के कुछ घरों में चला जाता। दूध बेचना ज्ञान सिंह का धंधा नहीं था। केवल गाय को चारा, दर्रा आदि देने के लिए कुछ पैसे जुटा लेता था।

नौकरी से अवकाश के बाद ज्ञान सिंह को कंपनी का वह मकान खाली करना था। समस्या थी तो लक्ष्मी की। वह लक्ष्मी को किसी भी हालत में बेच नहीं सकता था। उसे अपने साथ ले जाना भी संभव नहीं था। जब अवकाश में दस-पंद्रह दिन ही रह गए तो करामत अली से कहा- "मियाँ! अगर लक्ष्मी को तुम्हें सौंप दूँ तो क्या तुम उसे स्वीकार करोगे... ?"

मियाँ करामत अली ने कहा था- "नेकी और पूछ-पूछ। भला इससे बड़ी खुशनसीबी मेरे लिए और क्या हो सकती है?"

करामत अली पिछले एक वर्ष से उस गाय की सेवा करता चला आ रहा था। गाय की देखभाल में कोई कसर नहीं छोड़ रखी थी।

करामत अली को लक्ष्मी की पीठ पर रोगन लगाने के बाद भी इत्मीनान नहीं हुआ। वह उसके सिर पर हाथ फेरता रहा। लक्ष्मी स्थिर खड़ी उसकी ओर जिज्ञासापूर्ण दृष्टि से देखती रही। करामत अली को लगा जैसे लक्ष्मी कहना चाहती हो - "यदि मैं तुम्हारे काम की नहीं हूँ तो मुझे आजाद कर दो। मैं यह घर छोड़कर कहीं चली जाऊँगी।"

(१) संजाल पूर्ण कीजिए। (२)

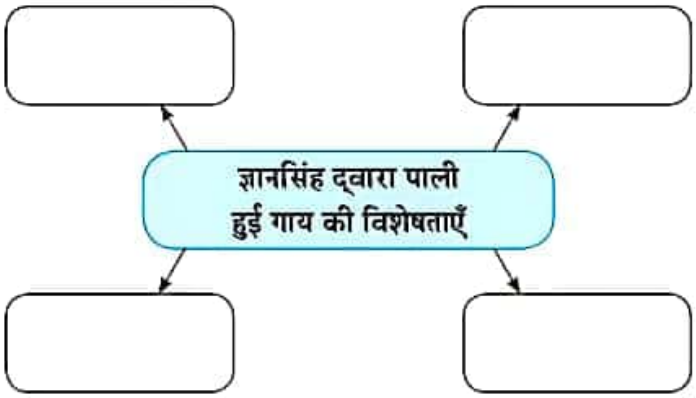


(२) उत्तर लिखिए। (२)

(i)

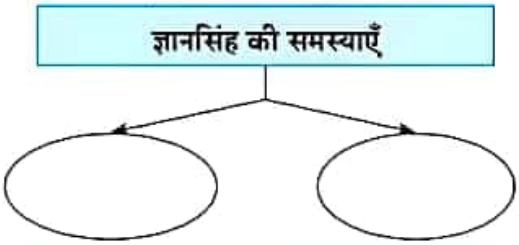


(ii)

(३) चौखट में दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए। (२)

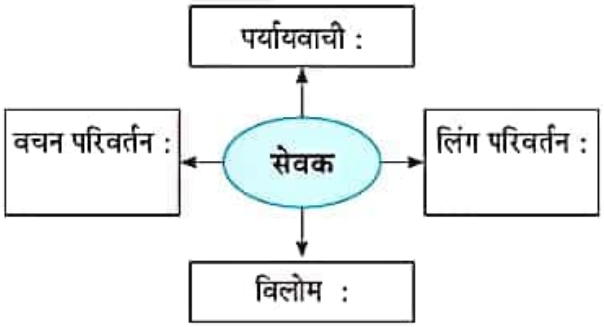


(४) पालतू जानवरों के साथ किए जाने वाले सौहार्दपूर्ण व्यवहारों के बारे में बताइए। (२)

**प्रश्न २ (आ) परिच्छेद के आधार पर सूचनानुसार निम्नलिखित कृतियाँ पूर्ण कीजिए।** (८)

कुछ देर बाद हमारी टैक्सी मडगाँव से पाँच किमी दूर दक्षिण में स्थित कस्बा बेनालियम के एक रिसॉर्ट में आकर रुक गई। यह रिसॉर्ट हमने पहले से बुक कर लिया था। इसलिए औपचारिक खानापूर्ति कर हम आराम करने के इरादे से अपने-अपने स्यूट में चले गए। इससे पहले कि हम कमरों से बाहर निकलें, मैं आपको गोवा की कुछ खास बातें बता दूँ। दरअसल, गोवा राज्य दो भागों में बँटा हुआ है। दक्षिण गोवा जिला तथा उत्तर गोवा जिला। इसकी राजधानी पणजी मांडवी नदी के किनारे स्थित है। यह नदी काफी बड़ी है तथा वर्ष भर पानी से भरी रहती है फिर भी समुद्री इलाका होने के कारण यहाँ मौसम में प्राय: उमस तथा हवा में नमी बनी रहती है। शरीर चिपचिपाता रहता है लेकिन मुंबई जितना नहीं, क्योंकि यहाँ का क्षेत्र हरीतिमा से भरपूर है फिर भी धूप तो तीखी ही होती है।

यों तो गोवा अपने खूबसूरत सफेद रेतीले तटों, महँगे होटलों तथा खास जीवन शैली के लिए जाना जाता है लेकिन इन सबके बावजूद यह अपने में एक सांस्कृतिक विरासत भी समेटे हुए है।

**(१) आकृति पूर्ण कीजिए।** (२)

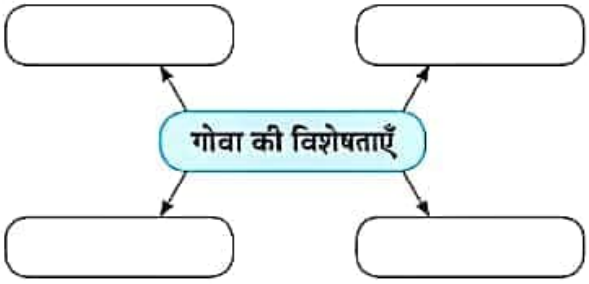


**(२) निम्नलिखित वाक्यों का उचित क्रम लगाकर वाक्य फिर से लिखिए।** (२)

(i) लेखक ने रिसॉर्ट पहुँचकर औपचारिक खानापूर्ति की।

(ii) लेखक व उनके साथ आए हुए सब लोग आराम करने के लिए अपने-अपने स्यूट में चले गए।

(iii) लेखक ने पहले से ही रिसॉर्ट बुक कर लिया था।

(iv) लेखक गोवा एक्सप्रेस से मडगाँव उतरे।

**(३) (अ) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।** (२)

(i) हरियाली (ii) सरिता (iii) तन (vi) श्वेत

**(आ) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।**

(i) संस्कृति से संबंधित (ii) औपचारिकता पूरी करना

(४) 'सांस्कृतिक विरासत देश की धरोहर होती है।' कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए। (२)

**प्रश्न १ (इ) परिच्छेद के आधार पर सूचनानुसार निम्नलिखित कृतियाँ पूर्ण कीजिए।** (८)

पर्यावरण शब्द का अर्थ है - चारों ओर का वातावरण जिनसे पृथ्वी ढकी और सुरक्षित है। इसमें जल, मिट्टी, वायु, गैस, पेड़-पौधे और वनस्पतियाँ आदि सभी शामिल हैं। ये सब मिलकर एक संतुलित वातावरण तैयार करते हैं जिन पर समस्त प्राणियों का अस्तित्व निर्भर होता है। पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाला सबसे बड़ा कारण है - जनसंख्या की वृद्धि। बढ़ती माँगों को पूरा करने के लिए कृत्रिम खादों का बढ़ता प्रयोग व कीटकनाशक दवाओं के लगातार छिड़काव ने भूमि और उसके भीतरी जल तथा वायु को प्रदूषित किया है। आवास की समस्या हल करने के लिए वनों की अंधाधुंध कटाई ने पर्यावरण को सबसे ज्यादा नुकसान पहुँचाया है। पर्यावरण को बचाने के लिए जागरुकता फैल तो रही है; पर जब तक प्रत्येक मनुष्य इसके लिए अपना योगदान नहीं देता; तब तक यह सफल नहीं हो सकता। पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए हमें अधिक मात्रा में वृक्ष लगाने चाहिए और उनका संरक्षण करना चाहिए।

KK

(१) संजाल पूर्ण कीजिए। (२)

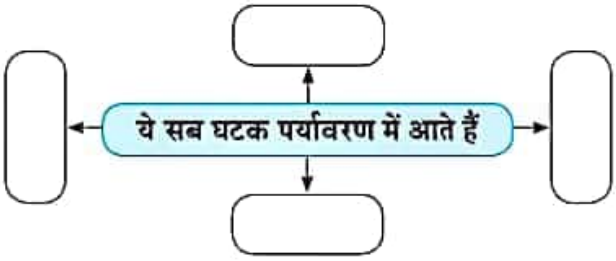


(२) कारण लिखिए। (२)

(i) वायु प्रदूषित हो रही है।

(ii) हमें अधिक मात्रा में वृक्ष लगाने चाहिए।

(३) (अ) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय का प्रयोग कीजिए। (२)

(i) सफल (ii) सुरक्षित

(आ) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग का प्रयोग कीजिए।

(i) वक्त (ii) सुरक्षित

(४) 'पर्यावरण संरक्षण के लिए कौन-कौन-से उपाय किए जा सकते हैं?' अपने विचार लिखिए। (२)

## विभाग २ – पद्य (१८)

**प्रश्न २ (अ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।** (६)

एक मर्यादा बनी है हम सभी के वास्ते,
गर तुम्हें बनना है मोती सीप के अंदर दिखो।

डर जाए फूल बनने से कोई नाजुक कली,
तुम ना खिलते फूल पर तितली के टूटे पर दिखो।

कोई ऐसी शक्ल तो मुझको दिखे इस भीड़ में,
मैं जिसे देखूँ उसी में तुम मुझे अक्सर दिखो।

(१) निम्नलिखित शब्द पढ़कर ऐसे दो शब्द तैयार कीजिए कि जिनके उत्तर निम्न शब्द हों - (२)

(i) भीड़ (ii) तितली

(२) निम्नलिखित पंक्तियों से प्राप्त जीवनमूल्य लिखिए। (२)

(i) डर जाए ..... पर दिखो। (ii) कोई ऐसी शक्ल ..... अक्सर दिखो।

(३) निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ लिखिए। (२)

एक मर्यादा ..... सीप के अंदर दिखो।

**प्रश्न २ (आ): निम्न मुद्दों के आधार पर किसी एक कविता का पद्य-विश्लेषण कीजिए।** (६)

(१) अपनी गंध नहीं बेचूँगा अथवा (२) भारत महिमा

(i) रचना व रचनाकार का नाम

(ii) रचना का प्रकार या विधा

(iii) पसंदीदा पंक्ति

(iv) पसंदीदा होने का कारण

(v) कविता से प्राप्त संदेश या प्रेरणा

KK

**प्रश्न २ (इ): अपठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।** (६)

मेघ आए बड़े बन-ठन के, सँवर के।
आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली
दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगी गली-गली
पाहुन ज्यों आए हो गाँव में शहर के।

पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए
आँधी चली धूल भागी घाघरा उठाएँ
बाँकी चितवन उठा नदी ठिठकी घूँघट सरके
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

**(१) कृति पूर्ण कीजिए।** (२)

(i) इस प्रकार मेघ आए

(ii) ऐसे चली बयार बादलों के आगे

**(२) आकृति पूर्ण कीजिए।**

(i) **परिच्छेद में आए शब्द-युग्म चुनकर लिखिए।** (२)

(ii) **समानार्थी शब्द लिखिए।**

मेघ — ______ पेड़ — ______

**(३) निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।** (२)

मेघ आए बड़े बन-ठन के, सँवर के।
आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली
दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगी गली-गली
पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।

KK

## विभाग ३ – पूरक पठन

**प्रश्न ३ (अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।** (८)

मेहमान मंडली अभी बैठी हुई थी। कोई खाकर उँगलियाँ चाटता था, कोई तिरछे नेत्रों से देखता था कि और लोग अभी खा रहे हैं या नहीं। कोई इस चिंता में था कि पत्तल पर पूड़ियाँ छूटी जाती हैं, किसी तरह इन्हें भीतर रख लेता। कोई दही खाकर जीभ चटकारता था परंतु दूसरा दोना माँगते संकोच करता था कि इतने में बूढ़ी काकी रेंगती हुई उनके बीच में जा पहुँची। कई आदमी चौंककर उठ खड़े हुए। पुकारने लगे- "अरे यह बुढ़िया कौन है? यह कहाँ से आ गई? देखो किसी को छू न दे।"

पंडित बुद्धिराम काकी को देखते ही क्रोध से तिलमिला गए। पूड़ियों का थाल लिए खड़े थे। थाल को जमीन पर पटक दिया और जिस प्रकार निर्दयी महाजन अपने किसी बेईमान और भगोड़े कर्जदार को देखते ही झपटकर उसका टेंटुआ पकड़ लेता है उसी तरह लपक उन्हें अंधेरी कोठरी में धम से पटक दिया। आशा रूपी वाटिका लू के एक झोंके में नष्ट-विनष्ट हो गई।

मेहमानों ने भोजन किया। घरवालों ने भोजन किया परंतु बूढ़ी काकी को किसी ने न पूछा। बुद्धिराम और रूपा दोनों ही बूढ़ी काकी को उनकी निर्लज्जता के लिए दंड देने का निश्चय कर चुके थे। उनके बुढ़ापे पर, दीनता पर, हतज्ञान पर किसी को करुणा न आई थी, अकेली लाड़ली उनके लिए कुढ़ रही थी।

(१) तालिका पूर्ण कीजिए। (२)

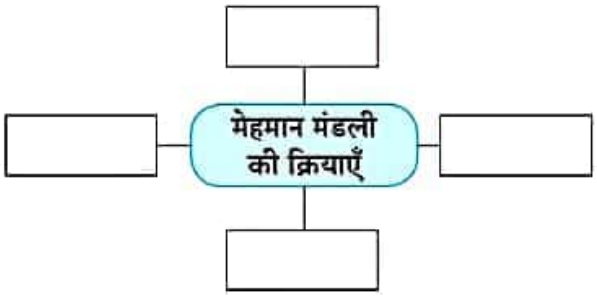


(२) 'बुजुर्ग आदर-सम्मान के पात्र होते हैं, दया के नहीं।' कथन पर अपने विचार लिखिए। (२)

**प्रश्न ३ (अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।** (४)

घना अँधेरा
चमकता प्रकाश
और अधिक।
करते जाओ
पाने की मत सोचो
जीवन सारा।
जीवन नैया
मँझधार में डोले,
सँभाले कौन ?

(१) आकृति पूर्ण कीजिए। (२)

(i) मँझधार में डोले → ☐

(ii) अँधेरा ऐसा है → ☐

(२) 'कर्म ही पूजा है।' इस विषय पर अपने विचार लिखिए। (२)

## विभाग ४ - भाषा अध्ययन (व्याकरण)

**प्रश्न (४) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।** (१८)

(१) (i) निम्नलिखित रेखांकित शब्दों के भेद लिखिए। (१)

मुझसे बड़ी भारी चूक हूई है।

(ii) उचित विशेषण शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए। (१)

छापे का अक्षर मेरा पहला मित्र था।

(२) (i) निम्नलिखित वाक्य में से अव्यय पहचानकर उसका भेद लिखिए। (१)

आरंभ में बंकिम के उपन्यास पढ़े।

(ii) निम्नलिखित अव्यय का वाक्य में प्रयोग कीजिए। (१)

की ओर

(३) काल परिवर्तन कीजिए। (२)

(i) कोस्मोस के दिन गए। (अपूर्ण वर्तमानकाल)

(ii) सभी धर्म आश्रम को मान्य होंगे। (सामान्य वर्तमानकाल)

KK

(४) तालिका पूर्ण कीजिए। (२)

| संधि | संधि–विच्छेद | भेद |
|---|---|---|
| साकार | ..... | ..... |
| ..... | दु + आचार | ..... |

(५) (i) **रचना के आधार पर वाक्य भेद पहचानिए।** (१)

हमें बस वही चाहिए।

(ii) **सूचना के अनुसार वाक्य का प्रकार बदलिए।** (१)

इस पर कोई भी शंका नहीं करेगा। (प्रश्नार्थक वाक्य)

(६) (i) **निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर उसका वाक्य में प्रयोग कीजिए।** (१)

सीना तानकर खड़े रहना।

(ii) **निम्न वाक्यों में अधोरेखांकित शब्द समूह के लिए कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए। (हाथ फेरना, काँप उठना)** (१)

सार्वजनिक अस्पताल का ख्याल आते ही मैं भयभीत हो गया।

(७) **वाक्य शुद्ध करके लिखिए।** (२)

(i) वह यदि गरीब है तो उसका सिफारिश करने वाले लोगों को खर्च के पक्की व्यवस्था करनी चाहिए।

(ii) वह हमारे घर को आच आऐंगे।

(८) **निम्नलिखित वाक्य में से प्रधान व सहायक किया पहचानकर लिखिए।** (१)

(i) वे हड़बड़ा उठे।

(९) **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम तथा द्वितीय रूप लिखिए।** (१)

(i) भूलना (ii) सुनना

(१०) **वाक्य में यथास्थान विरामचिह्नों का प्रयोग कीजिए।** (१)

मुझे देखते ही बोला बबुआ जी अब नहीं कान पकड़ता हूँ अब नहीं

(११) **उचित कारक चिह्न द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।** (१)

(i) बूढ़ी काकी पृथ्वी ..... पड़ी रहती।

## विभाग ५ – उपयोजित लेखन

### प्रश्न ५ (अ) (१) पत्रलेखन (३२)

(१) **निम्नलिखित में से किसी एक पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए।** (५)

(i)

अथवा

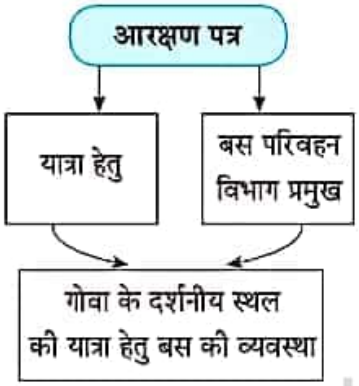

### (२) गद्य आकलन - (प्रश्न-निर्मिति)

**निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर उस पर पाँच प्रश्न तैयार कीजिए कि जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों।** (५)

सुंदर प्रतिभा, मनभावनी चाल और स्वच्छंद प्रकृति ये ही दो-चार बातें देखकर मित्रता की जाती है। पर जीवन-संग्राम में साथ देने वाले मित्रों में इनसे कुछ अधिक बातें चाहिए। मित्र केवल उसे नहीं कहते, जिसके गुणों की तो हम प्रशंसा करें; पर जिसे हम स्नेह न कर सकें। जिससे हम अपने छोटे काम को तो निकालते जाएँ; पर भीतर ही भीतर घृणा करते रहें। मित्र सच्चे पथ-प्रदर्शक के समान होना चाहिए, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें। मित्र भाई के समान होना चाहिए। जिसे हम अपना प्रीतिपात्र बना सकें। हमारे और मित्र के बीच सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए, ऐसी सहानुभूति जिससे दोनों मित्र एक-दूसरे की बराबर खोज-खबर लें। ऐसी सहानुभूति, जिससे एक के हानि-लाभ को दूसरा अपना हानि-लाभ समझें। मित्रता के लिए आवश्यक नहीं है कि दोनों मित्र एक ही प्रकार का कार्य करते हों या एक ही रुचि के हों। दो भिन्न प्रकृति के मनुष्यों में भी बराबर की प्रीति और मित्रता देखी जाती है।

### प्रश्न ५ (आ) (१) वृत्तांत लेखन (५)

**(१) नीचे दिए विषय पर वृत्तांत लेखन कीजिए। (लगभग ६० से ८० शब्द)**

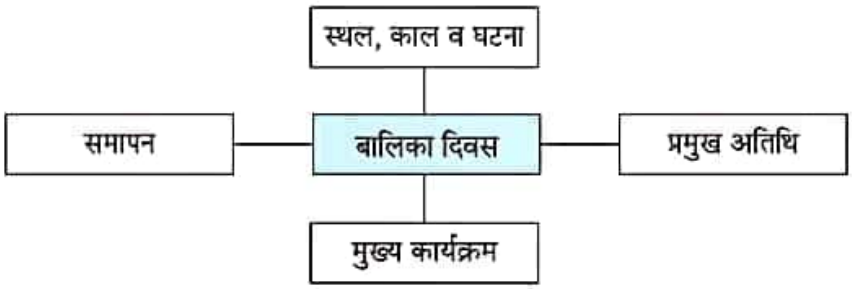


### (२) विज्ञापन लेखन :

**निम्नलिखित जानकारी के आधार पर लगभग ५० से ६० शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए।** (५)

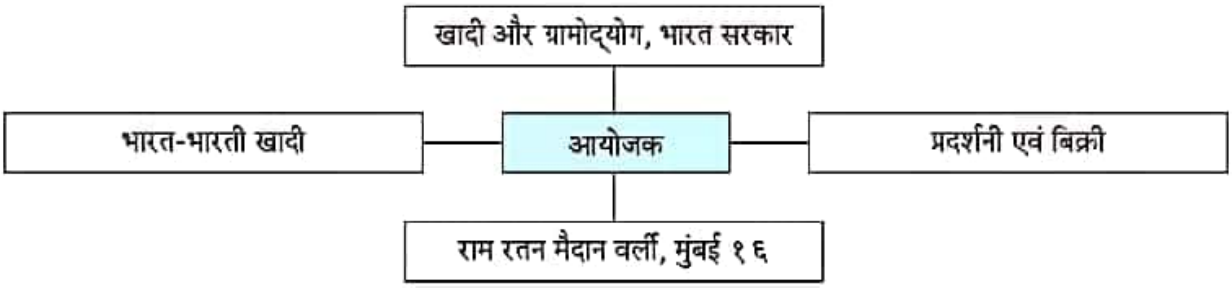


### (३) कहानी लेखन :

**निम्नलिखित मुद्दों के आधार ८० से १०० शब्दों में कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए।** (५)

**(चरवाहा, शरारत, पश्चाताप, सीख)**

### प्रश्न ५ (इ) निबंध लेखन :

**निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर ८० से १०० शब्दों में निबंध लिखिए।** (७)

(१) पर्यावरण व विकास (२) यदि समाचार पत्र न होते .....

❖❖❖

KK

| समय : ३ घंटे | नमूना कृतिपत्रिका - २ | पूर्णांक : १०० |
|---|---|---|

## विभाग १ – गद्य (२४)

**प्रश्न १. (अ) परिच्छेद के आधार पर सूचनानुसार निम्नलिखित कृतियाँ पूर्ण कीजिए।** (८)

टाँग से ज्यादा फिक्र मुझे उन लोगों की हुई जो हमदर्दी जताने मुझसे मिलने आएँगे। ये मिलने-जुलने वाले कई बार इतने अधिक आते हैं और कभी-कभी इतना परेशान करते हैं कि मरीज का आराम हराम हो जाता है, जिसकी मरीज को खास जरूरत होती है। जनरल वार्ड का तो एक नियम होता है कि मरीज को एक निश्चित समय पर आकर ही तकलीफ दे सकते हैं किंतु प्राइवेट वार्ड, यह तो एक खुला निमंत्रण है कि "हे मेरे परिचितों, रिश्तेदारों, मित्रों! आओ, जब जी चाहे आओ, चाहे जितनी देर रुको, समय का कोई बंधन नहीं। अपने सारे बदले लेने का यही वक्त है।" बदले का बदला और हमदर्दी की हमदर्दी। मिलने वालों का खयाल आते ही मुझे लगा मेरी दूसरी टाँग भी टूट गई।

मुझसे मिलने के लिए सबसे पहले वे लोग आए जिनकी टाँग या कुछ और टूटने पर मैं कभी उनसे मिलने गया था, मानो वे इसी दिन का इंतजार कर रहे थे कि कब मेरी टाँग टूटे और कब वे अपना एहसान चुकाएँ। इनकी हमदर्दी में ये बात खास छिपी रहती है कि देख बेटा, वक्त सब पर आता है।

(१) (अ) **आकृति पूर्ण कीजिए।** (२)

**लेखक को इनकी सबसे अधिक फिक्र होती है**

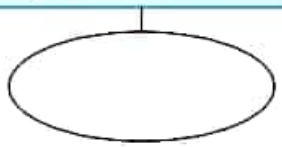

(आ) **वाक्य पूर्ण करके लिखिए।** (२)

(i) लेखक उन्हें मिलने गया था : .....

(ii) मरीज का आराम हराम तब हो जाता है : .....

(२) **अंतर स्पष्ट कीजिए।** (२)

| प्राइवेट अस्पताल | सार्वजनिक अस्पताल |
|---|---|
| | |
| | |
| **प्राइवेट वार्ड** | **जनरल वार्ड** |
| | |
| | |

(३) (i) **लिंग बदलिए।**

परिचित — ☐ मित्र — ☐

(ii) **नीचे लिखे हुए वाक्यों में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए।**

(i) हमदर्दी जताने वालों ने कहा देख बेटा वक्त सब पर आता है

(४) 'वक्त सब पर आता है। इसीलिए किसी का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए।' कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए। (२)

**प्रश्न १ (आ) परिच्छेद के आधार पर सूचनानुसार निम्नलिखित कृतियाँ पूर्ण कीजिए।** (८)

इतना जो उनका कहना था कि हम और अनिल भैया वहाँ रुक नहीं सके। जो रुलाई छूटी तो वह कमरे में भागकर पहुँचने के बाद काफी देर तक बंद नहीं हुई। दोनों ही जन देर तक फूट-फूटकर रोते रहे।

आपसे यह बात शान के तहत नहीं कर रहा पर इसलिए कि ये बातें अब हमारे लिए आदर्श बन गई हैं। सक्रिय राजनीति में आने पर, सरकारी पद पाने के बाद क्या उसका दुरुपयोग करने की हिम्मत मुझमें हो सकती है ? आप ही सोचें, मेरे बच्चे कहते हैं कि पापा, आप हमें साइकिल से भेजते हैं। पानी बरसने पर रिक्शे से स्कूल भेजते है पर कितने ही दूसरे लोगों के लड़के सरकारी गाड़ी से आते हैं। वे छोटे हैं उन्हें कलेजा चीरकर नहीं बता सकता। समझाने की कोशिश करता हूँ। जानता हूँ, मेरा यह समझाना कितना कठिन है फिर भी समय होने पर कभी-कभी अपनी गाड़ी से छोड़ देता हूँ। अपना सरकारी ओहदा छोड़कर आया हूँ और आपके साथ यह सब फिर जिक्र कर तनिक ताजा और नया महसूस करना चाहता हूँ। कोशिश करता हूँ, नींव को पुन: सँजोना-सँवारना कि मेरे मन का महल आज के इस तूफानी झंझावत में खड़ा रह सके।

(१) **आकृति पूर्ण कीजिए।** (२)

(i)

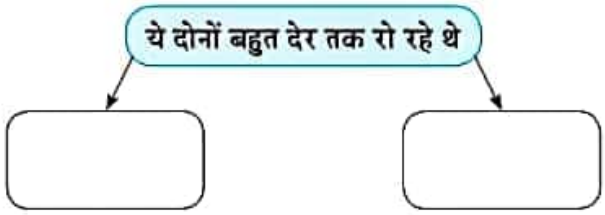


(ii) **कृति पूर्ण कीजिए।**

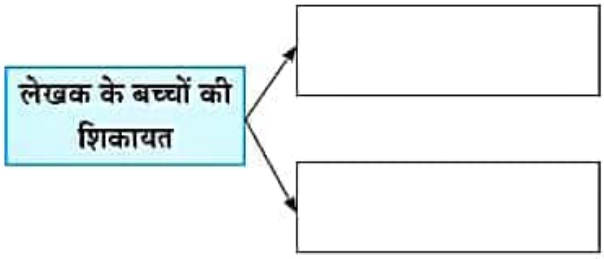


(२) **(अ) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -** (२)

(i) सरकारी गाड़ी - (ii) छोटे -

**(आ) समझकर लिखिए।**

(i) लेखक समय होने पर बच्चों को कभी-कभी सरकारी गाड़ी से स्कूल छोड़ते थे। .....

(ii) लेखक अपने मन के महल को आज के तूफानी झंझावत में खड़ा करने की कोशिश करते हैं। .....

(३) **(अ) नीचे लिखे वाक्यों में उचित विरामचिह्नों का प्रयोग कीजिए।** (२)

लेखक ने अपने बच्चों से कहा यदि दूसरे बच्चे सरकारी गाड़ी से स्कूल आते हैं तो आने दो

**(आ) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।**

(i) जोर-जोर से बहने वाली हवा का झोंका - .....

(ii) दो पहिए वाली एक गाड़ी जिसके लिए न पेट्रोल चाहिए न डिजल - .....

(४) 'ईमानदार व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थिति में भी डावाडोल नहीं होता।' इस कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए। (२)

KK

**प्रश्न १ (इ) परिच्छेद के आधार पर सूचनानुसार निम्नलिखित कृतियाँ पूर्ण कीजिए।** (८)

चलना मनुष्य का स्वभाव है। पानी भी चलता है, हवा भी चलती है, समय भी चलता है और मनुष्य भी चलता है। प्राचीन समय में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचने के लिए मनुष्य मीलों पैदल यात्रा करता था । कई बार यात्रा इतनी लंबी हो जाती थी कि वर्षों लग जाते थे, मार्ग में यात्री बीमार होकर मर भी जाते थे, फिर पालकियों का प्रयोग किया जाने लगा। इन्हें चार लोग उठाते थे, मगर रास्ते में चलते-चलते थके लोगों की जगह लेने के लिए आठ या बारह लोग साथ में चलते थे। पालकियों का प्रयोग स्त्रियों के लिए किया जाता था। पहिए के आविष्कार से सर्वप्रथम बैलगाड़ी द्वारा यात्रा सुगम और सस्ती होने लगी। धीरे-धीरे इसी पहिए से मशीन से चलनेवाली गाड़ियाँ सड़कों पर दौड़ने लगीं।

(१) संजाल पूर्ण कीजिए। (२)

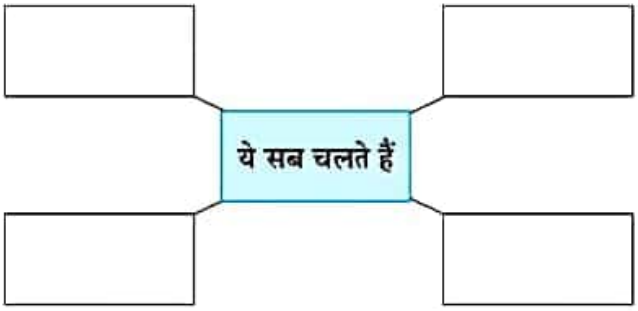


(२) (i) समझकर लिखिए। (२)

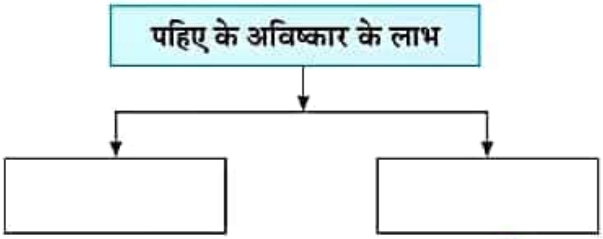


(ii)

(३) (अ) नीचे लिखे हुए शब्दों के लिए उचित पर्यायवाची शब्द गद्यांश से ढूँढ़कर लिखिए। (२)

(i) जगह (ii) पुराना

(आ) विलोम शब्द लिखिए।

(i) सुगम (ii) सस्ती

(४) 'यदि मनुष्य चल नहीं सकता तो क्या होता .....' विषय पर अपना मत लिखिए। (२)

## विभाग २ – पद्य (१८)

**प्रश्न २ (अ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।** (६)

हिमालय के आँगन में उसे, किरणों का दे उपहार
उषा ने हँस अभिनंदन किया, और पहनाया हीरक हार।

जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक
व्योमतम पुंज हुआ तब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक।

विमल वाणी ने वीणा ली, कमल कोमल कर में सप्रीत
सप्तस्वर सप्तसिंधु में उठे, छिड़ा तब मधुर साम संगीत। .....

KK

(१) आकृति पूर्ण कीजिए। (२)

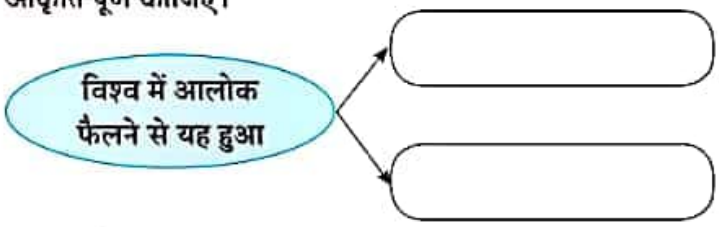


(२) सही पर्याय चुनकर लिखिए। (२)

(अ) जैसे ही सप्तस्वर सप्तसिंधु में गूँज उठे, तब .....

(i) विमल वीणा ने वाणी ली।

(ii) कोमल कर में कमल लिया।

(iii) मधुर साम संगीत शुरू हुआ।

(आ) संबंध लिखिए। (जैसे - सप्तस्वर : सप्तसिंधु)

(i) पुँज : ..... (ii) संसृति : .....

(३) निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ लिखिए। (२)

जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक
व्योमतम पुंज हुआ तब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक।

**प्रश्न २ (आ) निम्न मुद्दों के आधार पर निम्न कविता का पद्य-विश्लेषण कीजिए।** (६)

(१) समता की ओर अथवा (२) छापा

(i) रचना व रचनाकार का नाम

(ii) रचना का प्रकार या विधा

(iii) पसंदीदा पंक्ति

(iv) पसंदीदा होने का कारण

(v) कविता से प्राप्त संदेश या प्रेरणा

**प्रश्न २ (इ) अपठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।** (६)

यह जीवन क्या है? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है।
सुख-दुख के दोनों तीरों से चल रहा राह मनमानी है।

कब फूटा गिरी के अंतर से? किस अंचल से उतरा नीचे?
किस घाटी से बह कर आया समतल में अपने को खींचे?

निर्झर में गति है, जीवन है, वह आगे बढ़ता जाता है।
धुन एक सिर्फ़ है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।

बाधा के रोड़ों से लड़ता, वन के पेड़ों से टकराता,
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता।

(१) समझकर लिखिए। (२)

(i) मानव जीवन इसकी तरह है : .....

(ii) जीवन और निर्झर में यह है समानता : .....

KK

(२) (i) परिच्छेद में आए शब्द-युग्म चुनकर लिखिए। (२)

(ii) समानार्थी शब्द लिखिए।

निर्झर — मद —

(३) निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ लिखिए। (२)

निर्झर में गति है, जीवन है, वह आगे बढ़ता जाता है।
धुन एक सिर्फ़ है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।

## विभाग ३ – पूरक पठन

**प्रश्न ३ (अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।** (४)

अब तक वह कितने ही स्थानों पर नौकरी के लिए आवेदन कर चुका था। साक्षात्कार दे चुका था। उसके प्रमाणपत्रों की फाइल भी उसे सफलता दिलाने में नाकामयाब रही थी। हर जगह भ्रष्टाचार, रिश्वत का बोलबाला होने के कारण, योग्यता के बावजूद उसका चयन नहीं हो पाता था। हर ओर से अब वह निराश हो चुका था। भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था को कोसने के अलावा उसके वश में और कुछ तो था नहीं।

आज फिर उसे साक्षात्कार के लिए जाना है। अब तक देशप्रेम, नैतिकता, शिष्टाचार, ईमानदारी पर अपने तर्कपूर्ण विचार बड़े विश्वास से रखता आया था लेकिन इसके बावजूद उसके हिस्से में सिर्फ असफलता ही आई थी।

(१) समझकर लिखिए। (२)

(i)

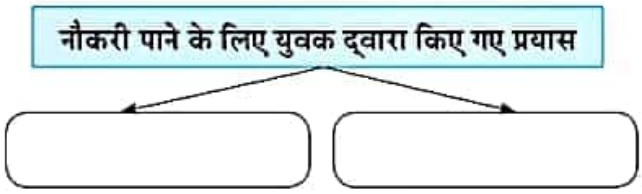


(ii)

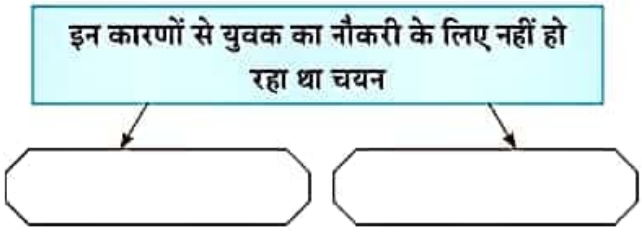


(२) 'भ्रष्टाचार एक कलंक है।' इस कथन के संदर्भ में अपने विचार लिखिए। (२)

**प्रश्न ३ (आ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।** (४)

यों आप खफा क्यों होती हैं, टंटा काहे का आपस में।
हमसे तुम या तुमसे हम बढ़-चढ़कर क्या रक्खा इसमें
झगड़े से न कुछ हासिल होगा, रख देंगे बातें उलझा के।
बस बात पते की इतनी है, ध्रुव या रजिया भारत माँ के।
भारत माता के रथ के हैं हम दोनों ही दो-दो पहिये, अजी दो पहिये, हाँ दो पहिये।
हम उस धरती की संतति हैं ....

KK

(१) (i) संजाल पूर्ण कीजिए। (२)

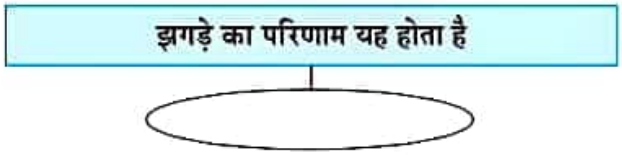


(ii)

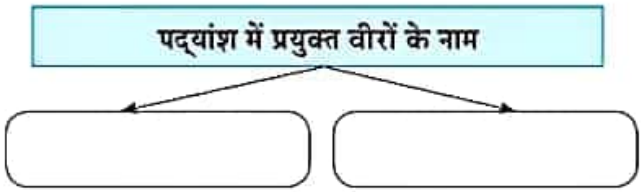


(२) 'देश की प्रगति में युवा वर्ग की भूमिका' विषय पर अपने विचार लिखिए। (२)

## विभाग ४ – भाषा अध्ययन (व्याकरण)

**प्रश्न (४) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।** (१८)

(१) (i) **निम्नलिखित रेखांकित शब्द का शब्दभेद लिखिए।** (१)

तुम्हारी आदत अच्छी नहीं है।

(ii) **उचित सर्वनाम शब्द द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।** (१)

..... पास बहुत से पत्र आते हैं। (मेरे, मुझे, मुझसे)

(२) (i) **निम्नलिखित वाक्य में से अव्यय पहचानकर उसका भेद लिखिए।** (२)

सवाल यह है कि देखता कौन है ?

(ii) **निम्नलिखित अव्यय शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए।**

'आज'

(३) **सूचना के अनुसार काल परिवर्तन करके वाक्य फिर से लिखिए।** (२)

(i) मन प्राण से ही सधता है। (पूर्ण भूतकाल)

(ii) मुझे मनोविज्ञान को भी समझने का मौका मिला। (अपूर्ण वर्तमान काल)

(४) **तालिका पूर्ण कीजिए।** (२)

| संधि | संधि–विच्छेद | भेद |
|---|---|---|
| दिव्यांग | ..... + ..... | ..... |
| ..... | निः + संदेह | ..... |

(५) (i) **रचना के आधार पर वाक्य भेद पहचानिए।** (१)

मन एक ऐसा निर्मल जल है जिससे जीवन के संस्कार रँगते हैं।

(ii) **सूचना के अनुसार वाक्य का प्रकार बदलिए।** (१)

सूर में आपने मन को ही पकड़ा है। (आज्ञार्थक वाक्य)

(६) (i) **निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर उसका वाक्य में प्रयोग कीजिए।** (१)

बोलबाला होना

(ii) **निम्न वाक्यों में अधोरेखांकित शब्द समूह के लिए कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य पुनः लिखिए। (मुँह लटकाना, ठेस लगना)** (१)

परीक्षा में असफल हो जाने पर राम निराश होकर खड़ा था।

KK

(७) निम्नलिखित वाक्य शुद्ध कीजिए। (२)

(i) घरवालों ने भोजन किए परंतु बूढ़ी काकी को किसी ने न पूछी।

(ii) गाय करामत अली के घर में आ गया।

(८) निम्नलिखित वाक्य में से प्रधान व सहायक क्रिया पहचानकर लिखिए। (१)

उन्हें अँधेरी कोठरी में धम से पटक दिया।

(९) निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम तथा द्वितीय रूप लिखिए। (१)

(i) देना (ii) रोना

(१०) वाक्य में यथास्थान विरामचिह्नों का प्रयोग कीजिए। (१)

क्या पाँच रुपये में एक भुट्टा

(११) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित कारक चिह्न से कीजिए। (१)

आज मेरे बेटे ..... तिलक था।

## विभाग ५ - उपयोजित लेखन

### प्रश्न ५ (अ) (१) पत्रलेखन (३२)

(१) निम्नलिखित में से किसी एक पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए। (५)

(i) रामपुर, थाना में कचरे के डिब्बे में भरा कचरा सड़ रहा है। अत: वहाँ के निवासी त्रस्त हैं। इस संदर्भ में प्रेम/प्रतिमा वर्मा, स्वास्थ्य अधिकारी, नगर परिषद, थाना को शिकायत पत्र लिखता/लिखती है।

(ii) आपके जन्मदिन पर चाचा जी ने आपके लिए एक सुंदर व आकर्षक घड़ी भेजी थी। अत: उन्हें धन्यवाद देते हुए पत्र लिखिए।

### (२) गद्य आकलन - (प्रश्न-निर्मिति)

निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर उस पर पाँच प्रश्न तैयार कीजिए कि जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हो। (५)

भारतीय संगीत में देश के सभी भागों के संगीत का समावेश होता है। पंजाब का भांगड़ा, गुजरात का गरबा, उड़ीसा का ओड़ीसी, आंध्र का कुचीपुड़ी तथा केरल का कथकली आदि नृत्य सारे देश में लोकप्रिय है। भारत के सभी प्रांत एक ही केंद्रीय सत्ता के अधीन हैं। सारे देश का एक संविधान, एक कानून, एक राष्ट्रध्वज तथा एक राष्ट्रगीत है। भारतीय सेना में सभी प्रांतों के सैनिक हैं। क्रिकेट, फुटबॉल जैसे खेलों की राष्ट्रीय टीम से अलग - अलग प्रांतों के खिलाड़ी चुने जाते हैं।

### प्रश्न ५ (आ) (१) वृत्तांत लेखन

(१) नीचे दिए विषय पर वृत्तांत लेखन कीजिए। (५)

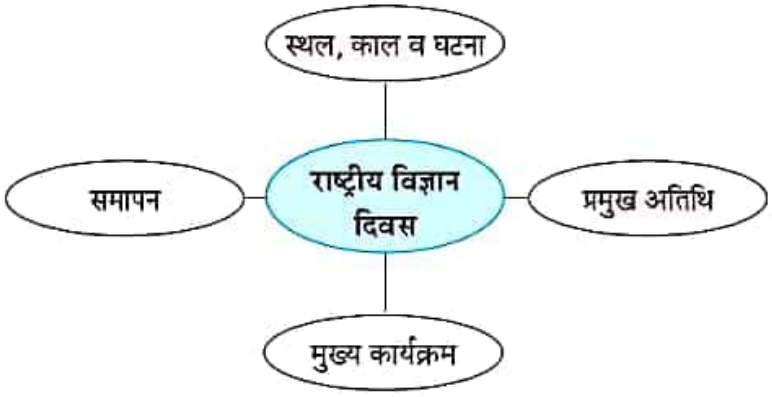


KK

### (२) विज्ञापन लेखन :

निम्नलिखित जानकारी के आधार पर लगभग ५० से ६० शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए। (५)

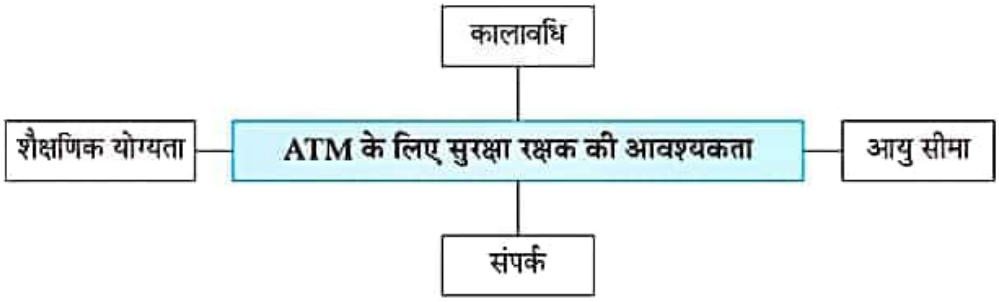


### (२) कहानी लेखन :

(३) निम्नलिखित शब्दों के आधार पर ८० से १०० शब्दों में कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए। (५)

(अंतरिक्ष, सितारे, ग्रह, यात्रा, नासा, विज्ञान)

### प्रश्न ५ (इ) निबंध लेखन

(३) निम्नलिखित किसी एक विषय पर ८० से १०० शब्दों में निबंध लिखिए। (७)

(i) विज्ञान के चमत्कार (ii) मेरा प्रिय खिलाड़ी

❖❖❖

KK